महादेवभाओी

जन्म
१-१-१८९२

अवसान
१५-८-'४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

Z 6
152J0.2
199

पहला संस्करण, ५०००

पाँच रुपये

अप्रैल, १९५०

सकता था, जिस बारेमें तर्क-वितर्क करना व्यर्थ है। मुद्देकी बात तो यह है कि गांधीजीके अुपवासके कारण सवर्ण हिन्दुओंके नेताओं और हरिजनोंके नेताओंके बीच जो समझौता हुआ, अुसमें राजनैतिक मामलेमें जो समझौता हुआ अुससे भी अधिक महत्त्वका समझौता सामाजिक मामलेका था। लन्दनमें शायद राजनैतिक मामलेमें समझौता हो जाता, परन्तु सामाजिक मामलेका तो विचार भी न हुआ होता। और गांधीजीके अुपवासके परिणामस्वरूप सारे हिन्दू समाजमें और दूसरे धर्मोंके लोगोंमें भी — क्योंकि अूँच-नीचके भेदभाव दुनियाके दूसरे समाजोंमें भी हैं ही — जो जाग्रति हुअी और छुआछूतकी भावना पर जो घातक वार हुआ, वह न हुआ होता।

जब प्रधानमन्त्रीके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध गांधीजीने अुपवास किया, अुसी समय केरलके श्री केलप्पनने वहाँका गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुलवानेको अुपवास किया। श्री केलप्पनके अुपवासमें काफी नोटिस न देनेकी त्रुटि थी। अिसलिअे यद्यपि अुस अुपवासके परिणामस्वरूप मन्दिर खुलनेकी तैयारीमें था, फिर भी अिसका लोभ छोड़कर अपनी त्रुटि सुधार लेनेके लिअे गांधीजीने श्री केलप्पनको अुपवास मुल्तवी करनेकी सलाह दी; और यह आश्वासन दिया कि आगे चलकर ज़रूरत पड़ेगी तो खुद भी गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवास करके अुनका साथ देंगे। अिस तरह निर्णयके विरुद्ध अुपवास पूरा होते ही गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवासकी बात शुरू हो गअी।

निर्णयके विरुद्ध अुपवासके दिनोंमें अुसके सिलसिलेमें लोगोंसे मिलने, पत्र-व्यवहार करने और पत्रोंके प्रतिनिधियोंको मुलाकातें देनेकी जो सुविधाअें गांधीजीको दी गअी थीं, वे अुपवास खोलनेके बाद तीसरे ही दिन सरकारने वापस ले लीं और पहले जैसे सब बन्धन लगा दिये। गांधीजीको लगा कि अुनके कैदी होने पर भी सरकारने यह समझौता होने दिया और अुसे मंजूर कर लिया है, तो फिर अिस समझौतेके सब अंगोंका दोनों पक्षोंकी तरफसे, खास करके सवर्ण हिन्दुओंकी तरफसे, पूरी तरह पालन होनेके लिअे जो कुछ करना ज़रूरी है अुसे करनेकी छूट सरकारको अुन्हें देनी ही चाहिये। अिसलिअे अुन्होंने तुरन्त सरकारसे पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और अन्तमें सरकारको नोटिस देकर ता० १–११–'३२से अुसके विरुद्ध सत्याग्रहके रूपमें 'सी' क्लासकी खुराक लेना शुरू कर दिया। यह सत्याग्रह अुत्तरोत्तर बढ़ता जानेवाला था, यानी भोजन पेटके अनुकूल न मालूम होते ही खुराक लेना छोड़ देना था। मगर अैसा कुछ भी करनेकी ज़रूरत नहीं पड़ी। गांधीजीने सरकारको सात दिनका समय दिया था, परन्तु बम्बअी सरकारने २४ तारीखका पत्र भारत सरकारको ३१ तारीखको पहुँचाया। अिसलिअे पहली तारीखको ही भारत सरकारने जवाब भेजा कि हमें विचार

सकता था, जिस बारेमें तर्क-वितर्क करना व्यर्थ है। मुद्देकी बात तो यह है कि गांधीजीके अुपवासके कारण सवर्ण हिन्दुओंके नेताओं और हरिजनोंके नेताओंके बीच जो समझौता हुआ, अुसमें राजनैतिक मामलेमें जो समझौता हुआ अुससे भी अधिक महत्त्वका समझौता सामाजिक मामलेका था। लन्दनमें शायद राजनैतिक मामलेमें समझौता हो जाता, परन्तु सामाजिक मामलेका तो विचार भी न हुआ होता। और गांधीजीके अुपवासके परिणामस्वरूप सारे हिन्दू समाजमें और दूसरे धर्मोंके लोगोंमें भी — क्योंकि अूँच-नीचके भेदभाव दुनियाके दूसरे समाजोंमें भी हैं ही — जो जाग्रति हुअी और छुआछूतकी भावना पर जो घातक वार हुआ, वह न हुआ होता।

जब प्रधानमन्त्रीके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध गांधीजीने अुपवास किया, अुसी समय केरलके श्री केलप्पनने वहाँका गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुलवानेको अुपवास किया। श्री केलप्पनके अुपवासमें काफी नोटिस न देनेकी त्रुटि थी। अिसलिअे यद्यपि अुस अुपवासके परिणामस्वरूप मन्दिर खुलनेकी तैयारीमें था, फिर भी अिसका लोभ छोड़कर अपनी त्रुटि सुधार लेनेके लिअे गांधीजीने श्री केलप्पनको अुपवास मुल्तवी करनेकी सलाह दी; और यह आश्वासन दिया कि आगे चलकर ज़रूरत पड़ेगी तो खुद भी गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवास करके अुनका साथ देंगे। अिस तरह निर्णयके विरुद्ध अुपवास पूरा होते ही गुरुवायुरके मन्दिरके लिअे अुपवासकी बात शुरू हो गअी।

निर्णयके विरुद्ध अुपवासके दिनोंमें अुसके सिलसिलेमें लोगोंसे मिलने, पत्र-व्यवहार करने और पत्रोंके प्रतिनिधियोंको मुलाकातें देनेकी जो सुविधाअें गांधीजीको दी गअी थीं, वे अुपवास खोलनेके बाद तीसरे ही दिन सरकारने वापस ले लीं और पहले जैसे सब बन्धन लगा दिये। गांधीजीको लगा कि अुनके कैदी होने पर भी सरकारने यह समझौता होने दिया और अुसे मंजूर कर लिया है, तो फिर अिस समझौतेके सब अंगोंका दोनों पक्षोंकी तरफसे, खास करके सवर्ण हिन्दुओंकी तरफसे, पूरी तरह पालन होनेके लिअे जो कुछ करना ज़रूरी है अुसे करनेकी छूट सरकारको अुन्हें देनी ही चाहिये। अिसलिअे अुन्होंने तुरन्त सरकारसे पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और अन्तमें सरकारको नोटिस देकर ता० १-११-'३२से अुसके विरुद्ध सत्याग्रहके रूपमें 'सी' क्लासकी खुराक लेना शुरू कर दिया। यह सत्याग्रह अुत्तरोत्तर बढ़ता जानेवाला था, यानी भोजन पेटके अनुकूल न मालूम होते ही खुराक लेना छोड़ देना था। मगर अैसा कुछ भी करनेकी ज़रूरत नहीं पड़ी। गांधीजीने सरकारको सात दिनका समय दिया था, परन्तु बम्बअी सरकारने २४ तारीखका पत्र भारत सरकारको ३१ तारीखको पहुँचाया। अिसलिअे पहली तारीखको ही भारत सरकारने जवाब भेजा कि हमें विचार

वल्लभभाअी : "आपकी अिजाज़त हो, तो अिसके लिअे तो मैं अकेला ही अुपवास करूँ।"

अिस प्रकार अुपवासके प्रसंग बार-बार आते रहनेके कारण वहाँ विनोदमें भी अुपवासकी ही बातें होती थीं। यह डायरी शुरूसे आखिर तक अुपवासके वातावरणसे भरी हुअी है। अिसलिअे सत्याग्रहके अेक शास्त्रके रूपमें अुपवासकी सांगोपांग चर्चा जितनी अिस पुस्तकमें हुअी है, अुतनी और कहीं नहीं हुअी होगी। अुपवास कौन कर सकता है? कब कर सकता है? किसके प्रति किया जा सकता है? अुपवासमें दूसरों पर जबरदस्ती नहीं? सहानुभूतिमें अुपवास किया जा सकता है या नहीं? प्रसंगों और अुदाहरणों व दलीलोंके साथ अिस किताबमें अिन सारे प्रश्नोंकी खूब ही छानबीन की गअी है और सारा विषय विषद बन गया है। अिन सारी चर्चाओंका सार देनेका यह स्थान नहीं है। यहाँ तो अिस सम्बन्धके अभिप्राय ही ढूँढ़ कर सूत्र रूपमें रख दिये हैं :

१. स्वार्थी हेतुके लिअे अुपवास नहीं हो सकता। हेतु शुद्ध जन-कल्याणका होना चाहिये।

२. किसीके कहनेसे अुपवास नहीं हो सकता। अुपवास करनेकी प्रेरणा भीतरसे होनी चाहिये। अिसके लिअे भीतरी आवाज़ या आदेश साफ़ सुनाअी देना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें अिसके लिअे अीश्वरीय प्रेरणा होनी चाहिये।

३. भीतरकी आवाज़ सुननेकी योग्यता यम-नियमके कड़े पालनसे विशुद्ध हुअे मनुष्यमें आती है। अुपवास प्रार्थनाका अुत्कट-से-अुत्कट रूप है। सत्याग्रहीका आखिरी सहारा है। 'भगवान तुम्हारा सोचा हुआ ही हो, मेरा नहीं,' अिस तरहकी वृत्ति रखकर जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाता है, वह अुपवास करनेके लायक माना जायगा।

४. फिर भी सम्भव है कि अन्तर्नाद सुननेमें मनुष्यकी भूल होती हो। यह नाद अीश्वरका न हो और शैतानका हो। अैसे अुपवाससे मनुष्यकी मौत हो जाय, तो अुसका प्रभाव जिन पर पड़ता हो अुन परसे अुसका झूठा असर या बोझा दूर हो जाता है।

५. जो अपनेको विरोधी या दुश्मन समझते हों, अुनके विरुद्ध अुपवास नहीं किया जा सकता। अुपवास हमेशा अुन्हींके विरुद्ध किया जा सकता है, जो हम पर प्रेम रखते हों और हमारे कामोंमें साथ देते हों। विरोधीका मत बदलवानेके लिअे अुपवास अुचित साधन नहीं होगा।

६. अुपवास दो तरहके होते हैं : सशर्त और बिना शर्त। बिना शर्त अुपवास मरण पर्यन्त या खास समय तकके लिअे हो सकता है। अैसे अुपवासमें किसीसे कोअी चीज़ करानेकी शर्त नहीं होती। अिसलिअे अगर अुपवास शुद्ध

वल्लभभाओी: “आपकी अिजाज़त हो, तो अिसके लिअे तो मैं अकेला ही अुपवास करूँ।”

अिस प्रकार अुपवासके प्रसंग बार-बार आते रहनेके कारण वहाँ विनोदमें भी अुपवासकी ही बातें होती थीं। यह डायरी शुरूसे आखिर तक अुपवासके वातावरणसे भरी हुअी है। अिसलिअे सत्याग्रहके अेक शास्त्रके रूपमें अुपवासकी सांगोपांग चर्चा जितनी अिस पुस्तकमें हुअी है, अुतनी और कहीं नहीं हुअी होगी। अुपवास कौन कर सकता है? कब कर सकता है? किसके प्रति किया जा सकता है? अुपवासमें दूसरों पर जबरदस्ती नहीं? सहानुभूतिमें अुपवास किया जा सकता है या नहीं? प्रसंगों और अुदाहरणों व दलीलोंके साथ अिस किताबमें अिन सारे प्रश्नोंकी खूब ही छानबीन की गअी है और सारा विषय विषद बन गया है। अिन सारी चर्चाओंका सार देनेका यह स्थान नहीं है। यहाँ तो अिस सम्बन्धके अभिप्राय ही ढूँढ़ कर सूत्र रूपमें रख दिये हैं:

१. स्वार्थी हेतुके लिअे अुपवास नहीं हो सकता। हेतु शुद्ध जन-कल्याणका होना चाहिये।

२. किसीके कहनेसे अुपवास नहीं हो सकता। अुपवास करनेकी प्रेरणा भीतरसे होनी चाहिये। अिसके लिअे भीतरी आवाज़ या आदेश साफ़ सुनाअी देना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें अिसके लिअे अीश्वरीय प्रेरणा होनी चाहिये।

३. भीतरकी आवाज़ सुननेकी योग्यता यम-नियमके कड़े पालनसे विशुद्ध हुअे मनुष्यमें आती है। अुपवास प्रार्थनाका अुत्कट-से-अुत्कट रूप है। सत्याग्रहीका आखिरी सहारा है। ‘भगवान तुम्हारा सोचा हुआ ही हो, मेरा नहीं,’ अिस तरहकी वृत्ति रखकर जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाता है, वह अुपवास करनेके लायक माना जायगा।

४. फिर भी सम्भव है कि अन्तर्नाद सुननेमें मनुष्यकी भूल होती हो। यह नाद अीश्वरका न हो और शैतानका हो। अैसे अुपवाससे मनुष्यकी मौत हो जाय, तो अुसका प्रभाव जिन पर पड़ता हो अुन परसे अुसका झूठा असर या बोझा दूर हो जाता है।

५. जो अपनेको विरोधी या दुश्मन समझते हों, अुनके विरुद्ध अुपवास नहीं किया जा सकता। अुपवास हमेशा अुन्हींके विरुद्ध किया जा सकता है, जो हम पर प्रेम रखते हों और हमारे कामोंमें साथ देते हों। विरोधीका मत बदलवानेके लिअे अुपवास अुचित साधन नहीं होगा।

६. अुपवास दो तरहके होते हैं: सशर्त और बिना शर्त। बिना शर्त अुपवास मरण पर्यन्त या खास समय तकके लिअे हो सकता है। अैसे अुपवासमें किसीसे कोअी चीज़ करानेकी शर्त नहीं होती। अिसलिअे अगर अुपवास शुद्ध

ये अछूत माने जानेवाले लोग ही सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ बगावत करेंगे और भारी गृहयुद्ध होगा। अिससे हिन्दू समाजको बचा लेनेके लिअे गांधीजी अपने प्राणोंकी आहुति देनेको तैयार हुअे थे। अुनकी अिस तपश्चर्यासे सवर्ण हिन्दुओंकी अन्तरात्मा जाग्रत हो जाय, तो समाजमें खूनखराबी हुअे बिना ही छुआछूत निर्मूल हो जाय। अिससे सिर्फ हिन्दू समाजकी ही शुद्धि नहीं होगी, बल्कि गांधीजीको यह अुम्मीद थी कि अिसका असर तमाम दुनिया पर पड़ेगा और दूसरे समाजोंमें चाहे किसी भी रूपमें छुआछूत जैसी चीज़ हो, अुसे सख्त चोट पहुँचेगी। अिस अुपवासको आज सोलह वर्ष बीत गये हैं और गांधीजीकी आशा बहुत कुछ पूरी हो चुकी है। पहलेके 'अस्पृश्य' माने जानेवाले वर्गोंके लिअे स्वतंत्र भारतके सार्वजनिक जीवनमें आज किसी भी किस्मका अपमान या अधिकारहीनता नहीं है। हालाँकि देशके पिछड़े हुअे भागोंमें अभी तक हरिजनोंको सारी सामाजिक सुविधाअें प्राप्त नहीं हुअी हैं; परन्तु अिसका कारण सवर्ण और हरिजन दोनोंका अज्ञान और निष्क्रियता है। चूँकि अब किसी भी तरहका अन्यायपूर्ण प्रतिबन्ध नहीं रहा, अिसलिअे यह अज्ञान और निष्क्रियता दूर होनेमें देर नहीं लगेगी।

अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नने अिस पुस्तकमें बड़े महत्त्वका स्थान लिया है। मन्दिर जानेके मामलेमें अलग-अलग कारणोंसे बिलकुल अुदासीन हो चुके और मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारोंके कारण अुनका नाश चाहनेवाले कितने ही सुशिक्षित हिन्दू तो गांधीजीसे कहते थे कि आपने यह सवाल किस लिअे अुठाया है? आप खुद तो मन्दिरमें जाते नहीं। जिस चीज़को अच्छे अच्छे हिन्दू छोड़ चुके हैं, अुसे हरिजनोंको दिलवानेका आग्रह आप क्यों करते हैं? बहुतसे हरिजन नेता भी यह कहते थे कि हमें मन्दिर-प्रवेशकी ज़रूरत नहीं; हमारी सामाजिक और आर्थिक कठिनाअियाँ दूर हों और हमें राजनैतिक अधिकार ज्यादा मिलें, अैसा काम कीजिये। हरिजनोंको तो गांधीजीका जवाब अितना ही था कि आपके प्रति हमने जो अन्याय किया है, अुसे मिटाकर हमें अपने पापका प्रायश्चित्त करना है। आप हमारे लेनदार हैं और हम आपके देनदार। हमें अपना कर्ज़ चुका ही देना चाहिये। आपको अपना लेना न लेना हो, तो आप भले ही न लीजिये या चाहें तो अुसे फेंक दीजिये। हम सवर्णोंको तो आपके लिअे मन्दिरोंके द्वार खोल ही देने हैं। अिन मन्दिरोंमें जाना न जाना आपकी मरजीकी बात है।

मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारके बारेमें अुनका कहना था कि मैं अिससे अिनकार नहीं करता कि कुछ मन्दिर दुराचारके अड्डे बन गये हैं। मगर यह हालत बड़े मशहूर तीर्थोंके मन्दिरोंकी और शहरोंके बड़े-बड़े मन्दिरोंकी है। और

ये अछूत माने जानेवाले लोग ही सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ बगावत करेंगे और भारी गृहयुद्ध होगा। अिससे हिन्दू समाजको बचा लेनेके लिअे गांधीजी अपने प्राणोंकी आहुति देनेको तैयार हुअे थे। अुनकी अिस तपश्चर्यासे सवर्ण हिन्दुओंकी अन्तरात्मा जाग्रत हो जाय, तो समाजमें खूनखराबी हुअे बिना ही छुआछूत निर्मूल हो जाय। अिससे सिर्फ हिन्दू समाजकी ही शुद्धि नहीं होगी, बल्कि गांधीजीको यह अुम्मीद थी कि अिसका असर तमाम दुनिया पर पड़ेगा और दूसरे समाजोंमें चाहे किसी भी रूपमें छुआछूत जैसी चीज़ हो, अुसे सख्त चोट पहुँचेगी। अिस अुपवासको आज सोलह वर्ष बीत गये हैं और गांधीजीकी आशा बहुत कुछ पूरी हो चुकी है। पहलेके 'अस्पृश्य' माने जानेवाले वर्गोंके लिअे स्वतंत्र भारतके सार्वजनिक जीवनमें आज किसी भी क़िस्मका अपमान या अधिकारहीनता नहीं है। हालाँकि देशके पिछड़े हुअे भागोंमें अभी तक हरिजनोंको सारी सामाजिक सुविधाअें प्राप्त नहीं हुआी हैं; परन्तु अिसका कारण सवर्ण और हरिजन दोनोंका अज्ञान और निष्क्रियता है। चूँकि अब किसी भी तरहका अन्यायपूर्ण प्रतिबन्ध नहीं रहा, अिसलिअे यह अज्ञान और निष्क्रियता दूर होनेमें देर नहीं लगेगी।

अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नने अिस पुस्तकमें बड़े महत्त्वका स्थान लिया है। मन्दिर जानेके मामलेमें अलग-अलग कारणोंसे बिलकुल अुदासीन हो चुके और मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारोंके कारण अुनका नाश चाहनेवाले कितने ही सुशिक्षित हिन्दू तो गांधीजीसे कहते थे कि आपने यह सवाल किस लिअे अुठाया है? आप खुद तो मन्दिरमें जाते नहीं। जिस चीज़को अच्छे अच्छे हिन्दू छोड़ चुके हैं, अुसे हरिजनोंको दिलवानेका आग्रह आप क्यों करते हैं? बहुतसे हरिजन नेता भी यह कहते थे कि हमें मन्दिर-प्रवेशकी ज़रूरत नहीं; हमारी सामाजिक और आर्थिक कठिनाअियाँ दूर हों और हमें राजनैतिक अधिकार ज्यादा मिलें, अैसा काम कीजिये। हरिजनोंको तो गांधीजीका जवाब अितना ही था कि आपके प्रति हमने जो अन्याय किया है, अुसे मिटाकर हमें अपने पापका प्रायश्चित्त करना है। आप हमारे लेनदार हैं और हम आपके देनदार। हमें अपना कर्ज़ चुका ही देना चाहिये। आपको अपना लेना न लेना हो, तो आप भले ही न लीजिये या चाहें तो अुसे फेंक दीजिये। हम सवर्णोंको तो आपके लिअे मन्दिरोंके द्वार खोल ही देने हैं। अिन मन्दिरोंमें जाना न जाना आपकी मरजीकी बात है।

मन्दिरोंमें होनेवाले अनाचारके बारेमें अुनका कहना था कि मैं अिससे अिनकार नहीं करता कि कुछ मन्दिर दुराचारके अड्डे बन गये हैं। मगर यह हालत बड़े मशहूर तीर्थोंके मन्दिरोंकी और शहरोंके बड़े-बड़े मन्दिरोंकी है। और

अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

अस्पृश्यता और मन्दिर-प्रवेशके सिलसिलेमें सनातनी शास्त्रियोंके साथ हुअी गांधीजीकी चर्चाको अिस और अिसके बाद प्रकाशित होनेवाले भागका महत्त्वका हिस्सा समझना चाहिये। कुछ शास्त्रियोंका वर्णन करते समय महादेवभाअीको बहुरूपियेकी याद आ जाती थी। कुछ शास्त्री तो बहुरूपियेको भी मात करते थे। गांधीजीको भी अुनके साथ बातें करते हुअे मनमें तो हँसी आती थी, परन्तु दूसरी तरफ अुनका जी जल जाता था। आप शास्त्रका आधार मानते हैं या नहीं? वेदको प्रमाण मानते हैं या नहीं? ये अिन शास्त्रियोंके मुख्य प्रश्न थे। शास्त्र माने जानेवाले ग्रंथोंके परस्पर विरोधी अर्थ और भाववाले वचनोंकी चाहे जिस तरह खींचतान करके संगति बैठानेमें ही लगी हुअी अुनकी बुद्धिको यह विवेक करना और अुसका तारतम्य निश्चित करना सूझता ही नहीं था कि किस चीज़को महत्त्वपूर्ण (essentials) और किसे महत्त्वहीन (non-essentials) मानना चाहिये। फिर भी गांधीजी अुनके साथ अपार धीरजसे बातें करते रहते थे। आप बताअिये कि हम कैसे प्रमाणोंसे आपको विश्वास दिलायें, अिसके जवाबमें गांधीजी अुनसे कहते: 'आप पण्डित हैं, आप मुझे पढ़ाने आये हैं। शिक्षक कहीं विद्यार्थीसे पूछता है कि मैं तुझे किस तरह पढ़ाअूँ? या वैद्य बीमारसे नहीं पूछता। मुझे तो खुदको बीमारी भी नहीं है। परन्तु वैद्य कहता है कि बीमारी है, तो फिर वही दवा बताये। मैं तो मानता हूँ कि मैं जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है। मगर आप यह सिद्ध कर दें कि वह अधर्म है, तो मैं अपनी प्रवृत्ति छोड़ दूँगा। मेरा तो निश्चय है कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा निकले वही धर्म है।'

वेदोंके प्रमाणके सम्बन्धकी चर्चामें गांधीजीके अुद्‌गार बहुत ध्यानमें रखने लायक हैं: 'वेद अीश्वरप्रेरित हैं। मगर वे अन्तिम शब्द नहीं हैं। वेदोंकी प्रेरणा करनेके बाद अीश्वरने कोअी हाथ नहीं धो डाले। अीश्वर अभी और भी प्रेरणा या स्फुरणा कर सकता है। वेदोंमें जो कुछ है, वह सब सनातन धर्म नहीं माना जा सकता। वेदोंमें कुछ सनातन धर्म है और कुछ केवल अुस समयके लिअे ही है। जो अुस समयके लिअे होगा, वह बदल सकता है। और सिर्फ चार ग्रंथ ही वेद नहीं हैं। अुसके बाद ज्ञानी मनुष्योंके अनुभव-वचनोंकी अुनमें वृद्धि हुअी है और आगे भी होती रहेगी। अिसके सिवाय यह भी मानना चाहिये कि दूसरे धर्मोंके ग्रंथ भी अीश्वरप्रेरित होंगे। हिन्दुस्तानसे बाहरके ब्रह्मज्ञानी या सत्यज्ञानी पुरुषोंके अनुभव-वचनोंको भी वेदोंके बराबर ही महत्त्व देना चाहिये। अिन सबका मेल कराना हिन्दू धर्मका काम है। अिसीमें

अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

अस्पृश्यता और मन्दिर-प्रवेशके सिलसिलेमें सनातनी शास्त्रियोंके साथ हुअी गांधीजीकी चर्चाको अिस और अिसके बाद प्रकाशित होनेवाले भागका महत्त्वका हिस्सा समझना चाहिये। कुछ शास्त्रियोंका वर्णन करते समय महादेवभाअीको बहुरूपियेकी याद आ जाती थी। कुछ शास्त्री तो बहुरूपियेको भी मात करते थे। गांधीजीको भी अुनके साथ बातें करते हुअे मनमें तो हँसी आती थी, परन्तु दूसरी तरफ अुनका जी जल जाता था। आप शास्त्रका आधार मानते हैं या नहीं? वेदको प्रमाण मानते हैं या नहीं? ये अिन शास्त्रियोंके मुख्य प्रश्न थे। शास्त्र माने जानेवाले ग्रंथोंके परस्पर विरोधी अर्थ और भाववाले वचनोंकी चाहे जिस तरह खींचतान करके संगति बैठानेमें ही लगी हुअी अुनकी बुद्धिको यह विवेक करना और अुसका तारतम्य निश्चित करना सूझता ही नहीं था कि किस चीज़को महत्त्वपूर्ण (essentials) और किसे महत्त्वहीन (non-essentials) मानना चाहिये। फिर भी गांधीजी अुनके साथ अपार धीरजसे बातें करते रहते थे। आप बताअिये कि हम कैसे प्रमाणोंसे आपको विश्वास दिलायें, अिसके जवाबमें गांधीजी अुनसे कहते : 'आप पण्डित हैं, आप मुझे पढ़ाने आये हैं। शिक्षक कहीं विद्यार्थीसे पूछता है कि मैं तुझे किस तरह पढ़ाअूँ? या वैद्य बीमारसे नहीं पूछता। मुझे तो खुदको बीमारी भी नहीं है। परन्तु वैद्य कहता है कि बीमारी है, तो फिर वही दवा बताये। मैं तो मानता हूँ कि मैं जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है। मगर आप यह सिद्ध कर दें कि वह अधर्म है, तो मैं अपनी प्रवृत्ति छोड़ दूँगा। मेरा तो निश्चय है कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा निकले वही धर्म है।'

वेदोंके प्रमाणके सम्बन्धकी चर्चामें गांधीजीके अुद्गार बहुत ध्यानमें रखने लायक हैं: 'वेद अीश्वरप्रेरित हैं। मगर वे अन्तिम शब्द नहीं हैं। वेदोंकी प्रेरणा करनेके बाद अीश्वरने कोअी हाथ नहीं धो डाले। अीश्वर अभी और भी प्रेरणा या स्फुरणा कर सकता है। वेदोंमें जो कुछ है, वह सब सनातन धर्म नहीं माना जा सकता। वेदोंमें कुछ सनातन धर्म है और कुछ केवल अुस समयके लिअे ही है। जो अुस समयके लिअे होगा, वह बदल सकता है। और सिर्फ चार ग्रंथ ही वेद नहीं हैं। अुसके बाद ज्ञानी मनुष्योंके अनुभव-वचनोंकी अुनमें वृद्धि हुअी है और आगे भी होती रहेगी। अिसके सिवाय यह भी मानना चाहिये कि दूसरे धर्मोंके ग्रंथ भी अीश्वरप्रेरित होंगे। हिन्दुस्तानसे बाहरके महाज्ञानी या सत्यज्ञानी पुरुषोंके अनुभव-वचनोंको भी वेदोंके बराबर ही महत्त्व देना चाहिये। अिन सबका मेल कराना हिन्दू धर्मका काम है। अिसीमें

चाहते हों, वे ओमानदारीके साथ अपनी स्थिति प्रगट करके भले ही अुसमें पड़ जायँ। मगर मैंने अिस कामका आधार कांग्रेसियों पर नहीं रखा। अपने बारेमें वे अितना और कहते हैं: “मेरा जीवन जैसे अस्पृश्यता-निवारणके लिअे समर्पित है, वैसे ही दूसरी बहुतसी बातोंके लिअे भी — जिनमें से अेक स्वराज्य है — समर्पित है। मैं अपने जीवनको अेक दूसरेसे अलग कअी विभागोंमें नहीं बाँट सकता। मेरा जीवन अखण्ड है। मेरी तमाम प्रवृत्तियोंका मूल अेक ही दिखाअी देगा। जीवनके हर क्षेत्रमें, फिर वह छोटा हो या बड़ा, सत्य और अहिंसाकी अुपासना करना ही मेरा ध्येय है।”

अिस तरहकी विविध चर्चाओंमें और विपुल पत्रव्यवहारमें अनेक मनुष्योंके मनकी गुत्थियाँ सुलझानेवाले अुनके अिस्तेमाल किये हुअे मार्ग-दर्शक और प्रेरणा-दायक वचनोंसे यह पुस्तक भरी हुअी है। हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले गहनसे गहन विचार महादेवभाअीकी रोचक शैलीमें सीधी-सादी और मामूली अकलवाले आदमीकी समझमें आनेवाली भाषामें हमें यहाँ मिलते हैं, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है।

साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें सरकारके साथ हुआ पत्र-व्यवहार, अुपवासके दिनोंमें गांधीजीके दिये हुअे बयान और अुपवास पूरा होनेके बाद अुनके हरिजन-कार्य सम्बन्धी वक्तव्य वगैरा देनेकी छूट मिलनेके बादसे ता० १–१–’३३ तकके बयान — ये तीनों चीज़ें डायरीके अन्तमें तीन परिशिष्टोंमें दी गअी हैं। तीसरे परिशिष्टमें ता० ४–११–’३२ से ९–१२–’३२ तकके पहले दस बयान भाअी चन्द्रशंकर शुक्ल द्वारा अनुवाद की हुअी ‘धर्मसंस्थापन’ (गुजराती) पुस्तकसे अुनकी सहर्ष अनुमतिसे लिये गये हैं।

नरहरि परीख

चाहते हों, वे अीमानदारीके साथ अपनी स्थिति प्रगट करके भले ही अुसमें पड़ जायँ। मगर मैंने अिस कामका आधार कांग्रेसियों पर नहीं रखा। अपने बारेमें वे अितना और कहते हैं: "मेरा जीवन जैसे अस्पृश्यता-निवारणके लिअे समर्पित है, वैसे ही दूसरी बहुतसी बातोंके लिअे भी — जिनमें से अेक स्वराज्य है — समर्पित है। मैं अपने जीवनको अेक दूसरेसे अलग कअी विभागोंमें नहीं बाँट सकता। मेरा जीवन अखण्ड है। मेरी तमाम प्रवृत्तियोंका मूल अेक ही दिखाअी देगा। जीवनके हर क्षेत्रमें, फिर वह छोटा हो या बड़ा, सत्य और अहिंसाकी अुपासना करना ही मेरा ध्येय है।"

अिस तरहकी विविध चर्चाओंमें और विपुल पत्रव्यवहारमें अनेक मनुष्योंके मनकी गुत्थियाँ सुलझानेवाले अुनके अिस्तेमाल किये हुअे मार्ग-दर्शक और प्रेरणादायक वचनोंसे यह पुस्तक भरी हुअी है। हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले गहनसे गहन विचार महादेवभाअीकी रोचक शैलीमें सीधी-सादी और मामूली अकलवाले आदमीकी समझमें आनेवाली भाषामें हमें यहाँ मिलते हैं, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है।

साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें सरकारके साथ हुआ पत्र-व्यवहार, अुपवासके दिनोंमें गांधीजीके दिये हुअे बयान और अुपवास पूरा होनेके बाद अुनके हरिजन-कार्य सम्बन्धी वक्तव्य वगैरा देनेकी छूट मिलनेके बादसे ता० १–१–'३३ तकके बयान — ये तीनों चीज़ें डायरीके अन्तमें तीन परिशिष्टोंमें दी गअी हैं। तीसरे परिशिष्टमें ता० ४–११–'३२ से ९–१२–'३२ तकके पहले दस बयान भाअी चन्द्रशंकर शुक्ल द्वारा अनुवाद की हुअी 'धर्मसंस्थापन' (गुजराती) पुस्तकसे अुनकी सहर्ष अनुमतिसे लिये गये हैं।

नरहरि परीख

यह भी सहज ही अनुमान होता है कि यह बात अिस तरह फैलने लगी है। अिस परसे अनेक तर्क-वितर्क अुठे। सी० पी० को बम्बअी भेजा हो, तो क्या यह अिस भावी विपत्तिमें अुदार दलवालोंका सहयोग प्राप्त करनेके लिअे हो सकता है? क्या अिस बातकी चर्चा वाअिसरॉयकी कौंसिलमें हुअी होगी? अिन लोगोंने तैयारी तो बहुत कर रखी होगी, मगर यह कल्पना नहीं हो सकती कि वह क्या है।

बापू कहने लगे: "अिन लोगोंने १९ तारीखको मुझे छोड़ देनेका विचार कर रखा होगा, जिससे अुन पर कोअी बोझ न पड़े।" हँसते-हँसते बोले — "तो देखो, अपने राम तो १९ तारीखको चले, फिर रहना तुम दोनों अकेले।"

बातें तो अिस तरह चलती रहतीं, मगर रामानंद चटर्जीके साम्प्रदायिक निर्णयके बारेमें गहरे अध्ययनसे भरे हुअे जो लेख 'मॉडर्न रिव्यू'में आये हैं, अुन्हें पढ़नेमें समय देना ज़्यादा लाभदायक समझा गया।

अुस पत्रका जवाब देते हुअे पद्मजाको बापूने लिखा:

"बुद्धकी जिस भव्य कथाका तूने अुल्लेख किया, अुस परसे बहुतसी पवित्र वस्तुओंका स्मरण होता है। हाँ, मैं अैसे बहुत सपने देखता हूँ। ये सब केवल हवाअी किले ही नहीं हैं। अैसा हो, तो मैं तरह-तरहके पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियोंका जो प्रेम भोग रहा हूँ, अुसके बोझके नीचे दब ही जाअूँ।"

अिस पत्रके बाद दिलीपका अुदाहरण दिनभर याद आता रहा, और गाता रहा:

'बाजी हो, तन-मन-धन बाजी;
बाजी खेलूँ पीवंसे रे, प्रेम लगाय।
हारी तो भअी पीवकी रे, जीती तो पियु मोर हो,
तन-मन-धन बाजी।'*

. . . को लिखा:

"तू या तो लुच्ची है या मूर्ख है। विकार नहीं समझती? दाल खानेसे होनेवाला विकार और स्पर्श-विकार, दोनों बिगाड़ हैं। दोनों समान प्रवाह (?) में फेरफार करते हैं। अेक विकार बाहरका स्थूल पदार्थ पेटमें डालनेसे होता है। दूसरा बाहरी वस्तुको देखनेसे होनेवाला मनोवृत्तिका परिवर्तन या विकार है। यह विकार जब सारे जीवनको हिला देनेवाला होता है, तब हानिकारक हो सकता है। अेक स्त्री किसी पुरुषके प्रति विकारवश हो

* यह भजन किसका है और अिसका पाठ बराबर है या नहीं, अिसके बारेमें मैं अितमीनान नहीं कर सका। — सं०

यह भी सहज ही अनुमान होता है कि यह बात अिस तरह फैलने लगी है। अिस परसे अनेक तर्क-वितर्क अुठे। सी० पी० को बम्बअी भेजा हो, तो क्या यह अिस भावी विपत्तिमें अुदार दलवालोंका सहयोग प्राप्त करनेके लिअे हो सकता है? क्या अिस बातकी चर्चा वाअिसरॉयकी कौंसिलमें हुअी होगी? अिन लोगोंने तैयारी तो बहुत कर रखी होगी, मगर यह कल्पना नहीं हो सकती कि वह क्या है।

बापू कहने लगे: "अिन लोगोंने १९ तारीखको मुझे छोड़ देनेका विचार कर रखा होगा, जिससे अुन पर कोअी बोझ न पड़े।" हँसते-हँसते बोले — "तो देखो, अपने राम तो १९ तारीखको चले, फिर रहना तुम दोनों अकेले।"

बातें तो अिस तरह चलती रहतीं, मगर रामानंद चटर्जीके साम्प्रदायिक निर्णयके बारेमें गहरे अध्ययनसे भरे हुअे जो लेख 'मॉडर्न रिव्यू'में आये हैं, अुन्हें पढ़नेमें समय देना ज़्यादा लाभदायक समझा गया।

अुस पत्रका जवाब देते हुअे पद्मजाको बापूने लिखा:

"बुद्धकी जिस भव्य कथाका तूने अुल्लेख किया, अुस परसे बहुतसी पवित्र वस्तुओंका स्मरण होता है। हाँ, मैं अैसे बहुत सपने देखता हूँ। ये सब केवल हवाअी किले ही नहीं हैं। अैसा हो, तो मैं तरह-तरहके पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियोंका जो प्रेम भोग रहा हूँ, अुसके बोझके नीचे दब ही जाअूँ।"

अिस पत्रके बाद दिलीपका अुदाहरण दिनभर याद आता रहा, और गाता रहा:

'बाजी हो, तन-मन-धन बाजी;
बाजी खेलूँ पीवसे रे, प्रेम लगाय।
हारी तो भअी पीवकी रे, जीती तो पियु मोर हो,
तन-मन-धन बाजी।'*

. . . को लिखा:

"तू या तो लुच्ची है या मूर्ख है। विकार नहीं समझती? दाल खानेसे होनेवाला विकार और स्पर्श-विकार, दोनों बिगाड़ हैं। दोनों समान प्रवाह (?) में फेरफार करते हैं। अेक विकार बाहरका स्थूल पदार्थ पेटमें डालनेसे होता है। दूसरा बाहरी वस्तुको देखनेसे होनेवाला मनोवृत्तिका परिवर्तन या विकार है। यह विकार जब सारे जीवनको हिला देनेवाला होता है, तब हानिकारक हो सकता है। अेक स्त्री किसी पुरुषके प्रति विकारवश हो

* यह भजन किसका है और अिसका पाठ बराबर है या नहीं, अिसके बारेमें मैं अितमीनान नहीं कर सका। — सं०

वल्लभभाअी : "तब आप क्या करेंगे ?"

बापू : "२० तारीखको तो अुपवास शुरू नहीं किया जा सकता। २० तारीख क़ायम नहीं रखी जा सकती।"

वल्लभभाअी : "यह तो नया विधान बनने तकका समय मिल गया कहलायेगा न ? या लोगोंको और सरकारको आप लम्बी मियाद दे सकते हैं ?"

बापू : "हाँ, मगर यह तो अिस पर निर्भर है कि बाहर जानेके बाद ये लोग मुझे कितना करने देते हैं। क्या स्थिति होगी, यह तो मेरी कल्पनामें नहीं आ सकता। यह भी मुझे नहीं सूझता कि मैं कैसा पत्र तैयार करूँगा। लेकिन मुझे तो हिन्दू समाज, अन्त्यज, सरकार और मुसलमान सभीको ध्यानमें रखकर कहना होगा। हिन्दू समाजको तो अन्त्यजोंके साथ मिल कर और स्थान-स्थान पर सभाअें करके अिस चीज़से अिनकार ही करना होगा। सरकारने तो अीसाअी सरकारके रूपमें यह किया है, अिसलिअे सरकार और अीसाअी दोनोंको मुझे अेक ही बात कहनी होगी कि आप अीसाअीके नाते अैसा नहीं कर सकते। हमारा स्वराज हो जाने दीजिये, फिर अन्त्यजों पर आप जो असर डालना चाहें, डालें। लेकिन आज हमारे टुकड़े मत करिये। मुसल्मानोंसे तो मैंने वहाँ विलायतमें भी कहा था। यहाँ भी यही कहूँगा। हिन्दू समाजको भी समझाअूँगा कि अब तो अछूतोंके लिअे मुसलमान या अीसाअी बननेके सिवा कोअी चारा नहीं है।"

वल्लभभाअी : "मगर यहाँ तो सुननेवाले मुसल्मान रहे ही कौन हैं ?"

बापू : "भले ही कोअी न हो। मगर हम आशा रखें कि ये लोग भी जाग्रत होंगे। सत्याग्रहकी जड़ मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखनेमें है, दुष्टसे दुष्ट आदमीको भी पिघला सकनेकी श्रद्धामें है। अिसलिअे कोअी न कोअी मुसल्मान तो ज़रूर निकलेगा, जो कहेगा कि अितनी ज़्यादती तो हम बरदाश्त नहीं कर सकते। यह सब करनेके लिअे खास-खास लोगोंको तो मैं बुलवा लूँगा। पता नहीं अिन सबको आने दिया जायगा या नहीं। मगर वे लोग तो अैसे भी हैं कि मेरा अपमान कर दें। वे कह सकते हैं कि अिसे हमने अिसी कारण छोड़ा है कि अिसके मरनेकी ज़िम्मेदारी लेनेको हम तैयार नहीं। मगर यह सविनयभंग करेगा, तो अिसे हमें वापस बन्द कर देना पड़ेगा।"

मैंने पूछा : "जो लोग आयेंगे, अुनमें तो अीसाअी मित्र भी रहेंगे। और वे कहेंगे कि आप सरकारको दोष देते हैं, अिससे पहले अपना दोष तो दूर कीजिये। हिन्दू समाज किसलिअे अन्त्यजोंको अछूत मानता है ?"

बापू : "यह समझाना मेरे हाथमें है। अिसमें कोअी बड़ी बात नहीं। अुनसे तो कहा जा सकता है कि 'हमें आपसमें निपट लेने दीजिये, आप किसलिअे

वल्लभभाओी : "तब आप क्या करेंगे ?"

बापू : "२० तारीखको तो अुपवास शुरू नहीं किया जा सकता। २० तारीख क़ायम नहीं रखी जा सकती।"

वल्लभभाओी : "यह तो नया विधान बनने तकका समय मिल गया कहलायेगा न ? या लोगोंको और सरकारको आप लम्बी मियाद दे सकते हैं ?"

बापू : "हाँ, मगर यह तो अिस पर निर्भर है कि बाहर जानेके बाद ये लोग मुझे कितना करने देते हैं। क्या स्थिति होगी, यह तो मेरी कल्पनामें नहीं आ सकता। यह भी मुझे नहीं सूझता कि मैं कैसा पत्र तैयार करूँगा। लेकिन मुझे तो हिन्दू समाज, अन्त्यज, सरकार और मुसलमान सभीको ध्यानमें रखकर कहना होगा। हिन्दू समाजको तो अन्त्यजोंके साथ मिल कर और स्थान-स्थान पर सभाअें करके अिस चीज़से अिनकार ही करना होगा। सरकारने तो ओीसाओी सरकारके रूपमें यह किया है, अिसलिअे सरकार और ओीसाओी दोनोंको मुझे अेक ही बात कहनी होगी कि आप ओीसाओीके नाते अैसा नहीं कर सकते। हमारा स्वराज हो जाने दीजिये, फिर अन्त्यजों पर आप जो असर डालना चाहें, डालें। लेकिन आज हमारे टुकड़े मत करिये। मुसलमानोंसे तो मैंने वहाँ विलायतमें भी कहा था। यहाँ भी यही कहूँगा। हिन्दू समाजको भी समझाअूँगा कि अब तो अछूतोंके लिअे मुसलमान या ओीसाओी बननेके सिवा कोओी चारा नहीं है।"

वल्लभभाओी : "मगर यहाँ तो सुननेवाले मुसलमान रहे ही कौन हैं ?"

बापू : "भले ही कोओी न हो। मगर हम आशा रखें कि ये लोग भी जाग्रत होंगे। सत्याग्रहकी जड़ मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखनेमें है, दुष्टसे दुष्ट आदमीको भी पिघला सकनेकी श्रद्धामें है। अिसलिअे कोओी न कोओी मुसलमान तो ज़रूर निकलेगा, जो कहेगा कि अितनी ज़्यादती तो हम बरदाश्त नहीं कर सकते। यह सब करनेके लिअे खास-खास लोगोंको तो मैं बुलवा लूँगा। पता नहीं अिन सबको आने दिया जायगा या नहीं। मगर वे लोग तो अैसे भी हैं कि मेरा अपमान कर दें। वे कह सकते हैं कि अिसे हमने अिसी कारण छोड़ा है कि अिसके मरनेकी ज़िम्मेदारी लेनेको हम तैयार नहीं। मगर यह सविनयभंग करेगा, तो अिसे हमें वापस बन्द कर देना पड़ेगा।"

मैंने पूछा : "जो लोग आयेंगे, अुनमें तो ओीसाओी मित्र भी रहेंगे। और वे कहेंगे कि आप सरकारको दोष देते हैं, अिससे पहले अपना दोष तो दूर कीजिये। हिन्दू समाज किसलिअे अन्त्यजोंको अछूत मानता है ?"

बापू : "यह समझाना मेरे हाथमें है। अिसमें कोओी बड़ी बात नहीं। अुनसे तो कहा जा सकता है कि 'हमें आपसमें निपट लेने दीजिये, आप किसलिअे

डालेंगे । यह बात अुन लड़कियोंके लिअे है, जो यह मान बैठी हैं कि तमाचा भी कैसे मारा जा सकता है? तमाचा मारनेके साथ दुराचारीमें जाग्रति आ जाती है ।"

आज शामको कोअी अखबार पढ़नेके लिअे नहीं थे । 'माडर्न रिव्यू' भी पढ़ना मुल्तवी कर दिया और बातोंमें लग गये ।

मैंने कहा : "यह लड़ाअी पाँच-सात बरस तो चलेगी ।"

बापूने कहा : "नहीं । पर हाँ, मामला बिलकुल ठप हो जाय, तो चल भी सकती है, जैसे दक्षिण अफ्रीकामें चली थी । वैसे असली चीज़ जो लेनी है, अुसके लेनेमें समय तो ज़रूर लगेगा । नये विधानसे हमें दूर ही रहना है, सो बात नहीं । अगर अैसा लगे कि अुसमें भाग लेनेसे कुछ हो सकता है, यानी यह दिखाअी दे कि हम अपने ध्येयकी तरफ बढ़ सकते हैं, तो ज़रूर सरकारमें घुसना है । अिसका दारमदार अिस बात पर है कि यह विधान किस किस्मका होगा । मगर कांग्रेस बिलकुल छोटेसे अल्पमतमें रह जाय, तो लोगोंको पसन्द हो या न हो, असहयोगके सिवाय दूसरा कोअी अुपाय नहीं ।"

वल्लभभाअी : "मेरी भी यही राय है । सरकारी नौकर देहातियोंको जो तकलीफ़ दे रहे हैं, अुसे भीतर घुसे बिना कम नहीं किया जा सकता । मगर भीतर घुस कर भी कुछ कारगर हो सकें तभी न । सरकारी नौकरियाँ सब गारंटीवाली हों, वेतन कम किये ही न जा सकते हों, और नये कर न लगाये जा सकते हों, तो फिर यह दिवालिया कारबार हाथमें लेकर भी क्या करेंगे ?"

शामको . . . मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा : "आप गांधीजीके सामने मुझसे प्रतिज्ञा लिवानेवाले थे, अुसका क्या हुआ ?" मैं खुश हुआ और अुसे ले गया । बापूने अपना अत्यंत आनंद व्यक्त करते हुअे अैसे वचन कहे, जो अुसे ज़िन्दगी भर याद रहेंगे : "अपने मनमें निश्चय करके रखनेका कोअी अर्थ नहीं । मनुष्य प्रतिज्ञा करके तोड़ता है, अिसका कारण यह है कि वह अैसा अभिमान रखता है कि वह अुसे अपने ही बल पर पाल सकेगा । जब कि हमारा कोअी बल ही नहीं, वह तो भगवानका ही दिया हुआ है । अुसीके बलसे हम बलवान हैं । यह अेक छोटेसे घड़ेकी समुद्र बननेकी कोशिश करने जैसी बात है । अिसमें शक नहीं कि घड़ेमें जो पानी है, वह समुद्रके पानीका ही अंश है । मगर हममें वह अंश है और अिसलिअे हमें दिन-दिन शुद्ध होकर अुस महासागरमें मिलना है, यह ज्ञान ही हमें पशुसे अलग करता है । नहीं तो पशु जैसे गुण तो हममें बहुत हैं । जो सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापक है, अुसके बिना हम अपंग हो जायँगे । तू जल्दीमें प्रतिज्ञा न लेना, क्योंकि तुझे फिर कभी

डालेंगे। यह बात अुन लड़कियोंके लिअे है, जो यह मान बैठी हैं कि तमाचा भी कैसे मारा जा सकता है? तमाचा मारनेके साथ दुराचारीमें जाग्रति आ जाती है।"

आज शामको कोअी अखबार पढ़नेके लिअे नहीं थे। 'माडर्न रिव्यू' भी पढ़ना मुल्तवी कर दिया और बातोंमें लग गये।

मैंने कहा: "यह लड़ाअी पाँच-सात बरस तो चलेगी।"

बापूने कहा: "नहीं। पर हाँ, मामला बिलकुल ठप हो जाय, तो चल भी सकती है, जैसे दक्षिण अफ्रीकामें चली थी। वैसे असली चीज़ जो लेनी है, अुसके लेनेमें समय तो ज़रूर लगेगा। नये विधानसे हमें दूर ही रहना है, सो बात नहीं। अगर अैसा लगे कि अुसमें भाग लेनेसे कुछ हो सकता है, यानी यह दिखाअी दे कि हम अपने ध्येयकी तरफ बढ़ सकते हैं, तो ज़रूर सरकारमें घुसना है। अिसका दारमदार अिस बात पर है कि यह विधान किस किस्मका होगा। मगर कांग्रेस बिलकुल छोटेसे अल्पमतमें रह जाय, तो लोगोंको पसन्द हो या न हो, असहयोगके सिवाय दूसरा कोअी अुपाय नहीं।"

वल्लभभाअी: "मेरी भी यही राय है। सरकारी नौकर देहातियोंको जो तकलीफ़ दे रहे हैं, अुसे भीतर घुसे बिना कम नहीं किया जा सकता। मगर भीतर घुस कर भी कुछ कारगर हो सकें तभी न। सरकारी नौकरियाँ सब गारंटीवाली हों, वेतन कम किये ही न जा सकते हों, और नये कर न लगाये जा सकते हों, तो फिर यह दिवालिया कारबार हाथमें लेकर भी क्या करेंगे?"

शामको . . . मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा: "आप गांधीजीके सामने मुझसे प्रतिज्ञा लिवानेवाले थे, अुसका क्या हुआ?" मैं खुश हुआ और अुसे ले गया। बापूने अपना अत्यंत आनंद व्यक्त करते हुअे अैसे वचन कहे, जो अुसे ज़िन्दगी भर याद रहेंगे: "अपने मनमें निश्चय करके रखनेका कोअी अर्थ नहीं। मनुष्य प्रतिज्ञा करके तोड़ता है, अिसका कारण यह है कि वह अैसा अभिमान रखता है कि वह अुसे अपने ही बल पर पाल सकेगा। जब कि हमारा कोअी बल ही नहीं, वह तो भगवानका ही दिया हुआ है। अुसीके बलसे हम बलवान हैं। यह अेक छोटेसे घड़ेकी समुद्र बननेकी कोशिश करने जैसी बात है। अिसमें शक नहीं कि घड़ेमें जो पानी है, वह समुद्रके पानीका ही अंश है। मगर हममें वह अंश है और अिसलिअे हमें दिन-दिन शुद्ध होकर अुस महासागरमें मिलना है, यह ज्ञान ही हमें पशुसे अलग करता है। नहीं तो पशु जैसे गुण तो हममें बहुत हैं। जो सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापक है, अुसके बिना हम अपंग हो जायँगे। तू जल्दीमें प्रतिज्ञा न लेना, क्योंकि तुझे फिर कभी

मथुरादासको पत्र लिखते हुअे : "व्यायाममें खड़े रहकर धीरे-धीरे प्राणायाम करनेसे आश्चर्यजनक फ़ायदा होता है। यह धीरे-धीरे और क़ायदेसे होना चाहिये। संगीतमें जैसे पद-पद पर समयका ध्यान रखना पड़ता है, वैसे ही प्राणायाममें भी है। श्वासकी गति नियमबद्ध चलनी ही चाहिये। अिसका अभ्यास हो जाने पर फेफड़ोंको बहुत कम काम करना पड़ता है और वे बाहरसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं। और जैसे-जैसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं, वैसे ही अपानवायु भी ज़्यादा निकालते हैं। यह कसरत थोड़ी-थोड़ी बढ़ाते जाना चाहिये। ठीक ढंगसे होती रहे, तो अुसका लाभ तुरन्त ही मालूम हो जायगा, थकावट कम मालूम होगी, भूख लगेगी, दिमाग शान्त रहेगा और शरीर ठंढा होगा, तो गरम हो जायगा।

"हाँ, रतिसुखकी आवश्यकता है ही, यह बात मेरा मन स्वीकार नहीं करता। अनुभव अुसकी पुष्टि करता है। कृत्रिम अुपायोंकी नीति स्वीकार करनेमें ही रतिसुखकी योग्यता और आवश्यकता आ जाती है। यह भयंकर वस्तु है। अगर यह नियम सार्वजनिक हो, तो ब्रह्मचर्यको अनावश्यक ही नहीं, हानिकारक भी मानना पड़ेगा। अगर यह माना जाय कि ब्रह्मचर्य हर हालतमें स्तुत्य है, तो फिर कृत्रिम अुपाय पसन्द ही नहीं किये जा सकते। चोरी समाजके लिअे घातक है, फिर भी जैसे वह रहेगी ही, वैसे ही संभव है कि कृत्रिम अुपाय भी रहेंगे। मगर वे अनुचित हैं, अिस मान्यताका वातावरण आवश्यक है। रतिसुख भोगनेवालेको प्रजोत्पत्तिकी जिम्मेदारी भी अपने सिर लेनी ही चाहिये। अिसमें जो दिक्क़त है, अुसे सहन करना अुचित है। शुद्ध संयमका पाठ अिसीसे सीखा जा सकता है।"

. . . को लम्बा पत्र लिखा। अुसमें साफ़ लिखा: "आपके पत्रकी भाषामें मुझे कहीं-कहीं कपट भाव दिखाअी देता है। अिसमें मेरी भूल हो, तो धीरजसे मेरी भूल सुधारना। मेरा वहम सही हो, तो आप अपनेको सुधारना। यह आपका डॉक्टरके लिअे किया हुआ श्राद्ध माना जायगा। अीश्वर आपको सन्मति दे। मुझसे यदि अन्याय होता हो, तो मुझे बचायें।"

९-९-'३२

आज पौने तीन बजे भंडारी प्रधानमंत्रीका पत्र लेकर आये। पत्र लम्बा था और तारसे आया था। अिसमें काफ़ी विनय दिखानेकी कोशिशके साथ मैकडोनल्डके लाक्षणिक ढंगका अेक चुभने वाला वाक्य था। बापूने पत्र पढ़ा और तुरंत बोले: "अिन लोगोंने निश्चय किया दिखता है कि मुझे मरने दिया जाय। बस, लाओ नोटबुक। जवाब लिख डालें।" जवाब लिखा गया और चार बजे मैंने अुसकी नक़ल तैयार कर दी। सवा चार बजे भंडारी आये और अुसे

मथुरादासको पत्र लिखते हुअे : “व्यायाममें खड़े रहकर धीरे-धीरे प्राणायाम करनेसे आश्चर्यजनक फ़ायदा होता है। यह धीरे-धीरे और क़ायदेसे होना चाहिये। संगीतमें जैसे पद-पद पर समयका ध्यान रखना पड़ता है, वैसे ही प्राणायाममें भी है। श्वासकी गति नियमबद्ध चलनी ही चाहिये। अिसका अभ्यास हो जाने पर फेफड़ोंको बहुत कम काम करना पड़ता है और वे बाहरसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं। और जैसे-जैसे प्राणवायु ज़्यादा खींचते हैं, वैसे ही अपानवायु भी ज़्यादा निकालते हैं। यह कसरत थोड़ी-थोड़ी बढ़ाते जाना चाहिये। ठीक ढंगसे होती रहे, तो अुसका लाभ तुरन्त ही मालूम हो जायगा, थकावट कम मालूम होगी, भूख लगेगी, दिमाग शान्त रहेगा और शरीर ठंढा होगा, तो गरम हो जायगा।

“हाँ, रतिसुखकी आवश्यकता है ही, यह बात मेरा मन स्वीकार नहीं करता। अनुभव अुसकी पुष्टि करता है। कृत्रिम अुपायोंकी नीति स्वीकार करनेमें ही रतिसुखकी योग्यता और आवश्यकता आ जाती है। यह भयंकर वस्तु है। अगर यह नियम सार्वजनिक हो, तो ब्रह्मचर्यको अनावश्यक ही नहीं, हानिकारक भी मानना पड़ेगा। अगर यह माना जाय कि ब्रह्मचर्य हर हालतमें स्तुत्य है, तो फिर कृत्रिम अुपाय पसन्द ही नहीं किये जा सकते। चोरी समाजके लिअे घातक है, फिर भी जैसे वह रहेगी ही, वैसे ही संभव है कि कृत्रिम अुपाय भी रहेंगे। मगर वे अनुचित हैं, अिस मान्यताका वातावरण आवश्यक है। रतिसुख भोगनेवालेको प्रजोत्पत्तिकी जिम्मेदारी भी अपने सिर लेनी ही चाहिये। अिसमें जो दिक्क़त है, अुसे सहन करना अुचित है। शुद्ध संयमका पाठ अिसीसे सीखा जा सकता है।”

. . . को लम्बा पत्र लिखा। अुसमें साफ़ लिखा : “आपके पत्रकी भाषामें मुझे कहीं-कहीं कपट भाव दिखाअी देता है। अिसमें मेरी भूल हो, तो धीरजसे मेरी भूल सुधारना। मेरा वहम सही हो, तो आप अपनेको सुधारना। यह आपका डॉक्टरके लिअे किया हुआ श्राद्ध माना जायगा। अीश्वर आपको सन्मति दे। मुझसे यदि अन्याय होता हो, तो मुझे बचायें।”

८
९-९-'३२

आज पौने तीन बजे भंडारी प्रधानमंत्रीका पत्र लेकर आये। पत्र लम्बा था और तारसे आया था। अिसमें काफ़ी विनय दिखानेकी कोशिशके साथ मैकडोनल्डके लाक्षणिक ढंगका अेक चुभने वाला वाक्य था। बापूने पत्र पढ़ा और तुरंत बोले : “अिन लोगोंने निश्चय किया दिखता है कि मुझे मरने दिया जाय। बस, लाओ नोटबुक। जवाब लिख डालें।” जवाब लिखा गया और चार बजे मैंने अुसकी नक़ल तैयार कर दी। सवा चार बजे भंडारी आये और अुसे

आज सुबह बापूने मेजर भंडारीके सामने कलकी ही नैतिक पहलू वाले मामलेकी चर्चा सुनाअी। अिस बेचारेको बड़ी चिन्ता हो गअी है। अुसने कहा: "मेरे बाल तो अभीसे सफेद होने लगे हैं। क्या कुछ भी नहीं हो सकता?"

१०-९-'३२

बापू कहने लगे: "बहुत कुछ हो सकता है। अुन्हें झुकना ही चाहिये, अैसी कोअी बात नहीं। हो सकता है कि अंत्यज कल अिकट्ठे होकर समझौता कर लें और संयुक्त निर्वाचन माँगें। मगर ये तो खुशीसे कह सकते हैं कि दूसरोंकी सम्मति कहाँ है? और अंग्रेज़ ही कहेंगे कि हमारी सम्मति नहीं है। तो ठीक है। मेरे मरनेसे हिन्दू समाज जाग्रत होगा। अितना ही नहीं, मेरे मरनेके साथ ही यह विधान भी मर जायगा। हिन्दू समाज जाग्रत हो जाय, तो सैकड़ों आदमी अैसे निकल आयँगे, जो अिस विधानको चलने ही नहीं देंगे। आज तो अिस निर्णयमें अंत्यजोंके अीसाअी या मुसलमान बननेका मसाला भरा है। आंबेडकरमें न धर्म है, न हिन्दुत्व। अिसलिअे दूसरे अुन्हें जिस तरह नचाते हैं, वैसे ही वे नाचते हैं।"

बापूको अब सपने आने लगे हैं — ज़्यादातर अुपवासके। अुस दिन अुनके पिताजीका स्वप्न आया था। कल रातको दो बजे वे अिस विचारमें पड़े हुअे थे कि अगले हफ़्ते क्या-क्या करना है। अुसमें अेक बात यह थी कि महादेवसे रोटी बनाना सीख लेनेको कहा जाय। और आज सुबह ही मैंने कहा: "बापू मुझे रोटी बनाना सीखना है।" अिस पर बापूने कहा: "मुझे और तुम्हें यह विचार अेक ही समय आया होना चाहिये, क्योंकि मैंने रातको दो बजे यह विचार किया था। फिर मुझे लगा कि यह बोझ ज़्यादा हो जायगा, अिसलिअे विचार छोड़ दिया।"

११-९-'३२

अिस बार डाक भी खूब लिखी। वल्लभभाअी बोले: "अब लम्बी डाक लिखना छोड़ दीजिये।" बापू बोले: "अरे! वल्लभभाअी, अिस बार तो लम्बी लिखे बिना कैसे काम चलेगा? अब किसे पता कितनी लिखी जायगी।"

आजकी आश्रमकी डाकके पत्रोंमें भविष्यकी ध्वनि गूँज रही है। बबल-भाअीको लिखे पत्रमें: "अमुक काम करना अच्छा है, यह निश्चय हो जानेके बाद अुसे करनेमें अेक क्षण भी न रुकना चाहिये, क्योंकि सिर पर मौत लटक रही है। अिसलिअे अच्छे कामके आरम्भमें देर करनेसे सारा सौदा ही रह जाता है; क्योंकि जीव देह छोड़ता है, तब आरम्भोंको साथ ले जाता है। अमल न

आज सुबह बापूने मेजर भंडारीके सामने कलकी ही नैतिक पहलू वाले मामलेकी चर्चा सुनाअी। अिस बेचारेको बड़ी चिन्ता हो गअी है। अुसने कहा: "मेरे बाल तो अभीसे सफेद होने लगे हैं। क्या कुछ भी नहीं हो सकता?"

१०-९-'३२

बापू कहने लगे: "बहुत कुछ हो सकता है। अुन्हें झुकना ही चाहिये, अैसी कोअी बात नहीं। हो सकता है कि अंत्यज कल अिकट्ठे होकर समझौता कर लें और संयुक्त निर्वाचन माँगें। मगर ये तो खुशीसे कह सकते हैं कि दूसरोंकी सम्मति कहाँ है? और अंग्रेज़ ही कहेंगे कि हमारी सम्मति नहीं है। तो ठीक है। मेरे मरनेसे हिन्दू समाज जाग्रत होगा। अितना ही नहीं, मेरे मरनेके साथ ही यह विधान भी मर जायगा। हिन्दू समाज जाग्रत हो जाय, तो सैकड़ों आदमी अैसे निकल आयँगे, जो अिस विधानको चलने ही नहीं देंगे। आज तो अिस निर्णयमें अंत्यजोंके अीसाअी या मुसलमान बननेका मसाला भरा है। आंबेडकरमें न धर्म है, न हिन्दुत्व। अिसलिअे दूसरे अुन्हें जिस तरह नचाते हैं, वैसे ही वे नाचते हैं।"

बापूको अब सपने आने लगे हैं — ज़्यादातर अुपवासके। अुस दिन अुनके पिताजीका स्वप्न आया था। कल रातको दो बजे वे अिस विचारमें पड़े हुअे थे कि अगले हफ़्ते क्या-क्या करना है। अुसमें अेक बात यह थी कि महादेवसे रोटी बनाना सीख लेनेको कहा जाय। और आज सुबह ही मैंने कहा: "बापू मुझे रोटी बनाना सीखना है।" अिस पर बापूने कहा: "मुझे और तुम्हें यह विचार अेक ही समय आया होना चाहिये, क्योंकि मैंने रातको दो बजे यह विचार किया था। फिर मुझे लगा कि यह बोझ ज़्यादा हो जायगा, अिसलिअे विचार छोड़ दिया।"

११-९-'३२

अिस बार डाक भी खूब लिखी। वल्लभभाअी बोले: "अब लम्बी डाक लिखना छोड़ दीजिये।" बापू बोले: "अरे! वल्लभभाअी, अिस बार तो लम्बी लिखे बिना कैसे काम चलेगा? अब किसे पता कितनी लिखी जायगी।"

आजकी आश्रमकी डाकके पत्रोंमें भविष्यकी ध्वनि गूँज रही है। बबल-भाअीको लिखे पत्रमें: "अमुक काम करना अच्छा है, यह निश्चय हो जानेके बाद अुसे करनेमें अेक क्षण भी न रुकना चाहिये, क्योंकि सिर पर मौत लटक रही है। अिसलिअे अच्छे कामके आरम्भमें देर करनेसे सारा सौदा ही रह जाता है; क्योंकि जीव देह छोड़ता है, तब आरम्भोंको साथ ले जाता है। अमल न

"सब अिन्द्रियाँ जिसके वशमें हैं, वह पूर्ण ब्रह्मचारी है। यह स्थिति शरीर रहते हुअे सम्भवित है। खुराकका संयम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य पालनमें अुसका हिस्सा कम है। असंयम अवश्य घातक है। दूध-घी औषधकी मात्रामें लेनेसे हानिकर नहीं हैं, अैसी कुछ मेरी प्रतीति है।"

(गुजरातीमें): "मूर्तिपूजा और आश्रममें मन्दिर और मूर्ति स्थापनाके बारेमें मेरे विचार बन चुके हैं। अपने बारेमें मैंने कहा है कि मैं मूर्तिपूजक और मूर्तिभंजक दोनों हूँ। शरीरधारीकी क़ल्पनाका अीश्वर मूर्तिमान होगा ही। वह मूर्तिभावसे अुसकी कल्पनामें बसता भी ज़रूर है। अिस प्रकार मैं मूर्तिपूजक हूँ। मगर अेक भी रूपको — आकृतिको — परमेश्वरके रूपमें पूजनेकी मेरे मनने कभी हाँ नहीं की है। वहाँ मेरे मनमें 'नेति नेति' होता है। अिसलिअे मैंने अपने आपको मूर्तिभंजक माना है। अिस तरहके विचारके बारेमें मेरे मनमें हमेशा यह रहा है कि हम आश्रममें मन्दिर न बनायें। अिसीलिअे प्रार्थनाके लिअे भी मकान नहीं बनाया गया। आकाशकी छत और दिशाओंकी दीवार बनाकर हम अुसमें बैठ गये। अगर सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना हो, तो हमारी यही स्थिति होनी चाहिये। आजकल वेदादिमें चंचुपात कर रहा हूँ। वहाँ भी यही देख रहा हूँ। कहीं भी मूर्तिके लिअे स्थान नहीं देखता। फिर भी हिन्दूधर्ममें मूर्तिके लिअे स्थान है, अिसलिअे हम अुसका द्रोह न करें। अुसकी पूजा आवश्यक नहीं, अैच्छिक है। अिसलिअे मुझे लगता है कि हम समाजके रूपमें मन्दिरसे अलग रहें, तो अच्छा। आश्रममें जिस स्थानको मैंने समाधि माना है, वह मन्दिर हो, तो भी हम अुसे सार्वजनिक संस्था न बनायें। ज़मीनका मालिक अुसे गिराकर अींटें ले जाना चाहता था, तब रुपया देकर अुस स्थानको बचाया। मगर अुसे मन्दिर बनानेकी मेरी अिच्छा नहीं होती।"

व्रजकृष्णको नमक लेने न लेनेके गुण-अवगुणके बारेमें लम्बा पत्र लिखा और आश्रम सम्बन्धी आक्षेपों पर विचार ज़ाहिर किये (हिन्दीमें):

"सही है कि आश्रमके लोग जैसे होने चाहियें, वैसे नहीं हैं। अुनमें काफी दोष भरे हैं। अिसलिअे लोगोंको आश्रमवासियोंकी टीका और निन्दा करनेका अधिकार है और आश्रमियोंको अुसे बरदाश्त करना चाहिये। तुम्हारे मन पर भी कुछ अैसा ही असर हुआ है, अुसका मुझे आश्चर्य नहीं है। क्योंकि अैसा है ही। लेकिन अैसा होते हुअे भी परिणाम बुरा नहीं है, अैसा मेरा विश्वास है। आश्रममें रहनेवालोंने कुछ न कुछ अुन्नति की है। बात यह है कि करनेका बाकी बहुत है, हुआ है कम। और अैसा ही हो सकता था। और आश्रमवासी किसको कहा जाय? तुमने यदि अिस बारेमें नारणदाससे बात नहीं की है, तो दिल खोल कर सब बात करो। अुसकी सुनो। नारणदाससे

“सब अिन्द्रियाँ जिसके वशमें हैं, वह पूर्ण ब्रह्मचारी है। यह स्थिति शरीर रहते हुअे सम्भवित है। खुराकका संयम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य पालनमें अुसका हिस्सा कम है। असंयम अवश्य घातक है। दूध-घी औषधकी मात्रामें लेनेसे हानिकर नहीं हैं, अैसी कुछ मेरी प्रतीति है।”

(गुजरातीमें): “मूर्तिपूजा और आश्रममें मन्दिर और मूर्ति स्थापनाके बारेमें मेरे विचार बन चुके हैं। अपने बारेमें मैंने कहा है कि मैं मूर्तिपूजक और मूर्तिभंजक दोनों हूँ। शरीरधारीकी कल्पनाका अीश्वर मूर्तिमान होगा ही। वह मूर्तिभावसे अुसकी कल्पनामें बसता भी ज़रूर है। अिस प्रकार मैं मूर्तिपूजक हूँ। मगर अेक भी रूपको — आकृतिको — परमेश्वरके रूपमें पूजनेकी मेरे मनने कभी हाँ नहीं की है। वहाँ मेरे मनमें ‘नेति नेति’ होता है। अिसलिअे मैंने अपने आपको मूर्तिभंजक माना है। अिस तरहके विचारके बारेमें मेरे मनमें हमेशा यह रहा है कि हम आश्रममें मन्दिर न बनायें। अिसीलिअे प्रार्थनाके लिअे भी मकान नहीं बनाया गया। आकाशकी छत और दिशाओंकी दीवार बनाकर हम अुसमें बैठ गये। अगर सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना हो, तो हमारी यही स्थिति होनी चाहिये। आजकल वेदादिमें चंचुपात कर रहा हूँ। वहाँ भी यही देख रहा हूँ। कहीं भी मूर्तिके लिअे स्थान नहीं देखता। फिर भी हिन्दूधर्ममें मूर्तिके लिअे स्थान है, अिसलिअे हम अुसका द्रोह न करें। अुसकी पूजा आवश्यक नहीं, अैच्छिक है। अिसलिअे मुझे लगता है कि हम समाजके रूपमें मन्दिरसे अलग रहें, तो अच्छा। आश्रममें जिस स्थानको मैंने समाधि माना है, वह मन्दिर हो, तो भी हम अुसे सार्वजनिक संस्था न बनायें। ज़मीनका मालिक अुसे गिराकर अींटें ले जाना चाहता था, तब रुपया देकर अुस स्थानको बचाया। मगर अुसे मन्दिर बनानेकी मेरी अिच्छा नहीं होती।”

ब्रजकृष्णको नमक लेने न लेनेके गुण-अवगुणके बारेमें लम्बा पत्र लिखा और आश्रम सम्बन्धी आक्षेपों पर विचार जाहिर किये (हिन्दीमें):

“सही है कि आश्रमके लोग जैसे होने चाहियें, वैसे नहीं हैं। अुनमें काफी दोष भरे हैं। अिसलिअे लोगोंको आश्रमवासियोंकी टीका और निन्दा करनेका अधिकार है और आश्रमियोंको अुसे बरदाश्त करना चाहिये। तुम्हारे मन पर भी कुछ अैसा ही असर हुआ है, अुसका मुझे आश्चर्य नहीं है। क्योंकि अैसा है ही। लेकिन अैसा होते हुअे भी परिणाम बुरा नहीं है, अैसा मेरा विश्वास है। आश्रममें रहनेवालोंने कुछ न कुछ अुन्नति की है। बात यह है कि करनेका बाकी बहुत है, हुआ है कम। और अैसा ही हो सकता था। और आश्रमवासी किसको कहा जाय? तुमने यदि अिस बारेमें नारणदाससे बात नहीं की है, तो दिल खोल कर सब बात करो। अुसकी सुनो। नारणदाससे

क्यों न भेजूँ ? मेरी सारी आशाअें तुम सफल कर रहे हो और अपनी अनन्य और ज्ञानमय सेवासे हम तीनोंको ही आश्चर्यचकित कर रहे हो। सारी अग्नि-परीक्षाओंमेंसे पार अुतरनेकी शक्ति अीश्वरने तुम्हें बख्शी मालूम होती है। खूब जीओ और अहिंसादेवीके ज़रिये सत्यनारायणका साक्षात्कार करो और दूसरोंके करनेमें सहायक बनो।"

प्रेमाके नाम बड़ा लम्बा पत्र लिखा। अिसमें अुसके बारेमें अपना विश्वास और बड़ी-बड़ी आशायें बताअीं और अनेक प्रश्नोंके अुत्तर दिये: "किसी व्यक्ति या समाजकी अवनतिका कारण सचमुच ढूँढा गया है, अैसा नहीं जान पड़ता। अनुमान तो बहुत होते हैं, तात्कालिक कारण मिल भी जाते हैं; और वे हमेशा अेक ही नहीं होते। मगर आम तौर पर यह ज़रूर कहा जा सकता है कि अवनतिके मूलमें धार्मिक न्यूनता होती ही है। पारतंत्र्य कभी अिसका मूल कारण नहीं हो सकता, क्योंकि वह खुद दूसरे कारणोंका, कमज़ोरियोंका, परिणाम होता है।

"अहंकारका बीज शून्यता अनुभव करनेसे ही जाता है। अेक भी क्षण कोअी गहरा विचार करे, तो अुसे अपनी अति तुच्छता मालूम हुअे बिना रह ही नहीं सकती। पृथ्वीके आगे जैसे हम जंतुओंको तुच्छ मानते हैं, अुससे करोड़ों गुनी बड़ी मात्रामें अिस जगत्के आगे मनुष्यप्राणी तुच्छ है। अुसमें बुद्धि है, अिससे कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ता। अुसकी महिमा अपनी तुच्छता अनुभव करनेमें ही है। क्योंकि अिस अनुभवके साथ ही यह दूसरा ज्ञान पैदा होता है कि जैसा वह अपने आपमें तुच्छ है, वैसा वह भगवानका तुच्छतम अंश होनेके कारण जब भगवानमें अुसका लय होता है, तब वह भगवानरूप है, और अिस सूक्ष्म अणुमें भगवानकी शक्ति भरी है।

"मायावादको मैं अपने ढंगसे मानता हूँ। कालचक्रमें यह जगत् माया है। लेकिन जिस क्षण तक अुसकी हस्ती है, अुस क्षण तक तो वह है ही। मैं अनेकान्त-वादको मानता हूँ। अगर कोअी भी वस्तु मनुष्यके लिअे प्रत्यक्ष है, तो वह मृत्यु ही है। अितना होने पर भी अिस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तुका बड़ा डर लगता है। यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है; अुससे पार अुतरनेका धर्म अकेले मनुष्यको ही लभ्य है।

"पाप-पुण्य मृत्युके बाद भी जीवके साथ ही जाते हैं। जीव जीवरूपमें अुन्हें भोगता है। फिर वह दूसरे दृश्य शरीरमें हो या सूक्ष्म शरीरमें, अिसमें हर्ज़ नहीं।"

आजकी वल्लभभाअीकी दिल्लगी: "लिख-पढ़ कर कौन अमर हुआ है? मार कर या मर कर अमर होते हैं।"

क्यों न भेजूँ ? मेरी सारी आशाअें तुम सफल कर रहे हो और अपनी अनन्य और ज्ञानमय सेवासे हम तीनोंको ही आश्चर्यचकित कर रहे हो। सारी अग्नि-परीक्षाओंमेंसे पार अुतरनेकी शक्ति अीश्वरने तुम्हें बख्शी मालूम होती है। खूब जीओ और अहिंसादेवीके ज़रिये सत्यनारायणका साक्षात्कार करो और दूसरोंके करनेमें सहायक बनो।"

प्रेमाके नाम बड़ा लम्बा पत्र लिखा। अिसमें अुसके बारेमें अपना विश्वास और बड़ी-बड़ी आशायें बताअीं और अनेक प्रश्नोंके अुत्तर दिये: "किसी व्यक्ति या समाजकी अवनतिका कारण सचमुच ढूँढा गया है, अैसा नहीं जान पड़ता। अनुमान तो बहुत होते हैं, तात्कालिक कारण मिल भी जाते हैं; और वे हमेशा अेक ही नहीं होते। मगर आम तौर पर यह ज़रूर कहा जा सकता है कि अवनतिके मूलमें धार्मिक न्यूनता होती ही है। पारतंत्र्य कभी अिसका मूल कारण नहीं हो सकता, क्योंकि वह खुद दूसरे कारणोंका, कमज़ोरियोंका, परिणाम होता है।

"अहंकारका बीज शून्यता अनुभव करनेसे ही जाता है। अेक भी क्षण कोअी गहरा विचार करे, तो अुसे अपनी अति तुच्छता मालूम हुअे बिना रह ही नहीं सकती। पृथ्वीके आगे जैसे हम जंतुओंको तुच्छ मानते हैं, अुससे करोड़ों गुनी बड़ी मात्रामें अिस जगत्के आगे मनुष्यप्राणी तुच्छ है। अुसमें बुद्धि है, अिससे कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ता। अुसकी महिमा अपनी तुच्छता अनुभव करनेमें ही है। क्योंकि अिस अनुभवके साथ ही यह दूसरा ज्ञान पैदा होता है कि जैसा वह अपने आपमें तुच्छ है, वैसा वह भगवानका तुच्छतम अंश होनेके कारण जब भगवानमें अुसका लय होता है, तब वह भगवानरूप है, और अिस सूक्ष्म अणुमें भगवानकी शक्ति भरी है।

"मायावादको मैं अपने ढंगसे मानता हूँ। कालचक्रमें यह जगत् माया है। लेकिन जिस क्षण तक अुसकी हस्ती है, अुस क्षण तक तो वह है ही। मैं अनेकान्त-वादको मानता हूँ। अगर कोअी भी वस्तु मनुष्यके लिअे प्रत्यक्ष है, तो वह मृत्यु ही है। अितना होने पर भी अिस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तुका बड़ा डर लगता है। यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है; अुससे पार अुतरनेका धर्म अकेले मनुष्यको ही लभ्य है।

"पाप-पुण्य मृत्युके बाद भी जीवके साथ ही जाते हैं। जीव जीवरूपमें अुन्हें भोगता है। फिर वह दूसरे दृश्य शरीरमें हो या सूक्ष्म शरीरमें, अिसमें हर्ज़ नहीं।"

आजकी वल्लभभाअीकी दिल्लगी: "लिख-पढ़ कर कौन अमर हुआ है? मार कर या मर कर अमर होते हैं।"

देनेसे भी अिनकार कर दिया, तब आंबेडकरके लिअे यह पृथक् निर्वाचनकी माँग करना अनिवार्य हो गया। अब भी आंबेडकर और दूसरे लोग समझ जायँ और सुरक्षित स्थान मंजूर कर लें, तो पृथक् निर्वाचन रद्द हो जाय, वगैरा। हमें यह अुन लोगों (सरकार) की तरफ़से प्रेरित मालूम हुआ और अैसा लगा कि अब पत्र-व्यवहार नहीं छपेगा। मगर अैसी कुछ न कुछ योजना बनाकर रख देंगे, और पत्र-व्यवहारको दबा देंगे।

मगर शामको चार बजे मेज़रने आकर अेण्ड्रूज़का तार दिया, तब हमारा भ्रम दूर हुआ। अेण्ड्रूज़का तार यह था: 'मैं आअूँ; तब तक अुपवास मुलतवी रखो। तुरंत रवाना हो रहा हूँ।'

मेज़र कह गये कि आपको जो जवाब देना हो, वह मुझे किसी भी समय भेज दीजिये। मुझे सरकारको बताना पड़ेगा। मगर मैं जहाँ होअूँ, वहीं मेरे पास भेजनेकी सूचना दे जाता हूँ। बापूने कहा: "शायद कल जवाब दूँगा।" मगर मेज़र तो व्यवस्था करके चले गये। अुनके जानेके बाद तुरंत बापूने कहा: "महादेव, लाओ कागज़ और अेण्ड्रूज़को जवाब भेज दो।" जवाब अिस आशयका लिखवाया:

"तार मिला। अुपवासका विचार ओीश्वरके आदेशके अनुसार है। अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचन रद्द होना निश्चित हो, तभी अुपवास मुल्तवी हो सकता है। मेरी रायमें तुम्हारा वहाँ रहना ज़्यादा अुपयोगी होगा। वल्लभभाओी और महादेव सहमत हैं।"

शामको घूमते हुअे बापू कहने लगे: "अेण्ड्रूज़की आध्यात्मिकता अैसे वक़्त कहाँ चली जाती है, यह पता नहीं चलता। अुनकी तरफ़से अैसी माँग ही कैसे हो सकती है? अुनके मना करनेसे मैं अुपवास छोड़ दूँ, तो फिर मेरे वचनका मूल्य क्या रहे? भविष्यमें मैं कुछ भी कहूँ, तो लोग कहेंगे: 'अरे, यह तो अुस अुपवासकी तरह होगा'। वे अभी तक मेरा स्वभाव नहीं जानते होंगे?"

रातको चार पत्र लिखाये: नारणदासभाओी, रामदास, देवदास और बा को।

नारणदासभाओीको:

"मेरे अनशनकी खबर अखबारमें देखी होगी। कोओी भी घबराये न होंगे, यह मैं मान लेता हूँ। अगर समझें, तो हर आश्रमवासीके लिअे यह अुत्सवका अवसर होना चाहिये। अनशन तो आश्रमकी कल्पनामें आखिरी और अुत्तम वस्तु है। अिसका अधिकार किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। शुद्ध अनशन रोज़ नहीं किये जाते। किसी समय किसी-किसीको ही अिसका अधिकार होता है। अपने लिअे मैंने अिस बार यह अधिकार मान लिया है। अिसमें मेरी भूल होगी, तो वह मिथ्याभिमान गिनी जायगी और यह आसुरी तप माना

देनेसे भी अिनकार कर दिया, तब आंबेडकरके लिअे यह पृथक् निर्वाचनकी माँग करना अनिवार्य हो गया। अब भी आंबेडकर और दूसरे लोग समझ जायँ और सुरक्षित स्थान मंजूर कर लें, तो पृथक् निर्वाचन रद्द हो जाय, वग़ैरा। हमें यह अुन लोगों (सरकार) की तरफ़से प्रेरित मालूम हुआ और अैसा लगा कि अब पत्र-व्यवहार नहीं छपेगा। मगर अैसी कुछ न कुछ योजना बनाकर रख देंगे, और पत्र-व्यवहारको दबा देंगे।

मगर शामको चार बजे मेज़रने आकर अेण्ड्रूज़का तार दिया, तब हमारा भ्रम दूर हुआ। अेण्ड्रूज़का तार यह था: 'मैं आअूँ; तब तक अुपवास मुलतवी रखो। तुरंत रवाना हो रहा हूँ।'

मेज़र कह गये कि आपको जो जवाब देना हो, वह मुझे किसी भी समय भेज दीजिये। मुझे सरकारको बताना पड़ेगा। मगर मैं जहाँ होअूँ, वहीं मेरे पास भेजनेकी सूचना दे जाता हूँ। बापूने कहा: "शायद कल जवाब दूँगा।" मगर मेज़र तो व्यवस्था करके चले गये। अुनके जानेके बाद तुरंत बापूने कहा: "महादेव, लाओ काग़ज और अेण्ड्रूज़को जवाब भेज दो।" जवाब अिस आशयका लिखवाया:

"तार मिला। अुपवासका विचार अीश्वरके आदेशके अनुसार है। अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचन रद्द होना निश्चित हो, तभी अुपवास मुल्तवी हो सकता है। मेरी रायमें तुम्हारा वहाँ रहना ज़्यादा अुपयोगी होगा। वल्लभभाअी और महादेव सहमत हैं।"

शामको घूमते हुअे बापू कहने लगे: "अेण्ड्रूज़की आध्यात्मिकता अैसे वक़्त कहाँ चली जाती है, यह पता नहीं चलता। अुनकी तरफ़से अैसी माँग ही कैसे हो सकती है? अुनके मना करनेसे मैं अुपवास छोड़ दूँ, तो फिर मेरे वचनका मूल्य क्या रहे? भविष्यमें मैं कुछ भी कहूँ, तो लोग कहेंगे: 'अरे, यह तो अुस अुपवासकी तरह होगा'। वे अभी तक मेरा स्वभाव नहीं जानते होंगे?"

रातको चार पत्र लिखाये: नारणदासभाअी, रामदास, देवदास और बा को।

नारणदासभाअीको:

"मेरे अनशनकी खबर अखबारमें देखी होगी। कोअी भी घबराये न होंगे, यह मैं मान लेता हूँ। अगर समझें, तो हर आश्रमवासीके लिअे यह अुत्सवका अवसर होना चाहिये। अनशन तो आश्रमकी कल्पनामें आखिरी और अुत्तम वस्तु है। अिसका अधिकार किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। शुद्ध अनशन रोज़ नहीं किये जाते। किसी समय किसी-किसीको ही अिसका अधिकार होता है। अपने लिअे मैंने अिस बार यह अधिकार मान लिया है। अिसमें मेरी भूल होगी, तो वह मिथ्याभिमान गिनी जायगी और यह आसुरी तप माना

मानता हूँ कि वे तो हर्षके आँसू बहाते होंगे और अुनके हृदयसे पल-पलमें मेरे लिअे आशीर्वादके अुद्गार निकलते होंगे। अितना तू अुनसे कहना और दूसरे स्नेही खिन्न हों, तो खुद बहादुर बनकर तू अुन लोगोंको खिन्न होनेसे रोकना। दूसरे अगर समझें, तो अुनका धर्म तो अधिक कर्त्तव्य-परायण होना, लोक-जाग्रति करना और लोकमत अिकट्ठा करना है। और शान्त, किन्तु प्रचंड लोकमत अिकट्ठा हो जाय, तो शायद मुझे अन्त तकका अुपवास करना भी न पड़े। जहाँ तक मैं अपनेको समझ सकता हूँ, अुसके अनुसार मुझे अैसा करना पड़े, तो अिसमें परम शान्ति ही है। और अधूरा रहे और अिस देहके द्वारा अभी और सेवा करनी बाकी होगी, तो भी स्वागत करूँगा। मेरा मन आ़खिर तक स्थिर रहे, तो दोनों ही दृष्टिसे अच्छा है।"

अुस दिन भी मोहनलाल भट्टको जेलियोंके सवालके जवाबमें लिखा था: "पुनर्जन्मका अर्थ है शरीरका रूपान्तर, आत्माका — शरीरीका — नहीं। अिसलिअे वैज्ञानिक मान्यतासे पुनर्जन्म अलग चीज़ है। आत्माका रूपान्तर नहीं, बल्कि स्थानांतर होता है। अपनेको कर्ता न माननेवालेके हाथसे किसीकी मौत होती ही नहीं। कर्तापन मानना न मानना यह बुद्धिका विषय नहीं, हृदयका विषय है। अिसलिअे सच पूछा जाय, तो 'कर्ता न मानकर' और 'अीश्वरार्पण करके'— यह प्रयोग ही ग़लत है। क्योंकि यह बुद्धिका प्रयोग हुआ। और गीतामें या दूसरे शास्त्रोंमें अीश्वरार्पणताके जो वचन आते हैं, अुनका बुद्धिके साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं। मैं जिस तरह वेदान्तको समझता हूँ, अुस तरह तो अिसका हमारे कार्यके साथ अच्छी तरह मेल बैठता है।"

बा को लिखा: "तेरा पत्र मिल गया। तूने शायद मेरे अुपवासकी बात सुनी होगी। अिससे तू ज़रा भी न घबराना, और न दूसरी बहनोंको घबराने देना। तुझे तो हर्ष ही होना चाहिये कि अीश्वरने मुझे अैसा कठिन धर्म-पालन करनेका अवसर दिया है। अिस अुपवासका अर्थ भी तू समझी होगी। अन्त्यज भाअियोंके बारेमें मैंने जो माँग की है, वह मंजूर हो जाय, तो मेरे लिअे अुपवास करनेकी बात नहीं रह जाती; और अुपवास शुरू हो गया हो, तो वह बन्द भी किया जा सकता है। लेकिन अन्त तक पूरा करना पड़े, तो अीश्वरकी कृपा ही माननी चाहिये। माँगी हुअी मौत करोड़ोंमें किसी-किसीको ही मिलती है। अैसी मौत मुझे मिले, तो कितनी अच्छी मानी जाय? और यह तो दीयेकी तरह स्पष्ट है कि मौत न मिले, तो और भी ज़्यादा शुद्ध होना और ज़्यादा सेवा करना मेरा धर्म हो जायगा। मैं मानता हूँ कि मेरे साथके पचास वर्षके सहवासके बाद अितनी आसान बात तो तू अच्छी तरह समझ ही जायगी और बरदाश्त कर सकेगी।"

मानता हूँ कि वे तो हर्षके आँसू बहाते होंगे और अुनके हृदयसे पल-पलमें मेरे लिअे आशीर्वादके अुद्गार निकलते होंगे। अितना तू अुनसे कहना और दूसरे स्नेही खिन्न हों, तो खुद बहादुर बनकर तू अुन लोगोंको खिन्न होनेसे रोकना। दूसरे अगर समझें, तो अुनका धर्म तो अधिक कर्त्तव्य-परायण होना, लोक-जाग्रति करना और लोकमत अिकट्ठा करना है। और शान्त, किन्तु प्रचंड लोकमत अिकट्ठा हो जाय, तो शायद मुझे अन्त तकका अुपवास करना भी न पड़े। जहाँ तक मैं अपनेको समझ सकता हूँ, अुसके अनुसार मुझे अैसा करना पड़े, तो अिसमें परम शान्ति ही है। और अधूरा रहे और अिस देहके द्वारा अभी और सेवा करनी बाकी होगी, तो भी स्वागत करूँगा। मेरा मन आखिर तक स्थिर रहे, तो दोनों ही दृष्टिसे अच्छा है।"

अुस दिन भी मोहनलाल भट्टको जेलियोंके सवालके जवाबमें लिखा था: "पुनर्जन्मका अर्थ है शरीरका रूपान्तर, आत्माका — शरीरीका — नहीं। अिसलिअे वैज्ञानिक मान्यतासे पुनर्जन्म अलग चीज़ है। आत्माका रूपान्तर नहीं, बल्कि स्थानांतर होता है। अपनेको कर्ता न माननेवालेके हाथसे किसीकी मौत होती ही नहीं। कर्तापन मानना न मानना यह बुद्धिका विषय नहीं, हृदयका विषय है। अिसलिअे सच पूछा जाय, तो 'कर्ता न मानकर' और 'अीश्वरार्पण करके'— यह प्रयोग ही ग़लत है। क्योंकि यह बुद्धिका प्रयोग हुआ। और गीतामें या दूसरे शास्त्रोंमें अीश्वरार्पणताके जो वचन आते हैं, अुनका बुद्धिके साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं। मैं जिस तरह वेदान्तको समझता हूँ, अुस तरह तो अिसका हमारे कार्यके साथ अच्छी तरह मेल बैठता है।"

बा को लिखा: "तेरा पत्र मिल गया। तूने शायद मेरे अुपवासकी बात सुनी होगी। अिससे तू ज़रा भी न घबराना, और न दूसरी बहनोंको घबराने देना। तुझे तो हर्ष ही होना चाहिये कि अीश्वरने मुझे अैसा कठिन धर्म-पालन करनेका अवसर दिया है। अिस अुपवासका अर्थ भी तू समझी होगी। अन्त्यज भाअियोंके बारेमें मैंने जो माँग की है, वह मंजूर हो जाय, तो मेरे लिअे अुपवास करनेकी बात नहीं रह जाती; और अुपवास शुरू हो गया हो, तो वह बन्द भी किया जा सकता है। लेकिन अन्त तक पूरा करना पड़े, तो अीश्वरकी कृपा ही माननी चाहिये। माँगी हुअी मौत करोड़ोंमें किसी-किसीको ही मिलती है। अैसी मौत मुझे मिले, तो कितनी अच्छी मानी जाय? और यह तो दीयेकी तरह स्पष्ट है कि मौत न मिले, तो और भी ज़्यादा शुद्ध होना और ज़्यादा सेवा करना मेरा धर्म हो जायगा। मैं मानता हूँ कि मेरे साथके पचास वर्षके सहवासके बाद अितनी आसान बात तो तू अच्छी तरह समझ ही जायगी और बरदाश्त कर सकेगी।"

"और प्रार्थनामें तुम्हारा विश्वास क्यों नहीं? विश्वास या तो प्राप्त किया जाता है या अन्दरसे पैदा होता है। हरअेक देशमें और हरअेक कालमें जो सन्त और ऋषि-मुनि हो गये हैं, अुन्होंने निरपवाद रूपसे जिस बातकी गवाही दी है, अुससे तुम्हें यह विश्वास मिलना चाहिये। सच्ची प्रार्थना केवल मुँहके वचनोंसे नहीं होती। वह कभी झूठी नहीं पड़ती। निःस्वार्थ सेवा भी प्रार्थना ही है। तुम्हें यह तो हरगिज़ न कहना चाहिये कि 'मुझे प्रार्थनामें श्रद्धा नहीं।'"

आज शामको कहने लगे: "कुछ भी हो, यानी मुझे छोड़ दिया जाय या तुम्हें भी साथ ही छोड़ दिया जाय, तो भी तुम्हें रोटी बनानेका शास्त्र तो जान ही लेना चाहिये। और अुसकी विधि अच्छी तरह लिखकर मुझे देनी चाहिये।"

मैंने कहा: "आपके साथ छूटा, तो वहाँ लिख दूँगा; और न छूटा, तो लिखकर भेज दूँगा।"

बापू: "यानी यों कहो न कि तुम्हारी लिखनेकी नीयत ही नहीं। वह अच्छी तरह समझमें आ जाय, तो सब क़ैदियोंके लिअे यह फेर-बदल करानेका मेरा अिरादा है और सभी जेलोंमें छोटी-छोटी बेकरियाँ बनवानेका विचार है।"

मैंने कहा: "मगर यह सब आज हो सकता है? कल तो आप चले जायँगे। वहाँ अिसमें किस तरह पड़ेंगे?"

बापू चिढ़ गये और कहने लगे: "ज्ञान भी कहीं बेकार जाता है? और कलका कल ही मर तो नहीं जाअूँगा। मैं तो छूट कर भी डोअिलको पत्र लिखूँगा। और आश्रममें तो तुरंत ही जो फेरफार कराने ज़रूरी हों, वे करा दिये जा सकते हैं।"

आम्बेडकरके बारेमें कहते हुअे मैं बोला: "अिस आदमीकी सब खुशामद करेंगे, तो अुसकी धृष्टताको प्रोत्साहन देनेकी बात हो जायगी। अपने खानगी हलक़ोंमें तो वह यही कहेगा कि देखो, गांधीसे अुपवास करा लिये न? और अब ठीक है कि ये सब मेरी खुशामद करने आते हैं!"

बापू: "हाँ, यह बात बुरी है। नरगिस और दूसरी बहनें तो अुसके पीछे पड़ गअी होंगी! और मुझे यह ज़रा भी अच्छा नहीं लगता कि ये सब अुसकी खुशामद करें। मगर किया क्या जाय?"

मैंने अपने मनमें कहा: "अिस तरहकी परिस्थिति अुत्पन्न करना अुपवासमें दोष नहीं माना जायगा? अुपवास करके किस लिअे अैसे आदमी पर सारा आधार रखनेवाली परिस्थिति अुत्पन्न की जाय?"

बापू: "अिसीलिअे मेरे जीमें आता है कि मुझे न छोड़ें और यहीं पड़े-पड़े अुपवास करने दें और मरने दें, तो कैसा अच्छा रहे! मगर छोड़ेंगे, तो सब बातें साफ़ करूँगा। वह यह कि अुसे सही लगे तो वह माने, दबानेसे न

"और प्रार्थनामें तुम्हारा विश्वास क्यों नहीं? विश्वास या तो प्राप्त किया जाता है या अन्दरसे पैदा होता है। हरअेक देशमें और हरअेक कालमें जो सन्त और ऋषि-मुनि हो गये हैं, अुन्होंने निरपवाद रूपसे जिस बातकी गवाही दी है, अुससे तुम्हें यह विश्वास मिलना चाहिये। सच्ची प्रार्थना केवल मुँहके वचनोंसे नहीं होती। वह कभी झूठी नहीं पड़ती। निःस्वार्थ सेवा भी प्रार्थना ही है। तुम्हें यह तो हरगिज़ न कहना चाहिये कि 'मुझे प्रार्थनामें श्रद्धा नहीं।'"

आज शामको कहने लगे: "कुछ भी हो, यानी मुझे छोड़ दिया जाय या तुम्हें भी साथ ही छोड़ दिया जाय, तो भी तुम्हें रोटी बनानेका शास्त्र तो जान ही लेना चाहिये। और अुसकी विधि अच्छी तरह लिखकर मुझे देनी चाहिये।"

मैंने कहा: "आपके साथ छूटा, तो वहाँ लिख दूँगा; और न छूटा, तो लिखकर भेज दूँगा।"

बापू: "यानी यों कहो न कि तुम्हारी लिखनेकी नीयत ही नहीं। वह अच्छी तरह समझमें आ जाय, तो सब क़ैदियोंके लिअे यह फेर-बदल करानेका मेरा अिरादा है और सभी जेलोंमें छोटी-छोटी बेकरियाँ बनवानेका विचार है।"

मैंने कहा: "मगर यह सब आज हो सकता है? कल तो आप चले जायँगे। वहाँ अिसमें किस तरह पड़ेंगे?"

बापू चिढ़ गये और कहने लगे: "ज्ञान भी कहीं बेकार जाता है? और कलका कल ही मर तो नहीं जाअूँगा। मैं तो छूट कर भी डोअिलको पत्र लिखूँगा। और आश्रममें तो तुरंत ही जो फेरफार कराने ज़रूरी हों, वे करा दिये जा सकते हैं।"

आम्बेडकरके बारेमें कहते हुअे मैं बोला: "अिस आदमीकी सब खुशामद करेंगे, तो अुसकी धृष्टताको प्रोत्साहन देनेकी बात हो जायगी। अपने खानगी हलक़ोंमें तो वह यही कहेगा कि देखो, गांधीसे अुपवास करा लिये न? और अब ठीक है कि ये सब मेरी खुशामद करने आते हैं!"

बापू: "हाँ, यह बात बुरी है। नरगिस और दूसरी बहनें तो अुसके पीछे पड़ गअी होंगी! और मुझे यह ज़रा भी अच्छा नहीं लगता कि ये सब अुसकी खुशामद करें। मगर किया क्या जाय?"

मैंने अपने मनमें कहा: "अिस तरहकी परिस्थिति अुत्पन्न करना अुपवासमें दोष नहीं माना जायगा? अुपवास करके किस लिअे अैसे आदमी पर सारा आधार रखनेवाली परिस्थिति अुत्पन्न की जाय?"

बापू: "अिसीलिअे मेरे जीमें आता है कि मुझे न छोड़ें और यहीं पड़े-पड़े अुपवास करने दें और मरने दें, तो कैसा अच्छा रहे! मगर छोड़ेंगे, तो सब बातें साफ़ करूँगा। वह यह कि अुसे सही लगे तो वह माने, दबानेसे न

"अीश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम दोनों पर अुसका आशीर्वाद हो।
गहरे प्रेम सहित —बापू"

मीराबहनको अुपवासके बारेमें लम्बा पत्र लिखा। वह पूरा नक़ल करने लायक़ है, मगर नक़ल न हो सकी। नरगिसके नाम पत्र :

१६–९–'३२ "दुःखी होनेकी मनाअी है। हम कल्पना कर सकते हों, वैसे पवित्रसे पवित्र कार्यके लिअे अेक कुटुम्बीजनको अीश्वरने महा बलिदान करनेका मौक़ा दिया है। अुसके लिअे खुश होना चाहिये। और अिस अुपवासका — थोड़ासा भी — अनुकरण तो किया ही नहीं जा सकता। तुम सबको तो अुस समय अधिक काममें और अधिक आत्म-शुद्धिमें लग जाना है। हममेंसे यदि कोअी ज़रा भी दुःखी जैसा दिखाअी दे, तो तुम्हें अुसे झंझोड़कर हिम्मत बँधानी है।

"तुम सबको — पिंजरेमें बन्द पक्षियोंको भी प्यार।"

सरलादेवीको : "तुम्हारा अत्यंत प्रेम-पूर्ण पत्र मिला। यह मेरे लिअे प्रसादीरूप है कि अुसमें सब बच्चे भी शामिल हैं। जब निश्चित धर्म जान पड़ा, तभी मैंने यह क़दम अुठाया है। अीश्वरके नामसे और अुसीके कामसे यह क़दम अुठाया है। वह लाज रखेगा, यह मानकर मैं बिलकुल निश्चिन्त हो गया हूँ। तुम्हारे अेक कुटुम्बीजनको अैसा शुभ अवसर हाथ लगा है, यह जानकर सब खुश होना।"

अनसूया बहनको : "तुम्हारी और शंकरलालकी व्याकुलता यहाँ बैठा भी सुन और देख सकता हूँ। मगर अिसे मोह ही समझना। तुम्हारा धर्म तो निर्मल आनंद अनुभव करनेका है। अैसा शुभ अवसर अीश्वरने मेरे लिअे सहज ही भेज दिया है। तुम सबको तो ज़्यादा कर्तव्य-परायण और ज़्यादा शुद्ध ही होना है।"

डॉ० अनसारीको :

"आपके मनोहर कार्ड मुझे मिलते रहते हैं। आप और शेरवानी जल्दी पूरी तरह अच्छे हो जायें और घर लौट आयें, अैसी प्रार्थना मैं कर रहा हूँ। आप दोनोंको हमारा प्रेम पहुँचानेके लिअे ही यह लिख रहा हूँ।

"मैंने जो निश्चय किया है, अुस विषयमें आपने ज़रूर जाना होगा। अीश्वरका अैसा स्पष्ट आदेश था, जिसकी मैं अवहेलना नहीं कर सका। मैं आशा रखता हूँ कि मेरे अिस निर्णयकी क़द्र करनेमें आपको कोअी मुश्किल नहीं पड़ी होगी। भविष्य भगवानके हाथमें है।

"घटनाअें अितनी जल्दी-जल्दी घट रही हैं कि यह पत्र आपको मिलेगा, तब तक क्या-क्या हो गया होगा, यह कहना कठिन है। अैसा भी हो सकता है कि आपके नाम मेरा यह अन्तिम पत्र ही साबित हो। अिसलिअे मैं

"अीश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम दोनों पर अुसका आशीर्वाद हो।

गहरे प्रेम सहित — बापू"

मीराबहनको अुपवासके बारेमें लम्बा पत्र लिखा। वह पूरा नक़ल करने लायक़ है, मगर नक़ल न हो सकी। नरगिसके नाम पत्र :

१६–९–'३२

"दुःखी होनेकी मनाअी है। हम कल्पना कर सकते हों, वैसे पवित्रसे पवित्र कार्यके लिअे अेक कुटुम्बीजनको अीश्वरने महा बलिदान करनेका मौक़ा दिया है। अुसके लिअे खुश होना चाहिये। और अिस अुपवासका — थोड़ासा भी — अनुकरण तो किया ही नहीं जा सकता। तुम सबको तो अुस समय अधिक काममें और अधिक आत्म-शुद्धिमें लग जाना है। हममेंसे यदि कोअी ज़रा भी दुःखी जैसा दिखाअी दे, तो तुम्हें अुसे झंझोड़कर हिम्मत बँधानी है।

"तुम सबको — पिंजरेमें बन्द पक्षियोंको भी प्यार।"

सरलादेवीको : "तुम्हारा अत्यंत प्रेम-पूर्ण पत्र मिला। यह मेरे लिअे प्रसादीरूप है कि अुसमें सब बच्चे भी शामिल हैं। जब निश्चित धर्म जान पड़ा, तभी मैंने यह क़दम अुठाया है। अीश्वरके नामसे और अुसीके कामसे यह क़दम अुठाया है। वह लाज रखेगा, यह मानकर मैं बिलकुल निश्चिन्त हो गया हूँ। तुम्हारे अेक कुटुम्बीजनको अैसा शुभ अवसर हाथ लगा है, यह जानकर सब खुश होना।"

अनसूया बहनको : "तुम्हारी और शंकरलालकी व्याकुलता यहाँ बैठा भी सुन और देख सकता हूँ। मगर अिसे मोह ही समझना। तुम्हारा धर्म तो निर्मल आनंद अनुभव करनेका है। अैसा शुभ अवसर अीश्वरने मेरे लिअे सहज ही भेज दिया है। तुम सबको तो ज़्यादा कर्तव्य-परायण और ज़्यादा शुद्ध ही होना है।"

डॉ० अनसारीको :

"आपके मनोहर कार्ड मुझे मिलते रहते हैं। आप और शेरवानी जल्दी पूरी तरह अच्छे हो जायें और घर लौट आयें, अैसी प्रार्थना मैं कर रहा हूँ। आप दोनोंको हमारा प्रेम पहुँचानेके लिअे ही यह लिख रहा हूँ।

"मैंने जो निश्चय किया है, अुस विषयमें आपने ज़रूर जाना होगा। अीश्वरका अैसा स्पष्ट आदेश था, जिसकी मैं अवहेलना नहीं कर सका। मैं आशा रखता हूँ कि मेरे अिस निर्णयकी क़द्र करनेमें आपको कोअी मुश्किल नहीं पड़ी होगी। भविष्य भगवानके हाथमें है।

"घटनाअें अितनी जल्दी-जल्दी घट रही हैं कि यह पत्र आपको मिलेगा, तब तक क्या-क्या हो गया होगा, यह कहना कठिन है। अैसा भी हो सकता है कि आपके नाम मेरा यह अन्तिम पत्र ही साबित हो। अिसलिअे मैं

आनेसे अिनकार कर दें, तो कैसा अच्छा रहे! रंगा आयरने धारा-सभाको मुलतवी रखनेका जो नोटिस दिया, वह बताता है कि वहाँ भी कुछ न कुछ हो रहा है। धारा-सभाको भी लगता होगा कि जब अिस आदमीका अितना अपमान कर रहे हैं, तब हमारा तो पूछना ही क्या?" घूम कर बैठनेके बाद तुरंत ही वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीको तार लिखाया कि "सरकारकी घोषणा पढ़ी। अिसमें नाहक सार्वजनिक खर्च करने, तकलीफ़ देने और मुझे व्यर्थ चिन्तामें डालनेके बजाय मुझे यहाँसे न हटाया जाय, क्योंकि मैं अपनी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखनेवाली अेक भी शर्त नहीं मानूँगा।"

बापूने कहा: "अितने हल्केपनकी आशा मैंने नहीं रखी थी। यह तो अकल्प्य वस्तु कही जा सकती है। मगर ठीक है, वे जो भी करें, अुसमें हमें घाटा नहीं है। यह तार जाने पर भी मुझे निकालेंगे, तो पहले ही दिन अिस हुक्मका अनादर करके चल दूँगा। कल रा० ब० गोविन्दलालके यहाँ जानेकी बात कर रहे थे, तब मेरे जीमें आ रहा था कि अछूत मुहल्लेमें क्यों न जाअूँ? मगर हिम्मत नहीं होती थी। अब हिम्मत आ गअी। बस, वहाँ जाकर ही मरना बहुत अच्छा होगा। अीश्वर मुझे जितनी चाहिये, अुतनी शक्ति दे देता है। अिस तरह चल पड़ना दूसरा दाँडी-कूच हो जायगा। सी० पी० को तो यह सब देखकर अिस्तीफ़ा दे देना चाहिये था। अुनका क्या नुक़सान होगा? परन्तु हमारे लोगोंमें यह चीज़ है कहाँ?"

वल्लभभाअी बोले: "अैसे व्हाअिट हॉलके पास ये लिबरल लोग हक़ माँगनेको जानेवाले हैं!"

फिर अन्त्यज नेताओंके और बम्बअीके नारायणराव देसाअीके आये हुअे पत्रों और तारोंके जवाब दिलवाये। अिन जवाबों पर बहुत चर्चा चली। वल्लभभाअीने आपत्ति की: "जब अिन्हें जवाब देते हैं, तो पुरुषोत्तमदासको किसलिअे नहीं दिया? अुसे बुरा नहीं लगेगा?"

बापू बोले: "पुरुषोत्तमदासको अितना-सा लिखनेसे काम नहीं चल सकता। और भी बहुत कुछ लिखना पड़ेगा।"

वल्लभभाअी: "अिन लोगोंको अितना-सा लिखें, तो पुरुषोत्तमदासके लिअे ज़्यादा किसलिअे?"

बापू: "क्योंकि अुससे ज़्यादा आशा रखता हूँ।"

फिर लम्बी चर्चा चली। आखिर दोनोंमेंसे अेक भी पत्र न भेजनेका ही निश्चय रहा।

आनेसे अिनकार कर दें, तो कैसा अच्छा रहे! रंगा आयरने धारा-सभाको मुलतवी रखनेका जो नोटिस दिया, वह बताता है कि वहाँ भी कुछ न कुछ हो रहा है। धारा-सभाको भी लगता होगा कि जब अिस आदमीका अितना अपमान कर रहे हैं, तब हमारा तो पूछना ही क्या?" घूम कर बैठनेके बाद तुरंत ही वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीको तार लिखाया कि "सरकारकी घोषणा पढ़ी। अिसमें नाहक सार्वजनिक खर्च करने, तकलीफ़ देने और मुझे व्यर्थ चिन्तामें डालनेके बजाय मुझे यहाँसे न हटाया जाय, क्योंकि मैं अपनी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखनेवाली अेक भी शर्त नहीं मानूँगा।"

बापूने कहा: "अितने हल्केपनकी आशा मैंने नहीं रखी थी। यह तो अकल्प्य वस्तु कही जा सकती है। मगर ठीक है, वे जो भी करें, अुसमें हमें घाटा नहीं है। यह तार जाने पर भी मुझे निकालेंगे, तो पहले ही दिन अिस हुक्मका अनादर करके चल दूँगा। कल रा० ब० गोविन्दलालके यहाँ जानेकी बात कर रहे थे, तब मेरे जीमें आ रहा था कि अछूत मुहल्लेमें क्यों न जाअूँ? मगर हिम्मत नहीं होती थी। अब हिम्मत आ गअी। बस, वहाँ जाकर ही मरना बहुत अच्छा होगा। अीश्वर मुझे जितनी चाहिये, अुतनी शक्ति दे देता है। अिस तरह चल पड़ना दूसरा दाँडी-कूच हो जायगा। सी० पी० को तो यह सब देखकर अिस्तीफ़ा दे देना चाहिये था। अुनका क्या नुक़सान होगा? परन्तु हमारे लोगोंमें यह चीज़ है कहाँ?"

वल्लभभाअी बोले: "अैसे व्हाअिट हॉलके पास ये लिबरल लोग हक़ माँगनेको जानेवाले हैं!"

फिर अन्त्यज नेताओंके और बम्बअीके नारायणराव देसाअीके आये हुअे पत्रों और तारोंके जवाब दिलवाये। अिन जवाबों पर बहुत चर्चा चली। वल्लभभाअीने आपत्ति की: "जब अिन्हें जवाब देते हैं, तो पुरुषोत्तमदासको किसलिअे नहीं दिया? अुसे बुरा नहीं लगेगा?"

बापू बोले: "पुरुषोत्तमदासको अितना-सा लिखनेसे काम नहीं चल सकता। और भी बहुत कुछ लिखना पड़ेगा।"

वल्लभभाअी: "अिन लोगोंको अितना-सा लिखें, तो पुरुषोत्तमदासके लिअे ज़्यादा किसलिअे?"

बापू: "क्योंकि अुससे ज़्यादा आशा रखता हूँ।"

फिर लम्बी चर्चा चली। आखिर दोनोंमेंसे अेक भी पत्र न भेजनेका ही निश्चय रहा।

अिससे मानसिक शक्तिका व्यर्थ व्यय होता है। अैसा करनेमें समझदारी बिलकुल नहीं है। तेरी अुम्रका मुझे पता नहीं है। लेकिन तेरी अुमर बिलकुल पक गअी हो और तू विकारवश होती हो, तो तेरा शादी करना मैं पसन्द करूँगा। अगर तू वयस्क है, तो तुझे विकारोंको क़ाबूमें रखना चाहिये और अपने भावी पतिके साथ पत्र-व्यवहार करनेका लालच न रखना चाहिये। मेरे ख़यालसे तेरी सारी परेशानियोंका हल अिसीमें है।

बापूके आशीर्वाद।"

बरजोरजी भरूचाने तार दिया कि सरकारको जब छह मासका नोटिस दिया, तो जनताको छह हफ्तेका भी नहीं देंगे? अुसे अुत्तर दिया:

"भाअी बरजोरजी,

"आपका तार तो मिलना ही चाहिये न? सीधी बात तो यह है कि अनशन व्रत कोअी आदमी अपने ही ज़ोर पर नहीं ले सकता, ले तो वह मूढ़मति है। अपने लिअे तो मैं कह सकता हूँ कि यह व्रत मैंने नहीं लिया, अीश्वरने मुझसे लिवाया है। तारीख भी अुसीने निर्माण की है। तारीख बदलनेके नियम भी अुसीने बनाये हैं। अिन नियमोंमें आपका आग्रह नहीं आ सकता। अब क्या किया जाय?

"दूसरी सीधी बात यह है कि क़ैदी अपने आप और अपनी अिच्छासे बाहरकी दुनियाको कुछ कह नहीं सकता। अिसलिअे मैं जो कर रहा था, अुसका अेक शब्द भी यदि टेढ़े-मेढ़े तरीक़ेसे जनता तक पहुँचाता, तो सत्याग्रहीकी हैसियतसे मैं पापमें पड़ता। सत्याग्रही क़ैदी स्वेच्छासे जेलके क़ानूनोंका पालन करता है; और अुसे तोड़नेका कोअी भी समय आये, तो खुले तौर पर ही तोड़ सकता है। अिसलिअे क़ैदीके नाते तो सरकारको जो नोटिस मिला, वह जनताको ही मिला माना जायगा — यानी जनताको जानकारी कराना तो सरकारकी ही न्यायप्रियता पर था। जनताको जल्दी जानकारी नहीं हुअी, तो अिसका हमें यही अर्थ करना चाहिये कि अीश्वरने यह नहीं सोचा था कि जनताको जल्दी मालूम हो। जनताकी असुविधा दूर करनेके लिअे मैं कैसे मियाद बढ़ा सकता हूँ? लेकिन जो लोग खुदापरस्त हैं, वे यह क्यों न मानें कि अगर अीश्वरको मुझसे ज्यादा सेवा लेनी होगी, तो अुपवासके बावजूद भी वह मेरी ज़िन्दगी आवश्यक दिनों तक टिकाये रखेगा? आप तो खुदापरस्त हैं ही। अिसलिअे मेरे अिस पत्रको समझकर अिसका अर्थ जो भाअी-बहन व्याकुल हों, अुन्हें समझाना और दिलासा देना। साथियोंका धर्म अिस समय सामने आये हुअे कामको वेगपूर्वक करते रहना है। परिणाम अीश्वरको जो पैदा करना होगा, वह करेगा।

अिससे मानसिक शक्तिका व्यर्थ व्यय होता है। अैसा करनेमें समझदारी बिलकुल नहीं है। तेरी अुम्रका मुझे पता नहीं है। लेकिन तेरी अुमर बिलकुल पक गअी हो और तू विकारवश होती हो, तो तेरा शादी करना मैं पसन्द करूँगा। अगर तू वयस्क है, तो तुझे विकारोंको क़ाबूमें रखना चाहिये और अपने भावी पतिके साथ पत्र-व्यवहार करनेका लालच न रखना चाहिये। मेरे खयालसे तेरी सारी परेशानियोंका हल अिसीमें है।

बापूके आशीर्वाद।"

बरजोरजी भरूचाने तार दिया कि सरकारको जब छह मासका नोटिस दिया, तो जनताको छह हफ्तेका भी नहीं देंगे? अुसे अुत्तर दिया:

"भाअी बरजोरजी,

"आपका तार तो मिलना ही चाहिये न? सीधी बात तो यह है कि अनशन व्रत कोअी आदमी अपने ही ज़ोर पर नहीं ले सकता, ले तो वह मूढ़मति है। अपने लिअे तो मैं कह सकता हूँ कि यह व्रत मैंने नहीं लिया, अीश्वरने मुझसे लिवाया है। तारीख भी अुसीने निर्माण की है। तारीख बदलनेके नियम भी अुसीने बनाये हैं। अिन नियमोंमें आपका आग्रह नहीं आ सकता। अब क्या किया जाय?

"दूसरी सीधी बात यह है कि क़ैदी अपने आप और अपनी अिच्छासे बाहरकी दुनियाको कुछ कह नहीं सकता। अिसलिअे मैं जो कर रहा था, अुसका अेक शब्द भी यदि टेढ़े-मेढ़े तरीक़ेसे जनता तक पहुँचाता, तो सत्याग्रहीकी हैसियतसे मैं पापमें पड़ता। सत्याग्रही क़ैदी स्वेच्छासे जेलके क़ानूनोंका पालन करता है; और अुसे तोड़नेका कोअी भी समय आये, तो खुले तौर पर ही तोड़ सकता है। अिसलिअे क़ैदीके नाते तो सरकारको जो नोटिस मिला, वह जनताको ही मिला माना जायगा — यानी जनताको जानकारी कराना तो सरकारकी ही न्यायप्रियता पर था। जनताको जल्दी जानकारी नहीं हुअी, तो अिसका हमें यही अर्थ करना चाहिये कि अीश्वरने यह नहीं सोचा था कि जनताको जल्दी मालूम हो। जनताकी असुविधा दूर करनेके लिअे मैं कैसे मियाद बढ़ा सकता हूँ? लेकिन जो लोग खुदापरस्त हैं, वे यह क्यों न मानें कि अगर अीश्वरको मुझसे ज्यादा सेवा लेनी होगी, तो अुपवासके बावजूद भी वह मेरी ज़िन्दगी आवश्यक दिनों तक टिकाये रखेगा? आप तो खुदापरस्त हैं ही। अिसलिअे मेरे अिस पत्रको समझकर अिसका अर्थ जो भाअी-बहन व्याकुल हों, अुन्हें समझाना और दिलासा देना। साथियोंका धर्म अिस समय सामने आये हुअे कामको वेगपूर्वक करते रहना है। परिणाम अीश्वरको जो पैदा करना होगा, वह करेगा।

मेनके साथ मनका और हृदयके साथ हृदयका होता है; और ये तो दुनियाके पूर्व और पश्चिमके सिरों पर बैठे होने पर भी अेक क्षणके भीतर मिल सकनेकी शक्ति रखते हैं। और जहाँ अिनका मिलाप न हो, वहाँ मिट्टीके पुतले बहुत नज़दीक और गहरे मिले हुअे हों, तो भी मनोंमें अुत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुवके बराबर फ़र्क हो सकता है। अिसलिअे मिट्टीके साथ मिलनेका कोअी मूल्य नहीं रह जाता। लेकिन मिट्टीके पुतलेमें जीव हिल-डुल रहा हो, तभी हमें मिलना अच्छा लगता है। अिसीको सबसे बड़ा मोह कहते हैं; और यह न निकल जाय, तब तक हम लोहेसे भी ज़्यादा सख्त बेड़ियोंमें जकड़े हुअे हैं। मगर यह सब बुद्धिसे जान लेनेसे ही कोअी लाभ नहीं। यह हृदयमें पैठना चाहिये। और यह ज्ञान जिसके हृदयमें अुतर गया है, अुसे सब कुछ मिल गया। मगर अिस ज्ञानके प्राप्त करनेमें कितने ही जन्म बीत जायँ, तो भी थोड़े ही रहेंगे। अिसलिअे गीताकी ध्वनि यह है कि कर्तव्य करते-करते शरीरको घिस डालें। अनासक्ति या निर्मोह अिसीसे पैदा हो सकता है।"

बिड़लाको तार दिया। अुसमें यह लिखा था कि "यहाँसे मैं कोअी हिदायत नहीं दे सकता"। अिसे यहाँकी सरकारने तो पास कर दिया, मगर बंगाल सरकार या किसी और सरकारने निकाल डाला और 'यहाँसे' छपा ही नहीं — न 'टाअिम्स' में, न 'क्रॉनिकल' में। अिससे यह समझा जा सकता है कि अिस मामलेमें सरकारकी मदद देनेकी कितनी अिच्छा है। राजाजी दो दिनसे आकर बैठे हैं, तो भी अुन्हें मिलनेकी अिजाज़त नहीं मिल सकी। दो दिन हुअे अखबारोंके लिअे बयान दिया है, वह अब छपता है! अिंडिया लीग डेलिगेशनके मित्रोंने हॅरेबिनको रोक कर होरको और 'डेली हेरल्ड'को तार दिये हैं।

बापू कहने लगे: "मगर वहाँका मुसोलिनी सुने, तब न कुछ हो! सेम्युअल होर तो फ़ासिस्ट है। वहाँ बैठा-बैठा हुक्म ज़ारी करता है। आज वहाँ फ़ासिज़्म नहीं तो और क्या है? अुसकी 'फ़ोर्थ सील' में भी फ़ासिज़्म दिखाअी देता है। हाँ, यह बात सही है कि अुसमें सिर्फ अेक प्रकारकी पारदर्शकता है।"

* * *

आजकी डाकमें अेक-दो अपूर्व सौन्दर्यवाले पत्र थे:

"प्यारे छोटेसे करुणाके अवतार और भावीके भाग्यविधाता,

"अेक आधुनिक कविके शब्दोंमें कहूँ, तो आपने 'अपने भले और कृपालु स्वभावके विरुद्ध जा कर' दुनिया पर अचानक वज्राघात किया है। गाफ़िल दुनिया तो आपके बलिदानकी बात सुन कर चौंक गअी है और आश्चर्य, भय, दुःख और निराशाकी मिश्र भावनायें अनुभव कर रही

मनके साथ मनका और हृदयके साथ हृदयका होता है; और ये तो दुनियाके पूर्व और पश्चिमके सिरों पर बैठे होने पर भी अेक क्षणके भीतर मिल सकनेकी शक्ति रखते हैं। और जहाँ अिनका मिलाप न हो, वहाँ मिट्टीके पुतले बहुत नज़दीक और गहरे मिले हुअे हों, तो भी मनोंमें अुत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुवके बराबर फ़र्क़ हो सकता है। अिसलिअे मिट्टीके साथ मिलनेका कोअी मूल्य नहीं रह जाता। लेकिन मिट्टीके पुतलेमें जीव हिल-डुल रहा हो, तभी हमें मिलना अच्छा लगता है। अिसीको सबसे बड़ा मोह कहते हैं; और यह न निकल जाय, तब तक हम लोहेसे भी ज़्यादा सख्त बेड़ियोंमें जकड़े हुअे हैं। मगर यह सब बुद्धिसे जान लेनेसे ही कोअी लाभ नहीं। यह हृदयमें पैठना चाहिये। और यह ज्ञान जिसके हृदयमें अुतर गया है, अुसे सब कुछ मिल गया। मगर अिस ज्ञानके प्राप्त करनेमें कितने ही जन्म बीत जायँ, तो भी थोड़े ही रहेंगे। अिसलिअे गीताकी ध्वनि यह है कि कर्तव्य करते-करते शरीरको घिस डालें। अनासक्ति या निर्मोह अिसीसे पैदा हो सकता है।"

बिड़लाको तार दिया। अुसमें यह लिखा था कि "यहाँसे मैं कोअी हिदायत नहीं दे सकता"। अिसे यहाँकी सरकारने तो पास कर दिया, मगर बंगाल सरकार या किसी और सरकारने निकाल डाला और 'यहाँसे' छपा ही नहीं — न 'टाअिम्स' में, न 'क्रॉनिकल' में। अिससे यह समझा जा सकता है कि अिस मामलेमें सरकारकी मदद देनेकी कितनी अिच्छा है। राजाजी दो दिनसे आकर बैठे हैं, तो भी अुन्हें मिलनेकी अिजाज़त नहीं मिल सकी। दो दिन हुअे अखबारोंके लिअे बयान दिया है, वह अब छपता है! अिंडिया लीग डेलिगेशनके मित्रोंने हॉरेबिनको रोक कर होरको और 'डेली हेरल्ड' को तार दिये हैं।

बापू कहने लगे: "मगर वहाँका मुसोलिनी सुने, तब न कुछ हो! सेम्युअल होर तो फ़ासिस्ट है। वहाँ बैठा-बैठा हुक्म ज़ारी करता है। आज वहाँ फ़ासिज़्म नहीं तो और क्या है? अुसकी 'फ़ोर्थ सील' में भी फ़ासिज़्म दिखाअी देता है। हाँ, यह बात सही है कि अुसमें सिर्फ़ अेक प्रकारकी पारदर्शकता है।"

* * *

आजकी डाकमें अेक-दो अपूर्व सौन्दर्यवाले पत्र थे:

"प्यारे छोटेसे करुणाके अवतार और भावीके भाग्यविधाता,

"अेक आधुनिक कविके शब्दोंमें कहूँ, तो आपने 'अपने भले और कृपालु स्वभावके विरुद्ध जा कर' दुनिया पर अचानक वज्राघात किया है। गाफ़िल दुनिया तो आपके बलिदानकी बात सुन कर चौंक गअी है और आश्चर्य, भय, दुःख और निराशाकी मिश्र भावनायें अनुभव कर रही

मैंने सदा अनुपम सचाअी, अगाध समझदारी और सुन्दर भावनाके दर्शन किये हैं। जब संसार पैबन्द लगी हुअी कमली वाला पागल मानकर आपकी हँसी अुड़ाता था, तब मैंने आप पर अपनी श्रद्धा प्रगट की है। जब मेरी अपनी बुद्धि और विवेक आपके निर्णयों और कार्यक्रमोंको मानते नहीं थे, तब भी अेक चिर साथीके प्रति मैंने अपनी अटल वफादारी, प्रेम और विश्वासको अखण्ड रखा है। अिस प्रकार आपसे आज्ञा रूपमें माँग करनेका मेरा हक़ है। वह माँग यह है कि जिस हेतुकी आपके बलिदानकी भव्यताके साथ किसी भी तरह तुलना नहीं हो सकती, अुस पर अितनी बड़ी कुरबानी आप न कीजिये।

"अेक ब्रिटिश मन्त्रीकी राजनीतिक युक्तिको अेक आगन्तुक प्रसंग मानने लायक़ सप्रमाणता, वास्तविकता और प्रस्तुतता परखनेकी आपकी विशद और तीव्र बुद्धि कहाँ गअी? यह प्रसंग भले ही महत्त्वका हो, मगर अुसका महत्त्व तात्कालिक ही है। अिसकी वेदी पर आपके जीवन जैसा मूल्यवान और अपार महत्त्वका बलिदान भी कहीं हो सकता है? दरअसल विवाद आपके और ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीके बीच नहीं, बल्कि आपके और हिन्दू समाजके बीच है। ज़रूरत हो तो अिस सदियों पुराने अन्यायको दूर करनेसे अिनकार करने पर आप हिन्दू समाजको चुनौती दीजिये, और अुसे अपने आत्मोत्सर्गकी वेदी बनाअिये। आपके पास क्या सात-सात जीवन देनेको हैं? हे भावीके भाग्यविधाता, मैं तो कहती हूँ कि अैसे सात-सात जीवन हों, तो भी अिस शताब्दियों पुराने पापको धोनेके लिअे आप अुन्हें अर्पण कीजिये। अछूतपनका भयंकर कलंक, ज़रूरत हो तो, आपके जैसे पवित्र रक्तसे जब तक नहीं धुलेगा, तब तक हमारे राष्ट्रकी मुक्ति नहीं, हमारे राष्ट्रके जीवनमें प्राण नहीं आयेंगे। अिससे छोटे किसी भी मुद्दे पर आपको प्राण देनेका अधिकार नहीं है। जाति, राष्ट्र, देश या संस्कृति किसीका भी भेदभाव रखे बिना दुनियाकी निरंतर सेवा करनेके लिअे आपका जीवन निर्मित हुआ है। प्रेम, सत्य, करुणा, शान्ति, आशा और मानव-अेकताके आप विश्वप्रतीक हैं। आपके जीवनके अखण्ड स्रोतसे असंख्य स्त्री-पुरुष साहस, आश्वासन और बलके घूँट पीते हैं। . . . अिसलिअे नम्रतापूर्वक और प्रार्थनाके साथ फिर विचार कीजिये कि अीश्वर, जिसका प्रकाश आपके ज़रिये अिस दुनियामें चमक रहा है, क्या चाहता है? समस्त मानव जातिके कल्याणके लिअे, खासकर हिन्दू जातिकी लावारिस और दयापात्र सन्तानोंके लिअे, अधिक स्वीकार्य, अधिक सुन्दर और अधिक निष्पाप बलिदान — आपका जीवन है या आपकी मृत्यु?

"अगर आप अतिशय नम्रतापूर्वक और प्रार्थनामय होकर अपने हृदयमें विराज रहे अीश्वरकी आवाज़ सुननेका प्रयत्न करेंगे, तो हे छोटेसे भाग्यविधाता,

मैंने सदा अनुपम सचाअी, अगाध समझदारी और सुन्दर भावनाके दर्शन किये हैं। जब संसार पैबन्द लगी हुअी कमली वाला पागल मानकर आपकी हँसी अुड़ाता था, तब मैंने आप पर अपनी श्रद्धा प्रगट की है। जब मेरी अपनी बुद्धि और विवेक आपके निर्णयों और कार्यक्रमोंको मानते नहीं थे, तब भी अेक चिर साथीके प्रति मैंने अपनी अटल वफादारी, प्रेम और विश्वासको अखण्ड रखा है। अिस प्रकार आपसे आज्ञा रूपमें माँग करनेका मेरा हक़ है। वह माँग यह है कि जिस हेतुकी आपके बलिदानकी भव्यताके साथ किसी भी तरह तुलना नहीं हो सकती, अुस पर अितनी बड़ी कुरबानी आप न कीजिये।

"अेक ब्रिटिश मन्त्रीकी राजनीतिक युक्तिको अेक आगन्तुक प्रसंग मानने लायक़ सप्रमाणता, वास्तविकता और प्रस्तुतता परखनेकी आपकी विशद और तीव्र बुद्धि कहाँ गअी? यह प्रसंग भले ही महत्त्वका हो, मगर अुसका महत्त्व तात्कालिक ही है। अिसकी वेदी पर आपके जीवन जैसा मूल्यवान और अपार महत्त्वका बलिदान भी कहीं हो सकता है? दरअसल विवाद आपके और ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीके बीच नहीं, बल्कि आपके और हिन्दू समाजके बीच है। ज़रूरत हो तो अिस सदियों पुराने अन्यायको दूर करनेसे अिनकार करने पर आप हिन्दू समाजको चुनौती दीजिये, और अुसे अपने आत्मोत्सर्गकी वेदी बनाअिये। आपके पास क्या सात-सात जीवन देनेको हैं? हे भावीके भाग्यविधाता, मैं तो कहती हूँ कि अैसे सात-सात जीवन हों, तो भी अिस शताब्दियों पुराने पापको धोनेके लिअे आप अुन्हें अर्पण कीजिये। अछूतपनका भयंकर कलंक, ज़रूरत हो तो, आपके जैसे पवित्र रक्तसे जब तक नहीं धुलेगा, तब तक हमारे राष्ट्रकी मुक्ति नहीं, हमारे राष्ट्रके जीवनमें प्राण नहीं आयेंगे। अिससे छोटे किसी भी मुद्दे पर आपको प्राण देनेका अधिकार नहीं है। जाति, राष्ट्र, देश या संस्कृति किसीका भी भेदभाव रखे बिना दुनियाकी निरंतर सेवा करनेके लिअे आपका जीवन निर्मित हुआ है। प्रेम, सत्य, करुणा, शान्ति, आशा और मानव-अेकताके आप विश्वप्रतीक हैं। आपके जीवनके अखण्ड स्रोतसे असंख्य स्त्री-पुरुष साहस, आश्वासन और बलके घूँट पीते हैं।... अिसलिअे नम्रतापूर्वक और प्रार्थनाके साथ फिर विचार कीजिये कि अीश्वर, जिसका प्रकाश आपके ज़रिये अिस दुनियामें चमक रहा है, क्या चाहता है? समस्त मानव जातिके कल्याणके लिअे, खासकर हिन्दू जातिकी लावारिस और दयापात्र सन्तानोंके लिअे, अधिक स्वीकार्य, अधिक सुन्दर और अधिक निष्पाप बलिदान — आपका जीवन है या आपकी मृत्यु?

"अगर आप अतिशय नम्रतापूर्वक और प्रार्थनामय होकर अपने हृदयमें विराज रहे अीश्वरकी आवाज़ सुननेका प्रयत्न करेंगे, तो हे छोटेसे भाग्यविधाता,

अिस सँकरी गलीमेंसे सीधा रहकर पार हो जानेका अीश्वर मुझे बल दे। हिन्दू धर्मको जीना है, तो अछूतपनको मरना ही होगा।

"यह हो सकता है कि यह मेरा तुम्हारे नाम आखिरी ही खत हो। तुम्हारे प्रेमको मैंने हमेशा क़ीमती खज़ाना माना है। मैं मानता हूँ कि १९१४ में मैंने तुम्हें क्राअिटेरियनमें पहले-पहल देखा और सुना, तभीसे मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हूँ। मैं मरूँगा, तो यह श्रद्धा लेकर मरूँगा कि अीश्वरकी कृपासे मुझे तुम्हारे जैसे साथी मिले हैं, और जिस भावनासे हमने देशका काम शुरू किया था, अुसी भावनासे वे अुसे जारी रखेंगे। हमारे देशका काम पूरी तरह मानवताका काम है। देशका हित समस्त मानव-हितके साथ हमें सुसंगत रखना हो, अेक धर्म-सम्प्रदायका हित हमें अिस तरह करना हो कि अुसमें दुनियाके तमाम धर्म-सम्प्रदायोंका हित हो, तो वह मन, वचन और कर्मसे सत्य और अहिंसाका संपूर्ण पालन करनेसे ही हो सकेगा।

"अब अपनी मर्यादाअें समझनेके लिअे अेक छोटा-सा पाठ दे दूँ। तुम्हें मिठाअियाँ अच्छी बनानी आती होंगी। परन्तु अिससे यह न मान लेना चाहिये कि तुम्हें रोटी भी अच्छी बनाना आता है या तुम्हें अच्छी रोटीकी परख है। मेरी गेहूँके रंगकी रोटी तुम्हारी 'सुन्दर सफ़ेद रोटी'से सचमुच ही बढ़िया है। अिसका मज़ेदार और जानने लायक अितिहास है। यह तुम मेज़र भण्डारीसे, वे कहें तो, सुन लेना। यहाँ तो मेरी स्वादिष्ट और सुपाच्य गेहूँके रंगकी रोटी और चमड़े जैसी चीठी चपातीके बीच चुनाव करनेका प्रश्न था। जिन्हें अैसी चपातियाँ मिलती थीं, अुन्होंने गेहूँके रंगवाली रोटी पसन्द की। पहलेसे ही तुम्हारी माफ़ी मंजूर कर लेता हूँ।"

पद्मजाका सुन्दर पत्र आया था। अुसका जवाब :

"प्रिय पद्मजा,

१८-९-'३२

"तेरा सुन्दर पत्र मेरे लिअे क़ीमती खज़ाना है। अुसके बाद माताजीका प्रेममय अुपदेश आया है। तू मुझे अितना घमण्डी न समझ कि मुझे 'मित्रों, साथियों और हमजोलियोंकी' प्रार्थनाकी ज़रूरत न हो। यह बात सच है कि अपने आसपासकी हवासे, जिसमें मैं साँस लेता हूँ, भी अीश्वर मेरे ज़्यादा निकट है। निर्दोष बालकोंकी प्रार्थनामें मैं अुसीकी अदृश्य अुपस्थिति अनुभव करता हूँ। अुसीके सहारे मैं टिका हुआ हूँ। अिसलिअे तू ज़रूर प्रार्थना करना कि मेरे सामने जो अग्नि-परीक्षा आअी है, अुसमेंसे पार होनेका वह मुझे बल दे।

अिस सँकरी गलीमेंसे सीधा रहकर पार हो जानेका अीश्वर मुझे बल दे। हिन्दू धर्मको जीना है, तो अछूतपनको मरना ही होगा।

"यह हो सकता है कि यह मेरा तुम्हारे नाम आखिरी ही खत हो। तुम्हारे प्रेमको मैंने हमेशा क़ीमती खज़ाना माना है। मैं मानता हूँ कि १९१४ में मैंने तुम्हें काफिटेरियनमें पहले-पहल देखा और सुना, तभीसे मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हूँ। मैं मरूँगा, तो यह श्रद्धा लेकर मरूँगा कि अीश्वरकी कृपासे मुझे तुम्हारे जैसे साथी मिले हैं, और जिस भावनासे हमने देशका काम शुरू किया था, अुसी भावनासे वे अुसे जारी रखेंगे। हमारे देशका काम पूरी तरह मानवताका काम है। देशका हित समस्त मानव-हितके साथ हमें सुसंगत रखना हो, अेक धर्म-सम्प्रदायका हित हमें अिस तरह करना हो कि अुसमें दुनियाके तमाम धर्म-सम्प्रदायोंका हित हो, तो वह मन, वचन और कर्मसे सत्य और अहिंसाका संपूर्ण पालन करनेसे ही हो सकेगा।

"अब अपनी मर्यादाअें समझनेके लिअे अेक छोटा-सा पाठ दे दूँ। तुम्हें मिठाअियाँ अच्छी बनानी आती होंगी। परन्तु अिससे यह न मान लेना चाहिये कि तुम्हें रोटी भी अच्छी बनाना आता है या तुम्हें अच्छी रोटीकी परख है। मेरी गेहूँके रंगकी रोटी तुम्हारी 'सुन्दर सफ़ेद रोटी'से सचमुच ही बढ़िया है। अिसका मज़ेदार और जानने लायक अितिहास है। यह तुम मेजर भण्डारीसे, वे कहें तो, सुन लेना। यहाँ तो मेरी स्वादिष्ट और सुपाच्य गेहूँके रंगकी रोटी और चमड़े जैसी चीठी चपातीके बीच चुनाव करनेका प्रश्न था। जिन्हें अैसी चपातियाँ मिलती थीं, अुन्होंने गेहूँके रंगवाली रोटी पसन्द की। पहलेसे ही तुम्हारी माफ़ी मंजूर कर लेता हूँ।"

पद्मजाका सुन्दर पत्र आया था। अुसका जवाब:

"प्रिय पद्मजा,

१८-९-'३२ "तेरा सुन्दर पत्र मेरे लिअे क़ीमती खज़ाना है। अुसके बाद माताजीका प्रेममय अुपदेश आया है। तू मुझे अितना घमण्डी न समझ कि मुझे 'मित्रों, साथियों और हमजोलियोंकी' प्रार्थनाकी ज़रूरत न हो। यह बात सच है कि अपने आसपासकी हवासे, जिसमें मैं साँस लेता हूँ, भी अीश्वर मेरे ज़्यादा निकट है। निर्दोष बालकोंकी प्रार्थनामें मैं अुसीकी अदृश्य अुपस्थिति अनुभव करता हूँ। अुसीके सहारे मैं टिका हुआ हूँ। अिसलिअे तू ज़रूर प्रार्थना करना कि मेरे सामने जो अग्नि-परीक्षा आअी है, अुसमेंसे पार होनेका वह मुझे बल दे।

"माधवदास और कृष्णा,

"तुम दोनोंके पत्र मिल गये। मेरे व्रतसे बिलकुल घबरानेकी बात ही नहीं। अुसका अुल्लास ही हो सकता है। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। तुम दोनों पर अिसका परिणाम यह हो कि तुम्हारी त्यागवृत्ति और सेवावृत्ति बढ़े। आर्थिक कष्टका अफ़सोस न करके, जो मिल जाय अुसीसे गुज़र चला लेना चाहिये। मेरे अिस शरीरसे सेवा लेनी होगी, तो प्रभु निभा लेगा। अगर सेवा न लेनी होगी, तो अुसका नाश कर देगा। दोनों ही तरहसे ठीक है। मनमें यह विचार दृढ़ रखना चाहिये कि अुसकी अिच्छाके बिना अेक तिनका भी नहीं हिल सकता। मौन लेनेके बाद यह पत्र लिखा है।"

राजगोपालाचार्यजीने थोड़ीसी पंक्तियोंमें अपना हृदय अुँडेल दिया :

"जेलमें आपसे मिलनेकी मैंने जो माँग की, अुसके जवाबमें अिनकारका पत्र सरकारकी तरफ़से अभी मिला। आपने मुझे मद्रास जो पत्र लिखा था, वह मुझे यहाँ मिला। क्योंकि वह मद्रास पहुँचा, अुससे पहले मैं वहाँसे निकल गया था। पत्रके लिअे आपका आभार मानता हूँ। मैं किसलिअे झूठ बोलूँ? मैं आपके अिस फ़ैसलेसे खुश नहीं हो सकता। अिस आत्महत्याका मैं कोअी बचाव नहीं पाता। अीश्वरकी दी हुअी ज़िन्दगीका आपको दुनियाके लिअे अुपयोग करना चाहिये। सोनेका अंडा देनेवाली मुर्गीको आप मारने चले हैं। क्षमा कीजिये। अगर अुस समय तक मुझे मुक्त रहने दिया गया, तो 'आप छूटें' तब मैं आपसे मिलनेकी आशा रखता हूँ। मुझे बहुत दुःख होता है। मेरे पास दूसरे शब्द नहीं हैं। आपको लगेगा कि मैं सत्याग्रहके सिद्धान्त भूल गया हूँ। लेकिन मुझे अैसा नहीं लगता। प्यार।

सी० आर."

अुन्हें जवाब :

"प्रिय सी० आर,

"आपका दुःख देखकर मेरा हृदय द्रवित होता है। अन्तर्नादकी सत्यताके बारेमें मेरे दिलमें ज़रा भी शंका नहीं है। और मुझे यह भी विश्वास है कि आप अन्धकारमेंसे जल्दी ही प्रकाश देख सकेंगे।

बहुत-बहुत प्यार,

बापू।"

डॉ० मुथुका पत्र :

"यह कह रहा हूँ, अिसके लिअे क्षमा कीजियेगा। लेकिन आप जीयें और तन्दुरुस्त रहें, अिसकी हमारे लोगोंको ज़रूरत है। आपके बिना वे क्या करेंगे? बिना मालिकके सूने पशुकी-सी अुनकी हालत हो जायगी।"

"माधवदास और कृष्णा,

"तुम दोनोंके पत्र मिल गये। मेरे व्रतसे बिलकुल घबरानेकी बात हो नहीं। अुसका अुल्लास ही हो सकता है। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। तुम दोनों पर अिसका परिणाम यह हो कि तुम्हारी त्यागवृत्ति और सेवावृत्ति बढ़े। आर्थिक कष्टका अफ़सोस न करके, जो मिल जाय अुसीसे गुज़र चला लेना चाहिये। मेरे अिस शरीरसे सेवा लेनी होगी, तो प्रभु निभा लेगा। अगर सेवा न लेनी होगी, तो अुसका नाश कर देगा। दोनों ही तरहसे ठीक है। मनमें यह विचार दृढ़ रखना चाहिये कि अुसकी अिच्छाके बिना अेक तिनका भी नहीं हिल सकता। मौन लेनेके बाद यह पत्र लिखा है।"

राजगोपालाचार्यजीने थोड़ीसी पंक्तियोंमें अपना हृदय अुँडेल दिया :

"जेलमें आपसे मिलनेकी मैंने जो माँग की, अुसके जवाबमें अिनकारका पत्र सरकारकी तरफ़से अभी मिला। आपने मुझे मद्रास जो पत्र लिखा था, वह मुझे यहाँ मिला। क्योंकि वह मद्रास पहुँचा, अुससे पहले मैं वहाँसे निकल गया था। पत्रके लिअे आपका आभार मानता हूँ। मैं किसलिअे झूठ बोलूँ? मैं आपके अिस फ़ैसलेसे खुश नहीं हो सकता। अिस आत्महत्याका मैं कोअी बचाव नहीं पाता। अीश्वरकी दी हुअी ज़िन्दगीका आपको दुनियाके लिअे अुपयोग करना चाहिये। सोनेका अंडा देनेवाली मुर्गीको आप मारने चले हैं। क्षमा कीजिये। अगर अुस समय तक मुझे मुक्त रहने दिया गया, तो 'आप छूटें' तब मैं आपसे मिलनेकी आशा रखता हूँ। मुझे बहुत दुःख होता है। मेरे पास दूसरे शब्द नहीं हैं। आपको लगेगा कि मैं सत्याग्रहके सिद्धान्त भूल गया हूँ। लेकिन मुझे अैसा नहीं लगता। प्यार।

सी० आर."

अुन्हें जवाब :

"प्रिय सी० आर,

"आपका दुःख देखकर मेरा हृदय द्रवित होता है। अन्तर्नादकी सत्यताके बारेमें मेरे दिलमें ज़रा भी शंका नहीं है। और मुझे यह भी विश्वास है कि आप अन्धकारमेंसे जल्दी ही प्रकाश देख सकेंगे।

बहुत-बहुत प्यार,
बापू।"

डॉ० मुथुका पत्र :

"यह कह रहा हूँ, अिसके लिअे क्षमा कीजियेगा। लेकिन आप जीयें और तन्दुरुस्त रहें, अिसकी हमारे लोगोंको ज़रूरत है। आपके बिना वे क्या करेंगे? बिना मालिकके सूने पशुओं-सी अुनकी हालत हो जायगी।"

सर पुरुषोत्तमदास वग़ैरा जो लोग आये थे, अुन्हें करारके साथ यह लेख बताने लायक था, अिस बातसे भी बापूको बहुत आनंद हुआ ।

बातें सब मेजरकी ग़ैर हाज़िरीमें हुआीं । बापूने थोड़ेमें सब बातोंका सार बताया । वह अुन्हींके शब्दोंमें अिस प्रकार है । कल मौन खुलेगा, तब ज़्यादा पता चलेगा ।

" घनश्यामदास, मथुरादास, पुरुषोत्तमदास और चुनीलाल, अितने लोग मिले । राजा और केलकरको अिनकार कर दिया । अिन लोगोंका अनुमान यह है कि अलग-अलग हर व्यक्तिको अिजाज़त नहीं देंगे, मगर किसी संस्थाकी तरफ़से अिजाज़त माँगी जायगी तो मिलेगी । मेरा अनुमान यह है कि अब क़ैदीके रूपमें ही मुझे रखेंगे, अिसलिअे मिलनेकी छूट दी है । अिन लोगोंसे हम ज़्यादा जानते हैं । मेरा परसों क्या होगा, अिसका अिन लोगोंको कोअी खयाल नहीं है । मैंने सब बातें कह कर करार बताया । करार वे ले गये हैं । कल वापस देंगे । अुसे समझनेमें अुन्हें बाधा नहीं पड़ी । घनश्यामदासने तुरन्त अुसके दो भाग कर दिये । अेक अुपवास तोड़नेके सम्बन्धमें और दूसरा महाराजों वग़ैराके हस्ताक्षर लेनेके सम्बन्धमें । अिस मामलेमें मेरा छः मासका नोटिस लेनेको ये लोग तैयार दिखाअी दिये । बयान भी सारा पढ़ा गया । वह अुन्हें बहुत अच्छा लगा । बाहर जाकर वे बयान देंगे कि मौनके कारण बहुत बात नहीं कर सके, मगर कुछ मुश्किलें दूर हुअी हैं । गांधी देखनेमें तंदुरुस्त और प्रसन्न मालूम हुअे ।

" अिस सारी हलचलके पीछे घनश्यामदास हैं । मुंजेसे बयान दिलानेवाले वही हैं । शायद आम्बेडकरसे अब मिलेंगे । मैंने अेक ही हाथमें सब कुछ सौंपनेके विरुद्ध खूब सचेत कर दिया है । ये लोग मानते हैं कि आम्बेडकर आज यहीं है । अैसा जान पड़ता है कि यह आदमी बेन्थॉलके हाथमें खेल रहा है । ज़रूरत हो तो बेन्थॉलने आकर मदद देनेको कहा है । कारण अल्पमतोंके करारमें अुसका हाथ था । अकेले बिड़लासे मिलनेकी बात तो चल ही रही थी । अितनेमें यह हो गया । बंगालका गवर्नर मेरी मुलाक़ात (राजनैतिक मामलेमें) करानेमें अिसकी मदद कर रहा था । घनश्यामदास बोले कि कलकी मीटिंगमें कुछ नहीं रखा है । आदमी भी थोड़े ही आयेंगे ।

" कल करार बना डाला, यह बहुत ही अच्छा हुआ । आज तो सारा समय समझानेमें ही चला गया । और मुझे यही ठीक लगा । "

छगनलाल जोशी को :

" अनशन व्रतका पूरा रहस्य समझमें आ गया होगा । खबरदार, हिम्मत न हारना । नरम तो पड़ना ही नहीं है । देहसे चिपटे रहनेसे क्या होगा ? देहकी

सर पुरुषोत्तमदास वग़ैरा जो लोग आये थे, अुन्हें करारके साथ यह लेख बताने लायक था, अिस बातसे भी बापूको बहुत आनंद हुआ।

बातें सब मेजरकी गैर हाज़िरीमें हुअीं। बापूने थोड़ेमें सब बातोंका सार बताया। वह अुन्हींके शब्दोंमें अिस प्रकार है। कल मौन खुलेगा, तब ज़्यादा पता चलेगा।

"घनश्यामदास, मथुरादास, पुरुषोत्तमदास और चुनीलाल, अितने लोग मिले। राजा और केलकरको अिनकार कर दिया। अिन लोगोंका अनुमान यह है कि अलग-अलग हर व्यक्तिको अिजाज़त नहीं देंगे, मगर किसी संस्थाकी तरफ़से अिजाज़त माँगी जायगी तो मिलेगी। मेरा अनुमान यह है कि अब क़ैदीके रूपमें ही मुझे रखेंगे, अिसलिअे मिलनेकी छूट दी है। अिन लोगोंसे हम ज़्यादा जानते हैं। मेरा परसों क्या होगा, अिसका अिन लोगोंको कोअी खयाल नहीं है। मैंने सब बातें कह कर करार बताया। करार वे ले गये हैं। कल वापस देंगे। अुसे समझनेमें अुन्हें बाधा नहीं पड़ी। घनश्यामदासने तुरन्त अुसके दो भाग कर दिये। अेक अुपवास तोड़नेके सम्बन्धमें और दूसरा महाराजों वगैराके हस्ताक्षर लेनेके सम्बन्धमें। अिस मामलेमें मेरा छः मासका नोटिस लेनेको ये लोग तैयार दिखाअी दिये। बयान भी सारा पढ़ा गया। वह अुन्हें बहुत अच्छा लगा। बाहर जाकर वे बयान देंगे कि मौनके कारण बहुत बात नहीं कर सके, मगर कुछ मुश्किलें दूर हुअी हैं। गांधी देखनेमें तंदुरुस्त और प्रसन्न मालूम हुअे।

"अिस सारी हलचलके पीछे घनश्यामदास हैं। मुंजेसे बयान दिलानेवाले वही हैं। शायद आम्बेडकरसे अब मिलेंगे। मैंने अेक ही हाथमें सब कुछ सौंपनेके विरुद्ध खूब सचेत कर दिया है। ये लोग मानते हैं कि आम्बेडकर आज यहीं है। अैसा जान पड़ता है कि यह आदमी बेन्थॉलके हाथमें खेल रहा है। ज़रूरत हो तो बेन्थॉलने आकर मदद देनेको कहा है। कारण अल्पमतोंके करारमें अुसका हाथ था। अकेले बिड़लासे मिलनेकी बात तो चल ही रही थी। अितनेमें यह हो गया। बंगालका गवर्नर मेरी मुलाक़ात (राजनैतिक मामलेमें) करानेमें अिसकी मदद कर रहा था। घनश्यामदास बोले कि कलकी मीटिंगमें कुछ नहीं रखा है। आदमी भी थोड़े ही आयेंगे।

"कल करार बना डाला, यह बहुत ही अच्छा हुआ। आज तो सारा समय समझानेमें ही चला गया। और मुझे यही ठीक लगा।"

छगनलाल जोशी को:

"अनशन व्रतका पूरा रहस्य समझमें आ गया होगा। खबरदार, हिम्मत न हारना। नरम तो पड़ना ही नहीं है। देहसे चिपटे रहनेसे क्या होगा? देहकी

परन्तु अनशन करते-करते जीनेकी कला कैसी है? अेक शर्त ज़रूर है। तमाम माताओंको जोगन बनकर बाहर निकल पड़ना होगा और अछूतोंको स्पृश्य बनाकर खुद अीश्वरकी शक्ति होनेका अपना दावा साबित करना पड़ेगा। अितना करना। और फिर 'अ' वर्गकी ही खुराक खाती रहना। लेकिन कोअी 'अ' वर्गकी न दें, तो 'क' वर्गकी खुराकसे सन्तोष कर लेना।

"मगर मान लो जोगनोंकी भी कुछ न चली, तो फिर भले ही यह पुतला अभी टूट-फूट जाय। मैं तो जीअूँगा ही। जब तक अेक भी माता मेरा काम करती रहेगी, तब तक कौन कहेगा कि मैं मर गया? हम भले ही आत्माकी अमरता सम्बन्धी गीताका तत्वज्ञान छोड़ दें। पर मैंने जो अमरता बताअी, वह तो चमड़ेकी आँखोंसे भी दिखाअी दे सकती है। अिसलिअे खबरदार! ज़रा भी मत घबराना। शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन अीश्वरको सौंप कर सुखी होना और सुखी रहना। नखराखोर ओमको और ज्ञानी मदाल्साको आज नहीं लिखा जा सकता। यह तुम सबके लिअे है, अैसा समझ लेना। अखण्ड सौभाग्य भोगो।

बापूके आशीर्वाद।"

अपने बड़े भाअी खुशालभाअीको:

"जिस यज्ञका कल आरंभ होता है, वह आपको पसन्द आया होगा। अगर वह आपको धर्मसंगत लगा हो, तो अंजली भरकर दोनों बुजुर्ग आशीर्वाद भेजना। अगर आपसे पहले चला जाअूँ, तो शोक न करना। परन्तु यह जानकर खुश होना कि आपको अैसा छोटा भाअी मिला, जिसे अीश्वरने अैसा यज्ञ पूरा करनेकी शक्ति दी। आपने भाअीसे ज्यादा मेरी ज़रूरत पूरी की है। मेरी भाभीको आराम हो गया होगा।

"अिस प्रातःकालमें सिर नमाते हुअे आपके छोटे भाअी,

मोहनदासका दोनोंको प्रणाम।"

. . . को:

"तुम्हारा अत्यंत सुन्दर पत्र पढ़ कर हम सबको बड़ा हर्ष हुआ। तुम बहुत अूँचे पहुँच गये हो। और भी अूँचे जाना। अीश्वर तुम्हें ज़रूर बल देगा। तुम्हारे खतका जवाब तो लम्बा देना चाहिये। मगर अभी अुतना वक्त नहीं दे सकता। यह पत्र रख छोड़ूँगा। समय और शक्ति होगी, तो लिखूँगा। नहीं तो कोअी बात नहीं। अिस यज्ञसे तुम या कोअी भाअी घबराये न होंगे। अीश्वर ही अिसे करा रहा है, वही अिसे पार लगायेगा। अिस अछूतपनको मिटानेके लिअे हमें कितने यज्ञ करने पड़ेंगे, सो नहीं कहा जा सकता। अुसके लिअे तैयार होना। तैयारीका अर्थ आत्मशुद्धि ही है। आत्मशुद्धिमें कार्यदक्षता आ ही जाती है।

परन्तु अनशन करते-करते जीनेकी कला कैसी है? अेक शर्त ज़रूर है। तमाम माताओंको जोगन बनकर बाहर निकल पड़ना होगा और अछूतोंको स्पृश्य बनाकर खुद अीश्वरकी शक्ति होनेका अपना दावा साबित करना पड़ेगा। अितना करना। और फिर 'अ' वर्गकी ही खुराक खाती रहना। लेकिन कोअी 'अ' वर्गकी न दें, तो 'क' वर्गकी खुराकसे सन्तोष कर लेना।

"मगर मान लो जोगनोंकी भी कुछ न चली, तो फिर भले ही यह पुतला अभी टूट-फूट जाय। मैं तो जीअूँगा ही। जब तक अेक भी माता मेरा काम करती रहेगी, तब तक कौन कहेगा कि मैं मर गया? हम भले ही आत्माकी अमरता सम्बन्धी गीताका तत्वज्ञान छोड़ दें। पर मैंने जो अमरता बताअी, वह तो चमड़ेकी आँखोंसे भी दिखाअी दे सकती है। अिसलिअे खबरदार! ज़रा भी मत घबराना। शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन अीश्वरको सौंप कर सुखी होना और सुखी रहना। नखराखोर ओमको और ज्ञानी मदाल्साको आज नहीं लिखा जा सकता। यह तुम सबके लिअे है, अैसा समझ लेना। अखण्ड सौभाग्य भोगो।

बापूके आशीर्वाद।"

अपने बड़े भाअी खुशालभाअीको :

"जिस यज्ञका कल आरंभ होता है, वह आपको पसन्द आया होगा। अगर वह आपको धर्मसंगत लगा हो, तो अंजली भरकर दोनों बुजुर्ग आशीर्वाद भेजना। अगर आपसे पहले चला जाअूँ, तो शोक न करना। परन्तु यह जानकर खुश होना कि आपको अैसा छोटा भाअी मिला, जिसे अीश्वरने अैसा यज्ञ पूरा करनेकी शक्ति दी। आपने भाअीसे ज़्यादा मेरी ज़रूरत पूरी की है। मेरी भाभीको आराम हो गया होगा।

"अिस प्रातःकालमें सिर नमाते हुअे आपके छोटे भाअी,

मोहनदासका दोनोंको प्रणाम।"

. . . को :

"तुम्हारा अत्यंत सुन्दर पत्र पढ़ कर हम सबको बड़ा हर्ष हुआ। तुम बहुत अूँचे पहुँच गये हो। और भी अूँचे जाना। अीश्वर तुम्हें ज़रूर बल देगा। तुम्हारे खतका जवाब तो लम्बा देना चाहिये। मगर अभी अुतना वक्त नहीं दे सकता। यह पत्र रख छोड़ूँगा। समय और शक्ति होगी, तो लिखूँगा। नहीं तो कोअी बात नहीं। अिस यज्ञसे तुम या कोअी भाअी घबराये न होंगे। अीश्वर ही अिसे करा रहा है, वही अिसे पार लगायेगा। अिस अछूतपनको मिटानेके लिअे हमें कितने यज्ञ करने पड़ेंगे, सो नहीं कहा जा सकता। अुसके लिअे तैयार होना। तैयारीका अर्थ आत्मशुद्धि ही है। आत्मशुद्धिमें कार्यदक्षता आ ही जाती है।

पकड़ लेना और सुधार करना चाहिये। जो ग़लत जान पड़े, अुसके बारेमें तटस्थ रहना चाहिये। मनुष्योंको जैसा लगे, वैसा कहनेका अधिकार है। और कोअी-कोअी तो केवल द्वेष-भावसे भी निन्दा कर सकते हैं। अैसी निन्दाका तो विचार ही नहीं करना चाहिये।

"तुम्हारी अशान्तिके बारेमें। अुसके दो कारण हैं। अेक तो तुम्हें अपने कामसे सन्तोष नहीं रहता। जितना हो सकता है, अुससे बहुत ज़्यादा करनेका लोभ रहता है। हदके भीतर यह लोभ अच्छा है। हदसे बाहर चला जाय, तब वह दुःख देता है। अिससे भी ज़्यादा अशान्तिका कारण तुम्हारी असहिष्णुता है। जितना तुम कर सकती हो, अुतना दूसरा न करे या तुम्हारी न माने, तो तुम्हें बेचैनी होती है। अिसकी दवा आसान है। जितना काम तन-मनसे करने पर हो सके, अुतनेसे सन्तोष करना और जितना आगे बढ़ा जा सके, आगे बढ़ते जाना चाहिये। अितना जान लो कि स्वर्ग जानेका जितना अधिकार वेद जाननेवालेको है, अुतना ही भंगीका काम करनेवालेको है। लेकिन वेद जाननेवाला केवल वेदिया या पाखंडी हो, तो कितना ही विद्वान होने पर भी वह नरकमें पड़ेगा; और भंगी ब्रह्म अक्षर न जाने, तो भी अीश्वरार्पण बुद्धिसे पाखाने साफ़ करे तो ज़रूर अूँचा चढ़ जायेगा। यह सन्तोष तो अेक दवा हुअी। दूसरी, अुदारता है। हम चाहें या करें, अुतना दूसरे न करें, तो भी मनको बुरा न लगना चाहिये। अैसा करनेसे ही समाजके निकट रह कर भी शान्ति क़ायम रख सकेंगे। अिस पत्र पर नाथके साथ दो-चार बार विचार कर लेना। तुम शोभित होना और आश्रमको शोभित करना।"

पुत्रवधू नीमूको :

"तू ज़रा भी न घबराना। रामदास जैसा वीर और साधु तुझे सौंपा है, फिर तू किस लिअे घबराये? मुझे कहाँ तक बचाकर रखोगे; और रखना ही हो तो मैं तो रोज़ ही तुम सबके पास मौजूद हूँ। देह तो जड़ है। अुसका क्या करेगी? शुक्रवारको रामदासके साथ दो घंटे बैठा था। अुसने ज़रा भी घबराहट नहीं दिखाअी। मैं पिता और शिक्षकके नाते फूला न समाया। तू भी अैसी ही बनना और बच्चोंको सँभालना। घी-दूध लेती रहना।"

"चि० नानीबहन झवेरी,

"अितने अधिक दिन तक मुझे पत्रके बिना तरसाया, अुसकी माफी तो नहीं देनी चाहिये। मगर यज्ञका आरंभ करते समय तो बड़ेसे बड़े वैरीको भी माफी दी जाय, तभी यज्ञ सफल होता है। अिसलिअे तुम्हारे जैसी लड़कियोंको माफी न दूँ, तो मेरा सफाया ही हो जाय न?"

ड़ लेना और सुधार करना चाहिये। जो ग़लत जान पड़े, अुसके बारेमें तटस्थ
ा चाहिये। मनुष्योंको जैसा लगे, वैसा कहनेका अधिकार है। और कोअी-
भी तो केवल द्वेष-भावसे भी निन्दा कर सकते हैं। अैसी निन्दाका तो
ार ही नहीं करना चाहिये।

"तुम्हारी अशान्तिके बारेमें। अुसके दो कारण हैं। अेक तो तुम्हें अपने
ासे सन्तोष नहीं रहता। जितना हो सकता है, अुससे बहुत ज़्यादा करनेका लोभ
ा है। हदके भीतर यह लोभ अच्छा है। हदसे बाहर चला जाय, तब वह
र देता है। अिससे भी ज़्यादा अशान्तिका कारण तुम्हारी असहिष्णुता है।
ाना तुम कर सकती हो, अुतना दूसरा न करे या तुम्हारी न माने, तो तुम्हें
नी होती है। अिसकी दवा आसान है। जितना काम तन-मनसे करने पर
सके, अुतनेसे सन्तोष करना और जितना आगे बढ़ा जा सके, आगे बढ़ते
ा चाहिये। अितना जान लो कि स्वर्ग जानेका जितना अधिकार वेद जानने-
को है, अुतना ही भंगीका काम करनेवालेको है। लेकिन वेद जाननेवाला केवल
या या पाखंडी हो, तो कितना ही विद्वान होने पर भी वह नरकमें पड़ेगा;
: भंगी ब्रह्म अक्षर न जाने, तो भी अीश्वरार्पण बुद्धिसे पाखाने साफ़ करे
ज़रूर अूँचा चढ़ जायेगा। यह सन्तोष तो अेक दवा हुअी। दूसरी,
ारता है। हम चाहें या करें, अुतना दूसरे न करें, तो भी मनको बुरा न
ना चाहिये। अैसा करनेसे ही समाजके निकट रह कर भी शान्ति क़ायम
सकेंगे। अिस पत्र पर नाथके साथ दो-चार बार विचार कर लेना।
शोभित होना और आश्रमको शोभित करना।"

पुत्रवधू नीमूको :

"तू ज़रा भी न घबराना। रामदास जैसा वीर और साधु तुझे सौंपा
फिर तू किस लिअे घबराये? मुझे कहाँ तक बचाकर रखोगे; और रखना
हो तो मैं तो रोज़ ही तुम सबके पास मौजूद हूँ। देह तो जड़ है। अुसका
करेगी? शुक्रवारको रामदासके साथ दो घंटे बैठा था। अुसने ज़रा भी
ाहट नहीं दिखाअी। मैं पिता और शिक्षकके नाते फूला न समाया।
भी अैसी ही बनना और बच्चोंको सँभालना। घी-दूध लेती रहना।"

"चि० नानीबहन झवेरी,

"अितने अधिक दिन तक मुझे पत्रके बिना तरसाया, अुसकी माफ़ी तो
देनी चाहिये। मगर यज्ञका आरंभ करते समय तो बड़ेसे बड़े वैरीको भी
ी दी जाय, तभी यज्ञ सफल होता है। अिसलिअे तुम्हारे जैसी लड़कियोंको
ी न दूँ, तो मेरा सफाया ही हो जाय न?"

“ अीसाअी सेवा संघके प्यारे भाअियो और बहनो,

“ फूलोंकी भेटके बिना भी मैं जानता हूँ कि आपके हृदय और आपकी प्रार्थनाअें मेरे पास ही हैं। फिर भी अुनके अिस प्रतीकको मैं क़ीमती मानता हूँ।

प्यार, बापू। ”

छोटी कुसुमने पूछा था कि लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब अुन्हें तुरंत ब्याह देनेकी बात कैसे करते हैं ? और लड़के बीमार पड़ते हैं, तब तो शादी कर देनेकी बात नहीं करते। अुसे लिखा : “ मेरे व्रतसे तुझे घबराना नहीं है। अपने धर्मके लायक़ आराम लेकर अपना शरीर बनाना है। अिस बारेमें ज़्यादा क्या लिखूँ ? लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब शादी कर देनेकी बात करनेवाले अज्ञानी हैं। विवाहिता स्त्रियाँ जितनी बीमार रहती हैं, अुतनी कुमारियाँ कहीं नहीं रहतीं। और तूने लड़कोंके साथ तुलना की, सो भी ठीक है। फिर भी हमें अिस तानेका सीधा ही अर्थ करना चाहिये और बीमार पड़ना ही न चाहिये। बीमार न पड़नेके लिअे जैसा मैंने लिखा है, वैसे थोड़े ज्ञानकी ज़रूरत तो है ही। कुमारियोंके शरीर वज्रके समान होने चाहियें, वैसे ही कुमारोंके। सच पूछा जाय, तो आजकल दोनों ही बीमार रहते हैं। लेकिन दोनों ब्याह करके और भी ज़्यादा बीमार रहते हैं। देखो अुमिया, रूखी, हरिअिच्छाको। रूखीको विवाह फला हो, अैसा कुछ लगा ज़रूर मगर, अितनेमें तो वह भी बीमार पड़ गअी। अिससे लड़कियाँ यह भी अर्थ न कर डालें कि जो ब्याह करती हैं, वे बीमार पड़ती ही हैं। यह सही है कि जो कुमारियाँ विकारसे जलती हैं, अुनका छुटकारा तो शादी करनेसे ही होगा। क्योंकि अुनके विकार अुन्हें खा जाते हैं। मगर अिसका अर्थ तो यह हुआ कि वे विवाह किये बिना ही विवाहिता स्त्री की तरह व्यवहार करती हैं। अिसलिअे व्यभिचारिणी हैं। जो स्त्री या पुरुष मनसे भी विकारोंको पोषण देता है, वह व्यभिचारी ही है।

बापूके आशीर्वाद ”

लड़कों और लड़कियोंको :

“ तुम्हें कौन सी छूट पहले मिलती थी, जो अब नहीं मिलती ? यह सही हो, तो अेक डेपुटेशन लेकर नारणदास भाअीके पास जाओ। अुनके तीन मिनट अपनी बातोंमें लेना और दो अुन्हें जवाबके लिअे देना चाहिये। फिर अगर मैं अपने बिस्तर पर करवटें बदलता होअूँ, तो मुझे लिखना; और मैंने आखिरी नींद ले ली हो, तो नाचना और प्रतिज्ञा लेना कि बापूका काम अब हम करेंगे। कैसा आनंद, कैसा मज़ा ! अैसी अग्नि-परीक्षाके लिअे सब तैयार होना। ”

"अीसाअी सेवा संघके प्यारे भाअियो और बहनो,

"फूलोंकी भेटके बिना भी मैं जानता हूँ कि आपके हृदय और आपकी प्रार्थनाअें मेरे पास ही हैं। फिर भी अुनके अिस प्रतीकको मैं क़ीमती मानता हूँ।

प्यार, बापू।"

छोटी कुसुमने पूछा था कि लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब अुन्हें तुरंत ब्याह देनेकी बात कैसे करते हैं? और लड़के बीमार पड़ते हैं, तब तो शादी कर देनेकी बात नहीं करते। अुसे लिखा: "मेरे व्रतसे तुझे घबराना नहीं है। अपने धर्मके लायक आराम लेकर अपना शरीर बनाना है। अिस बारेमें ज़्यादा क्या लिखूँ? लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं, तब शादी कर देनेकी बात करनेवाले अज्ञानी हैं। विवाहिता स्त्रियाँ जितनी बीमार रहती हैं, अुतनी कुमारियाँ कहीं नहीं रहतीं। और तूने लड़कोंके साथ तुलना की, सो भी ठीक है। फिर भी हमें अिस तानेका सीधा ही अर्थ करना चाहिये और बीमार पड़ना ही न चाहिये। बीमार न पड़नेके लिअे जैसा मैंने लिखा है, वैसे थोड़े ज्ञानकी ज़रूरत तो है ही। कुमारियोंके शरीर वज्रके समान होने चाहियें, वैसे ही कुमारोंके। सच पूछा जाय, तो आजकल दोनों ही बीमार रहते हैं। लेकिन दोनों ब्याह करके और भी ज़्यादा बीमार रहते हैं। देखो अुमिया, रूखी, हरिअिच्छाको। रूखीको विवाह फला हो, अैसा कुछ लगा ज़रूर मगर, अितनेमें तो वह भी बीमार पड़ गअी। अिससे लड़कियाँ यह भी अर्थ न कर डालें कि जो ब्याह करती हैं, वे बीमार पड़ती ही हैं। यह सही है कि जो कुमारियाँ विकारसे जलती हैं, अुनका छुटकारा तो शादी करनेसे ही होगा। क्योंकि अुनके विकार अुन्हें खा जाते हैं। मगर अिसका अर्थ तो यह हुआ कि वे विवाह किये बिना ही विवाहिता स्त्री की तरह व्यवहार करती हैं। अिसलिअे व्यभिचारिणी हैं। जो स्त्री या पुरुष मनसे भी विकारोंको पोषण देता है, वह व्यभिचारी ही है।

बापूके आशीर्वाद"

लड़कों और लड़कियोंको:

"तुम्हें कौन सी छूट पहले मिलती थी, जो अब नहीं मिलती? यह सही हो, तो अेक डेपुटेशन लेकर नारणदास भाअीके पास जाओ। अुनके तीन मिनट अपनी बातोंमें लेना और दो अुन्हें जवाबके लिअे देना चाहिये। फिर अगर मैं अपने बिस्तर पर करवटें बदलता होअूँ, तो मुझे लिखना; और मैंने आखिरी नींद ले ली हो, तो नाचना और प्रतिज्ञा लेना कि बापूका काम अब हम करेंगे। कैसा आनंद, कैसा मज़ा! अैसी अग्नि-परीक्षाके लिअे सब तैयार होना।"

अुस समय नीचे ही बैठता था। अिसमें अेक प्रकारकी जो सचाअी अुस वक्त देखी थी, वह आज तक पाअी जाती है। यह स्त्री बम्बअीके दंगोंमें वीरांगनाकी तरह जूझती थी। अिस स्त्रीने कांग्रेसके अध्यक्षपदको भी शोभित किया था। अिसमें अहंताका नाम निशान भी नहीं है।"

* * *

बा की बात निकली। मैंने कहा: "बा तो शायद आपके साथ अुपवास कर बैठेंगी। यदि वे अुपवास करें, तो अुन्हें कोअी नहीं कह सकता और अुसपर कोअी आपत्ति भी नहीं कर सकता।"

बापू मौन थे, लेकिन हकारमें सिर हिला दिया। मगर आज बा का पत्र आया। अुससे जान पड़ता है कि वे बहुत व्याकुल हो अुठी हैं। बा ने आवेश ही आवेशमें बापूको कड़े वचन कह दिये हैं।

सर पुरुषोत्तमदास, चुनीलाल वगैराके साथ बातें करके बापू वापस आये और आश्रमके बाकी रहे पत्रोंको पूरा किया। बारह पत्र तो अपने ही हाथसे लिख चुके थे। बाकीके अब खत्म किये। यह है अेक छोटासा पत्र:

"तू अपने स्थानको शोभित करना। सीताजी रामकी संपत्ति नहीं थीं, परन्तु रामकी आँखोंकी पुतली थीं। सीताको वनवासमें भेजकर राम खुद वनवासी बन गये, क्योंकि अुनका हृदय सीताके साथ गया था। लेकिन कोअी मामूली आदमी अपनी स्त्रीके साथ अैसा बर्ताव नहीं कर सकता; क्योंकि स्त्री और खुद अेक ही हो, अैसा अलौकिक प्रेम देखनेमें नहीं आता।"

अनशनका मंगल प्रभात।

"प्रिय मित्र और भाअी,

२०-९-'३२ "मंगलवारको सुबह तीन बजेसे कुछ पहले ही मैं यह लिख रहा हूँ। गुरुदेवके नाम अेक छोटासा पत्र अभी पूरा किया है।

"वेदनाके अिन दिनोंमें तुम हमेशा मेरे सामने रहे हो। शायद तुम्हारे विचार भी मैं पढ़ सकता हूँ। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिअे मेरे दिलमें कितनी अिज्ज़त है। हालाँकि कुछ मामलोंमें हमारे विचारोंमें ध्रुवके दो सिरोंके बराबर अन्तर है या अैसा दीखता है, फिर भी हमारे हृदय अेक हैं। अिसलिअे जब-जब तुम्हारे साथ सहमत हो सकता हूँ, तब-तब मेरे लिअे वह आनन्दका विषय होता है। मेरा यह क़दम तो शायद तुम्हारे लिअे आखिरी तिनका साबित हो। अैसा हो जाय, तो भी तुम्हारे घावमें मैं शरीक होना चाहता हूँ। कारण मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे लिअे प्रयत्न करना छोड़ दो। मेरा खयाल है कि मैं अपने बड़े भाअीसे चौदह वर्ष बहिष्कृत

अुस समय नीचे ही बैठता था। अिसमें अेक प्रकारकी जो सचाअी अुस वक्त देखी थी, वह आज तक पाअी जाती है। यह स्त्री बम्बअीके दंगोंमें वीरांगनाकी तरह जूझती थी। अिस स्त्रीने कांग्रेसके अध्यक्षपदको भी शोभित किया था। अिसमें अहंताका नाम निशान भी नहीं है।"

* * *

बा की बात निकली। मैंने कहा: "बा तो शायद आपके साथ अुपवास कर बैठेंगी। यदि वे अुपवास करें, तो अुन्हें कोअी नहीं कह सकता और अुसपर कोअी आपत्ति भी नहीं कर सकता।"

बापू मौन थे, लेकिन हकारमें सिर हिला दिया। मगर आज बा का पत्र आया। अुससे जान पड़ता है कि वे बहुत व्याकुल हो अुठी हैं। बा ने आवेश ही आवेशमें बापूको कड़े वचन कह दिये हैं।

सर पुरुषोत्तमदास, चुनीलाल वगैराके साथ बातें करके बापू वापस आये और आश्रमके बाकी रहे पत्रोंको पूरा किया। बारह पत्र तो अपने ही हाथसे लिख चुके थे। बाकीके अत्र खत्म किये। यह है अेक छोटासा पत्र:

"तू अपने स्थानको शोभित करना। सीताजी रामकी संपत्ति नहीं थीं, परन्तु रामकी आँखोंकी पुतली थीं। सीताको वनवासमें भेजकर राम खुद वनवासी बन गये, क्योंकि अुनका हृदय सीताके साथ गया था। लेकिन कोअी मामूली आदमी अपनी स्त्रीके साथ अैसा बर्ताव नहीं कर सकता; क्योंकि स्त्री और खुद अेक ही हो, अैसा अलौकिक प्रेम देखनेमें नहीं आता।"

अनशनका मंगल प्रभात।

"प्रिय मित्र और भाअी,

२०–९–'३२

"मंगलवारको सुबह तीन बजेसे कुछ पहले ही मैं यह लिख रहा हूँ। गुरुदेवके नाम अेक छोटासा पत्र अभी पूरा किया है।

"वेदनाके अिन दिनोंमें तुम हमेशा मेरे सामने रहे हो। शायद तुम्हारे विचार भी मैं पढ़ सकता हूँ। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिअे मेरे दिलमें कितनी अिज्ज़त है। हालाँकि कुछ मामलोंमें हमारे विचारोंमें ध्रुवके दो सिरोंके बराबर अन्तर है या अैसा दीखता है, फिर भी हमारे हृदय अेक हैं। अिसलिअे जब-जब तुम्हारे साथ सहमत हो सकता हूँ, तब-तब मेरे लिअे वह आनन्दका विषय होता है। मेरा यह क़दम तो शायद तुम्हारे लिअे आखिरी तिनका साबित हो। अैसा हो जाय, तो भी तुम्हारे घावमें मैं शरीक होना चाहता हूँ। कारण मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे लिअे प्रयत्न करना छोड़ दो। मेरा खयाल है कि मैं अपने बड़े भाअीसे चौदह वर्ष बहिष्कृत

"मुझे ज़रा भी खयाल नहीं कि यह अुपवास कहाँ शुरू होगा। यह अद्‌भुत परीक्षा है। मैं अिस सबका पात्र हूँ, क्योंकि मेरा दिल हिन्दू है। अछूत लोगोंके साथ हमने जो वर्ताव किया है, अुसके लिअे क्या हम औश्वरकी तरफ़से अति भयंकर सज़ाके पात्र नहीं हैं? मुझे अछूतोंमें शामिल करनेसे पहले वह मेरी हर तरहसे जाँच कर रहा है। मैं पचास बरससे अिसकी अभिलाषा कर रहा हूँ। कृपया साथका पत्र शास्त्रीको भेज दें।"

शिन्देने अहल्याश्रम नामके अस्पृश्योद्धार आश्रममें आनेका बापूको निमंत्रण भेजा था। अुसे जवाब:

"आपका मर्मस्पर्शी पत्र मिला। मुझे कुछ भी खयाल नहीं कि मुझे कहाँ रखा जायगा। अभी तो कुछ भी कहना बहुत जल्दी होगा। यह निश्चित है कि आज बारह बजे मेरा अुपवास शुरू होगा। कहाँ, कब और कैसे अुसका अन्त होगा, यह अेक औश्वर ही जानता है। आपकी सहानुभूति और आमंत्रणके लिअे धन्यवाद।"

मीराको:

"आज ढाअी बजे अुठ गया हूँ। गुरुदेवको और शास्त्रीको पत्र लिखे। अब तुझे लिख रहा हूँ। तेरा हृदय-विदारक पत्र मिल गया। पहले तो मुझे लगा कि यह पत्र मैं गवर्नरको भेज दूँ। मगर यह विचार जैसे ही मनमें आया, वैसे ही निकाल डाला। तूने भट्ठीमें तपना पसन्द कर लिया है। अिसलिअे तुझे अुसमें रहना ही चाहिये। अितने वर्षोंमें तू देख सकी होगी कि मेरा सत्याग्रह छोटे बच्चोंका खेल नहीं है। अिसलिअे तुझे ज़हरकी आखिरी बूँद तक पीनी होगी।

"अपनी प्रतिज्ञाकी सूचना देनेवाला पहला पत्र मैंने (सरकारको) लिखा, तब मुझे तेरा और बा का खयाल आया था। घड़ी भर तो मुझे चक्कर आ गया। तुम दोनों यह किस तरह सह सकोगी? परन्तु मेरे अन्तर्नादने कहा, 'अगर तुझे अिसमें प्रवेश करना है, तो तुझे आसक्तिके तमाम विचार छोड़ देने चाहियें।' बादमें पत्र गया। अछूतपनका पाप धोनेके लिअे कोअी भी वेदना अधिक नहीं है। अिसलिअे अिसे सहन करनेमें तुझे खुश होना चाहिये और बहादुरीसे सहन करना चाहिये। मैं जानता हूँ कि अैसा करना कितना कठिन है। फिर भी तुझे अिसीका प्रयत्न करना है। ज़रा विचार कर और समझ कि मुझे आखिरी बार देख लेनेका कोअी अर्थ नहीं है। जिस आत्माको तू चाहती है, वह तो सदा तेरे पास ही है। जिस शरीरके द्वारा तू अुस आत्माको चाहना सीखी, अुस शरीरकी अिस प्रेमको क़ायम रखनेके लिअे कोअी जरूरत नहीं।

“मुझे ज़रा भी खयाल नहीं कि यह अुपवास कहाँ शुरू होगा। यह अद्‌भुत परीक्षा है। मैं अिस सबका पात्र हूँ, क्योंकि मेरा दिल हिन्दू है। अछूत लोगोंके साथ हमने जो बर्ताव किया है, अुसके लिअे क्या हम औश्वरकी तरफ़से अति भयंकर सज़ाके पात्र नहीं हैं? मुझे अछूतोंमें शामिल करनेसे पहले वह मेरी हर तरहसे जाँच कर रहा है। मैं पचास बरससे अिसकी अभिलाषा कर रहा हूँ। कृपया साथका पत्र शास्त्रीको भेज दें।”

शिन्देने अहल्याश्रम नामके अस्पृश्योद्धार आश्रममें आनेका बापूको निमंत्रण भेजा था। अुसे जवाब:

“आपका मर्मस्पर्शी पत्र मिला। मुझे कुछ भी खयाल नहीं कि मुझे कहाँ रखा जायगा। अभी तो कुछ भी कहना बहुत जल्दी होगा। यह निश्चित है कि आज बारह बजे मेरा अुपवास शुरू होगा। कहाँ, कब और कैसे अुसका अन्त होगा, यह अेक औश्वर ही जानता है। आपकी सहानुभूति और आमंत्रणके लिअे धन्यवाद।”

मीराको:

“आज ढाओी बजे अुठ गया हूँ। गुरुदेवको और शास्त्रीको पत्र लिखे। अब तुझे लिख रहा हूँ। तेरा हृदय-विदारक पत्र मिल गया। पहले तो मुझे लगा कि यह पत्र मैं गवर्नरको भेज दूँ। मगर यह विचार जैसे ही मनमें आया, वैसे ही निकाल डाला। तूने भट्ठीमें तपना पसन्द कर लिया है। अिसलिअे तुझे अुसमें रहना ही चाहिये। अितने वर्षोंमें तू देख सकी होगी कि मेरा सत्याग्रह छोटे बच्चोंका खेल नहीं है। अिसलिअे तुझे ज़हरकी आखिरी बूँद तक पीनी होगी।

“अपनी प्रतिज्ञाकी सूचना देनेवाला पहला पत्र मैंने (सरकारको) लिखा, तब मुझे तेरा और बा का खयाल आया था। घड़ी भर तो मुझे चक्कर आ गया। तुम दोनों यह किस तरह सह सकोगी? परन्तु मेरे अन्तर्नादने कहा, ‘अगर तुझे अिसमें प्रवेश करना है, तो तुझे आसक्तिके तमाम विचार छोड़ देने चाहियें।’ बादमें पत्र गया। अछूतपनका पाप धोनेके लिअे कोओी भी वेदना अधिक नहीं है। अिसलिअे अिसे सहन करनेमें तुझे खुश होना चाहिये और बहादुरीसे सहन करना चाहिये। मैं जानता हूँ कि अैसा करना कितना कठिन है। फिर भी तुझे अिसीका प्रयत्न करना है। ज़रा विचार कर और समझ कि मुझे आखिरी बार देख लेनेका कोओी अर्थ नहीं है। जिस आत्माको तू चाहती है, वह तो सदा तेरे पास ही है। जिस शरीरके द्वारा तू अुस आत्माको चाहना सीखी, अुस शरीरकी अिस प्रेमको क़ायम रखनेके लिअे कोओी जरूरत नहीं।

अेक हैं, जैसे जन्म और मरण अेक ही हैं। परन्तु कोअी साथी केवल धर्मके लिअे देह छोड़े, तो वह शोकका कारण हो ही नहीं सकता। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। अुसका अुसे स्वागत करना चाहिये। अिसलिअे तुम व्याकुल न होकर अधिक जाग्रत और अधिक कर्तव्यपरायण बनना। शरीर ज्यादा अच्छा बनाकर बाहर निकलना। बहुत आहुतियाँ दी जायँगी, तभी अस्पृश्यता रूपी मैल धुलेगा।"

अीश्वरकी कृपा अपार है। बापूने सुबह ही रविबाबूका स्मरण किया। अुनसे आशीर्वाद देने या नाराज़ी ज़ाहिर करनेवाले पत्रकी प्रार्थना की। और यह पत्र जब मैं जेलरको देता हूँ, तभी अुनसे मुझे तारोंका अेक पुलिंदा मिलता है। अुसमें रविबाबूका यह तार निकला :

"हमारे देशकी अेकता और हमारे समाजकी अखण्डताके लिअे क़ीमती जीवनका बलिदान देने लायक़ है। हमारे शासकों पर अिसका क्या असर होगा, अिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। वे लोग यह नहीं समझ सकते कि यह चीज़ हमारे लोगोंके लिअे कितनी महत्वकी है। फिर भी अितना तो निश्चित है कि अैसे स्वेच्छापूर्ण बलिदानका हमारे देशबन्धुओंके दिलों पर जो भारी असर होगा, वह निष्फल नहीं जायगा। मैं यह अुत्कट आशा रखता हूँ कि अैसी राष्ट्रीय विपत्तिको आखिरी हद तक पहुँचने देने जैसे कठोर हम नहीं होंगे। हमारे दुःखी हृदय पूज्य भाव और प्रेमके साथ आपकी भव्य तपश्चर्याका अनुसरण कर रहे हैं।

रवीन्द्रनाथ टागोर।"

अिसलिअे बापूने तार लिखा :

"सुबहके साढ़े दस बजे। मैं सुपरिण्टेण्डेण्टको आपके नाम लिखा हुआ पत्र देने जा रहा था कि आपका प्रेमपूर्ण और भव्य तार मुझे मिला। थोड़े ही समयमें मैं जो अग्नि-प्रवेश करनेवाला हूँ, अुसमें यह मुझे सहारा देगा। मैं आपको तार भेज रहा हूँ। धन्यवाद।

मो० क० गांधी।"

प्रो० त्रिवेदीको :

"आपकी प्रेमपूर्ण पंक्तियाँ मिल गअीं। आपका प्रेम मैं जानता हूँ। अीश्वर कोअी आकाशमें नहीं है। अैसा निर्मल प्रेम मेरे लिअे अीश्वररूप है। और वही मुझसे अैसे यज्ञ कराता है।"

आज़के बढ़िया पत्रोंमें अब्बास साहब और श्री० परचुरे शास्त्रीके और तारोंमें रविबाबू, सरलादेवी चौधरानी और अिटलीकी अुन तीन बहनोंके थे।

अेक हैं, जैसे जन्म और मरण अेक ही हैं। परन्तु कोअी साथी केवल धर्मके लिअे देह छोड़े, तो वह शोकका कारण हो ही नहीं सकता। अैसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। अुसका अुसे स्वागत करना चाहिये। अिसलिअे तुम व्याकुल न होकर अधिक जाग्रत और अधिक कर्तव्यपरायण बनना। शरीर ज्यादा अच्छा बनाकर बाहर निकलना। बहुत आहुतियाँ दी जायँगी, तभी अस्पृश्यता रूपी मैल धुलेगा।"

अीश्वरकी कृपा अपार है। बापूने सुबह ही रविबाबूका स्मरण किया। अुनसे आशीर्वाद देने या नाराज़ी ज़ाहिर करनेवाले पत्रकी प्रार्थना की। और यह पत्र जब मैं जेलरको देता हूँ, तभी अुनसे मुझे तारोंका अेक पुलिंदा मिलता है। अुसमें रविबाबूका यह तार निकला :

"हमारे देशकी अेकता और हमारे समाजकी अखण्डताके लिअे क़ीमती जीवनका बलिदान देने लायक़ है। हमारे शासकों पर अिसका क्या असर होगा, अिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। वे लोग यह नहीं समझ सकते कि यह चीज़ हमारे लोगोंके लिअे कितनी महत्वकी है। फिर भी अितना तो निश्चित है कि अैसे स्वेच्छापूर्ण बलिदानका हमारे देशबन्धुओंके दिलों पर जो भारी असर होगा, वह निष्फल नहीं जायगा। मैं यह अुत्कट आशा रखता हूँ कि अैसी राष्ट्रीय विपत्तिको आखिरी हद तक पहुँचने देने जैसे कठोर हम नहीं होंगे। हमारे दुःखी हृदय पूज्य भाव और प्रेमके साथ आपकी भव्य तपश्चर्याका अनुसरण कर रहे हैं।

रवीन्द्रनाथ टागोर।"

अिसलिअे बापूने तार लिखा :

"सुबहके साढ़े दस बजे। मैं सुपरिण्टेण्डेण्टको आपके नाम लिखा हुआ पत्र देने जा रहा था कि आपका प्रेमपूर्ण और भव्य तार मुझे मिला। थोड़े ही समयमें मैं जो अग्नि-प्रवेश करनेवाला हूँ, अुसमें यह मुझे सहारा देगा। मैं आपको तार भेज रहा हूँ। धन्यवाद।

मो॰ क॰ गांधी।"

प्रो॰ त्रिवेदीको :

"आपकी प्रेमपूर्ण पंक्तियाँ मिल गअीं। आपका प्रेम मैं जानता हूँ। अीश्वर कोअी आकाशमें नहीं है। अैसा निर्मल प्रेम मेरे लिअे अीश्वररूप है। और वही मुझसे अैसे यज्ञ कराता है।"

आज़के बढ़िया पत्रोंमें अब्बास साहब और श्री॰ परचुरे शास्त्रीके और तारोंमें रविबाबू, सरलादेवी चौधरानी और अिटलीकी अुन तीन बहनोंके थे।

मैंने पूछा : "यह निर्णय तुच्छ वस्तु है। मगर स्थायी चीज़ अस्पृश्यताका नाश है। मान लीजिये कि अछूतपन मिटता हुआ साफ़ दिखाअी देने लगे और वे नालायक़ लोग अिस निर्णयको न बदलें, तो भी क्या आप अुपवास नहीं छोड़ेंगे?"

बापू : "ज़रूर छोड़ दूँगा। मगर यह सवाल पूछना नहीं चाहिये। अछूतपनका नाश अिस निर्णयके बदलवानेसे ज्यादा बड़ा चमत्कार है। मगर अिसका जवाब प्रकाशित नहीं किया जा सकता, क्योंकि जनता पर अुसका ग़लत असर पड़ सकता है। यह तो मनमें समझ लेनेकी बात है।"

रातमें बापूको ज़रा भी थकावट नहीं थी। २०८ तार काते। लेटनेके बाद बोले : "अुपवासमें आकाश-दर्शनका जो लाभ अुठाअूँगा, वह अवर्णनीय है। तुम तो परोक्ष प्रमाण देते हो, मगर मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। यह तारामण्डल हर क्षण जो शक्ति संचार कर रहा है, वही हमें क़ायम रखती है। यह शक्ति मिलती रहे, तब तक हम क्यों मानें कि कोअी कमी है? सर जेम्स जीन्स कहते हैं कि हम वैज्ञानिक लोग तो अभी कुछ नहीं जान पाये हैं। अिसके भीतर तो अपार शक्तियाँ भरी हैं।"

लेटे-लेटे कहने लगे : "वल्लभभाअी, तुमसे अेक दिल्लगीकी बात कहनी रह गअी। अुस विलिंग्डनने जयकर-सप्रूसे कहा था : 'अर्विन मूर्ख था, जो अुस बदमाश बनियेके आगे झुक गया। मैं अैसा नहीं करूँगा।' अिस पर जयकरको भूखे शेरकी बात याद आअी थी। वह मेरे अुपवासके बारेमें कुछ नहीं जानता था!"

* * *

रेहानाका पत्र तो अैसा है, जो किसी व्रजकी गोपीकी याद दिला देता है :

"बापूजी, जबसे मैंने सुना, तबसे मैं नाचती रही हूँ। पर दिलमें अितनी बेअिन्तेहा खुशी थी कि हलक़ और ज़बान दोनों बन्द हो गये। क्या लिखती? यह चीज़ कामिल है। अुसकी क्या तारीफ़ हो सके? और जब आपकी सारी ज़िन्दगी ही गोया मुजतमाअन कुरबानी है, तो फिर अिस आखिरी कुरबानीसे क्या ताज्जुब हो सके? घड़ी आ गअी। आपका यह अिरादा तो मेरे लिअे किरसनजीकी बाँसरी ही है। अुसको सुनकर मैं नाचने लगूँ, अिसमें भी क्या ताज्जुब? मैं कुछ कह नहीं सकती और अब भी मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता। मैं सिर्फ़ अितना जानती हूँ कि आप अिसके लिअे पैदा हुअे थे। मैं आँखोंसे देख रही हूँ कि किरसनजी अपना वादा हरेक बार किस खूबीसे पाल रहे हैं। धरम हफ़राहमें है, अुनको (किरसनजीको) आकर अुसको बचाना ही था। घड़ी आ गअी और धरमके बचनेके सब सामान तैयार हो गये। अब किरसनके दिये हुअे दिलसे अुनके चमत्कार देखनेका ही बाक़ी रहा। और क्या?

मैंने पूछा: "यह निर्णय तुच्छ वस्तु है। मगर स्थायी चीज़ अस्पृश्यताका नाश है। मान लीजिये कि अछूतपन मिटता हुआ साफ़ दिखाअी देने लगे और वे नालायक़ लोग अिस निर्णयको न बदलें, तो भी क्या आप अुपवास नहीं छोड़ेंगे?"

बापू: "ज़रूर छोड़ दूँगा। मगर यह सवाल पूछना नहीं चाहिये। अछूतपनका नाश अिस निर्णयके बदलवानेसे ज्यादा बड़ा चमत्कार है। मगर अिसका जवाब प्रकाशित नहीं किया जा सकता, क्योंकि जनता पर अुसका गलत असर पड़ सकता है। यह तो मनमें समझ लेनेकी बात है।"

रातमें बापूको ज़रा भी थकावट नहीं थी। २०८ तार काते। लेटनेके बाद बोले: "अुपवासमें आकाश-दर्शनका जो लाभ अुठाअूँगा, वह अवर्णनीय है। तुम तो परोक्ष प्रमाण देते हो, मगर मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। यह तारामण्डल हर क्षण जो शक्ति संचार कर रहा है, वही हमें क़ायम रखती है। यह शक्ति मिलती रहे, तब तक हम क्यों मानें कि कोअी कमी है? सर जेम्स जीन्स कहते हैं कि हम वैज्ञानिक लोग तो अभी कुछ नहीं जान पाये हैं। अिसके भीतर तो अपार शक्तियाँ भरी हैं।"

लेटे-लेटे कहने लगे: "वल्लभभाअी, तुमसे अेक दिल्लगीकी बात कहनी रह गअी। अुस विलिंग्डनने जयकर-सप्रूसे कहा था: 'अर्विन मूर्ख था, जो अुस बदमाश बनियेके आगे झुक गया। मैं अैसा नहीं करूँगा।' अिस पर जयकरको भूखे शेरकी बात याद आअी थी। वह मेरे अुपवासके बारेमें कुछ नहीं जानता था!"

* * *

रेहानाका पत्र तो अैसा है, जो किसी व्रजकी गोपीकी याद दिला देता है:

"बापूजी, जबसे मैंने सुना, तबसे मैं नाचती रही हूँ। पर दिलमें अितनी बेअिन्तेहा खुशी थी कि हलक़ और ज़बान दोनों बन्द हो गये। क्या लिखती? यह चीज़ कामिल है। अुसकी क्या तारीफ़ हो सके? और जब आपकी सारी ज़िन्दगी ही गोया मुजतमाअन कुरबानी है, तो फिर अिस आखिरी कुरबानीसे क्या ताज्जुब हो सके? घड़ी आ गअी। आपका यह अिरादा तो मेरे लिअे किरसनजीकी बाँसरी ही है। अुसको सुनकर मैं नाचने लगूँ, अिसमें भी क्या ताज्जुब? मैं कुछ कह नहीं सकती और अब भी मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता। मैं सिर्फ़ अितना जानती हूँ कि आप अिसके लिअे पैदा हुअे थे। मैं आँखोंसे देख रही हूँ कि किरसनजी अपना वादा हरेक बार किस खूबीसे पाल रहे हैं। धरम हफ़राहमें है, अुनको (किरसनजीको) आकर अुसको बचाना ही था। घड़ी आ गअी और धरमके बचनेके सब सामान तैयार हो गये। अब किरसनके दिये हुअे दिलसे अुनके चमत्कार देखनेका ही बाक़ी रहा। और क्या?

बापू बोले : “ हाँ । ”

तब वह कहने लगा : “ सरकारने आपके बारेमें यह बयान जारी करनेका निश्चय किया है । आज यह बयान शिमलामें दिया जायगा । ”

बापू बोले : “ ठीक है । मैं तो खुश हुआ, मगर आप पर कामका भार टूट पड़ेगा । ” और थोड़ी बातें हुआीं, पर मैंने नहीं सुनीं ।

फिर देवदासकी बात निकली । डोअिलने पूछा : “ आपका जो लड़का आया था, अुसका जन्म कहाँ हुआ है ? अुसकी अुमर क्या है ? ”

बापूने कहा : “ वह मैफ़िकिंग दिवस* पर पैदा हुआ था । मेरी स्त्रीकी प्रसूति मैंने ही की थी । डॉक्टरको बुलाअूँ अुससे पहले ही अुसे अतिशय व्यथा होने लगी । मैंने प्रसूति कराअी, नाल काटी और बालकको साफ़ किया, तब डॉक्टर आया । डॉक्टरने कहा कि सब ठीक हुआ है । दूसरा लड़का अफ्रीकामें है, तीसरा रामदास, चौथा देवदास । पहला तो अुल्टे रास्ते पड़ गया है । ”

फिर अपने पोते कान्तिका जो पत्र आया था — जिसे डोअिलने बीसापुर भेज दिया और जिसकी जाँच हो रही है — अुसके बारेमें हँसते-हँसते बापूने कहा : “ मेरे पोतेका पत्र आपने बीसापुर भेज दिया । मुझे तो वह मिला ही नहीं, अिसकी वह शिकायत करता है ।

शैतानी ढंगसे मुसकरा कर वह बोला : “ अरे अिसे तो मैंने आपके पोतेका प्रमाण-पत्र मानकर रखा है । और अिसे मैंने सरकारको बताया कि देखो मेरी जेल कैसे चल रही है, अिस बारेमें यह गांधीके पोतेका प्रमाण-पत्र है । ”

फिर अुसने पूछा : “ और कोअी बात कहनी हो तो कहिये । ” अिस पर बापूने मथुरादासकी बात निकाली : “ यह लड़का पैरोल पर छूटनेकी माँग कर रहा है । मैंने अिनकार लिखा है । मगर अिन दिनोंमें मेरे अैसे बच्चोंको मुझे लिखनेकी छूट हो और बेलगाँव वाले समय पर पत्र दे दें, अितना आप कर सकें तो अच्छा हो । ”

अुसने पूछा : “ आपको मथुरादाससे मिलना है ? ”

बापू : “ नहीं, मथुरादाससे मिलनेकी ज़रूरत नहीं । अुसे वहीं रहना चाहिये । ”

---

* मैफ़िकिंग दक्षिण अफ्रीकाका अेक छोटा शहर है । यह अंग्रेज़ोंके कब्जेमें था और अुस पर बोअर लोगोंका घेरा कअी महीने तक रहा था । १७ मअी, १९०० के दिन अुसका छुटकारा हुआ । अिस प्रसंग पर सारे अिंग्लैण्डमें खूब धूमधामसे अुत्सव मनाया गया था । — सं०

बापू बोले : "हाँ।"

तब वह कहने लगा : "सरकारने आपके बारेमें यह बयान जारी करनेका निश्चय किया है। आज यह बयान शिमलामें दिया जायगा।"

बापू बोले : "ठीक है। मैं तो खुश हुआ, मगर आप पर कामका भार टूट पड़ेगा।" और थोड़ी बातें हुआीं, पर मैंने नहीं सुनीं।

फिर देवदासकी बात निकली। डोअिलने पूछा : "आपका जो लड़का आया था, अुसका जन्म कहाँ हुआ है? अुसकी अुमर क्या है?"

बापूने कहा : "वह मैफ़िकिंग दिवस* पर पैदा हुआ था। मेरी स्त्रीकी प्रसूति मैंने ही की थी। डॉक्टरको बुलाअूँ अुससे पहले ही अुसे अतिशय व्यथा होने लगी। मैंने प्रसूति कराअी, नाल काटी और बालकको साफ़ किया, तब डॉक्टर आया। डॉक्टरने कहा कि सब ठीक हुआ है। दूसरा लड़का अफ्रीकामें है, तीसरा रामदास, चौथा देवदास। पहला तो अुल्टे रास्ते पड़ गया है।"

फिर अपने पोते कान्तिका जो पत्र आया था — जिसे डोअिलने बीसापुर भेज दिया और जिसकी जाँच हो रही है — अुसके बारेमें हँसते-हँसते बापूने कहा : "मेरे पोतेका पत्र आपने बीसापुर भेज दिया। मुझे तो वह मिला ही नहीं, अिसकी वह शिकायत करता है।

शैतानी ढंगसे मुसकरा कर वह बोला : "अरे अिसे तो मैंने आपके पोतेका प्रमाण-पत्र मानकर रखा है। और अिसे मैंने सरकारको बताया कि देखो मेरी जेल कैसे चल रही है, अिस बारेमें यह गांधीके पोतेका प्रमाण-पत्र है।"

फिर अुसने पूछा : "और कोअी बात कहनी हो तो कहिये।" अिस पर बापूने मथुरादासकी बात निकाली : "यह लड़का पैरोल पर छूटनेकी माँग कर रहा है। मैंने अिनकार लिखा है। मगर अिन दिनोंमें मेरे अैसे बच्चोंको मुझे लिखनेकी छूट हो और बेलगाँव वाले समय पर पत्र दे दें, अितना आप कर सकें तो अच्छा हो।"

अुसने पूछा : "आपको मथुरादाससे मिलना है?"

बापू : "नहीं, मथुरादाससे मिलनेकी ज़रूरत नहीं। अुसे वहीं रहना चाहिये।"

---

* मैफ़िकिंग दक्षिण अफ्रीकाका अेक छोटा शहर है। यह अंग्रेज़ोंके कब्ज़ेमें था और अुस पर बोअर लोगोंका घेरा कअी महीने तक रहा था। १७ मअी, १९०० के दिन अुसका छुटकारा हुआ। अिस प्रसंग पर सारे अिंग्लैण्डमें खूब धूमधामसे अुत्सव मनाया गया था। — सं०

पसन्द आया हो, तो यह सिर्फ़ अुत्सवका प्रसंग है, यह तो समझमें आ गया होगा। मुझे जी भर कर लिखना।"

किशोरलालको :

"तुम्हें मेरा क़दम नीतिमय लगा या नहीं, यह जाननेकी अिच्छा तो रहती ही है। नाथको शंका है। अुनको मैंने अुत्तर दे दिया है। तुमने विचार किया हो तो लिखना। यह तो समझ ही लिया होगा कि अगर यह क़दम धर्मके अनुसार जान पड़े, तो यह हमारे लिअे आनन्दोत्सवका मौका है।

"वल्लभभाअीकी संस्कृतके बारेमें तुम्हें जो डर है, अुसके लिअे कोअी कारण नहीं है। वल्लभभाअीकी किसानी गुजराती तो कोअी अुनसे छीन ही नहीं सकता। अिस प्रवाहको संस्कृत ज़्यादा मज़बूत बनायेगी। और अिस बार वे जो भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं, अुसीका हमें तो स्वागत करना है। अिसका असर विद्यार्थियों पर पड़े बिना नहीं रह सकता। संस्कृत हमारी भाषाके लिअे गंगा नदी है। मुझे लगता रहता है कि वह सूख जाय, तो भाषायें निर्माल्य बन जायँगी। मुझे यह महसूस होता है कि अुसका साधारण ज्ञान आवश्यक है।"

जयरामदासको :

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें अिस तपश्चर्यासे कैसा लगता होगा। मगर तुम अितना समझने लायक़ बहादुर अवश्य हो कि यह प्रसंग शोकका नहीं, आनन्दका है। अिस अस्पृश्यता रूपी राक्षसीका विनाश हो, अिससे पहले हममेंसे बहुतोंको मरना पड़ेगा। तुम्हें अिससे आनंद होना चाहिये कि अेक साथीको अग्नि-प्रवेशका मौक़ा मिला है। कुछ भी आँच आये बिना अुसमेंसे बाहर निकलूँ, तो अच्छा ही है। पर यह अग्नि मुझे जलाकर भस्म कर डाले, तो वह ज़्यादा अच्छा नहीं, तो अुतना ही अच्छा तो ज़रूर है। अीश्वर मुझे रास्ता बता रहा है और अन्त तक बतायेगा।"

जमनालालजीको :

"तुम कोअी परेशान न होना। तुम्हें तो नाचना ही चाहिये। तुमने जिसे बाप बनाया है, वह तुम्हारे प्रिय कामके लिअे पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिअे तो अुत्सवकी ही बात हो सकती है। जानकी मैयाके साथ मेरा विनोद जारी है।"

मणिलाल (कोठारी) को :

"सरदार कहते हैं कि मेरे पट्ट शिष्यको तो अलग पत्र लिखना ही पड़ेगा। मैं कहता हूँ, जमनालालजीमें मणिलाल समा जाता है। अिस पर मेरे सामने लाल आँखें करके वे कहते हैं कि ज़मनालालजी और दूसरे सब मणिलालमें समा

पसन्द आया हो, तो यह सिर्फ़ अुत्सवका प्रसंग है, यह तो समझमें आ गया होगा। मुझे जी भर कर लिखना।"

किशोरलालको :

"तुम्हें मेरा क़दम नीतिमय लगा या नहीं, यह जाननेकी अिच्छा तो रहती ही है। नाथको शंका है। अुनको मैंने अुत्तर दे दिया है। तुमने विचार किया हो तो लिखना। यह तो समझ ही लिया होगा कि अगर यह क़दम धर्मके अनुसार जान पड़े, तो यह हमारे लिअे आनन्दोत्सवका मौका है।

"वल्लभभाअीकी संस्कृतके बारेमें तुम्हें जो डर है, अुसके लिअे कोअी कारण नहीं है। वल्लभभाअीकी किसानी गुजराती तो कोअी अुनसे छीन ही नहीं सकता। अिस प्रवाहको संस्कृत ज़्यादा मज़बूत बनायेगी। और अिस बार वे जो भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं, अुसीका हमें तो स्वागत करना है। अिसका असर विद्यार्थियों पर पड़े बिना नहीं रह सकता। संस्कृत हमारी भाषाके लिअे गंगा नदी है। मुझे लगता रहता है कि वह सूख जाय, तो भाषायें निर्माल्य बन जायँगी। मुझे यह महसूस होता है कि अुसका साधारण ज्ञान आवश्यक है।"

जयरामदासको :

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें अिस तपश्चर्यासे कैसा लगता होगा। मगर तुम अितना समझने लायक बहादुर अवश्य हो कि यह प्रसंग शोकका नहीं, आनन्दका है। अिस अस्पृश्यता रूपी राक्षसीका विनाश हो, अिससे पहले हममेंसे बहुतोंको मरना पड़ेगा। तुम्हें अिससे आनंद होना चाहिये कि अेक साथीको अग्नि-प्रवेशका मौक़ा मिला है। कुछ भी आँच आये बिना अुसमेंसे बाहर निकलूँ, तो अच्छा ही है। पर यह अग्नि मुझे जलाकर भस्म कर डाले, तो वह ज़्यादा अच्छा नहीं, तो अुतना ही अच्छा तो ज़रूर है। अीश्वर मुझे रास्ता बता रहा है और अन्त तक बतायेगा।"

जमनालालजीको :

"तुम कोअी परेशान न होना। तुम्हें तो नाचना ही चाहिये। तुमने जिसे बाप बनाया है, वह तुम्हारे प्रिय कामके लिअे पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिअे तो अुत्सवकी ही बात हो सकती है। जानकी मैयाके साथ मेरा विनोद जारी है।"

मणिलाल (कोठारी) को :

"सरदार कहते हैं कि मेरे पट्ट शिष्यको तो अलग पत्र लिखना ही पड़ेगा। मैं कहता हूँ, जमनालालजीमें मणिलाल समा जाता है। अिस पर मेरे सामने लाल आँखें करके वे कहते हैं कि ज़मनालालजी और दूसरे सब मणिलालमें समा

चुनाव करनेकी योजना थोड़ी नहीं, बल्कि सभी बैठकोंके लिअे लागू करानी चाहिये ।

राजाजी बड़े विवेकी और विनयी आदमी लगे । आंबेडकर और अुनका बारहवाँ चन्द्रमा कैसे है, सो समझमें आता है। अिनका हाड़ हिन्दूका है, अुस आदमीका हाड़ नास्तिकका है ।

तेजबहादुर और जयकरके साथ अिसी विषय पर बातें करके बापूने दोनोंको अपने मतका बना लिया । सिर्फ़ राजाजी और राजेन्द्रबाबूके गले यह बात नहीं अुतरी कि सभी बैठकोंके लिअे अलग प्रारंभिक चुनाव हों । वे बोले : "कोअी भी कीमत देकर हम आपको बचाना चाहते हैं। कारण आपके बचनेमें अछूतोंका बचाव है । अिसलिअे आप बच जायँ, अिसके लिअे आपको जो करना ज़रूरी हो, वही कीजिये ।"

शामको आंबेडकर अपने तीन अनुयायियोंके साथ आये। अिस आदमीकी अुद्धतताका पूरी तरह प्रदर्शन हुआ । अुद्धतता तो अुनकी बोलीमें बार-बार आती थी : "देशमें दो भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले लोग हैं, यह मानकर ही हमें चलना चाहिये और मुझे मेरा बदला मिलना ही चाहिये । मैं यह माँगता हूँ कि अैसा साफ़ समझौता हो जाय, जिससे मुझे दूसरी तरह बदला मिल जाय। निर्णयमें मुझे ७१ जगहें मिली हैं । यह सच्चा, अच्छा और निश्चित हिस्सा है । ("आपके विचारके अनुसार" — बापू ।) अिसके सिवाय सामान्य निर्वाचक-मंडलमें मत देने और अुम्मीदवार बनकर खड़ा रहनेका मुझे हक़ मिलता है। और मज़दूरोंके निर्वाचक-मंडलमें भी मुझे मत मिलता है । हम अितना समझते हैं कि आप हमारी बहुत मदद करनेवाले हैं । ("आपकी नहीं" — बापू ।) मगर आपके साथ मेरा अेक ही झगड़ा है । आप केवल हमारे लिअे नहीं, पर क़थित राष्ट्रीय हितोंके लिअे काम करते हैं । आप सिर्फ़ हमारे लिअे काम करें, तो आप हमारे लाड़ले वीर (Hero) बन जायँ । ("यह तो बहुत सुन्दर बात है" — बापू ।) मुझे तो अपनी जातिके लिअे राजनैतिक सत्ता चाहिये । हमारे जीते रहनेके लिअे यह अनिवार्य है । अिसलिअे मेरे समाधानकी बुनियाद यह है कि मुझे योग्य बदला मिले । मैं हिन्दुओंसे कहना चाहता हूँ कि मुझे अपने बदलेका आश्वासन मिलना चाहिये ।"

बापू : "आपकी स्थिति आपने बहुत सुन्दर ढंगसे स्पष्ट कर दी है। मगर मैं आपसे अेक प्रश्न पूछना चाहता हूँ । आपने कहा कि दलित वर्गमें दूसरा कोअी सच्चा पक्ष हो, तो अुसे भी आगे आनेकी पूरी गुंजाअिश होनी चाहिये। अिसलिअे ये लोग अलग प्रारंभिक चुनावोंके बिना संयुक्त निर्वाचक-मंडलकी शर्त न मानें,

चुनाव करनेकी योजना थोड़ी नहीं, बल्कि सभी बैठकोंके लिअे लागू करानी चाहिये ।

राजाजी बड़े विवेकी और विनयी आदमी लगे । आंबेडकर और अुनका बारहवाँ चन्द्रमा कैसे है, सो समझमें आता है। अिनका हाड़ हिन्दूका है, अुस आदमीका हाड़ नास्तिकका है।

तेजबहादुर और जयकरके साथ अिसी विषय पर बातें करके बापूने दोनोंको अपने मतका बना लिया । सिर्फ़ राजाजी और राजेन्द्रबाबूके गले यह बात नहीं अुतरी कि सभी बैठकोंके लिअे अलग प्रारंभिक चुनाव हों । वे बोले : "कोअी भी कीमत देकर हम आपको बचाना चाहते हैं। कारण आपके बचनेमें अछूतोंका बचाव है । अिसलिअे आप बच जायँ, अिसके लिअे आपको जो करना ज़रूरी हो, वही कीजिये ।"

शामको आंबेडकर अपने तीन अनुयायियोंके साथ आये। अिस आदमीकी अुद्धतताका पूरी तरह प्रदर्शन हुआ । अुद्धतता तो अुनकी बोलीमें बार-बार आती थी : "देशमें दो भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले लोग हैं, यह मानकर ही हमें चलना चाहिये और मुझे मेरा बदला मिलना ही चाहिये । मैं यह माँगता हूँ कि अैसा साफ़ समझौता हो जाय, जिससे मुझे दूसरी तरह बदला मिल जाय। निर्णयमें मुझे ७१ जगहें मिली हैं । यह सच्चा, अच्छा और निश्चित हिस्सा है । ("आपके विचारके अनुसार" — बापू ।) अिसके सिवाय सामान्य निर्वाचक-मंडलमें मत देने और अुम्मीदवार बनकर खड़ा रहनेका मुझे हक़ मिलता है। और मज़दूरोंके निर्वाचक-मंडलमें भी मुझे मत मिलता है । हम अितना समझते हैं कि आप हमारी बहुत मदद करनेवाले हैं । ("आपकी नहीं" — बापू ।) मगर आपके साथ मेरा अेक ही झगड़ा है । आप केवल हमारे लिअे नहीं, पर कथित राष्ट्रीय हितोंके लिअे काम करते हैं । आप सिर्फ़ हमारे लिअे काम करें, तो आप हमारे लाड़ले वीर (Hero) बन जायँ । ("यह तो बहुत सुन्दर बात है" — बापू ।) मुझे तो अपनी जातिके लिअे राजनैतिक सत्ता चाहिये । हमारे जीते रहनेके लिअे यह अनिवार्य है। अिसलिअे मेरे समाधानकी बुनियाद यह है कि मुझे योग्य बदला मिले । मैं हिन्दुओंसे कहना चाहता हूँ कि मुझे अपने बदलेका आश्वासन मिलना चाहिये ।"

बापू : "आपकी स्थिति आपने बहुत सुन्दर ढंगसे स्पष्ट कर दी है। मगर मैं आपसे अेक प्रश्न पूछना चाहता हूँ । आपने कहा कि दलित वर्गमें दूसरा कोअी सच्चा पक्ष हो, तो अुसे भी आगे आनेकी पूरी गुंजाअिश होनी चाहिये। अिसलिअे ये लोग अलग प्रारंभिक चुनावोंके बिना संयुक्त निर्वाचक-मंडलकी शर्त न मानें,

अछूत बना हूँ। और अिस जातिमें नया भरती होनेके नाते अिस जातिके हितके लिअे अिस जातिके पुराने आदमियोंसे मुझे ज्यादा लगन है। अिस समय मेरी नज़रके सामने मूक अस्पृश्य — दक्षिण भारतके 'अगम्य' (unapproachables) और 'अदृश्य' (unseeables) खड़े हैं। अिस भावनासे मैं अिस योजनाकी जाँच कर रहा हूँ कि अिसमें अिन सबका क्या होगा? आप तो कह देंगे: 'अिसकी चिन्ता किसलिअे करते हैं? हम सब अीसाअी या मुसलमान हो जायँगे।' मैं कहता हूँ कि मेरा शरीर चला जाय, अुसके बाद आपको जो करना हो, कर लेना। अिस योजनाके बारेमें मैं कहता हूँ कि दलित वर्गके लिअे यह अच्छी हो, तो यह सारी ही अच्छी होनी चाहिये। शुरूसे ही अैसे दो विभाग कर दिये जायँ, यह मुझे पसन्द नहीं। सारे अछूत अेक और अखंड होंगे, तो मैं सनातनियोंके किलेको सुरंग लगाकर अुड़ा सकूँगा और ज़मींदोज़ कर डालूँगा। मैं यह चाहता हूँ कि सारा अस्पृश्य समाज अेक आवाज़से सनातनियोंके खिलाफ़ बगावत करे। जब तक अुम्मीदवार नामजद करना आपके हाथमें है, तब तक आपको संख्याकी परवाह न रखनी चाहिये। मैं तो जीवन भरका लोकतंत्रवादी हूँ। जब मेरी भस्म हवामें अुड़ जायगी या गंगाजीमें विसर्जन कर दी जायगी, अुसके बाद सारी दुनिया क़बूल करेगी कि लोकतंत्रवादियोंमें मैं शिरोमणि था। यह मैं अभिमानसे नहीं कहता, बल्कि नम्रतापूर्वक सत्यका अुच्चारण कर रहा हूँ। मैंने बारह बरसकी कोमल आयुसे लोकतंत्रका पाठ पढ़ा है। हमारे घरके भंगीको अस्पृश्य माननेके कारण मैंने अपनी माँके साथ झगड़ा किया था। अुस दिन मैंने भंगीके रूपमें अीश्वरको अवतार लेते देखा। जब आपने यह कहा कि मुझे अछूतोंका हित अपनी ज़िन्दगीसे भी ज़्यादा प्यारा है, तब आपने अीश्वरकी वाणी कही। अब सचाअीसे अिस पर क़ायम रहना। आपको मेरी ज़िन्दगीकी परवाह न करनी चाहिये। मगर अछूतोंके लिअे झूठे न बनना। मेरे मरनेसे मेरा काम नहीं मरेगा। मैंने अपने लड़केसे परिषदको अेक सन्देश देनेको कहा है। अुसमें मैंने अुसे कहा कि मेरी ज़िन्दगी जोखममें पड़े, तो अुसके लिअे तू अछूतोंका हित छोड़ देनेकी लालचमें न फँसना। और मुझे विश्वास है कि मैं मरूँगा, तो मेरे पीछे मेरा लड़का भी मरेगा। वह अकेला ही नहीं, परन्तु और भी बहुतसे मरेंगे। क्योंकि मेरा अेक लड़का नहीं, बल्कि हज़ारों लड़के हैं। हिन्दू धर्मकी आबरू बचानेके लिअे अगर वह अपने प्राण न दे, तो वह मेरा योग्य पुत्र नहीं कहला सकता। और हिन्दू धर्मकी आबरू अछूतपनको जड़-मूलसे अुखाड़ फेंके बिना बचेगी नहीं। यह तभी होगा, जब अछूतोंको हरअेक मामलेमें स्पृश्य हिन्दुओंके बराबरका दर्जा मिलेगा। अभी जो 'अदृश्य' माने जाते हैं, अुन्हें भी हिन्दुस्तानका वाअिसरॉय बननेका पूरा अवसर मिलना चाहिये।

अछूत बना हूँ। और अिस जातिमें नया भरती होनेके नाते अिस जातिके हितके लिअे अिस जातिके पुराने आदमियोंसे मुझे ज्यादा लगन है। अिस समय मेरी नज़रके सामने मूक अस्पृश्य — दक्षिण भारतके 'अगम्य' (unapproachables) और 'अदृश्य' (unseeables) खड़े हैं। अिस भावनासे मैं अिस योजनाकी जाँच कर रहा हूँ कि अिसमें अिन सबका क्या होगा? आप तो कह देंगे: 'अिसकी चिन्ता किसलिअे करते हैं? हम सब औसाअी या मुसलमान हो जायँगे।' मैं कहता हूँ कि मेरा शरीर चला जाय, अुसके बाद आपको जो करना हो, कर लेना। अिस योजनाके बारेमें मैं कहता हूँ कि दलित वर्गके लिअे यह अच्छी हो, तो यह सारी ही अच्छी होनी चाहिये। शुरूसे ही अैसे दो विभाग कर दिये जायँ, यह मुझे पसन्द नहीं। सारे अछूत अेक और अखंड होंगे, तो मैं सनातनियोंके क़िलेको सुरंग लगाकर अुड़ा सकूँगा और ज़मींदोज़ कर डालूँगा। मैं यह चाहता हूँ कि सारा अस्पृश्य समाज अेक आवाज़से सनातनियोंके खिलाफ़ बगावत करे। जब तक अुम्मीदवार नामजद करना आपके हाथमें है, तब तक आपको संख्याकी परवाह न रखनी चाहिये। मैं तो जीवन भरका लोकतंत्रवादी हूँ। जब मेरी भस्म हवामें अुड़ जायगी या गंगाजीमें विसर्जन कर दी जायगी, अुसके बाद सारी दुनिया क़बूल करेगी कि लोकतंत्रवादियोंमें मैं शिरोमणि था। यह मैं अभिमानसे नहीं कहता, बल्कि नम्रतापूर्वक सत्यका अुच्चारण कर रहा हूँ। मैंने बारह बरसकी कोमल आयुसे लोकतंत्रका पाठ पढ़ा है। हमारे घरके भंगीको अस्पृश्य माननेके कारण मैंने अपनी माँके साथ झगड़ा किया था। अुस दिन मैंने भंगीके रूपमें औश्वरको अवतार लेते देखा। जब आपने यह कहा कि मुझे अछूतोंका हित अपनी ज़िन्दगीसे भी ज़्यादा प्यारा है, तब आपने औश्वरकी वाणी कही। अब सचाअीसे अिस पर क़ायम रहना। आपको मेरी ज़िन्दगीकी परवाह न करनी चाहिये। मगर अछूतोंके लिअे झूठे न बनना। मेरे मरनेसे मेरा काम नहीं मरेगा। मैंने अपने लड़केसे परिषदको अेक सन्देश देनेको कहा है। अुसमें मैंने अुसे कहा कि मेरी ज़िन्दगी जोखममें पड़े, तो अुसके लिअे तू अछूतोंका हित छोड़ देनेकी लालचमें न फँसना। और मुझे विश्वास है कि मैं मरूँगा, तो मेरे पीछे मेरा लड़का भी मरेगा। वह अकेला ही नहीं, परन्तु और भी बहुतसे मरेंगे। क्योंकि मेरा अेक लड़का नहीं, बल्कि हज़ारों लड़के हैं। हिन्दू धर्मकी आबरू बचानेके लिअे अगर वह अपने प्राण न दे, तो वह मेरा योग्य पुत्र नहीं कहला सकता। और हिन्दू धर्मकी आबरू अछूतपनको जड़-मूलसे अुखाड़ फेंके बिना बचेगी नहीं। यह तभी होगा, जब अछूतोंको हरअेक मामलेमें स्पृश्य हिन्दुओंके बराबरका दर्जा मिलेगा। अभी जो 'अदृश्य' माने जाते हैं, अुन्हें भी हिन्दुस्तानका वाअिसरॉय बननेका पूरा अवसर मिलना चाहिये।

बा : "नहीं, वे तो सिन्धी हैं। सिन्धी पंजाबियोंसे अच्छे होते हैं।"

भंडारी : "यह क्या कहती हैं! यह तो मेरे साथ अन्याय कहा जायगा।"

२३–९–'३२

बापूसे आज पूनाके बोहरोंका अेक प्रतिनिधि-मंडल मिलने आया था। बेचारे सूतकी माला लाये थे और अपील लिख लाये थे कि अछूतोंके अलावा भी और बहुत हैं। अुनकी रक्षाके लिअे आप जीयें और अुपवास छोड़ दें। बोलते-बोलते अेक आदमीका गला भर आया। और भी कअी रो रहे थे। बापू पर बड़ा असर हुआ और बोले : "आप गहरा विचार करेंगे, तो देखेंगे कि अिस दुनियामें कोअी भी काम प्राण दिये बिना नहीं हो सकता। आपका प्रेम मुझ पर मेरी दृढ़ताके कारण है, प्राण छोड़नेकी मेरी शक्ति पर अवलंबित है। अिसलिअे आप मुझे जिस खयालसे चाहते हैं, अुसी खयालसे छोड़ दीजिये। मेरी ज़िन्दगी खुदाके हाथमें है। मैं चाहूँ तो भी नहीं जा सकता। और जानेवाला ही हूँगा, तो बड़ेसे बड़े डाक्टर भी आकर मुझे नहीं जिला सकते। अगर आप यह गवाही देंगे कि मैं सच्ची बातके लिअे मरा, तो यह बड़ी बात होगी। मैं जिस कलंकके लिअे अुपवास कर रहा हूँ, वह कलंक हिन्दू धर्म पर ही नहीं है, मगर सारे हिन्दुस्तान पर है। क्योंकि सारा हिन्दुस्तान अिस कलंकका गवाह है। अिसलिअे आप सबको यह दुआ करनी चाहिये कि गांधीका लिया हुआ व्रत पार पड़े। अैसी कोअी बात नहीं कि हिन्दूके लिअे मुसलमान अिबादत न करे, और मुसलमानके लिअे हिन्दू न करे। अिस तरहका खयाल सिर्फ ढोंग है।"

बापू अिस दृश्यसे बहुत खुश हो गये। श्रीमती नायडूसे कहने लगे : "यह दृश्य भव्य माना जायगा।"

*　　　　*　　　　*

आज सारी कमेटी आम्बेडकरको लेकर चार बजे आने वाली थी, फिर टेलीफोन आया — छः साड़े छः बजे आयेंगे। बादमें यह टेलीफोन आया कि साड़े सात बजे आयेंगे। अिस पर बापू बोले :

"यह तो मरनेको पड़े हुअे किसी बीमारकी घड़ी-घड़ी खबर आती हो, अैसा लगता है। मैं मरनेको पड़ा हुआ मरीज़ नहीं हूँ, मगर वह समझौता मरनेको पड़ा जान पड़ता है।"

बिड़ला नौ बजे आये और कहने लगे : "सिर्फ़ जनमत लेनेके मामलेमें हम अलग-अलग हो गये हैं। मुझे यह महत्वका नहीं लगता, अिसलिअे अिस पर हम बातचीत तोड़ नहीं सकते।"

बा: "नहीं, वे तो सिन्धी हैं। सिन्धी पंजावियोंसे अच्छे होते हैं।"
भंडारी: "यह क्या कहती हैं! यह तो मेरे साथ अन्याय कहा जायगा।"

बापूसे आज पूनाके वोहरोंका अेक प्रतिनिधि-मंडल मिलने आया था। बेचारे सूतकी माला लाये थे और अपील लिख लाये थे कि अछूतोंके अलावा भी और बहुत हैं। अुनकी रक्षाके लिअे आप जीयें और अुपवास छोड़ दें। बोलते-बोलते अेक आदमीका गला भर आया। और भी कअी रो रहे थे। बापू पर बड़ा असर हुआ और बोले: "आप गहरा विचार करेंगे, तो देखेंगे कि अिस दुनियामें कोअी भी काम प्राण दिये बिना नहीं हो सकता। आपका प्रेम मुझ पर मेरी दृढ़ताके कारण है, प्राण छोड़नेकी मेरी शक्ति पर अवलंबित है। अिसलिअे आप मुझे जिस खयालसे चाहते हैं, अुसी खयालसे छोड़ दीजिये। मेरी ज़िन्दगी खुदाके हाथमें है। मैं चाहूँ तो भी नहीं जा सकता। और जानेवाला ही हूँगा, तो बड़ेसे बड़े डाक्टर भी आकर मुझे नहीं जिला सकते। अगर आप यह गवाही देंगे कि मैं सच्ची बातके लिअे मरा, तो यह बड़ी बात होगी। मैं जिस कलंकके लिअे अुपवास कर रहा हूँ, वह कलंक हिन्दू धर्म पर ही नहीं है, मगर सारे हिन्दुस्तान पर है। क्योंकि सारा हिन्दुस्तान अिस कलंकका गवाह है। अिसलिअे आप सबको यह दुआ करनी चाहिये कि गांधीका लिया हुआ व्रत पार पड़े। अैसी कोअी बात नहीं कि हिन्दूके लिअे मुसलमान अिबादत न करे, और मुसलमानके लिअे हिन्दू न करे। अिस तरहका खयाल सिर्फ ढोंग है।"

२३-९-'३२

बापू अिस दृश्यसे बहुत खुश हो गये। श्रीमती नायडूसे कहने लगे: "यह दृश्य भव्य माना जायगा।"

* * *

आज सारी कमेटी आम्बेडकरको लेकर चार बजे आने वाली थी, फिर टेलीफोन आया — छः साड़े छः बजे आयेंगे। बादमें यह टेलीफोन आया कि साड़े सात बजे आयेंगे। अिस पर बापू बोले:

"यह तो मरनेको पड़े हुअे किसी बीमारकी घड़ी-घड़ी खबर आती हो, अैसा लगता है। मैं मरनेको पड़ा हुआ मरीज़ नहीं हूँ, मगर वह समझौता मरनेको पड़ा जान पड़ता है।"

बिड़ला नौ बजे आये और कहने लगे: "सिर्फ जनमत लेनेके मामलेमें हम अलग-अलग हो गये हैं। मुझे यह महत्त्वका नहीं लगता, अिसलिअे अिस पर हम बातचीत तोड़ नहीं सकते।"

"अितनी सीधी-सी बात आप क्यों न समझा सके?" यह कह कर बापूने राजाजीको फटकारा। राजाजीने कहा: "यह तो वह मान ही नहीं सकता था।" अिस पर बापूने कहा: "तो आपको मुझे फेंक देना था। यह नहीं मानता, नहीं मानता, अैसी बातें क्यों किया करते हैं?" देवदासको भी कहा कि तूने कुछ नहीं समझाया?

सबके चले जानेके बाद मैंने बापूसे कहा: "आप देवदास पर नाहक चिढ़ गये। वह तो सभामें बड़ी खलबली मचाकर आया था। अुसने तो सबको रुलाया, खुद भी रोया और कहा कि मेरे पिताने छह महीने बाद अछूतोंके लिअे मरनेकी प्रतिज्ञा क़ायम रख कर मतगणनाका हक़ दे ही दिया है।"

बापूने कहा: "देवदासको बुलाओ। मुझे अेक ही मिनटका काम है।" मैंने देवदासको बुलाया। बस देवदासके आते ही बाप-बेटे मुँहसे मुँह मिलाकर रोये! फिर शान्त हो कर बापू कहने लगे: "मुझे अैसे धार्मिक व्रतमें क्रोध आया ही कैसे? मैंने तेरे साथ अन्याय किया है। तू तो मुझे माफ़ कर देगा, मगर भगवान कैसे माफ़ करेंगे? राजाजी और दूसरोंसे भी कहना कि मुझे अुनसे माफ़ी माँगनी है।" बादमें बापूने सारी योजना देवदासको फिर समझाअी।

आज सुबह 'द्यूतं छलयतामस्मि' को याद करके फिर कहने लगे कि "ये जुआ खेलनेवाले छली आदमियोंमें — मैकडोनल्ड आदिमें — भी भगवान हैं। यह जुआ भगवान नहीं, मगर भगवान अिस जुअेमें प्रवेश करते हैं। अिस प्रकार अुसमें अिनका अंश आ जाता है, जैसे मैला पानी गंगामें मिलता है और पवित्र हो जाता है।"

२४-९-'३२

कल रातको कहा था: "शरीर, मन और आत्माकी वेदना अब ही शुरू हुअी है।" यह वेदना आज सबेरे भी चालू है, यह कहा ज[ा] सकता है। फिर भी अखबार वालोंमेंसे किसीको भी अिनका [...] नहीं किया। किसीने अुनकी बड़ाअी की थी कि 'आ[प] कुशल प्रचारक हैं।' यह बात बापू अिस अुपवासके दरमियान हर प्रसंग पर सावि[त] कर रहे हैं। अेक भी अखबारवालेको निकाला नहीं, और किसीके आगे [...] नअी बात न कही हो, अैसा नहीं। आज सुबह 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' का सहायक संपादक नॉर्मन और अमरीकन प्रेसका अेक प्रतिनिधि आया। अिन सब[से] मिलनेकी आतुरता दिखाते हुअे बापूने कहा: "आखिर मेरा अुपवास अिस अुद्देश्य[के] ही आधीन तो है। यह अुद्देश्य है समझौता करानेका। आपसे तो मैं मध्यरात्रि[में] भी मिलूँगा।"

"अितनी सीधी-सी बात आप क्यों न समझा सके?" यह कह कर बापूने राजाजीको फटकारा। राजाजीने कहा: "यह तो वह मान ही नहीं सकता था।" अिस पर बापूने कहा: "तो आपको मुझे फेंक देना था। यह नहीं मानता, नहीं मानता, अैसी बातें क्यों किया करते हैं?" देवदासको भी कहा कि तूने कुछ नहीं समझाया?

सबके चले जानेके बाद मैंने बापूसे कहा: "आप देवदास पर नाहक चिढ़ गये। वह तो सभामें बड़ी खलबली मचाकर आया था। अुसने तो सबको रुलाया, खुद भी रोया और कहा कि मेरे पिताने छह महीने बाद अछूतोंके लिअे मरनेकी प्रतिज्ञा क़ायम रख कर मतगणनाका हक़ दे ही दिया है।"

बापूने कहा: "देवदासको बुलाओ। मुझे अेक ही मिनटका काम है।" मैंने देवदासको बुलाया। बस देवदासके आते ही बाप-बेटे मुँहसे मुँह मिलाकर रोये! फिर शान्त हो कर बापू कहने लगे: "मुझे अैसे धार्मिक व्रतमें क्रोध आया ही कैसे? मैंने तेरे साथ अन्याय किया है। तू तो मुझे माफ़ कर देगा, मगर भगवान कैसे माफ़ करेंगे? राजाजी और दूसरोंसे भी कहना कि मुझे अुनसे माफ़ी माँगनी है।" बादमें बापूने सारी योजना देवदासको फिर समझाअी।

आज सुबह 'द्यूतं छलयतामस्मि' को याद करके फिर कहने लगे कि "ये जुआ खेलनेवाले छली आदमियोंमें — मैकडोनल्ड आदिमें — भी भगवान हैं। यह जुआ भगवान नहीं, मगर भगवान अिस जुअेमें प्रवेश करते हैं। अिस प्रकार अुसमें अिनका अंश आ जाता है, जैसे मैला पानी गंगामें मिलता है और पवित्र हो जाता है।"

२४-९-'३२

कल रातको कहा था: "शरीर, मन और आत्माकी वेदना अब ही शुरू हुअी है।" यह वेदना आज सवेरे भी चालू है, यह कहा जा सकता है। फिर भी अखबार वालोंमेंसे किसीको भी अिनकार नहीं किया। किसीने अुनकी बड़ाअी की थी कि 'आप कुशल प्रचारक हैं।' यह बात बापू अिस अुपवासके दरमियान हर प्रसंग पर साबित कर रहे हैं। अेक भी अखबारवालेको निकाला नहीं, और किसीके आगे भी नअी बात न कही हो, अैसा नहीं। आज सुबह 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' का सहायक-संपादक नॉर्मन और अमरीकन प्रेसका अेक प्रतिनिधि आया। अिन सबसे मिलनेकी आतुरता दिखाते हुअे बापूने कहा: "आखिर मेरा अुपवास अिस अुद्देश्यके ही आधीन तो है। यह अुद्देश्य है समझौता करानेका। आपसे तो मैं मध्यरात्रिमें भी मिलूँगा।"

बापूने तुरन्त कहा : "तो आपको तो 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' के लिये विज्ञापन चाहिये। तब तो मुझे कहना ही पड़ेगा कि आपका साप्ताहिक अच्छा है!"

अुसने पूछा : "आप यह कैसे कहते हैं?"

बापू : "मैं यह अिसलिअे कहता हूँ कि मुझे आपकी नीति अैसी लगती है कि 'या तो आप जानबूझ कर तोड़-मरोड़ करते हैं या आपका पूरा अज्ञान है। 'टािअम्स' जैसा बड़ा अखबार — जिसके लिअे मुझे बड़ा आदर है, और जिसके संपादक अेकमात्र लोगोंकी सेवा करनेके अुद्देश्यवाले हो गये हैं, — जब अपने स्तंभोंमें ज़हरीली बातें लिखता है और अपने अग्रलेख निश्चित रूपसे ग़लतबयानी करनेवाले लिखता है, तो मुझे दुःख होता है। अब जिस अखबारके लिअे मैं अैसे विचार रखता हूँ, अुसके लिअे अैसी राय नहीं दे सकता, जो विज्ञापनके रूपमें काम आये। मुझे जो लगता हो वह मैं न कहूँ, तो मेरा व्यवहार साफ़ नहीं माना जा सकता।"

अिस पर वह कहने लगा : "मगर यह तो आप दैनिककी बात कह रहे हैं। हमारा साप्ताहिक राजनैतिक मामलोंकी चर्चा ही नहीं करता। यह तो थोड़े बहुत सामाजिक स्वरूपवाला है।"

अिस पर बापूने तुरन्त ही कहा : "हूँ, अब अंग्रेज़ मानस बोल रहा है, जिसे मैं पसन्द नहीं करता। आप यह समझते दीखते हैं कि अिस जीवनके अेक दूसरेसे अलग-अलग खाने बनाये जा सकते हैं। आप यह समझते हैं कि घरके अेक भागमें हम नालीमें सड़ते रहें और दूसरे भागमें अूँचे स्वर्गमें अुड़ते रहें! 'टािअम्स' की जो नीति होगी, अुसका अनुसरण किये बिना 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' रह ही कैसे सकता है?"

अितना कह कर बोले : "यह सब होते हुअे भी मैं यह नहीं कह सकता कि अुसके चित्रोंसे मेरा मनोरंजन नहीं होता या अुससे कुछ जानकारी नहीं मिलती। लगभग अिंग्लैण्ड और अमेरिकाके अखबारोंकी टक्करमें आवे अैसा आपका अखबार माना जा सकता है।"

अमरीकी संवाददाताने कहा : "अमेरिकाके लिअे कुछ दीजिये।"

बापू : "अिसका जवाब तो मैंने दे ही दिया है, अिसलिअे और कोअी सवाल पूछिये।"

अिस पर वह बोला : "मगर यह तो मैंने स्वीकार किया ही है कि मैं बिलकुल कोरा हूँ।"

बापू : "तो यही ठीक है कि आप कोरे ही लौटें।"

बापूने तुरन्त कहा : "तो आपको तो 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' के लिये विज्ञापन चाहिये। तब तो मुझे कहना ही पड़ेगा कि आपका साप्ताहिक अच्छा है!"

अुसने पूछा : "आप यह कैसे कहते हैं?"

बापू : "मैं यह अिसलिअे कहता हूँ कि मुझे आपकी नीति अैसी लगती है कि 'या तो आप जानबूझ कर तोड़-मरोड़ करते हैं या आपका पूरा अज्ञान है। 'टाअिम्स' जैसा बड़ा अखबार — जिसके लिअे मुझे बड़ा आदर है, और जिसके संपादक अेकमात्र लोगोंकी सेवा करनेके अुद्देश्यवाले हो गये हैं, — जब अपने स्तंभोंमें ज़हरीली बातें लिखता है और अपने अग्रलेख निश्चित रूपसे गलतबयानी करनेवाले लिखता है, तो मुझे दुःख होता है। अब जिस अखबारके लिअे मैं अैसे विचार रखता हूँ, अुसके लिअे अैसी राय नहीं दे सकता, जो विज्ञापनके रूपमें काम आये। मुझे जो लगता हो वह मैं न कहूँ, तो मेरा व्यवहार साफ़ नहीं माना जा सकता।"

अिस पर वह कहने लगा : "मगर यह तो आप दैनिककी बात कह रहे हैं। हमारा साप्ताहिक राजनैतिक मामलोंकी चर्चा ही नहीं करता। यह तो थोड़े बहुत सामाजिक स्वरूपवाला है।"

अिस पर बापूने तुरन्त ही कहा : "हूँ, अब अंग्रेज़ मानस बोल रहा है, जिसे मैं पसन्द नहीं करता। आप यह समझते दीखते हैं कि अिस जीवनके अेक दूसरेसे अलग-अलग खाने बनाये जा सकते हैं। आप यह समझते हैं कि घरके अेक भागमें हम नालीमें सड़ते रहें और दूसरे भागमें अूँचे स्वर्गमें अुड़ते रहें! 'टाअिम्स' की जो नीति होगी, अुसका अनुसरण किये बिना 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' रह ही कैसे सकता है?"

अितना कह कर बोले : "यह सब होते हुअे भी मैं यह नहीं कह सकता कि अुसके चित्रोंसे मेरा मनोरंजन नहीं होता या अुससे कुछ जानकारी नहीं मिलती। लगभग अिंग्लैण्ड और अमेरिकाके अखबारोंकी टक्करमें आवे अैसा आपका अखबार माना जा सकता है।"

अमरीकी संवाददाताने कहा : "अमेरिकाके लिअे कुछ दीजिये।"

बापू : "अिसका जवाब तो मैंने दे ही दिया है, अिसलिअे और कोअी सवाल पूछिये।"

अिस पर वह बोला : "मगर यह तो मैंने स्वीकार किया ही है कि मैं बिलकुल कोरा हूँ।"

बापू : "तो यही ठीक है कि आप कोरे ही लौटें।"

है। मैं यह देख सकता हूँ कि आप ज्यादा सावधानीका मार्ग किसलिअे पसन्द करते हैं। अब हम दूसरे मुद्दे पर आयें। आप दस साल किसलिअे माँगते हैं ?"

आम्बेडकर : "दस सालकी अिसलिअे ज़रूरत है कि अितने समयमें लोकमत स्थिर किया जा सकता है। महात्माजी, हम लोगोंमें जो पूर्वग्रह भरे हैं, अुनका भी आपको विचार करना चाहिये। मतगणना या अुसकी मुद्दत तो आपकी प्रतिज्ञाका मुद्दा है भी नहीं।"

बापू : "अब यह दलील ज़रूरतसे ज्यादा हो जाती है। सीधी बात तो यह है कि अिसके अेवज़में क्या ? वह चीज़ संयुक्त निर्वाचनसे कहीं ज्यादा बढ़िया होनी चाहिये। मेरी निश्चित राय है कि पाँच सालकी मियाद ज्यादासे ज्यादा है। यह तो आप नहीं चाहेंगे कि जिसे मैं सत्य मानता हूँ, अुससे डिग जाअूँ। आप यह भी नहीं कह सकते कि दस साल आपके लिअे अन्तरात्माका सवाल है, जब कि कल मैंने आपको साबित करके बता दिया था कि मैं अिसे अन्तरात्माका सवाल मानता हूँ। सही बात यह है कि आप दस सालका आग्रह रखेंगे, तो मुझे आपकी प्रामाणिकताके बारेमें शंकाशील बनायेंगे। अिसलिअे आखिरी बात यह है : पाँच सालमें मतगणना या मेरा जीवन। अपने अनुयायियोंसे जाकर कहिये कि गांधी तो यह कहता है। अुनके सामने जाकर मेरे मामलेकी वकालत कीजिये। वे आपका कहा न मानें, तो वे आपके अनुयायी कहलानेके लायक़ नहीं माने जा सकते। मेरी ज़िन्दगी आपके हाथमें है। मेरी अिज्ज़त पर मुझे छोड़ दीजिये। मैं बहुत धिक्कारपात्र मनुष्य हो सकता हूँ, मगर जब सत्य मेरे अन्तरमेंसे निकलता है, तब मैं अजेय होता हूँ।"

हम सब खूब चिन्तामें पड़ गये। हममेंसे कितने ही रो रहे थे। अिस आदमीके हाथमें सिर दे दिया। अब और कुछ होनेका रास्ता नहीं, यह कह कर हाथ मलते हुअे बैठे थे। अिस बीच बापूकी अधीरता बढ़ रही थी। 'कहीं मुझे बचानेके लिअे अुल्टा-सीधा न किया जाय।' मुझे कहने लगे : "मालवीयजी, जयकर और सप्रूके नाम अितना सन्देश भेजो : 'मेरे खातिर अनुचित जल्दबाज़ी न करें। जो चीज़ अुन्हें अुचित लगे अुसी पर सही करें। बादमें मुझे मनाना पड़ेगा, तो वे भी दोषमें आ जायँगे और मैं भी आअूँगा"। धर्मकी बातमें लिहाज़ नहीं किया जा सकता। अिसलिअे जो सत्य, योग्य और न्याय्य है, अुस पर क़ायम रहना ही चाहिये। अैसा करनेसे मेरी जिन्दगी जाती हो, तो भले ही चली जाय। अिसलिअे जिसे जो योग्य प्रतीत हो, वही करे। मेरी स्थिति — या तो पाँच वर्ष बाद हरिजनोंकी मतगणना हो या मुझे मरने दिया जाय — जिसे अुचित न मालूम होती हो और हानिकारक लगती हो, वह अुसे मंजूर न करे'।"

है। मैं यह देख सकता हूँ कि आप ज्यादा सावधानीका मार्ग किसलिअे पसन्द करते हैं। अब हम दूसरे मुद्दे पर आयें। आप दस साल किसलिअे माँगते हैं?"

आम्बेडकर: "दस सालकी अिसलिअे ज़रूरत है कि अितने समयमें लोकमत स्थिर किया जा सकता है। महात्माजी, हम लोगोंमें जो पूर्वग्रह भरे हैं, अुनका भी आपको विचार करना चाहिये। मतगणना या अुसकी मुद्दत तो आपकी प्रतिज्ञाका मुद्दा है भी नहीं।"

बापू: "अब यह दलील जरूरतसे ज्यादा हो जाती है। सीधी बात तो यह है कि अिसके अेवज़में क्या? वह चीज़ संयुक्त निर्वाचनसे कहीं ज्यादा बढ़िया होनी चाहिये। मेरी निश्चित राय है कि पाँच सालकी मियाद ज्यादासे ज्यादा है। यह तो आप नहीं चाहेंगे कि जिसे मैं सत्य मानता हूँ, अुससे डिग जाअूँ। आप यह भी नहीं कह सकते कि दस साल आपके लिअे अन्तरात्माका सवाल है, जब कि कल मैंने आपको साबित करके बता दिया था कि मैं अिसे अन्तरात्माका सवाल मानता हूँ। सही बात यह है कि आप दस सालका आग्रह रखेंगे, तो मुझे आपकी प्रामाणिकताके बारेमें शंकाशील बनायेंगे। अिसलिअे आखिरी बात यह है: पाँच सालमें मतगणना या मेरा जीवन। अपने अनुयायियोंसे जाकर कहिये कि गांधी तो यह कहता है। अुनके सामने जाकर मेरे मामलेकी वकालत कीजिये। वे आपका कहा न मानें, तो वे आपके अनुयायी कहलानेके लायक़ नहीं माने जा सकते। मेरी ज़िन्दगी आपके हाथमें है। मेरी अिज्ज़त पर मुझे छोड़ दीजिये। मैं बहुत धिक्कारपात्र मनुष्य हो सकता हूँ, मगर जब सत्य मेरे अन्तरमेंसे निकलता है, तब मैं अजेय होता हूँ।"

हम सब खूब चिन्तामें पड़ गये। हममेंसे कितने ही रो रहे थे। अिस आदमीके हाथमें सिर दे दिया। अब और कुछ होनेका रास्ता नहीं, यह कह कर हाथ मलते हुअे बैठे थे। अिस बीच बापूकी अधीरता बढ़ रही थी। 'कहीं मुझे बचानेके लिअे अुल्टा-सीधा न किया जाय।' मुझे कहने लगे: "मालवीयजी, जयकर और सप्रूके नाम अितना सन्देश भेजो: 'मेरे खातिर अनुचित जल्दबाज़ी न करें। जो चीज़ अुन्हें अुचित लगे अुसी पर सही करें। बादमें मुझे मनाना पड़ेगा, तो वे भी दोषमें आ जायँगे और मैं भी आअूँगा। धर्मकी बातमें लिहाज़ नहीं किया जा सकता। अिसलिअे जो सत्य, योग्य और न्याय्य है, अुस पर क़ायम रहना ही चाहिये। अैसा करनेसे मेरी जिन्दगी जाती हो, तो भले ही चली जाय। अिसलिअे जिसे जो योग्य प्रतीत हो, वही करे। मेरी स्थिति — या तो पाँच वर्ष बाद हरिजनोंकी मतगणना हो या मुझे मरने दिया जाय — जिसे अुचित न मालूम होती हो और हानिकारक लगती हो, वह अुसे मंजूर न करे'।"

मैं कितनी क़ीमती मानता हूँ। सरूपके बच्चे और अिन्दु मिल गये। अिन्दु आनन्दमें दीखती थी। शरीर भी कुछ भर गया है। मेरी तबीयत बहुत अच्छी है।

खूब प्यार,

बापू"

आज श्रीमती ज़गलूलका तार आया था। अुन्हें लिखाया:

"प्रेम भरे सन्देशके लिअे धन्यवाद। अीश्वरकी अिच्छानुसार हो"

२५-९-'३२

आज सुबह कुमारी विलकिन्सन आअीं और समझौते पर अेक लम्बा बयान बापूसे लिखा ले गअीं। जो कुछ हो रहा है अुसमें अीश्वरका हाथ देखता हूँ। आसपास आश्चर्यकारक दर्शन हो रहा है। अिसके बारेमें लिखानेके बाद बताया कि "मंत्रि-मण्डल अिस समझौतेको अच्छी तरह धार्मिक वस्तु समझे, तो वह अिसे अक्षरशः स्वीकार करे। नहीं तो अिसका पूरी तरह त्याग करे।"

अिसके बाद 'टाअिम्स' का मेकरे आया। अुसे मुलाक़ात दी।

दोपहरको बॉअिड टकर आया। अुसने शान्तिनिकेतनमें बापूके अुपवाससे हुअे अद्‌भुत असरकी बातें कहीं। कविने खुद देहातोंमें जाकर भाषण दिये और यहाँ तक जोशमें आ गये कि अुनके भाषणोंमेंसे कुछ वाक्य तो निकाल देने पड़े थे। अेक वक्तव्यमें लिखा: "मैं महात्मा गांधीका अन्त तक और अुस जन्ममें भी अनुसरण करूँगा।" अिस सारी खबरसे बापूको बड़ा सन्तोष हुआ।

कुमारी विलकिन्सन बंगाली गाँवोंका चित्र खींचते हुअे कहने लगीं: "बंगालमें आम्बेडकर शब्द गांधीके लिअे अेक पदवी बन गया है और लोग आम्बेडकर गांधीकी जय बोलते हैं। जब पूछा गया कि आम्बेडकरकी जय क्यों बोलते हो, तो कहने लगे कि महात्मा गांधीका नाम अब आम्बेडकर गांधी पड़ गया है।"

आखिर श्रीनिवास शास्त्रीका तार आया। बापूको अुससे बड़ा आनंद हुआ। अुन्हें जवाबमें तार दिया कि जिस तारके लिअे लालायित था, वह आ पहुँचा।

शामको सेनापति बापटको तार दिलवाया:

"अुपवासके लिअे आप जो कारण देते हैं, वह भावपूर्ण है। मगर अैसे मामलेमें मैं निष्णात माना जाअूँगा; और मेरी राय अिसके खिलाफ़ है, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप फिरसे विचार करें। मुझे तो विश्वास है कि आपके अुपवासको धर्मकी मंजूरी नहीं है। आपका मेरे प्रति प्रेम भाव है, तो अुसके लिअे आपको मेरे साथ मरना नहीं चाहिये। आपको तो मेरा काम करनेके लिअे जीना चाहिये। सभी साथी मेरे साथ मर जायँ, तो क्या परिणाम होगा, अिसे

मैं कितनी क़ीमती मानता हूँ। सरूपके बच्चे और अिन्दु मिल गये। अिन्दु आनन्दमें दीखती थी। शरीर भी कुछ भर गया है। मेरी तबीयत बहुत अच्छी है।

खूब प्यार,

बापू"

आज श्रीमती ज़गलूलका तार आया था। अुन्हें लिखाया:

"प्रेम भरे सन्देशके लिअे धन्यवाद। अीश्वरकी अिच्छानुसार हो"

२५–९–'३२

आज सुबह कुमारी विलकिन्सन आअीं और समझौते पर अेक लम्बा बयान बापूसे लिखा ले गअीं। जो कुछ हो रहा है अुसमें अीश्वरका हाथ देखता हूँ। आसपास आश्चर्यकारक दर्शन हो रहा है। अिसके बारेमें लिखानेके बाद बताया कि "मंत्रि-मण्डल अिस समझौतेको अच्छी तरह धार्मिक वस्तु समझे, तो वह अिसे अक्षरशः स्वीकार करे। नहीं तो अिसका पूरी तरह त्याग करे।"

अिसके बाद 'टाअिम्स' का मेकरे आया। अुसे मुलाक़ात दी।

दोपहरको बॉअिड टकर आया। अुसने शान्तिनिकेतनमें बापूके अुपवाससे हुअे अद्भुत असरकी बातें कहीं। कविने खुद देहातोंमें जाकर भाषण दिये और यहाँ तक जोशमें आ गये कि अुनके भाषणोंमेंसे कुछ वाक्य तो निकाल देने पड़े थे। अेक वक्तव्यमें लिखा: "मैं महात्मा गांधीका अन्त तक और अुस जन्ममें भी अनुसरण करूँगा।" अिस सारी खबरसे बापूको बड़ा सन्तोष हुआ।

कुमारी विलकिन्सन बंगाली गाँवोंका चित्र खींचते हुअे कहने लगीं: "बंगालमें आम्बेडकर शब्द गांधीके लिअे अेक पदवी बन गया है और लोग आम्बेडकर गांधीकी जय बोलते हैं। जब पूछा गया कि आम्बेडकरकी जय क्यों बोलते हो, तो कहने लगे कि महात्मा गांधीका नाम अब आम्बेडकर गांधी पड़ गया है।"

आखिर श्रीनिवास शास्त्रीका तार आया। बापूको अुससे बड़ा आनंद हुआ। अुन्हें जवाबमें तार दिया कि जिस तारके लिअे लालायित था, वह आ पहुँचा।

शामको सेनापति बापटको तार दिलवाया:

"अुपवासके लिअे आप जो कारण देते हैं, वह भावपूर्ण है। मगर अैसे मामलेमें मैं निष्णात माना जाअूँगा; और मेरी राय अिसके खिलाफ़ है, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप फिरसे विचार करें। मुझे तो विश्वास है कि आपके अुपवासको धर्मकी मंजूरी नहीं है। आपका मेरे प्रति प्रेम भाव है, तो अुसके लिअे आपको मेरे साथ मरना नहीं चाहिये। आपको तो मेरा काम करनेके लिअे जीना चाहिये। सभी साथी मेरे साथ मर जायँ, तो क्या परिणाम होगा, अिसे

कलकत्तेसे विधानचन्द्र और नीलरंजनका तार आया: "अखबारोंका समाचार यह है कि आपको अुल्टी होती है। हमें लगता है कि अुसे रोकनेके लिअे सोडेके अलावा ग्लुकोज़ लेना ज़रूरी है। हमारी प्रार्थना है कि आप ग्लुकोज़ लें।"

अुन्हें बापूने शान्तिसे तार लिखाया:

"डॉक्टरोंकी हैसियतसे आपकी सलाह सम्पूर्ण मानी जायगी। मगर अुसका नैतिक मूल्य कुछ भी नहीं है। अेक मानव-बन्धु अपने धर्मसे अिनकार कर दे, यह तो आप हरगिज़ न चाहेंगे। आपका बहुत आभारी हूँ। अुपवास ठीक चल रहे हैं।"

२६–९–'३२

सबेरे जवाहरलालका तार आया। बापू अुससे गद्गद हो गये। अुसका मतलब यह था: "अखबारोंसे समाचार मिला था। आश्चर्य भी हुआ और क्षोभ भी। फिर मेरा आशावाद सामने आया और मनको शांति मिली। समझ गया कि अति दलितोंके अुद्धारके लिअे जितना त्याग किया जाय, अुतना ही थोड़ा है। क्योंकि अिन लोगोंके स्वराजके बिना हमारा स्वराज निरर्थक है। अुपवासका धार्मिक रहस्य मैं नहीं समझता। कुछ लोग अिसका दुरुपयोग भी करेंगे। मगर मैं आप जैसे जादूगरको क्या सलाह दूँ?"

मौन तो दो बजे खुलनेवाला था। सुबह अखबारोंमें पढ़ा कि मंत्रि-मण्डलकी बैठक अभी तो बुधवारको होगी। हम सबको बड़ी चिढ़ हुअी। डॉक्टरोंने आज बापूकी तबीयतकी बात कह कर जी अुड़ा दिया। कहा कि "अितने खूनके दबावके साथ चार दिनसे ज्यादा नहीं टिक सकते।" सरकारसे भी अिन लोगोंने सिफ़ारिश करनेका विचार किया था कि अिस हालतमें गांधीजीको जेलमें रखना जोखमकी बात है। मैंने तो कह दिया कि अिस स्थितिमें छोड़नेमें भी सलामती नहीं है। जो होना हो, यहीं होने दो।

आज कअी मुलाक़ातोंका दिन था। सरूपरानी, वासंतीदेवी, अुर्मिलादेवी, कविसम्राट् टागोर। सबसे पहले सरूपरानी और कमला आअीं। सरूपरानीने थोड़ी देर बापूको देखा और फिर रो पड़ीं। बापूसे मिलीं। बापूकी आँखोंमें भी पानी आ गया। फिर स्वस्थ होकर देशमें आअी हुअी जाग्रतिकी बातें करने लगे। अछूतोंके लिअे कैसे भारद्वाज मन्दिर खोला गया, कैसे पंडोंने भंगियोंको भीतर धकेला, कैसे सरूपरानी खुद वहाँ गअीं, कैसे प्रसाद बाँटा और संकोच होने पर भी खुदने कैसे प्रसाद खाया, अिन सब बातोंका वर्णन किया। बोलीं: "आपकी जान बचानी थी तो भंगीका क्या, कुत्तेके मुँहमेंसे भी खा लेती।"

कलकत्तेसे विधानचन्द्र और नीलरंजनका तार आया: "अखबारोंका समाचार यह है कि आपको अुल्टी होती है। हमें लगता है कि अुसे रोकनेके लिअे सोडेके अलावा ग्लुकोज़ लेना ज़रूरी है। हमारी प्रार्थना है कि आप ग्लुकोज़ लें।"

अुन्हें बापूने शान्तिसे तार लिखाया:

"डॉक्टरोंकी हैसियतसे आपकी सलाह सम्पूर्ण मानी जायगी। मगर अुसका नैतिक मूल्य कुछ भी नहीं है। अेक मानव-बन्धु अपने धर्मसे अिनकार कर दे, यह तो आप हरगिज़ न चाहेंगे। आपका बहुत आभारी हूँ। अुपवास ठीक चल रहे हैं।"

२६-९-'३२

सबेरे जवाहरलालका तार आया। बापू अुससे गद्गद हो गये। अुसका मतलब यह था: "अखबारोंसे समाचार मिला था। आश्चर्य भी हुआ और क्षोभ भी। फिर मेरा आशावाद सामने आया और मनको शांति मिली। समझ गया कि अति दलितोंके अुद्धारके लिअे जितना त्याग किया जाय, अुतना ही थोड़ा है। क्योंकि अिन लोगोंके स्वराजके बिना हमारा स्वराज निरर्थक है। अुपवासका धार्मिक रहस्य मैं नहीं समझता। कुछ लोग अिसका दुरुपयोग भी करेंगे। मगर मैं आप जैसे जादूगरको क्या सलाह दूँ?"

मौन तो दो बजे खुलनेवाला था। सुबह अखबारोंमें पढ़ा कि मंत्रि-मण्डलकी बैठक अभी तो बुधवारको होगी। हम सबको बड़ी चिढ़ हुअी। डॉक्टरोंने आज बापूकी तबीयतकी बात कह कर जी अुड़ा दिया। कहा कि "अितने खूनके दबावके साथ चार दिनसे ज्यादा नहीं टिक सकते।" सरकारसे भी अिन लोगोंने सिफ़ारिश करनेका विचार किया था कि अिस हालतमें गांधीजीको जेलमें रखना जोखमकी बात है। मैंने तो कह दिया कि अिस स्थितिमें छोड़नेमें भी सलामती नहीं है। जो होना हो, यहीं होने दो।

आज कअी मुलाक़ातोंका दिन था। सरूपरानी, वासंतीदेवी, अुर्मिलादेवी, कविसम्राट् टागोर। सबसे पहले सरूपरानी और कमला आअीं। सरूपरानीने थोड़ी देर बापूको देखा और फिर रो पड़ीं। बापूसे मिलीं। बापूकी आँखोंमें भी पानी आ गया। फिर स्वस्थ होकर देशमें आअी हुअी जाग्रतिकी बातें करने लगे। अछूतोंके लिअे कैसे भारद्वाज मन्दिर खोला गया, कैसे पंडोंने भंगियोंको भीतर धकेला, कैसे सरूपरानी खुद वहाँ गअीं, कैसे प्रसाद बाँटा और संकोच होने पर भी खुदने कैसे प्रसाद खाया, अिन सब बातोंका वर्णन किया। बोलीं: "आपकी जान बचानी थी तो भंगीका क्या, कुत्तेके मुँहमेंसे भी खा लेती।"

बापूने अुनसे कहा: "मुझे परचुरे शास्त्रीकी ज़रूरत है।" शास्त्रीजीको बुलवाया गया। बापूके दाहिनी तरफ़ कुरसी पर कवि बैठे, बाओं ओर कम्बल बिछा कर परचुरे शास्त्री बैठे। सामने सारा आश्रम-मण्डल बैठा। पीछे जेलर, मेजर भंडारी और मेहता बैठे।

कविने "जीवन जखन शुकाये जाय" गाया। सौभाग्यसे मेरे पास यह लिखा हुआ था। अिसका राग वे तो भूल ही गये थे।

फिर परचुरे शास्त्रीने अुपनिषदोंमेंसे मंत्र बोले और बादमें "वैष्णव जन" गाया गया। सबको फल बाँटे गये। जेलवालोंने भी फल लिये। आनंद ही आनंद छा गया। आज सब आनेवाले अपनेको धन्य मानने लगे।

रातको फिर बापूने 'हरिने भजतां' भजन गवाया। रातको कटेलीकी माताजी और श्रीमती भंडारी वगैरा आओं। रातको साढ़ेआठ बजे बापूने अपना बयान लिखवाया। अुसमें अितनी तफ़सील थी कि मानो अुन्हें कोअी थकान ही न हुअी हो और अुपवास किया ही न हो।

२७-९-'३२

सुबह ही सुबह श्रीमती भंडारी बापूको जन्मदिनकी बधाअी देने आओं। फिर तो जेलके नौकरोंके और अुनकी स्त्रियोंके झुंडके झुंड आने लगे। तार तो दिन भर आ ही रहे थे। अुपवास छूटनेके तार तो थे ही, अुनमें जन्मदिनके तार और मिल गये। फिर तो पूछना ही क्या? सारे दिन मुलाक़ातें होती रहीं। कवि, मालवीयजी वगैरा दिन भर रहे।

२८-९-'३२

कविने अपनी योजनाके बारेमें खूब बातें कीं। अुनकी योजना तो स्वतंत्र रूपमें प्रकाशित हो गअी। फिर राजनैतिक परिस्थितिके बारेमें अुन्हें जो तार देना था, वह बापूसे दिलानेकी सूचना देकर वे चले गये। बापूने मसौदा तैयार करके राजाजीके सामने पढ़ा। राजाजीने फौरन आपत्ति की कि यह तार आप यहाँ अितनी मंडलीमें बैठ कर लिखें और वह यहाँसे जाय, यह तो अवश्य ही अनर्थ और पाप होगा। मैं तो विरोध करने ही वाला हूँ। मालवीयजी और सरोजिनी सब सहमत हुअे, अिसलिअे तार फाड़ दिया गया।

फिर ज़ामोरिनके नामके तारका मसौदा बनने लगा। अिसमें बापूने यह लिखा था कि अुपवासका हेतु ठण्डे दिलोंको सतेज करना था। मालवीयजीने कहा: "'ठण्डे' शब्दको निकाल दीजिये, अुन्हें अपमान लगेगा।" राजाजीने कहा: "नहीं, यह शब्द निकाल देंगे, तो 'हृदयहीन' अर्थ हो जायगा।" अन्तमें वह शब्द तो निकाल ही दिया।

बापूने अुनसे कहा: "मुझे परचुरे शास्त्रीकी ज़रूरत है।" शास्त्रीजीको बुलवाया गया। बापूके दाहिनी तरफ़ कुरसी पर कवि बैठे, बाअीं ओर कम्बल बिछा कर परचुरे शास्त्री बैठे। सामने सारा आश्रम-मण्डल बैठा। पीछे जेलर, मेजर भंडारी और मेहता बैठे।

कविने "जीवन जखन शुकाये जाय" गाया। सौभाग्यसे मेरे पास यह लिखा हुआ था। अिसका राग वे तो भूल ही गये थे।

फिर परचुरे शास्त्रीने अुपनिषदोंमेंसे मंत्र बोले और बादमें "वैष्णव जन" गाया गया। सबको फल बाँटे गये। जेलवालोंने भी फल लिये। आनंद ही आनंद छा गया। आज सब आनेवाले अपनेको धन्य मानने लगे।

रातको फिर बापूने 'हरिने भजतां' भजन गवाया। रातको कटेलीकी माताजी और श्रीमती भंडारी वगैरा आअीं। रातको साढ़ेआठ बजे बापूने अपना बयान लिखवाया। अुसमें अितनी तफ़सील थी कि मानो अुन्हें कोअी थकान ही न हुअी हो और अुपवास किया ही न हो।

२७-९-'३२

सुबह ही सुबह श्रीमती भंडारी बापूको जन्मदिनकी बधाअी देने आअीं। फिर तो जेलके नौकरोंके और अुनकी स्त्रियोंके झुंडके झुंड आने लगे। तार तो दिन भर आ ही रहे थे। अुपवास छूटनेके तार तो थे ही, अुनमें जन्मदिनके तार और मिल गये। फिर तो पूछना ही क्या? सारे दिन मुलाक़ातें होती रहीं। कवि, मालवीयजी वगैरा दिन भर रहे।

२८-९-'३२

कविने अपनी योजनाके बारेमें खूब बातें कीं। अुनकी योजना तो स्वतंत्र रूपमें प्रकाशित हो गअी। फिर राजनैतिक परिस्थितिके बारेमें अुन्हें जो तार देना था, वह बापूसे दिलानेकी सूचना देकर वे चले गये। बापूने मसौदा तैयार करके राजाजीके सामने पढ़ा। राजाजीने फौरन आपत्ति की कि यह तार आप यहाँ अितनी मंडलीमें बैठ कर लिखें और वह यहाँसे जाय, यह तो अवश्य ही अनर्थ और पाप होगा। मैं तो विरोध करने ही वाला हूँ। मालवीयजी और सरोजिनी सब सहमत हुअे, अिसलिअे तार फाड़ दिया गया।

फिर ज़ामोरिनके नामके तारका मसौदा बनने लगा। अिसमें बापूने यह लिखा था कि अुपवासका हेतु ठण्डे दिलोंको सतेज करना था। मालवीयजीने कहा: "'ठण्डे' शब्दको निकाल दीजिये, अुन्हें अपमान लगेगा।" राजाजीने कहा: "नहीं, यह शब्द निकाल देंगे, तो 'हृदयहीन' अर्थ हो जायगा।" अन्तमें वह शब्द तो निकाल ही दिया।

केलप्पनको लम्बा तार दिलवाया कि अुपवास तीन महीने मुल्तवी रखा जाय। यह मियाद पूरी होने आये, तो फिर बापूकी सम्मति लेकर अुपवास घोषित किया जाय। अुनको तार तो देते ही रहे थे। फिर रंगस्वामी आये। अुन्होंने कुछ बातें कहीं और बापूने कहा: "बस मैं तार दूँगा। मगर अब यह चीज़ मेरे अन्दर पचने दो, फिर मुझे पता चलेगा कि अुससे क्या कहना है।"

अिसके बाद दो-अेक घण्टे दूसरी बातें करते रहे। अितनेमें २३ मअीका लिखा हुआ केलप्पनका पत्र आ पहुँचा। तुरन्त बापूने लम्बा तार लिखवाया। लिखवा कर कहने लगे: "बस, अिस पत्रके आते ही सूझ गया कि मुझे अुससे क्या कहना है।"

शामको बा को जाना पड़ा। यह बड़ी मुश्किल बात थी। बापूने कहा: "अब जेलरको न रोको। तुरंत चली जाओ, तुरंत चली जाओ।"

बा के दिलमें यह था कि बापूके लिअे आखिरी खाना तैयार करके जाअूँ। आखिर तैयार हो गअीं। बापूसे बोलीं: "लो तो आना। मैं जाती हूँ।" कहते-कहते आँखें भर आअीं।

बापूने अुनके गाल पर हलकी-सी चपत लगाकर कहा: "मैं आअूँगा, या तू आयेगी। चिन्ता तो करनी ही नहीं है। अितने दिन रहनेको मिल गया, यह क्या कम है?"

आज रातको भी "हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे" भजन गवाया। आज नियमके अनुसार तो "ये बहारे बाग दुनिया" की बारी थी। मैंने पूछा: "तो भी 'हरिने भजतां' ही गाना है?"

बापू: "हाँ, तो भी।"

अिसलिअे मैंने पूछा: "यह आप कैसे कहते थे कि अिस भजनका अितिहास है? क्या अितिहास है?"

बापू कहने लगे: "खास अितिहास तो नहीं है। मगर अेक बार हरजीवन कोटकको पत्र लिख रहा था और यह भजन याद आ गया। बस, फिर किसी भी तरह वह मनमेंसे निकलता ही नहीं था। अुसके बाद तुमने अेक दिन अुपवासमें गाया। मैंने फिर गवाया। और अब रोज़ गवाता हूँ, क्योंकि तृप्ति ही नहीं होती।"

शास्त्रियारका बहुत ही सुन्दर पत्र आया। पढ़ कर सरोजिनीसे बोले: "पूरा धनका भंडार है।"

केलप्पनको लम्बा तार दिलवाया कि अुपवास तीन महीने मुल्तवी रखा जाय। यह मियाद पूरी होने आये, तो फिर बापूकी सम्मति लेकर अुपवास घोषित किया जाय। अुनको तार तो देते ही रहे थे। फिर रंगस्वामी आये। अुन्होंने कुछ बातें कहीं और बापूने कहा: "बस मैं तार दूँगा। मगर अब यह चीज़ मेरे अन्दर पचने दो, फिर मुझे पता चलेगा कि अुससे क्या कहना है।"

अिसके बाद दो-अेक घण्टे दूसरी बातें करते रहे। अितनेमें २३ मअीका लिखा हुआ केलप्पनका पत्र आ पहुँचा। तुरन्त बापूने लम्बा तार लिखवाया। लिखवा कर कहने लगे: "बस, अिस पत्रके आते ही सूझ गया कि मुझे अुससे क्या कहना है।"

शामको बा को जाना पड़ा। यह बड़ी मुश्किल बात थी। बापूने कहा: "अब जेलरको न रोको। तुरंत चली जाओ, तुरंत चली जाओ।"

बा के दिलमें यह था कि बापूके लिअे आखिरी खाना तैयार करके जाअूँ। आखिर तैयार हो गअीं। बापूसे बोलीं: "लो तो आना। मैं जाती हूँ।" कहते-कहते आँखें भर आअीं।

बापूने अुनके गाल पर हलकी-सी चपत लगाकर कहा: "मैं आअूँगा, या तू आयेगी। चिन्ता तो करनी ही नहीं है। अितने दिन रहनेको मिल गया, यह क्या कम है?"

आज रातको भी "हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे" भजन गवाया। आज नियमके अनुसार तो "ये बहारे बाग़ दुनिया" की बारी थी। मैंने पूछा: "तो भी 'हरिने भजतां' ही गाना है?"

बापू: "हाँ, तो भी।"

अिसलिअे मैंने पूछा: "यह आप कैसे कहते थे कि अिस भजनका अितिहास है? क्या अितिहास है?"

बापू कहने लगे: "खास अितिहास तो नहीं है। मगर अेक बार हरजीवन कोटकको पत्र लिख रहा था और यह भजन याद आ गया। बस, फिर किसी भी तरह वह मनमेंसे निकलता ही नहीं था। अुसके बाद तुमने अेक दिन अुपवासमें गाया। मैंने फिर गवाया। और अब रोज़ गवाता हूँ, क्योंकि तृप्ति ही नहीं होती।"

शास्त्रियारका बहुत ही सुन्दर पत्र आया। पढ़ कर सरोजिनीसे बोले: "पूरा धनका भंडार है।"

श्रीमती अेस्थर मेननको :

" अितनी दूरसे भी मैं तुम्हारा दुःख समझ सकता हूँ। मगर अीश्वर हमेशा हमारे पास काँटोंके रास्ते ही आता है। अैसी पावक वेदनाके समय अेक गहरा, अूपरसे न दिखनेवाला आनंद अनुभव होता है। मैं आशा रखता हूँ कि अिस परीक्षाके दरमियान तुम भी अिस आनंदकी भागीदार बनी होंगी। अिंग्लैण्डसे हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डर और अेण्ड्रूज़ तथा औरोंने लम्बा सन्देश भेजा था, अुसमें तुम्हारा नाम भी मैंने देखा या सुना था। मुझमें हर रोज़ शक्ति आती जा रही है। मुझसे लम्बे पत्रकी आशा तो तुम नहीं रखती होंगी। मुझमें जो शक्ति है, वह अिंग्लैण्डके मित्रोंको प्रेमपत्र लिखनेमें खर्च कर रहा हूँ।"

देवी वेस्टको :

" मेरे अुपवासकी खबर सुनकर तुम पर क्या बीती होगी, सो मैं जानता हूँ। परन्तु अीश्वरकी अिच्छा यही थी बादमें जो कुछ हुआ, अुसमें यह अिच्छा क्या तुम देख नहीं सकतीं?"

म्यूरियलको :

" सब खत्म हो गया। जिस अुपवासका अितना शोर मचा, वह गअी-बीती बात बन गया। यह अनुभव करने लायक ही था। और कुछ नहीं, तो अिसीलिअे कि दुनियाके सभी भागोंसे प्रेमकी वर्षा हुअी और हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सुधारकी लहर आ गअी।"

हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डरको :

" अुपवासके दरमियान अंग्रेज़ मित्र निरंतर मेरे हृदयके समीप थे।"

वेरियरको :

" और बहुत-सी बातोंके साथ अिस अुपवाससे मैं संघके सदस्योंके प्रत्यक्ष सम्पर्कमें आया हूँ। फादर विंस्लोके साथ प्रेममय वार्तालाप हुआ। अिन सब भाअियोंके साथ परिचय होनेसे मुझे खुशी हुअी। श्यामराव भी अुनके साथ थे।"

रोलाँ भाअी-बहनको :

" प्रिय मित्रो,

" आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिला। अिस अग्नि-परीक्षाके दरमियान आप हमेशा मेरे सामने थे। अीश्वरकी दया अपार थी और सारे प्रसंगमें प्रत्यक्ष हो रही थी। मुझे अभी अभी मीराका पत्र मिला। अुसने तो आनंदका लाभ लूटे बिना दुःख अुठाया। मगर अुसने यह शरशय्या पसन्द की है, और अुस पर वह बहादुरीसे लेटी हुअी है।"

श्रीमती अेस्थर मेननको :

“अितनी दूरसे भी मैं तुम्हारा दुःख समझ सकता हूँ। मगर अीश्वर हमेशा हमारे पास काँटोंके रास्ते ही आता है। अैसी पावक वेदनाके समय अेक गहरा, अूपरसे न दिखनेवाला आनंद अनुभव होता है। मैं आशा रखता हूँ कि अिस परीक्षाके दरमियान तुम भी अिस आनंदकी भागीदार बनी होंगी। अिंग्लैण्डसे हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डर और अेण्डूज़ तथा औरोंने लम्बा सन्देश भेजा था, अुसमें तुम्हारा नाम भी मैंने देखा या सुना था। मुझमें हर रोज़ शक्ति आती जा रही है। मुझसे लम्बे पत्रकी आशा तो तुम नहीं रखती होंगी। मुझमें जो शक्ति है, वह अिंग्लैण्डके मित्रोंको प्रेमपत्र लिखनेमें खर्च कर रहा हूँ।”

देवी वेस्टको :

“मेरे अुपवासकी खबर सुनकर तुम पर क्या बीती होगी, सो मैं जानता हूँ। परन्तु अीश्वरकी अिच्छा यही थी बादमें जो कुछ हुआ, अुसमें यह अिच्छा क्या तुम देख नहीं सकतीं?”

म्यूरियलको :

“सब खत्म हो गया। जिस अुपवासका अितना शोर मचा, वह गअी-बीती बात बन गया। यह अनुभव करने लायक ही था। और कुछ नहीं, तो अिसीलिअे कि दुनियाके सभी भागोंसे प्रेमकी वर्षा हुअी और हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सुधारकी लहर आ गअी।”

हॉरेस अेलेग्ज़ेण्डरको :

“अुपवासके दरमियान अंग्रेज़ मित्र निरंतर मेरे हृदयके समीप थे।”

वेरियरको :

“और बहुत-सी बातोंके साथ अिस अुपवाससे मैं संघके सदस्योंके प्रत्यक्ष सम्पर्कमें आया हूँ। फादर विंस्लोके साथ प्रेममय वार्तालाप हुआ। अिन सब भाअियोंके साथ परिचय होनेसे मुझे खुशी हुअी। श्यामराव भी अुनके साथ थे।”

रोलाँ भाअी-बहनको :

“प्रिय मित्रो,

“आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिला। अिस अग्नि-परीक्षाके दरमियान आप हमेशा मेरे सामने थे। अीश्वरकी दया अपार थी और सारे प्रसंगमें प्रत्यक्ष हो रही थी। मुझे अभी अभी मीराका पत्र मिला। अुसने तो आनंदका लाभ लूटे बिना दुःख अुठाया। मगर अुसने यह शरशय्या पसन्द की है, और अुस पर वह बहादुरीसे लेटी हुअी है।”

ले तो बैठा हूँ। वह भी ओश्वरके नाम पर लिया है। वही शोभावे और लाज रखे। मुझे बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है।"

गोविन्ददासको (हिन्दीमें):

"अंत्यज भाअियोंके प्रेमके बारेमें मुझे कभी अविश्वास था ही नहीं। ओश्वरने सब अच्छा ही किया है। अब हम आशा रखें कि जो अुत्साह पैदा हुआ है, वह चिरस्थायी रहेगा और अस्पृश्यताकी जड़ अुखड़ जायगी।"

मेरी बारको:

"हरदम यह रटन जारी है कि ओश्वर महान और दयालु है।"

रेहाना बहनका दूसरा पत्र आया। अुसे अुर्दूमें लिखा:

"प्यारी बेटी रेहाना,

"फ़ाक़ेके बाद यह पहला अुर्दू खत है। तुम्हारे भजन बहुत अच्छे हैं। फ़ाक़ा शुरू करनेके वक़्त जो भजन गाया वह तुम्हारा नहीं है, तो क्या है? आखिर है तो तुमने ही दी हुअी अुमदा चीज़। हाँ, तुम्हारा ही होता, तो मुझे बहुत ज्यादा अच्छा लगता। ठीक है, दुबारा जब फ़ाक़ेका मौक़ा खुदा भेज देगा, तब तुम्हारा ही बनाया हुआ भजन मुझे चाहिये। आजसे तैयार करो।"

१–१०–'३२

बूढ़े अब्बास साहबको लिखा:

"सचमुच आपकी श्रद्धा ज़बरदस्त थी और जो घटनायें हुअीं, अुनसे वह सच्ची साबित हुअी। वह श्रद्धा अितनी जीती-जागती थी कि दूसरे मित्रोंकी तरह यहाँ दौड़े आकर मुझे रोकनेके लिअे आपको विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ा। सचमुच ही बेगम अब्बासकी भविष्यवाणी या भावीकी प्रेरणा सच्ची निकली। अुन्हें मेरा खूब मुबारकबाद। दूध और फलोंसे शक्ति आती जा रही है।"

फिलिप किंग्स्लीको सन्देश भेजा:

"मैं चाहता हूँ कि पिछले कुछ दिनोंमें हिन्दुस्तानमें जो घटनाअें हो गअी हैं, अुनमें अमेरिका ओश्वरका हाथ देख सके। यह मनुष्यका काम नहीं, ओश्वरकी ही कृपा है अिसमें शक नहीं।"

मीराको:

"अुपवासके द्वारा पैदा हुअे परिणामोंको देखते हुअे अुपवास किसी गिनतीमें नहीं था। यह काम अिन्सानका नहीं, ओश्वरका है। यह सब देखकर तेरी अुदासी भाग जानी चाहिये।"

नाज़ुकलालको:

"प्रभुने नया जन्म दिया है। अब वह अपनी अिच्छानुसार चलायेगा।"

ले तो बैठा हूँ। वह भी ओश्वरके नाम पर लिया है। वही शोभावे और लाज रखे। मुझे बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है।"

गोविन्ददासको (हिन्दीमें):

"अंत्यज भाअियोंके प्रेमके बारेमें मुझे कभी अविश्वास था ही नहीं। ओश्वरने सब अच्छा ही किया है। अब हम आशा रखें कि जो अुत्साह पैदा हुआ है, वह चिरस्थायी रहेगा और अस्पृश्यताकी जड़ अुखड़ जायगी।"

मेरी बारको:

"हरदम यह रटन जारी है कि ओश्वर महान और दयालु है।"

रेहाना बहनका दूसरा पत्र आया। अुसे अुर्दूमें लिखा:

"प्यारी बेटी रेहाना,

"फ़ाक़ेके बाद यह पहला अुर्दू खत है। तुम्हारे भजन बहुत अच्छे हैं। फ़ाक़ा शुरू करनेके वक़्त जो भजन गाया वह तुम्हारा नहीं है, तो क्या है? आखिर है तो तुमने ही दी हुअी अुमदा चीज़। हाँ, तुम्हारा ही होता, तो मुझे बहुत ज्यादा अच्छा लगता। ठीक है, दुबारा जब फ़ाक़ेका मौक़ा खुदा भेज देगा, तब तुम्हारा ही बनाया हुआ भजन मुझे चाहिये। आजसे तैयार करो।"

१-१०-'३२

बूढ़े अब्बास साहबको लिखा:

"सचमुच आपकी श्रद्धा ज़बरदस्त थी और जो घटनायें हुअीं, अुनसे वह सच्ची साबित हुअी। वह श्रद्धा अितनी जीती-जागती थी कि दूसरे मित्रोंकी तरह यहाँ दौड़े आकर मुझे रोकनेके लिअे आपको विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ा। सचमुच ही बेगम अब्बासकी भविष्यवाणी या भावीकी प्रेरणा सच्ची निकली। अुन्हें मेरा खूब मुबारकबाद। दूध और फलोंसे शक्ति आती जा रही है।"

फिलिप किंग्स्लीको सन्देश भेजा:

"मैं चाहता हूँ कि पिछले कुछ दिनोंमें हिन्दुस्तानमें जो घटनाअें हो गअी हैं, अुनमें अमेरिका ओश्वरका हाथ देख सके। यह मनुष्यका काम नहीं, ओश्वरकी ही कृपा है अिसमें शक नहीं।"

मीराको:

"अुपवासके द्वारा पैदा हुअे परिणामोंको देखते हुअे अुपवास किसी गिनतीमें नहीं था। यह काम अिन्सानका नहीं, ओश्वरका है। यह सब देखकर तेरी अुदासी भाग जानी चाहिये।"

नाज़ुकलालको:

"प्रभुने नया जन्म दिया है। अब वह अपनी अिच्छानुसार चलायेगा।"

केलप्पनने भी लिखा कि "नोटिस तो दिया जा चुका है। सर्दी और धूपमें खड़े रहकर कितने ही लोगोंने सत्याग्रह किया है, क्या यह नोटिस नहीं माना जायगा? आपके अुपवासको मैंने सम्मति मान ली है। अब तो लगभग विजय दिखाअी दे रही है। अुपवास छोड़नेसे सारी लड़ाअी पीछे हट जायगी। मैं अपनी आत्माकी ही बात मानूँ, तो अुपवास लम्बाअूँ; आपकी आज्ञा ही हो तो छोड़ूँ।"

बापूने अुन्हें लम्बा तार दिया : "फ़िलहाल अच्छे परिणाम दीखते हों, तो अिससे जो क़दम अुठाया गया है अुसकी नीति पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। सारे हालातको देखते हुअे मुझे तुम्हारी भूल मालूम हो रही है। अुपवास छोड़ो और तीन महीनेका नोटिस दो।"

वल्लभभाअीको और मुझे अिससे आघात लगा। मेरा तो यही सवाल था कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका सवाल क्यों नहीं हो सकता? अिस पर बापू कहने लगे : "वह मुझे पूछता है, मेरा आशीर्वाद माँगता है, यही बताता है कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका प्रश्न नहीं है; मगर वह मेरी रायसे चलता है। बापटका मेरे साथ विरोध था; वे मेरे अनुशासनमें नहीं, अिसलिअे अुनके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है; लेकिन केलप्पन तो अनुशासन माननेवाला ठहरा। कामको कोअी धक्का पहुँचनेवाला नहीं। तीन महीनेके बाद केलप्पनमें शक्ति होगी, तो वह फिर ज़रूर अुपवास करेगा। मान लीजिये कि वह न करे, तो मैं तो बैठा ही हूँ। मैं तो अुसे वचन दे चुका हूँ कि तुम्हारा भार मैं अुठाअूँगा। अिसलिअे मरना ही होगा। भगवानसे ही मैं तो कहूँगा कि अेक निर्दोष बकरेको छुड़ाया है, अब अुसकी क़ीमत पर यह दूसरा बकरा ले लो।"

शामको अैसे समाचार आये कि केलप्पन बापूके तारके परिणामस्वरूप कल अुपवास छोड़ेंगे।

बापू बोले : "अिसकी हठका कोअी ठिकाना है? अभी कल तक राह देखनी है। अेक बार भूल मालूम हुअी कि तुरन्त अुसे सुधारना चाहिये।"

मैंने कहा : "मेरे मनमें दिन भर यह विचार आया कि भले ही केलप्पनका अुपवास छूटे, और आपके कहनेसे छूटे, मगर अिसीके साथ मन्दिर भी खुले।"

बापू बोले : "मुझे अैसा विचार नहीं आया। मुझे तो यही लगा कि अिसका अुपवास बन्द हो जाय तो अच्छा। मन्दिर न खुले तो मुझे परवाह नहीं। मैं तो यह कहूँगा कि मन्दिर न खुले तो अच्छा। कारण, केलप्पनकी बहादुरी तो अद्भुत कहलायेगी, मगर अिसमें शंका नहीं कि यह अुपवास दूषित है। अिस अुपवासके छोड़नेमें अुसकी ज्यादा बहादुरी मानी जायगी। अुसकी आलोचना तो हरगिज़ नहीं होगी, मगर अुसकी नम्रता और नियमपालनकी तारीफ़ होगी। और तीन महीने बाद तो फिर करना ही है। मुझे कोअी शक नहीं कि

केलप्पनने भी लिखा कि "नोटिस तो दिया जा चुका है। सर्दी और धूपमें खड़े रहकर कितने ही लोगोंने सत्याग्रह किया है, क्या यह नोटिस नहीं माना जायगा? आपके अुपवासको मैंने सम्मति मान ली है। अब तो लगभग विजय दिखाअी दे रही है। अुपवास छोड़नेसे सारी लड़ाअी पीछे हट जायगी। मैं अपनी आत्माकी ही बात मानूँ, तो अुपवास लम्बाअूँ; आपकी आज्ञा ही हो तो छोड़ूँ।"

बापूने अुन्हें लम्बा तार दिया: "फ़िलहाल अच्छे परिणाम दीखते हों, तो अिससे जो क़दम अुठाया गया है अुसकी नीति पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। सारे हालातको देखते हुअे मुझे तुम्हारी भूल मालूम हो रही है। अुपवास छोड़ो और तीन महीनेका नोटिस दो।"

वल्लभभाअीको और मुझे अिससे आघात लगा। मेरा तो यही सवाल था कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका सवाल क्यों नहीं हो सकता? अिस पर बापू कहने लगे: "वह मुझे पूछता है, मेरा आशीर्वाद माँगता है, यही बताता है कि अुसके लिअे यह अन्तरात्माका प्रश्न नहीं है; मगर वह मेरी रायसे चलता है। बापटका मेरे साथ विरोध था; वे मेरे अनुशासनमें नहीं, अिसलिअे अुनके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है; लेकिन केलप्पन तो अनुशासन माननेवाला ठहरा। कामको कोअी धक्का पहुँचनेवाला नहीं। तीन महीनेके बाद केलप्पनमें शक्ति होगी, तो वह फिर ज़रूर अुपवास करेगा। मान लीजिये कि वह न करे, तो मैं तो बैठा ही हूँ। मैं तो अुसे वचन दे चुका हूँ कि तुम्हारा भार मैं अुठाअूँगा। अिसलिअे मरना ही होगा। भगवानसे ही मैं तो कहूँगा कि अेक निर्दोष बकरेको छुड़ाया है, अब अुसकी क़ीमत पर यह दूसरा बकरा ले लो।"

शामको अैसे समाचार आये कि केलप्पन बापूके तारके परिणामस्वरूप कल अुपवास छोड़ेंगे।

बापू बोले: "अिसकी हठका कोअी ठिकाना है? अभी कल तक राह देखनी है। अेक बार भूल मालूम हुअी कि तुरन्त अुसे सुधारना चाहिये।"

मैंने कहा: "मेरे मनमें दिन भर यह विचार आया कि भले ही केलप्पनका अुपवास छूटे, और आपके कहनेसे छूटे, मगर अिसीके साथ मन्दिर भी खुले।"

बापू बोले: "मुझे अैसा विचार नहीं आया। मुझे तो यही लगा कि अिसका अुपवास बन्द हो जाय तो अच्छा। मन्दिर न खुले तो मुझे परवाह नहीं। मैं तो यह कहूँगा कि मन्दिर न खुले तो अच्छा। कारण, केलप्पनकी बहादुरी तो अद्‌भुत कहलायेगी, मगर अिसमें शंका नहीं कि यह अुपवास दूषित है। अिस अुपवासके छोड़नेमें अुसकी ज्यादा बहादुरी मानी जायगी। अुसकी आलोचना तो हरगिज़ नहीं होगी, मगर अुसकी नम्रता और नियमपालनकी तारीफ़ होगी। और तीन महीने बाद तो फिर करना ही है। मुझे कोअी शक नहीं कि

चर्चा नहीं करे; मगर अुसकी निर्विकारिता अपने आप काम करती रहेगी। यह तो मैंने तुझे अपना अनुभव बताया है। अन्तमें तो जो तुझे ठीक लगे, वही करना। अिसमें दूसरेकी समझदारी काम नहीं देती। मेरा तो तुझे अैसे शुभ संकल्पमें आशीर्वाद ही हो सकता है। अन्तिम निश्चय जेलके बाहर ही हो सकता है। जेलमें किये हुअे बहुतोंके निश्चय बाहर जाने पर टूट गये हैं। दोनों वातावरण अलग हैं। दोनों अलग दुनिया हैं।"

मातेने पत्र लिखा कि "आपको अुपवाससे दबाव डालनेके बजाय शान्त मतपरिवर्तन करना चाहिये। अिस मतपरिवर्तनके लिअे आपको कमसे कम अेक साल कोशिश करनी चाहिये और वह भी जेलमें बैठ कर नहीं, मगर बाहर निकल कर। मुझे सिर्फ़ अछूतपनका ही काम करना है, यह घोषणा करके आपको छूटना चाहिये।"

अुन्हें लिखा:

"आपकी दलील मैं समझ सकता हूँ। मेरा अुपवास किसी पर भी ज़बरदस्ती करनेके लिअे नहीं, बल्कि ठण्डे पड़ गये अन्तरात्माको सतेज करनेके लिअे है। बदक़िस्मतीसे यह सच है कि कुछ लोगों पर ज़बरदस्ती हो सकती है। मगर न तो यह बहुत लम्बाअी जा सकती है और न व्यापक ही हो सकती है। धार्मिक सुधारक लोगोंके मन पर आधिपत्य जमानेकी कोशिश नहीं करता, वह तो लोगोंको जाग्रत करता है और अुन्हें विचार करने और काम करनेमें लगा देता है।

"मुझे अपने सिद्धान्तोंका बलिदान करके रिहाअी न खरीदनी चाहिये। अछूतपन मिटाना मेरे जीवनके कार्यक्रमका बहुत महत्वपूर्ण अंग है, मगर वह अेकमात्र अंग नहीं। मेरा जीवन अीश्वरके हाथोंमें है। अुसे जैसा पसन्द होगा, वैसा बनायेगा। आपको अैसा नहीं लगता कि मैं अुसके हाथोंमें सुरक्षित हूँ?"

"वैष्णव मन्दिर खुलवानेके लिअे नम्रता और प्रेमसे आन्दोलन कर सकें, तो करना चाहिये। लेकिन प्रेमके नाम पर अुतावले बनकर लोगोंके साथ अुद्धत व्यवहार न किया जाय, यह खूब ध्यानमें रखना होगा"

अेक भाअीको लिखा:

"मेरी दृष्टिमें स्पर्श, मन्दिर-प्रवेश, आदि अस्पृश्यता निवारणके अंग हैं। भोजन अैच्छिक बात है।"

आखिर केलप्पनका तार आया:

"बापूके प्रेमकी आज्ञाके आधीन हूँ। अुपवास खोल दिया, आज आठ दिन हो गये। बापूके जन्मदिवस पर अुन्हें नम्रतापूर्वक प्रणाम।"

सारे हिन्दुस्तानसे जिसे अुपवास छोड़नेके लिअे तार जा रहे थे और जो

चर्चा नहीं करे; मगर अुसकी निर्विकारिता अपने आप काम करती रहेगी। यह तो मैंने तुझे अपना अनुभव बताया है। अन्तमें तो जो तुझे ठीक लगे, वही करना। अिसमें दूसरेकी समझदारी काम नहीं देती। मेरा तो तुझे अैसे शुभ संकल्पमें आशीर्वाद ही हो सकता है। अन्तिम निश्चय जेलके बाहर ही हो सकता है। जेलमें किये हुअे बहुतोंके निश्चय बाहर जाने पर टूट गये हैं। दोनों वातावरण अलग हैं। दोनों अलग दुनिया हैं।"

मातेने पत्र लिखा कि "आपको अुपवाससे दबाव डालनेके बजाय शान्त मतपरिवर्तन करना चाहिये। अिस मतपरिवर्तनके लिअे आपको कमसे कम अेक साल कोशिश करनी चाहिये और वह भी जेलमें बैठ कर नहीं, मगर बाहर निकल कर। मुझे सिर्फ़ अछूतपनका ही काम करना है, यह घोषणा करके आपको छूटना चाहिये।"

अुन्हें लिखा :

"आपकी दलील मैं समझ सकता हूँ। मेरा अुपवास किसी पर भी ज़बरदस्ती करनेके लिअे नहीं, बल्कि ठण्डे पड़ गये अन्तरात्माको सतेज करनेके लिअे है। बदक़िस्मतीसे यह सच है कि कुछ लोगों पर ज़बरदस्ती हो सकती है। मगर न तो यह बहुत लम्बाअी जा सकती है और न व्यापक ही हो सकती है। धार्मिक सुधारक लोगोंके मन पर आधिपत्य जमानेकी कोशिश नहीं करता, वह तो लोगोंको जाग्रत करता है और अुन्हें विचार करने और काम करनेमें लगा देता है।

"मुझे अपने सिद्धान्तोंका बलिदान करके रिहाअी न खरीदनी चाहिये। अछूतपन मिटाना मेरे जीवनके कार्यक्रमका बहुत महत्वपूर्ण अंग है, मगर वह अेकमात्र अंग नहीं। मेरा जीवन अीश्वरके हाथोंमें है। अुसे जैसा पसन्द होगा, वैसा बनायेगा। आपको अैसा नहीं लगता कि मैं अुसके हाथोंमें सुरक्षित हूँ?"

"वैष्णव मन्दिर खुलवानेके लिअे नम्रता और प्रेमसे आन्दोलन कर सकें, तो करना चाहिये। लेकिन प्रेमके नाम पर अुतावले बनकर लोगोंके साथ अुद्धत व्यवहार न किया जाय, यह खूब ध्यानमें रखना होगा"

अेक भाअीको लिखा :

"मेरी दृष्टिमें स्पर्श, मन्दिर-प्रवेश, आदि अस्पृश्यता निवारणके अंग हैं। भोजन अैच्छिक बात है।"

आखिर केलप्पनका तार आया :

"बापूके प्रेमकी आज्ञाके आधीन हूँ। अुपवास खोल दिया, आज आठ दिन हो गये। बापूके जन्मदिवस पर अुन्हें नम्रतापूर्वक प्रणाम।"

सारे हिन्दुस्तानसे जिसे अुपवास छोड़नेके लिअे तार जा रहे थे और जो

यह तार अपने बड़े भाओी खुशालभाओीके मारफ़त भेजा, अिसी अुद्देश्यसे कि वे भी तार देख कर जान लें कि अिन्हें आशीर्वाद देनेमें कितनी ज़िम्मेदारी है।

आश्रमकी डाकके लिअे मौनवारके दिन पचास पत्र लिख डाले।

पूँजाभाओीको :

३-१०-'३२ "मैंने तुम्हारे साथ दौड़ लगाओी तो सही, मगर अभी हारा हुआ ही माना जाअूँगा। 'जीवन या मरणमें कोओी कमीवेशी नहीं।' मेरे लिअे नया जन्म है। ओीश्वरको जो करना हो सो करे। प्रभुने लाज रखी है। कसौटी बहुत हल्की की। मैं तो क्षण-क्षणमें ओीश्वरकी कृपा अनुभव कर रहा हूँ।"

अेस० के० जॉर्जको :

"हाँ, अिस दवासे भी रामराज्य संभव है, बशर्ते कि कार्यकर्ता सच्चे हों। कार्यकर्ताओंसे मुझे बाहर नहीं समझना चाहिये। अगर मैं सच्चा हूँ, तो साथी ज़रूर सच्चे होंगे। मैं झूठा हूँ, तो साथी भी झूठे ही होंगे।"

"बड़ोंकी हँसी और तिरस्कार हम मनमें भी कैसे कर सकते हैं! और अिस तिरस्कारमें हमारे दोषोंके प्रति रहनेवाली अुदासीनता कितनी हानिकारक है!"

"अितनी शक्ति अभी प्राप्त नहीं कर ली कि लम्बा जवाब दे सकूँ। और लिखूँ भी क्या? मुझे फिर लिखना। मेरा नया जन्म हुआ है न? पूर्वजन्ममें सुने हुअेका अुत्तर अिस जन्ममें देनेकी ज़रूरत है? होगी तो सही, मगर नये रूपमें। अिसलिअे अब पूछने जैसा लगे तो पूछना।"

"अुपवासमें भी तुझे भूला न था। तेरे बारेमें रंगून लिख रहा हूँ। मैंने यह भी सोच लिया था कि मुझे कुछ हो जाय, तो भी तू निर्भय रह सकता है। मगर अब जान पड़ता है कि अिस शरीरसे मुझे कुछ सेवा करनी है।"

"अिस अुपवाससे हम अधिक सावधान और कर्तव्यपरायण बनना सीखें। मैंने तो रसके घूँट पिये हैं।"

"मैं जानता हूँ कि गाँवोंमें अछूतोंका काम बहुत कठिन है। अुपवास-सप्ताहकी जाग्रति गाँवोंमें कितनी पहुँची है, यह तो तुम्हारे जैसे ही कह सकते हैं। अुसके लिअे ज्यादा अुपवासोंकी ज़रूरत थी। मगर यह तो हुअी मनुष्यकी कल्पना। ओीश्वरने सोचा था, अुतने अुपवास करा लिये। यह कौन जानता है कि अुसे अभी और कितने कराने हैं? वह जैसे रखे वैसे रहना है। अुबलते तेलमें डाले, तो भी खुशीसे नाचनेको हम तैयार रहें। नाचनेकी शक्ति भी वही देगा, अैसा अुसका वचन है न?"

यह तार अपने बड़े भाओी खुशालभाओीके मारफ़त भेजा, अिसी अुद्देश्यसे कि वे भी तार देख कर जान लें कि अिन्हें आशीर्वाद देनेमें कितनी ज़िम्मेदारी है।

आश्रमकी डाकके लिअे मौनवारके दिन पचास पत्र लिख डाले।

पूँजाभाओीको :

३-१०-'३२ "मैंने तुम्हारे साथ दौड़ लगाओी तो सही, मगर अभी हारा हुआ ही माना जाअूँगा। 'जीवन या मरणमें कोओी कमीवेशी नहीं।' मेरे लिअे नया जन्म है। ओीश्वरको जो करना हो सो करे। प्रभुने लाज रखी है। कसौटी बहुत हल्की की। मैं तो क्षण-क्षणमें ओीश्वरकी कृपा अनुभव कर रहा हूँ।"

अेस० के० जॉर्जको :

"हाँ, अिस दवासे भी रामराज्य संभव है, बशर्ते कि कार्यकर्ता सच्चे हों। कार्यकर्ताओंसे मुझे बाहर नहीं समझना चाहिये। अगर मैं सच्चा हूँ, तो साथी ज़रूर सच्चे होंगे। मैं झूठा हूँ, तो साथी भी झूठे ही होंगे।"

"बड़ोंकी हँसी और तिरस्कार हम मनमें भी कैसे कर सकते हैं? और अिस तिरस्कारमें हमारे दोषोंके प्रति रहनेवाली अुदासीनता कितनी हानिकारक है?"

"अितनी शक्ति अभी प्राप्त नहीं कर ली कि लम्बा जवाब दे सकूँ। और लिखूँ भी क्या? मुझे फिर लिखना। मेरा नया जन्म हुआ है न? पूर्वजन्ममें सुने हुअेका अुत्तर अिस जन्ममें देनेकी ज़रूरत है? होगी तो सही, मगर नये रूपमें। अिसलिअे अब पूछने जैसा लगे तो पूछना।"

"अुपवासमें भी तुझे भूला न था। तेरे बारेमें रंगून लिख रहा हूँ। मैंने यह भी सोच लिया था कि मुझे कुछ हो जाय, तो भी तू निर्भय रह सकता है। मगर अब जान पड़ता है कि अिस शरीरसे मुझे कुछ सेवा करनी है।"

"अिस अुपवाससे हम अधिक सावधान और कर्तव्यपरायण बनना सीखें। मैंने तो रसके घूँट पिये हैं।"

"मैं जानता हूँ कि गाँवोंमें अछूतोंका काम बहुत कठिन है। अुपवास-सप्ताहकी जाग्रति गाँवोंमें कितनी पहुँची है, यह तो तुम्हारे जैसे ही कह सकते हैं। अुसके लिअे ज्यादा अुपवासोंकी ज़रूरत थी। मगर यह तो हुआी मनुष्यकी कल्पना। ओीश्वरने सोचा था, अुतने अुपवास करा लिये। यह कौन जानता है कि अुसे अभी और कितने कराने हैं? वह जैसे रखे वैसे रहना है। अुबलते तेलमें डाले, तो भी खुशीसे नाचनेको हम तैयार रहें। नाचनेकी शक्ति भी वही देगा, अैसा अुसका वचन है न?"

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको जो तार भेजा था, अुसकी नक़ल अे० पी० आअी०को भेजनी थी। मेजरने यह तार, रंगस्वामीका तार तथा अे० पी० आअी०को भेजनेकी नक़ल, सब कुछ सरकारके पास भेज दिया। बापूको अिससे काफ़ी चोट लगी और शामको बोले कि अिन अछूतोंके मामलेमें लड़ लेना पड़ेगा।

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको भेजे हुअे तारकी बात करते हुअे मैंने पूछा: "अिस मामलेमें आप अपनी हदसे आगे बढ़ गये हैं। आपने तो कहा था कि केलप्पन अुपवास न कर सके, तो आपको करना पड़ेगा। आज आप कहते हैं कि आप अुसके साथ करेंगे।"

बापू बोले: "ज़रा भी फेरबदल नहीं किया। तुम मेरी यह वृत्ति नहीं जानते कि जिस चीज़की मैं सलाह देता हूँ, अुसे खुद करनेकी मेरी तैयारी होनी चाहिये। केलप्पन खुद सफल न हो, तो अैसा संभव है कि मैं अुसके साथ हो जाअूँ। यह अेक संभावना मुझे बता देनी चाहिये। अुसी वक़्त मैं साथ हो जाअूँ, तो अैसा कहा जायगा कि नोटिस दिये बिना साथ हो गया।"

मैंने कहा: "तब तो राजाजीकी यह बात सही है कि जो लोग खुद अनशन करने लायक़ न हों, वे आपके अनशनकी बढ़ाअी करें, तो अुसका कोअी अर्थ नहीं।"

बापू: "नहीं, यह ठीक नहीं। अैसे लोग अनशनकी सलाह भी नहीं देते और न सूचना देते हैं। मगर तारीफ़ करनेवालोंके बारेमें तुम देखोगे कि जो वे खुद नहीं कर सकते, वह दूसरेमें देखते हैं तो तारीफ़ करते हैं। कवि पर मेरे अनशनका अितना असर कैसे हुआ? कारण, वे जानते हैं कि अुनसे यह नहीं होगा। यह कहा जा सकता है कि यह साधारण नियम ही है।"

४-१०-'३२

आज सुबह बाअीस पत्र लिखकर मुझे दिये। यह बात सच है कि अिनमें बहुतसे पर्चे ही थे। मगर बाअीस पत्रोंको निपटाया यह तो सही है न? अिनमें कुछ पत्र जन्म-दिवसकी बधाअी देनेवाले बच्चोंके नाम थे। अेक अमेरिकाकी स्त्रीका करुण पत्र था। अुसमें लिखा था कि मेरा लड़का क्षयसे बीमार है। अुसके अुपचारके साधन भी थोड़े हैं। वह बड़े आदमियोंके हस्ताक्षर जमा करता है और अुससे जो रुपया मिलता है, वह अिलाज करानेमें काम आता है। बापूने अुसे अेक पंक्ति लिखी:

"तुम जल्दी अच्छे हो जाओ।"

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको जो तार भेजा था, अुसकी नक़ल अे० पी० आअी०को भेजनी थी। मेज़रने यह तार, रंगस्वामीका तार तथा अे० पी० आअी०को भेजनेकी नक़ल, सब कुछ सरकारके पास भेज दिया। बापूको अिससे काफ़ी चोट लगी और शामको बोले कि अिन अछूतोंके मामलेमें लड़ लेना पड़ेगा।

केलप्पनके बारेमें ज़ामोरिनको भेजे हुअे तारकी बात करते हुअे मैंने पूछा: "अिस मामलेमें आप अपनी हदसे आगे बढ़ गये हैं। आपने तो कहा था कि केलप्पन अुपवास न कर सके, तो आपको करना पड़ेगा। आज आप कहते हैं कि आप अुसके साथ करेंगे।"

बापू बोले: "ज़रा भी फेरबदल नहीं किया। तुम मेरी यह वृत्ति नहीं जानते कि जिस चीज़की मैं सलाह देता हूँ, अुसे खुद करनेकी मेरी तैयारी होनी चाहिये। केलप्पन खुद सफल न हो, तो अैसा संभव है कि मैं अुसके साथ हो जाअूँ। यह अेक संभावना मुझे बता देनी चाहिये। अुसी वक़्त मैं साथ हो जाअूँ, तो अैसा कहा जायगा कि नोटिस दिये बिना साथ हो गया।"

मैंने कहा: "तब तो राजाजीकी यह बात सही है कि जो लोग खुद अनशन करने लायक़ न हों, वे आपके अनशनकी बढ़ाअी करें, तो अुसका कोअी अर्थ नहीं।"

बापू: "नहीं, यह ठीक नहीं। अैसे लोग अनशनकी सलाह भी नहीं देते और न सूचना देते हैं। मगर तारीफ़ करनेवालोंके बारेमें तुम देखोगे कि जो वे खुद नहीं कर सकते, वह दूसरेमें देखते हैं तो तारीफ़ करते हैं। कवि पर मेरे अनशनका अितना असर कैसे हुआ? कारण, वे जानते हैं कि अुनसे यह नहीं होगा। यह कहा जा सकता है कि यह साधारण नियम ही है।"

४-१०-'३२

आज सुबह बाअीस पत्र लिखकर मुझे दिये। यह बात सच है कि अिनमें बहुतसे पर्चे ही थे। मगर बाअीस पत्रोंको निपटाया यह तो सही है न? अिनमें कुछ पत्र जन्म-दिवसकी बधाअी देनेवाले बच्चोंके नाम थे। अेक अमेरिकाकी स्त्रीका करुण पत्र था। अुसमें लिखा था कि मेरा लड़का क्षयसे बीमार है। अुसके अुपचारके साधन भी थोड़े हैं। वह बड़े आदमियोंके हस्ताक्षर जमा करता है और अुससे जो रुपया मिलता है, वह अिलाज करानेमें काम आता है। बापूने अुसे अेक पंक्ति लिखी:

"तुम जल्दी अच्छे हो जाओ।"

"मुझमें तो बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है। सरदार अपनी सरदारी यहाँ बैठकर भी नहीं छोड़ते और छोड़नेको कहें, तो कहते हैं कि 'अफ़ीम खानेवाला काठियावाड़ी राजपूत अफ़ीम छोड़े, तो मैं सरदारी छोड़ूँ!' यह दुखड़ा कहाँ रोने जायें?"

आज कअी तरहकी भेंटें आअीं। लाहोरके अेक वैद्यने 'सामो'* भेजा। अेरिस्टार्शीने रूसी क्रॉस भेजा। मुर्तिज़ापुरके अेक वैद्यने पारेका शिवलिंग भेजा। बंगालसे अेक आदमीने शहद भेजा।

स्कॉट हेंडरसन नामके अेक पादरीको लिखा:

"मैं कहता हूँ कि अुपवासकी प्रेरणा मुझे अीश्वरने की और आप कहते हैं अुसने नहीं की; तो अिसका फैसला कौन करे? आप बता सकते हैं कि मैं अपने अंतर्नादकी अपेक्षा आपकी रायको किसलिअे पसन्द करूँ? आपको अैसा नहीं लगता कि मनुष्यके हाथोंमें रहनेके बजाय अीश्वरके हाथोंमें रहना मेरे लिअे अधिक सुरक्षित है?"

आज सरकारको पत्र लिखनेके लिअे सुबहके समय नोटबुक माँगी, परन्तु बादमें फिलहाल लिखनेका विचार छोड़ दिया और दूसरे पत्र लिखे। आज भी ढेरों पत्र लिखे।

५-१०-'३२

"अुपवास आज अितिहासका विषय बन गया है। और शायद वह सुफल देनेवाला भी साबित हुआ है। अिसलिअे जॉर्ज लेंकेस्टर अुसकी नैतिकताकी चर्चा नहीं चाहेंगे। जो चीज़ अीश्वरकी तरफसे आती है, अुसके पूरे बुद्धिगम्य कारण शायद ही दिये जा सकते हैं।"

"मिस्टर लॉयड जॉर्जके बगीचेकी हवाको मैं मूल्यवान मानता हूँ, क्योंकि वह अुनके प्रेमसे भरी हुअी है।"

"मेरी खोअी हुअी शक्ति तेज़ीसे वापस आ रही है। मुझे बहुत क़ीमती अनुभव हुआ। मैंने बहुत दफ़ा अुपवास किये हैं, परन्तु अेकमें भी अितना आनन्द नहीं मिला।"

"मणिलाल अेक-दो दिनमें बम्बअी आ पहुँचेगा। वह बेचारा मुझे मृत्युशय्या पर देखने आ रहा है। अुसे जीवनकी अेक निराशा मिलेगी!"

"मेरी यह बात कि युरोपमें लोग कुछ न कुछ समझौता किये बगैर जीवन नहीं बिता सकते, सत्यवान जैसोंको ध्यानमें रखकर नहीं कही गयी थी।

---

* अेक प्रकारका जल्दी पचनेवाला धान।

“मुझमें तो बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है। सरदार अपनी सरदारी यहाँ बैठकर भी नहीं छोड़ते और छोड़नेको कहें, तो कहते हैं कि ‘अफ़ीम खानेवाला काठियावाड़ी राजपूत अफ़ीम छोड़े, तो मैं सरदारी छोड़ूँ !’ यह दुखड़ा कहाँ रोने जायें ?”

आज कअी तरहकी भेंटें आअीं। लाहोरके अेक वैद्यने ‘सामो’* भेजा। अेरिस्टार्शीने रूसी क्रॉस भेजा। मुर्तिज़ापुरके अेक वैद्यने पारेका शिवलिंग भेजा। बंगालसे अेक आदमीने शहद भेजा।

स्कॉट हेंडरसन नामके अेक पादरीको लिखा:

“मैं कहता हूँ कि अुपवासकी प्रेरणा मुझे अीश्वरने की और आप कहते हैं अुसने नहीं की; तो अिसका फैसला कौन करे ? आप बता सकते हैं कि मैं अपने अंतर्नादकी अपेक्षा आपकी रायको किसलिअे पसन्द करूँ ? आपको अैसा नहीं लगता कि मनुष्यके हाथोंमें रहनेके बजाय अीश्वरके हाथोंमें रहना मेरे लिअे अधिक सुरक्षित है ?”

५–१०–’३२

आज सरकारको पत्र लिखनेके लिअे सुबहके समय नोटबुक माँगी, परन्तु बादमें फिलहाल लिखनेका विचार छोड़ दिया और दूसरे पत्र लिखे। आज भी ढेरों पत्र लिखे।

“अुपवास आज अितिहासका विषय बन गया है। और शायद वह सुफल देनेवाला भी साबित हुआ है। अिसलिअे जॉर्ज लैंकेस्टर अुसकी नैतिकताकी चर्चा नहीं चाहेंगे। जो चीज़ अीश्वरकी तरफसे आती है, अुसके पूरे बुद्धिगम्य कारण शायद ही दिये जा सकते हैं।”

“मिस्टर लॉयड जॉर्जके बगीचेकी हवाको मैं मूल्यवान मानता हूँ, क्योंकि वह अुनके प्रेमसे भरी हुअी है।”

“मेरी खोअी हुअी शक्ति तेज़ीसे वापस आ रही है। मुझे बहुत क़ीमती अनुभव हुआ। मैंने बहुत दफ़ा अुपवास किये हैं, परन्तु अेकमें भी अितना आनन्द नहीं मिला।”

“मणिलाल अेक-दो दिनमें बम्बअी आ पहुँचेगा। वह बेचारा मुझे मृत्युशय्या पर देखने आ रहा है। अुसे जीवनकी अेक निराशा मिलेगी !”

“मेरी यह बात कि युरोपमें लोग कुछ न कुछ समझौता किये बगैर जीवन नहीं बिता सकते, सत्यवान जैसोंको ध्यानमें रखकर नहीं कही गयी थी।

---

* अेक प्रकारका जल्दी पकनेवाला धान।

आज भी बापूने बाअीस पत्र लिखे। बापूकी तरफ़से मुझे लिखनेकी छूट थी वह बन्द हुअी, अिसलिअे सिर्फ़ पहुँच स्वीकारनेके पर्चे भी अुन्हींको लिखने पड़ते हैं। अछूतपनके बारेमें कुछ प्रश्नोंवाला हरिभाअू फाटकका पत्र आया, अुसका बापूने ब्यौरेवार जवाब दिया :

६–१०–'३२

"तुम्हारे सवालोंके ये छोटे-छोटे जवाब काफ़ी होंगे।

"अछूतपनको जड़से अुखाड़नेके लिअे सहभोजन और मिश्र-विवाह अनिवार्य नहीं हैं। ये दोनों सुधार अलग-अलग हैं। और हिन्दू समाजकी सारी जातियोंको अेक दिन अिन्हें मानना होगा।

"ज़बरदस्तीसे कुछ नहीं हो सकता और होना भी नहीं चाहिये। अुपवास और अैसे अुपाय लोगोंसे अुनकी मरज़ीके खिलाफ़ कुछ भी करानेके लिअे नहीं हैं। ये तो लोगोंको विचार और काममें लगानेके लिअे हैं। 'अछूत' अगर अब अछूत नहीं रहे हों, तो हिन्दू समाजमें वे क्या हैं? मेरी राय यह है कि आज तो वर्ण-व्यवस्था नष्ट हो गअी है। आज कोअी सच्चा ब्राह्मण या सच्चा क्षत्रिय या सच्चा वैश्य नहीं रहा। हम सब शूद्र हैं यानी अेक वर्ण हैं। यह स्थिति स्वीकार कर ली जाय, तो बात बहुत आसान हो जाती है। लेकिन अिसे स्वीकार करनेमें हमारे अभिमानको ठेस पहुँचती हो, तो हम सब ब्राह्मण कहे जा सकते हैं। अस्पृश्यताका निवारण करनेका अर्थ है, अूँच-नीचके भेदभावको जड़से अुखाड़ फेंकना। जो यह कहता है कि मैं दूसरोंसे बड़ा हूँ, वह अपना पतन करता है। जो यह कहता है कि मैं सबसे छोटा हूँ, वह अपनेको अूँचा अुठाता है। मेरे ये अुपवास अिन प्रश्नोंको अूपर-अूपरसे हल करनेके लिअे नहीं थे, बल्कि अिसलिअे थे कि हम सब सच्चे बनें।

"मैं चाहता हूँ कि मैं कोअी समय-मर्यादा मुक़र्रर कर सकूँ। परन्तु यह करनेवाला मैं कौन? अपने पिछले अनुभव परसे मैं अितना कह सकता हूँ कि अगर यह सुधार स्थिर वेगसे होता रहा और अिसमें कोअी ढोंग या दंभ नहीं घुसा, तो मुझे अिस प्रश्नके लिअे अुपवास नहीं करना पड़ेगा। सच्ची प्रगति अपने आप दिख जाती है। हरिजन अिसकी गरमी अचूक रूपमें महसूस कर सकेंगे। अिसलिअे तुमसे बिनती है कि समय-मर्यादाकी चिन्ता न करो।

"हम सब किसी न किसी तरहकी मूर्तियोंको मानते हैं। मैं तो मानता ही हूँ। साधारण मन्दिरका मुझे स्वयं कोअी आकर्षण नहीं है। लेकिन अुसका आध्यात्मिक मूल्य बहुत है। अिसलिअे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलने ही चाहियें। मन्दिरोंमें सुधार होनेकी जरूरत है। अुनका नाश आवश्यक नहीं।"

आज भी बापूने बाओीस पत्र लिखे। बापूकी तरफ़से मुझे लिखनेकी छूट थी वह बन्द हुअी, अिसलिअे सिर्फ़ पहुँच स्वीकारनेके पर्चे भी अुन्हींको लिखने पड़ते हैं। अछूतपनके बारेमें कुछ प्रश्नोंवाला हरिभाअू फाटकका पत्र आया, अुसका बापूने ब्यौरेवार जवाब दिया :

६-१०-'३२

"तुम्हारे सवालोंके ये छोटे-छोटे जवाब काफ़ी होंगे।

"अछूतपनको जड़से अुखाड़नेके लिअे सहभोजन और मिश्र-विवाह अनिवार्य नहीं हैं। ये दोनों सुधार अलग-अलग हैं। और हिन्दू समाजकी सारी जातियोंको अेक दिन अिन्हें मानना होगा।

"ज़बरदस्तीसे कुछ नहीं हो सकता और होना भी नहीं चाहिये। अुपवास और अैसे अुपाय लोगोंसे अुनकी मरज़ीके खिलाफ़ कुछ भी करानेके लिअे नहीं हैं। ये तो लोगोंको विचार और काममें लगानेके लिअे हैं। 'अछूत' अगर अब अछूत नहीं रहे हों, तो हिन्दू समाजमें वे क्या हैं? मेरी राय यह है कि आज तो वर्ण-व्यवस्था नष्ट हो गअी है। आज कोअी सच्चा ब्राह्मण या सच्चा क्षत्रिय या सच्चा वैश्य नहीं रहा। हम सब शूद्र हैं यानी अेक वर्ण हैं। यह स्थिति स्वीकार कर ली जाय, तो बात बहुत आसान हो जाती है। लेकिन अिसे स्वीकार करनेमें हमारे अभिमानको ठेस पहुँचती हो, तो हम सब ब्राह्मण कहे जा सकते हैं। अस्पृश्यताका निवारण करनेका अर्थ है, अूँच-नीचके भेदभावको जड़से अुखाड़ फेंकना। जो यह कहता है कि मैं दूसरोंसे बड़ा हूँ, वह अपना पतन करता है। जो यह कहता है कि मैं सबसे छोटा हूँ, वह अपनेको अूँचा अुठाता है। मेरे ये अुपवास अिन प्रश्नोंको अूपर-अूपरसे हल करनेके लिअे नहीं थे, बल्कि अिसलिअे थे कि हम सब सच्चे बनें।

"मैं चाहता हूँ कि मैं कोअी समय-मर्यादा मुक़र्रर कर सकूँ। परन्तु यह करनेवाला मैं कौन? अपने पिछले अनुभव परसे मैं अितना कह सकता हूँ कि अगर यह सुधार स्थिर वेगसे होता रहा और अिसमें कोअी ढोंग या दंभ नहीं घुसा, तो मुझे अिस प्रश्नके लिअे अुपवास नहीं करना पड़ेगा। सच्ची प्रगति अपने आप दिख जाती है। हरिजन अिसकी गरमी अचूक रूपमें महसूस कर सकेंगे। अिसलिअे तुमसे बिनती है कि समय-मर्यादाकी चिन्ता न करो।

"हम सब किसी न किसी तरहकी मूर्तियोंको मानते हैं। मैं तो मानता ही हूँ। साधारण मन्दिरका मुझे स्वयं कोअी आकर्षण नहीं है। लेकिन अुसका आध्यात्मिक मूल्य बहुत है। अिसलिअे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलने ही चाहियें। मन्दिरोंमें सुधार होनेकी जरूरत है। अुनका नाश आवश्यक नहीं।"

"चोर अीश्वरके आदेशके अनुसार चोरी नहीं करता, यह सही है। मगर अुसका यह चोरीका काम भी अीश्वरकी अिजाज़तके बिना नहीं हो सकता।"

"वैष्णव हवेली और स्वामीनारायणका मन्दिर ज़रूर सार्वजनिक मन्दिर हैं। लेकिन वहाँ भी ट्रस्टियोंको मनाये बिना जबरदस्ती नहीं घुस सकते।"

पद्मजाको :

"तेरी गैरमौजूदगी मुझे बहुत खटकती है। फूलदानियाँ हमेशा तेरी याद दिलाती हैं। मगर अपने प्यारोंकी जुदाअी तो क़ैदीका विशेषाधिकार है।"

"ग़रीबोंके मण्डलसे मोची आदि भाअियोंको बाहर रखना अवश्य अधर्म है। मगर अिसे दूर करनेके लिअे तुम्हारा अेकदम अुपवास कर बैठना ठीक नहीं समझा जा सकता। तुम्हें बड़ोंसे विनती करनी चाहिये। तुम्हें अुनकी सेवा करके प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिये। किसीको मजबूर नहीं किया जा सकता।"

अस्पृश्यताके विषयमें मित्रोंसे मिलने और खुलकर पत्रव्यवहार करनेकी और अखबारोंमें लिखनेकी अिजाज़त माँगनेका दूसरा पत्र सरकारको आज लिखा।

७–१०–'३२

कहान चकु गांधीने बापूको बड़ी नम्रतापूर्वक लिखा कि हिन्दू समाजमें नाहक़ खलबली न मचाअिये। जो चला आ रहा है, वह वैसे ही चलता रहेगा। आपको बड़ी भारी विजय मिल गअी है। अब तपस्याका यह अुपयोग न कीजिये। यह सूचना करनेके लिअे माफी भी माँगी। अुन्हें लिखा :

"आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। अिस प्रेमके पीछे अैसी माँग है कि मुझे अपनी पचास वर्षकी मान्यता और मेहनत छोड़ देनी चाहिये। प्रेमके वश भी अैसा कैसे हो सकता है?"

हीरालालकी लड़की लीलीने लिखा : "अुपवास मुझे खुलवाना था, मगर मैं न खुलवा सकी। मेरे हाथसे अुपवास खोलना होगा भला?"

बापूने अुसे लिखा :

"मेरा अुपवास खुलवानेका अर्थ समझती है? मुझे तेरे हाथसे पारणा करनेके लिअे अुपवास करना चाहिये!"

धारवाड़के अेक सज्जनके खूब लम्बे पत्रके जवाबमें यह पर्चा :

"मेरी रायमें सब तरहकी निःस्वार्थ सेवाका फल आत्मशुद्धि होता है। आर्थिक और नैतिक अुन्नति साथ-साथ होनी चाहिये। आत्मा वह है, जो शरीरको प्राणवान बनाये। आत्मशुद्धिमेंसे आत्मज्ञान होता है। भोजन सबके लिअे आवश्यक है, तो प्रार्थना भी सबके लिअे आवश्यक है।

"चोर ओश्वरके आदेशके अनुसार चोरी नहीं करता, यह सही है। मगर अुसका यह चोरीका काम भी ओश्वरकी अिजाज़तके बिना नहीं हो सकता।"

"वैष्णव हवेली और स्वामीनारायणका मन्दिर ज़रूर सार्वजनिक मन्दिर हैं। लेकिन वहाँ भी ट्रस्टियोंको मनाये बिना जबरदस्ती नहीं घुस सकते।"

पद्मजाको:

"तेरी ग़ैरमौजूदगी मुझे बहुत खटकती है। फूलदानियाँ हमेशा तेरी याद दिलाती हैं। मगर अपने प्यारोंकी जुदाअी तो क़ैदीका विशेषाधिकार है।"

"ग़रीबोंके मण्डलसे मोची आदि भाअियोंको बाहर रखना अवश्य अधर्म है। मगर अिसे दूर करनेके लिअे तुम्हारा अेकदम अुपवास कर बैठना ठीक नहीं समझा जा सकता। तुम्हें बड़ोंसे विनती करनी चाहिये। तुम्हें अुनकी सेवा करके प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिये। किसीको मजबूर नहीं किया जा सकता।"

अस्पृश्यताके विषयमें मित्रोंसे मिलने और खुलकर पत्रव्यवहार करनेकी और अखबारोंमें लिखनेकी अिजाज़त माँगनेका दूसरा पत्र सरकारको आज लिखा।

७–१०–'३२

कहान चकु गांधीने बापूको बड़ी नम्रतापूर्वक लिखा कि हिन्दू समाजमें नाहक़ खलबली न मचाअिये। जो चला आ रहा है, वह वैसे ही चलता रहेगा। आपको बड़ी भारी विजय मिल गअी है। अब तपस्याका यह अुपयोग न कीजिये। यह सूचना करनेके लिअे माफी भी माँगी। अुन्हें लिखा:

"आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। अिस प्रेमके पीछे अैसी माँग है कि मुझे अपनी पचास वर्षकी मान्यता और मेहनत छोड़ देनी चाहिये। प्रेमके वश भी अैसा कैसे हो सकता है?"

हीरालालकी लड़की लीलीने लिखा: "अुपवास मुझे खुलवाना था, मगर मैं न खुलवा सकी। मेरे हाथसे अुपवास खोलना होगा भला?"

बापूने अुसे लिखा:

"मेरा अुपवास खुलवानेका अर्थ समझती है? मुझे तेरे हाथसे पारणा करनेके लिअे अुपवास करना चाहिये!"

धारवाड़के अेक सज्जनके खूब लम्बे पत्रके जवाबमें यह पर्चा:

"मेरी रायमें सब तरहकी निःस्वार्थ सेवाका फल आत्मशुद्धि होता है। आर्थिक और नैतिक अुन्नति साथ-साथ होनी चाहिये। आत्मा वह है, जो शरीरको प्राणवान बनाये। आत्मशुद्धिमेंसे आत्मज्ञान होता है। भोजन सबके लिअे आवश्यक है, तो प्रार्थना भी सबके लिअे आवश्यक है।

अुनका दिया हुआ तार मेजरने बापूको देनेसे पहलें अभी सरकारके पास भेजा है, अितनेमें तो वह अखबारमें भी आ गया और बापूने यह जवाब लिखवा दिया। वल्लभभाअी कहने लगे: "अन्दर यह तो लिखवाअिये कि यह तार हाथमें नहीं आया है!"

बातचीतमें बापूने कहा:

"कोअी आदमी नास्तिकताका प्रचार करे, अिसकी मुझे परवाह नहीं। मैं जानता हूँ कि अुसका प्रचार अुसकी नाककी नोकसे आगे नहीं जा सकेगा। बहुतेरे नास्तिक हो गये हैं। अुनमेंसे कौन सफल हुआ है?"

मथुरादासको:

८-१०-'३२

"सच पूछो तो अब कोअी अैसा जाना हुआ आदमी नहीं रहा, जिसका आशीर्वाद अनशनको न मिला हो। अिसमें शक नहीं कि अहिंसा आखिरी शस्त्र है। अुसका दुरुपयोग हो रहा है और ज्यादा दुरुपयोग हो यह भी संभव है। तथापि अिसके दुरुपयोगमें भी खूबी भरी है। वह सिर्फ दुरुपयोग करनेवालेको ही नुकसान पहुँचा सकता है। और वह भी गहरा विचार करें, तो थोड़ा ही। हेतु शुभ होगा, तो आत्मा कलुषित न होगी। देहकी ही हानि होगी। और अैसा दुरुपयोग बहुतोंसे तो न हो सकेगा। अुपवासकी यातनाअें भोगनेको कितने तैयार होंगे?

"मुझे अच्छी तरह शक्ति आ रही है। दो रतल दूध और नारंगी, मोसम्बी, अंगूर या अनारका रस खूब लेता हूँ। टमाटरका रस भी लेता हूँ। वज़न घट कर ९३॥ पौंड तक चला गया था। अब फिर ९९ तक बढ़ गया है। दिन भरमें डेढ़ घण्टे घूम सकता हूँ। अिस प्रकार कह सकते हैं कि लगभग असली शक्ति तक पहुँच गया हूँ। कमसे कम २०० तार लगभग ४५ नम्बरके कातता हूँ। अिसमें बहुत थकावट भी मालूम नहीं होती। अिसलिअे चिन्ताके लिअे बिलकुल कारण नहीं है। अुपवासमें शारीरिक कष्ट तो हुआ, परन्तु शान्तिके रसके घूँट पीये।"

मोहनलाल भट्टको:

"महम्मद क़ाज़ीके रोज़ेके निश्चयमें तथ्य है। संकटके समय रोज़ेका फ़रमान अिस्लाममें है। अिसी तरह अेक और मुसलमान भाअीने अिस अरसेमें रोज़े रखे थे। रोज़ा अुपवास नहीं है। अिस मामलेमें मुसलमान भाअियोंका फ़र्ज़ है कि वे अैसी तीव्र अिच्छा करें कि जैसे अछूतोंके प्रश्नका निपटारा हो गया है, वैसे ही हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख प्रश्नका भी निपटारा हो जाय और अुसके बारेमें कर्त्तव्यपालन करें।"

अनका दिया हुआ तार मेज़रने बापूको देनेसे पहलें अभी सरकारके पास भेजा है, अितनेमें तो वह अखबारमें भी आ गया और बापूने यह ज्वाब लिखवा दिया। वल्लभभाअी कहने लगे: "अन्दर यह तो लिखवाअिये कि यह तार हाथमें नहीं आया है!"

बातचीतमें बापूने कहा:

"कोअी आदमी नास्तिकताका प्रचार करे, अिसकी मुझे परवाह नहीं। मैं जानता हूँ कि अुसका प्रचार अुसकी नाककी नोकसे आगे नहीं जा सकेगा। बहुतेरे नास्तिक हो गये हैं। अुनमेंसे कौन सफल हुआ है?"

मथुरादासको:

"सच पूछो तो अब कोअी अैसा जाना हुआ आदमी नहीं रहा, जिसका आशीर्वाद अनशनको न मिला हो। अिसमें शक नहीं कि

८-१०-'३२

अहिंसा आखिरी शस्त्र है। अुसका दुरुपयोग हो रहा है और ज्यादा दुरुपयोग हो यह भी संभव है। तथापि अिसके दुरुपयोगमें भी खूबी भरी है। वह सिर्फ़ दुरुपयोग करनेवालेको ही नुक़सान पहुँचा सकता है। और वह भी गहरा विचार करें, तो थोड़ा ही। हेतु शुभ होगा, तो आत्मा कलुषित न होगी। देहकी ही हानि होगी। और अैसा दुरुपयोग बहुतोंसे तो न हो सकेगा। अुपवासकी यातनाअें भोगनेको कितने तैयार होंगे?

"मुझे अच्छी तरह शक्ति आ रही है। दो रतल दूध और नारंगी, मोसम्बी, अंगूर या अनारका रस खूब लेता हूँ। टमाटरका रस भी लेता हूँ। वज़न घट कर ९३॥ पौंड तक चला गया था। अब फिर ९९ तक बढ़ गया है। दिन भरमें डेढ़ घण्टे घूम सकता हूँ। अिस प्रकार कह सकते हैं कि लगभग असली शक्ति तक पहुँच गया हूँ। कमसे कम २०० तार लगभग ४५ नम्बरके कातता हूँ। अिसमें बहुत थकावट भी मालूम नहीं होती। अिसलिअे चिन्ताके लिअे बिलकुल कारण नहीं है। अुपवासमें शारीरिक कष्ट तो हुआ, परन्तु शान्तिके रसके घूँट पीये।"

मोहनलाल भट्टको:

"महम्मद क़ाज़ीके रोज़ेके निश्चयमें तथ्य है। संकटके समय रोज़ेका फ़रमान अिस्लाममें है। अिसी तरह अेक और मुसलमान भाअीने अिस अर्सेमें रोज़े रखे थे। रोज़ा अुपवास नहीं है। अिस मामलेमें मुसलमान भाअियोंका फ़र्ज़ है कि वे अैसी तीव्र अिच्छा करें कि जैसे अछूतोंके प्रश्नका निपटारा हो गया है, वैसे ही हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख प्रश्नका भी निपटारा हो जाय और अुसके बारेमें कर्त्तव्यपालन करें।"

अिनकी हिम्मत नहीं होती। और क्या वे यह मानते हैं कि सविनय भंगकी लड़ाअी समेट लेनेसे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा घटेगी नहीं, बल्कि बढ़ेगी?

अिन्हें अुत्तर :

"माफ़ी माँगनेकी ज़रा भी ज़रूरत नहीं। पहले आपका पत्र आया था। आशा है अुसके जवाबमें लिखा हुआ मेरा पत्र आपको मिल गया होगा।

"आपके बताये हुअे मार्गको अपनानेमें अैसी कठिनाअियाँ हैं, जिन्हें पार नहीं किया जा सकता। कैदी होनेके कारण मैं अुन सबकी चर्चा नहीं कर सकता। अगर कर सकता होता, तो मेरा विश्वास है कि अपनी दलीलोंके ठोस होनेका मैं आपको यक़ीन करा सकता हूँ। अितना आपसे कह दूँ कि सरकार और लोगों या कांग्रेसके बीच अमन क़ायम हो जाय, अिसके लिअे मुझसे ज़्यादा अुत्सुक और कोअी नहीं हो सकता।

"अुम्मीद है आपकी तबीयत अच्छी होगी।"

मूलचन्द पारेखको :

"ठक्कर बापाको हिसाब भेजकर पैसे मँगा लेना। मगर जब यह शुद्धिकी हवा बह रही है, तब यह प्रतिज्ञा करना कि तुम

९-१०-'३२

खुद बिक जाओ या तुम्हारे घरका छप्पर बिक जाय, तो भी अेक भी पाठशाला या आश्रम बन्द न होने पाये। काठियावाड़ अितनेसे मुट्ठीभर रुपये अिकट्ठे न कर सके, यह असह्य होना चाहिये। तुमने अिस कामको अपने हाथमें लिया है। अितनी जल्दी हार जाओगे, तो काम कैसे चलेगा?"

. . . ने अपने दुराचारोंकी आत्मकथा लिखी। अुनके लिअे अपने बापको ज़िम्मेदार मानते हैं और चूँकि बाप अब अुनके सुधारके काममें हिस्सा नहीं लेता, बापका भण्डाफोड़ करनेकी अिजाज़त चाहते हैं। यह भाअी वही हैं जो जामनगरमें सत्याग्रह करने गये थे और अभी थोड़े दिन पहले . . . भाअीकी दुकानमें अछूतोंको प्रवेश करानेके लिअे सत्याग्रह कर चुके हैं। अिन्हें बापूने लिखा :

"कोअी पुत्र पिताका क़ाज़ी नहीं बन सकता। तुम्हारा काम सुधारकका है। सुधारक सिपाही अपराधी पर असर पहुँचाता है, अुसके छिद्र प्रकट नहीं करता, अुसे अदालतमें नहीं घसीटता। तुम्हारा धर्म यह है कि प्रेमसे पिताका व्यवहार बदलो। प्रकट करनेमें पाप है। तुम तो पिताके और बहुतसे गुण वर्णन करते हो। रुपयेका लोभ न हो तो ज्यादा अच्छा। मगर अुसे तुम समय पाकर अपने विनयसे मिटा सकते हो। जब तक न मिटे, अुसे सहन करो। भाअी-बहनोंको समझाओ। अपना जीवन अधिक शुद्ध और अधिक संयममय बनाओ। सब कुछ करने पर भी पिता न माने, तो घरका त्याग कर दो। अिसमें मुझे कोअी अनुचित

अिनकी हिम्मत नहीं होती। और क्या वे यह मानते हैं कि सविनय भंगकी लड़ाअी समेट लेनेसे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा घटेगी नहीं, बल्कि बढ़ेगी?

अिन्हें अुत्तर :

"माफ़ी माँगनेकी ज़रा भी ज़रूरत नहीं। पहले आपका पत्र आया था। आशा है अुसके जवाबमें लिखा हुआ मेरा पत्र आपको मिल गया होगा।

"आपके बताये हुअे मार्गको अपनानेमें अैसी कठिनाअियाँ हैं, जिन्हें पार नहीं किया जा सकता। कैदी होनेके कारण मैं अुन सबकी चर्चा नहीं कर सकता। अगर कर सकता होता, तो मेरा विश्वास है कि अपनी दलीलोंके ठोस होनेका मैं आपको यक़ीन करा सकता हूँ। अितना आपसे कह दूँ कि सरकार और लोगों या कांग्रेसके बीच अमन क़ायम हो जाय, अिसके लिअे मुझसे ज़्यादा अुत्सुक और कोअी नहीं हो सकता।

"अुम्मीद है आपकी तबीयत अच्छी होगी।"

मूलचन्द पारेखको :

"ठक्कर बापाको हिसाब भेजकर पैसे मँगा लेना। मगर जब यह शुद्धिकी हवा बह रही है, तब यह प्रतिज्ञा करना कि तुम खुद बिक जाओ या तुम्हारे घरका छप्पर बिक जाय, तो भी अेक भी पाठशाला या आश्रम बन्द न होने पाये।

१-१०-'३२

काठियावाड़ अितनेसे मुट्ठीभर रुपये अिकट्ठे न कर सके, यह असह्य होना चाहिये। तुमने अिस कामको अपने हाथमें लिया है। अितनी जल्दी हार जाओगे, तो काम कैसे चलेगा?"

. . . ने अपने दुराचारोंकी आत्मकथा लिखी। अुनके लिअे अपने बापको ज़िम्मेदार मानते हैं और चूँकि बाप अब अुनके सुधारके काममें हिस्सा नहीं लेता, बापका भण्डाफोड़ करनेकी अिजाज़त चाहते हैं। यह भाअी वही हैं जो जामनगरमें सत्याग्रह करने गये थे और अभी थोड़े दिन पहले . . . भाअीकी दुकानमें अछूतोंको प्रवेश करानेके लिअे सत्याग्रह कर चुके हैं। अिन्हें बापूने लिखा :

"कोअी पुत्र पिताका क़ाज़ी नहीं बन सकता। तुम्हारा काम सुधारकका है। सुधारक सिपाही अपराधी पर असर पहुँचाता है, अुसके छिद्र प्रकट नहीं करता, अुसे अदालतमें नहीं घसीटता। तुम्हारा धर्म यह है कि प्रेमसे पिताका व्यवहार बदलो। प्रकट करनेमें पाप है। तुम तो पिताके और बहुतसे गुण वर्णन करते हो। रुपयेका लोभ न हो तो ज़्यादा अच्छा। मगर अुसे तुम समय पाकर अपने विनयसे मिटा सकते हो। जब तक न मिटे, अुसे सहन करो। भाअी-बहनोंको समझाओ। अपना जीवन अधिक शुद्ध और अधिक संयममय बनाओ। सब कुछ करने पर भी पिता न माने, तो घरका त्याग कर दो। अिसमें मुझे कोअी अनुचित

"महादेवके नाम आपका पत्र मैंने पढ़ा है। आपके लड़केको आसान काम मिले असिसे तो वह कठिनाअियोंकी सख्त चक्कीमें पिसे, यह अुसके लिअे अच्छा ही है।"

बाअीस पत्र आज भी लिखे।

"अेक तार तो आपने तोड़ डाला। अब दूसरा तोड़ दें, तो काम पूरा हो जाय।" बा ने बेलगाँववालेके साथ हुअी बातोंकी रिपोर्ट देते हुअे अुनका वाक्य दोहरा दिया।

कल वैकुण्ठ और गगन तथा सौदामिनीकी अचानक मुलाक़ात हो गअी। ये लोग अितने अुल्लासमें थे कि अुसे देखकर मुझे बाहरकी जाग्रतिका ठीक अन्दाज़ हो सका। गगन कहते थे कि अिन लोगोंने तो यही मान लिया कि गांधीजीका अुपवास टूटना ही स्वराज्य मिलना है। अिन छः-सात दिनों तक तो सुलह ही थी, यह कहा जा सकता है। बापूने जो न सोचा होगा, अैसा और अितना अुपवाससे लोगोंने समझ लिया; यही बताता है कि यह अुपवास अीश्वरने कराया। अिसके पीछे मनुष्यकी अहंता नहीं थी। जहाँ जिस प्रकारकी अस्पृश्यता है, अुस पर प्रहार हो रहे हैं। बंगालमें नाराजोलका खान तीस हजार आदमियोंको सहभोजन कराता है। अुधर मद्रासमें धीरे-धीरे मन्दिर खुल रहे हैं। पालाघाटमें अेक मन्दिर खुला और अुसमें नायाड़ियोंको मन्दिरके चौकमें ही साथ बिठलाकर खिलाया गया, यह असाधारण बात कहलायेगी। वैकुण्ठ कहते थे कि बाल्याखाड़ीका दृश्य भी अद्भुत था। 'हिन्दू' के स्तम्भ तो अिसी चर्चासे भरे हुअे आते हैं। अिसमें अस्पृश्यता निवारणके लिअे शिन्देकी अपील है। अुसमें अुनकी बापूजीके साथकी मुलाक़ातका रोमांचकारी वर्णन है। "आध्यात्मिक धर्म, मौलिक सांसारिक सुधार और अूँचे दर्जेकी राजनीति, अिन तीनोंमें मैं कोअी फ़र्क़ करता ही नहीं। मैं जानता हूँ कि आज महात्माजी अिस त्रिविध धर्मके अीश्वरके भेजे हुअे पैगम्बर हैं।"

बापू पर पहलेकी तरह मुलाक़ातों वग़ैराकी पाबन्दी लगानेकी बातके खिलाफ़ अुन्होंने घोर विरोध प्रगट किया है और थोड़ेसे सुन्दर वाक्य लिखे हैं: "महात्माजी तो क़ैदी हैं, अिसका सरकारको कोअी आश्वासन चाहिये? अपने अटल सिद्धान्तोंके वे हमेशा क़ैदी ही हैं। सिद्धान्तोंकी छोटीसे छोटी तफ़सीलका भी वे भंग करें, अिसकी अपेक्षा वे अपनी बनाअी हुअी क़ैदखानेकी दीवारोंमें (सिद्धान्तोंकी) रहना ज़्यादा पसन्द करते हैं।"

अस्पृश्यता निवारणको अुन्होंने तमाम अछूतों और छूतों — हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी — के बीचका द्वन्द्व कहा है। जो भी हिन्दुस्तानका नमक खाते हैं, वे सब अछूतपनकी जड़ अुखाड़नेके लिअे बँधे हुअे हैं। बापूसे अुन्होंने यह पूछा

"महादेवके नाम आपका पत्र मैंने पढ़ा है। आपके लड़केको आसान काम मिले अिससे तो वह कठिनाअियोंकी सख्त चक्कीमें पिसे, यह अुसके लिअे अच्छा ही है।"

बाअीस पत्र आज भी लिखे।

"अेक तार तो आपने तोड़ डाला। अब दूसरा तोड़ दें, तो काम पूरा हो जाय।" बा ने बेलगाँववालेके साथ हुअी बातोंकी रिपोर्ट देते हुअे अुनका वाक्य दोहरा दिया।

कल वैकुण्ठ और गगन तथा सौदामिनीकी अचानक मुलाकात हो गअी। ये लोग अितने अुल्लासमें थे कि अुसे देखकर मुझे बाहरकी जाग्रतिका ठीक अन्दाज़ हो सका। गगन कहते थे कि अिन लोगोंने तो यही मान लिया कि गांधीजीका अुपवास टूटना ही स्वराज्य मिलना है। अिन छः-सात दिनों तक तो सुलह ही थी, यह कहा जा सकता है। बापूने जो न सोचा होगा, अैसा और अितना अुपवाससे लोगोंने समझ लिया; यही बताता है कि यह अुपवास अीश्वरने कराया। अिसके पीछे मनुष्यकी अहंता नहीं थी। जहाँ जिस प्रकारकी अस्पृश्यता है, अुस पर प्रहार हो रहे हैं। बंगालमें नाराजोलका खान तीस हजार आदमियोंको सहभोजन कराता है। अुधर मद्रासमें धीरे-धीरे मन्दिर खुल रहे हैं। पालघाटमें अेक मन्दिर खुला और अुसमें नायाड़ियोंको मन्दिरके चौकमें ही साथ बिठलाकर खिलाया गया, यह असाधारण बात कहलायेगी। वैकुण्ठ कहते थे कि वाल्पाखाड़ीका दृश्य भी अद्भुत था। 'हिन्दू' के स्तम्भ तो अिसी चर्चासे भरे हुअे आते हैं। अिसमें अस्पृश्यता निवारणके लिअे चिन्देकी अपील है। अुसमें अुनकी बापूजीके साथकी मुलाकातका रोमांचकारी वर्णन है। "आध्यात्मिक धर्म, मौलिक सांसारिक सुधार और अूँचे दर्जेकी राजनीति, अिन तीनोंमें मैं कोअी फर्क करता ही नहीं। मैं जानता हूँ कि आज महात्माजी अिस त्रिविध धर्मके अीश्वरके भेजे हुअे पैगम्बर हैं।"

बापू पर पहलेकी तरह मुलाकातों वगैराकी पाबन्दी लगानेकी बातके खिलाफ़ अुन्होंने घोर विरोध प्रगट किया है और थोड़ेसे सुन्दर वाक्य लिखे हैं: "महात्माजी तो कैदी हैं, अिसका सरकारको कोअी आश्वासन चाहिये? अपने अटल सिद्धान्तोंके वे हमेशा क़ैदी ही हैं। सिद्धान्तोंकी छोटीसे छोटी तफ़सीलका भी वे भंग करें, अिसकी अपेक्षा वे अपनी बनाअी हुअी क़ैदखानेकी दीवारोंमें (सिद्धान्तोंकी) रहना ज़्यादा पसन्द करते हैं।"

अस्पृश्यता निवारणको अुन्होंने तमाम अछूतों और छूतों — हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी — के बीचका द्वन्द्व कहा है। जो भी हिन्दुस्तानका नमक खाते हैं, वे सब अछूतपनकी जड़ अुखाड़नेके लिअे बँधे हुअे हैं। बापूसे अुन्होंने यह पूछा

जनसमुदाय अुपवासका अुद्देश्य अंतर्वृत्तिसे ही समझ गया था। मैं आशा रखता हूँ कि आपके लिअे यह बिलकुल स्पष्ट होगा।"

मैंने याद दिलाया कि अिसके पत्रमें प्रश्न यह नहीं था, बल्कि दूसरा ही था (जो अूपर बताया है)। अिसलिअे अेक वाक्यमें अुसे जवाब दिया:

"सरकारकी अनुमति अिसलिअे ज़रूरी थी कि जब तक विरुद्ध फ़ैसला मौजूद रहे, तब तक यह समझौता बेकार होगा। यह अनुमति प्राप्त करना समझौते और अुपवासमेंसे स्वाभाविक रूपमें फलित होता था।"

चौंडे महाराजको पत्र (हिन्दीमें):

"आपका पत्र मिला है। मेरा संदेशा यह है: 'मेरा अभिप्राय दृढ़ होता जाता है कि जब तक हम गोरक्षाका अर्थशास्त्र भलीभाँति नहीं पढ़ेंगे, जब तक अंत्यज भाअियोंको, जिनके हाथसे बहुत गोरक्षाका कार्य हो सकता है, नहीं अपनावेंगे और जब तक सब गोशालाअें शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं चलेंगी और हम सब मृत जानवरके ही चर्मके अुपयोगका व्रत नहीं लेंगे, गोरक्षा अशक्य है। अिसलिअे अब गोसेवकका कर्तव्य है कि अितनी मोटी बातोंको अच्छी तरह समझे और अुसका यथासंभव पालन करे और करावे।'"

सुरेश बेनर्जीने लिखा था कि बंगालमें जातपाँत टूटे, यही अस्पृश्यता निवारण कहलायेगा। अुन्हें लिखा:

"जाति और अस्पृश्यताके बारेमें मैं आपके पुराने विचार जानता हूँ। मैं आपसे अिस बारेमें पूरी तरह सहमत हूँ कि जातियोंको नष्ट होना ही पड़ेगा। लेकिन यह मेरी जिन्दगीमें होगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। अिन दोनों मुद्दोंको अेक दूसरेसे मिलाकर हमें दोनोंको बिगाड़ना नहीं चाहिये। अस्पृश्यता आत्माका हनन करनेवाला पाप है। जातपाँत सामाजिक बुराअी है। कुछ भी हो, आप तो बिलकुल अच्छे हो जाअिये और अपनी हमेशाकी लगनके साथ जातिपाँतिसे भिड़ जाअिये। अिसमें आपको मेरा अच्छा सहयोग मिलेगा।"

बल्देवदास बिजोरियाको (हिन्दीमें):

"आपका कृपापत्र मिला। अस्पृश्यता निवारण मेरे जैसोंके लिअे केवल धार्मिक प्रश्न है। राजप्रकरणके लिअे मैं प्राणत्यागकी चेष्टा कभी न करूँ। हाँ, अितना ठीक है कि धार्मिक कार्य क्या, और दूसरा भी, अुसमें बलात्कार नहीं होना चाहिये। जहाँ तक यहाँ बैठा हुआ मैं समझ सकता हूँ, आज जो कार्य हो रहा है अुसमें बलात्कार नहीं है और अीश्वर ही करवा रहा है। छुआछूतमें धर्म कभी नहीं हो सकता, अैसा मेरा दृढ़ विश्वास है। और तो क्या लिखूँ ? कृपा रखियेगा।"

जनसमुदाय अुपवासका अुद्देश्य अंतर्वृत्तिसे ही समझ गया था। मैं आशा रखता हूँ कि आपके लिअे यह बिलकुल स्पष्ट होगा।"

मैंने याद दिलाया कि अिसके पत्रमें प्रश्न यह नहीं था, बल्कि दूसरा ही था (जो अूपर बताया है)। अिसलिअे अेक वाक्यमें अुसे जवाब दिया:

"सरकारकी अनुमति अिसलिअे ज़रूरी थी कि जब तक विरुद्ध फ़ैसला मौजूद रहे, तब तक यह समझौता बेकार होगा। यह अनुमति प्राप्त करना समझौते और अुपवासमेंसे स्वाभाविक रूपमें फलित होता था।"

चौंडे महाराजको पत्र (हिन्दीमें):

"आपका पत्र मिला है। मेरा संदेशा यह है: 'मेरा अभिप्राय दृढ़ होता जाता है कि जब तक हम गोरक्षाका अर्थशास्त्र भलीभाँति नहीं पढ़ेंगे, जब तक अंत्यज भाअियोंको, जिनके हाथसे बहुत गोरक्षाका कार्य हो सकता है, नहीं अपनावेंगे और जब तक सब गोशालाअें शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं चलेंगी और हम सब मृत जानवरके ही चर्मके अुपयोगका व्रत नहीं लेंगे, गोरक्षा अशक्य है। अिसलिअे अब गोसेवकका कर्तव्य है कि अितनी मोटी बातोंको अच्छी तरह समझे और अुसका यथासंभव पालन करे और करावे।'"

सुरेश बेनर्जीने लिखा था कि बंगालमें जातपाँत टूटे, यही अस्पृश्यता निवारण कहलायेगा। अुन्हें लिखा:

"जाति और अस्पृश्यताके बारेमें मैं आपके पुराने विचार जानता हूँ। मैं आपसे अिस बारेमें पूरी तरह सहमत हूँ कि जातियोंको नष्ट होना ही पड़ेगा। लेकिन यह मेरी जिन्दगीमें होगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। अिन दोनों मुद्दोंको अेक दूसरेसे मिलाकर हमें दोनोंको बिगाड़ना नहीं चाहिये। अस्पृश्यता आत्माका हनन करनेवाला पाप है। जातपाँत सामाजिक बुराअी है। कुछ भी हो, आप तो बिलकुल अच्छे हो जाअिये और अपनी हमेशाकी लगनके साथ जातिपाँतिसे भिड़ जाअिये। अिसमें आपको मेरा अच्छा सहयोग मिलेगा।"

बलदेवदास बिजोरियाको (हिन्दीमें):

"आपका कृपापत्र मिला। अस्पृश्यता निवारण मेरे जैसोंके लिअे केवल धार्मिक प्रश्न है। राजप्रकरणके लिअे मैं प्राणत्यागकी चेष्टा कभी न करूँ। हाँ, अितना ठीक है कि धार्मिक कार्य क्या, और दूसरा भी, अुसमें बलात्कार नहीं होना चाहिये। जहाँ तक यहाँ बैठा हुआ मैं समझ सकता हूँ, आज जो कार्य हो रहा है अुसमें बलात्कार नहीं है और अीश्वर ही करवा रहा है। छुआछूतमें धर्म कभी नहीं हो सकता, अैसा मेरा दृढ़ विश्वास है। और तो क्या लिखूँ? कृपा रखियेगा।"

“ओीश्वरके दर्शनके लिअे किसीके कराये अुपवास नहीं हो सकते । मुझे अन्तरप्रेरणा हो तभी हो सकते हैं। अैसी प्रेरणा होने पर मैं किसीके रोके रुकनेवाला नहीं हूँ । यह मान लेनेका कोओी कारण नहीं कि अुपवास करनेसे ओीश्वरदर्शन हो जायगा । यह बात मेरे दिलमें नहीं अुतरती कि मेरे चालीस दिनके अुपवास करनेके बदलेमें बावा ओीश्वरदर्शन करा सकते हैं। यह बदला तो आसान है। अैसा होता हो तो मेरी निगाहमें ओीश्वरदर्शनकी कोओी क़ीमत नहीं ।

“मैं तो आज तक यह मानता आया हूँ कि बावा जीवनके विभाग नहीं करते । जिसका जीवन धर्मसे रंगा हुआ है, अुसके खयालसे राजनीति और अर्थशास्त्र सब धर्मके अंग हैं, और वह अुनमेंसे अेकको भी छोड़ नहीं सकता । मेरी मतिके अनुसार जो धर्मको बहुतसी प्रवृत्तियोंमेंकी अेक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्मको जानता ही नहीं । अिसलिअे राजनीति या समाजसुधार वग़ैरा मैं किसी दिन छोड़ दूँगा, यह मेरी कल्पनाके बाहर है । अपने धर्मके पालनके लिअे ही मैं राजनीति और समाजसेवा अित्यादिमें पड़ा हुआ हूँ ।

“मैंने बावाके लेखोंका गुजराती अनुवाद करनेका वचन नहीं दिया है। अुल्टे मैंने तो बावाको सुझाया था कि वे अंग्रेज़ीमें लिखने या दूसरोंसे लिखवानेका मोह छोड़कर या तो अपने विचार मादरी ज़बान गुजरातीमें प्रगट करें या फ़ारसीमें, जो अुनके कहनेके अनुसार वे बहुत बढ़िया जानते हैं । हाँ, अुनके लेखोंमेंसे कोओी मेरे दिलमें जम जाय, तो अुसका गुजराती अनुवाद मैं अवश्य करूँ।

“थोड़ेमें, मैं बावाका अेक विद्यार्थी हूँ । जमशेद मेहताको पवित्र व्यक्ति मानता हूँ । अुनके तारसे मैं बावासे मिला । ओीश्वरके भक्तोंको मैं खोजता रहता हूँ । बावाके सम्पर्कमें यह सोचकर आया कि वे अैसे होंगे ।

मोहनदास गांधीका वन्देमातरम् ”

रेहानाने लिखा था :

“आप फिर अुपवास करेंगे, तब ज्यादा अच्छा भजन भेजूँगी।”

अुसे लिखा (हिन्दीमें) :

“प्यारी बेटी रेहाना,

“बहुत चालाक लड़की है । अपने भजनके लिअे मुझे फाका करवाना चाहती है । मैं नहीं करूँगा । और भजन तू जब गाकर सुनायेगी, तब दिलको भायेगा । अगर ‘अुठ जाग मुसाफ़िर’ मैं न सुनता तो मुझे अैसा दिलचस्प न लगता । अगर जेलकी दीवारके बाहरसे भी तू गायेगी, तो भी तेरा आवाज़ मुझे पहुँच जायगा । तुम सबका नाच तो मैं सुन ही रहा हूँ ।”

"ईश्वरके दर्शनके लिये किसीके कराये उपवास नहीं हो सकते। मुझे अन्तरप्रेरणा हो तभी हो सकते हैं। ऐसी प्रेरणा होने पर मैं किसीके रोके रुकनेवाला नहीं हूँ। यह मान लेनेका कोई कारण नहीं कि उपवास करनेसे ईश्वरदर्शन हो जायगा। यह बात मेरे दिलमें नहीं उतरती कि मेरे चालीस दिनके उपवास करनेके बदलेमें बाबा ईश्वरदर्शन करा सकते हैं। यह बदला तो आसान है। ऐसा होता हो तो मेरी निगाहमें ईश्वरदर्शनकी कोई क़ीमत नहीं।

"मैं तो आज तक यह मानता आया हूँ कि बाबा जीवनके विभाग नहीं करते। जिसका जीवन धर्मसे रंगा हुआ है, उसके खयालसे राजनीति और अर्थशास्त्र सब धर्मके अंग हैं, और वह उनमेंसे एकको भी छोड़ नहीं सकता। मेरी मतिके अनुसार जो धर्मको बहुतसी प्रवृत्तियोंमेंकी एक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्मको जानता ही नहीं। इसलिये राजनीति या समाजसुधार वगैरा मैं किसी दिन छोड़ दूँगा, यह मेरी कल्पनाके बाहर है। अपने धर्मके पालनके लिये ही मैं राजनीति और समाजसेवा इत्यादिमें पड़ा हुआ हूँ।

"मैंने बाबाके लेखोंका गुजराती अनुवाद करनेका वचन नहीं दिया है। उल्टे मैंने तो बाबाको सुझाया था कि वे अंग्रेज़ीमें लिखने या दूसरोंसे लिखवानेका मोह छोड़कर या तो अपने विचार मादरी ज़बान गुजरातीमें प्रगट करें या फ़ारसीमें, जो उनके कहनेके अनुसार वे बहुत बढ़िया जानते हैं। हाँ, उनके लेखोंमेंसे कोई मेरे दिलमें जम जाय, तो उसका गुजराती अनुवाद मैं अवश्य करूँ।

"थोड़ेमें, मैं बाबाका एक विद्यार्थी हूँ। जमशेद मेहताको पवित्र व्यक्ति मानता हूँ। उनके तारसे मैं बाबासे मिला। ईश्वरके भक्तोंको मैं खोजता रहता हूँ। बाबाके सम्पर्कमें यह सोचकर आया कि वे ऐसे होंगे।

मोहनदास गांधीका वन्देमातरम्"

रेहानाने लिखा था:

"आप फिर उपवास करेंगे, तब ज्यादा अच्छा भजन भेजूँगी।"

उसे लिखा (हिन्दीमें):

"प्यारी बेटी रेहाना,

"बहुत चालाक लड़की है। अपने भजनके लिये मुझे फाका करवाना चाहती है। मैं नहीं करूँगा। और भजन तू जब गाकर सुनायेगी, तब दिलको भायेगा। अगर 'उठ जाग मुसाफ़िर' मैं न सुनता तो मुझे ऐसा दिलचस्प न लगता। अगर जेलकी दीवारके बाहरसे भी तू गायेगी, तो भी तेरा आवाज़ मुझे पहुँच जायगा। तुम सबका नाच तो मैं सुन ही रहा हूँ।"

आ जायँ। सब धर्मोंके प्रति समभाव रखें, तो आजसे हमें अैसे देवालयोंके प्रति अपने दिलमें तो जगह रखनी ही चाहिये। मगर अुसे रखनेमें समभाव खो देना सम्भव है, अिसलिअे और बातोंकी तरह अिसमें भी संयम ही हमारा सुवर्ण मार्ग है। यह सब अच्छी तरह समझ लेना। समझमें न आये तब तक पूछते ही रहना। मैं नहीं थकूँगा और अब अैसे कामोंको निपटाने लायक़ शक्ति आ गअी है।"

बाकीका पत्र . . . के बारेमें है।

"... और ....का सम्बन्ध कैसे हुआ, यह तो मैं भूल गया हूँ। धार्मिक प्रश्न तो पहलेके मनाये हुअे विवाहके बारेमें था। यह आदर्श तो मैंने बताया ही है कि शिक्षक और शिष्याके बीच और अेक ही संस्थामें रहनेवाले शिक्षक और शिक्षिकाके बीच विवाह सम्बन्ध न होना चाहिये। अिसमें कोअी धार्मिक प्रतिबन्ध नहीं है। अगर किसीकी आपसमें विवाहकी अिच्छा हो जाय, तो अुन्हें हम प्रोत्साहन नहीं देंगे, मगर रोक तो सकते ही नहीं। यह तो साधारण रूपमें लिख रहा हूँ। अिस मामलेमें क्या हुआ है, यह मैं भूल गया हूँ। मेरे आदर्शका पूरा प्रचार भी नहीं हुआ। अिस बारेमें विद्यापीठमें भरती होनेवालोंको सावधान भी नहीं किया जाता। अैसी हालतमें यह आदर्श कैसे लागू हो सकता है? अैसे अुदाहरणोंमें अपने आदर्श पर क़ायम रहते हुअे भी अुदार वृत्ति रखनी चाहिये।"

छगनलाल जोशीको :

"ली हुअी प्रतिज्ञा पर विचार कर लेना चाहिये। अुसका जरा भी भंग न होना चाहिये। अिसका अर्थ यह नहीं कि मैं कुछ भी जानता हूँ। मुझे अभी सब बातें याद भी नहीं। और अिसीलिअे मेरा आग्रह रहा है कि जो प्रतिज्ञा ली जाय, वह अुसी वक्त लिख ली जाय। अैसा न करनेसे बादमें मनुष्य ढीला पड़ जाता है और प्रतिज्ञाको शिथिल कर डालता है। मुझे खुद अैसे पछतावे हुअे हैं।"

आज मणिलाल आये। डरबनसे आते हुअे रास्तेमें जंज़ीबार और दारेसलाम बन्दरगाहों पर हज़ारोंकी भीड़ बापूके प्रति आदर और प्रेम प्रगट करनेके लिअे आअी थी। दक्षिण अफ्रीकाकी चर्चा करते हुअे बापूने मणिलालको बता दिया कि सत्याग्रह करनेमें समझदारी नहीं है। वैसे शहीद बनकर मर जाना हो तो मर जाओ। अिसमें तो किसीको कुछ कहनेकी बात हो ही नहीं सकती। फिर प्रेमी पिताकी हैसियतसे सलाह दी: "बुद्धिमानीका रास्ता यह है कि शास्त्री, वाजपेयी और रेड्डी वग़ैरासे तू मिल, अिनसे पत्र लिखवा, कुछ राहत सोच ले, अुन्हें प्राप्त करनेकी कोशिश कर और बात खतम कर।"

आ जायँ। सब धर्मोंके प्रति समभाव रखें, तो आजसे हमें अैसे देवालयोंके प्रति अपने दिलमें तो जगह रखनी ही चाहिये। मगर अुसे रखनेमें समभाव खो देना सम्भव है, अिसलिअे और बातोंकी तरह अिसमें भी संयम ही हमारा सुवर्ण मार्ग है। यह सब अच्छी तरह समझ लेना। समझमें न आये तब तक पूछते ही रहना। मैं नहीं थकूँगा और अब अैसे कामोंको निपटाने लायक़ शक्ति आ गअी है।"

बाकीका पत्र . . . के बारेमें है।

"... और ....का सम्बन्ध कैसे हुआ, यह तो मैं भूल गया हूँ। धार्मिक प्रश्न तो पहलेके मनाये हुअे विवाहके बारेमें था। यह आदर्श तो मैंने बताया ही है कि शिक्षक और शिष्याके बीच और अेक ही संस्थामें रहनेवाले शिक्षक और शिक्षिकाके बीच विवाह सम्बन्ध न होना चाहिये। अिसमें कोअी धार्मिक प्रतिबन्ध नहीं है। अगर किसीकी आपसमें विवाहकी अिच्छा हो जाय, तो अुन्हें हम प्रोत्साहन नहीं देंगे, मगर रोक तो सकते ही नहीं। यह तो साधारण रूपमें लिख रहा हूँ। अिस मामलेमें क्या हुआ है, यह मैं भूल गया हूँ। मेरे आदर्शका पूरा प्रचार भी नहीं हुआ। अिस बारेमें विद्यापीठमें भरती होनेवालोंको सावधान भी नहीं किया जाता। अैसी हालतमें यह आदर्श कैसे लागू हो सकता है? अैसे अुदाहरणोंमें अपने आदर्श पर क़ायम रहते हुअे भी अुदार वृत्ति रखनी चाहिये।"

छगनलाल जोशीको :

"ली हुअी प्रतिज्ञा पर विचार कर लेना चाहिये। अुसका जरा भी भंग न होना चाहिये। अिसका अर्थ यह नहीं कि मैं कुछ भी जानता हूँ। मुझे अभी सब बातें याद भी नहीं। और अिसीलिअे मेरा आग्रह रहा है कि जो प्रतिज्ञा ली जाय, वह अुसी वक्त लिख ली जाय। अैसा न करनेसे बादमें मनुष्य ढीला पड़ जाता है और प्रतिज्ञाको शिथिल कर डालता है। मुझे खुद अैसे पछतावे हुअे हैं।"

आज मणिलाल आये। डरबनसे आते हुअे रास्तेमें जंज़ीबार और दारेसलाम बन्दरगाहों पर हज़ारोंकी भीड़ बापूके प्रति आदर और प्रेम प्रगट करनेके लिअे आअी थी। दक्षिण अफ्रीकाकी चर्चा करते हुअे बापूने मणिलालको बता दिया कि सत्याग्रह करनेमें समझदारी नहीं है। वैसे शहीद बनकर मर जाना हो तो मर जाओ। अिसमें तो किसीको कुछ कहनेकी बात हो ही नहीं सकती। फिर प्रेमी पिताकी हैसियतसे सलाह दी: "बुद्धिमानीका रास्ता यह है कि शास्त्री, वाजपेयी और रेड्डी वग़ैरासे तू मिल, अिनसे पत्र लिखवा, कुछ राहत सोच ले, अुन्हें प्राप्त करनेकी कोशिश कर और बात खतम कर।"

बापूने लिखा :

"मिलीके जन्मदिवस पर ही अीश्वरकी आज्ञाका मैं पालन करूँ, अिससे ज्यादा मांगलिक और क्या हो सकता है? अुसके अधिकसे अधिक जन्मदिवस आयें और अुसे अधिकाधिक सेवाका अवसर मिले।"

अे० टरटन नामके अेक अंग्रेज़ने अपने पत्रमें बापूको लिखा :

"आपकी हानि मुझे बहुत नहीं लगती, लेकिन आपके सिद्धान्तका त्याग मुझे खटकता है। आप तो आत्महत्या करनेको तैयार हुअे थे।"

बापूने लिखा :

"अीश्वरकी कृपा थी कि यह अुपवास मैंने नहीं किया। यह सब अीश्वरका काम था। और सारी दुनियाकी 'नहीं' हो, तो भी अीश्वरकी 'हाँ' के आगे अुसकी क्या चल सकती है?"

मानो बा के साथ बहुत समय न बिताया हो और अुनसे बहुत सेवा न ली हो, अुसका बदला लेनेके लिअे बापू बा से खूब सेवा ले रहे हैं।

वल्लभभाअीने कहा : "अिन्हें अब नींद आ रही है, सोने दीजिये।"

बापू : "नहीं, मुझे सुलाकर बादमें सो जाना।"

तेल भी बा का मसला हुआ ही बापूको अच्छा लगता है और आज तो हद ही कर दी। अेक बहनने बाहरसे लौकीका हलवा भेजा था और बा ने भी बनाया था। बापूने बा का बनाया सब खा लिया और वह रहने दिया।

आज डाकमें सूरतके कितने ही दुःखद किस्सोंका वर्णन था। अनशन दिवसके निमित्त सार्वजनिक कॉलेजके विद्यार्थियोंने अुपवास किया और रसोअियोंने खाना नहीं बनाया। अिससे चिढ़कर आंटियाने कॉलेजमें जाकर विद्यार्थियोंको धमकाया और रसोअियोंको गालियाँ दीं। अेकको फटकारा। आफवा अिसरोली गाँवके लोगोंने अछूतोंके साथ अेक कुअें पर स्नान किया और प्रसाद लिया। अिसकी खबर अेक अखबारवालेने दी। अुस गाँवमें जाकर अुन लोगोंसे लिखवा लिया कि हमने अैसा कुछ नहीं किया। बादमें अखबारवालेको झूठी खबर देनेके लिअे खूब धमकाया।

मैंने बापूसे कहा : "लोग कितने गिर गये हैं? यह जानकर पीड़ा होती है।"

बापू कहने लगे : "यह तो सूरतकी बात है, अिसलिअे हमें मालूम हो गअी। मगर बंगालमें जो कुछ हो रहा होगा अुसकी हमें कल्पना नहीं है। सारे दिन घरमें बैठे रहनेका हुक्म और रातको न निकलनेका हुक्म, अिसका क्या अर्थ? यू० पी० में किसान बेघरबार हो गये हैं। रासवाले बहादुर, मरनेके लिअे तैयार रहनेवाले और क़ाबिल हैं, अिसलिअे भूखों नहीं मरते। ये तो अज्ञान मनुष्य;

बापूने लिखा :

"मिलीके जन्मदिवस पर ही अीश्वरकी आज्ञाका मैं पालन करूँ, अिससे ज्यादा मांगलिक और क्या हो सकता है? अुसके अधिकसे अधिक जन्मदिवस आयें और अुसे अधिकाधिक सेवाका अवसर मिले।"

अे० टरटन नामके अेक अंग्रेज़ने अपने पत्रमें बापूको लिखा :

"आपकी हानि मुझे बहुत नहीं लगती, लेकिन आपके सिद्धान्तका त्याग मुझे खटकता है। आप तो आत्महत्या करनेको तैयार हुअे थे।"

बापूने लिखा :

"अीश्वरकी कृपा थी कि यह अुपवास मैंने नहीं किया। यह सब अीश्वरका काम था। और सारी दुनियाकी 'नहीं' हो, तो भी अीश्वरकी 'हाँ' के आगे अुसकी क्या चल सकती है?"

मानो बा के साथ बहुत समय न बिताया हो और अुनसे बहुत सेवा न ली हो, अुसका बदला लेनेके लिअे बापू बा से खूब सेवा ले रहे हैं।

वल्लभभाअीने कहा : "अिन्हें अब नींद आ रही है, सोने दीजिये।"

बापू : "नहीं, मुझे सुलाकर बादमें सो जाना।"

तेल भी बा का मसला हुआ ही बापूको अच्छा लगता है और आज तो हद ही कर दी। अेक बहनने बाहरसे लौकीका हलवा भेजा था और बा ने भी बनाया था। बापूने बा का बनाया सब खा लिया और वह रहने दिया।

आज डाकमें सूरतके कितने ही दुःखद किस्सोंका वर्णन था। अनशन दिवसके निमित्त सार्वजनिक कॉलेजके विद्यार्थियोंने अुपवास किया और रसोअियोंने खाना नहीं बनाया। अिससे चिढ़कर आंटियाने कॉलेजमें जाकर विद्यार्थियोंको धमकाया और रसोअियोंको गालियाँ दीं। अेकको फटकारा। आफवा अिसरोली गाँवके लोगोंने अछूतोंके साथ अेक कुअें पर स्नान किया और प्रसाद लिया। अिसकी खबर अेक अखबारवालेने दी। अुस गाँवमें जाकर अुन लोगोंसे लिखवा लिया कि हमने अैसा कुछ नहीं किया। बादमें अखबारवालेको झूठी खबर देनेके लिअे खूब धमकाया।

मैंने बापूसे कहा : "लोग कितने गिर गये हैं? यह जानकर पीड़ा होती है।"

बापू कहने लगे : "यह तो सूरतकी बात है, अिसलिअे हमें मालूम हो गअी। मगर बंगालमें जो कुछ हो रहा होगा अुसकी हमें कल्पना नहीं है। सारे दिन घरमें बैठे रहनेका हुक्म और रातको न निकलनेका हुक्म, अिसका क्या अर्थ? यू० पी० में किसान बेघरबार हो गये हैं। रासवाले बहादुर, मरनेके लिअे तैयार रहनेवाले और क़ाबिल हैं, अिसलिअे भूखों नहीं मरते। ये तो अज्ञान मनुष्य;

अेक आदमीने पूछा था कि अछूत गोमांस खायें, शराब पीयें और साफ़ न रहें, तब तक क्या किया जाय ? अुसे लिखा :

"मेरा पक्का विश्वास है कि हरिजनोंमें जो भी कुटेव पाअी जाती हैं, अुन सबके लिअे कथित सवर्ण ज़िम्मेदार हैं। सहानुभूतिपूर्वक अुपाय करनेसे ही वे दूर हो सकती हैं।"

दूसरेको :

"अस्पृश्यता निवारणमें सहभोजन और मिश्रविवाह अनिवार्य रूपसे शामिल नहीं हैं। लेकिन कोअी हरिजनोंके साथ भोजन-व्यवहार या कन्या-व्यवहार करे, तो अुसकी मनाही नहीं होनी चाहिये। दूसरे शब्दोंमें कहें, तो हरिजनोंका दरजा तमाम बातोंमें बाकीके हिन्दुओं जैसा होना चाहिये। सहभोजनका अर्थ अेक थालीमें खाना तो होता ही नहीं। अिसलिअे यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि खानेके साथ दूसरेका थूक मिल जायगा।"

अीसाअी सेवा संघके ब्रदर केशवको लिखा :

"हाँ, अुपवास अीश्वरकी भेंट थी। आप धर्म-परिवर्तन करानेका विचार मनमें रखे बिना अछूतोंकी जो भी सेवा कर सकें अुससे भला ही होगा।"

रेनाल्ड्ज़का पत्र आया। १५ सितम्बरका यानी अुपवासका पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ अुसके दूसरे ही दिनका लिखा हुआ था। अुसमें लिखा था :

"और बहुतोंकी तरह मैं आपसे यह मनवानेकी कोशिश नहीं करूँगा कि आपका निर्णय ग़लत था। कारण मैं खुद ही मानता हूँ कि यह निर्णय अीश्वर प्रेरित था। आपके अेक अैसे अंग्रेज़ मित्रके नाते जो आपको खूब चाहता है और जो बहुत बार आपके विचारोंसे सहमत न होकर भी हमेशा आपके प्रति अत्यंत पूज्य भाव रखता है, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि निराश और हारे हुअे मनुष्यके जैसे दीखनेवाले आपके अिस कार्यको मैं आपके जीवनका सबसे बड़ा काम मानता हूँ।"

बापूने अुसे लिखा :

"आपका प्रिय पत्र मिला। मुझे यह ठंडी हवाके झोंकेके समान लगा है। मैं जानता ही था कि आप और दूसरे भी जो मेरे ध्यानमें हैं, अिस अुपवासका रहस्य समझ सकेंगे। माता जैसे बालकको सुलाती है, वैसे ही अीश्वरने धीरेसे मुझे (अुपवासकी शय्या पर) सुलाया। और सारे देशमें अुत्साहके जो भव्य प्रदर्शन हुअे, अुन्होंने तो मेरे लिअे खुराकसे भी ज्यादा काम किया।"

अेक आदमीने पूछा था कि अछूत गोमांस खायें, शराब पीयें और साफ़ न रहें, तब तक क्या किया जाय ? अुसे लिखा :

"मेरा पक्का विश्वास है कि हरिजनोंमें जो भी कुटेव पाअी जाती हैं, अुन सबके लिअे कथित सवर्ण ज़िम्मेदार हैं। सहानुभूतिपूर्वक अुपाय करनेसे ही वे दूर हो सकती हैं।"

दूसरेको :

"अस्पृश्यता निवारणमें सहभोजन और मिश्रविवाह अनिवार्य रूपसे शामिल नहीं हैं। लेकिन कोअी हरिजनोंके साथ भोजन-व्यवहार या कन्या-व्यवहार करे, तो अुसकी मनाही नहीं होनी चाहिये। दूसरे शब्दोंमें कहें, तो हरिजनोंका दरजा तमाम बातोंमें बाकीके हिन्दुओं जैसा होना चाहिये। सहभोजनका अर्थ अेक थालीमें खाना तो होता ही नहीं। अिसलिअे यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि खानेके साथ दूसरेका थूक मिल जायगा।"

अीसाअी सेवा संघके ब्रदर केशवको लिखा :

"हाँ, अुपवास अीश्वरकी भेंट थी। आप धर्म-परिवर्तन करानेका विचार मनमें रखे बिना अछूतोंकी जो भी सेवा कर सकें अुससे भला ही होगा।"

रेनाल्ड्ज़का पत्र आया। १५ सितम्बरका यानी अुपवासका पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ अुसके दूसरे ही दिनका लिखा हुआ था। अुसमें लिखा था :

"और बहुतोंकी तरह मैं आपसे यह मनवानेकी कोशिश नहीं करूँगा कि आपका निर्णय ग़लत था। कारण मैं खुद ही मानता हूँ कि यह निर्णय अीश्वर प्रेरित था। आपके अेक अैसे अंग्रेज़ मित्रके नाते जो आपको खूब चाहता है और जो बहुत बार आपके विचारोंसे सहमत न होकर भी हमेशा आपके प्रति अत्यंत पूज्य भाव रखता है, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि निराश और हारे हुअे मनुष्यके जैसे दीखनेवाले आपके अिस कार्यको मैं आपके जीवनका सबसे बड़ा काम मानता हूँ।"

बापूने अुसे लिखा :

"आपका प्रिय पत्र मिला। मुझे यह ठंडी हवाके झोंकेके समान लगा है। मैं जानता ही था कि आप और दूसरे भी जो मेरे ध्यानमें हैं, अिस अुपवासका रहस्य समझ सकेंगे। माता जैसे बालकको सुलाती है, वैसे ही अीश्वरने धीरेसे मुझे (अुपवासकी शय्या पर) सुलाया। और सारे देशमें अुत्साहके जो भव्य प्रदर्शन हुअे, अुन्होंने तो मेरे लिअे खुराकसे भी ज्यादा काम किया।"

आज केलप्पन, रंगस्वामी और ज़ामोरिनको पत्र लिखे और तीनोंको ज़ामोरिनको दिया हुआ तार भेजा ।

१५–१०–'३२ केलप्पनको लिखा :

"मैंने आपको जल्दी ही पत्र लिखा होता, लेकिन अधिकारी यह विचार कर रहे थे कि अैसा पत्रव्यवहार होने दिया जाय या नहीं । मैंने आपको तीन तारीखको तार दिया । अुसी दिन अधिकारियोंको ज़ामोरिनके नाम अेक तार दिया था। मगर वह अुन्होंने रोक लिया । अब वह भेज दिया गया है । अुसकी नक़ल अिसके साथ भेज रहा हूँ । अिस तरह आप देखेंगे कि मैंने तो तुरंत काम शुरू कर दिया है ।

"आपको नम्रता और सभ्यतासे काम लेना चाहिये । धमकियाँ बिलकुल न दी जायँ और न बड़े-बड़े दावे किये जायँ । असली काम तो कट्टरसे कट्टर सनातनियोंका भी परिवर्तन करना है । आंदोलनकी प्रगतिकी मुझे नियमित रूपसे जानकारी देते रहना ।"

रंगस्वामीको यही हाल लिखकर बताया :

"अिस तरह आप देखेंगे कि हमें निश्चित किये हुअे समयमें मन्दिर खुलवाना हो, तो अब बहुत वक्त नहीं खोना चाहिये । अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि आप और आपके बताये हुअे मित्र अिस मामलेमें जल्दी काम करने लग जायँगे ।"

ज़ामोरिनको :

"प्रिय मित्र,

"मैंने तीन तारीखको जो तार अधिकारियोंको दिया था अुसे जाने देनेके बारेमें अुन्होंने विचार किया और तीन दिन पहले ही अुन्होंने अुसे रवाना करनेका फ़ैसला किया है । आशा है आपको वह समय पर मिल गया होगा । मुझे विश्वास है कि आप अिस मामलेमें जो कुछ अुचित हो वह करेंगे और यह ध्यान रखेंगे कि अुपवास रोकनेके दरमियान मन्दिर खुल जाय ।

"आपको किस तरह संबोधन किया जाता है यह मुझे मालूम नहीं । अिसलिअे तरीकेमें कोअी खामी रह गअी हो, तो यह समझकर कि वह जरा भी जानबूझकर नहीं की गअी, मुझे सूचना दीजिये ।"

अेस० के० जॉर्जको लिखा :

"जैसा तुम करते जान पड़ते हो, वैसा मैं राजनीति और धर्मको अेक दूसरेसे अलग नहीं समझता । सच्चा धर्म जीवनकी हरअेक प्रवृत्तिमें व्याप्त होना चाहिये । कोअी भी प्रवृत्ति धर्मका बलिदान किये, बिना न हो सकती हो,

आज केलप्पन, रंगस्वामी और ज़ामोरिनको पत्र लिखे और तीनोंको ज़ामोरिनको दिया हुआ तार भेजा।

१५-१०-'३२ केलप्पनको लिखा :

"मैंने आपको जल्दी ही पत्र लिखा होता, लेकिन अधिकारी यह विचार कर रहे थे कि अैसा पत्रव्यवहार होने दिया जाय या नहीं। मैंने आपको तीन तारीखको तार दिया। अुसी दिन अधिकारियोंको ज़ामोरिनके नाम अेक तार दिया था। मगर वह अुन्होंने रोक लिया। अब वह भेज दिया गया है। अुसकी नक़ल अिसके साथ भेज रहा हूँ। अिस तरह आप देखेंगे कि मैंने तो तुरंत काम शुरू कर दिया है।

"आपको नम्रता और सभ्यतासे काम लेना चाहिये। धमकियाँ बिलकुल न दी जायँ और न बड़े-बड़े दावे किये जायँ। असली काम तो कट्टरसे कट्टर सनातनियोंका भी परिवर्तन करना है। आंदोलनकी प्रगतिकी मुझे नियमित रूपसे जानकारी देते रहना।"

रंगस्वामीको यही हाल लिखकर बताया :

"अिस तरह आप देखेंगे कि हमें निश्चित किये हुअे समयमें मन्दिर खुलवाना हो, तो अब बहुत वक्त नहीं खोना चाहिये। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि आप और आपके बताये हुअे मित्र अिस मामलेमें जल्दी काम करने लग जायँगे।"

ज़ामोरिनको :

"प्रिय मित्र,

"मैंने तीन तारीखको जो तार अधिकारियोंको दिया था अुसे जाने देनेके बारेमें अुन्होंने विचार किया और तीन दिन पहले ही अुन्होंने अुसे रवाना करनेका फ़ैसला किया है। आशा है आपको वह समय पर मिल गया होगा। मुझे विश्वास है कि आप अिस मामलेमें जो कुछ अुचित हो वह करेंगे और यह ध्यान रखेंगे कि अुपवास रोकनेके दरमियान मन्दिर खुल जाय।

"आपको किस तरह संबोधन किया जाता है यह मुझे मालूम नहीं। अिसलिअे तरीकेमें कोअी खामी रह गअी हो, तो यह समझकर कि वह जरा भी जानबूझकर नहीं की गअी, मुझे सूचना दीजिये।"

अेस० के० जॉर्जको लिखा :

"जैसा तुम करते जान पड़ते हो, वैसा मैं राजनीति और धर्मको अेक दूसरेसे अलग नहीं समझता। सच्चा धर्म जीवनकी हरअेक प्रवृत्तिमें व्याप्त होना चाहिये। कोअी भी प्रवृत्ति धर्मका बलिदान किये बिना न हो सकती हो,

सकती है ? मगर सच बात तो यह है कि यह आदमी यह मान ले कि मेरे अुपवासने हिन्दू समाजमें जागृति पैदा कर दी, तो फिर अुसे और कुछ कहने का हक नहीं रहेगा। हिन्दू समाज अिस अुपवाससे जैसा अेक हो गया, वैसा दूसरी तरह न होता। और यह अेकता मुख्य बात है। प्रतिनिधित्व की बात तो गौण है।"

मैंने पूछा: "आज केलप्पनको लिखा है कि हिन्दू समाजका परिवर्तन ही मुख्य बात है। क्या आप मानते हैं कि अुपवाससे यह परिवर्तन होता है?"

बापू: "हरअेक अुपवाससे नहीं। अिसीलिअे तो मैंने यह कह दिया है कि अुपवास कैसा होना चाहिये। अुसके पीछे निर्मलसे निर्मल हेतु होना चाहिये। अुसमें किसीपर दबाव डालनेका काम नहीं। यों तो कोअी शराबी या व्यभिचारी आदमी भी अैसा हो सकता है, जिसे अछूतपनके सवालसे बहुत पीड़ा होती हो और वह अुपवास करे, मगर अुस अुपवासका कोअी असर होगा तो क्षणिक ही होगा। अिसका कारण यह है कि अुपवास करनेवालेको समझना चाहिये कि वह अीश्वरका प्रतिनिधि है। और अीश्वरके प्रतिनिधिके नाते अुसमें किसी भी प्रकारका मैल नहीं होना चाहिये। यह स्थिति हो, तो अुपवासका व्यापक असर हुअे बिना न रहे।"

मैंने कहा: "मामूली आदमीका भी असर होता है, क्योंकि कलियुगमें तो अल्प तपस्या भी फल देती है।"

बापू: "ठीक है, जैसे मेरे छः दिनके अुपवाससे अितना असर हुआ।"

मैंने कहा: "मैं आपके अुपवासकी बात नहीं कहता। मगर भावनगरमें अुस आदमीने दो दिन अुपवास किया और दुकानवालेने माफ़ी माँगी। यह अल्प तपस्या और सामान्य मनुष्य द्वारा की हुअी तपस्याकी मिसाल है।"

बापू: "यह ठीक है, अुसका व्यापक असर नहीं होता। व्यापक असर वह कहलाता है, जो ६ अप्रैल १९१९को अुपवास और प्रार्थनाका और सूचनाओंका हुआ था। मैं यह मानता हूँ कि वैसा ही असर अिस अुपवासका हुआ है। मैंने तो यह माना ही नहीं था कि अितना असर होगा और लोग अिशारेमें अितना समझ जायँगे।"

'लोकशिक्षण' में 'तिलकभक्त' नामधारी लेखकने केलकरके साठ बरस पूरे होनेके निमित्तसे महाराष्ट्रमें हुअे अुत्सवोंपर अेक बहुत कड़ा लेख लिखा है। आगरकर, चिपलूणकर, आप्टे, अणे, खाडिलकर आदि प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय व्यक्तियोंकी तुलनामें ये कहीं नहीं टिक सकते, अिनमें ध्येयशून्यता है, ये सुस्त स्वभावके हैं, तिलककी गद्दीकी रक्षा करनेके बजाय अिन्होंने तिलक-सत्ताका लोप कर दिया — अिस प्रकारकी आलोचना अिस लेखमें काफ़ी

सकती है? मगर सच बात तो यह है कि यह आदमी यह मान ले कि मेरे अुपवासने हिन्दू समाजमें जागृति पैदा कर दी, तो फिर अुसे और कुछ कहने का हक नहीं रहेगा। हिन्दू समाज अिस अुपवाससे जैसा अेक हो गया, वैसा दूसरी तरह न होता। और यह अेकता मुख्य बात है। प्रतिनिधित्व की बात तो गौण है।"

मैंने पूछा: "आज केलप्पनको लिखा है कि हिन्दू समाजका परिवर्तन ही मुख्य बात है। क्या आप मानते हैं कि अुपवाससे यह परिवर्तन होता है?"

बापू: "हरअेक अुपवाससे नहीं। अिसीलिअे तो मैंने यह कह दिया है कि अुपवास कैसा होना चाहिये। अुसके पीछे निर्मलसे निर्मल हेतु होना चाहिये। अुसमें किसीपर दबाव डालनेका काम नहीं। यों तो कोअी शराबी या व्यभिचारी आदमी भी अैसा हो सकता है, जिसे अछूतपनके सवालसे बहुत पीड़ा होती हो और वह अुपवास करे, मगर अुस अुपवासका कोअी असर होगा तो क्षणिक ही होगा। अिसका कारण यह है कि अुपवास करनेवालेको समझना चाहिये कि वह अीश्वरका प्रतिनिधि है। और अीश्वरके प्रतिनिधिके नाते अुसमें किसी भी प्रकारका मैल नहीं होना चाहिये। यह स्थिति हो, तो अुपवासका व्यापक असर हुअे बिना न रहे।"

मैंने कहा: "मामूली आदमीका भी असर होता है, क्योंकि कलियुगमें तो अल्प तपस्या भी फल देती है।"

बापू: "ठीक है, जैसे मेरे छः दिनके अुपवाससे अितना असर हुआ।"

मैंने कहा: "मैं आपके अुपवासकी बात नहीं कहता। मगर भावनगरमें अुस आदमीने दो दिन अुपवास किया और दुकानवालेने माफ़ी माँगी। यह अल्प तपस्या और सामान्य मनुष्य द्वारा की हुअी तपस्याकी मिसाल है।"

बापू: "यह ठीक है, अुसका व्यापक असर नहीं होता। व्यापक असर वह कहलाता है, जो ६ अप्रैल १९१९को अुपवास और प्रार्थनाका और सूचनाओंका हुआ था। मैं यह मानता हूँ कि वैसा ही असर अिस अुपवासका हुआ है। मैंने तो यह माना ही नहीं था कि अितना असर होगा और लोग अिशारेमें अितना समझ जायँगे।"

'लोकशिक्षण' में 'तिलकभक्त' नामधारी लेखकने केलकरके साठ बरस पूरे होनेके निमित्तसे महाराष्ट्रमें हुअे अुत्सवोंपर अेक बहुत कड़ा लेख लिखा है। आगरकर, चिपलूणकर, आप्टे, अणे, खाड़िलकर आदि प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय व्यक्तियोंकी तुलनामें ये कहीं नहीं टिक सकते, अिनमें ध्येयशून्यता है, ये सुस्त स्वभावके हैं, तिलककी गद्दीकी रक्षा करनेके बजाय अिन्होंने तिलक-सत्ताका लोप कर दिया — अिस प्रकारकी आलोचना अिस लेखमें काफ़ी

आश्रमकी डाकमें ज़िक्र करने लायक पत्र :

जमनाबहनको लिखा :

"तीन महीनेका तुम्हारा सब मिलाकर १२५) रु. का खर्च ज्यादा नहीं है। अुसे जाननेकी मुझे अिच्छा थी, क्योंकि अिससे मुझे बहुतसी बातें जाननेको मिल जाती हैं। भले ही अपना रुपया हो, तो भी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब रखना ही चाहिये। क्योंकि सच बात तो यह है कि अपना अिस दुनियामें कुछ भी नहीं, सब औश्वरका है। यह हमें रोज़ अनुभव होता है। अिसलिअे सब कुछ त्यागबुद्धिसे ही भोगना और खर्च करना चाहिये। जो अैसा करता है वह आत्मसन्तोषके लिअे पाअी-पाअीका हिसाब रखता है। अगर १२५) रु. का हिसाब अिस तरह न रखा हो, तो अब रखनेकी आदत डालनी चाहिये। मुझे याद है कि देवभाभी अैसा ही हिसाब ज़बानी रखती थीं।"

नर्मदा मुस्कुटेको (हिन्दीमें):

"वाङ्मय साध्य नहीं है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवाका साधन है, अिसलिअे जब तक हमारे हाथमें कुछ भी सेवा आयी हो तब तक शान्तिसे अुसमें तन्मय रहना। गीतामाताकी प्रतिज्ञा है कि जो औश्वरके भक्त हैं, अुनको भगवान् साधन दे देगा। हाँ, जब समय मिले तब अक्षरज्ञानमें वृद्धि अवश्य करना। अुसमें भी समझो कि पढ़नेसे विचार ज्यादा चीज़ है। भले पढ़नेका थोड़ा हो। जितना पढ़ना अुसे हज़म करना।"

छगनलाल जोशीको :

"मुझे तो सभी परीक्षा अच्छी लगती है। औश्वरने शर्त की ही नहीं कि वह अपने भक्तोंको यहीं तक तपायेगा। अितनी मर्यादा अवश्य है कि वह किसीको अुसकी शक्तिसे अधिक नहीं तपाता।

"सब कुछ अनासक्त रहकर करना सीख लोगे तो कुशल ही है। मैं तो देखता हूँ कि आरोग्यकी कुंजी भी अुसीमें है।"

बालकोबा को :

"यह कहा जा सकता है कि अुपवासके दिनोंमें नामस्मरण आदि ज्यादा था। क्योंकि शारीरिक दुःख होते हुअे भी शान्ति बहुत थी। यह हो सकता है कि जिसे असाध्य रोग है, वह खास हालतोंमें अनशन करे, तो अुसमें आत्महत्याका दोष न हो। मगर जिस असाध्य रोगवालेका मन साफ़ है, अुसे अनशनका अधिकार नहीं है। क्योंकि वह मनसे भी सेवा कर सकता है। मेरी पिछली बीमारी जो कोल्हापुरमें हुअी, वही थी? कुछ भी हो। मुझे याद है कि हर बीमारी मुझे अनुग्रहके रूपमें ही हुअी है। औश्वरके भक्तको अैसा

आश्रमकी डाकमें ज़िक्र करने लायक पत्र :

जमनाबहनको लिखा :

"तीन महीनेका तुम्हारा सब मिलाकर १२५) रु. का खर्च ज्यादा नहीं है। अुसे जाननेकी मुझे अिच्छा थी, क्योंकि अिससे मुझे बहुतसी बातें जाननेको मिल जाती हैं। भले ही अपना रुपया हो, तो भी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब रखना ही चाहिये। क्योंकि सच बात तो यह है कि अपना अिस दुनियामें कुछ भी नहीं, सब ओश्वरका है। यह हमें रोज़ अनुभव होता है। अिसलिअे सब कुछ त्यागबुद्धिसे ही भोगना और खर्च करना चाहिये। जो अैसा करता है वह आत्मसन्तोषके लिअे पाअी-पाअीका हिसाब रखता है। अगर १२५) रु. का हिसाब अिस तरह न रखा हो, तो अब रखनेकी आदत डालनी चाहिये। मुझे याद है कि देवभाभी अैसा ही हिसाब ज़बानी रखती थीं।"

नर्मदा भुस्कुटेको (हिन्दीमें) :

"वाङ्मय साध्य नहीं है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवाका साधन है, अिसलिअे जब तक हमारे हाथमें कुछ भी सेवा आयी हो तब तक शान्तिसे अुसमें तन्मय रहना। गीतामाताकी प्रतिज्ञा है कि जो ओश्वरके भक्त हैं, अुनको भगवान् साधन दे देगा। हाँ, जब समय मिले तब अक्षरज्ञानमें वृद्धि अवश्य करना। अुसमें भी समझो कि पढ़नेसे विचार ज्यादा चीज़ है। भले पढ़नेका थोड़ा हो। जितना पढ़ना अुसे हज़म करना।"

छगनलाल जोशीको :

"मुझे तो सभी परीक्षा अच्छी लगती है। ओश्वरने शर्त की ही नहीं कि वह अपने भक्तोंको यहीं तक तपायेगा। अितनी मर्यादा अवश्य है कि वह किसीको अुसकी शक्तिसे अधिक नहीं तपाता।

"सब कुछ अनासक्त रहकर करना सीख लोगे तो कुशल ही है। मैं तो देखता हूँ कि आरोग्यकी कुंजी भी अुसीमें है।"

बाल्कोबा को :

"यह कहा जा सकता है कि अुपवासके दिनोंमें नामस्मरण आदि ज्यादा था। क्योंकि शारीरिक दुःख होते हुअे भी शान्ति बहुत थी। यह हो सकता है कि जिसे असाध्य रोग है, वह खास हालतोंमें अनशन करे, तो अुसमें आत्महत्याका दोष न हो। मगर जिस असाध्य रोगवालेका मन साफ़ है, अुसे अनशनका अधिकार नहीं है। क्योंकि वह मनसे भी सेवा कर सकता है। मेरी पिछली बीमारी जो कोल्हापुरमें हुअी, वही थी? कुछ भी हो। मुझे याद है कि हर बीमारी मुझे अनुग्रहके रूपमें ही हुअी है। ओश्वरके भक्तको अैसा

हेंडरसन नामके पादरीको :

"आप जब 'मेरा अीश्वर' और 'तुम्हारा अीश्वर' असी बात कहते हैं, तब आपके साथ चर्चा करना फ़ज़ूल है। मैं तो आज तक यही मानता हूँ कि बुद्धिमानका और मूर्खका, पापीका और सन्तका अीश्वर अेक ही है। मेरा यह सुझाव है कि मेरे साथ बहस करनेके बजाय आप मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि 'आपका' अीश्वर मुझे बुद्धि दे और आपके खयालसे मेरी जो भूल है अुसे मैं समझ सकूँ।"

बारह बजे बापू आम्बेडकरसे मिलने दफ्तर गये। श्रीमती नायडू भी वहाँ आअी थीं। शुरूमें हडसनका आया हुआ पत्र आम्बेडकर और बापूको पढ़ाया गया। अुसमें बताया गया था कि सिर्फ़ अिसी शर्त पर मुलाकात हो कि अछूतपनके बारेमें ही बातें की जायें और अिस बारेमें बाहर कहीं भी सार्वजनिक रूपमें न लिखा जाय अथवा गांधीजीकी तरफ़से बयान प्रकाशित न किये जायें। अगर अिन शर्तोंका भंग हुआ, तो भविष्यमें ये मुलाक़ातें नहीं मिलेंगी। बापूको यह बात अच्छी नहीं लगी और न आम्बेडकरको। आम्बेडकरने तो 'किसी भी विघ्नके बिना मुलाक़ात' की अनुमति माँगी थी और अुसे 'आपके तारमें लिखे अनुसार' अनुमति भी मिली थी। जेलमें अुसे यह पत्र देखकर अचंभा हुआ और अुसने हडसनसे टेलीफ़ोन पर बातें कीं। हडसनने कहा : "यह निश्चय लार्ड विलिंग्डनके साथ बातें होनेके बाद करना पड़ा है।" अिसलिअे मजबूर होकर आम्बेडकरने मंजूर किया। फिर भी आंबेडकरने कह दिया : "मैं तो अछूतपनके बारेमें नहीं, परन्तु राजनैतिक परिस्थितिके विषयमें बातें करने आया था। मगर अब तो जो होना था, हो गया।"

बापूने कहा : "सच बात है। मुझसे आपके साथ अिस विषयमें बातें नहीं की जा सकतीं। आप करें तो भी मैं राय नहीं दे सकता। मेरा मन ही अिस दिशामें काम नहीं करेगा।"

आम्बेडकर बोले : "मैं तो कह देता हूँ कि सिर्फ़ अिसीलिअे आया था। मुझे आपसे सविनय भंग छोड़ कर बाहर निकलकर गोलमेज़ परिषद्में चलनेकी प्रार्थना करनी थी। बात यह है कि आप न चलें, तो विलायतमें कुछ नहीं मिल सकता; अुलटा सब कुछ बिगड़ जायगा। अिक़बाल जैसे आदमी तो देशके दुश्मन हैं, वे बिगाड़ देंगे; और हमें तो कैसा भी विधान हो अुस पर काम करना है। अिसलिअे मैं छोटा आदमी होकर भी आपसे बिनती करता हूँ कि आप चलिये।"

बापूने कहा : "आप सारी बहस विस्तारसे करें, तो मैं अुस पर विचार करूँ। मेरा सुझाव है कि आप बाहर जाकर अखबारोंमें अिस चीज़ पर विस्तारसे लिखिये। मैं अुसपर विचार करूँगा।"

हेंडरसन नामके पादरीको:

"आप जब 'मेरा अीश्वर' और 'तुम्हारा अीश्वर' अैसी बात कहते हैं, तब आपके साथ चर्चा करना फ़ज़ूल है। मैं तो आज तक यही मानता हूँ कि बुद्धिमानका और मूर्खका, पापीका और सन्तका अीश्वर अेक ही है। मेरा यह सुझाव है कि मेरे साथ बहस करनेके बजाय आप मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि 'आपका' अीश्वर मुझे बुद्धि दे और आपके खयालसे मेरी जो भूल है अुसे मैं समझ सकूँ।"

बारह बजे बापू आम्बेडकरसे मिलने दफ्तर गये। श्रीमती नायडू भी वहाँ आअी थीं। शुरूमें हडसनका आया हुआ पत्र आम्बेडकर और बापूको पढ़ाया गया। अुसमें बताया गया था कि सिर्फ़ अिसी शर्त पर मुलाकात हो कि अछूतपनके बारेमें ही बातें की जायें और अिस बारेमें बाहर कहीं भी सार्वजनिक रूपमें न लिखा जाय अथवा गांधीजीकी तरफ़से बयान प्रकाशित न किये जायें। अगर अिन शर्तोंका भंग हुआ, तो भविष्यमें ये मुलाक़ातें नहीं मिलेंगी। बापूको यह बात अच्छी नहीं लगी और न आम्बेडकरको। आम्बेडकरने तो 'किसी भी विघ्नके बिना मुलाक़ात' की अनुमति माँगी थी और अुसे 'आपके तारमें लिखे अनुसार' अनुमति भी मिली थी। जेलमें अुसे यह पत्र देखकर अचंभा हुआ और अुसने हडसनसे टेलीफ़ोन पर बातें कीं। हडसनने कहा: "यह निश्चय लार्ड विलिंग्डनके साथ बातें होनेके बाद करना पड़ा है।" अिसलिअे मजबूर होकर आम्बेडकरने मंजूर किया। फिर भी आंबेडकरने कह दिया: "मैं तो अछूतपनके बारेमें नहीं, परन्तु राजनैतिक परिस्थितिके विषयमें बातें करने आया था। मगर अब तो जो होना था, हो गया।"

बापूने कहा: "सच बात है। मुझसे आपके साथ अिस विषयमें बातें नहीं की जा सकतीं। आप करें तो भी मैं राय नहीं दे सकता। मेरा मन ही अिस दिशामें काम नहीं करेगा।"

आम्बेडकर बोले: "मैं तो कह देता हूँ कि सिर्फ़ अिसीलिअे आया था। मुझे आपसे सविनय भंग छोड़ कर बाहर निकलकर गोलमेज़ परिषद्में चलनेकी प्रार्थना करनी थी। बात यह है कि आप न चलें, तो विलायतमें कुछ नहीं मिल सकता; अुलटा सब कुछ बिगड़ जायगा। अिक़बाल जैसे आदमी तो देशके दुश्मन हैं, वे बिगाड़ देंगे; और हमें तो कैसा भी विधान हो अुस पर काम करना है। अिसलिअे मैं छोटा आदमी होकर भी आपसे बिनती करता हूँ कि आप चलिये।"

बापूने कहा: "आप सारी बहस विस्तारसे करें, तो मैं अुस पर विचार करूँ। मेरा सुझाव है कि आप बाहर जाकर अखबारोंमें अिस चीज़ पर विस्तारसे लिखिये। मैं अुसपर विचार करूँगा।"

आम्बेडकरने कहा: "मुझे बिड़लाने अस्पृश्यता निवारण सभाके बोर्डमें लेनेको कहा। मैंने अिनकार कर दिया, क्योंकि मैं अकेला वहाँ क्या करूँ? मुझे तो आप चाहेंगे, अुसी तरहके काममें सम्मति देनी पड़ेगी। हम जो अधिक हों, तो चाहें अुस तरह सुधार करा सकें। आप चाहते होंगे कि मन्दिर बनाये जायँ या कुअें खुदवाये जायँ। पर हमें अैसा लगता है कि यह रुपया व्यर्थ जाता है, अिसके लिअे दूसरा रास्ता चाहिये।"

बापू बोले: "आपका दृष्टिबिन्दु समझता हूँ। अिसे ध्यानमें रखूँगा और देखूँगा कि अिस बारेमें क्या किया जा सकता है।"

फिर बापू हमसे कहने लगे: "बातें अुसने बहुत मीठी कीं। अुसमें सिद्धान्त तो नहीं है, मगर ये सारी बातें बहुत सीधे ढंगसे कीं। अुसने यह भी कहा कि मुझे राजनैतिक सत्ता चाहिये थी सो मिल गअी। अब मुझे तो राष्ट्रीय काम करना है। अब मैं आपके काममें रोड़े नहीं अटकाअूँगा। अेम. सी. राजा यहाँसे जाकर आर्डिनेंस बिलका समर्थन करें, वैसा मुझसे नहीं हो सकता। मैंने तो अपने आदमियोंसे कह दिया: 'अब तुम मुझसे अिस काममें बहुत आशा न रखना। अब मुझे अपनी शक्ति देशके काममें खर्च करनी होगी।' मगर आप बाहर निकलकर देशका काम शुरू करें तब हो। यों ही कुछ नहीं हो जायगा।

"अपने बारेमें कहा: 'कहा जाता है कि सरकार मुझे रुपया देती है। मेरे जैसा भिखारी कोअी नहीं। तीन सालसे मेरी कुछ भी कमाअी नहीं। यह काम करते हुअे मुझे अपना रुपया खर्च करना पड़ता है और मेरे मुक़दमोंका काम कम होता है। सार्वजनिक कामके लिअे समय भी जाता है और रुपया भी खर्च होता है। थोड़े-थोड़े मुक़दमें मिलते हैं, अुनसे अपना गुज़र चलाता हूँ। आज भी सावंतवाड़ीमें अेक मुक़दमा है। वहाँ जाते हुअे रास्तेमें अुतर गया हूँ।'"

नरसिंहरावकी लड़की लवंगिकाकी मृत्युका समाचार अखबारमें देखा और बापूका ध्यान दिलाया। बापूने तुरन्त अिस आशयका पत्र लिखा:

१८-१०-'३२

"आपकी लड़कीके अवसानके समाचार पढ़कर हम सबको दुःख हुआ। महादेवने कहा, यह अेक ही लड़की रह गअी थी। आपको शोक नहीं करना चाहिये। आप दोनों ज्ञानी हैं। अीश्वर आपको शान्ति प्रदान करे।"

अितने वाक्योंका नरसिंहराव पर अद्‌भुत असर हुआ। अुन्होंने लिखा:

आम्बेडकरने कहा: "मुझे बिड़लाने अस्पृश्यता निवारण सभाके बोर्डमें लेनेको कहा। मैंने अिनकार कर दिया, क्योंकि मैं अकेला वहाँ क्या करूँ? मुझे तो आप चाहेंगे, अुसी तरहके काममें सम्मति देनी पड़ेगी। हम जो अधिक हों, तो चाहें अुस तरह सुधार करा सकें। आप चाहते होंगे कि मन्दिर बनाये जायँ या कुअें खुदवाये जायँ। पर हमें अैसा लगता है कि यह रुपया व्यर्थ जाता है, अिसके लिअे दूसरा रास्ता चाहिये।"

बापू बोले: "आपका दृष्टिबिन्दु समझता हूँ। अिसे ध्यानमें रखूँगा और देखूँगा कि अिस बारेमें क्या किया जा सकता है।"

फिर बापू हमसे कहने लगे: "बातें अुसने बहुत मीठी कीं। अुसमें सिद्धान्त तो नहीं है, मगर ये सारी बातें बहुत सीधे ढंगसे कीं। अुसने यह भी कहा कि मुझे राजनैतिक सत्ता चाहिये थी सो मिल गअी। अब मुझे तो राष्ट्रीय काम करना है। अब मैं आपके काममें रोड़े नहीं अटकाअूँगा। अेम. सी. राजा यहाँसे जाकर आर्डिनेंस बिलका समर्थन करें, वैसा मुझसे नहीं हो सकता। मैंने तो अपने आदमियोंसे कह दिया: 'अब तुम मुझसे अिस काममें बहुत आशा न रखना। अब मुझे अपनी शक्ति देशके काममें खर्च करनी होगी।' मगर आप बाहर निकलकर देशका काम शुरू करें तब हो। यों ही कुछ नहीं हो जायगा।

"अपने बारेमें कहा: 'कहा जाता है कि सरकार मुझे रुपया देती है। मेरे जैसा भिखारी कोअी नहीं। तीन सालसे मेरी कुछ भी कमाअी नहीं। यह काम करते हुअे मुझे अपना रुपया खर्च करना पड़ता है और मेरे मुक़दमोंका काम कम होता है। सार्वजनिक कामके लिअे समय भी जाता है और रुपया भी खर्च होता है। थोड़े-थोड़े मुकदमें मिलते हैं, अुनसे अपना गुज़र चलाता हूँ। आज भी सावंतवाड़ीमें अेक मुकदमा है। वहाँ जाते हुअे रास्तेमें अुतर गया हूँ।'"

नरसिंहरावकी लड़की लवंगिकाकी मृत्युका समाचार अखबारमें देखा और बापूका ध्यान दिलाया। बापूने तुरन्त अिस आशयका पत्र लिखा:

१८-१०-'३२

"आपकी लड़कीके अवसानके समाचार पढ़कर हम सबको दुःख हुआ। महादेवने कहा, यह अेक ही लड़की रह गअी थी। आपको शोक नहीं करना चाहिये। आप दोनों ज्ञानी हैं। अीश्वर आपको शान्ति प्रदान करे।"

अितने वाक्योंका नरसिंहराव पर अद्‌भुत असर हुआ। अुन्होंने लिखा:

अंत्यजोंके प्रश्न सम्बन्धी पैदा होनेवाली मुश्किलोंके बारेमें काठियावाड़से शंभुशंकरका पत्र आया। बापू बोले: "यह काठियावाड़ तो अन्तमें दिक्कत ही देगा। खुद कुछ करना नहीं और अैसे मामलोंमें मुश्किलें पैदा करना। राजाओंको भी अपना अैश-आराम घटाना नहीं है, अिसलिअे लोग कहीं हमारे ही विरोधी न बन जायें अिस खयालसे अैसे मामलोंमें वे लोगोंका समर्थन करते हैं।"

आज डॉ० कटियाल होम सेक्रेटरीसे अिजाज़त लेकर बापूसे मिल गया। अुसने यह कहकर अिजाज़त ली कि लन्दनमें वह बापूका 'डाक्टरी सलाहकार' था और अब वापस विलायत जानेसे पहले मिल लेना चाहता है। पंजाबके हाल सुनाते हुअे अुसने कहा कि फ़ज़ली हुसेनके सिवा वहाँ और कोअी कठिनाअी पैदा करे अैसा नहीं है। अिस आदमीकी बातोंसे बापू पर यह असर हुआ कि सारे सवालका सन्तोषजनक निपटारा हो जायगा।

शामकी प्रार्थनामें 'निन्दक बाबा वीर हमारा' भजन गाया। प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापू बोले: "क्या सचमुच यह भजन हम गा सकते हैं?"

मैंने कहा: "अिसे बहुत कुरेदने लगें, तो शायद न गाने लायक़ लग सकता है। पर मुझे तो अिसमेंसे क्षमाभावकी ही ध्वनि निकलती दीखती है।"

बापू: "मैंने भी अैसा ही माना है, मगर आज बोलते-बोलते मुझे सूझा कि सचमुच क्या हम यह चाह सकते हैं कि जुग-जुग जीवो निन्दक मेरे? अिस सारे भजनमें कटाक्ष नहीं है?"

मैंने कहा: "मुझे नहीं लगता कि कटाक्ष है। मुझे तो अकसर यह भजन पढ़कर अैसा लगा है कि मानो आपकी ही वृत्तियाँ अिसमें ध्वनित हो रही हैं। बहुत बार जब आपकी सख्त आलोचना होती है, तब आप कहते हैं कि यह अच्छा है और अुस टीकाके लाभ वर्णन करते हैं।"

बापू: "यह सही है। अिस भजनका राग मीठा है, शब्दरचना भी अच्छी है और अिसे गाना हमेशा अच्छा लगा है। मगर आज विचार आया कि हमारी निन्दा करनेवाला सदा निन्दाका ही धन्धा किया करे, खुद डूबे और दूसरोंको तारता रहे, अिस तरहकी प्रार्थना क्या हम कर सकते हैं?"

मैं: "भक्तोंके ये भजन अुनके अपने अपने समयकी मनोवृत्तिके प्रतिबिम्ब हैं। मैं यह नहीं मानता कि अिनके द्वारा क्षमाभावका अुपदेश देनेके सिवाय अिनका और कोअी अुद्देश्य हो सकता है। वैसे अिसका विश्लेषण करने पर संभव है अिसमेंसे क्षमाके बजाय तिरस्कार निकल आये।"

बापू: "बस यही मेरा कहना है। अिसमें कटाक्ष है और निन्दकका तिरस्कार है। हम यह चाहते हैं कि दुष्टसे दुष्ट मनुष्य भी दुष्टता छोड़े; यह कभी नहीं चाहते कि दुष्टतामें ही पड़ा रहे। यह भजन गाया जाय या नहीं

अंत्यजोंके प्रश्न सम्बन्धी पैदा होनेवाली मुश्किलोंके बारेमें काठियावाड़से शंभुशंकरका पत्र आया। बापू बोले: "यह काठियावाड़ तो अन्तमें दिक्कत ही देगा। खुद कुछ करना नहीं और अैसे मामलोंमें मुश्किलें पैदा करना। राजाओंको भी अपना अैश-आराम घटाना नहीं है, अिसलिअे लोग कहीं हमारे ही विरोधी न बन जायें अिस खयालसे अैसे मामलोंमें वे लोगोंका समर्थन करते हैं।"

आज डॉ० कटियाल होम सेक्रेटरीसे अिजाज़त लेकर बापूसे मिल गया। अुसने यह कहकर अिजाज़त ली कि लन्दनमें वह बापूका 'डाक्टरी सलाहकार' था और अब वापस विलायत जानेसे पहले मिल लेना चाहता है। पंजाबके हाल सुनाते हुअे अुसने कहा कि फ़ज़ली हुसेनके सिवा वहाँ और कोअी कठिनाअी पैदा करे अैसा नहीं है। अिस आदमीकी बातोंसे बापू पर यह असर हुआ कि सारे सवालका सन्तोषजनक निपटारा हो जायगा।

शामकी प्रार्थनामें 'निन्दक बाबा वीर हमारा' भजन गाया। प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापू बोले: "क्या सचमुच यह भजन हम गा सकते हैं?"

मैंने कहा: "अिसे बहुत कुरेदने लगें, तो शायद न गाने लायक़ लग सकता है। पर मुझे तो अिसमेंसे क्षमाभावकी ही ध्वनि निकलती दीखती है।"

बापू: "मैंने भी अैसा ही माना है, मगर आज बोलते-बोलते मुझे सूझा कि सचमुच क्या हम यह चाह सकते हैं कि जुग-जुग जीवो निन्दक मेरे? अिस सारे भजनमें कटाक्ष नहीं है?"

मैंने कहा: "मुझे नहीं लगता कि कटाक्ष है। मुझे तो अकसर यह भजन पढ़कर अैसा लगा है कि मानो आपकी ही वृत्तियाँ अिसमें ध्वनित हो रही हैं। बहुत बार जब आपकी सख्त आलोचना होती है, तब आप कहते हैं कि यह अच्छा है और अुस टीकाके लाभ वर्णन करते हैं।"

बापू: "यह सही है। अिस भजनका राग मीठा है, शब्दरचना भी अच्छी है और अिसे गाना हमेशा अच्छा लगा है। मगर आज विचार आया कि हमारी निन्दा करनेवाला सदा निन्दाका ही धन्धा किया करे, खुद डूबे और दूसरोंको तारता रहे, अिस तरहकी प्रार्थना क्या हम कर सकते हैं?"

मैं: "भक्तोंके ये भजन अुनके अपने अपने समयकी मनोवृत्तिके प्रतिबिम्ब हैं। मैं यह नहीं मानता कि अिनके द्वारा क्षमाभावका अुपदेश देनेके सिवाय अिनका और कोअी अुद्देश्य हो सकता है। वैसे अिसका विश्लेषण करने पर संभव है अिसमेंसे क्षमाके बजाय तिरस्कार निकल आये।"

बापू: "बस यही मेरा कहना है। अिसमें कटाक्ष है और निन्दकका तिरस्कार है। हम यह चाहते हैं कि दुष्टसे दुष्ट मनुष्य भी दुष्टता छोड़े; यह कभी नहीं चाहते कि दुष्टतामें ही पड़ा रहे। यह भजन गाया जाय या नहीं

बापू और महादेवभाअी

हैं। अस्पृश्यता निवारणका अर्थ जिसको अस्पृश्य मानते हैं अुसके साथ व्यवहार करना, जैसे अितर हिन्दुओंके साथ किया जाता है। दोनोंको साथ मिलानेसे दोनों कार्य बिगड़नेका डर है। फलतः रोटी-बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारणका अनिवार्य अंग नहीं है। किन्तु हरिजनोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहार अधर्म्य भी नहीं है।"

वाल्वा (जि० सतारा) के हरिजनोंकी सुन्दर अक्षरोंमें बड़े और चौड़े कागज़ोंपर लिखी हुअी अर्जी आअी कि "हमें स्पृश्य हिन्दुओंकी तरफ़से बड़ा कष्ट है। हमारे झोंपड़े हर साल पानीसे नष्ट हो जाते हैं। मगर स्पृश्योंके विरोधके कारण हमें अूंची जगह पर झोंपड़ियाँ बनानेकी अिज़ाजत नहीं मिल सकती। हम दूसरे धर्ममें क्यों न प्रवेश करें? लेकिन आपने अब बाबासाहब आम्बेडकरसे सुलह कर ली है, अिसलिअे हम अिस अितज़ारमें बैठे हैं कि आप अब क्या करते हैं।"

अुन्हें लिखा (हिन्दीमें):

"आप भाअियोंका सुन्दर अक्षरोंमें और सुन्दर भाषामें लिखा हुआ खत मुझे मिला है। आप लोगोंका दुःख मैं समझ सकता हूँ। बाबासाहब आम्बेडकरसे मेरी बहोत बातें हुअी हैं। यहाँसे मैं थोड़ी ही सेवा कर सकता हूँ। मेरी सलाह है कि आप लोग आपके दुःखकी कथा जो नया मंडल स्थापित हुआ है अुसे लिखें। मुझको तो अवश्य लिखा करें।

"आप लोग हिन्दू हैं, यह किसी पर अुपकार करनेके लिअे नहीं है। अिसलिअे मैं कैसे कहूँ कि आप दुःखके मारे धर्म छोड़ें? धर्मकी परीक्षा ही दुःखमें होती है। हाँ, मैं आप भाअियोंको अितना आश्वासन दे सकता हूँ कि मैंने अिस दुःखके निवारणके कारण प्राणार्पण किया है। और यदि अितर हिन्दू आप लोगोंसे न्यायपूर्वक व्यवहार नहीं करेंगे, तो प्रायश्चित्त रूपमें मैं मुलतवी रखा हुआ अनशनका आरंभ कर दूँगा। अैसा करनेकी शक्ति अीश्वर मुझे देवे।

हरिजनोंका सेवक

मोहनदास गांधी"

काठियावाड़में होनेवाली अस्पृश्यता निवारणकी कठिनाअियोंके बारेमें शंभुशंकरका पत्र आया। अुसे अुत्तर:

"जहाँ लोकमत विरुद्ध हो, वहाँ जबरन् हरिजनोंको दवाखानों या मन्दिरोंमें ले जानेका आग्रह नहीं रखना चाहिये। लेकिन जो अुनकी सेवा करना चाहते हों, अुन्हें अुनके लिअे अुन्हींके मुहल्लोंमें या अुनके पासमें वैसी सहूलियत पैदा कर देनी चाहिये और वहाँ हरिजनोंके सिवाय दूसरोंको आना हो, तो अुन्हें आनेका न्यौता देना चाहिये। अिस बीच लोगोंको विनयपूर्वक समझाया जाय। लोगोंपर रोष करनेसे या अुनकी ज़हरीली आलोचना करनेसे काम नहीं सुधरेगा। पूरे प्रेमसे लोगोंका

हैं। अस्पृश्यता निवारणका अर्थ जिसको अस्पृश्य मानते हैं अुसके साथ व्यवहार करना, जैसे अितर हिन्दुओंके साथ किया जाता है। दोनोंको साथ मिलानेसे दोनों कार्य बिगड़नेका डर है। फलतः रोटी-बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारणका अनिवार्य अंग नहीं है। किन्तु हरिजनोंके साथ रोटी-बेटी व्यवहार अधर्म्य भी नहीं है।"

वाल्वा (जि० सतारा) के हरिजनोंकी सुन्दर अक्षरोंमें बड़े और चौड़े कागज़ोंपर लिखी हुअी अर्जी आअी कि "हमें स्पृश्य हिन्दुओंकी तरफ़से बड़ा कष्ट है। हमारे झोंपड़े हर साल पानीसे नष्ट हो जाते हैं। मगर स्पृश्योंके विरोधके कारण हमें अूँची जगह पर झोंपड़ियाँ बनानेकी अिज़ाजत नहीं मिल सकती। हम दूसरे धर्ममें क्यों न प्रवेश करें? लेकिन आपने अब बाबासाहब आम्बेडकरसे सुलह कर ली है, अिसलिअे हम अिस अितज़ारमें बैठे हैं कि आप अब क्या करते हैं।"

अुन्हें लिखा (हिन्दीमें) :

"आप भाअियोंका सुन्दर अक्षरोंमें और सुन्दर भाषामें लिखा हुआ खत मुझे मिला है। आप लोगोंका दुःख मैं समझ सकता हूँ। बाबासाहब आम्बेडकरसे मेरी बहोत बातें हुअी हैं। यहाँसे मैं थोड़ी ही सेवा कर सकता हूँ। मेरी सलाह है कि आप लोग आपके दुःखकी कथा जो नया मंडल स्थापित हुआ है अुसे लिखें। मुझको तो अवश्य लिखा करें।

"आप लोग हिन्दू हैं, यह किसी पर अुपकार करनेके लिअे नहीं है। अिसलिअे मैं कैसे कहूँ कि आप दुःखके मारे धर्म छोड़ें? धर्मकी परीक्षा ही दुःखमें होती है। हाँ, मैं आप भाअियोंको अितना आश्वासन दे सकता हूँ कि मैंने अिस दुःखके निवारणके कारण प्राणार्पण किया है। और यदि अितर हिन्दू आप लोगोंसे न्यायपूर्वक व्यवहार नहीं करेंगे, तो प्रायश्चित्त रूपमें मैं मुलतवी रखा हुआ अनशनका आरंभ कर दूँगा। अैसा करनेकी शक्ति अीश्वर मुझे देवे।

हरिजनोंका सेवक
मोहनदास गांधी"

काठियावाड़में होनेवाली अस्पृश्यता निवारणकी कठिनाअियोंके बारेमें शंभुशंकरका पत्र आया। अुसे अुत्तर :

"जहाँ लोकमत विरुद्ध हो, वहाँ जबरन् हरिजनोंको दवाखानों या मन्दिरोंमें ले जानेका आग्रह नहीं रखना चाहिये। लेकिन जो अुनकी सेवा करना चाहते हों, अुन्हें अुनके लिअे अुन्हींके मुहल्लोंमें या अुनके पासमें वैसी सहूलियत पैदा कर देनी चाहिये और वहाँ हरिजनोंके सिवाय दूसरोंको आना हो, तो अुन्हें आनेका न्यौता देना चाहिये। अिस बीच लोगोंको विनयपूर्वक समझाया जाय। लोगोंपर रोष करनेसे या अुनकी ज़हरीली आलोचना करनेसे काम नहीं सुधरेगा। पूरे प्रेमसे लोगोंका

हैं, वे फेंक देने लायक़ नहीं हैं। अुन्हींका प्रचार क्यों न किया जाय? अप
मीठी वाणीका ही प्रचार करनेके लिअे तो तुम अैसी पुस्तकें लिखोगे नहीं। अ
अैसा करो भी तो अितने ही से अुस वाणीका प्रचार नहीं होगा।

"अिस कृतिमें मैं अेक तरहका आलस पाता हूँ। जो बहुत पढ़ता
और बहुत लिखता है, वह अुद्यमी ही है सो तो तुम हरगिज़ नहीं कहोगे
तुम्हारे बारेमें मैं यह मानता हूँ कि तुम्हें बहुत पढ़ने और अनुवाद करनेका रो
है। यह छूटना चाहिये। मैं तुमसे यह माँगता हूँ। भले ही 'अीसाचरित्र
दो। नया क़रार जितनी बार पढ़ना हो पढ़ो। फिर सब पुस्तकें आलमारी
रख दो और पढ़े हुअे में से अीसाका जीवन तैयार करो।

"यह पुस्तक छपवा ली, अिसलिअे जनताको देनी ही चाहिये, अैस
न्याय न करना। अगर मेरा लिखना ठीक मालूम हो, तो छापी हुअी चीज़
कर देना। भले ही अितना रुपया चला जाय। और नया, जैसा मैं कहता हूँ
वैसा मौलिक लिखना शुरू करना। अगर यह मेहनत ज्यादा मालूम हो, त
शान्त रहना। पढ़ना छोड़कर किसी न किसी शारीरिक प्रवृत्तिमें लग कर शरीरक
सुधारना। पढ़नेकी बीमारीवाले मैंने यहाँ और दूसरी जगह बहुत देखे हैं। य
रोग तुम्हें भी सताये हुअे है। अिस रोगसे मुक्त होनेके लिअे भ्रमण करो
अीश्वरकी लीला देखो, कुदरतकी किताब पढ़ो, पेड़ोंकी भाषा समझो, आकाश
होनेवाला गान सुनो, और वहाँ रोज़ रातको होनेवाला नाटक देखो। दिन
कातो, थकावट लगे तब सीओ, बढ़अीका काम हो सके तो करो, और मोचीक
काम करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हाथोंमें पीड़ा होती है। वह अभ्यास
मिट जायगी।

"अंग्रेज़ीमें सुन्दर लिखे हुअे अीसाके चरित्र बहुत हैं। अुनमेंसे भी कुछ
न कुछ चुना जा सकता है। मगर यह बोझ मैं तुम पर नहीं लादूँगा।

"अुपरोक्त पुस्तकमें देवदूत वग़ैराके आगमनका भाग अनुचित है। अैस
तो हमारे यहाँ बहुत कुछ है। अुसमें वृद्धि क्या की जाय? देवदूत और शान
न आये हों, तो भी अीसाके नामको हानि पहुँचेगी, सो बात नहीं। मेर
शिकायत है कि तुमने पढ़नेवालेके सामने अीसाकी तस्वीर खड़ी नहीं की
तुमने 'अीसा-नीति' दे दी है, और वह भी अवतरण चिन्होंमें। तुम अपनी ह
भाषामें दो, तो कौन अविश्वास करनेवाला है?

"मैं नहीं जानता, तुमने यह पुस्तक किसे ध्यानमें रखकर लिखी है
अगर जन समाजको ध्यानमें रखकर लिखी हो, तो अुस पर विदेशी नामोंक
बोझ नहीं डाला जा सकता। बाअिबलके नामोंको तुमने अपने कपड़े पहनाये हैं,

हैं, वे फेंक देने लायक़ नहीं हैं। अुन्हींका प्रचार क्यों न किया जाय? अपनी मीठी वाणीका ही प्रचार करनेके लिअे तो तुम अैसी पुस्तकें लिखोगे नहीं। और अैसा करो भी तो अितने ही से अुस वाणीका प्रचार नहीं होगा।

"अिस कृतिमें मैं अेक तरहका आलस पाता हूँ। जो बहुत पढ़ता है और बहुत लिखता है, वह अुद्यमी ही है सो तो तुम हरगिज़ नहीं कहोगे। तुम्हारे बारेमें मैं यह मानता हूँ कि तुम्हें बहुत पढ़ने और अनुवाद करनेका रोग है। यह छूटना चाहिये। मैं तुमसे यह माँगता हूँ। भले ही 'औसाचरित्र' दो। नया क़रार जितनी बार पढ़ना हो पढ़ो। फिर सब पुस्तकें आलमारीमें रख दो और पढ़े हुअे में से औसाका जीवन तैयार करो।

"यह पुस्तक छपवा ली, अिसलिअे जनताको देनी ही चाहिये, अैसा न्याय न करना। अगर मेरा लिखना ठीक मालूम हो, तो छापी हुअी चीज़ रद्द कर देना। भले ही अितना रुपया चला जाय। और नया, जैसा मैं कहता हूँ, वैसा मौलिक लिखना शुरू करना। अगर यह मेहनत ज्यादा मालूम हो, तो शान्त रहना। पढ़ना छोड़कर किसी न किसी शारीरिक प्रवृत्तिमें लग कर शरीरको सुधारना। पढ़नेकी बीमारीवाले मैंने यहाँ और दूसरी जगह बहुत देखे हैं। यह रोग तुम्हें भी सताये हुअे है। अिस रोगसे मुक्त होनेके लिअे भ्रमण करो, औश्वरकी लीला देखो, कुदरतकी किताब पढ़ो, पेड़ोंकी भाषा समझो, आकाशमें होनेवाला गान सुनो, और वहाँ रोज़ रातको होनेवाला नाटक देखो। दिनमें कातो, थकावट लगे तब सीओ, बढ़अीका काम हो सके तो करो, और मोचीका काम करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हाथोंमें पीड़ा होती है। वह अभ्याससे मिट जायगी।

"अंग्रेज़ीमें सुन्दर लिखे हुअे औसाके चरित्र बहुत हैं। अुनमेंसे भी कुछ न कुछ चुना जा सकता है। मगर यह बोझ मैं तुम पर नहीं लादूँगा।

"अुपरोक्त पुस्तकमें देवदूत वग़ैराके आगमनका भाग अनुचित है। अैसा तो हमारे यहाँ बहुत कुछ है। अुसमें वृद्धि क्या की जाय? देवदूत और ज्ञानी न आये हों, तो भी औसाके नामको हानि पहुँचेगी, सो बात नहीं। मेरी शिकायत है कि तुमने पढ़नेवालेके सामने औसाकी तस्वीर खड़ी नहीं की। तुमने 'औसा-नीति' दे दी है, और वह भी अवतरण चिन्होंमें। तुम अपनी ही भाषामें दो, तो कौन अविश्वास करनेवाला है?

"मैं नहीं जानता, तुमने यह पुस्तक किसे ध्यानमें रखकर लिखी है। अगर जन समाजको ध्यानमें रखकर लिखी हो, तो अुस पर विदेशी नामोंका बोझ नहीं डाला जा सकता। बाअिबल्के नामोंको तुमने अपने कपड़े पहनाये हैं,

वे अधिकसे अधिक सेवा करते हैं। सम्पूर्ण पवित्रता प्राप्त करनेके लिअे ही हम सेवा करते हैं। पवित्र हृदयवालोंके विचार वह काम कर सकते हैं, जो अपवित्र हृदयवालोंके शरीर कभी नहीं कर सकते। अिसलिअे तुझे किसी भी तरह निराश होनेका ज़रा भी कारण नहीं है। विचार किस तरह काम करते हैं, अिसकी बारीकीमें पड़नेकी कोशिश न करना। वे काम कर सकते हैं और बड़े परिणाम पैदा करते हैं, यह मान लेना तेरे लिअे काफ़ी है। अिसलिअे हृदयकी पवित्रता हमेशा रखनेका प्रयत्न करते हुअे, तेरा शरीर अच्छा हो या न हो फिर भी, तुझे पूरी शान्ति रखनी चाहिये। अितना तू करेगा?"

अिसी तरहका बापूके अन्तर्जीवन पर खूब प्रकाश डालनेवाला अेण्ड्रूज़के नामका पत्र देखिये:

"प्यारे चार्ली,

"अीश्वरकी कृपा अद्भुत है। अिन दिनों में अुसकी अुपस्थितिकी तेज रोशनीमें मौज कर रहा था। मैंने अेक क़दम भी अपनी अिच्छासे नहीं अुठाया। प्रार्थनाका अितना निश्चित और तुरन्त जवाब मिलनेका मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ।

"तुम वहीं रहे, यह अच्छा किया। मैं जानता हूँ तुमको वहाँ रहना कितना बुरा लगा होगा। फिर भी तुम्हारे तारके जवाबका निर्णय करनेमें मुझे अेक क्षण भी देर नहीं लगी थी। अिस निर्णयके सही होनेके बारेमें वल्लभभाअी और महादेवको भी कोअी शंका नहीं थी। अिन भयंकर दिनोंमें भविष्यको बनानेवाले जो निर्णय किये गये हैं, अुनके सही होने की बात वे सहजमें ही समझ गये, यह कितनी अद्भुत चीज़ है! मगर काम तो अभी शुरू हुआ है। मेरे लिअे यह जीवन मरणका संग्राम है। या तो अस्पृश्यता मरेगी या मैं मरूँगा। बहुत बड़ा काम है। मेरी सभाओंमें जो लाखों लोग आते थे, मुझे अुनके प्रेमकी परीक्षा करनी है। खुद अीश्वरके साथ मुझे कुश्ती लड़नी है। मगर वह नरम और सख्त दोनों है। अुसे या तो संपूर्ण आत्मसमर्पण चाहिये या कुछ नहीं चाहिये। मेरे पिछले अुपवास शायद अभी जो होना बाकी है, अुसकी भूमिका ही हों। लेकिन ये मनसूबे मैं नहीं बाँधूँगा। अुसीका सोचा हुआ हो, मेरा नहीं। मुझे तो अगर बलिदान करनेका मौका आये, तो अुसके लायक़ बननेका प्रयत्न करना है।

"तुमको अभी वहीं रहना है। तुम वहाँ जिस अस्पृश्यताकी बात कहते हो, वह ज्यादा सूक्ष्म है और वह प्रतिष्ठाका अंचल ओढ़कर फिरती है। अिस

वे अधिकसे अधिक सेवा करते हैं। सम्पूर्ण पवित्रता प्राप्त करनेके लिअे ही हम सेवा करते हैं। पवित्र हृदयवालोंके विचार वह काम कर सकते हैं, जो अपवित्र हृदयवालोंके शरीर कभी नहीं कर सकते। अिसलिअे तुझे किसी भी तरह निराश होनेका ज़रा भी कारण नहीं है। विचार किस तरह काम करते हैं, अिसकी बारीकीमें पड़नेकी कोशिश न करना। वे काम कर सकते हैं और बड़े परिणाम पैदा करते हैं, यह मान लेना तेरे लिअे काफ़ी है। अिसलिअे हृदयकी पवित्रता हमेशा रखनेका प्रयत्न करते हुअे, तेरा शरीर अच्छा हो या न हो फिर भी, तुझे पूरी शान्ति रखनी चाहिये। अितना तू करेगा?"

अिसी तरहका बापूके अन्तर्जीवन पर खूब प्रकाश डालनेवाला अेण्ड्रूज़के नामका पत्र देखिये:

"प्यारे चार्ली,

"अीश्वरकी कृपा अद्‌भुत है। अिन दिनों मैं अुसकी अुपस्थितिकी तेज रोशनीमें मौज कर रहा था। मैंने अेक क़दम भी अपनी अिच्छासे नहीं अुठाया। प्रार्थनाका अितना निश्चित और तुरन्त जवाब मिलनेका मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ।

"तुम वहीं रहे, यह अच्छा किया। मैं जानता हूँ तुमको वहाँ रहना कितना बुरा लगा होगा। फिर भी तुम्हारे तारके जवाबका निर्णय करनेमें मुझे अेक क्षण भी देर नहीं लगी थी। अिस निर्णयके सही होनेके बारेमें वल्लभभाअी और महादेवको भी कोअी शंका नहीं थी। अिन भयंकर दिनोंमें भविष्यको बनानेवाले जो निर्णय किये गये हैं, अुनके सही होने की बात वे सहजमें ही समझ गये, यह कितनी अद्‌भुत चीज़ है! मगर काम तो अभी शुरू हुआ है। मेरे लिअे यह जीवन मरणका संग्राम है। या तो अस्पृश्यता मरेगी या मैं मरूँगा। बहुत बड़ा काम है। मेरी सभाओंमें जो लाखों लोग आते थे, मुझे अुनके प्रेमकी परीक्षा करनी है। खुद अीश्वरके साथ मुझे कुश्ती लड़नी है। मगर वह नरम और सख्त दोनों है। अुसे या तो संपूर्ण आत्मसमर्पण चाहिये या कुछ नहीं चाहिये। मेरे पिछले अुपवास शायद अभी जो होना बाकी है, अुसकी भूमिका ही हों। लेकिन ये मनसूबे मैं नहीं बाँधूँगा। अुसीका सोचा हुआ हो, मेरा नहीं। मुझे तो अगर बलिदान करनेका मौका आये, तो अुसके लायक़ बननेका प्रयत्न करना है।

"तुमको अभी वहीं रहना है। तुम वहाँ जिस अस्पृश्यताकी बात कहते हो, वह ज्यादा सूक्ष्म है और वह प्रतिष्ठाका अंचल ओढ़कर फिरती है। अिस

बारेमें पढ़ा और आपके अुपदेशपर नम्रतापूर्वक अमल करनेका प्रयत्न किया। मैं अच्छी और स्वच्छ बनना चाहती थी। बापूजी, अब मैं स्वच्छ हूँ, शायद बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। मैं जवान हूँ और 'भीतर बैठे हुअे बन्दर और शेर' से मुझे अभी लड़ना है।"

अुसे सुन्दर पत्र:

"प्रिय डोरोथी,

"तुम्हारे प्रेमपत्रको मैं मूल्यवान समझता हूँ। तुम्हारे सवालके जवाबमें म्यूरियलने तुम्हें 'प्रार्थना करने'को कहा, सो सही है। हृदयकी सच्ची प्रार्थनासे हमें सच्चे कर्तव्यका पता चलता है। आखिरमें तो कर्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है। तुम्हारा यह सादा वाक्य कि 'अब मैं स्वच्छ हूँ' मुझे पसन्द आया। अीश्वर तुम्हें स्वच्छ रखे। पीछे मुड़कर भूतकालकी तरफ़ न देखो। अुससे जो पाठ मिलना था, तुम्हें मिल चुका। भविष्यकी तरफ आशा और विश्वासके साथ देखती रहो।"

अब यह अेक वैद्यको लिखा हुआ पत्र देखिये। अुसने गरम पानीके साथ शहद लेना कृश प्रकृतिके लिअे हानिकारक बतानेवाले श्लोक सुश्रुतसे देकर बापूसे प्रार्थना की थी कि आप शहद ठंडे पानीके साथ लीजिये। अिसे विस्तारपूर्वक लिखा (हिन्दीमें):

"अुष्णोदक मध न पीना चाहिये, अैसा वैद्य मित्रोंने तीन-चार वर्ष पूर्व मुझे लिखा था। पश्चिमकी अुपाधिवाले दाक्तर मित्रोंने अिस बारेमें कुछ विरोध नहीं किया है। अुनकी सम्मतिका मुझपर प्रभाव नहीं पड़ सकता है, क्योंकि खाद्यपदार्थोंके असरका अुन्होंने सूक्ष्म अभ्यास नहीं किया है। अुनके यहाँ पथ्यापथ्यका बहुत भेद नहीं है, परन्तु मैं निजी अनुभवकी बात लिखता हूँ। मुझको अुष्णोदकमें मध लेनेसे कुछ हानि नहीं हुअी, किन्तु लाभ हुआ है। अेक दाक्तरके कहनेसे मैंने मधका आरंभ किया। अुनके कहनेका कारण यह था, मेरे शरीरमें कार्बोहाअिड्रेट् कम है अिसलिअे शर्कराकी आवश्यकता थी। सबसे अच्छी शर्करा अुनकी दृष्टिसे मधकी थी। तबसे मैं मध लेता आया हूँ। अुष्णोदकमें लेनेका अुन्होंने प्रतिबंध नहीं किया।

"हमारे वैद्योंके खिलाफ मेरी फरियाद यह है कि वे प्राचीन पुस्तकोंको संपूर्ण समझकर अुनमें जो लिखा है, वह अनुभवसे विरुद्ध हो, तो भी मानते रहते हैं। मेरा अभिप्राय है कि वैद्यकीय शास्त्र बहुत अपूर्ण है। अुसमें अनुभवसे सुधारणा करनी चाहिये। अुष्णोदकमें मध डालनेसे क्या विकृति होती है? मधका आपने पृथक्करण किया है? स्थूलता कृशता सापेक्ष गुणदर्शक शब्द हैं। किस

बारेमें पढ़ा और आपके अुपदेशपर नम्रतापूर्वक अमल करनेका प्रयत्न किया। मैं अच्छी और स्वच्छ बनना चाहती थी। बापूजी, अब मैं स्वच्छ हूँ, शायद बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। मैं जवान हूँ और 'भीतर बैठे हुअे बन्दर और शेर' से मुझे अभी लड़ना है।"

अुसे सुन्दर पत्र :

"प्रिय डोरोथी,

"तुम्हारे प्रेमपत्रको मैं मूल्यवान समझता हूँ। तुम्हारे सवालके जवाबमें म्यूरियलने तुम्हें 'प्रार्थना करने'को कहा, सो सही है। हृदयकी सच्ची प्रार्थनासे हमें सच्चे कर्तव्यका पता चलता है। आखिरमें तो कर्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है। तुम्हारा यह सादा वाक्य कि 'अब मैं स्वच्छ हूँ' मुझे पसन्द आया। अीश्वर तुम्हें स्वच्छ रखे। पीछे मुड़कर भूतकालकी तरफ़ न देखो। अुससे जो पाठ मिलना था, तुम्हें मिल चुका। भविष्यकी तरफ आशा और विश्वासके साथ देखती रहो।"

अब यह अेक वैद्यको लिखा हुआ पत्र देखिये। अुसने गरम पानीके साथ शहद लेना कृश प्रकृतिके लिअे हानिकारक बतानेवाले श्लोक सुश्रुतसे देकर बापूसे प्रार्थना की थी कि आप शहद ठंढे पानीके साथ लीजिये। अिसे विस्तारपूर्वक लिखा (हिन्दीमें):

"अुष्णोदक मध न पीना चाहिये, अैसा वैद्य मित्रोंने तीन-चार वर्ष पूर्व मुझे लिखा था। पश्चिमकी अुपाधिवाले दाक्तर मित्रोंने अिस बारेमें कुछ विरोध नहीं किया है। अुनकी सम्मतिका मुझपर प्रभाव नहीं पड़ सकता है, क्योंकि खाद्यपदार्थोंके असरका अुन्होंने सूक्ष्म अभ्यास नहीं किया है। अुनके यहाँ पथ्यापथ्यका बहुत भेद नहीं है, परन्तु मैं निजी अनुभवकी बात लिखता हूँ। मुझको अुष्णोदकमें मध लेनेसे कुछ हानि नहीं हुअी, किन्तु लाभ हुआ है। अेक दाक्तरके कहनेसे मैंने मधका आरंभ किया। अुनके कहनेका कारण यह था, मेरे शरीरमें कार्बोहाअिड्रेट् कम है अिसलिअे शर्कराकी आवश्यकता थी। सबसे अच्छी शर्करा अुनकी दृष्टिसे मधकी थी। तबसे मैं मध लेता आया हूँ। अुष्णोदकमें लेनेका अुन्होंने प्रतिबंध नहीं किया।

"हमारे वैद्योंके खिलाफ मेरी फरियाद यह है कि वे प्राचीन पुस्तकोंको संपूर्ण समझकर अुनमें जो लिखा है, वह अनुभवसे विरुद्ध हो, तो भी मानते रहते हैं। मेरा अभिप्राय है कि वैद्यकीय शास्त्र बहुत अपूर्ण है। अुसमें अनुभवसे सुधारणा करनी चाहिये। अुष्णोदकमें मध डालनेसे क्या विकृति होती है? मधका आपने पृथक्करण किया है? स्थूलता कृशता सापेक्ष गुणदर्शक शब्द हैं। किस

बापूसे मैंने पूछा : "अब वल्लभभाअीके डरको कुछ अधिक कारण मिलता है या नहीं ?"

बापू : "नहीं, मुझे तो पहलेसे ही शक है कि शौकतअली यह सब किसलिअे कर रहा है ? लेकिन अिस बयानसे मेरे शककी ज्यादा पुष्टि नहीं होती। अुलटे, राजेन्द्रबाबूका बयान यह बताता है कि सब मिलकर कुछ कर रहे हैं। मगर मेरी मुश्किल तो यह है कि सब कुछ हो जायगा, मगर सिक्ख ही मंजूर नहीं करेंगे। अिसलिअे यह सब सिक्खोंसे ही टूट जानेवाला है।"

कविका कार्ल हीथको भेजा हुआ अद्भुत वक्तव्य 'लिबर्टी'में छपा है। अिसमें पूरा परिवर्तन दिखाअी देता है। कोअी कांग्रेसी अिससे अच्छा बयान नहीं दे सकता। जेलमें कवि आये और अुपवासके दूसरे दिन जो मसौदा बापूने तैयार किया था, वह कविके लिअे कृत्रिम होता। यह बयान अुससे कहीं अधिक अच्छा है। बापूने कहा : "कोअी मानेगा नहीं कि यह कविका बयान है। मगर अब तो हम अुनकी वृत्ति जान गये हैं। अुनके साथके आदमी अच्छे प्रचारक मालूम नहीं होते; नहीं तो यह केवल 'लिबर्टी'में ही क्यों छपता ?"

मुहम्मद आलमकी स्त्रीका असाधारण वीरता बतानेवाला बयान प्रकाशित हुआ। बापू बोले : "अिसके पीछे मुहम्मद आलमका हाथ है। तो भी अिस पर दस्तखत करना भी असाधारण बात है। शायद ही कोअी स्त्री यह कहेगी कि मुझे छूटकर घर आनेवाले अपने अधमरे पतिका मुँह नहीं देखना है। अिससे तो अिज्ज़तके साथ जेलमें मरे हुअे पतिको देखकर मैं ज़्यादा खुश होअूँगी। देखो तो, ...ने अेक बच्चा बीमार पड़ा है, अिस कारण पतिको छुड़वानेके लिअे अर्ज़ी दी है। अुधर अिस स्त्रीकी वीरता देखो।"

प्यारेलालने बम्बअीके रूअीके व्यापारियोंका झगड़ा निपटानेमें महत्वका भाग लिया। अुसका बयान सुन्दर था। अुसके प्रयत्नका अुल्लेख 'टाअिम्स'को भी करना पड़ा, यह अच्छी बात है। बापू बहुत खुश हुअे।

२१-१०-'३२

लाला दुनीचंदने लिखा था कि अब आप भविष्यमें अैसा क़दम अुठायें, तब देशको सारी बातें बताकर अुठाअियेगा। देशके अनुशासनमें आपको भी रहना चाहिये। अुन्हें लिखा : "सही बात है। और सबकी तरह मैं भी अनुशासनके अधीन ही हूँ। मगर जब अीश्वर अपना अनुशासन लाद दे, तब मनुष्यके अनुशासनकी क्या चले ?"

बापूसे मैंने पूछा : "अब वल्लभभाओीके डरको कुछ अधिक कारण मिलता है या नहीं ?"

बापू : "नहीं, मुझे तो पहलेसे ही शक है कि शौकतअली यह सब किसलिअे कर रहा है ? लेकिन अिस बयानसे मेरे शककी ज्यादा पुष्टि नहीं होती। अुल्टे, राजेन्द्रबाबूका बयान यह बताता है कि सब मिलकर कुछ कर रहे हैं। मगर मेरी मुश्किल तो यह है कि सब कुछ हो जायगा, मगर सिक्ख ही मंजूर नहीं करेंगे। अिसलिअे यह सब सिक्खोंसे ही टूट जानेवाला है।"

कविका कार्ल हीथको भेजा हुआ अद्‌भुत वक्तव्य 'लिबर्टी'में छपा है। अिसमें पूरा परिवर्तन दिखाओी देता है। कोओी कांग्रेसी अिससे अच्छा बयान नहीं दे सकता। जेलमें कवि आये और अुपवासके दूसरे दिन जो मसौदा बापूने तैयार किया था, वह कविके लिअे कृत्रिम होता। यह बयान अुससे कहीं अधिक अच्छा है। बापूने कहा : "कोओी मानेगा नहीं कि यह कविका बयान है। मगर अब तो हम अुनकी वृत्ति जान गये हैं। अुनके साथके आदमी अच्छे प्रचारक मालूम नहीं होते, नहीं तो यह केवल 'लिबर्टी'में ही क्यों छपता ?"

मुहम्मद आलमकी स्त्रीका असाधारण वीरता बतानेवाला बयान प्रकाशित हुआ। बापू बोले : "अिसके पीछे मुहम्मद आलमका हाथ है। तो भी अिस पर दस्तखत करना भी असाधारण बात है। शायद ही कोओी स्त्री यह कहेगी कि मुझे छूटकर घर आनेवाले अपने अधमरे पतिका मुँह नहीं देखना है। अिससे तो अिज्ज़तके साथ जेलमें मरे हुअे पतिको देखकर मैं ज्यादा खुश होअूँगी। देखो तो, ... ने अेक बच्चा बीमार पड़ा है, अिस कारण पतिको छुड़वानेके लिअे अर्ज़ी दी है। अुधर अिस स्त्रीकी वीरता देखो।"

प्यारेलालने बम्बअीके रूअीके व्यापारियोंका झगड़ा निपटानेमें महत्वका भाग लिया। अुसका बयान सुन्दर था। अुसके प्रयत्नका अुल्लेख 'टाअिम्स'को भी करना पड़ा, यह अच्छी बात है। बापू बहुत खुश हुअे।

२१-१०-'३२

लाला दुनीचंदने लिखा था कि अब आप भविष्यमें अैसा क़दम अुठायें, तब देशको सारी बातें बताकर अुठाअियेगा। देशके अनुशासनमें आपको भी रहना चाहिये। अुन्हें लिखा :

"सही बात है। और सबकी तरह मैं भी अनुशासनके अधीन ही हूँ। मगर जब अीश्वर अपना अनुशासन लाद दे, तब मनुष्यके अनुशासनकी क्या चले ?"

अिसे बेचनेकी जल्दी हो, तो आपके खातेमें डालकर बेची हुअी दिखा देते। मगर यह असभ्यता ही दिखानी हो तब क्या?"

बापू: "नहीं, असभ्यता दिखानेका हेतु तो हरगिज़ नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्टको पता भी न होगा कि ये ले गये।"

वल्लभभाअी: "अुसे सब पता होगा। अुसे पूछे बिना कौन ले जा सकता है?"

बापू: "नहीं वल्लभभाअी, अिसमें दुःख माननेका कोअी कारण नहीं। तुमने छठा अध्याय सीखा या नहीं? — 'मन अेव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयोः।' और आत्मा ही आत्माका बन्धु है।"

वल्लभभाअी: "है तो। मगर आत्मा आत्माका शत्रु भी तो है न!"

बापू: (खिलखिलाकर हँसते हुअे) "अरे, तुमको तो मालूम है। तुम अितना मानते हो सो काफ़ी है। मगर यह श्लोक मालूम कैसे हुआ? छठा अध्याय तो तुमने अभी सीखा ही नहीं।"

मैं: "कल ही शुरू किया है और यह श्लोक आखिरी ही सीखा है।"

बापूके अेक-अेक शब्द और अेक-अेक अक्षरको सब आँखें मल मलकर पढ़ते हैं, अुसका विश्लेषण करते हैं और समझना चाहते हैं।

२२–१०–'३२ अिसका अुदाहरण:

करीमनगरकी मिस मेरी बार पूछती हैं: "आप अपनी अपीलमें दक्षिण भारतके हिन्दुओंको लिखते हैं कि 'और फिर अिन मूर्तियोंमें अीश्वरका सच्चा अधिष्ठान होगा।' और फिर भी आप मूर्तिपूजाको तो मानते नहीं। तब यह वाक्य क्यों लिखा है?"

अुसे बापूने लिखा:

"यह सच है कि आम तौर पर जो समझा जाता है, अुस अर्थमें मैं मूर्तिपूजाको नहीं मानता। मगर यह भी नहीं कि दूसरे मूर्तिके द्वारा अीश्वरकी पूजा करें अुसे भी मैं नहीं मानता। अेक अर्थमें तो हम सब मूर्तिपूजक हैं। हम अपनी मूर्तिके अीश्वरको पूजते हैं। यह मूर्ति स्थूल रूपकी ही होनी चाहिये, सो बात नहीं। अीश्वरके गुण और अीश्वरकी कल्पना हरअेक मनुष्यकी अलग-अलग होती है। अितने पर भी वास्तवमें अीश्वर निर्गुण है और कल्पनातीत है। अिस प्रकार जब हम अपना अीश्वर सम्बन्धी चित्र बनाते हैं, तब हम मूर्तिपूजक बन जाते हैं। अिसलिअे जो पत्थर या धातुकी मूर्तिमें अीश्वरका निवास मानते हैं, मेरा मन अुनकी निन्दा नहीं करता। वे ग़लत नहीं हैं, क्योंकि अीश्वर सब जगह और सब चीज़ोंमें है। किसी चीज़को हम अीश्वरके

अिसे वेचनेकी जल्दी हो, तो आपके खातेमें डालकर वेची हुअी दिखा देते। मगर यह असभ्यता ही दिखानी हो तब क्या?"

बापू: "नहीं, असभ्यता दिखानेका हेतु तो हरगिज़ नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्टको पता भी न होगा कि ये ले गये।"

वल्लभभाअी: "अुसे सब पता होगा। अुसे पूछे बिना कौन ले जा सकता है?"

बापू: "नहीं वल्लभभाअी, अिसमें दुःख माननेका कोअी कारण नहीं। तुमने छठा अध्याय सीखा या नहीं? — 'मन अेव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः।' और आत्मा ही आत्माका बन्धु है।"

वल्लभभाअी: "है तो। मगर आत्मा आत्माका शत्रु भी तो है न!"

बापू: (खिलखिलाकर हँसते हुअे) "अरे, तुमको तो मालूम है। तुम अितना मानते हो सो काफ़ी है। मगर यह श्लोक मालूम कैसे हुआ? छठा अध्याय तो तुमने अभी सीखा ही नहीं।"

मैं: "कल ही शुरू किया है और यह श्लोक आखिरी ही सीखा है।"

•

बापूके अेक-अेक शब्द और अेक-अेक अक्षरको सब आँखें मल मलकर पढ़ते हैं, अुसका विश्लेषण करते हैं और समझना चाहते हैं।

२२–१०–'३२ अिसका अुदाहरण:

करीमनगरकी मिस मेरी बार पूछती हैं: "आप अपनी अपीलमें दक्षिण भारतके हिन्दुओंको लिखते हैं कि 'और फिर अिन मूर्तियोंमें अीश्वरका सच्चा अधिष्ठान होगा।' और फिर भी आप मूर्तिपूजाको तो मानते नहीं। तब यह वाक्य क्यों लिखा है?"

अुसे बापूने लिखा:

"यह सच है कि आम तौर पर जो समझा जाता है, अुस अर्थमें मैं मूर्तिपूजाको नहीं मानता। मगर यह भी नहीं कि दूसरे मूर्तिके द्वारा अीश्वरकी पूजा करें अुसे भी मैं नहीं मानता। अेक अर्थमें तो हम सब मूर्तिपूजक हैं। हम अपनी मूर्तिके अीश्वरको पूजते हैं। यह मूर्ति स्थूल रूपकी ही होनी चाहिये, सो बात नहीं। अीश्वरके गुण और अीश्वरकी कल्पना हरअेक मनुष्यकी अलग-अलग होती है। अितने पर भी वास्तवमें अीश्वर निर्गुण है और कल्पनातीत है। अिस प्रकार जब हम अपना अीश्वर सम्बन्धी चित्र बनाते हैं, तब हम मूर्तिपूजक बन जाते हैं। अिसलिअे जो पत्थर या धातुकी मूर्तिमें अीश्वरका निवास मानते हैं, मेरा मन अुनकी निन्दा नहीं करता। वे गलत नहीं हैं, क्योंकि अीश्वर सब जगह और सब चीज़ोंमें है। किसी चीज़को हम अीश्वरके

फिर पहलेके सुपरिण्टेण्डेण्टों और आओी० जी० पी० लोगोंकी बात चली।

भंडारी बोले: "कर्नल मरेको सच्ची किफ़ायत करना आता था।"

बापू: "हाँ, अुसने तो सही वक्त पर सही निर्णय करके मेरी जान बचा ली। जेलके प्रबंधकी बारीकसे बारीक बातें वह जानता था और अपने काममें होशियार था। अेक-अेक क़ैदीको पहचानता था। अिसलिअे जहाँ सब अुससे डरते थे, वहाँ अुसके प्रति आदर भी रखते थे। वह जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहाँ अुसने अपने बारेमें बहुत अच्छी राय प्राप्त की है।"

सुपरिण्टेण्डेण्टने अपने अनुभव बताये: "मैंने अुसके हाथके नीचे काम किया है और अुसके कड़े अनुशासनसे मुझे बड़ा लाभ हुआ है। अपने कार्यकालके शुरूमें बल चढ़े सूतकी गाँठके मैं पचास रुपये ज्यादा देता था। अिसके लिअे अुसने मेरी धूल झाड़ी थी। तबसे मैं सावधान रहना सीख गया हूँ। वह अकसर सख्त पत्र लिखता था। फिर भी अुसके प्रति हमेशा मेरा आदर-भाव रहा है।"

फिर दूसरे सुपरिण्टेण्डेण्ट डील्की बात चली। वह जहाँ-जहाँ गया, वहीं बदनाम हुआ। वह राजनीति, अर्थशास्त्र और अपराधशास्त्र सबका विद्वान होनेका दावा करता था। जोन्सका मिज़ाज बहुत खराब था। हाँ, अुसका हृदय प्रेमपूर्ण था। मेल बहुत चालाक आदमीके रूपमें मशहूर हुआ था। अुसके मुँहसे शब्द तो मानो बाहर ही नहीं निकलता था और वह क्या कहता, यह हम बड़ी मुश्किलसे सुन सकते थे।

सब बातें बेल्वी परसे निकलीं। अुन्हें किसी बातसे अपमान लगा। अिसके बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे बात करनेकी हिम्मत ही नहीं हुअी और चिढ़कर अुन्होंने खास खुराक लेनेसे अिनकार कर दिया। अपने खर्चसे मिले तो लेना मंजूर किया। बापू बीचमें पड़े और सब कुछ ठीक कर दिया। सुपरिण्टेण्डेण्टने शिकायत की कि "वे कोअी भी काम करनेसे अिनकार करते हैं, सिर्फ़ कहते हैं कि कातनेका काम दें तो ले सकता हूँ। मैंने कहा: यह नहीं मिलेगा, मगर सीनेका काम करो।"

आज सुबह बापू बोले: "तुम अकेले फल साफ़ करनेमें ४५ मिनट लगाओ, यह नहीं चलेगा। यहाँ लाओ और हम तीनों साफ़ करें, तो १५ मिनटमें काम हो जायगा।"

मैंने कहा: "मेरे अितने मिनट जाते हैं, मगर आप अुतने समय और काम कर सकेंगे।"

बापू: "नहीं, कामका अैसा भूत कैसे बनाया जा सकता है? यों तो अगर खाना-पीना बंद कर दूँ, पाखाने जाना बन्द कर दूँ और घूमना बन्द कर

फिर पहलेके सुपरिण्टेण्डेण्टों और आअी० जी० पी० लोगोंकी बात चली।

भंडारी बोले: "कर्नल मरेको सच्ची किफ़ायत करना आता था।"

बापू: "हाँ, अुसने तो सही वक्त पर सही निर्णय करके मेरी जान बचा ली। जेलके प्रबंधकी बारीकसे बारीक बातें वह जानता था और अपने काममें होशियार था। अेक-अेक क़ैदीको पहचानता था। अिसलिअे जहाँ सब अुससे डरते थे, वहाँ अुसके प्रति आदर भी रखते थे। वह जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहाँ अुसने अपने बारेमें बहुत अच्छी राय प्राप्त की है।"

सुपरिण्टेण्डेण्टने अपने अनुभव बताये: "मैंने अुसके हाथके नीचे काम किया है और अुसके कड़े अनुशासनसे मुझे बड़ा लाभ हुआ है। अपने कार्यकालके शुरूमें बल चढ़े सूतकी गाँठके मैं पचास रुपये ज्यादा देता था। अिसके लिअे अुसने मेरी धूल झाड़ी थी। तबसे मैं सावधान रहना सीख गया हूँ। वह अकसर सख्त पत्र लिखता था। फिर भी अुसके प्रति हमेशा मेरा आदर-भाव रहा है।"

फिर दूसरे सुपरिण्टेण्डेण्ट डील्की बात चली। वह जहाँ-जहाँ गया, वहीं बदनाम हुआ। वह राजनीति, अर्थशास्त्र और अपराधशास्त्र सबका विद्वान होनेका दावा करता था। जोन्सका मिज़ाज बहुत खराब था। हाँ, अुसका हृदय प्रेमपूर्ण था। मेल बहुत चालाक आदमीके रूपमें मशहूर हुआ था। अुसके मुँहसे शब्द तो मानो बाहर ही नहीं निकलता था और वह क्या कहता, यह हम बड़ी मुश्किलसे सुन सकते थे।

सब बातें भेल्वी परसे निकलीं। अुन्हें किसी बातसे अपमान लगा। अिसके बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे बात करनेकी हिम्मत ही नहीं हुअी और चिढ़कर अुन्होंने खास खुराक लेनेसे अिनकार कर दिया। अपने खर्चसे मिले तो लेना मंजूर किया। बापू बीचमें पड़े और सब कुछ ठीक कर दिया। सुपरिण्टेण्डेण्टने शिकायत की कि "वे कोअी भी काम करनेसे अिनकार करते हैं, सिर्फ़ कहते हैं कि कातनेका काम दें तो ले सकता हूँ। मैंने कहा: यह नहीं मिलेगा, मगर सीनेका काम करो।"

आज सुबह बापू बोले: "तुम अकेले फल साफ़ करनेमें ४५ मिनट लगाओ, यह नहीं चलेगा। यहाँ लाओ और हम तीनों साफ़ करें, तो १५ मिनटमें काम हो जायगा।"

मैंने कहा: "मेरे अितने मिनट जाते हैं, मगर आप अुतने समय और काम कर सकेंगे।"

बापू: "नहीं, कामका अैसा भूत कैसे बनाया जा सकता है? यों तो अगर खाना-पीना बंद कर दूँ, पाखाने जाना बन्द कर दूँ और घूमना बन्द कर

तरह डरपोक बन जाय, यह असह्य है। मैं तो सरकारके ज़रिये भी यह बात ज़ाहिर कर सकता हूँ। मगर नहीं करता हूँ, अिसका कारण यह है कि सरकार अिसका दुरुपयोग और अनर्थ कर सकती है।"

२३-१०-'३२

आजकी जानेवाली डाकमें अेक ही अुल्लेखनीय पत्र था, मि० डेविडका। डेविडसे बापूने थोड़े दिन पहले पूछा था कि आपने मुझे बहुत दिन पहले निर्दोष शहद भेजा था, वैसा शहद कहाँ बनता है? और वह कैसे फूलोंसे बनता है? अिसका अुन्होंने तीन फुलस्केप कागज़ भरकर जवाब भेजा। अिसमें निर्दोष शहद बनानेके मि० बेल्ड्रीके प्रयोगके बारेमें और वे कैसे असफल हुअे अिस बारेमें लिखा था। जंगली शहदमें कितनी मक्खियाँ नाहक मरती हैं, अुसमें कितना मैल और कचरा आता है और अिस तरह वह कितना अशुद्ध — सफ़ाअी और अहिंसा दोनोंकी दृष्टिसे — है, यह भी बताया था।

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरी तरह आप भी नियमित रूपसे शहद अिस्तेमाल करते हैं। मैं यह मानता हूँ कि खुराकके तौरपर और दवाके तौरपर शहदसे पूरी तरह लाभ अुठाना हो, तो वह बिलकुल शुद्ध होना चाहिये। मुझे लगता है कि आपको तो यह जानकर ही अिसे अिस्तेमाल करनेमें बड़ा आनन्द आयेगा कि यह अहिंसक ढंगसे अिकट्ठा किया हुआ है।"

अितना लिखकर फ़िलस्तीनका, अमेरिकाका (छत्तेवाला और बिना छत्तेका), न्यूज़ीलैण्डका और फ्रांसका शहद नमूनेके तौरपर भेजा। और फिर लिखा:

"मि० बेल्ड्री हिन्दुस्तानमें रहे, तब अुन्होंने निश्चित रूपसे यह साबित कर दिया था कि हिन्दुस्तानका शहद बाहरसे आनेवाले शहदसे गुणोंमें घटिया नहीं है। . . . मैं अिस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि यरवदासे छूटनेके बाद आप शुद्ध हिन्दुस्तानी शहद काममें लेनेका आग्रह रखेंगे और अुसके सिवाय और कोअी शहद हरगिज़ नहीं लेंगे। हिन्दुस्तानमें आजकलके ढंगकी खेतीकी स्थापना करनेका यह जल्दीसे जल्दीका रास्ता होगा।"

बापूको यह पत्र बहुत पसन्द आया। अंग्रेज़ोंमें अिस प्रकारके जो अुपयोगी शौक़ होते हैं, अुनकी यह दूसरी मिसाल है। विलायतमें 'स्टार'का सम्वाददाता अिसी तरह खुद तैयार किया हुआ शहद लाया था।

बापूने डेविडको अिस प्रकार जवाब दिया:

"आपके लम्बे पत्रके लिअे बहुत धन्यवाद। आपने मुझे लगभग अपने विचारका बना लिया है। जंगली शहद लेनेमें होनेवाले पापका (मेरी दृष्टिसे) मुझे पता था। मगर मूर्खता और आलस्यसे मैं लेता रहा। जंगली शहद किस

तरह डरपोक बन जाय, यह असह्य है। मैं तो सरकारके ज़रिये भी यह बात ज़ाहिर कर सकता हूँ। मगर नहीं करता हूँ, अिसका कारण यह है कि सरकार अिसका दुरुपयोग और अनर्थ कर सकती है।"

आजकी जानेवाली डाकमें अेक ही अुल्लेखनीय पत्र था, मि० डेविडका।

२३-१०-'३२

डेविडसे बापूने थोड़े दिन पहले पूछा था कि आपने मुझे बहुत दिन पहले निर्दोष शहद भेजा था, वैसा शहद कहाँ बनता है? और वह कैसे फूलोंसे बनता है? अिसका अुन्होंने तीन फुलस्केप कागज़ भरकर जवाब भेजा। अिसमें निर्दोष शहद बनानेके मि० बेल्ड्रीके प्रयोगके बारेमें और वे कैसे असफल हुअे अिस बारेमें लिखा था। जंगली शहदमें कितनी मक्खियाँ नाहक मरती हैं, अुसमें कितना मैल और कचरा आता है और अिस तरह वह कितना अशुद्ध — सफ़ाअी और अहिंसा दोनोंकी दृष्टिसे — है, यह भी बताया था।

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरी तरह आप भी नियमित रूपसे शहद अिस्तेमाल करते हैं। मैं यह मानता हूँ कि खुराकके तौरपर और दवाके तौरपर शहदसे पूरी तरह लाभ अुठाना हो, तो वह बिलकुल शुद्ध होना चाहिये। मुझे लगता है कि आपको तो यह जानकर ही अिसे अिस्तेमाल करनेमें बड़ा आनन्द आयेगा कि यह अहिंसक ढंगसे अिकट्ठा किया हुआ है।"

अितना लिखकर फ़िलस्तीनका, अमेरिकाका (छत्तेवाला और बिना छत्तेका), न्यूज़ीलैण्डका और फ्रांसका शहद नमूनेके तौरपर भेजा। और फिर लिखा:

"मि० बेल्ड्री हिन्दुस्तानमें रहे, तब अुन्होंने निश्चित रूपसे यह साबित कर दिया था कि हिन्दुस्तानका शहद बाहरसे आनेवाले शहदसे गुणोंमें घटिया नहीं है। . . . मैं अिस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि यरवदासे छूटनेके बाद आप शुद्ध हिन्दुस्तानी शहद काममें लेनेका आग्रह रखेंगे और अुसके सिवाय और कोअी शहद हरगिज़ नहीं लेंगे। हिन्दुस्तानमें आजकलके ढंगकी खेतीकी स्थापना करनेका यह जल्दीसे जल्दीका रास्ता होगा।"

बापूको यह पत्र बहुत पसन्द आया। अंग्रेज़ोंमें अिस प्रकारके जो अुपयोगी शौक़ होते हैं, अुनकी यह दूसरी मिसाल है। विलायतमें 'स्टार'का सम्वाददाता अिसी तरह खुद तैयार किया हुआ शहद लाया था।

बापूने डेविडको अिस प्रकार जवाब दिया:

"आपके लम्बे पत्रके लिअे बहुत धन्यवाद। आपने मुझे लगभग अपने विचारका बना लिया है। जंगली शहद लेनेमें होनेवाले पापका (मेरी दृष्टिसे) मुझे पता था। मगर मूर्खता और आलस्यसे मैं लेता रहा। जंगली शहद किस

सादी, अच्छी और सस्ती बनानेकी युक्तियाँ भी बारीक कातनेसे जल्दी मालूम हो सकती हैं। यह मैंने अनुभव किया है। 'यावान् अर्थ अुदपाने' यहाँ लागू होता है।

"अूपरकी विचारधारा तुम्हें अच्छी लगे, तो यह समझानेकी बात ही नहीं रह जाती कि याज्ञिकके लिअे मैं बीसका अंक क्यों कम-से-कम मानता हूँ। मगर यह कोअी वेदवाक्य नहीं, अिसे सिद्धान्तके रूपमें नहीं रखा गया है। अिसमें याज्ञिकके भावकी परीक्षा है। अेक संस्थाको अैसा कुछ न कुछ करना ही चाहिये। चाहे जैसा धागा निकालना यज्ञमें शामिल नहीं हो सकता, कुछ न कुछ नियम होना ही चाहिये, कुछ प्रमाण होना चाहिये। अगर अैसा होना चाहिये, तो बीसका अंक कभी ज्यादा नहीं माना जा सकता। याज्ञिक बेगार नहीं टालेगा। याज्ञिक अपने यज्ञमें भाव भरेगा, कला पूरेगा, रंग भरेगा और तद्रूप हो जायगा। यज्ञका द्रव्य शुद्धतम होना चाहिये न?

"अब भी न समझा सका होअूँ, तो फिर पूछना। मुझे अपनी रायके बारेमें शंका नहीं है। मगर जबतक तुम्हें न समझा सकूँगा, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।

"गाँवोंका काम बहुत कठिन है। प्याजके बारेमें स्मृति क्या कहती है, अिसकी चिन्ता नहीं। हमारा अनुभव कहे सो सच। प्याज औषधिके रूपमें लेना ठीक है। मैंने तो अुसका प्रयोग बहुत किया है। अुसकी बदबू मुझे भी अरुचिकर है। मैं अुसका अुपयोग नहीं करता, परन्तु आवश्यक जान पड़े, तो ज़रूर करूँ। आखिरी भोजनके समय अुसका अुपयोग करनेसे किसीके प्रसंगमें कम ही आना पड़ता है। दवाकी मात्राके तौरपर लेनेसे अुसकी बदबू कम होनेकी संभावना है। गायका दूध कहीं भी न मिले, यह तो हमारा दिवाला ही है न? साथमें गायके दूधका मावा रखें, तो घी और प्रोटीन दोनों मिल जायँ; और अुसका चूरा करके गरम पानीमें मिला दें, तो लगभग दूधका गुण आ जाय। अिसमें मैंने गुड़-शक्कर नहीं बताया, क्योंकि अुसकी ज़रूरत नहीं रहती और अुसे लिया जाय तो शायद अस्वाद व्रतका भंग हो जाय। अिसलिअे रोटी, मावा, प्याज़ और अिमली या नीबू — अितनी चीज़ोंसे गुज़र हो सकता है। सेवक लोग रातको देरसे न खाया करें। गाँववालोंसे सिर्फ़ रोटी और प्याज़की भिक्षा स्वीकार करें या खुद बनाकर खायें। हर जगह संभव हो तो पानी अुबाल लें और वही पीयें। अिसमें किसीपर भार बननेकी बात ही नहीं। किसीको कष्ट न होगा। हमारे लिअे कुछ भी नया करनेकी बात न रहेगी। खुलेमें सोया जाय। साँप वग़ैरासे बचनेके लिअे खाट मिले, तो ले ली जाय। यह सब अनुभवके बिना ही बकता जा रहा हूँ। मैं यह जानता हूँ कि देहातमें जानेपर जो सहूलियतें मुझे मिली हैं, वे औरोंको नहीं मिलतीं।

सादी, अच्छी और सस्ती बनानेकी युक्तियाँ भी बारीक कातनेसे जल्दी मालूम हो सकती हैं। यह मैंने अनुभव किया है। 'यावान् अर्थ अुदपाने' यहाँ लागू होता है।

"अूपरकी विचारधारा तुम्हें अच्छी लगे, तो यह समझानेकी बात ही नहीं रह जाती कि याज्ञिकके लिअे मैं बीसका अंक क्यों कम-से-कम मानता हूँ। मगर यह कोअी वेदवाक्य नहीं, अिसे सिद्धान्तके रूपमें नहीं रखा गया है। अिसमें याज्ञिकके भावकी परीक्षा है। अेक संस्थाको अैसा कुछ न कुछ करना ही चाहिये। चाहे जैसा धागा निकालना यज्ञमें शामिल नहीं हो सकता, कुछ न कुछ नियम होना ही चाहिये, कुछ प्रमाण होना चाहिये। अगर अैसा होना चाहिये, तो बीसका अंक कभी ज्यादा नहीं माना जा सकता। याज्ञिक बेगार नहीं टालेगा। याज्ञिक अपने यज्ञमें भाव भरेगा, कला पूरेगा, रंग भरेगा और तद्रूप हो जायगा। यज्ञका द्रव्य शुद्धतम होना चाहिये न?

"अब भी न समझा सका होअूँ, तो फिर पूछना। मुझे अपनी रायके बारेमें शंका नहीं है। मगर जबतक तुम्हें न समझा सकूँगा, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।

"गाँवोंका काम बहुत कठिन है। प्याजके बारेमें स्मृति क्या कहती है, अिसकी चिन्ता नहीं। हमारा अनुभव कहे सो सच। प्याज औषधिके रूपमें लेना ठीक है। मैंने तो अुसका प्रयोग बहुत किया है। अुसकी बदबू मुझे भी अरुचिकर है। मैं अुसका अुपयोग नहीं करता, परन्तु आवश्यक जान पड़े, तो ज़रूर करूँ। आखिरी भोजनके समय अुसका अुपयोग करनेसे किसीके प्रसंगमें कम ही आना पड़ता है। दवाकी मात्राके तौरपर लेनेसे अुसकी बदबू कम होनेकी संभावना है। गायका दूध कहीं भी न मिले, यह तो हमारा दिवाला ही है न? साथमें गायके दूधका मावा रखें, तो घी और प्रोटीन दोनों मिल जायँ; और अुसका चूरा करके गरम पानीमें मिला दें, तो लगभग दूधका गुण आ जाय। अिसमें मैंने गुड़-शक्कर नहीं बताया, क्योंकि अुसकी ज़रूरत नहीं रहती और अुसे लिया जाय तो शायद अस्वाद व्रतका भंग हो जाय। अिसलिअे रोटी, मावा, प्याज़ और अिमली या नीबू — अितनी चीज़ोंसे गुज़र हो सकता है। सेवक लोग रातको देरसे न खाया करें। गाँववालोंसे सिर्फ़ रोटी और प्याज़की भिक्षा स्वीकार करें या खुद बनाकर खायें। हर जगह संभव हो तो पानी अुबाल लें और वही पीयें। अिसमें किसीपर भार बननेकी बात ही नहीं। किसीको कष्ट न होगा। हमारे लिअे कुछ भी नया करनेकी बात न रहेगी। खुलेमें सोया जाय। साँप वगैरासे बचनेके लिअे खाट मिले, तो ले ली जाय। यह सब अनुभवके बिना ही बकता जा रहा हूँ। मैं यह जानता हूँ कि देहातमें जानेपर जो सहूलियतें मुझे मिली हैं, वे औरोंको नहीं मिलतीं।

कैदियोंसे मिलने और अुनका कुशल जाननेका मानव-अधिकार अेक समाज-सुधारकके तौर पर अुन्होंने माँगा था और न मिलनेपर अूपर लिखे अनुसार त्याग करनेका नोटिस दिया था। पहले तो मार्टिन चिढ़ गया। बापूने कहा: "आप क्रोधमें बात करते हैं, मैं आपके साथ बात नहीं करूँगा।" बादमें वह ठंडा होकर आया। पत्र फाड़ देनेकी प्रार्थना की। बापूने कहा: "आपकी सम्पत्ति है; मुझसे तो फाड़ा नहीं जायगा। और मेरे हाथसे यह निकल गया, अिसलिअे मेरे लिअे तो यह प्रतिज्ञावाक्य है। वह बदल नहीं सकता।" असहयोग करूँगाका अर्थ यह बताया था कि "विशेष भोजन छोड़ दूँगा, खाट-गद्दा छोड़ दूँगा, कागज़-पत्र और पुस्तकें छोड़ दूँगा — सब कुछ छोड़ता चला जाअूँगा — जैसे-जैसे आप ज्यादा कष्ट देते जायेंगे, वैसे-वैसे मैं अुससे भी अधिक कष्ट अुठाकर अुस दुःखको सुख मानता चला जाअूँगा।" हमने 'सी' क्लासकी खुराक लेनेकी बात कही, तो बोले: "यह तो सहानुभूतिकी हड़ताल हुअी। यह नहीं हो सकता। और अैसा होगा तो मेरा काम शोभेगा नहीं। हाँ, तुम्हारा समय तभी आयेगा, जब ये लोग लड़ाअी शुरू कर दें, मुझे कष्ट देना शुरू कर दें, मुझे 'सी' में डाल दें, अलग कोठरीमें बंद कर दें, डंडाबेड़ी पहना दें, वगैरा। मैं मानता हूँ कि अैसा नहीं करेंगे, मगर करें तो तुम्हें अकेले ही नहीं, बल्कि तमाम जेलोंमें जहाँ-जहाँ यह खबर पहुँचाअी जा सके, वहाँ अैसा ही करना चाहिये।"

आज सर पुरुषोत्तमदासका बयान आया। अुसे सुनकर बापू कहने लगे: "यह ठीक है। यह आदमी यहींसे कहकर जाता है कि लगभग विरोध प्रदर्शित करने ही जा रहा हूँ। अुसे अैसा कहने और करनेका अधिकार है। अुसने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यापारी मंडलको गोलमेज़ परिषद्में प्रतिनिधित्व नहीं मिला। मुझे लगता है कि बिड़लाने भी अुसे सम्मति दी होगी।"

डॉक्टर बेहराम खम्भाताने डॉ० दीनशा मेहताकी राय अुद्धृत की कि गांधीजी जिस संयमसे रहते हैं, अुसे देखते हुअे अुनके शरीरमें रोग होना ही नहीं चाहिये और न हड्डियोंमें दर्द होना चाहिये। अिसका अुल्लेख करते हुअे बापूने लिखा:

"जैसा ये मानते हैं वैसा ही मैं भी मानता हूँ कि मैं कितना ही संयम रखता हूँ, तो भी मुझमें कहीं न कहीं रोग भरा है और वह हाथके दर्दके ज़रिये या दूसरी तरह बाहर निकल रहा है। अँतड़ियाँ तो कमज़ोर हैं ही। मैं जन्मसे [illegible]ी भी नहीं माना जा सकता। बहुत वर्षों तक स्वच्छंद जीवन भी बिताया [illegible] और ज्ञानपूर्वक संयम शुरू किया, अुसमें भी कितना असंयम मिल गया होगा, अिसका हिसाब कौन लगाये?"

कैदियोंसे मिलने और अुनका कुशल जाननेका मानव-अधिकार अेक समाज-सुधारकके तौर पर अुन्होंने माँगा था और न मिलनेपर अूपर लिखे अनुसार त्याग करनेका नोटिस दिया था। पहले तो मार्टिन चिढ़ गया। बापूने कहा: "आप क्रोधमें बात करते हैं, मैं आपके साथ बात नहीं करूँगा।" बादमें वह ठंडा होकर आया। पत्र फाड़ देनेकी प्रार्थना की। बापूने कहा: "आपकी सम्पत्ति है; मुझसे तो फाड़ा नहीं जायगा। और मेरे हाथसे यह निकल गया, अिसलिअे मेरे लिअे तो यह प्रतिज्ञावाक्य है। वह बदल नहीं सकता।" असहयोग करूँगाका अर्थ यह बताया था कि "विशेष भोजन छोड़ दूँगा, खाट-गद्दा छोड़ दूँगा, कागज़-पत्र और पुस्तकें छोड़ दूँगा — सब कुछ छोड़ता चला जाअूँगा — जैसे-जैसे आप ज्यादा कष्ट देते जायेंगे, वैसे-वैसे मैं अुससे भी अधिक कष्ट अुठाकर अुस दुःखको सुख मानता चला जाअूँगा।" हमने 'सी' क्लासकी खुराक लेनेकी बात कही, तो बोले: "यह तो सहानुभूतिकी हड़ताल हुअी। यह नहीं हो सकता। और अैसा होगा तो मेरा काम शोभेगा नहीं। हाँ, तुम्हारा समय तभी आयेगा, जब ये लोग लड़ाअी शुरू कर दें, मुझे कष्ट देना शुरू कर दें, मुझे 'सी' में डाल दें, अलग कोठरीमें बंद कर दें, डंडाबेड़ी पहना दें, वगैरा। मैं मानता हूँ कि अैसा नहीं करेंगे, मगर करें तो तुम्हें अकेले ही नहीं, बल्कि तमाम जेलोंमें जहाँ-जहाँ यह खबर पहुँचाअी जा सके, वहाँ अैसा ही करना चाहिये।"

आज सर पुरुषोत्तमदासका बयान आया। अुसे सुनकर बापू कहने लगे: "यह ठीक है। यह आदमी यहींसे कहकर जाता है कि लगभग विरोध प्रदर्शित करने ही जा रहा हूँ। अुसे अैसा कहने और करनेका अधिकार है। अुसने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यापारी मंडलको गोलमेज़ परिषद्में प्रतिनिधित्व नहीं मिला। मुझे लगता है कि बिड़लाने भी अुसे सम्मति दी होगी।"

डॉक्टर बेहराम खम्भाताने डॉ० दीनशा मेहताकी राय अुद्धृत की कि गांधीजी जिस संयमसे रहते हैं, अुसे देखते हुअे अुनके शरीरमें रोग होना ही नहीं चाहिये और न हड्डियोंमें दर्द होना चाहिये। अिसका अुल्लेख करते हुअे बापूने लिखा:

"जैसा ये मानते हैं वैसा ही मैं भी मानता हूँ कि मैं कितना ही संयम रखता हूँ, तो भी मुझमें कहीं न कहीं रोग भरा है और वह हाथके दर्दके ज़रिये या दूसरी तरह बाहर निकल रहा है। अँतड़ियाँ तो कमज़ोर हैं ही। मैं जन्मसे ...ी भी नहीं माना जा सकता। बहुत वर्षों तक स्वच्छंद जीवन भी बिताया और ज्ञानपूर्वक संयम शुरू किया, अुसमें भी कितना असंयम मिल गया होगा, अिसका हिसाब कौन लगाये?"

अकान्तमें बैठकर प्रार्थना कर ही नहीं सकते, समुदायमें ही कर सकते हैं। अुनके लिअे वैयक्तिक प्रार्थना आवश्यक हो जाती है। मैं यह भी क़बूल करूँगा कि सांमुदायिक प्रार्थनाके बिना मनुष्य रह सकता है, वैयक्तिकके बिना कभी नहीं रह सकता।

"अस्पृश्यताके बारेमें आज कुछ भी नहीं लिख सकता। थोड़े दिनोंके बाद दुबारा पूछिये।"

कृष्णदासको लिखे सादे पत्रमें प्रारब्ध, पुरुषार्थ और सुख-दुःखमें समताके बारेमें बापूकी वृत्ति अच्छी तरह समझनेको मिलती है:

"मनुष्यके नाते बोलें, तो यों कहा जा सकता है कि तुम्हारी बदकिस्मती तुम्हें सिनहरगाँव ले गयी। तुम वहाँ तन्दुरुस्ती सुधारने गये थे और अिन्फ्लुअेंजाके शिकार हो गये। मगर तुम्हें बिलकुल शय्यावश कर देनेवाली यह बीमारी तुम्हारे भलेके लिअे नहीं होगी, अिसे कौन जानता है? सत्य क्या है अिस बारेमें हमारा अज्ञान अितना निराशाजनक होता है कि मेरे खयालसे हम किसी भी हालतमें आ पड़ें, तो भी गीता हमें चित्तकी समता कायम रखना सिखाती है। अिसलिअे अेक तरफ़, हमें चित्तकी समता बनाये रखना सीखना चाहिये और दूसरी तरफ़, जब बीमार पड़ें, तब अच्छे होनेके लिअे अपने साधनोंकी मर्यादाके अनुसार कुदरती अिलाज करें। अिसलिअे मैं तुम्हारी तंदुरुस्तीकी चिन्ता न करनेकी कोशिश करूँगा और प्रार्थना करूँगा कि जिसमें तुम्हारा भला हो वही हो।"

रामदासकी शिक्षा तो हर पत्र द्वारा होती ही है:

"मननसे तेरे निश्चयको ज़रूर बल मिलता रहेगा। गीताको छान डालें और अुसके मूल शब्दोंका विचार करते रहें, तो अुससे भी बहुत और आवश्यक बल मिलता है। मुझे तो अैसा ही होता है। गीताको संस्कृतमें समझ लेता है? संस्कृतका अध्ययन करता है? और पढ़नेके लिअे टॉल्सटॉयके निबंध हैं। 'अिमिटेशन ऑफ क्राअिस्ट' पढ़ने लायक है। बुद्धदेवका चरित्र ज़रूर पढ़ना चाहिये। 'लाअिट ऑफ अेशिया' समझ सके, तो वह भी पढ़ना। रामायण पढ़ जाय तो अच्छा ही है। हिन्दीमें 'ब्रह्मचर्य' नामकी छोटीसी पुस्तक बहुत अच्छी है। अुसे पढ़नेकी अिच्छा हो, तो आश्रममेंसे मँगा दूँ। 'अनीतिकी राह पर' नामके मेरे जो लेख हैं, वे भी पढ़ने लायक हैं। अभी तो अितना पढ़ना काफ़ी होगा। निश्चय कैसे पार पड़ेगा, अिसकी व्यर्थ चिन्ता न करके अुसके बजाय यह विचार करना कि निश्चय ज़रूर पूरा होगा और भगवान ज़रूर मदद करेंगे। मनमें अुसे पक्का करके अपने काममें लीन रहना। पढ़नेमें भी अधीर न होना। न समझमें आये, तो दुबारा पढ़ना। देर भले ही लगे। याद न रहे, तो भी घबराना मत और प्रफुल्लित रहना। तेरी गति कितनी ही धीमी हो, अुसकी फिक्र न करना। किसी दिन सब कुछ अपने आप आसान

अेकान्तमें बैठकर प्रार्थना कर ही नहीं सकते, समुदायमें ही कर सकते हैं। अुनके लिअे वैयक्तिक प्रार्थना आवश्यक हो जाती है। मैं यह भी क़बूल करूँगा कि सांमुदायिक प्रार्थनाके बिना मनुष्य रह सकता है, वैयक्तिकके बिना कभी नहीं रह सकता।

"अस्पृश्यताके बारेमें आज कुछ भी नहीं लिख सकता। थोड़े दिनोंके बाद दुबारा पूछिये।"

कृष्णदासको लिखे सादे पत्रमें प्रारब्ध, पुरुषार्थ और सुख-दुःखमें समताके बारेमें बापूकी वृत्ति अच्छी तरह समझनेको मिलती है:

"मनुष्यके नाते बोलें, तो यों कहा जा सकता है कि तुम्हारी बदकिस्मती तुम्हें सिनहरगाँव ले गयी। तुम वहाँ तन्दुरुस्ती सुधारने गये थे और अिन्फ्लुअेंजाके शिकार हो गये। मगर तुम्हें बिलकुल शय्यावश कर देनेवाली यह बीमारी तुम्हारे भलेके लिअे नहीं होगी, अिसे कौन जानता है? सत्य क्या है अिस बारेमें हमारा अज्ञान अितना निराशाजनक होता है कि मेरे खयालसे हम किसी भी हालतमें आ पड़ें, तो भी गीता हमें चित्तकी समता कायम रखना सिखाती है। अिसलिअे अेक तरफ, हमें चित्तकी समता बनाये रखना सीखना चाहिये और दूसरी तरफ, जब बीमार पड़ें, तब अच्छे होनेके लिअे अपने साधनोंकी मर्यादाके अनुसार कुदरती अिलाज करें। अिसलिअे मैं तुम्हारी तंदुरुस्तीकी चिन्ता न करनेकी कोशिश करूँगा और प्रार्थना करूँगा कि जिसमें तुम्हारा भला हो वही हो।"

रामदासकी शिक्षा तो हर पत्र द्वारा होती ही है:

"मननसे तेरे निश्चयको ज़रूर बल मिलता रहेगा। गीताको छान डालें और अुसके मूल शब्दोंका विचार करते रहें, तो अुससे भी बहुत और आवश्यक बल मिलता है। मुझे तो अैसा ही होता है। गीताको संस्कृतमें समझ लेता है? संस्कृतका अध्ययन करता है? और पढ़नेके लिअे टॉलस्टॉयके निबंध हैं। 'अिमिटेशन ऑफ क्राअिस्ट' पढ़ने लायक है। बुद्धदेवका चरित्र ज़रूर पढ़ना चाहिये। 'लाअिट ऑफ अेशिया' समझ सके, तो वह भी पढ़ना। रामायण पढ़ जाय तो अच्छा ही है। हिन्दीमें 'ब्रह्मचर्य' नामकी छोटीसी पुस्तक बहुत अच्छी है। अुसे पढ़नेकी अिच्छा हो, तो आश्रममेंसे मँगा दूँ। 'अनीतिकी राह पर' नामके मेरे जो लेख हैं, वे भी पढ़ने लायक हैं। अभी तो अितना पढ़ना काफ़ी होगा। निश्चय कैसे पार पड़ेगा, अिसकी व्यर्थ चिन्ता न करके अुसके बजाय यह विचार करना कि निश्चय ज़रूर पूरा होगा और भगवान ज़रूर मदद करेंगे। मनमें अुसे पक्का करके अपने काममें लीन रहना। पढ़नेमें भी अधीर न होना। न समझमें आये, तो दुबारा पढ़ना। देर भले ही लगे। याद न रहे, तो भी घबराना मत और प्रफुल्लित रहना। तेरी गति कितनी ही धीमी हो, अुसकी फ़िक्र न करना। किसी दिन सब कुछ अपने आप आसान

लंकामें अखिल बौद्ध परिषद् १९३३ में होनेवाली है और हिन्दू धर्मके पुनर्जीवनके बारेमें बापूकी राय माँगी। बौद्ध धर्म पर अुन्होंने अपनी पुस्तक भी भेजी। बापूने अुन्हें पत्र लिखकर पुस्तकके लिअे धन्यवाद देते हुअे बताया :

"मैं कबूल करता हूँ कि आपको जैसी प्रेरणा होती है, वैसी मुझे नहीं होती। क्योंकि ब्राह्मणोंके प्रभावके बारेमें आपके जो विचार हैं, अुनसे मैं सहमत नहीं हूँ। बहुतसी बातोंके लिअे ब्राह्मणोंको ज़रूर ही ज़िम्मेदार माना जा सकता है। मगर मुझे यक़ीन है कि वे जितने दोषपात्र हैं, अुससे कहीं अधिक दोष अुन्हें दिये गये हैं। हरअेक धर्मने अपने-अपने ब्राह्मण पैदा किये हैं। वे अिस नामसे पुकारे नहीं गये, अिससे कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता। मेरे खयालसे दूसरे धर्मोंके ब्राह्मणोंके मुक़ाबिलेमें हिन्दू धर्मके ब्राह्मण अच्छे हैं। अिसके साथ ही मुझे कहना चाहिये कि तरह-तरहके अज्ञानमय बन्धनोंवाली जाति-व्यवस्थापर मैं फ़िदा नहीं हूँ। वर्णाश्रमको मैं ज़रूर मानता हूँ। मगर अूपर लादे गये सहभोजन और मिश्रविवाह सम्बन्धी बन्धनोंको और अूँच-नीचके भेदको मैं नहीं मानता। विवेकानन्दकी तरह मैं मानता हूँ कि शंकराचार्यने हिन्दुस्तानसे बौद्ध धर्मको नहीं खदेड़ा, क्योंकि शंकराचार्य खुद प्रच्छन्न बुद्ध थे। अुन्होंने तो सिर्फ़ अुसमें घुसे हुअे भ्रष्टाचारको दूर किया और अुसे हिन्दू धर्मसे अलग पड़ जानेसे रोका। मेरी राय यह है कि बुद्धके अुपदेशोंका स्थायी असर हिन्दुस्तानके बराबर और कहीं नहीं हुआ। अितना होने पर भी यह कहनेमें मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ कि हिन्दू धर्ममें हमें जड़मूलसे सफ़ाअी करनेकी ज़रूरत है।"

शंकरराव घाटगेने लिखा कि पुनर्जन्मके बारेमें आप चार लकीरें अैसी लिखिये कि अुसके बारेमें श्रद्धा अुत्पन्न हो। बापूने लिखा (हिन्दीमें) :

"अिस शरीरके नाशके साथ आत्माका नाश नहीं है अैसी प्रतीति सबको है। अैसे ही अिस शरीरके पहले भी आत्माका अस्तित्व था। यदि यह सच है तो आत्माको दुबारा देह धारण करना नहीं होगा, या अिस देहके पहले देह धारण नहीं किया था, अैसा माननेका कोअी कारण नहीं है। परन्तु आज आत्मा देहधारी है अिसलिअे भविष्यमें भी देहधारी होगा, अैसा मानना प्रवाह-पतित है।"

मीराबहनके यहाँके सात बरसके निवासके बारेमें अुनका पत्र था। बापूको ७ नवम्बरको देखा, अुस दिन ब्रह्मचर्यका जो अुदय हुआ, सो हुआ। यह भाव अद्‌भुत है। बापूने अुन्हें जो जवाब दिया, अुसमें अिन सात बरसोंमें अुन्हें गढ़नेके अपने प्रयत्नके बारेमें अुल्लेख करते हुअे वे लिखते हैं :

"सात वर्ष सपने जैसे लगते हैं। जब मैं यह याद करता हूँ कि मैंने तुझे किस बुरी तरह झिड़का है, तो काँप अुठता हूँ। संतोष अितना ही है कि ये

लंकामें अखिल बौद्ध परिषद् १९३३ में होनेवाली है और हिन्दू धर्मके पुनर्जीवनके बारेमें बापूकी राय माँगी। बौद्ध धर्म पर अुन्होंने अपनी पुस्तक भी भेजी। बापूने अुन्हें पत्र लिखकर पुस्तकके लिअे धन्यवाद देते हुअे बताया:

"मैं कबूल करता हूँ कि आपको जैसी प्रेरणा होती है, वैसी मुझे नहीं होती। क्योंकि ब्राह्मणोंके प्रभावके बारेमें आपके जो विचार हैं, अुनसे मैं सहमत नहीं हूँ। बहुतसी बातोंके लिअे ब्राह्मणोंको ज़रूर ही ज़िम्मेदार माना जा सकता है। मगर मुझे यक़ीन है कि वे जितने दोषपात्र हैं, अुससे कहीं अधिक दोष अुन्हें दिये गये हैं। हरअेक धर्मने अपने-अपने ब्राह्मण पैदा किये हैं। वे अिस नामसे पुकारे नहीं गये, अिससे कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता। मेरे खयालसे दूसरे धर्मोंके ब्राह्मणोंके मुक़ाबिलेमें हिन्दू धर्मके ब्राह्मण अच्छे हैं। अिसके साथ ही मुझे कहना चाहिये कि तरह-तरहके अज्ञानमय बन्धनोंवाली जाति-व्यवस्थापर मैं फ़िदा नहीं हूँ। वर्णाश्रमको मैं ज़रूर मानता हूँ। मगर अूपर लादे गये सहभोजन और मिश्रविवाह सम्बन्धी बन्धनोंको और अूँच-नीचके भेदको मैं नहीं मानता। विवेकानन्दकी तरह मैं मानता हूँ कि शंकराचार्यने हिन्दुस्तानसे बौद्ध धर्मको नहीं खदेड़ा, क्योंकि शंकराचार्य खुद प्रच्छन्न बुद्ध थे। अुन्होंने तो सिर्फ़ अुसमें घुसे हुअे भ्रष्टाचारको दूर किया और अुसे हिन्दू धर्मसे अलग पड़ जानेसे रोका। मेरी राय यह है कि बुद्धके अुपदेशोंका स्थायी असर हिन्दुस्तानके बराबर और कहीं नहीं हुआ। अितना होने पर भी यह कहनेमें मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ कि हिन्दू धर्ममें हमें जड़मूलसे सफ़ाअी करनेकी ज़रूरत है।"

शंकरराव घाटगेने लिखा कि पुनर्जन्मके बारेमें आप चार लकीरें अैसी लिखिये कि अुसके बारेमें श्रद्धा अुत्पन्न हो। बापूने लिखा (हिन्दीमें):

"अिस शरीरके नाशके साथ आत्माका नाश नहीं है अैसी प्रतीति सबको है। अैसे ही अिस शरीरके पहले भी आत्माका अस्तित्व था। यदि यह सच है तो आत्माको दुबारा देह धारण करना नहीं होगा, या अिस देहके पहले देह धारण नहीं किया था, अैसा माननेका कोअी कारण नहीं है। परन्तु आज आत्मा देहधारी है अिसलिअे भविष्यमें भी देहधारी होगा, अैसा मानना प्रवाह-पतित है।"

मीराबहनके यहाँके सात बरसके निवासके बारेमें अुनका पत्र था। बापूको ७ नवम्बरको देखा, अुस दिन ब्रह्मचर्यका जो अुदय हुआ, सो हुआ। यह भाव अद्‌भुत है। बापूने अुन्हें जो जवाब दिया, अुसमें अिन सात बरसोंमें अुन्हें गढ़नेके अपने प्रयत्नके बारेमें अुल्लेख करते हुअे वे लिखते हैं:

"सात वर्ष सपने जैसे लगते हैं। जब मैं यह याद करता हूँ कि मैंने तुझे किस बुरी तरह झिड़का है, तो काँप अुठता हूँ। संतोष अितना ही है कि ये

रातको प्रार्थनाके बाद अगले सप्ताह अुठाये जानेवाले क़दमके बारेमें और शौक़तअलीको वाअिसरॉयके दिये हुअे जवाबके बारेमें बातें हुअीं। वाअिसरॉयके अुत्तरके विषयमें बापूने कहा:

"मुझे यह जवाब पसन्द है। अिससे भी सब चेत जायँ और अेक हो जायँ तो अच्छा। मेरा अपमान करनेका अेक भी मौक़ा यह आदमी हाथसे ज़ाने देना नहीं चाहता। कअी बार जी में आता है कि अेक पत्र लिखूँ और अुसे बता दूँ कि मैं कभी भी सविनय भंग छोड़नेवाला नहीं हूँ; और तुम्हें सबको जवाब देनेकी तकलीफ़ करनी पड़ती है, अिससे तो यह अच्छा है कि अिस जवाबको प्रकाशित कर दो, ताकि फिर दूसरे लोग तुम्हें कष्ट देना बन्द कर दें और तुम्हारी तकलीफ़ कम हो जाय। मगर बादमें अैसा लगा कि अिसमें क्रोध है, अिसलिअे तुरंत विचार वापस ले लिया।"

हमें न हटायें और बापूकी बिगड़ती हुअी स्थिति देखते रहना पड़े, तो क्या करें? बापू कहने लगे: "तो भी तुम्हें तो किसीको समाचार नहीं भेजना चाहिये और जैसा व्यवहार अुपवासमें किया था, वैसे ही मानो कुछ हुआ ही न हो, अिस तरह सदाकी भाँति काम करते रहना चाहिये। यह तो सब होता ही है। ये लोग थोड़े ही कोअी समाचार देनेको बँधे हैं? यहाँ दूसरे क़ैदी बीमार पड़ते हैं, मर जाते हैं और अुनके संबंधियोंको जैसे अन्तमें ख़बर देते हैं, वैसे ही मेरे रिश्तेदारोंको सूचना दे देंगे और कह देंगे कि तुम्हें अिसे देखना हो, तो देख जाओ; और मरनेके बाद यह खबर दे देंगे कि यह अपनी हठके कारण मर गया, तो अिसमें सरकार क्या करे? अुसे अिस बातकी अीर्ष्या है कि मेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी। किसी भी तरह अिसकी प्रतिष्ठाको बढ़नेसे कैसे रोका जा सकता है? ये सुविधाअें देना मेरी प्रतिष्ठाको बढ़ा देना है, अिसलिअे यह होगा ही नहीं। वह ज़रूर कह सकती है कि 'अिसे मरना है, तो मर जाय'। मगर मुझे आशा है कि सरकार अिस हद तक नहीं गिरेगी। लेकिन गिरे तो भी क्या? हरिश्चन्द्रको अपनी स्त्री और लड़केके प्रति क्या करना पड़ा था? सत्याग्रहकी पराकाष्ठा तो यही है न? और सच बात तो यह है कि यह पिछले सत्याग्रहसे भी ज्यादा शुद्ध है और अधिक सरल तो है ही। पिछला सत्याग्रह समझानेके लिअे भाष्यकी जरूरत होती थी और फिर भी कितने ही नहीं समझ सके थे। अिसे तो बच्चा भी समझ सकता है। पिछला सत्याग्रह नगाड़े बजा बजाकर किया था। यह शान्तिसे अिस तरह करेंगे कि कोअी न जान सके। अिसमें अुसकी अधिक शोभा है। अीश्वर मुझे टिकाये रखे, आखिरी हद तक जानेकी शक्ति दे, यानी अंतिम घड़ी तक मैं प्रेमसे अुमड़ता रहूँ और क्रोध तथा चिढ़ मुझमें न घुसने पाये, तो यह सत्याग्रह स्वराजकी सबसे बड़ी सीढ़ी साबित होगा। अिसमें

रातको प्रार्थनाके बाद अगले सप्ताह अुठाये जानेवाले क़दमके बारेमें और शौकतअलीको वाअिसरॉयके दिये हुअे जवाबके बारेमें बातें हुअीं। वाअिसरॉयके अुत्तरके विषयमें बापूने कहा:

"मुझे यह जवाब पसन्द है। अिससे भी सब चेत जायँ और अेक हो जायँ तो अच्छा। मेरा अपमान करनेका अेक भी मौक़ा यह आदमी हाथसे जाने देना नहीं चाहता। कअी बार जी में आता है कि अेक पत्र लिखूँ और अुसे बता दूँ कि मैं कभी भी सविनय भंग छोड़नेवाला नहीं हूँ; और तुम्हें सबको जवाब देनेकी तकलीफ़ करनी पड़ती है, अिससे तो यह अच्छा है कि अिस जवाबको प्रकाशित कर दो, ताकि फिर दूसरे लोग तुम्हें कष्ट देना बन्द कर दें और तुम्हारी तकलीफ़ कम हो जाय। मगर बादमें अैसा लगा कि अिसमें क्रोध है, अिसलिअे तुरंत विचार वापस ले लिया।"

हमें न हटायें और बापूकी बिगड़ती हुअी स्थिति देखते रहना पड़े, तो क्या करें? बापू कहने लगे: "तो भी तुम्हें तो किसीको समाचार नहीं भेजना चाहिये और जैसा व्यवहार अुपवासमें किया था, वैसे ही मानो कुछ हुआ ही न हो, अिस तरह सदाकी भाँति काम करते रहना चाहिये। यह तो सब होता ही है। ये लोग थोड़े ही कोअी समाचार देनेको बँधे हैं? यहाँ दूसरे क़ैदी बीमार पड़ते हैं, मर जाते हैं और अुनके संबंधियोंको जैसे अन्तमें ख़बर देते हैं, वैसे ही मेरे रिश्तेदारोंको सूचना दे देंगे और कह देंगे कि तुम्हें अिसे देखना हो, तो देख जाओ; और मरनेके बाद यह खबर दे देंगे कि यह अपनी हठके कारण मर गया, तो अिसमें सरकार क्या करे? अुसे अिस बातकी अीर्ष्या है कि मेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी। किसी भी तरह अिसकी प्रतिष्ठाको बढ़नेसे कैसे रोका जा सकता है? ये सुविधाअें देना मेरी प्रतिष्ठाको बढ़ा देना है, अिसलिअे यह होगा ही नहीं। वह ज़रूर कह सकती है कि 'अिसे मरना है, तो मर जाय'। मगर मुझे आशा है कि सरकार अिस हद तक नहीं गिरेगी। लेकिन गिरे तो भी क्या? हरिश्चन्द्रको अपनी स्त्री और लड़केके प्रति क्या करना पड़ा था? सत्याग्रहकी पराकाष्ठा तो यही है न? और सच बात तो यह है कि यह पिछले सत्याग्रहसे भी ज्यादा शुद्ध है और अधिक सरल तो है ही। पिछला सत्याग्रह समझानेके लिअे भाष्यकी जरूरत होती थी और फिर भी कितने ही नहीं समझ सके थे। अिसे तो बच्चा भी समझ सकता है। पिछला सत्याग्रह नगाड़े बजा बजाकर किया था। यह शान्तिसे अिस तरह करेंगे कि कोअी न जान सके। अिसमें अुसकी अधिक शोभा है। अीश्वर मुझे टिकाये रखे, आखिरी हद तक जानेकी शक्ति दे, यानी अंतिम घड़ी तक मैं प्रेमसे अुमड़ता रहूँ और क्रोध तथा चिढ़ मुझमें न घुसने पाये, तो यह सत्याग्रह स्वराजकी सबसे बड़ी सीढ़ी साबित होगा। अिसमें

"आशा है नये वर्षमें त्यागकी अधिक विशाल भावना, ध्येयकी विशेष स्थिरता और आत्मसंयमकी अधिक स्पष्ट समझ आपमें आयेगी।"

मोहनलाल भट्टको लंबा पत्र लिखा। अुसमें अिस प्रश्नका थोड़ा विवरण दिया कि अनशन कब किया जा सकता है और कौन कर सकता है:

"तुम्हें सन्तोष हो अिस ढंगसे मैं अनशनके नियम तैयार कर सकूँ अैसा नहीं दीखता। अितना कहा जा सकता है कि अुसमें पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा होनी चाहिये। वह अन्तःप्रेरणासे ही हो, देखादेखी कभी नहीं हो। अपने स्वार्थके लिअे कभी न हो, अुसका अुद्देश्य केवल पारमार्थिक होना चाहिये। जिस काममें किसीका भी द्वेष हो, अुसमें अनशन हो ही नहीं सकता। मगर अन्तर्नाद किसे कहा जाय? वह सबको हो सकता है? ये दो बड़े प्रश्न हैं। अन्तर्नाद तो सभीको होता ही है। मगर जैसे बहरा आदमी मधुरसे मधुर संगीत नहीं सुन सकता, वैसे ही जिसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुले न हों, वह अिस नादको नहीं सुन सकता। और जो संयमी नहीं है, अुसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुलते ही नहीं। जिसमें गीताके दूसरे अध्यायमें बताये हुअे स्थितप्रज्ञके या बारहवें अध्यायमें कहे गये भक्तके या चौदहवें अध्यायमें वर्णित गुणातीतके लक्षण हों या जिसमें तीनोंका संमिश्रण हो, अुसीमें यह योग्यता हो सकती है।"

सुन्दरम् नामके अेक जेलवासी अीसाअी भाअीने सवाल पूछा: "आपको सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक कौनसा धर्म मालूम हुआ है?" अिसे मोहनलालके पत्रमें ही जवाब:

"भाअी सुन्दरम् जो पूछते हैं, वह सवाल पूछने लायक़ नहीं है। मगर जब वे पूछते ही हैं, तो मुझे कहना चाहिये कि मेरी दृष्टिसे सब बातें देखते हुअे 'सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक' हिन्दू धर्म है। मगर साथ ही यह क़बूल करनेमें मुझे जरा भी संकोच नहीं होता कि शायद अिसमें मोहवश मैं भूल कर रहा हूँ। मगर जो यह भूल हो, तो भी क्षम्य है और आवश्यक भी है। क्योंकि अितना मोह न हो, तो मनुष्य किसी धर्म पर टिक नहीं सकता; और अगर अुसे किसी दूसरे धर्ममें अधिक सत्य दिखाअी दे, तो अुसमें गये बिना रह नहीं सकता, न रहना चाहिये। अिसे अीश्वरकी माया कहो या जिस किसी भी नामसे पुकारना हो पुकारो; मगर दुनियामें है अैसा ही। अितने पर भी सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना चाहिये। यानी अीसाअी अीसाअी धर्मको सत्यके अधिक नज़दीक माने, मुसल्मान अिस्लामको माने, यह मुझे हिन्दूकी हैसियतसे मान लेना चाहिये और यह भी मान लेना चाहिये कि अपने-अपने धर्ममें चुस्त रहनेके लिअे यह अुनके लिअे ज़रूरी है। अिस मान्यताके लिअे अुनके प्रति मुझे द्वेष भी न होना चाहिये। मुझे यह

"आशा है नये वर्षमें त्यागकी अधिक विशाल भावना, ध्येयकी विशेष स्थिरता और आत्मसंयमकी अधिक स्पष्ट समझ आपमें आयेगी।"

मोहनलाल भट्टको लंबा पत्र लिखा। अुसमें अिस प्रश्नका थोड़ा विवरण दिया कि अनशन कब किया जा सकता है और कौन कर सकता है:

"तुम्हें सन्तोष हो अिस ढंगसे मैं अनशनके नियम तैयार कर सकूँ अैसा नहीं दीखता। अितना कहा जा सकता है कि अुसमें पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा होनी चाहिये। वह अन्तःप्रेरणासे ही हो, देखादेखी कभी नहीं हो। अपने स्वार्थके लिअे कभी न हो, अुसका अुद्देश्य केवल पारमार्थिक होना चाहिये। जिस काममें किसीका भी द्वेष हो, अुसमें अनशन हो ही नहीं सकता। मगर अन्तर्नाद किसे कहा जाय? वह सबको हो सकता है? ये दो बड़े प्रश्न हैं। अन्तर्नाद तो सभीको होता ही है। मगर जैसे बहरा आदमी मधुरसे मधुर संगीत नहीं सुन सकता, वैसे ही जिसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुले न हों, वह अिस नादको नहीं सुन सकता। और जो संयमी नहीं है, अुसके कान अन्तर्नाद सुननेको खुलते ही नहीं। जिसमें गीताके दूसरे अध्यायमें बताये हुअे स्थितप्रज्ञके या बारहवें अध्यायमें कहे गये भक्तके या चौदहवें अध्यायमें वर्णित गुणातीतके लक्षण हों या जिसमें तीनोंका संमिश्रण हो, अुसीमें यह योग्यता हो सकती है।"

सुन्दरम् नामके अेक जेलवासी अीसाअी भाअीने सवाल पूछा: "आपको सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक कौनसा धर्म मालूम हुआ है?" अिसे मोहनलालके पत्रमें ही जवाब:

"भाअी सुन्दरम् जो पूछते हैं, वह सवाल पूछने लायक नहीं है। मगर जब वे पूछते ही हैं, तो मुझे कहना चाहिये कि मेरी दृष्टिसे सब बातें देखते हुअे 'सत्यके सबसे ज्यादा नज़दीक' हिन्दू धर्म है। मगर साथ ही यह कबूल करनेमें मुझे जरा भी संकोच नहीं होता कि शायद अिसमें मोहवश मैं भूल कर रहा हूँ। मगर जो यह भूल हो, तो भी क्षम्य है और आवश्यक भी है। क्योंकि अितना मोह न हो, तो मनुष्य किसी धर्म पर टिक नहीं सकता; और अगर अुसे किसी दूसरे धर्ममें अधिक सत्य दिखाअी दे, तो अुसमें गये बिना रह नहीं सकता, न रहना चाहिये। अिसे अीश्वरकी माया कहो या जिस किसी भी नामसे पुकारना हो पुकारो; मगर दुनियामें है अैसा ही। अितने पर भी सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना चाहिये। यानी अीसाअी अीसाअी धर्मको सत्यके अधिक नज़दीक माने, मुसलमान अिस्लामको माने, यह मुझे हिन्दूकी हैसियतसे मान लेना चाहिये और यह भी मान लेना चाहिये कि अपने-अपने धर्ममें चुस्त रहनेके लिअे यह अुनके लिअे ज़रूरी है। अिस मान्यताके लिअे अुनके प्रति मुझे द्वेष भी न होना चाहिये। मुझे यह

जाता है। आज सुबह मुझे असा लग रहा था कि यह कब पूरा होगा। मेघाणी जो कहता है कि असके गीत जब वह खुद गाकर सुनाता है, तभी अनमें अच्छी तरह रस आ सकता है, यह सच है।"

शामको खाते-खाते महावीर सम्बंधी पुस्तक पढ़ रहे थे। अुसमेंसे अेक वाक्य बापूने जो कुछ किया है या करना चाहते हैं अुसके समर्थनमें मिला। वह मुझे अिशारा करके बताया।

मैंने कहा: "ठीक वक्त पर ही आया है न!" बापूने आनन्द और आश्चर्यसे सिर हिलाया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "अपने लिअे समर्थन ढूंढ़ते ही रहेंगे।"

हम दोनोंकी तरफ अंगुली दिखाकर कहा: "तुम्हारे लिअे भी यही बात है।"

अिसपर वल्लभभाअी कहने लगे: "जैनोंको तो अिस तरह देह छोड़नेमें कहाँ आपत्ति है? सनातनियोंको समझायें तब जानें!"

२१-१०-'३२

आज सुबह मेजर भंडारीको प्रगतिशील असहयोग समझानेवाला पत्र लिखा और सरकारका फर्ज़ समझाया कि या तो वह अस्पृश्यताके बारेमें पत्रों और मुलाकात सम्बंधी सारा पत्रव्यवहार छाप दे या मेरी माँग और सरकारका अिनकार, अिन दोनोंसे जनताको जिस तरह वह चाहे वाक़िफ़ कर दे। यह पत्र पढ़ते ही मेजर आये। अुन्होंने कहा: "आप कुछ दिन मुलतवी रखें और थोड़ी चर्चा करें तो?"

बापू: "सरकारके पूछे बिना मैं चर्चा किस तरह करूँ?"

फिर मेजर कहने लगे: "आप 'क' वर्गकी खुराक लीजिये, मगर यहीं पर बनवा लें तो।"

बापूने हँसकर अैसे भावसे सिर हिलाया कि तब तो जो खुराक लेता हूँ वही न लूँ।

अिसपर मेजर कहने लगे: "आपका वज़न नहीं बढ़ रहा है और शरीरकी शक्ति सब जाती रहेगी, और पेचिश भी हो सकती है।"

अिसलिअे बापूने लिखा:

"मैं नहीं चाहता कि मुझे पेचिश हो। लेकिन होगी तो भोग लूँगा। हाँ, अिसके कुछ भी चिन्ह दिखाअी देंगे, तो मैं खुराक लेना बिलकुल बन्द कर दूँगा। असहयोग अुत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। सरकारको कमसे कम अड़चनमें डालनेके लिअे मैंने यह मार्ग ग्रहण किया है। अछूतपन मिटानेके लिअे मैं काम न कर सकूँ, तो मैं जी नहीं सकता। मगर सरकार यह चाहे कि अस्पृश्यता

जाता है। आज सुबह मुझे अैसा लग रहा था कि यह कब पूरा होगा। मेघाणी जो कहता है कि अुसके गीत जब वह खुद गाकर सुनाता है, तभी अुनमें अच्छी तरह रस आ सकता है, यह सच है।"

शामको खाते-खाते महावीर सम्बंधी पुस्तक पढ़ रहे थे। अुसमेंसे अेक वाक्य बापूने जो कुछ किया है या करना चाहते हैं अुसके समर्थनमें मिला। वह मुझे अिशारा करके बताया।

मैंने कहा: "ठीक वक्त पर ही आया है न?" बापूने आनन्द और आश्चर्यसे सिर हिलाया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "अपने लिअे समर्थन ढूँढ़ते ही रहेंगे।"

हम दोनोंकी तरफ अंगुली दिखाकर कहा: "तुम्हारे लिअे भी यही बात है।"

अिसपर वल्लभभाअी कहने लगे: "जैनोंको तो अिस तरह देह छोड़नेमें कहाँ आपत्ति है? सनातनियोंको समझायें तब जानें!"

२१-१०-'३२

आज सुबह मेजर भंडारीको प्रगतिशील असहयोग समझानेवाला पत्र लिखा और सरकारका फर्ज़ समझाया कि या तो वह अस्पृश्यताके बारेमें पत्रों और मुलाकात सम्बंधी सारा पत्रव्यवहार छाप दे या मेरी माँग और सरकारका अिनकार, अिन दोनोंसे जनताको जिस तरह वह चाहे वाक़िफ़ कर दे। यह पत्र पढ़ते ही मेजर आये। अुन्होंने कहा: "आप कुछ दिन मुलतवी रखें और थोड़ी चर्चा करें तो?"

बापू: "सरकारके पूछे बिना मैं चर्चा किस तरह करूँ?"

फिर मेजर कहने लगे: "आप 'क' वर्गकी खुराक लीजिये, मगर यहीं पर बनवा लें तो।"

बापूने हँसकर अैसे भावसे सिर हिलाया कि तब तो जो खुराक लेता हूँ वही न लूँ।

अिसपर मेजर कहने लगे: "आपका वज़न नहीं बढ़ रहा है और शरीरकी शक्ति सब जाती रहेगी, और पेचिश भी हो सकती है।"

अिसलिअे बापूने लिखा:

"मैं नहीं चाहता कि मुझे पेचिश हो। लेकिन होगी तो भोग लूँगा। हाँ, अिसके कुछ भी चिन्ह दिखाअी देंगे, तो मैं खुराक लेना बिलकुल बन्द कर दूँगा। असहयोग अुत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। सरकारको कमसे कम अड़चनमें डालनेके लिअे मैंने यह मार्ग ग्रहण किया है। अछूतपन मिटानेके लिअे मैं काम न कर सकूँ, तो मैं जी नहीं सकता। मगर सरकार यह चाहे कि अस्पृश्यता

वह लालचके रूपमें नहीं माना जा सकता । जो प्रायश्चित्त करता है,
नहीं देता । वह तो अपनी शुद्धि करता है । क्या यह सब दीपकको
नहीं लाता? सहभोजन अुचित है या नहीं, यह प्रश्न जुदा है । कु
वह अुचित है और दूसरी हालतोंमें अनुचित भी हो सकता है । अि
सिर्फ़ परिस्थिति पर आधार रखनेवाली बात हुअी ।"

अेक छोटी लड़कीको, जिसे धोखा देने और झूठ बोलनेकी
गअी है, लिखते हैं :

"मुझे आशा है कि तूने झूठ न बोलने और चोरी न करनेका
दिया है, अुसका पालन करेगी । तुझे यह पसन्द नहीं होगा कि दूसरे
धोखा दें या तेरी चीज़ें चुरायें । अिसलिअे तुझे यह आशा हरगिज़
चाहिये कि तू औरोंको धोखा दे या औरोंकी चीज़ें चुराये, तो वे पसन्द

(हिन्दीमें) : "गीताका मध्यबिन्दु क्या है अुसका निश्चय कर ले
प्रत्येक श्लोकका अर्थ जो अपने जीवनमें अुपयोगी है अुसको आचार
यह सबसे बड़ी टीका है । और यही गीताका सच्चा अभ्यास है ।
मध्यबिन्दु अनासक्ति ही है, अुसमें थोड़ासा भी शक नहीं होना चाहि
किसी कारणसे गीता नहीं लिखी गअी, अुसमें मुझे कुछ भी शंका
और मैं तो यह अनुभवसे जानता हूँ कि बग़ैर अनासक्तिके न मनुष
पालन कर सकता है, न अहिंसाका । अनासक्त होना कठिन है, अि
नहीं । लेकिन अुसमें आश्चर्य क्या है? सत्यनारायणका दर्शन करने
तो होना ही चाहिये और बग़ैर अनासक्तिके यह दर्शन अशक्य है ।"

दोपहरको दोनों मेज़र बापूको समझाने आये । विशेष खुराक
अुबला हुआ दाल-शाक ढाबेसे भेजा जायगा अुसे ले लें । अिस बीच मैं
करनेको समझा रहा था ।

बापूने मेज़रसे कहा : "यह खुराक मैं चार दिनसे ज्यादा नहीं

मेज़र : "खुराक आपको माफ़िक़ आये तब भी?"

बापू : "हाँ, यह अुत्तरोत्तर बढ़नेवाला असहयोग है । सारा दारो
पर है कि सरकारका रुख कैसा रहता है । अितनेसे सरकार न पिघले
अपनेको अधिक कष्ट देना ही पड़ेगा । अिस चीज़के खयालसे मुझे
ही होता है । आनंद अिसलिअे कि कार्य पवित्र है । मान लीजिये वह
दे, तो अस्पृश्यता निवारणका काम बेहद आगे बढ़ेगा । बाहरके लोग
कष्टसहनको बड़ा बना देंगे और मौक़ेके अनुसार काम करेंगे । दुःख
रकार अिस कार्यकी महत्ताको नहीं समझती । मुझे अिस कामके
कितने ही पत्रोंके अुत्तर देने हैं ।"

वह लालचके रूपमें नहीं माना जा सकता। जो प्रायश्चित्त करता है, वह लालच नहीं देता। वह तो अपनी शुद्धि करता है। क्या यह सब दीपककी तरह स्पष्ट नहीं लगता? सहभोजन अुचित है या नहीं, यह प्रश्न जुदा है। कुछ हालतोंमें वह अुचित है और दूसरी हालतोंमें अनुचित भी हो सकता है। अिसलिअे यह सिर्फ़ परिस्थिति पर आधार रखनेवाली बात हुअी।"

अेक छोटी लड़कीको, जिसे धोखा देने और झूठ बोलनेकी आदत पड़ गअी है, लिखते हैं:

"मुझे आशा है कि तूने झूठ न बोलने और चोरी न करनेका जो वचन दिया है, अुसका पालन करेगी। तुझे यह पसन्द नहीं होगा कि दूसरे लोग तुझे धोखा दें या तेरी चीज़ें चुरायें। अिसलिअे तुझे यह आशा हरगिज़ न रखनी चाहिये कि तू औरोंको धोखा दे या औरोंकी चीज़ें चुराये, तो वे पसन्द करेंगे।"

(हिन्दीमें): "गीताका मध्यबिन्दु क्या है अुसका निश्चय कर लेना। पीछे प्रत्येक श्लोकका अर्थ जो अपने जीवनमें अुपयोगी है अुसको आचारमें रखना। यह सबसे बड़ी टीका है। और यही गीताका सच्चा अभ्यास है। गीताका मध्यबिन्दु अनासक्ति ही है, अुसमें थोड़ासा भी शक नहीं होना चाहिये। दूसरे किसी कारणसे गीता नहीं लिखी गअी, अुसमें मुझे कुछ भी शंका नहीं है। और मैं तो यह अनुभवसे जानता हूँ कि बग़ैर अनासक्तिके न मनुष्य सत्यका पालन कर सकता है, न अहिंसाका। अनासक्त होना कठिन है, अिसमें सन्देह नहीं। लेकिन अुसमें आश्चर्य क्या है? सत्यनारायणका दर्शन करनेमें परिश्रम तो होना ही चाहिये और बग़ैर अनासक्तिके यह दर्शन अशक्य है।"

दोपहरको दोनों मेजर बापूको समझाने आये। विशेष खुराक नहीं तो अुबला हुआ दाल-शाक ढाबेसे भेजा जायगा अुसे ले लें। अिस बीच मैं यही बात करनेको समझा रहा था।

बापूने मेजरसे कहा: "यह खुराक मैं चार दिनसे ज्यादा नहीं लूँगा।"

मेजर: "खुराक आपको माफ़िक़ आये तब भी?"

बापू: "हाँ, यह अुत्तरोत्तर बढ़नेवाला असहयोग है। सारा दारोमदार अिस पर है कि सरकारका रुख कैसा रहता है। अितनेसे सरकार न पिघले, तो मुझे अपनेको अधिक कष्ट देना ही पड़ेगा। अिस चीज़के खयालसे मुझे तो आनंद ही होता है। आनंद अिसलिअे कि कार्य पवित्र है। मान लीजिये वह मुझे मरने दे, तो अस्पृश्यता निवारणका काम बेहद आगे बढ़ेगा। बाहरके लोग मेरे छोटेसे कष्टसहनको बड़ा बना देंगे और मौक़ेके अनुसार काम करेंगे। दुःख यह है कि सरकार अिस कार्यकी महत्ताको नहीं समझती। मुझे अिस कामके सिलसिलेमें कितने ही पत्रोंके अुत्तर देने हैं।"

"आपकी भेजी हुअी पुस्तकें मिल गअीं। अुपासनी महाराजसे मैं मिला हूँ। मुझ पर अुनका बहुत खराब असर पड़ा है और मैंने अुनके लेखोंमें गंदगी पाअी है।"

अेक अछूतने लिखा था:

"आपके प्रतापसे मन्दिर और कुअें बहुत खुल गये। आज भी खुलते जा रहे हैं। अब अुपवास न कीजिये।" अुसे लिखा:

"अुपवास करना या न करना मेरे हाथमें नहीं है। अीश्वरने जो सोचा होगा वही होगा।"

अुपवासमें भी शान्तिकुमारका पत्र नहीं आया था, अिसलिअे अुसे याद किया।

पद्मजाको 'मेरी प्यारी साथिन और गुलाम' सम्बोधन करके लिखा था। अुसने चिढ़कर लिखा कि 'मैं किसी महात्मा या जादूगरकी गुलाम खुशीसे नहीं बनूँगी।'

अुसे लिखा:

"मेरी प्यारी साथिन और अनिच्छुक गुलाम,

"यह चाहते हुअे भी कि तू राजी-खुशीसे गुलाम बने और गुलामोंका हाकिम होते हुअे भी गुलामोंकी तरह तेरी अिस अिच्छाके अनुसार कर रहा हूँ कि परोपकार वृत्तिसे मैं तुझे बायें हाथसे लिखूँ। जब तक तेरे जैसी साथिनोंने अपने अनुभवसे यह खोज नहीं की थी, तब तक मुझे खयाल भी नहीं था कि मैं गुलामोंका हाकिम हूँ। मैंने यह मान रखा था कि लोग मेरा जुआ खुशीसे अुठा लेते हैं। मगर मैं देख रहा हूँ कि साफ दिलसे कबूल करनेमें तेरा अभिमान बाधक हो रहा है। मैं नहीं चाहता कि तेरे अभिमानका नाश करनेवाली घटनाअें और हों।

* * *

"मुझे भेजी हुअी तेरी पुस्तकें पढ़नेके बारेमें तूने जो क्रम बताया है, अुसका मैं अनुसरण करूँगा। मैं अपने शिक्षकोंकी संख्यामें जल्दी-जल्दी वृद्धि करता जा रहा हूँ। पहली शिक्षिका रेहाना हुअी, बादमें ज़ोहराकी नियुक्ति की गअी और अब अिस सम्मानकी अुम्मीदवार तू है। तो अिस पत्रको तू अपना नियुक्ति-पत्र समझना। मगर अिस सम्मानकी रक्षा करनेके लिअे तुझे स्वस्थ हो जाना पड़ेगा। बीमार और बिस्तरमें पड़ी रहे, तो काम नहीं चलेगा।"

रातको वल्लभभाअी खूब नाराज़ हुअे। बापूसे कहने लगे: "आपको अुपवासका नोटिस देना चाहिये। चार दिनकी सूचनासे काम नहीं चल सकता। आप लोगों और सरकार दोनोंके साथ अन्याय करेंगे। औरोंके सामने भी हम आपकी कोअी सफ़ाअी नहीं दे सकते। लोग कहेंगे कि यह अेक अुपवास पूरा करके

"आपकी भेजी हुआी पुस्तकें मिल गआीं। अुपासनी महाराजसे मैं मिला हूँ। मुझ पर अुनका बहुत खराब असर पड़ा है और मैंने अुनके लेखोंमें गंदगी पाआी है।"

अेक अछूतने लिखा था :

"आपके प्रतापसे मन्दिर और कुअें बहुत खुल गये। आज भी खुलते जा रहे हैं। अब अुपवास न कीजिये।" अुसे लिखा :

"अुपवास करना या न करना मेरे हाथमें नहीं है। आीश्वरने जो सोचा होगा वही होगा।"

अुपवासमें भी शान्तिकुमारका पत्र नहीं आया था, अिसलिअे अुसे याद किया।

पद्मजाको 'मेरी प्यारी साथिन और गुलाम' सम्बोधन करके लिखा था। अुसने चिढ़कर लिखा कि 'मैं किसी महात्मा या जादूगरकी गुलाम खुशीसे नहीं बनूँगी।'

अुसे लिखा :

"मेरी प्यारी साथिन और अनिच्छुक गुलाम,

"यह चाहते हुअे भी कि तू राजी-खुशीसे गुलाम बने और गुलामोंका हाकिम होते हुअे भी गुलामोंकी तरह तेरी अिस अिच्छाके अनुसार कर रहा हूँ कि परोपकार वृत्तिसे मैं तुझे बायें हाथसे लिखूँ। जब तक तेरे जैसी साथिनोंने अपने अनुभवसे यह खोज नहीं की थी, तब तक मुझे खयाल भी नहीं था कि मैं गुलामोंका हाकिम हूँ। मैंने यह मान रखा था कि लोग मेरा जुआ खुशीसे अुठा लेते हैं। मगर मैं देख रहा हूँ कि साफ दिलसे कबूल करनेमें तेरा अभिमान बाधक हो रहा है। मैं नहीं चाहता कि तेरे अभिमानका नाश करनेवाली घटनाअें और हों।

* * *

"मुझे भेजी हुआी तेरी पुस्तकें पढ़नेके बारेमें तूने जो क्रम बताया है, अुसका मैं अनुसरण करूँगा। मैं अपने शिक्षकोंकी संख्यामें जल्दी-जल्दी वृद्धि करता जा रहा हूँ। पहली शिक्षिका रेहाना हुआी, बादमें ज़ोहराकी नियुक्ति की गआी और अब अिस सम्मानकी अुम्मीदवार तू है। तो अिस पत्रको तू अपना नियुक्ति-पत्र समझना। मगर अिस सम्मानकी रक्षा करनेके लिअे तुझे स्वस्थ हो जाना पड़ेगा। बीमार और बिस्तरमें पड़ी रहे, तो काम नहीं चलेगा।"

रातको वल्लभभाआी खूब नाराज़ हुअे। बापूसे कहने लगे : "आपको अुपवासका नोटिस देना चाहिये। चार दिनकी सूचनासे काम नहीं चल सकता। आप लोगों और सरकार दोनोंके साथ अन्याय करेंगे। औरोंके सामने भी हम आपकी कोआी सफ़ाआी नहीं दे सकते। लोग कहेंगे कि यह अेक अुपवास पूरा करके

बापू कहने लगे: "कल देखेंगे।" फिर अन्तमें बोले: "अच्छा, कल बकरियोंको आने दो।" मेजरके जाते ही हमसे पूछा: "बोलो, तुम्हारी क्या राय है?"

हमने कहा: "दूसरा जवाब हो ही नहीं सकता। यह तो वही आया, जो हम सोच रहे थे। अिसमें सभ्यता है और विनती भी है, और अिसमें प्रतिज्ञा छोड़नेकी कोअी बात नहीं।"

बापू कहने लगे: "अिस पर तो अुपवास शुरू किया होता, तो भी छोड़ देता। अिन्होंने मोहलत माँगी है। और यह तो बम्बअी सरकार पर जोरका तमाचा है। अिनका पत्र अितने दिन कैसे पड़ा रहने दिया, अिसका अुसे अुलाहना भी है। किसीने बीचमें रुकावट डाली होगी। शायद हडसनने गुस्सेमें रख छोड़ा होगा।"

२-११-'३२ सुबह साढ़े चार बजे बापूने शहद, पानी और फल शुरू किये और बादमें भारत सरकारके गृहमंत्रीको लम्बा तार लिखवाया। अुसमें यह समझाया कि वे सत्याग्रह करनेको किस तरह विवश हुअे। साथ ही यह भी समझाया कि कैसे पत्र और तार मेरे पास जवाब दिये बिना ही पड़े रह गये हैं। अन्तमें कहा कि "अिस आत्माका हनन करनेवाली स्थितिसे बचनेका क़ैदीके पास और क्या अुपाय हो सकता है?"

तार सुबह ही चला गया। भिन्नाये हुअे आअी० जी० पी० ने टेलीफ़ोनसे पूछा: "क्या खबर है? रोटी छोड़ी या नहीं?"

सनफील्ड स्कूलके व्यवस्थापकका पत्र आया। अुसमें यह बात थी कि पिछले साल बापू जिस दिन अुस पाठशालामें गये थे, अुसी दिन यह लिखा जा रहा है। बापूके आगमनके लिअे आभार माना गया था और यह बताया था कि सब कुछ आत्माकी पहचान और आत्माकी शिक्षा पर आधार रखता है और अुनका काम आगे बढ़ रहा है। बापूने लिखा:

"आधिभौतिक और आध्यात्मिकके बारेमें आप जो कहते हैं, अुसमेंसे अधिकांशसे मैं सहमत हो सकता हूँ। आत्मतत्त्वके बिना भूततत्त्व मृत है और भूततत्त्वके बिना आत्मतत्त्व हिल नहीं सकता। जब तक हम **अिसका** नहीं, **अिनका** विचार करते हैं, तब तक अेकको दूसरेकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन अिस बहुत रम्य प्रदेशमें मैं अधिक नहीं भटकूँगा।"

बापू कहने लगे: "कल देखेंगे।" फिर अन्तमें बोले: "अच्छा, कल बकरियोंको आने दो।" मेजरके जाते ही हमसे पूछा: "बोलो, तुम्हारी क्या राय है?"

हमने कहा: "दूसरा जवाब हो ही नहीं सकता। यह तो वही आया, जो हम सोच रहे थे। अिसमें सभ्यता है और बिनती भी है, और अिसमें प्रतिज्ञा छोड़नेकी कोअी बात नहीं।"

बापू कहने लगे: "अिस पर तो अुपवास शुरू किया होता, तो भी छोड़ देता। अिन्होंने मोहलत माँगी है। और यह तो बम्बअी सरकार पर जोरका तमाचा है। अिनका पत्र अितने दिन कैसे पड़ा रहने दिया, अिसका अुसे अुलाहना भी है। किसीने बीचमें रुकावट डाली होगी। शायद हडसनने गुस्सेमें रख छोड़ा होगा।"

सुबह साढ़े चार बजे बापूने शहद, पानी और फल शुरू किये और बादमें भारत सरकारके गृहमंत्रीको लम्बा तार लिखवाया। अुसमें यह समझाया कि वे सत्याग्रह करनेको किस तरह विवश हुअे। साथ ही यह भी समझाया कि कैसे पत्र और तार मेरे पास जवाब दिये बिना ही पड़े रह गये हैं। अन्तमें कहा कि "अिस आत्माका हनन करनेवाली स्थितिसे बचनेका क़ैदीके पास और क्या अुपाय हो सकता है?"

२–११–'३२

तार सुबह ही चला गया। भिन्नाये हुअे आअी० जी० पी० ने टेलीफ़ोनसे पूछा: "क्या खबर है? रोटी छोड़ी या नहीं?"

सनफील्ड स्कूलके व्यवस्थापकका पत्र आया। अुसमें यह बात थी कि पिछले साल बापू जिस दिन अुस पाठशालामें गये थे, अुसी दिन यह लिखा जा रहा है। बापूके आगमनके लिअे आभार माना गया था और यह बताया था कि सब कुछ आत्माकी पहचान और आत्माकी शिक्षा पर आधार रखता है और अुनका काम आगे बढ़ रहा है। बापूने लिखा:

"आधिभौतिक और आध्यात्मिकके बारेमें आप जो कहते हैं, अुसमेंसे अधिकांशसे मैं सहमत हो सकता हूँ। आत्मतत्त्वके बिना भूततत्त्व मृत है और भूततत्त्वके बिना आत्मतत्त्व हिल नहीं सकता। जब तक हम **अिसका** नहीं, **अिनका** विचार करते हैं, तब तक अेकको दूसरेकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन अिस बहुत रम्य प्रदेशमें मैं अधिक नहीं भटकूँगा।"

अुसने स्वयं गीताका अध्ययन शुरू किया है। किशनके साथ अेक-अेक श्लोक समझनेका प्रयत्न करती है। कुरानका पिकथॉल्का अनुवाद पढ़ रही है और धर्मके बारेमें अपने विचार बताकर अपनी स्थिति अिस सुन्दर ढंगसे प्रगट करती है :

"मैं आजकल कुरानका पिकथॉल्का अनुवाद पढ़ रही हूँ। यह अनुवाद पढ़नेमें अच्छा लगता है। ये खुद मुसलमान (अंग्रेज़) हैं और अिसलिअे पूरे प्रेमसे और आदर भावसे चीज़को पेश करते हैं। अीसाअी धर्म सम्बंधी अेक आयतके बारेमें आपके शब्द मुझे याद हैं। अैसी बहुतसी आयतें अिसमें हैं। अैसा लगता है कि पैगम्बरको जिन अीसाअियोंके साथ काम पड़ा था, वे अीसाअी अपने धर्मका बहुत संकुचित खयाल रखते थे। पैगम्बर साहबको यह अच्छा नहीं लगता था। अीसा मसीहके लिअे अुन्हें बहुत ज्यादा आदर था। मैं अपने अज्ञानमें यह नहीं समझी थी कि जिन शास्त्रों पर अीसाअी धर्म रचा गया है, अुन्हीं शास्त्रों पर अल अिस्लामकी बुनियाद है। मुझे अैसा लगता है कि महम्मदने अिन शास्त्रोंका अुपयोग अेक सुधारकके रूपमें किया, जब कि अीसाने अेक क्रान्तिकारीके तौर पर किया। क्या मुझ पर पड़ा यह असर सही है? ये दोनों धर्म भव्य होने पर भी कुछ न कुछ अैसा रह जाता है, जो मुझे खोज करनेके लिअे तैयार करता है। अैसी कमी महसूस होती है जिसे मैं शब्दोंमें नहीं बता सकती। मेरी आत्माको गहरा सन्तोष हो, अिस तरह वह चीज़ मुझे गीतासे मिल जाती है। मेरे अपने लिअे तो मुझे अैसा लगता है, मानो मैं अपने पूर्व जन्मके धर्ममें वापस आ गअी हूँ। अीसाअी बनना मेरे लिअे वैसा ही अस्वाभाविक हो जाता है, जैसा अीसाअीके लिअे हिन्दू या मुसलमान बनना हो सकता है। मुझे मालूम है कि अिस विषयमें मुझे कअी बार आपके मार्मिक वचन सुनने पड़े हैं। मगर अुसका कारण तो यह है कि अुस समय मुझमें पूर्वग्रह और कटुताअें भरी थीं। अब ये पूर्वग्रह मिट गये दीखते हैं और आपको अिस तरह लिखते हुअे मुझे कोअी डर नहीं लगता।

"यह प्रश्न मेरे सामने तो स्पष्ट रूपमें अुस समय जबरन आया, जब मुझे सज़ा हुअी और रजिस्टर पर मुझे अपना धर्म दर्ज करना पड़ा। मैं तो अपने आपको सिर्फ साबरमती आश्रमवासिनी कहती हूँ। पहली ही प्रार्थना जो मैं बोलना सीखी, वह आश्रमकी प्रार्थना थी। मेरी आँखोंके सामने अीश्वर तक पहुँचनेका जो रास्ता पहली बार दिखाअी दिया, वह आपके अुपदेशसे ही दिखाअी दिया था।"

अिस पत्रसे बापू बड़े खुश हुअे और लिखा :

"मुझे लगता है कि अीसा और महम्मदके बीच तूने जो तुलना की है वह, आकर्षक है, मगर अंशतः ही सही है। तूने यह कहावत तो सुनी ही है कि 'तुलनाअें

अुसने स्वयं गीताका अध्ययन शुरू किया है। किशनके साथ अेक-अेक श्लोक समझनेका प्रयत्न करती है। कुरानका पिकथॉल्का अनुवाद पढ़ रही है और धर्मके बारेमें अपने विचार बताकर अपनी स्थिति अिस सुन्दर ढंगसे प्रगट करती है:

"मैं आजकल कुरानका पिकथॉल्का अनुवाद पढ़ रही हूँ। यह अनुवाद पढ़नेमें अच्छा लगता है। ये खुद मुसलमान (अंग्रेज़) हैं और अिसलिअे पूरे प्रेमसे और आदर भावसे चीज़को पेश करते हैं। अीसाअी धर्म सम्बंधी अेक आयतके बारेमें आपके शब्द मुझे याद हैं। अैसी बहुतसी आयतें अिसमें हैं। अैसा लगता है कि पैगम्बरको जिन अीसाअियोंके साथ काम पड़ा था, वे अीसाअी अपने धर्मका बहुत संकुचित खयाल रखते थे। पैगम्बर साहबको यह अच्छा नहीं लगता था। अीसा मसीहके लिअे अुन्हें बहुत ज्यादा आदर था। मैं अपने अज्ञानमें यह नहीं समझी थी कि जिन शास्त्रों पर अीसाअी धर्म रचा गया है, अुन्हीं शास्त्रों पर अल अिस्लामकी बुनियाद है। मुझे अैसा लगता है कि महम्मदने अिन शास्त्रोंका अुपयोग अेक सुधारकके रूपमें किया, जब कि अीसाने अेक क्रान्तिकारीके तौर पर किया। क्या मुझ पर पड़ा यह असर सही है? ये दोनों धर्म भव्य होने पर भी कुछ न कुछ अैसा रह जाता है, जो मुझे खोज करनेके लिअे तैयार करता है। अैसी कमी महसूस होती है जिसे मैं शब्दोंमें नहीं बता सकती। मेरी आत्माको गहरा सन्तोष हो, अिस तरह वह चीज़ मुझे गीतासे मिल जाती है। मेरे अपने लिअे तो मुझे अैसा लगता है, मानो मैं अपने पूर्व जन्मके धर्ममें वापस आ गअी हूँ। अीसाअी बनना मेरे लिअे वैसा ही अस्वाभाविक हो जाता है, जैसा अीसाअीके लिअे हिन्दू या मुसलमान बनना हो सकता है। मुझे मालूम है कि अिस विषयमें मुझे कअी बार आपके मार्मिक वचन सुनने पड़े हैं। मगर अुसका कारण तो यह है कि अुस समय मुझमें पूर्वग्रह और कटुताअें भरी थीं। अब ये पूर्वग्रह मिट गये दीखते हैं और आपको अिस तरह लिखते हुअे मुझे कोअी डर नहीं लगता।

"यह प्रश्न मेरे सामने तो स्पष्ट रूपमें अुस समय जबरन आया, जब मुझे सज़ा हुअी और रजिस्टर पर मुझे अपना धर्म दर्ज करना पड़ा। मैं तो अपने आपको सिर्फ साबरमती आश्रमवासिनी कहती हूँ। पहली ही प्रार्थना जो मैं बोलना सीखी, वह आश्रमकी प्रार्थना थी। मेरी आँखोंके सामने अीश्वर तक पहुँचनेका जो रास्ता पहली बार दिखाअी दिया, वह आपके अुपदेशसे ही दिखाअी दिया था।"

अिस पत्रसे बापू बड़े खुश हुअे और लिखा:

"मुझे लगता है कि अीसा और महम्मदके बीच तूने जो तुलना की है वह, आकर्षक है, मगर अंशतः ही सही है। तूने यह कहावत तो सुनी ही है कि 'तुलनाअें

गांधी जब तक सविनयभंग नहीं छोड़ता, तब तक मिलनेकी अिजाज़त नहीं मिलेगी, यह जवाब पाँच दिन पहले शौकतअलीको देनेवाले यह लिखें कि अस्पृश्यताके बारेमें बापू किसीसे भी मुलाक़ात कर सकते हैं, तो अिसके लिअे क्या कहा जाय? मगर चमत्कारको नमस्कार है। कल मगनभाअी देसाअीको पत्र लिखते हुअे बापूने जिस अनासक्तिको साधनेका बताया है और अुस पत्रमें जो अीश्वरार्पण बुद्धि दिखाअी देती है, कहा जा सकता है कि यह अुसीका शुद्ध फल है। अैसे फल अभी कितने ही निकलेंगे। मगनभाअीके नाम पत्र:

"जैसे-जैसे अीश्वर पर आस्था बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे कर्तव्य-कर्ममें रस बढ़ता जाता है, जानकारी बढ़ती जाती है, सावधानी बढ़ती जाती है और अुसीके साथ निश्चिन्तता और धीरज बढ़ता जाता है, यह मेरा अनुभव दृढ़ होता जाता है। . . .

"मेरी श्रद्धा अमर्यादित है, अिसलिअे मैं यह मानता हूँ कि छोटा-बड़ा सब कुछ अीश्वर ही कराता है। वह यह किस तरह कराता होगा, यह मैं नहीं जानता। मगर जिसने तन, मन और धन यानी सर्वस्व अुसे सौंप दिया है, वह यह मानता हो कि वह खुद कुछ कर रहा है, तो कहा जायगा कि वह चोर बन गया है। अेक भी काम मैं करता हूँ, अैसा मूर्च्छामें मानकर मैं पाप नहीं कमाअूँगा। मूर्च्छामें भी मैं अैसा मान लेता होअूँ कि यह तो मैंने किया, या लौकिक भाषामें विनोदके लिअे या घुन्ना न दीखनेके खयालसे कहता होअूँ, तो यह मूर्खता है। सच तो यह है कि दिन-दिन शून्यता बढ़ती जाती है, अिसलिअे जब यह गर्व मनमें आ जाता है कि मैं कर रहा हूँ, तब दुःख होता है।"

४-११-'३२

अस्पृश्यताके बारेमें अब तकका सारा अिकट्ठा हुआ पत्र-व्यवहार कल बापूने रातको सब साफ कर दिया। बहुतोंको अपने वक्तव्यका अिंतज़ार करनेको कह दिया। और रातको ही वक्तव्य लिखवाना शुरू कर दिया। १८ पन्नेका यह बयान अेक चिरस्थायी साहित्यके रूपमें रह जायगा।

अेण्ड्रूज़का सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें जवाब दिया:

"प्यारे चार्ली,

"मुझे दो पत्रोंका जवाब देना है। बेशक तुम्हारा निर्णय ठीक है। तुम्हारे यहाँकी अस्पृश्यताका प्रश्न अेक तरहसे हमारे यहाँसे ज्यादा पेचीदा है।

गांधी जब तक सविनयभंग नहीं छोड़ता, तब तक मिलनेकी अिजाज़त नहीं मिलेगी, यह जवाब पाँच दिन पहले शौकतअलीको देनेवाले यह लिखें कि अस्पृश्यताके बारेमें बापू किसीसे भी मुलाक़ात कर सकते हैं, तो अिसके लिअे क्या कहा जाय? मगर चमत्कारको नमस्कार है। कल मगनभाअी देसाअीको पत्र लिखते हुअे बापूने जिस अनासक्तिको साधनेका बताया है और अुस पत्रमें जो अीश्वरार्पण बुद्धि दिखाअी देती है, कहा जा सकता है कि यह अुसीका शुद्ध फल है। अैसे फल अभी कितने ही निकलेंगे। मगनभाअीके नाम पत्र :

"जैसे-जैसे अीश्वर पर आस्था बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे कर्तव्य-कर्ममें रस बढ़ता जाता है, जानकारी बढ़ती जाती है, सावधानी बढ़ती जाती है और अुसीके साथ निश्चिन्तता और धीरज बढ़ता जाता है, यह मेरा अनुभव दृढ़ होता जाता है। . . .

"मेरी श्रद्धा अमर्यादित है, अिसलिअे मैं यह मानता हूँ कि छोटा-बड़ा सब कुछ अीश्वर ही कराता है। वह यह किस तरह कराता होगा, यह मैं नहीं जानता। मगर जिसने तन, मन और धन यानी सर्वस्व अुसे सौंप दिया है, वह यह मानता हो कि वह खुद कुछ कर रहा है, तो कहा जायगा कि वह चोर बन गया है। अेक भी काम मैं करता हूँ, अैसा मूर्च्छामें मानकर मैं पाप नहीं कमाअूँगा। मूर्च्छामें भी मैं अैसा मान लेता होअूँ कि यह तो मैंने किया, या लौकिक भाषामें विनोदके लिअे या घुन्ना न दीखनेके खयालसे कहता होअूँ, तो यह मूर्खता है। सच तो यह है कि दिन-दिन शून्यता बढ़ती जाती है, अिसलिअे जब यह गर्व मनमें आ जाता है कि मैं कर रहा हूँ, तब दुःख होता है।"

४–११–'३२

अस्पृश्यताके बारेमें अब तकका सारा अिकट्ठा हुआ पत्र-व्यवहार कल बापूने रातको सब साफ़ कर दिया। बहुतोंको अपने वक्तव्यका अिंतज़ार करनेको कह दिया। और रातको ही वक्तव्य लिखवाना शुरू कर दिया। १८ पन्नेका यह बयान अेक चिरस्थायी साहित्यके रूपमें रह जायगा।

अेण्ड्रूज़का सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें जवाब दिया :

"प्यारे चार्ली,

"मुझे दो पत्रोंका जवाब देना है। बेशक तुम्हारा निर्णय ठीक है। तुम्हारे यहाँकी अस्पृश्यताका प्रश्न अेक तरहसे हमारे यहाँसे ज्यादा पेचीदा है।

बापू: "हाँ, यह मेरे मनमें न 'हो,' सो बात नहीं है। मगर मैं जो बात कह रहा था वह तो अिस परिषद्का अच्छा नतीजा न निकले तब तक अुपवास करनेकी थी।"

मैं: "तब तो यह अेक बन्दूक हुअी।"

बापू: "हाँ।"

मैं: "यह बात मेरे गले नहीं अुतरती। पहली बात ही गले अुतरती है। अुसके विरुद्ध कोअी बोल ही नहीं सकता। अुसमें परिणाम पैदा करने पर जोर नहीं, वह सिर्फ आत्मशुद्धि और शुभेच्छाका ही चिन्ह है।"

बापू: "यह सब ठीक है। मगर तब तो वह गुप्त रूपसे ही करना चाहिये न? सरकारको खबर दें और वह जाहिर करनेकी मेहरबानी करे या न करे, तब तक तो परिषद पूरी हो जाय!"

मैं: "मगर हम अुसकी भी परवाह न करें!"

बापू: "मगर अिस पर अेक आपत्ति है। सरकार यह सोच सकती है कि अिसे किसी न किसी तरह बाहर निकलना ही है।"

मैं: "बेशक यह आपत्ति घातक है।"

बापू: "क्यों वल्लभभाअी, तुम क्या कहते हो?"

वल्लभभाअी: (चिढ़कर) "अब आप जरा लोगोंको आरामसे बैठने दीजिये! बेचारे वहाँ जमा हुअे हैं, अुन्हें जो सूझेगा सो करेंगे। तब फिर आप अिस तरह तमंचा दिखा कर किसलिअे लोगोंको घबराहटमें डालते हैं? दूसरे लोगोंको भी लगेगा कि यह आदमी तो निठल्ला है, बात बातमें अुपवास ही करता रहता है। छूटनेके लिअे यह बहाना है, अैसा भी मान सकते हैं।"

बापू: (हँसकर) "मगर महादेव कहता है वैसा अुपवास?"

वल्लभभाअी: "किसी भी तरहका नहीं!"

बापू: "तो अध्यक्ष महोदयकी बिलकुल नामंजूरी ही है न?"

वल्लभभाअी: "हाँ।"

बापू: "खैर, तो यह बात खतम हुअी। तुम जिसके लिअे अिनकार कर दो, वह हो सकता है?"

वल्लभभाअी: "यह तो हमारी परीक्षा लेनेको आपने पूछा था। आप तो अैसे हैं कि हम हाँ कहें, तो आप ना कहेंगे और हम ना कहेंगे, तो आप हाँ कहेंगे!"

बापू: "वाह, तब तो मुझे सचमुच अुपवास करना चाहिये न?"

वल्लभभाअी: (हँसकर) "अुपवास करना हो तो अिन सब गोलमेज़ परिषद्में जानेवालोंके विरुद्ध कीजिये न!"

बापू: "हाँ, यह मेरे मनमें न 'हो,' सो बात नहीं है। मगर मैं जो बात कह रहा था वह तो अिस परिषद्का अच्छा नतीजा न निकले तब तक अुपवास करनेकी थी।"

मैं: "तब तो यह अेक बन्दूक हुअी।"

बापू: "हाँ।"

मैं: "यह बात मेरे गले नहीं अुतरती। पहली बात ही गले अुतरती है। अुसके विरुद्ध कोअी बोल ही नहीं सकता। अुसमें परिणाम पैदा करने पर जोर नहीं, वह सिर्फ आत्मशुद्धि और शुभेच्छाका ही चिन्ह है।"

बापू: "यह सब ठीक है। मगर तब तो वह गुप्त रूपसे ही करना चाहिये न? सरकारको खबर दें और वह जाहिर करनेकी मेहरबानी करे या न करे, तब तक तो परिषद् पूरी हो जाय!"

मैं: "मगर हम अुसकी भी परवाह न करें!"

बापू: "मगर अिस पर अेक आपत्ति है। सरकार यह सोच सकती है कि अिसे किसी न किसी तरह बाहर निकलना ही है।"

मैं: "बेशक यह आपत्ति घातक है।"

बापू: "क्यों वल्लभभाअी, तुम क्या कहते हो?"

वल्लभभाअी: (चिढ़कर) "अब आप जरा लोगोंको आरामसे बैठने दीजिये! बेचारे वहाँ जमा हुअे हैं, अुन्हें जो सूझेगा सो करेंगे। तब फिर आप अिस तरह तमंचा दिखा कर किसलिअे लोगोंको घबराहटमें डालते हैं? दूसरे लोगोंको भी लगेगा कि यह आदमी तो निठल्ला है, बात बातमें अुपवास ही करता रहता है। छूटनेके लिअे यह बहाना है, अैसा भी मान सकते हैं।"

बापू: (हँसकर) "मगर महादेव कहता है वैसा अुपवास?"

वल्लभभाअी: "किसी भी तरहका नहीं!"

बापू: "तो अध्यक्ष महोदयकी बिल्कुल नामंजूरी ही है न?"

वल्लभभाअी: "हाँ।"

बापू: "खैर, तो यह बात खतम हुअी। तुम जिसके लिअे अिनकार कर दो, वह हो सकता है?"

वल्लभभाअी: "यह तो हमारी परीक्षा लेनेको आपने पूछा था। आप तो अैसे हैं कि हम हाँ कहें, तो आप ना कहेंगे और हम ना कहेंगे, तो आप हाँ कहेंगे!"

बापू: "वाह, तब तो मुझे सचमुच अुपवास करना चाहिये न?"

वल्लभभाअी: (हँसकर) "अुपवास करना हो तो अिन सब गोलमेज़ परिषद्में जानेवालोंके विरुद्ध कीजिये न!"

"अखबारोंके नाम दिये हुअे बयानमें मैंने अपनी स्थिति समझानेका प्रयत्न किया है। आपने मेरा बयान देखा होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि आपको अिससे सन्तोष हुआ या नहीं। जैसा मैं हमेशासे करता आया हूँ, जाति और वर्णमें मैं निश्चित रूपमें फ़र्क मानता हूँ। जातियाँ असंख्य हैं और आजकी अुनकी हालतमें वे हिन्दू समाज पर बोझकी तरह हैं। अिसीलिअे आप और मैं जातिभेदका पालन नहीं करते। वर्ण दूसरे सिद्धान्त पर रचे गये हैं। वर्णका अर्थ धन्धा होता है। भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारके साथ अुसका कोअी वास्ता नहीं। चारों मुख्य धन्धोंवाले लोग पहले अेक-दूसरेके साथ खाते और अेक-दूसरेके साथ शादियाँ भी करते थे। और अैसा करनेसे स्वाभाविक रीतिसे ही अुनके वर्णको कोअी आँच नहीं आती थी। भगवद्गीतामें अलग-अलग वर्णोंकी जो व्याख्या दी गअी है, अुस परसे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। मनुष्य जब अपने बाप-दादेका धन्धा छोड़ देता है, तब वह वर्णसे पतित हो जाता है। आज तो हमारे लिअे वर्णधर्म खोया हुआ धन है। समाजमें पूरी तरह गड़बड़ हो गअी है। जहाँ तक मुझे दिखाअी देता है, वहाँ तक अेक ही वर्ण है, और वह है शूद्र। वर्णोंकी यह गड़बड़ हमारे लिअे शर्मकी बात है। मगर हम सब अपनेको शूद्र कहें, तो अिसमें कोअी शर्मकी बात नहीं, क्योंकि धर्ममें कोअी अूँचा या कोअी नीचा नहीं। शूद्रका पेशा अुतना ही प्रतिष्ठित और आवश्यक है जितना ब्राह्मणका। अिसी तरह क्षत्रिय और वैश्यके बारेमें है। अपनेको शूद्र कहनेमें हमारे अभिमानको चोट पहुँचती हो, तो अुसका कोअी अुपाय नहीं। अेक क्षणके विचारसे आप यह समझ सकेंगे। यह सुन्दर स्थिति आम तौर पर स्वीकार कर ली जाय, तो हरिजनोंका दर्जा तय करनेकी कठिनाअी हल हो जाती है। अुन्हें समाजमें अपनाने पर कौनसे वर्णके माने जायँ? हम यह कहें कि शूद्र वर्णके, तो हम तुरन्त यह मान लेते हैं कि वर्ण-धर्ममें अलग-अलग दर्जे हैं। और सबसे नीचा दर्जा हरिजनोंको दिया जाय, तो अिस पर अुनका आपत्ति करना वाजिब ही है। मगर हम सभी शूद्र बन जायँ, तो कोअी मुश्किल नहीं रहती। १९१५ में नेलोरमें अेक समाज सुधारकोंकी सभामें, मुझे याद है, अेक विद्वान् शास्त्रीने सुझाया था कि वर्णोंकी गड़बड़ हो गअी है, अिसलिअे जैसे शुरूमें ब्राह्मणोंका ही अेक वर्ण था, वैसे ही अब हम सबको ब्राह्मण कहलाना चाहिये। यह बात मुझे अुस वक्त पसन्द नहीं आअी थी और आज अुससे भी कम पसन्द हो सकती है। हरअेक आदमी सेवा कर सकता है और अिसलिअे वह शूद्र कहला सकता है। मगर हरअेक आदमी विद्वान् नहीं बन सकता और हरअेक ज्ञानी तो हो ही नहीं सकता। अिसलिअे हम सबके ब्राह्मण कहलानेमें असत्य है। आज भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारमें

“ अखबारोंकि नाम दिये हुअे बयानमें मैंने अपनी स्थिति समझानेका प्रयत्न किया है। आपने मेरा बयान देखा होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि आपको अिससे सन्तोष हुआ या नहीं। जैसा मैं हमेशासे करता आया हूँ, जाति और वर्णमें मैं निश्चित रूपमें फ़र्क मानता हूँ। जातियाँ असंख्य हैं और आजकी अुनकी हालतमें वे हिन्दू समाज पर बोझकी तरह हैं। अिसीलिअे आप और मैं जातिभेदका पालन नहीं करते। वर्ण दूसरे सिद्धान्त पर रचे गये हैं। वर्णका अर्थ धन्धा होता है। भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारके साथ अुसका कोअी वास्ता नहीं। चारों मुख्य धन्धोंवाले लोग पहले अेक-दूसरेके साथ खाते और अेक-दूसरेके साथ शादियाँ भी करते थे। और अैसा करनेसे स्वाभाविक रीतिसे ही अुनके वर्णको कोअी आँच नहीं आती थी। भगवद्गीतामें अलग-अलग वर्णोंकी जो व्याख्या दी गअी है, अुस परसे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। मनुष्य जब अपने बाप-दादेका धन्धा छोड़ देता है, तब वह वर्णसे पतित हो जाता है। आज तो हमारे लिअे वर्णधर्म खोया हुआ धन है। समाजमें पूरी तरह गड़बड़ हो गअी है। जहाँ तक मुझे दिखाअी देता है, वहाँ तक अेक ही वर्ण है, और वह है शूद्र। वर्णोंकी यह गड़बड़ हमारे लिअे शर्मकी बात है। मगर हम सब अपनेको शूद्र कहें, तो अिसमें कोअी शर्मकी बात नहीं, क्योंकि धर्ममें कोअी अूँचा या कोअी नीचा नहीं। शूद्रका पेशा अुतना ही प्रतिष्ठित और आवश्यक है जितना ब्राह्मणका। अिसी तरह क्षत्रिय और वैश्यके बारेमें है। अपनेको शूद्र कहनेमें हमारे अभिमानको चोट पहुँचती हो, तो अुसका कोअी अुपाय नहीं। अेक क्षणके विचारसे आप यह समझ सकेंगे। यह सुन्दर स्थिति आम तौर पर स्वीकार कर ली जाय, तो हरिजनोंका दर्जा तय करनेकी कठिनाअी हल हो जाती है। अुन्हें समाजमें अपनाने पर कौनसे वर्णके माने जायँ? हम यह कहें कि शूद्र वर्णके, तो हम तुरन्त यह मान लेते हैं कि वर्ण-धर्ममें अलग-अलग दर्जे हैं। और सबसे नीचा दर्जा हरिजनोंको दिया जाय, तो अिस पर अुनका आपत्ति करना वाजिब ही है। मगर हम सभी शूद्र बन जायँ, तो कोअी मुश्किल नहीं रहती। १९१५ में नेलोरमें अेक समाज सुधारकोंकी सभामें, मुझे याद है, अेक विद्वान् शास्त्रीने सुझाया था कि वर्णोंकी गड़बड़ हो गअी है, अिसलिअे जैसे शुरूमें ब्राह्मणोंका ही अेक वर्ण था, वैसे ही अब हम सबको ब्राह्मण कहलाना चाहिये। यह बात मुझे अुस वक्त पसन्द नहीं आअी थी और आज अुससे भी कम पसन्द हो सकती है। हरअेक आदमी सेवा कर सकता है और अिसलिअे वह शूद्र कहला सकता है। मगर हरअेक आदमी विद्वान् नहीं बन सकता और हरअेक ज्ञानी तो हो ही नहीं सकता। अिसलिअे हम सबके ब्राह्मण कहलानेमें असत्य है। आज भोजन-व्यवहार और कन्या-व्यवहारमें

कसौटी रखी गअी है, जिसको अेक बालक भी समझ सकता है । जो बुद्धिग्राह्य वस्तु नहीं है और बुद्धिसे विपरीत है, वह कभी धर्म नहीं हो सकती है; और जो सत्य और अहिंसासे विपरीत है, वह भी धर्म नहीं हो सकती है ।

"अब रही यरवडा समझौतेकी बात । कमसे कम मेरे नज़दीक 'वोट'की गिनतीकी वह बात किसी हालतमें नहीं थी । मेरे नज़दीक हरिजन भाअियोंका अंग्रेजी प्रधानमण्डलके प्रस्तावसे जो बुरा हो रहा था अुसीको मिटानेकी बात थी । अनशन व्रतके बारेमें आपसे मैं क्या विनय करूँ? अितना ही कह सकता हूँ कि वह अीश्वर प्रेरित बात थी, अुसको मैं रोक ही नहीं सकता था ।"

वल्लभभाअीकी टीका: "अैसोंके साथ विनय क्या? ये विनय सुननेवाले हैं?"

बापू: "क्यों नहीं? अनसारीमें क्या विनय नहीं है? जोहरामें नहीं है? रेहानामें नहीं है? बेगम मुहम्मद आलममें विनयका पार है? बात यह है कि अिसे हमें जो कहना था सो कह दिया कि भाअी हिन्दू धर्म हम समझते हैं, तुम नहीं समझ सकते; अिसलिअे अिसमें सिर न पचाओ ।"

अेक मोढ़ पत्रिका भेजनेवालेको लिखा:

"मोढ़ोंकी सेवाके बजाय हिन्दुस्तानी मात्रकी सेवा क्यों नहीं? ये छोटे-छोटे वाड़े कहाँ तक बने रहेंगे? बुजुर्गोंको पसन्द न हो और जिनसे हो कुछ भी नहीं, अैसे आन्दोलनोंमें क्या पड़ना? और यह नहीं मानना चाहिये कि अिस तरह पर्चे बढ़ते रहें, तो अुनसे कोअी लाभ होता है ।"

मालिक और ट्रस्टीका भेद सतीशबाबूके बीमार लड़केको समझाया:

"तुझे जब मैंने कहा था कि शरीरको अपना नहीं मानना चाहिये, तब मेरे कहनेका अर्थ, मैं आशा रखता हूँ कि तू अच्छी तरह समझ गया होगा । यह शरीर अीश्वरका है । अीश्वरने वह तुझे थोड़े समयके लिअे स्वच्छ और नीरोग रखनेके लिअे और अुसे सेवामें लगानेके लिअे दिया है । अिसलिअे तू अुसका ट्रस्टी है, मालिक नहीं । मालिक अपनी सम्पत्तिका दुरुपयोग भी कर सकता है, मगर ट्रस्टी या रक्षकको तो बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये । सौंपी हुअी सम्पत्तिका अुसे अच्छेसे अच्छा अुपयोग करना है । अिसलिअे तुझे अपने शरीरके बारेमें चिन्ता तो नहीं करनी चाहिये, मगर साथ ही अुसकी भरसक सँभाल अवश्य रखनी चाहिये । अीश्वरकी जब अिच्छा होगी, तब वह अिसे वापस ले लेगा ।"

गोविन्ददासकी पत्नी लिखती है: "आपने मुझे तो लड़की मान लिया, मगर अिन्हें लड़का नहीं माना, अिस पर अिन्हें दुःख हुआ है । मैंने कहा कि लड़का और दामाद तो अेक ही बात है ।" अुसे लिखा (हिन्दीमें):

कसौटी रखी गअी है, जिसको अेक बालक भी समझ सकता है। जो बुद्धिग्राह्य वस्तु नहीं है और बुद्धिसे विपरीत है, वह कभी धर्म नहीं हो सकती है; और जो सत्य और अहिंसासे विपरीत है, वह भी धर्म नहीं हो सकती है।

"अब रही यरवडा समझौतेकी बात। कमसे कम मेरे नज़दीक 'वोट'की गिनतीकी वह बात किसी हालतमें नहीं थी। मेरे नज़दीक हरिजन भाअियोंका अंग्रेजी प्रधानमण्डलके प्रस्तावसे जो बुरा हो रहा था अुसीको मिटानेकी बात थी। अनशन व्रतके बारेमें आपसे मैं क्या विनय करूँ? अितना ही कह सकता हूँ कि वह अीश्वर प्रेरित बात थी, अुसको मैं रोक ही नहीं सकता था।"

वल्लभभाअीकी टीका: "अैसोंके साथ विनय क्या? ये विनय सुननेवाले हैं?"

बापू: "क्यों नहीं? अनसारीमें क्या विनय नहीं है? जोहरामें नहीं है? रेहानामें नहीं है? बेगम मुहम्मद आलममें विनयका पार है? बात यह है कि अिसे हमें जो कहना था सो कह दिया कि भाअी हिन्दू धर्म हम समझते हैं, तुम नहीं समझ सकते; अिसलिअे अिसमें सिर न पचाओ।"

अेक मोढ़ पत्रिका भेजनेवालेको लिखा:

"मोढ़ोंकी सेवाके बजाय हिन्दुस्तानी मात्रकी सेवा क्यों नहीं? ये छोटे-छोटे वाड़े कहाँ तक बने रहेंगे? बुजुर्गोंको पसन्द न हो और जिनसे हो कुछ भी नहीं, अैसे आन्दोलनोंमें क्या पड़ना? और यह नहीं मानना चाहिये कि अिस तरह पर्चे बढ़ते रहें, तो अुनसे कोअी लाभ होता है।"

मालिक और ट्रस्टीका भेद सतीशबाबूके बीमार लड़केको समझाया:

"तुझे जब मैंने कहा था कि शरीरको अपना नहीं मानना चाहिये, तब मेरे कहनेका अर्थ, मैं आशा रखता हूँ कि तू अच्छी तरह समझ गया होगा। यह शरीर अीश्वरका है। अीश्वरने वह तुझे थोड़े समयके लिअे स्वच्छ और नीरोग रखनेके लिअे और अुसे सेवामें लगानेके लिअे दिया है। अिसलिअे तू अुसका ट्रस्टी है, मालिक नहीं। मालिक अपनी सम्पत्तिका दुरुपयोग भी कर सकता है, मगर ट्रस्टी या रक्षकको तो बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये। सौंपी हुअी सम्पत्तिका अुसे अच्छेसे अच्छा अुपयोग करना है। अिसलिअे तुझे अपने शरीरके बारेमें चिन्ता तो नहीं करनी चाहिये, मगर साथ ही अुसकी भरसक सँभाल अवश्य रखनी चाहिये। अीश्वरकी जब अिच्छा होगी, तब वह अिसे वापस ले लेगा।"

गोविन्ददासकी पत्नी लिखती है: "आपने मुझे तो लड़की मान लिया, मगर अिन्हें लड़का नहीं माना, अिस पर अिन्हें दुःख हुआ है। मैंने कहा कि लड़का और दामाद तो अेक ही बात है।" अुसे लिखा (हिन्दीमें):

आदमी हूँ कि हार गये हों, तो हार माननेमें सत्याग्रहीको शर्म न होनी चाहिये। मगर यह तो मुल्तवी करनेकी बात है, जिससे हम बादमें लड़ाअी ज्यादा अच्छी तरह चला सकें। सम्भव है अिसे ये लोग नामंजूर ही कर दें। जैसे करबलाकी लड़ाअीमें हुआ था कि यज़ीदको अिमाम हुसैनने सन्देश भेजा था कि मुझे लड़ना नहीं है, लड़ सकनेकी हालत नहीं है, बच्चे पानीके बिना तड़प रहे हैं। अिस पर वह कहने लगा: 'आकर मेरा हाथ चूम और मुझे खलीफ़ा मान।' तब हुसैनने कहा: 'तब तो हम मरना मंजूर करेंगे।' मैं मुल्तवी रखनेकी बात कह रहा हूँ। अुनकी सत्ता मंजूर करनेकी बात ही नहीं है। हमारी तरफसे लड़ाअी बन्द होती है; अुन्हें बन्द करना हो तो करें, नहीं तो न करें।"

वल्लभभाअी: "मुल्तवी नहीं कर सकते सो बात नहीं। मगर अुन्हें तो यही लगेगा न कि जो वे चाहते थे सो हो गया? और जो लड़ रहे हैं अुनका क्या होगा?"

बापू: "अुन्हें लड़ने दिया जाय; सिर्फ़ व्यापक रूप ही मिट जायगा।"

वल्लभभाअीने कोअी जवाब नहीं दिया, परेशान हुअे, व्याकुल हुअे। थोड़ी देर तक यही हालत रही। तब बापू कहने लगे: "यह तो मैंने तुम्हें कह दिया। अब अिस पर विचार करना और बादमें जवाब देना। हमें जल्दी नहीं है।"

अिसके बाद वल्लभभाअी चले गये। मैं और बापू अकेले चक्कर काटने लगे। मुझे कहने लगे: "तुम्हें क्या लगता है?"

मैंने कहा: "अगर लड़ाअी मुल्तवी करनी हो तो राजगोपालाचार्य करें; अुन्हें कौन रोकता है? मगर हम क्यों सुझायें? मुल्तवी की जा सकती है, यह मैं समझता हूँ। अिसमें कोअी सविनयभंग भूल जाने या अुससे अलग हो जानेकी बात नहीं। आप अेक तरहसे पीछे हटनेकी तो बात ज़रूर करते हैं न? मगर यह सूचना हमारी तरफसे किसलिअे जाय?"

बापू: "अगर यह सूचना अुचित हो, तो हमारी तरफसे क्यों नहीं जाय? सत्याग्रहीको तो हमेशा खुले तौर पर विचार करना चाहिये। सत्याग्रहीके अंतरमें क्या है, अुसे सारी दुनिया जान ले यह ज़रूरी है। और जैसा तुम कहते हो यह पीछे हटनेकी नहीं, मगर सिर्फ मोर्चा बदलनेकी बात है। लड़ाअी जारी ही रहेगी, परन्तु दूसरे मोर्चे पर। अुपवासके बाद जो बयान दिया और अुपवासके दिनोंमें जो बयान दिया, अुसमें भी मैं तो खुले तौर पर ही विचार कर रहा था न? सरकारको भी अजीब ही लगेगा कि ये कैसे लड़नेवाले हैं! अुपवासके समय

आदमी हूँ कि हार गये हों, तो हार माननेमें सत्याग्रहीको शर्म न होनी चाहिये। मगर यह तो मुल्तवी करनेकी बात है, जिससे हम बादमें लड़ाअी ज्यादा अच्छी तरह चला सकें। सम्भव है अिसे ये लोग नामंजूर ही कर दें। जैसे करबलाकी लड़ाअीमें हुआ था कि यज़ीदको अिमाम हुसैनने सन्देश भेजा था कि मुझे लड़ना नहीं है, लड़ सकनेकी हालत नहीं है, बच्चे पानीके बिना तड़प रहे हैं। अिस पर वह कहने लगा: 'आकर मेरा हाथ चूम और मुझे खलीफ़ा मान।' तब हुसैनने कहा: 'तब तो हम मरना मंजूर करेंगे।' मैं मुल्तवी रखनेकी बात कह रहा हूँ। अुनकी सत्ता मंजूर करनेकी बात ही नहीं है। हमारी तरफसे लड़ाअी बन्द होती है; अुन्हें बन्द करना हो तो करें, नहीं तो न करें।"

वल्लभभाअी: "मुल्तवी नहीं कर सकते सो बात नहीं। मगर अुन्हें तो यही लगेगा न कि जो वे चाहते थे सो हो गया? और जो लड़ रहे हैं अुनका क्या होगा?"

बापू: "अुन्हें लड़ने दिया जाय; सिर्फ़ व्यापक रूप ही मिट जायगा।"

वल्लभभाअीने कोअी जवाब नहीं दिया, परेशान हुअे, व्याकुल हुअे। थोड़ी देर तक यही हालत रही। तब बापू कहने लगे: "यह तो मैंने तुम्हें कह दिया। अब अिस पर विचार करना और बादमें जवाब देना। हमें जल्दी नहीं है।"

अिसके बाद वल्लभभाअी चले गये। मैं और बापू अकेले चक्कर काटने लगे। मुझे कहने लगे: "तुम्हें क्या लगता है?"

मैंने कहा: "अगर लड़ाअी मुल्तवी करनी हो तो राजगोपालाचार्य करें; अुन्हें कौन रोकता है? मगर हम क्यों सुझायें? मुल्तवी की जा सकती है, यह मैं समझता हूँ। अिसमें कोअी सविनयभंग भूल जाने या अुससे अलग हो जानेकी बात नहीं। आप अेक तरहसे पीछे हटनेकी तो बात ज़रूर करते हैं न? मगर यह सूचना हमारी तरफसे किसलिअे जाय?"

बापू: "अगर यह सूचना अुचित हो, तो हमारी तरफसे क्यों नहीं जाय? सत्याग्रहीको तो हमेशा खुले तौर पर विचार करना चाहिये। सत्याग्रहीके अंतरमें क्या है, अुसे सारी दुनिया जान ले यह ज़रूरी है। और जैसा तुम कहते हो यह पीछे हटनेकी नहीं, मगर सिर्फ मोर्चा बदलनेकी बात है। लड़ाअी जारी ही रहेगी, परन्तु दूसरे मोर्चे पर। अुपवासके बाद जो बयान दिया और अुपवासके दिनोंमें जो बयान दिया, अुसमें भी मैं तो खुले तौर पर ही विचार कर रहा था न? सरकारको भी अजीब ही लगेगा कि ये कैसे लड़नेवाले हैं! अुपवासके समय

अुनके अनुसार हमें बुद्धि सूझती है। अिन संस्कारोंको मिटानेकी शक्ति अीश्वरने सबको दी है। अिसका जो अुपयोग करेगा, वह अिनको मिटा सकता है।"

आज दोपहरको प्यारेलाल, कोदण्डराव और अे० पी० आअी० के शास्त्री आये। 'अिंडियन सोशियल रिफ़ॉर्मर' में अुपवासके दिनोंमें बापूके नाम श्रीमती ज़गलूल पाशा और नहास पाशाके आये हुअे तारों और अुनके बापूके दिये हुअे जवाबोंकी कथित नक़लें 'फ्री प्रेस जर्नल' से ली हुअी आअी थीं। हमको मिले हुअे तारों और यहाँसे गये हुअे जवाबोंमें और अिनमें बहुत फ़र्क़ था, यह देखकर आश्चर्य हुआ। 'फ्री प्रेस' पर गुस्सा आया। अैसा सवाल अुठा कि ये जवाब अिसने पैदा कर लिये होंगे। बापूने सच्ची नक़ल मुझसे ढुँढ़वा ली और अिस पर अेक तेज मुलाक़ात देनेकी तैयारीमें थे। अितनेमें प्यारेलालसे मालूम हुआ कि ये सब तार अुपवासके दिनोंमें छपे हों या न छपे हों, मगर हालमें 'अलबलाग' नामके अरब अखबारमें मिस्री भाषासे आये थे और अब अरबीसे अंग्रेज़ीमें प्रकाशित हुअे हैं! किसी भी चीज़के सभी पहलू हमें मालूम ही नहीं होते। और अिससे यह अच्छी तरह समझमें आ गया कि किसी भी बातमें क्रोध आ जाय, तो यह मान लेना ही अुचित है कि कोअी न कोअी पहलू हमसे अज्ञात रहा होगा।

बापू यहाँ सिंगरकी सीनेकी मशीन चलाते हैं, अैसी खबर 'फ्री प्रेस' अख़बारने अुड़ाअी थी और अुस बारेमें बापूने पोलाकको लिखा था। अुस मामलेमें भी अैसा ही हुआ था, यह आज ही मालूम हुआ। अुसका जो प्रतिनिधि अिसके लिअे ज़िम्मेदार था, अुसने सफ़ाअी दी कि 'मगन रेंटियो' 'मगन रेंटियो' ('मगन चरखा') अिस तरह दो-तीन बार मैंने टेलीफोनमें कहा। अुसे बम्बअीवालोंने 'मदर अिण्डिया' समझ लिया। और यह चरखा सिंगरकी सीनेकी मशीनकी तरह चलता है, अिस बातका यह अर्थ निकाला कि सीनेकी मशीन चलाते हैं। अिसलिअे अिसमें भी किसीका जानबूझकर तो क़सूर ही नहीं हुआ।

अे० पी० आअी० के शास्त्रीको बापूने गुरुवायुरके बारेमें सुन्दर मुलाकात दी। अेकाग्र चित्तसे, अेक भी शब्द पर रुके बिना, सतत प्रवाह चला जा रहा था। हिन्दू धर्म पर लोग क्यों क़ायम हैं, अिस सवालके जवाबमें कहा: "क्योंकि अुसमें अधिकसे अधिक विकास पानेका मौक़ा देनेकी सम्भावना है और कठोरसे कठोर अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको सन्तोष देनेकी शक्ति है।"

शास्त्रीने तो सारी रिपोर्ट अच्छे ढंगसे ली थी, फिर भी अख़बारवालोंने "गहरेसे गहरे विचारककी कठोरसे कठोर अन्तरात्माको" बना दिया!

अुनके अनुसार हमें बुद्धि सूझती है। अिन संस्कारोंको मिटानेकी शक्ति अीश्वरने सबको दी है। अिसका जो अुपयोग करेगा, वह अिनको मिटा सकता है।"

आज दोपहरको प्यारेलाल, कोदण्डराव और अे० पी० आअी० के शास्त्री आये। 'अिंडियन सोशियल रिफ़ॉर्मर' में अुपवासके दिनोंमें बापूके नाम श्रीमती ज़गलूल पाशा और नहास पाशाके आये हुअे तारों और अुनके बापूके दिये हुअे जवाबोंकी कथित नक़लें 'फ्री प्रेस जर्नल' से ली हुअी आअी थीं। हमको मिले हुअे तारों और यहाँसे गये हुअे जवाबोंमें और अिनमें बहुत फ़र्क़ था, यह देखकर आश्चर्य हुआ। 'फ्री प्रेस' पर गुस्सा आया। अैसा सवाल अुठा कि ये जवाब अिसने पैदा कर लिये होंगे। बापूने सच्ची नक़ल मुझसे ढुँढ़वा ली और अिस पर अेक तेज मुलाक़ात देनेकी तैयारीमें थे। अितनेमें प्यारेलालसे मालूम हुआ कि ये सब तार अुपवासके दिनोंमें छपे हों या न छपे हों, मगर हालमें 'अलबलाग' नामके अरब अखबारमें मिस्री भाषासे आये थे और अब अरबीसे अंग्रेज़ीमें प्रकाशित हुअे हैं! किसी भी चीज़के सभी पहलू हमें मालूम ही नहीं होते। और अिससे यह अच्छी तरह समझमें आ गया कि किसी भी बातमें क्रोध आ जाय, तो यह मान लेना ही अुचित है कि कोअी न कोअी पहलू हमसे अज्ञात रहा होगा।

बापू यहाँ सिंगरकी सीनेकी मशीन चलाते हैं, अैसी खबर 'फ्री प्रेस' अख़बारने अुड़ाअी थी और अुस बारेमें बापूने पोलाकको लिखा था। अुस मामलेमें भी अैसा ही हुआ था, यह आज ही मालूम हुआ। अुसका जो प्रतिनिधि अिसके लिअे ज़िम्मेदार था, अुसने सफ़ाअी दी कि 'मगन रेंटियो' 'मगन रेंटियो' ('मगन चरखा') अिस तरह दो-तीन बार मैंने टेलीफोनमें कहा। अुसे बम्बअीवालोंने 'मदर अिण्डिया' समझ लिया। और यह चरखा सिंगरकी सीनेकी मशीनकी तरह चलता है, अिस बातका यह अर्थ निकाला कि सीनेकी मशीन चलाते हैं। अिसलिअे अिसमें भी किसीका जानबूझकर तो क़सूर ही नहीं हुआ।

अे० पी० आअी० के शास्त्रीको बापूने गुरुवायुरके बारेमें सुन्दर मुलाकात दी। अेकाग्र चित्तसे, अेक भी शब्द पर रुके बिना, सतत प्रवाह चला जा रहा था। हिन्दू धर्म पर लोग क्यों क़ायम हैं, अिस सवालके जवाबमें कहा: "क्योंकि अुसमें अधिकसे अधिक विकास पानेका मौक़ा देनेकी सम्भावना है और कठोरसे कठोर अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको सन्तोष देनेकी शक्ति है।"

शास्त्रीने तो सारी रिपोर्ट अच्छे ढंगसे ली थी, फिर भी अख़बारवालोंने "गहरेसे गहरे विचारककी कठोरसे कठोर अन्तरात्माको" बना दिया!

है। गीताका अभ्यास करनेवाला कोअी चिन्ता कर ही नहीं सकता। अैसी आज्ञा है कि सब कुछ अीश्वरके अर्पण कर दो। सब कुछ यानी किसी भी अपवादके बिना। और अिस तरह जो सर्वार्पण करेगा, वह फिर चिन्ताकी गठरीका भार क्यों अुठाये?

"तूने अब तो जान लिया होगा कि तेरे पेटकी गड़बड़ बहुत विचार और चिन्ताके कारण है, या खानपानमें किसी फेरबदलकी ज़रूरत है। बूतेसे बाहर अध्ययन भी नहीं करना चाहिये। मनके साथ तूने जो कुछ विचार कर लिये हैं, वे अब अपने आप मनमें पकते रहेंगे। तू बाहर निकलेगा तब तेरी शक्तिका अन्दाज़ लग जायगा। लगेगा या नहीं लगेगा, अिस झंझटमें तू अभीसे क्यों पड़े? अैसा करनेकी बिलकुल ज़रूरत नहीं। श्लोकोंका अर्थ 'अनासक्तियोग' में तो है ही, और सुरेन्द्र भी तेरे पास ही है। मैंने जो संग्रह किया है, अुसमें तू अपने आप या सुरेन्द्र वग़ैराकी सलाहसे कमीबेशी कर सकता है। अिन श्लोकोंके चुनावको नोट कर लिया था। मेरे पास जो गीता है, अुसमें अिन्हें नोट करते हुअे सहज भावसे मैंने अिसे 'रामदास-गीता' नाम दे दिया है। अब देखना है तुझे यह कहाँ तक ले जाती है।

"अब अेक हँसीकी बात लिखूँ। नीमूने बच्चेके नामकी माँग की। सविताने तो अुसे कहानजी नाम दे ही दिया है। अिस पर यह सोच कर कि तेरे नामके साथ मिल सके और सविताकी अिच्छा भी पूरी हो जाय, मैंने कहानदास सुझाया। लेकिन जिसके अन्तमें दास आये, वह नीमूको कैसे भाता? अिसलिअे अुसने नापसन्द किया और दूसरा नाम माँगा; और अन्तमें लिखा कि अितने पर भी तू कहानदास पसन्द कर ले, तो वह भी काम चला लेगी। वसुमतीने बुआजी होनेका दावा पेश किया और लिखा कि मैं तो अब बूढ़ा हो गया, अिसलिअे बूढ़ोंको शोभा देनेवाला नाम ढूँढ़ निकाला; यह क्या बुआजी मानेंगी? अिसलिअे अुसने अैसा नाम माँगा है, जो बीसवीं सदीको शोभा दे। वसुमतीको जवाब दे दिया है कि नाम देनेका ठेका बुआजीका ही होता है, अिसलिअे अुसे जो देना हो, वह दे दे। मैंने अुसकी पसंदगीके लिअे दो-चार नाम सुझाये हैं, जैसे कि फक्कड़लाल, छोगालाशंख, लखतरलाल, बारडोलीकर और साबरमतीवाला। और नीमूको सुझाया है निर्मललाल। और अुसे लिखा है कि यदि कहानदास नाम पसंद नहीं है, तो रामदास नाम शायद ही पसंद हो। अिसलिअे तेरे लिअे भी नया नाम माँगा है। यह तो सुझाते-सुझाते रह गया कि तेरा नाम 'निर्मलकान्त' रखें। मगर अैसा करने लगेंगे तो बीसवीं सदीके बजाय हम तो ठेठ रामायण-युगमें चले जायँगे, क्योंकि अुस ज़मानेमें पतिकी पहचान पत्नीके नामसे होती थी। रामचन्द्र सीतापति, कृष्ण लक्ष्मीकान्त,

है। गीताका अभ्यास करनेवाला कोअी चिन्ता कर ही नहीं सकता। अैसी आज्ञा है कि सब कुछ अीश्वरके अर्पण कर दो। सब कुछ यानी किसी भी अपवादके बिना। और अिस तरह जो सर्वार्पण करेगा, वह फिर चिन्ताकी गठरीका भार क्यों अुठाये?

"तूने अब तो जान लिया होगा कि तेरे पेटकी गड़बड़ बहुत विचार और चिन्ताके कारण है, या खानपानमें किसी फेरबदलकी ज़रूरत है। बूतेसे बाहर अध्ययन भी नहीं करना चाहिये। मनके साथ तूने जो कुछ विचार कर लिये हैं, वे अब अपने आप मनमें पकते रहेंगे। तू बाहर निकलेगा तब तेरी शक्तिका अन्दाज़ लग जायगा। लगेगा या नहीं लगेगा, अिस झंझटमें तू अभीसे क्यों पड़े? अैसा करनेकी बिलकुल ज़रूरत नहीं। श्लोकोंका अर्थ 'अनासक्तियोग' में तो है ही, और सुरेन्द्र भी तेरे पास ही है। मैंने जो संग्रह किया है, अुसमें तू अपने आप या सुरेन्द्र वगैराकी सलाहसे कमीबेशी कर सकता है। अिन श्लोकोंके चुनावको नोट कर लिया था। मेरे पास जो गीता है, अुसमें अिन्हें नोट करते हुअे सहज भावसे मैंने अिसे 'रामदास-गीता' नाम दे दिया है। अब देखना है तुझे यह कहाँ तक ले जाती है।

"अब अेक हँसीकी बात लिखूँ। नीमूने बच्चेके नामकी माँग की। सविताने तो अुसे कहानजी नाम दे ही दिया है। अिस पर यह सोच कर कि तेरे नामके साथ मिल सके और सविताकी अिच्छा भी पूरी हो जाय, मैंने कहानदास सुझाया। लेकिन जिसके अन्तमें दास आये, वह नीमूको कैसे भाता? अिसलिअे अुसने नापसन्द किया और दूसरा नाम माँगा; और अन्तमें लिखा कि अितने पर भी तू कहानदास पसन्द कर ले, तो वह भी काम चला लेगी। वसुमतीने बुआजी होनेका दावा पेश किया और लिखा कि मैं तो अब बूढ़ा हो गया, अिसलिअे बूढ़ोंको शोभा देनेवाला नाम ढूँढ़ निकाला; यह क्या बुआजी मानेंगी? अिसलिअे अुसने अैसा नाम माँगा है, जो बीसवीं सदीको शोभा दे। वसुमतीको जवाब दे दिया है कि नाम देनेका ठेका बुआजीका ही होता है, अिसलिअे अुसे जो देना हो, वह दे दे। मैंने अुसकी पसंदगीके लिअे दो-चार नाम सुझाये हैं, जैसे कि फक्कड़लाल, छोगालाशंख, लखतरलाल, बारडोलीकर और साबरमतीवाला। और नीमूको सुझाया है निर्मललाल। और अुसे लिखा है कि यदि कहानदास नाम पसंद नहीं है, तो रामदास नाम शायद ही पसंद हो। अिसलिअे तेरे लिअे भी नया नाम माँगा है। यह तो सुझाते-सुझाते रह गया कि तेरा नाम 'निर्मलकान्त' रखें। मगर अैसा करने लगेंगे तो बीसवीं सदीके बजाय हम तो ठेठ रामायण-युगमें चले जायँगे, क्योंकि अुस ज़मानेमें पतिकी पहचान पत्नीके नामसे होती थी। रामचन्द्र सीतापति, कृष्ण लक्ष्मीकान्त,

तेरा और अुनका विचार करनेवाला तो परमेश्वर है, यह तो अब तू नअी दृष्टिसे 'रामदास-गीता' में देखेगा। यह सिर्फ बुद्धिसे ही माननेका नहीं है, श्रद्धापूर्वक अमलमें लानेका है। अैसा करनेसे तू सुखी होगा और तुझे सब कुछ आ जायगा। नवें अध्यायमें भगवानका जो वचन है अुसे रट लेना — बड़ा दुराचारी भी अनन्य भावसे अुसकी भक्ति करे तो वह साधु है। पृथ्वी रसातलमें चली जाय, तो भी भगवानके वचन मिथ्या नहीं हो सकते। अब और क्या लिखूँ?"

राधाकान्त मालवीयका लम्बा पत्र:

"अुपवास बुरेसे बुरा बलात्कार है। आपका समझौता किसीको पसन्द नहीं आया। चिन्तामणि और कुँजरू तक को। और लोग भी यों ही 'हाँजी, हाँजी' करते हैं।" यह शिकायत थी। बापूने अिन्हें लिखा:

८-११-'३२

"श्री चिन्तामणि और श्री कुँजरूके बारेमें तुमने जो जानकारी अपने पत्रमें दी है, वह मेरे लिअे महत्त्वकी है। अिसलिअे या तो तुम्हें अुनसे अिस बातकी तसदीक और सहमति प्राप्त करके भेजनी चाहिये, या मुझे प्राप्त करनेकी स्वतंत्रता देनी चाहिये।"

फिर अिस पत्रका विस्तारसे चौथे बयानमें जवाब दिया।

अेक पंडितको (हिन्दीमें):

"बड़ी कठिनाअी सत्यपथ पर चलनेवालोंके लिअे यह है कि शास्त्र किसको कहें? जब संस्कृतमें लिखे हुअे स्मृति अित्यादि नामसे प्रचलित अनेक ग्रंथ मिलते हैं और अुसके विरोधी वचन भी मिलते हैं, तब सादा और श्रद्धालु मनुष्य क्या करेगा? अिसी कारण हिन्दू धर्मका सर्व सामान्य सिद्धान्त मैंने ग्रहण कर लिया है; सत्य और अहिंसासे जो आचार विरुद्ध है, वह निषिद्ध है और जो ग्रंथ अुसका विरोधी है, अुसे शास्त्र न माना जाय।"

कीकी ललवानीने लिखा:

"आपकी तो बड़ी कृपा है। मगर जिनपर आपकी कृपा होती है, वे बिछौने पर नहीं सो सकते!"

बापूने लिखा (हिन्दीमें):

"यह तो सच्ची बात है कि मेरे साथियोंको आराम जैसी कोअी चीज़ है ही नहीं। क्या करें? भगवानने ही गीतामें बताया है कि वह तो क्षणका भी आराम नहीं लेता है। अुसे तो न सोना चाहिये, न खाना चाहिये, न पानी चाहिये। तब हमारे नसीबमें आराम कैसे हो सकता है?"

तेरा और अुनका विचार करनेवाला तो परमेश्वर है, यह तो अब तू नअी दृष्टिसे 'रामदास-गीता' में देखेगा। यह सिर्फ़ बुद्धिसे ही माननेका नहीं है, श्रद्धापूर्वक अमलमें लानेका है। अैसा करनेसे तू सुखी होगा और तुझे सब कुछ आ जायगा। नवें अध्यायमें भगवानका जो वचन है अुसे रट लेना — बड़ा दुराचारी भी अनन्य भावसे अुसकी भक्ति करे तो वह साधु है। पृथ्वी रसातलमें चली जाय, तो भी भगवानके वचन मिथ्या नहीं हो सकते। अब और क्या लिखूँ?"

राधाकान्त मालवीयका लम्बा पत्र:

"अुपवास बुरेसे बुरा बलात्कार है। आपका समझौता किसीको पसन्द नहीं आया। चिन्तामणि और कुँजरू तक को। और लोग भी यों ही 'हाँजी, हाँजी' करते हैं।" यह शिकायत थी। बापूने अिन्हें लिखा:

८-११-'३२

"श्री चिन्तामणि और श्री कुँजरूके बारेमें तुमने जो जानकारी अपने पत्रमें दी है, वह मेरे लिअे महत्त्वकी है। अिसलिअे या तो तुम्हें अुनसे अिस बातकी तसदीक और सहमति प्राप्त करके भेजनी चाहिये, या मुझे प्राप्त करनेकी स्वतंत्रता देनी चाहिये।"

फिर अिस पत्रका विस्तारसे चौथे बयानमें जवाब दिया।

अेक पंडितको (हिन्दीमें):

"बड़ी कठिनाअी सत्यपथ पर चलनेवालोंके लिअे यह है कि शास्त्र किसको कहें? जब संस्कृतमें लिखे हुअे स्मृति अित्यादि नामसे प्रचलित अनेक ग्रंथ मिलते हैं और अुसके विरोधी वचन भी मिलते हैं, तब सादा और श्रद्धालु मनुष्य क्या करेगा? अिसी कारण हिन्दू धर्मका सर्व सामान्य सिद्धान्त मैंने ग्रहण कर लिया है; सत्य और अहिंसासे जो आचार विरुद्ध है, वह निषिद्ध है और जो ग्रंथ अुसका विरोधी है, अुसे शास्त्र न माना जाय।"

कीकी ललवानीने लिखा:

"आपकी तो बड़ी कृपा है। मगर जिनपर आपकी कृपा होती है, वे बिछौने पर नहीं सो सकते!"

बापूने लिखा (हिन्दीमें):

"यह तो सच्ची बात है कि मेरे साथियोंको आराम जैसी कोअी चीज़ है ही नहीं। क्या करें? भगवानने ही गीतामें बताया है कि वह तो क्षणका भी आराम नहीं लेता है। अुसे तो न सोना चाहिये, न खाना चाहिये, न पानी चाहिये। तब हमारे नसीबमें आराम कैसे हो सकता है?"

मृत्यु प्राप्त करनेके लिअे जीवन अनासक्तियुक्त कामोंमें बीतना चाहिये। हम तीनोंकी यह प्रार्थना है कि तुम्हें अैसी ही मृत्यु मिले।"

९–११–'३२

आज बहुतसे पत्र लिखे। चौथा वक्तव्य गया। शामको 'क्रॉनिकल' में सी० पी० रामस्वामीने त्रिवेन्द्रमके अे० पी० आअी० के प्रतिनिधिको जो मुलाकात दी अुसके बारेमें पढ़ा। अुन्होंने यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पुराने विचारवालों पर दबाव नहीं डाला जा सकता और न अिस तरहकी आघात पहुँचानेवाली पद्धति ही चल सकती है।

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह रोड़ा आया। अिस आदमीकी वृत्ति सरकारकी और ज़ामोरिन तथा त्रावणकोर दोनोंकी वृत्तियोंकी परछाअी है। बड़ी मुश्किल होगी।"

बापू कहने लगे: "कोअी मुश्किल नहीं होगी, बशर्ते सवर्णोंमें अुतना ही ज़ोर हो, जितना हमें बताया जाता है।"

वल्लभभाअी: "मगर ट्रस्टियोंका क्या होगा? दरवाज़े खोलना तो ट्रस्टियोंके ही हाथमें है।"

बापू बोले: "अुसका कुछ नहीं। जैसे पिछली बार हज़ारोंकी संख्यामें सवर्ण वहाँ पहुँच कर मन्दिर पर अधिकार करके बैठ गये थे और अन्दर अुपवास करने लगे थे अुसी तरह बैठ जायँ, तो तुरन्त खुल जाय। हाँ, सम्भव है कि ये लोग मन्दिरके दरवाज़े बन्द कर दें। वहाँ फ़ौज़ी क़ानून घोषित कर दें और परवाने लेकर जानेवालोंको ही जाने दें और हमें मरना पड़े। तो भी हर्ज नहीं। और भी बहुतेरे मरनेको तो तैयार ही हैं।"

रातको सोते समय कहने लगे: "मुझे अिस अुपवासके बारेमें पहले अुपवाससे भी ज्यादा निश्चिन्तता है। ज़बरदस्तीकी बात झूठ है; मैं किसीको धमकी थोड़े ही देता हूँ? सबको अपना मत प्रिय है। अुनके लिअे तो अितनी ही बात है कि वे अपनी भावनाके बजाय मेरी ज़िन्दगीको प्रिय मानते हैं या नहीं? न मानते हों, तो मुझे मरने दें।"

आज गुरुदेव, नटराजन और अंबालालको पत्र लिखा। गुरुदेवको लिखा:

१०–११–'३२

"अखबारवालोंको दिया हुआ मेरा वक्तव्य आपने देखा होगा। मेरे अिस विशेष प्रयासको आशीर्वाद दे सकते हों, तो मुझे ज़रूरत है। मालूम नहीं आपको अैसा लगता है या नहीं कि यह प्रयास, अगर यह सम्भव हो, तो पहलेसे भी ज्यादा पवित्र है। पिछला अुपवास तो कुछ-कुछ राजनैतिक रंगमें हुआ था और छिछले आलोचक यह कह सकते थे कि वह ब्रिटिश

मृत्यु प्राप्त करनेके लिअे जीवन अनासक्तियुक्त कामोंमें बीतना चाहिये। हम तीनोंकी यह प्रार्थना है कि तुम्हें अैसी ही मृत्यु मिले।"

९-११-'३२

आज बहुतसे पत्र लिखे। चौथा वक्तव्य गया। शामको 'क्रॉनिकल' में सी० पी० रामस्वामीने त्रिवेन्द्रमके अे० पी० आअी० के प्रतिनिधिको जो मुलाकात दी अुसके बारेमें पढ़ा। अुन्होंने यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पुराने विचारवालों पर दबाव नहीं डाला जा सकता और न अिस तरहकी आघात पहुँचानेवाली पद्धति ही चल सकती है।

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह रोड़ा आया। अिस आदमीकी वृत्ति सरकारकी और ज़ामोरिन तथा त्रावणकोर दोनोंकी वृत्तियोंकी परछाअी है। बड़ी मुश्किल होगी।"

बापू कहने लगे: "कोअी मुश्किल नहीं होगी, बशर्ते सवर्णोंमें अुतना ही ज़ोर हो, जितना हमें बताया जाता है।"

वल्लभभाअी: "मगर ट्रस्टियोंका क्या होगा? दरवाज़े खोलना तो ट्रस्टियोंके ही हाथमें है।"

बापू बोले: "अुसका कुछ नहीं। जैसे पिछली बार हज़ारोंकी संख्यामें सवर्ण वहाँ पहुँच कर मन्दिर पर अधिकार करके बैठ गये थे और अन्दर अुपवास करने लगे थे अुसी तरह बैठ जायँ, तो तुरन्त खुल जाय। हाँ, सम्भव है कि ये लोग मन्दिरके दरवाज़े बन्द कर दें। वहाँ फ़ौजी क़ानून घोषित कर दें और परवाने लेकर जानेवालोंको ही जाने दें और हमें मरना पड़े। तो भी हर्ज नहीं। और भी बहुतेरे मरनेको तो तैयार ही हैं।"

रातको सोते समय कहने लगे: "मुझे अिस अुपवासके बारेमें पहले अुपवाससे भी ज्यादा निश्चिन्तता है। ज़बरदस्तीकी बात झूठ है; मैं किसीको धमकी थोड़े ही देता हूँ? सबको अपना मत प्रिय है। अुनके लिअे तो अितनी ही बात है कि वे अपनी भावनाके बजाय मेरी ज़िन्दगीको प्रिय मानते हैं या नहीं? न मानते हों, तो मुझे मरने दें।"

१०-११-'३२

आज गुरुदेव, नटराजन और अंबालालको पत्र लिखा। गुरुदेवको लिखा: "अखबारवालोंको दिया हुआ मेरा वक्तव्य आपने देखा होगा। मेरे अिस विशेष प्रयासको आशीर्वाद दे सकते हों, तो मुझे ज़रूरत है। मालूम नहीं आपको अैसा लगता है या नहीं कि यह प्रयास, अगर यह सम्भव हो, तो पहलेसे भी ज्यादा पवित्र है। पिछला अुपवास तो कुछ-कुछ राजनैतिक रंगमें हुआ था और छिछले आलोचक यह कह सकते थे कि वह ब्रिटिश

गले नहीं अुतरा। मैं यह मानता हूँ कि जो सनातनी माने जाते हैं, वे हिन्दू अुसमें शरीक होने चाहियें। लेकिन अैसा करनेमें यदि करनेका काम ही रुक जाय, तो अैसे हिन्दुओंके बिना भी काम चला लेना चाहिये। और अैसे हिन्दू अुसमें हों या न हों, जो धार्मिक वृत्तिके होनेके कारण धार्मिक दृष्टिसे वांछनीय सुधार भी चाहते हैं, अुन्हें तो अुसमें रहना ही चाहिये।"

मंडलमें शामिल होनेका महत्त्व समझाते हुअे लिखा :

"किसी मंडलमें शामिल होनेसे ज़िम्मेदारीका जो खयाल मनुष्यको रहता है और जो बन्धन वह सहज ही स्वीकार करता है, वह ज़िम्मेदारी और बन्धन बाहर रहनेवालेको कोशिश करने पर भी महसूस नहीं हो सकता।

"अब रही मतभेदकी बात। मैं सभाओं, जुलूसों, व्याख्यानों और सम्मेलनों वगैराका असर स्वीकार करता हूँ और अुनकी आवश्यकता समझता हूँ, फिर भी रचनात्मक कामके बिना अस्पृश्यताकी जड़ नहीं अुखड़ेगी। अितना ही नहीं, मैं तो यह मानता हूँ कि अछूतपनके प्रति असंख्य हरिजनोंमें नफ़रत नहीं पैदा होगी। अिस काममें बहुतसे सेवक, सेविकाअें और बहुत धन तो चाहिये ही; मगर अिस कामकी आवश्यकताको स्वीकार करते हो, तो अिस डरसे कि शायद रुपया नहीं मिलेगा और बड़ी तादादमें सेवक-सेविकाअें नहीं मिलेंगी, यह काम छोड़ा नहीं जा सकता। मुझे तो अैसा लगता है कि अिस महान आन्दोलनमें अुसके अेक भी अंगको हम नहीं छोड़ सकते।" अिस प्रकार लिखकर सारी चर्चा करनेके लिअे मिलने बुलाया।

तलेगाँवकर और जेधे वगैरा आये। वे 'विजयी मराठा' और 'ज्ञानप्रकाश'के प्रतिनिधि हैं।

सवाल — गुरुवायुरका अुपवास मुल्तवी नहीं रह सकता?

बापू — केलप्पनके साथ बँधा हुआ हूँ, अिसलिअे करना पड़ेगा। वह न करे तो मुझे दुःख हो, और अुसे करना पड़े, तो मुझे भी करना पड़ेगा। जो मन्दिर खोलनेमें विश्वास रखते हैं अुन्हें तो कोशिश करनी चाहिये। हमने अुपवास किया अिसलिअे मन्दिर खोलो, यह तो मूर्खता होगी। मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों न हो, अुसके अुपवाससे दबनेका कोअी कारण नहीं। किसीकी धमकीके कारण मनुष्य धर्म नहीं छोड़ सकता। लेकिन अुनकी बुद्धि और हृदय जाग्रत हो जाय, तो ही वे मंदिर खोलें। अपने अुपवासके समय मैंने अपने मित्रों और स्वजनोंको अपनी सेवाके लिअे रखा है। परन्तु अुन लोगोंको मेरी मूर्खता लगे, तो मैं अुन्हें अपनी सेवा भी न करने दूँ और मुझे छोड़ देनेको कह दूँ। मेरी दृष्टिसे तो यह धार्मिक वस्तु है, अिसलिअे अुपवास छोड़नेकी बात कहें, तो वह

गले नहीं अुतरा। मैं यह मानता हूँ कि जो सनातनी माने जाते हैं, वे हिन्दू अुसमें शरीक होने चाहियें। लेकिन अैसा करनेमें यदि करनेका काम ही रुक जाय, तो अैसे हिन्दुओंके बिना भी काम चला लेना चाहिये। और अैसे हिन्दू अुसमें हों या न हों, जो धार्मिक वृत्तिके होनेके कारण धार्मिक दृष्टिसे वांछनीय सुधार भी चाहते हैं, अुन्हें तो अुसमें रहना ही चाहिये।"

मंडलमें शामिल होनेका महत्त्व समझाते हुअे लिखा:

"किसी मंडलमें शामिल होनेसे ज़िम्मेदारीका जो खयाल मनुष्यको रहता है और जो बन्धन वह सहज ही स्वीकार करता है, वह ज़िम्मेदारी और बन्धन बाहर रहनेवालेको कोशिश करने पर भी महसूस नहीं हो सकता।

"अब रही मतभेदकी बात। मैं सभाओं, जुलूसों, व्याख्यानों और सम्मेलनों वग़ैराका असर स्वीकार करता हूँ और अुनकी आवश्यकता समझता हूँ, फिर भी रचनात्मक कामके बिना अस्पृश्यताकी जड़ नहीं अुखड़ेगी। अितना ही नहीं, मैं तो यह मानता हूँ कि अछूतपनके प्रति असंख्य हरिजनोंमें नफ़रत नहीं पैदा होगी। अिस काममें बहुतसे सेवक, सेविकाअें और बहुत धन तो चाहिये ही; मगर अिस कामकी आवश्यकताको स्वीकार करते हो, तो अिस डरसे कि शायद रुपया नहीं मिलेगा और बड़ी तादादमें सेवक-सेविकाअें नहीं मिलेंगी, यह काम छोड़ा नहीं जा सकता। मुझे तो अैसा लगता है कि अिस महान आन्दोलनमें अुसके अेक भी अंगको हम नहीं छोड़ सकते।" अिस प्रकार लिखकर सारी चर्चा करनेके लिअे मिलने बुलाया।

तलेगाँवकर और जेधे वग़ैरा आये। वे 'विजयी मराठा' और 'ज्ञानप्रकाश' के प्रतिनिधि हैं।

सवाल — गुरुवायुरका अुपवास मुल्तवी नहीं रह सकता?

बापू — केलप्पनके साथ बँधा हुआ हूँ, अिसलिअे करना पड़ेगा। वह न करे तो मुझे दुःख हो, और अुसे करना पड़े, तो मुझे भी करना पड़ेगा। जो मन्दिर खोलनेमें विश्वास रखते हैं अुन्हें तो कोशिश करनी चाहिये। हमने अुपवास किया अिसलिअे मन्दिर खोलो, यह तो मूर्खता होगी। मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों न हो, अुसके अुपवाससे दबनेका कोअी कारण नहीं। किसीकी धमकीके कारण मनुष्य धर्म नहीं छोड़ सकता। लेकिन अुनकी बुद्धि और हृदय जाग्रत हो जाय, तो ही वे मंदिर खोलें। अपने अुपवासके समय मैंने अपने मित्रों और स्वजनोंको अपनी सेवाके लिअे रखा है। परन्तु अुन लोगोंको मेरी मूर्खता लगे, तो मैं अुन्हें अपनी सेवा भी न करने दूँ और मुझे छोड़ देनेको कह दूँ। मेरी दृष्टिसे तो यह धार्मिक वस्तु है, अिसलिअे अुपवास छोड़नेकी बात कहें, तो वह

बापू — सनातनियोंको मैं नोटिस नहीं देता। अुन पर दबाव नहीं डालता। मैंने तो सारे हिन्दू जगतको नोटिस दिया है। ये लोग जाकर मन्दिर खोल दें, तो अुन्हें रोकनेका हक़ नहीं। अगर करोड़ों मनुष्य मुझे कहें कि हमारी भूल थी, हमें अिन लोगोंने धोखा दिया था, मन्दिर-प्रवेश हमने भी नहीं चाहा, तब तो मुझे जीनेकी ज़रूरत नहीं। अगर दूसरे हिन्दू, जिनकी प्रतिज्ञा मेरे पास है, मेरे साथ नहीं हों, तो मुझे जीनेकी ज़रूरत ही नहीं। सनातनी तो अिस मन्दिरमें नहीं जायँगे। बम्बअीके सनातनियोंने तो अैसी बात की भी है। मगर हिन्दू जाति तो वहाँ जायगी ही और अछूतोंको लेकर जायगी। मतगणना द्वारा हिन्दू जातिकी राय लेनेकी बात, अुसका हृदयमंथन करने जैसी है।

स० — सनातनी कहते हैं कि अछूतोंके लिअे अलग मन्दिर बनवाअिये।

बापू — नहीं, ये लोग अपने लिअे अलग बनायें। हाँ, सारी हिन्दू जाति कहे कि ये मन्दिर न खुलें, तो दूसरी बात है। फिर तो अछूत मेरे मरनेके बाद विचार करें।

स० — अस्पृश्यता निवारणमें मुख्य बात कौनसी है?

बापू — हरिजनोंको मंदिर-प्रवेशका हक मिले और जिन सार्वजनिक संस्थाओंमें जानेका दूसरे हिन्दुओंको हक है, अुनमें हरिजन भी जायँ और अुनका अुपयोग करें। हर जगह हिन्दुओंकी अलग-अलग मुश्किलें हैं। आपका गुरुवायुर जानेका धर्म नहीं, परन्तु आपके यहाँ जिस चीज़में अस्पृश्यता है अुसको दूर कीजिये। अपने आसपासके अछूतोंको अपनाना आपका काम है। मन्दिर-प्रवेशके लिअे मैंने सत्याग्रहकी मनाही की ही नहीं। वाअीकोमके लिअे मैं खुद ही गया था न?

स० — सहभोजनके लिअे बहिष्कार हो, क्या यह ठीक है?

बापू — नहीं। यह बहिष्कार करना अनुचित है। मगर जिसका बहिष्कार हो, अुसे अिससे डरना भी नहीं चाहिये। मैंने जहाँ तक हिन्दू धर्मका अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि अछूतपन महाकलंक है।

स० — मरे हुअे ढोरोंको घसीटना और चीरना हरिजन छोड़ देंगे तो?

बापू — मैं तो मुर्दार मांस खाना छुड़वाना चाहता हूँ, मगर काम छुड़वाना नहीं चाहता। आश्रममें यह काम सिखलाता हूँ। फिर भी वे छोड़ें तो हम करेंगे।

स० — मान लीजिये कि गाँवमें अेक बैल मर गया। अुसे ढेढ न घसीटे तो कौन घसीटेगा?

बापू — हम घसीटेंगे . . . आज हम सब शूद्र हैं, क्योंकि सब गुलाम हैं।

'टाअिम्स आफ़ अिन्डिया' के मंत्री के साथ:

बापू — सनातनियोंको मैं नोटिस नहीं देता। अुन पर दबाव नहीं डालता। मैंने तो सारे हिन्दू जगतको नोटिस दिया है। ये लोग जाकर मन्दिर खोल दें, तो अुन्हें रोकनेका हक़ नहीं। अगर करोड़ों मनुष्य मुझे कहें कि हमारी भूल थी, हमें अिन लोगोंने धोखा दिया था, मन्दिर-प्रवेश हमने भी नहीं चाहा, तब तो मुझे जीनेकी ज़रूरत नहीं। अगर दूसरे हिन्दू, जिनकी प्रतिज्ञा मेरे पास है, मेरे साथ नहीं हों, तो मुझे जीनेकी ज़रूरत ही नहीं। सनातनी तो अिस मन्दिरमें नहीं जायँगे। बम्बअीके सनातनियोंने तो अैसी बात की भी है। मगर हिन्दू जाति तो वहाँ जायगी ही और अछूतोंको लेकर जायगी। मतगणना द्वारा हिन्दू जातिकी राय लेनेकी बात, अुसका हृदयमंथन करने जैसी है।

स० — सनातनी कहते हैं कि अछूतोंके लिअे अलग मन्दिर बनवाअिये।

बापू — नहीं, ये लोग अपने लिअे अलग बनायें। हाँ, सारी हिन्दू जाति कहे कि ये मन्दिर न खुलें, तो दूसरी बात है। फिर तो अछूत मेरे मरनेके बाद विचार करें।

स० — अस्पृश्यता निवारणमें मुख्य बात कौनसी है?

बापू — हरिजनोंको मंदिर-प्रवेशका हक मिले और जिन सार्वजनिक संस्थाओंमें जानेका दूसरे हिन्दुओंको हक है, अुनमें हरिजन भी जायँ और अुनका अुपयोग करें। हर जगह हिन्दुओंकी अलग-अलग मुश्किलें हैं। आपका गुरुवायुर जानेका धर्म नहीं, परन्तु आपके यहाँ जिस चीज़में अस्पृश्यता है अुसको दूर कीजिये। अपने आसपासके अछूतोंको अपनाना आपका काम है। मन्दिर-प्रवेशके लिअे मैंने सत्याग्रहकी मनाही की ही नहीं। वाअीकोमके लिअे मैं खुद ही गया था न?

स० — सहभोजनके लिअे बहिष्कार हो, क्या यह ठीक है?

बापू — नहीं। यह बहिष्कार करना अनुचित है। मगर जिसका बहिष्कार हो, अुसे अिससे डरना भी नहीं चाहिये। मैंने जहाँ तक हिन्दू धर्मका अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि अछूतपन महाकलंक है।

स० — मरे हुअे ढोरोंको घसीटना और चीरना हरिजन छोड़ देंगे तो?

बापू — मैं तो मुर्दार मांस खाना छुड़वाना चाहता हूँ, मगर काम छुड़वाना नहीं चाहता। आश्रममें यह काम सिखलाता हूँ। फिर भी वे छोड़ें तो हम करेंगे।

स० — मान लीजिये कि गाँवमें अेक बैल मर गया। अुसे ढेढ न घसीटे तो कौन घसीटेगा?

बापू — हम घसीटेंगे . . . आज हम सब शूद्र हैं, क्योंकि सब गुलाम हैं।

'टाअिम्स आफ़ अिन्डिया' के मंत्री के साथ :

सारा आन्दोलन अिस मान्यता पर खड़ा है कि अुसके विरोधका सच्चा आधार नहीं है। अुसे नैतिक समर्थन नहीं है, यह तो सुप्रसिद्ध है।

स० — आपको अैसा नहीं लगता कि आप बाहर हों, तो ज्यादा असर डाल सकते हैं? क्या आप अस्पृश्यता निवारणको सविनयभंगसे कम महत्त्वका मानते हैं?

बापू — मैं दोनोंमें से अेकको भी कम या ज्यादा महत्त्व नहीं देता। मेरे लिअे दोनों धर्म-सिद्धान्त हैं। अिसलिअे मैं अेकसे दूसरेको गौण नहीं मान सकता। यहाँ मैंने सविनयभंगकी बात अेक सिद्धान्तके रूपमें कही है; आजकलके आन्दोलनके बारेमें नहीं। अभी जो सविनयभंग हो रहा है, अुस पर मैं कोअी राय नहीं दे सकता।

स० — जितने ज़ोरसे होना चाहिये अुतने ज़ोरसे यह आन्दोलन होता दिखाअी नहीं देता।

बापू — मैं यह कह नहीं सकता। मैं कुछ भी कहनेकी स्थितिमें नहीं हूँ। अखबारोंके ज़रिये मिली हुअी जानकारी पर मैं नहीं चल सकता। आपको बाहरके कार्यकर्ताओंसे संपर्क साधना चाहिये।

स० — अस्पृश्यता निवारण संघसे दिल्लीके अिस्तीफ़ोंके बारेमें आप क्या कहते हैं?

बापू — मुझे अिससे आश्चर्य हुआ है। मगर मैं आशा रखता हूँ कि अुसके पीछे कोअी खास बात नहीं होगी। संघकी जड़ काफ़ी मजबूत है। अुसे आदर्श अध्यक्ष मिले हैं और अुनसे भी ज़्यादा आदर्श मंत्री मिले हैं।

* * *

पंढरपुर मन्दिरके ट्रस्टियोंके लिअे मुझे अफ़सोस होता है। मैं अैसी आशा रखता हूँ कि तुकारामका प्रिय मन्दिर अिस आन्दोलनका नेतृत्व करे।

* * *

अिस महान सुधारमें सारे हिन्दुस्तानके अखबारोंकी मदद मुझे मिल सके, ब्रिटिश पत्रों तक की, तो मुझे अुसकी ज़रूरत है। मैं यह भी चाहता हूँ कि अिस आन्दोलन के पक्षमें तमाम दुनियाका लोकमत अेकत्रित हो जाय। अगर अिस आन्दोलनको अैसी विजय मिल जाय जो दिखाअी जा सकती है, तो अुसके परिणाम हिन्दू समाजके सिवाय दूसरे समाजों पर और हिन्दुस्तानके बाहर भी हुअे बिना नहीं रहेंगे।

हिंसासे सर्वथा मुक्त साधनों द्वारा और केवल लोगोंकी अन्तरात्माको जाग्रत करके चार करोड़ मनुष्योंका अुन्हें कुचल डालनेवाले बोझसे छुटकारा हो जाय,

सारा आन्दोलन अिस मान्यता पर खड़ा है कि अुसके विरोधका सच्चा आधार नहीं है। अुसे नैतिक समर्थन नहीं है, यह तो सुप्रसिद्ध है।

स० — आपको अैसा नहीं लगता कि आप बाहर हों, तो ज्यादा असर डाल सकते हैं? क्या आप अस्पृश्यता निवारणको सविनयभंगसे कम महत्त्वका मानते हैं?

बापू — मैं दोनोंमें से अेकको भी कम या ज्यादा महत्त्व नहीं देता। मेरे लिअे दोनों धर्म-सिद्धान्त हैं। अिसलिअे मैं अेकसे दूसरेको गौण नहीं मान सकता। यहाँ मैंने सविनयभंगकी बात अेक सिद्धान्तके रूपमें कही है; आजकलके आन्दोलनके बारेमें नहीं। अभी जो सविनयभंग हो रहा है, अुस पर मैं कोअी राय नहीं दे सकता।

स० — जितने ज़ोरसे होना चाहिये अुतने ज़ोरसे यह आन्दोलन होता दिखाअी नहीं देता।

बापू — मैं यह कह नहीं सकता। मैं कुछ भी कहनेकी स्थितिमें नहीं हूँ। अखबारोंके ज़रिये मिली हुअी जानकारी पर मैं नहीं चल सकता। आपको बाहरके कार्यकर्ताओंसे संपर्क साधना चाहिये।

स० — अस्पृश्यता निवारण संघसे दिल्लीके अिस्तीफ़ोंके बारेमें आप क्या कहते हैं?

बापू — मुझे अिससे आश्चर्य हुआ है। मगर मैं आशा रखता हूँ कि अुसके पीछे कोअी खास बात नहीं होगी। संघकी जड़ काफ़ी मजबूत है। अुसे आदर्श अध्यक्ष मिले हैं और अुनसे भी ज़्यादा आदर्श मंत्री मिले हैं।

* * *

पंढरपुर मन्दिरके ट्रस्टियोंके लिअे मुझे अफ़सोस होता है। मैं अैसी आशा रखता हूँ कि तुकारामका प्रिय मन्दिर अिस आन्दोलनका नेतृत्व करे।

* * *

अिस महान सुधारमें सारे हिन्दुस्तानके अखबारोंकी मदद मुझे मिल सके, ब्रिटिश पत्रों तक की, तो मुझे अुसकी ज़रूरत है। मैं यह भी चाहता हूँ कि अिस आन्दोलन के पक्षमें तमाम दुनियाका लोकमत अेकत्रित हो जाय। अगर अिस आन्दोलनको अैसी विजय मिल जाय जो दिखाअी जा सकती है, तो अुसके परिणाम हिन्दू समाजके सिवाय दूसरे समाजों पर और हिन्दुस्तानके बाहर भी हुअे बिना नहीं रहेंगे।

हिंसासे सर्वथा मुक्त साधनों द्वारा और केवल लोगोंकी अन्तरात्माको जाग्रत करके चार करोड़ मनुष्योंका अुन्हें कुचल डालनेवाले बोझसे छुटकारा हो जाय,

यह भी याद रखना चाहिये कि अकेला मन्दिर-प्रवेशका ही काम नहीं करना है। आपके आसपासके हरिजनोंकी जीवनके हर क्षेत्रमें कैसी स्थिति है, यह आपको जानना चाहिये। आपको शास्त्रीय ढंगसे अध्ययन करना चाहिये और अुसके परिणाम मुझे बताने चाहियें। अिस बीच हरिजनोंके जो दुःख दूर किये जा सकते हों, अुन्हें दूर करनेकी कोशिश तो आपको करनी ही चाहिये।"

लल्लुभाअी शामलदासकी मुलाक़ात। बहुत बूढ़े जान पड़े। फिर भी अितनी अुम्रमें अछूतपनके मामलेमें कुछ करनेकी वृत्ति और अुत्साह अच्छा लगा। अुन्होंने कहा: "अब तक मनमें तो मालूम था कि यह ग़लत है, मगर ज़ाहिर करनेकी हिम्मत नहीं थी। वह हिम्मत अिस बार आ गअी। वालपाखाड़ीके भोजमें मैं गया था।" अुपवासके बारेमें भी कहा: "यह मुझे भी लगता है कि आपने केलप्पनको रोका, अिसलिअे अब यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी हो जाती है। आज 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ अिंडिया' भी लिखता है कि अगर यह मान लिया जाय कि अुपवास अुचित वस्तु है, तो यह अुपवास पहलेवालेसे ज्यादा मुनासिब है।" खुदने त्रावणकोर और कालीकट जानेकी हिदायतें लीं। नरसिंहरावकी शान्ति और धीरजकी बात करके कहने लगे: "मैं अुनके घर जाकर गद्गद हो गया। मगर वे तो बिलकुल शान्त थे। दशाह श्राद्धके दिन भी अुन्होंने शान्तिसे प्रार्थनामें भाग लिया, यह असाधारण बात है।" अपनी स्थिति वर्णन की: "मैं हाटकेश्वर मन्दिरका ट्रस्टी हूँ। दूसरा ट्रस्टी मन्दिर खोलने आया था। मैंने पूछा: 'क्यों, तुम्हारे पास कोअी आया है?'

"वह बोला: 'नहीं, मगर मुझमें अुमंग आ गअी है।'

"मैंने कहा: 'अभी चुप रहो, कोअी माँग करने आये तब आना।'"

अिसके बाद राजभोज, प्रो० ओतुरकर, दातार, भाग्यवंत वग़ैरा आये।

बापू — अभी किसीको सत्याग्रह नहीं करना है। मैं जो प्रयत्न कर रहा हूँ, अुसका अिन्तज़ार करना चाहिये। सनातनियोंने गुरुवायुरको अखिल भारतीय प्रश्न बनाया है। हमें भी चुपचाप अिसका नतीजा देखना चाहिये।

स० — गुरुवायुर खुल जाय तो क्या दूसरे मन्दिर खुल जायँगे?

बापू — गारंटी नहीं। मगर अनुमान यह है कि खुलेंगे। क्योंकि सनातनी अभी जितना प्रयत्न कर रहे हैं अुतना फिर शायद ही करें।

स० — मगर दूसरे मन्दिर कैसे खुलें? सब जगह ट्रस्टी तो दूसरे ही होते हैं। आपकी सोने जैसी देह मन्दिरके लिअे क्यों नष्ट हो? सत्याग्रह करनेका फ़र्ज़ हमारा है।

बापू — मन्दिर खोलनेकी कोशिश तो हमें करनी चाहिये। यह हमारा कर्तव्य है। सवर्ण अपने कर्तव्यमें असफल रहें तब देखा जायगा। दूसरी बात

यह भी याद रखना चाहिये कि अकेला मन्दिर-प्रवेशका ही काम नहीं करना है। आपके आसपासके हरिजनोंकी जीवनके हर क्षेत्रमें कैसी स्थिति है, यह आपको जानना चाहिये। आपको शास्त्रीय ढंगसे अध्ययन करना चाहिये और अुसके परिणाम मुझे बताने चाहियें। अिस बीच हरिजनोंके जो दुःख दूर किये जा सकते हों, अुन्हें दूर करनेकी कोशिश तो आपको करनी ही चाहिये।"

लल्लुभाअी शामलदासकी मुलाक़ात। बहुत बूढ़े जान पड़े। फिर भी अितनी अुम्रमें अछूतपनके मामलेमें कुछ करनेकी वृत्ति और अुत्साह अच्छा लगा। अुन्होंने कहा: "अब तक मनमें तो मालूम था कि यह ग़लत है, मगर ज़ाहिर करनेकी हिम्मत नहीं थी। वह हिम्मत अिस बार आ गअी। वालपाखाड़ीके भोजमें मैं गया था।" अुपवासके बारेमें भी कहा: "यह मुझे भी लगता है कि आपने केलप्पनको रोका; अिसलिअे अब यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी हो जाती है। आज 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ अिंडिया' भी लिखता है कि अगर यह मान लिया जाय कि अुपवास अुचित वस्तु है, तो यह अुपवास पहले वालेसे ज्यादा मुनासिब है।" खुदने त्रावणकोर और कालीकट जानेकी हिदायतें लीं। नरसिंहरावकी शान्ति और धीरजकी बात करके कहने लगे: "मैं अुनके घर जाकर गद्गद हो गया। मगर वे तो बिलकुल शान्त थे। दशाह श्राद्धके दिन भी अुन्होंने शान्तिसे प्रार्थनामें भाग लिया, यह असाधारण बात है।" अपनी स्थिति वर्णन की: "मैं हाटकेश्वर मन्दिरका ट्रस्टी हूँ। दूसरा ट्रस्टी मन्दिर खोलने आया था। मैंने पूछा: 'क्यों, तुम्हारे पास कोअी आया है?'

"वह बोला: 'नहीं, मगर मुझमें अुमंग आ गअी है।'

"मैंने कहा: 'अभी चुप रहो, कोअी माँग करने आये तब आना।'"

अिसके बाद राजभोज, प्रो० ओतुरकर, दातार, भाग्यवंत वग़ैरा आये।

बापू — अभी किसीको सत्याग्रह नहीं करना है। मैं जो प्रयत्न कर रहा हूँ, अुसका अिन्तज़ार करना चाहिये। सनातनियोंने गुरुवायुरको अखिल भारतीय प्रश्न बनाया है। हमें भी चुपचाप अिसका नतीजा देखना चाहिये।

स० — गुरुवायुर खुल जाय तो क्या दूसरे मन्दिर खुल जायँगे?

बापू — गारंटी नहीं। मगर अनुमान यह है कि खुलेंगे। क्योंकि सनातनी अभी जितना प्रयत्न कर रहे हैं अुतना फिर शायद ही करें।

स० — मगर दूसरे मन्दिर कैसे खुलें? सब जगह ट्रस्टी तो दूसरे ही होते हैं। आपकी सोने जैसी देह मन्दिरके लिअे क्यों नष्ट हो? सत्याग्रह करनेका फ़र्ज़ हमारा है।

बापू — मन्दिर खोलनेकी कोशिश तो हमें करनी चाहिये। यह हमारा कर्तव्य है। सवर्ण अपने कर्तव्यमें असफल रहें तब देखा जायगा। दूसरी बात

स० — आपको अुपवास न करना पड़े, अिसके लिअे हम क्या करें ?

बापू — सवर्णोंका कर्तव्य तो मैंने बता दिया । हरिजन शौचादिके नियमका पालन करें और मुर्दार मांस खाना छोड़ दें — मुर्दार जानवरोंको अुठानेकी फ़ीस माँगें, मगर खानेके बदलेमें ढोर न अुठायें ।

स० — महाड़के ब्राह्मणकी भैंस मरनेका प्रसंग । बादमें हरिजनों पर बड़ा जुल्म हुआ । अब हम अुनकी सहायता किस तरह करें ?

बापू — यही कर्तव्य करते रहो और अस्पृश्यता निवारण सभाको अैसे किस्सोंकी खबर देते रहो ।

पाखाने साफ़ करनेवाले कपड़े बदल कर साफ़ करें ।

यह तो तूफान जैसा तेज़ कार्यक्रम है । अभी मुझे अिसकी मंज़िलें तैयार नहीं करनी हैं । जाग्रति होनेके बाद मुझे पता चलेगा कि कौनसा काम पहले हाथमें लें और कौनसा बादमें । आज धीमे-धीमे काम करनेका मौका नहीं है ।

मेरी प्रामाणिकताका मुकाबला सनातनियोंकी प्रामाणिकतासे होगा । दोनों अपना प्राण देंगे । किसने अपने प्राण अुचित रूपमें अर्पण किये, अिसका फ़ैसला सिर्फ़ अीश्वर ही करेगा । . . . मेरे और करोड़ों आम लोगोंके बीच गँठबन्धन हो गया है । . . . मैं अपने निकटसे निकटके मित्रोंसे कहता हूँ कि तुम मेरे साथ सहमत न होते हो, तो मुझे मर जाने दो । मैं मूर्खताका काम करता होअूँ, तो मुझे मर जाने देना चाहिये । . . . मित्रके बलात्कारका तो स्वागत करना चाहिये। मेरी स्त्रीकी किसी मामले पर निश्चित राय न हो, मगर अुसको मुझसे प्रेम हो और मेरे कामके खिलाफ़ अुसके दिलसे कोअी आवाज़ न अुठती हो, तो मैं जो कहूँगा अुसका वह अनुमोदन करेगी । . . . मेरे अुपवाससे लोग अच्छा काम करनेको मजबूर होते हों और अुन्हें यह न लगता हो कि यह काम बुरा है, तो मेरा अुपवास बिलकुल अुचित है। . . . अहमदाबादके मिल-मज़दूर अपनी प्रतिज्ञा भंग करनेको तैयार हो गये थे। मैंने अुपवास किया और अुनमें जाग्रति आ गअी । . . . शरीर पर बलात्कार किया जाय, तो मनुष्यका अधःपतन होता है । . . . जो कभी मेरा सुननेवाले नहीं हैं, अुनके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है । वे तो मुझे मरने ही देंगे । मेरा अुपवास तो अुनके लिअे है, जो मुझसे प्रेम रखते हैं और जो मुझे मरने नहीं देना चाहते । . . . स्वराज्यमें दफ़ा १२४अ राजद्रोहके लिअे नहीं होगी, परन्तु हरिजनोंको अछूत कहनेवालोंके विरुद्ध होगी । . . . समयकी मैंने कोअी मियाद मुक़र्रर नहीं की है । मैं जाँच करता रहूँगा । अगर मुझे यह मालूम होगा कि लोग आलसी हैं, लापरवाह हैं और कुछ करते नहीं, तो मैं प्राण अर्पण कर दूँगा । . . . अेक सालसे

स०—आपको अुपवास न करना पड़े, अिसके लिअे हम क्या करें ?

बापू—सवर्णोंका कर्तव्य तो मैंने बता दिया। हरिजन शौचादिके नियमका पालन करें और मुर्दार मांस खाना छोड़ दें—मुर्दार जानवरोंको अुठानेकी फ़ीस माँगें, मगर खानेके बदलेमें ढोर न अुठायें।

स०—महाड़के ब्राह्मणकी भैंस मरनेका प्रसंग। बादमें हरिजनों पर बड़ा ज़ुल्म हुआ। अब हम अुनकी सहायता किस तरह करें ?

बापू—यही कर्तव्य करते रहो और अस्पृश्यता निवारण सभाको अैसे किस्सोंकी खबर देते रहो।

पाखाने साफ़ करनेवाले कपड़े बदल कर साफ़ करें।

यह तो तूफान जैसा तेज़ कार्यक्रम है। अभी मुझे अिसकी मंज़िलें तैयार नहीं करनी हैं। जाग्रति होनेके बाद मुझे पता चलेगा कि कौनसा काम पहले हाथमें लें और कौनसा बादमें। आज धीमे-धीमे काम करनेका मौका नहीं है।

मेरी प्रामाणिकताका मुकाबला सनातनियोंकी प्रामाणिकतासे होगा। दोनों अपना प्राण देंगे। किसने अपने प्राण अुचित रूपमें अर्पण किये, अिसका फ़ैसला सिर्फ़ अीश्वर ही करेगा। . . . मेरे और करोड़ों आम लोगोंके बीच गँठबन्धन हो गया है। . . . मैं अपने निकटसे निकटके मित्रोंसे कहता हूँ कि तुम मेरे साथ सहमत न होते हो, तो मुझे मर जाने दो। मैं मूर्खताका काम करता होअूँ, तो मुझे मर जाने देना चाहिये। . . . मित्रके बलात्कारका तो स्वागत करना चाहिये। मेरी स्त्रीकी किसी मामले पर निश्चित राय न हो, मगर अुसको मुझसे प्रेम हो और मेरे कामके खिलाफ़ अुसके दिलसे कोअी आवाज़ न अुठती हो, तो मैं जो कहूँगा अुसका वह अनुमोदन करेगी। . . . मेरे अुपवाससे लोग अच्छा काम करनेको मजबूर होते हों और अुन्हें यह न लगता हो कि यह काम बुरा है, तो मेरा अुपवास बिलकुल अुचित है। . . . अहमदाबादके मिल-मज़दूर अपनी प्रतिज्ञा भंग करनेको तैयार हो गये थे। मैंने अुपवास किया और अुनमें जाग्रति आ गअी। . . . शरीर पर बलात्कार किया जाय, तो मनुष्यका अधःपतन होता है। . . . जो कभी मेरा सुननेवाले नहीं हैं, अुनके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है। वे तो मुझे मरने ही देंगे। मेरा अुपवास तो अुनके लिअे है, जो मुझसे प्रेम रखते हैं और जो मुझे मरने नहीं देना चाहते। . . . स्वराज्यमें दफ़ा १२४अ राजद्रोहके लिअे नहीं होगी, परन्तु हरिजनोंको अछूत कहनेवालोंके विरुद्ध होगी। . . . समयकी मैंने कोअी मियाद मुक़र्रर नहीं की है। मैं जाँच करता रहूँगा। अगर मुझे यह मालूम होगा कि लोग आलसी हैं, लापरवाह हैं और कुछ करते नहीं, तो मैं प्राण अर्पण कर दूँगा। . . . अेक सालसे

जाय, तो किसीको सहानुभूतिमें अुपवास करनेका विचार नहीं करना चाहिये। मगर गुरुवायुरके मन्दिरके सम्बन्धमें सारी शक्ति अेकाग्र हो रही है, तब तक सत्याग्रह मुलतवी रखनेकी मेरी सलाहका यह अर्थ नहीं है कि दूसरे मन्दिरोंको खुलवानेके लिअे बिलकुल ही प्रयत्न न किये जायँ। यह प्रयत्न तो अविश्रान्त रूपसे करते रहना है। अभी तो यह सिर्फ़ सवर्ण हिन्दुओंकी ही अिज्ज़तका सवाल है। जब निश्चित रूपसे यह मालूम हो जायगा कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवानेका कुछ भी प्रयत्न नहीं करेंगे, तब अिस सम्बन्धमें हरिजनोंके विचार करनेका समय आयगा। सौभाग्यसे हर रोज़ हरिजनोंके लिअे किसी-न-किसी मन्दिरके स्वेच्छासे खोल देनेके समाचार आते हैं। मुझे मिलनेवाली खबरोंसे जान पड़ता है कि ये प्रयास चालू हैं, हालाँकि अनशन-सप्ताहके अुत्साहसे यह नहीं हो रहा है। फिर भी सवर्ण हिन्दुओंका काम आसान करनेके लिअे हरिजनोंको अधिकसे अधिक भीतरी सुधारका — जैसे सफ़ाअीके नियमोंका पालन करने और मुर्दार मांस और शराब छोड़नेका — काम हाथमें लेना चाहिये। अिन बातोंकी चर्चा मैंने आपके साथ विस्तारसे की है।

"हरिजन बालकोंके लिअे औद्योगिक शिक्षाकी सुविधाअें और योग्य हरिजन युवकोंको छात्रवृत्तियाँ देनेकी बात मैं सेठ घनश्यामदास बिड़ला और अ० भा० अस्पृश्यता निवारण संघके दूसरे सदस्योंके साथ जब वे मिलने आयेंगे, तब करूँगा।"

राधाकान्तका पत्र आया। अुसने चिन्तामणि और कुंजरूसे पूछ लेनेकी अनुमति दे दी। अिसलिअे बापूने चिन्तामणि और कुंजरू दोनोंको अेक ही तरहका पत्र लिखवाया:

"अस्पृश्यता निवारण पर मेरे चौथे वक्तव्यमें जिस पत्रका अुल्लेख है, अुसका लिखनेवाला कौन है, यह अन्दाज आपने ज़रूर लगा लिया होगा। अुसमें जिन नामोंका ज़िक्र है, अुनमेंसे अेक आपका और दूसरा पंडित हृदयनाथ कुंजरूका है। मेरी प्रार्थना पर अुस पत्रके लेखक श्री राधाकान्त मालवीयने अपना नाम आप दोनोंको बता देनेकी मुझे अिजाज़त दे दी है। मैं कुछ भी कहूँ अिससे पहले आपसे यह जान लेना मेरा फ़र्ज़ है कि मेरे अुपवाससे क्या आपको सचमुच बलात्कार महसूस हुआ था? और आपने अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध आचरण किया था? मैं पंडित कुंजरूको भी लिख रहा हूँ।"

"यदि आपके सामने बहुतसे अुपवास करनेवाले लोग खड़े हो जायँ, तो आप क्या करेंगे?" यह सवाल पिछले दो-तीन दिनमें काफ़ी पूछा गया है। 'टाअिम्स' वालेको तो अिसका जवाब दिया था। कल प्रो० ओतुग्करको भी दिया था। आज माअिकल नामका व्यक्ति, जो अुपवासको बलात्कार समझता

जाय, तो किसीको सहानुभूतिमें अुपवास करनेका विचार नहीं करना चाहिये। मगर गुरुवायुरके मन्दिरके सम्बन्धमें सारी शक्ति अेकाग्र हो रही है, तब तक सत्याग्रह मुल्तवी रखनेकी मेरी सलाहका यह अर्थ नहीं है कि दूसरे मन्दिरोंको खुलवानेके लिअे बिलकुल ही प्रयत्न न किये जायँ। यह प्रयत्न तो अविश्रान्त रूपसे करते रहना है। अभी तो यह सिर्फ़ सवर्ण हिन्दुओंकी ही अिज़्ज़तका सवाल है। जब निश्चित रूपसे यह मालूम हो जायगा कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवानेका कुछ भी प्रयत्न नहीं करेंगे, तब अिस सम्बन्धमें हरिजनोंके विचार करनेका समय आयगा। सौभाग्यसे हर रोज़ हरिजनोंके लिअे किसी-न-किसी मन्दिरके स्वेच्छासे खोल देनेके समाचार आते हैं। मुझे मिलनेवाली खबरोंसे जान पड़ता है कि ये प्रयास चालू हैं, हालाँकि अनशन-सप्ताहके अुत्साहसे यह नहीं हो रहा है। फिर भी सवर्ण हिन्दुओंका काम आसान करनेके लिअे हरिजनोंको अधिकसे अधिक भीतरी सुधारका — जैसे सफ़ाअीके नियमोंका पालन करने और मुर्दार मांस और शराब छोड़नेका — काम हाथमें लेना चाहिये। अिन बातोंकी चर्चा मैंने आपके साथ विस्तारसे की है।

"हरिजन बालकोंके लिअे औद्योगिक शिक्षाकी सुविधाअें और योग्य हरिजन युवकोंको छात्रवृत्तियाँ देनेकी बात मैं सेठ घनश्यामदास बिड़ला और अ० भा० अस्पृश्यता निवारण संघके दूसरे सदस्योंके साथ जब वे मिलने आयेंगे, तब करूँगा।"

राधाकान्तका पत्र आया। अुसने चिन्तामणि और कुंजरूसे पूछ लेनेकी अनुमति दे दी। अिसलिअे बापूने चिन्तामणि और कुंजरू दोनोंको अेक ही तरहका पत्र लिखवाया:

"अस्पृश्यता निवारण पर मेरे चौथे वक्तव्यमें जिस पत्रका अुल्लेख है, अुसका लिखनेवाला कौन है, यह अन्दाज आपने ज़रूर लगा लिया होगा। अुसमें जिन नामोंका ज़िक्र है, अुनमेंसे अेक आपका और दूसरा पंडित हृदयनाथ कुंजरूका है। मेरी प्रार्थना पर अुस पत्रके लेखक श्री राधाकान्त मालवीयने अपना नाम आप दोनोंको बता देनेकी मुझे अिज़ाजत दे दी है। मैं कुछ भी कहूँ अिससे पहले आपसे यह जान लेना मेरा फ़र्ज़ है कि मेरे अुपवाससे क्या आपको सचमुच बलात्कार महसूस हुआ था? और आपने अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध आचरण किया था? मैं पंडित कुंजरूको भी लिख रहा हूँ।"

"यदि आपके सामने बहुतसे अुपवास करनेवाले लोग खड़े हो जायँ, तो आप क्या करेंगे?" यह सवाल पिछले दो-तीन दिनमें काफ़ी पूछा गया है। 'टाअिम्स' वालेको तो अिसका जवाब दिया था। कल प्रो० ओतुरकरको भी दिया था। आज माअिकल नामका व्यक्ति, जो अुपवासको बलात्कार समझता

स० — आपके स्वभावके अनुसार अुपवासका निश्चय करनेसे पहले गुरुवायुर मन्दिर-प्रवेशके सवालकी सब बातोंकी जाँच आपने कर ली थी?

बापू — सवालकी सब बातोंकी जाँच कर लेनेका ढोंग मैं नहीं कर सकता। मैंने यह पूर्ण विश्वास रखा है कि केलप्पनने जाँच कर ली होगी। हाँ, मैंने अपने मनमें यह पूरा यक़ीन कर लिया है कि सामान्य रूपसे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवा देनेका दावा सही है। मगर कोअी मुझे पूछे कि गुरुवायुरके मन्दिरके ट्रस्टका दस्तावेज़ हो, तो क्या आपने अुसे देखा है या अिस प्रसिद्ध देवालयकी व्यवस्थाकी चली आ रही प्रथाको आपने बारीकीसे जाँचा है, तो मुझे अपना अज्ञान स्वीकार करना पड़ेगा।

स० — ज़ामोरिनका 'हिन्दू' पत्रमें ७ नवम्बरको प्रकाशित हुआ आखिरी पत्र आपने देखा है? अुसमें ज़ामोरिनने कहा है कि केलप्पनने अुपवास शुरू किया, तब अुन्होंने वादा किया था कि अगर केलप्पन अुपवास छोड़ दें, तो वे खुद अिस सवालकी जाँच करेंगे; मगर केलप्पनने अिस बातकी अुपेक्षा की और अुपवास जारी रखा। अिसलिअे अब मैं अुस वादेसे बँधा हुआ नहीं हूँ।

बापू — यह बात समझमें ही नहीं आती कि ज़ामोरिनने केलप्पन पर अविवेकका आरोप लगाया है और अिस कारणसे अपना किया हुआ वादा पूरा करनेसे अिनकार किया है। यह सच है कि यह वादा अुन्होंने केलप्पनसे किया था। मगर यह वादा जनतासे भी किया माना जायगा, और अिसका अर्थ तो यह हुआ कि ज़ामोरिनने यह ज़ाहिर किया कि मैं निपटारा करनेकी पूरी कोशिश करनेके अपने धर्ममें जाग्रत हूँ। मैं मानता हूँ कि केलप्पनका व्यवहार चाहे जैसा भी हो, पर ज़ामोरिन अेक ज़िम्मेदार आदमी और ट्रस्टीकी हैसियतसे अुस वादेको पूरा करनेके लिअे बँधे हुअे हैं। हिन्दू मन्दिरोंके ट्रस्टियोंका फ़र्ज़ सिर्फ़ रूढ़िकी या किसी अेक वर्गके खास हक़ोंकी रक्षा करना नहीं है, मगर खुद हिन्दू धर्मकी शुद्धिकी रक्षा करना है और हिन्दुओंकी प्रतिदिन विकसित होनेवाली आध्यात्मिक आकांक्षाओंको सन्तोष देना है। अैसे ट्रस्टीके किसी अेक या अनेक मनुष्योंके अुसके विरुद्ध कुछ कहने पर अशान्त हो जानेसे काम नहीं चल सकता। क़ानूनके सवाल पर ज़ामोरिनकी बात मैं जानता हूँ। मगर क़ानूनी मुश्किलें जब बड़े नैतिक सुधारमें बाधक होती हों, तो अुनके खिलाफ़ लड़ना चाहिये और अुन्हें दूर करना चाहिये। अिसलिअे ज़ामोरिन या कोअी और आदमी मन्दिर खोलनेके विरुद्ध क़ानूनी मुश्किलें पेश करता है, तो वह सन्तोषजनक अुत्तर नहीं कहा जा सकता। अगर नीतिधर्मके खयालसे लोकमत ठीक हो, तो ज़ामोरिन जैसे ट्रस्टीको जनताकी अिस नैतिक

स० — आपके स्वभावके अनुसार अुपवासका निश्चय करनेसे पहले गुरुवायुर मन्दिर-प्रवेशके सवालकी सब बातोंकी जाँच आपने कर ली थी?

बापू — सवालकी सब बातोंकी जाँच कर लेनेका ढोंग मैं नहीं कर सकता। मैंने यह पूर्ण विश्वास रखा है कि केलप्पनने जाँच कर ली होगी। हाँ, मैंने अपने मनमें यह पूरा यक़ीन कर लिया है कि सामान्य रूपसे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खुलवा देनेका दावा सही है। मगर कोअी मुझे पूछे कि गुरुवायुरके मन्दिरके ट्रस्टका दस्तावेज़ हो, तो क्या आपने अुसे देखा है या अिस प्रसिद्ध देवालयकी व्यवस्थाकी चली आ रही प्रथाको आपने बारीकीसे जाँचा है, तो मुझे अपना अज्ञान स्वीकार करना पड़ेगा।

स० — ज़ामोरिनका 'हिन्दू' पत्रमें ७ नवम्बरको प्रकाशित हुआ आखिरी पत्र आपने देखा है? अुसमें ज़ामोरिनने कहा है कि केलप्पनने अुपवास शुरू किया, तब अुन्होंने वादा किया था कि अगर केलप्पन अुपवास छोड़ दें, तो वे खुद अिस सवालकी जाँच करेंगे; मगर केलप्पनने अिस बातकी अुपेक्षा की और अुपवास जारी रखा। अिसलिअे अब मैं अुस वादेसे बँधा हुआ नहीं हूँ।

बापू — यह बात समझमें ही नहीं आती कि ज़ामोरिनने केलप्पन पर अविवेकका आरोप लगाया है और अिस कारणसे अपना किया हुआ वादा पूरा करनेसे अिनकार किया है। यह सच है कि यह वादा अुन्होंने केलप्पनसे किया था। मगर यह वादा जनतासे भी किया माना जायगा, और अिसका अर्थ तो यह हुआ कि ज़ामोरिनने यह ज़ाहिर किया कि मैं निपटारा करनेकी पूरी कोशिश करनेके अपने धर्ममें जाग्रत हूँ। मैं मानता हूँ कि केलप्पनका व्यवहार चाहे जैसा भी हो, पर ज़ामोरिन अेक ज़िम्मेदार आदमी और ट्रस्टीकी हैसियतसे अुस वादेको पूरा करनेके लिअे बँधे हुअे हैं। हिन्दू मन्दिरोंके ट्रस्टियोंका फ़र्ज़ सिर्फ़ रूढ़िकी या किसी अेक वर्गके खास हक़ोंकी रक्षा करना नहीं है, मगर खुद हिन्दू धर्मकी शुद्धिकी रक्षा करना है और हिन्दुओंकी प्रतिदिन विकसित होनेवाली आध्यात्मिक आकांक्षाओंको सन्तोष देना है। अैसे ट्रस्टीके किसी अेक या अनेक मनुष्योंके अुसके विरुद्ध कुछ कहने पर अशान्त हो जानेसे काम नहीं चल सकता। क़ानूनके सवाल पर ज़ामोरिनकी बात मैं जानता हूँ। मगर क़ानूनी मुश्किलें जब बड़े नैतिक सुधारमें बाधक होती हों, तो अुनके खिलाफ़ लड़ना चाहिये और अुन्हें दूर करना चाहिये। अिसलिअे ज़ामोरिन या कोअी और आदमी मन्दिर खोलनेके विरुद्ध क़ानूनी मुश्किलें पेश करता है, तो वह सन्तोषजनक अुत्तर नहीं कहा जा सकता। अगर नीतिधर्मके खयालसे लोकमत ठीक हो, तो ज़ामोरिन जैसे ट्रस्टीको जनताकी अिस नैतिक

नहीं बोलूँगा। धर्मक्रियासे सम्बन्ध रखनेवाले ब्राह्मणोंकी ठेकेदारीके हक़ोंका सवाल बिलकुल अलग है; और अगर ठेकेदारी मिटानी हो, तो अिस सवालका विचार स्वतंत्र रूपसे करना पड़ेगा। कुछ खास क्रियाओंको किसी खास वर्गके हाथोंमें ही रखनेकी प्रथाकी मैं बिना विचारे निन्दा करनेको तैयार नहीं हूँ। यह सवाल हक़ोंका नहीं, बल्कि कर्तव्यका होगा। अुसमें अितनी ही बात है कि अमुक कर्तव्य अुसके लिअे ज़रूरी योग्यता रखनेवाले कुशल लोगोंका वर्ग ही करे।

स० — मद्रास हाअीकोर्टके जज श्री श्रीनिवास आयंगरने कहा है कि मन्दिर-प्रवेश राजनीतिमें हरिजनोंको मना लेनेके अेक अुपायके रूपमें सुझाया गया है। अिस बारेमें आप क्या मानते हैं?

बापू — श्री श्रीनिवास आयंगर हाअीकोर्टके जज हुअे, अुसके पहलेसे मैं अुन्हें जानता हूँ। अिसलिअे मन्दिर-प्रवेशको राजनैतिक सवाल बनानेकी कल्पना भी कैसे हो सकती है, यह मेरे लिअे आश्चर्यकी बात है। मैं तो यह समझ ही नहीं सकता। अगर हिन्दू धर्म बाहरी दखलके बिना अिस पुराने कलंकको धो सके, तो अुसका भला ही होगा। दूसरे धर्मवाले तुरन्त ही मानने लग जायँगे कि हिन्दू धर्ममें कोअी अजीब चेतना भरी है। मुझे लगता है कि अस्पृश्यता निवारण हिन्दू धर्ममें अैसा ज़बरदस्त सुधार है कि अुसका असर सारी दुनिया पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अिस सवालको हल करनेका मेरा तरीक़ा असफल साबित हो, तो वह मेरी हस्तीकी संपूर्ण अवगणना हुअी मानी जायगी।

स० — मद्रास धारासभा सुधारके बिलको नामंजूर कर दे, तो आप क्या करेंगे?

बापू — अैसी असफलताका मुझे डर नहीं है। जिस धारासभाने डॉ० सुब्बारायनका प्रस्ताव पास किया, वह मौजूदा क़ानूनके सुधारका बिल पेश होने पर अुसे नामंजूर नहीं करेगी। मैं यह नहीं मानता कि मैं अपने निश्चित समयसे पहले मर जाअूँगा।

वासुकाका और हरिभाअूके साथ:

"मन्दिर हिन्दू जीवनके आवश्यक अंग हैं। हम शिक्षित लोगोंको अपने दिलमें अीश्वरकी मौजूदगी महसूस होती होगी और अिसलिअे मन्दिर जानेकी ज़रूरत नहीं मालूम होती होगी। लेकिन सारे हरिजनोंको यह अनुभव कराना असंभव है कि अीश्वर अुनके हृदयमें बसा हुआ है। अुन्हें तो यही लगता है कि मन्दिरोंके ज़रिये ही वे अीश्वरके साथ सम्बन्ध जोड़ सकेंगे।"

अिन लोगोंको श्रद्धा रखनेकी सलाह दी। मन्दिर खुलेंगे ही नहीं यह मानकर चलनेके बजाय, मन्दिर ज़रूर खुलेंगे अिस श्रद्धासे काम लेनेको कहा।

नहीं बोलूँगा। धर्मक्रियासे सम्बन्ध रखनेवाले ब्राह्मणोंकी ठेकेदारीके हक्कोंका सवाल बिलकुल अलग है; और अगर ठेकेदारी मिटानी हो, तो अिस सवालका विचार स्वतंत्र रूपसे करना पड़ेगा। कुछ खास क्रियाओंको किसी खास वर्गके हाथोंमें ही रखनेकी प्रथाकी मैं बिना विचारे निन्दा करनेको तैयार नहीं हूँ। यह सवाल हक्कोंका नहीं, बल्कि कर्तव्यका होगा। अुसमें अितनी ही बात है कि अमुक कर्तव्य अुसके लिअे ज़रूरी योग्यता रखनेवाले कुशल लोगोंका वर्ग ही करे।

स० — मद्रास हाअीकोर्टके जज श्री श्रीनिवास आयंगरने कहा है कि मन्दिर-प्रवेश राजनीतिमें हरिजनोंको मना लेनेके अेक अुपायके रूपमें सुझाया गया है। अिस बारेमें आप क्या मानते हैं?

बापू — श्री श्रीनिवास आयंगर हाअीकोर्टके जज हुअे, अुसके पहलेसे मैं अुन्हें जानता हूँ। अिसलिअे मन्दिर-प्रवेशको राजनैतिक सवाल बनानेकी कल्पना भी कैसे हो सकती है, यह मेरे लिअे आश्चर्यकी बात है। मैं तो यह समझ ही नहीं सकता। अगर हिन्दू धर्म बाहरी दखलके बिना अिस पुराने कलंकको धो सके, तो अुसका भला ही होगा। दूसरे धर्मवाले तुरन्त ही मानने लग जायँगे कि हिन्दू धर्ममें कोअी अजीब चेतना भरी है। मुझे लगता है कि अस्पृश्यता निवारण हिन्दू धर्ममें अैसा ज़बरदस्त सुधार है कि अुसका असर सारी दुनिया पर पड़े बिना नहीं रहेगा। अिस सवालको हल करनेका मेरा तरीक़ा असफल साबित हो, तो वह मेरी हस्तीकी संपूर्ण अवगणना हुअी मानी जायगी।

स० — मद्रास धारासभा सुधारके बिलको नामंजूर कर दे, तो आप क्या करेंगे?

बापू — अैसी असफलताका मुझे डर नहीं है। जिस धारासभाने डॉ० सुब्बारायनका प्रस्ताव पास किया, वह मौजूदा क़ानूनके सुधारका बिल पेश होने पर अुसे नामंजूर नहीं करेगी। मैं यह नहीं मानता कि मैं अपने निश्चित समयसे पहले मर जाअूँगा।

वासुकाका और हरिभाअूके साथ:

"मन्दिर हिन्दू जीवनके आवश्यक अंग हैं। हम शिक्षित लोगोंको अपने दिलमें अीश्वरकी मौजूदगी महसूस होती होगी और अिसलिअे मन्दिर जानेकी ज़रूरत नहीं मालूम होती होगी। लेकिन सारे हरिजनोंको यह अनुभव कराना असंभव है कि अीश्वर अुनके हृदयमें बसा हुआ है। अुन्हें तो यही लगता है कि मन्दिरोंके ज़रिये ही वे अीश्वरके साथ सम्बन्ध जोड़ सकेंगे।"

अिन लोगोंको श्रद्धा रखनेकी सलाह दी। मन्दिर खुलेंगे ही नहीं यह मानकर चलनेके बजाय, मन्दिर ज़रूर खुलेंगे अिस श्रद्धासे काम लेनेको कहा।

"तू मेरे लिअे अरुण जैसा ही है और आश्रममें लिया जा सका, तो ले लूँगा। मगर अभी तो कलकत्तेमें अपंगोंके लिअे जो आश्रम है, अुसमें जाना चाहे तो अुसकी व्यवस्था कर दूँ।"

अिसके सिवाय, चूँकि यह युवक चाँदपुर जिलेका है, अिसलिअे हरदयालबाबूको पत्र लिखा कि आप अुसे देख आअिये और अुसकी देखभाल होती है या नहीं यह ध्यान रखिये।

सैंकीने बापूसे अपील की थी, अुसका खूब फटकारते हुअे जवाब दिया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह मुझे पसन्द आया।"

बापू बोले: "मसाला होता है, तब तुमको अच्छा लगता है, क्यों?"

जवाबका मसौदा देखकर मुझे सूझा कि अुसमें वाअिसरॉयको यहाँसे लिखे गये पत्रका ज़िक्र नहीं है। वह खास सुलहका अिशारा था। बापू खुश हुअे। तुरन्त वह पत्र निकलवाया। फिर अुसका और अुसके बाद भारतमन्त्रीको लिखे हुअे पत्रका अुसमें अुल्लेख किया।

गवर्नरके मारफत यह समुद्री तार (केबल) भेजा गया।

आश्रमकी डाकके कारण अस्पृश्यताकी डाक बहुत नहीं थी। गीतासे 'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य' अुद्धृत करनेवालोंको अिस प्रकारका

१४-११-'३२ अुत्तर दिया:

"आपकी दलील अैसी मालूम होती है: भगवद्गीता भक्तको शास्त्रविधिके अनुसार रहनेको कहती है। और शास्त्र अस्पृश्यताका समर्थन करते हैं। अिसलिअे यही कहा जायगा कि भगवद्गीता भी अस्पृश्यताका समर्थन करती है।

"तब सवाल यह होता है कि शास्त्र किसे कहें? मैं अिसका जवाब यह देता हूँ कि गीताकी मुख्य ध्वनिके विरुद्ध जो कुछ हो वह शास्त्र नहीं है, यह मानकर अुससे अिनकार किया जाय। गीताकी मुख्य ध्वनि है आत्माकी अेकता और सब जीवोंकी समानता। अिसलिअे गीतामें अस्पृश्यताके लिअे कोअी आधार नहीं है।"

'पंडिताः समदर्शिनः' का आश्रय लेनेवालोंसे कहा: "यह पंडितोंके लिअे ही है, यह कहकर सटक क्यों जाते हैं? जो पंडित करें वही साधारण लोग करें, तो कोअी अिनकार थोड़े ही करता है? मामूली लोग भी अैसा करें, तो बहुत ही अच्छा। अिस हद तक वे भी पंडितों जैसे हुअे।"

अेक आदमीने पूछा था कि "औरोंके विरुद्ध — जैसे कि अीसाअियों वगैराके विरुद्ध — भी तो अछूतपन मिटना चाहिये न?" अुसे लिखा:

"तू मेरे लिअे अरुण जैसा ही है और आश्रममें लिया जा सका, तो ले लूँगा। मगर अभी तो कलकत्तेमें अपंगोंके लिअे जो आश्रम है, अुसमें जाना चाहे तो अुसकी व्यवस्था कर दूँ।"

अिसके सिवाय, चूँकि यह युवक चाँदपुर जिलेका है, अिसलिअे हरदयालबाबूको पत्र लिखा कि आप अुसे देख आअिये और अुसकी देखभाल होती है या नहीं यह ध्यान रखिये।

सॅंकीने बापूसे अपील की थी, अुसका खूब फटकारते हुअे जवाब दिया।

वल्लभभाअी कहने लगे: "यह मुझे पसन्द आया।"

बापू बोले: "मसाला होता है, तब तुमको अच्छा लगता है, क्यों?"

जवाबका मसौदा देखकर मुझे सूझा कि अुसमें वाअिसरॉयको यहाँसे लिखे गये पत्रका ज़िक्र नहीं है। वह खास सुलहका अिशारा था। बापू खुश हुअे। तुरन्त वह पत्र निकलवाया। फिर अुसका और अुसके बाद भारतमन्त्रीको लिखे हुअे पत्रका अुसमें अुल्लेख किया।

गवर्नरके मारफत यह समुद्री तार (केबल) भेजा गया।

आश्रमकी डाकके कारण अस्पृश्यताकी डाक बहुत नहीं थी। गीतासे 'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य' अुद्धृत करनेवालोंको अिस प्रकारका

१४-११-'३२ अुत्तर दिया:

"आपकी दलील अैसी मालूम होती है: भगवद्गीता भक्तको शास्त्रविधिके अनुसार रहनेको कहती है। और शास्त्र अस्पृश्यताका समर्थन करते हैं। अिसलिअे यही कहा जायगा कि भगवद्गीता भी अस्पृश्यताका समर्थन करती है।

"तब सवाल यह होता है कि शास्त्र किसे कहें? मैं अिसका जवाब यह देता हूँ कि गीताकी मुख्य ध्वनिके विरुद्ध जो कुछ हो वह शास्त्र नहीं है, यह मानकर अुससे अिनकार किया जाय। गीताकी मुख्य ध्वनि है आत्माकी अेकता और सब जीवोंकी समानता। अिसलिअे गीतामें अस्पृश्यताके लिअे कोअी आधार नहीं है।"

'पंडिताः समदर्शिनः' का आश्रय लेनेवालोंसे कहा: "यह पंडितोंके लिअे ही है, यह कहकर सटक क्यों जाते हैं? जो पंडित करें वही साधारण लोग करें, तो कोअी अिनकार थोड़े ही करता है? मामूली लोग भी अैसा करें, तो बहुत ही अच्छा। अिस हद तक वे भी पंडितों जैसे हुअे।"

अेक आदमीने पूछा था कि "औरोंके विरुद्ध — जैसे कि अीसाअियों वगैराके विरुद्ध — भी तो अछूतपन मिटना चाहिये न?" अुसे लिखा:

जब तक अुसे दूसरे अुठाकर न ले जायँ, तब तक अुसका स्वामित्व भोग लें। अिस चोरीसे यदि तू अितना पाठ सीख ले तो तूने कुछ नहीं खोया, और अितना ज्ञान प्राप्त किया सो नफ़ेमें।"

कुनहप्पाका मेरे नाम पत्र आया था। अुसके जवाबमें :

"तुम्हारा पत्र तथा ज़ामोरिन और केलप्पनके बीच हुअे पत्र-व्यवहार और तारोंकी नक़लें तुमने मुझे भेज दीं, सो अच्छा किया। ये मेरे लिअे बहुत अुपयोगी साबित हुअे हैं। अगर अुपवास करना पड़ा, तो वह ज़ामोरिनके विरुद्ध नहीं होगा। अगर अधिकांश सवर्ण हिन्दू अवर्णोंके लिअे मन्दिर खोलनेके सचमुच पक्षमें हों, तो क्या तुम्हें अैसा नहीं लगता कि खुद ज़ामोरिन भी अुनके विरुद्ध मन्दिर बन्द नहीं रख सकता? मन्दिर कोअी ज़ामोरिनकी निजी सम्पत्ति नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि वह खुद भी अैसा दावा नहीं करता और स्वीकार करता है कि वह सिर्फ़ ट्रस्टी ही है। अब थोड़ी देरके लिअे मान लिया जाय कि वह अकेले मन्दिर जानेवाले सवर्ण हिन्दुओंका ही ट्रस्टी है, तो यह कहा जायगा कि मन्दिरकी कुंजी अुस मन्दिरमें जानेवालोंके हाथमें है। ज़ामोरिन अुनकी तरफ़से कुंजी अपने पास रखता है। अब सवर्ण सचमुच ही मन्दिर खोलना चाहते हों, तो अुनके लिअे अपनी अिच्छा अचूक ढंगसे ज़ाहिर करनेके कअी रास्ते हैं। मन्दिरका अुपयोग करनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंकी मतगणना करनेका प्रयत्न कभी हुआ है? अगर स्थिति मैं मानता हूँ वैसी नहीं है, अगर सवर्णोंको कोअी हक़ न हों, अगर यह ट्रस्ट अुनके लिअे न हो, तो सही स्थिति क्या है यह मुझे बताना चाहिये। अुसके बाद तुम मुझे अपना निर्णय बदलनेको कह सकते हो। जैसे, अगर मन्दिर ज़ामोरिनकी खानगी जायदाद हो यानी अगर अुसे चाहे जब किसीको भी मन्दिरमें घुसनेसे रोकने और मन्दिरके दरवाज़े बन्द करनेका अधिकार हो, तो हरिजनोंके लिअे गुरुवायुरका मन्दिर खुलवानेका सारा आन्दोलन जड़मूलसे ही ग़लत था और हमें अुसे वापस ले लेना चाहिये। सब कार्यकर्ता अिस दृष्टिकोणसे सारी स्थितिकी अच्छी तरह जाँच करें। अगर भूल हुअी हो, तो अुसका खुला अिकरार कर लेनेमें कोअी शर्म न होनी चाहिये।"

'संतप्तानां त्वमसि शरणं' का दूसरा अुदाहरण : अेक सज्जन लिखते हैं कि

१५-११-'३२

"मेरी छः बरसकी लड़की पर परिचित और मित्र जैसे माने जानेवाले पचास वर्षके पड़ोसीने नशेमें बलात्कार करनेकी कोशिश की। मेरी पत्नीको बड़ा दुःख है। अिस आदमीको मार डालनेका मन होता है। मगर आपका अनुयायी हूँ, अिसलिअे चुप होकर बैठा हूँ। अैसे दुष्टको कैसे छोड़ा जाय?" अुन्हें लिखा :

जब तक अुसे दूसरे अुठाकर न ले जायँ, तब तक अुसका स्वामित्व भोग लें। अिस चोरीसे यदि तू अितना पाठ सीख ले तो तूने कुछ नहीं खोया, और अितना ज्ञान प्राप्त किया सो नफ़ेमें।"

कुनहप्पाका मेरे नाम पत्र आया था। अुसके जवाबमें:

"तुम्हारा पत्र तथा ज़ामोरिन और केलप्पनके बीच हुअे पत्र-व्यवहार और तारोंकी नक़लें तुमने मुझे भेज दीं, सो अच्छा किया। ये मेरे लिअे बहुत अुपयोगी साबित हुअे हैं। अगर अुपवास करना पड़ा, तो वह ज़ामोरिनके विरुद्ध नहीं होगा। अगर अधिकांश सवर्ण हिन्दू अवर्णोंके लिअे मन्दिर खोलनेके सचमुच पक्षमें हों, तो क्या तुम्हें अैसा नहीं लगता कि खुद ज़ामोरिन भी अुनके विरुद्ध मन्दिर बन्द नहीं रख सकता? मन्दिर कोअी ज़ामोरिनकी निजी सम्पत्ति नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि वह खुद भी अैसा दावा नहीं करता और स्वीकार करता है कि वह सिर्फ़ ट्रस्टी ही है। अब थोड़ी देरके लिअे मान लिया जाय कि वह अकेले मन्दिर जानेवाले सवर्ण हिन्दुओंका ही ट्रस्टी है, तो यह कहा जायगा कि मन्दिरकी कुंजी अुस मन्दिरमें जानेवालोंके हाथमें है। ज़ामोरिन अुनकी तरफ़से कुंजी अपने पास रखता है। अब सवर्ण सचमुच ही मन्दिर खोलना चाहते हों, तो अुनके लिअे अपनी अिच्छा अचूक ढंगसे ज़ाहिर करनेके कअी रास्ते हैं। मन्दिरका अुपयोग करनेवाले सभी स्त्री-पुरुषोंकी मतगणना करनेका प्रयत्न कभी हुआ है? अगर स्थिति मैं मानता हूँ वैसी नहीं है, अगर सवर्णोंको कोअी हक़ न हों, अगर यह ट्रस्ट अुनके लिअे न हो, तो सही स्थिति क्या है यह मुझे बताना चाहिये। अुसके बाद तुम मुझे अपना निर्णय बदलनेको कह सकते हो। जैसे, अगर मन्दिर ज़ामोरिनकी खानगी जायदाद हो यानी अगर अुसे चाहे जब किसीको भी मन्दिरमें घुसनेसे रोकने और मन्दिरके दरवाज़े बन्द करनेका अधिकार हो, तो हरिजनोंके लिअे गुरुवायुरका मन्दिर खुलवानेका सारा आन्दोलन जड़मूलसे ही ग़लत था और हमें अुसे वापस ले लेना चाहिये। सब कार्यकर्ता अिस दृष्टिकोणसे सारी स्थितिकी अच्छी तरह जाँच करें। अगर भूल हुअी हो, तो अुसका खुला अिकरार कर लेनेमें कोअी शर्म न होनी चाहिये।"

'संततानां त्वमसि शरणं' का दूसरा अुदाहरण: अेक सज्जन लिखते हैं कि

१५-११-'३२ "मेरी छः बरसकी लड़की पर परिचित और मित्र जैसे माने जानेवाले पचास वर्षके पड़ोसीने नशेमें बलात्कार करनेकी कोशिश की। मेरी पत्नीको बड़ा दुःख है। अिस आदमीको मार डालनेका मन होता है। मगर आपका अनुयायी हूँ, अिसलिअे चुप होकर बैठा हूँ। अैसे दुष्टको कैसे छोड़ा जाय?" अुन्हें लिखा:

कसर नहीं रखी। अितने पर भी आपको और दूसरोंको मैंने जो सलाह दी, अुसका मुझे पछतावा नहीं है। ज्ञानपूर्वक दुःख सहन करनेसे दुनियामें आज तक किसीका बुरा नहीं हुआ। दुःख पड़े और अुसे सहन किया जाय, यह बुरा नहीं। मगर अिस वक्त मैं आपको कुछ नहीं समझा सकता। अीश्वर आपको शांति दे, आपका कल्याण करे! क्रोधमें भी आप लिखते रहेंगे, तो मुझे अच्छा लगेगा। वल्साड़में क्या करते हैं?"

आज गोसीबहन, नरगिसबहन, शीरीनबहन और जमनाबहन आओीं। अुन्होंने बम्बअीके अस्पृश्यताके कामकी कितनी ही तफ़सीलें पेश कीं और अुपवासके दिनोंका अेक प्रसंग बयान किया। अेक स्त्री माधवबागमें अच्छे कपड़े पहनकर दर्शन करने आअी और मन्दिरके आँगनके बीचमें खड़ी होकर चिल्लाने लगी: "मैं ढेढ़नी हूँ, ढेढ़नी। तुम सबने मुझे छू लिया है, यह याद रखना!"

आज शामको सातवीं पत्रिका लिखवाते समय 'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ' का अर्थ करनेका बापूने प्रयत्न किया और शास्त्रकी व्याख्या दी। सोलहवें और सत्रहवें अध्यायमें 'शास्त्र' का मैं जो अर्थ करता हूँ, वह मैंने बताया।

बापू कहने लगे: "तो तुम शास्त्रको अनासक्ति शास्त्र या कर्मयोग शास्त्र कहते हो?"

मैंने कहा: "हाँ; और यह शास्त्र अच्छी तरह बतानेके बाद गीताकार बाहरके शास्त्रोंको प्रमाण क्यों माने?"

बापू बोले: "यह अर्थ मेरे गले अुतरता है। मगर यह अर्थ रखनेसे बड़ा विवाद पैदा हो जायगा।" यह कहकर खुदने यह अर्थ किया कि 'गीताके सिद्धान्तों पर जीवनमें अमल करनेवाले पुरुषका आचरण ही शास्त्र है।' मैंने बापूको बताया कि अिसके लिअे तैत्तिरीय अुपनिषद्में प्रमाण है और विमर्शी, युक्त और धर्मकाम ब्राह्मणोंका आचरण कर्तव्याकर्तव्यकी कठिनताके समय प्रमाण है, यह बतानेवाला मंत्र अुद्धृत किया। बापूको वह बहुत योग्य लगा।

अेक मन्दिरके बारेमें खबर मिली कि मन्दिर-प्रवेशकी मतगणनामें ७००० मत प्रवेशके पक्षमें और ३० विरुद्ध थे। भैया लोग भी लोगोंके पीछे-पीछे चल रहे थे और कह रहे थे कि "सब हाँ बोलते हैं, तो हमको क्या है?"

आज सातवळेकरजीका वहाँके अस्पृश्यता निवारणके आन्दोलनके बारेमें बढ़िया पत्र आया।

नटराजनका कल सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें बापूने नीचे लिखा जवाब भेजा:

"आपके दोनों पत्र मिल गये। यह जानकर खुशी हुअी कि डॉक्टरको दिल्लीमें अच्छी नौकरी मिल गअी। आपके दूसरे पत्रमें बुद्धिसे अपील की गअी

कसर नहीं रखी। अितने पर भी आपको और दूसरोंको मैंने जो सलाह दी, अुसका मुझे पछतावा नहीं है। ज्ञानपूर्वक दुःख सहन करनेसे दुनियामें आज तक किसीका बुरा नहीं हुआ। दुःख पड़े और अुसे सहन किया जाय, यह बुरा नहीं। मगर अिस वक्त मैं आपको कुछ नहीं समझा सकता। अीश्वर आपको शांति दे, आपका कल्याण करे! क्रोधमें भी आप लिखते रहेंगे, तो मुझे अच्छा लगेगा। वल्साड़में क्या करते हैं?"

आज गोसीबहन, नरगिसबहन, शीरीनबहन और जमनाबहन आअीं। अुन्होंने बम्बअीके अस्पृश्यताके कामकी कितनी ही तफ़सीलें पेश कीं और अुपवासके दिनोंका अेक प्रसंग बयान किया। अेक स्त्री माधवबागमें अच्छे कपड़े पहनकर दर्शन करने आअी और मन्दिरके आँगनके बीचमें खड़ी होकर चिल्लाने लगी: "मैं ढेढ़नी हूँ, ढेढ़नी। तुम सबने मुझे छू लिया है, यह याद रखना!"

आज शामको सातवीं पत्रिका लिखवाते समय 'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ' का अर्थ करनेका बापूने प्रयत्न किया और शास्त्रकी व्याख्या दी। सोलहवें और सत्रहवें अध्यायमें 'शास्त्र' का मैं जो अर्थ करता हूँ, वह मैंने बताया।

बापू कहने लगे: "तो तुम शास्त्रको अनासक्ति शास्त्र या कर्मयोग शास्त्र कहते हो?"

मैंने कहा: "हाँ; और यह शास्त्र अच्छी तरह बतानेके बाद गीताकार बाहरके शास्त्रोंको प्रमाण क्यों माने?"

बापू बोले: "यह अर्थ मेरे गले अुतरता है। मगर यह अर्थ रखनेसे बड़ा विवाद पैदा हो जायगा।" यह कहकर खुदने यह अर्थ किया कि 'गीताके सिद्धान्तों पर जीवनमें अमल करनेवाले पुरुषका आचरण ही शास्त्र है।' मैंने बापूको बताया कि अिसके लिअे तैत्तिरीय अुपनिषद्‌में प्रमाण है और विमर्शी, युक्त और धर्मकाम ब्राह्मणोंका आचरण कर्तव्याकर्तव्यकी कठिनताके समय प्रमाण है, यह बतानेवाला मंत्र अुद्धृत किया। बापूको वह बहुत योग्य लगा।

अेक मन्दिरके बारेमें खबर मिली कि मन्दिर-प्रवेशकी मतगणनामें ७००० मत प्रवेशके पक्षमें और ३० विरुद्ध थे। भैया लोग भी लोगोंके पीछे-पीछे चल रहे थे और कह रहे थे कि "सब हाँ बोलते हैं, तो हमको क्या है?"

आज सातवळेकरजीका वहाँके अस्पृश्यता निवारणके आन्दोलनके बारेमें बढ़िया पत्र आया।

नटराजनका कल सुन्दर पत्र आया था। अुन्हें बापूने नीचे लिखा जवाब भेजा:

"आपके दोनों पत्र मिल गये। यह जानकर खुशी हुअी कि डॉक्टरको दिल्लीमें अच्छी नौकरी मिल गअी। आपके दूसरे पत्रमें बुद्धिसे अपील की गअी

कि वे अकदम बन्द हो गये हैं? मैं तो अिस चीज़का रोज़ अनुभव करता हूँ। नापाकसे नापाक मन्दिरोंमें भी पाक दिलसे जानेवाले भावुकोंको ज़रूर अीश्वरके दर्शन होते हैं। यही अुसकी अजीब कुदरत है, या यों कहिये कि यही अुसकी माया है। लेकिन कोअी महाभक्त बोल अुठे:

'माया सोने मोह पमाडे, हरिजनथी रही हारी रे।'

और अगर तुम्हारी कल्पनाने अितना देख लिया हो कि जब तक मन्दिर क़ायम हैं, तब तक तो हरिजनोंके लिअे भी वे खुले होने चाहियें, तो फिर तुम्हारी बुद्धि-शक्तिसे ही तुम अुपवासकी अुपयोगिता भी समझ जाओगे; क्योंकि यह अुपवास सनातनियोंके विरुद्ध नहीं, परन्तु अुन लाखों या करोड़ोंके विरुद्ध है, जिनका मेरे साथ प्रेम-सम्बन्ध हो गया है। अिस अुपवाससे अुनमें खलबली मच जाय, तो हरिजनोंके लिअे मन्दिरोंके दरवाजे खुले बिना न रहें।

"चरखेके बारेमें मुझे अटूट धीरज है। तुम्हारी देहातकी जानकारी कच्छ तक ही सीमित है। मगर कच्छके गाँवों और दूसरे लाखों गाँवोंके बीच बहुत कम साम्य है। और कच्छमें भी अपने ही खेतमें पैदा की हुअी कपाससे जो कपड़ा खुद ही तैयार किया जाय, अुससे सस्ता और कोअी कपड़ा नहीं हो सकता। यदि हो सकता हो, तो अुसे सर्दी और धूपसे बचानेवाला या अैब ढाँकनेवाला वस्त्र नहीं मानना चाहिये, बल्कि वह तो लाशको ढँकनेवाला कफ़न है। पानीके बजाय पानी जैसा दीखनेवाला जहरीला पदार्थ कोअी मुझे मुफ़्त दे और जिस प्यालेमें दे वह भेंट करे, और असली पानी कोअी मेरी अंजलीमें ही डाले और अुसके चार पैसे भी माँगे, तो मुझे क्या पसन्द करना चाहिये? तुम अधीर हो, तुम्हारा मन बड़ा चंचल है, तुम्हारा विश्वास क्षणिक है, अिसलिअे जल्दी-जल्दी चिढ़ जाते हो। यह कोअी तुम्हारा स्वभाव नहीं है। यह तुम्हारी बीमारी है। अिस बीमारीको निकाल दो। तुम्हारा स्वभाव तो धीरज रखने और लोहेकी तरह मज़बूत बननेका है। किसी भी चीज़पर झटपट विश्वास कर लेनेकी ज़रूरत नहीं। मगर बारीकीसे जाँच करनेके बाद जिस चीज़पर विश्वास जम जाय, अुससे तो अुसी तरह चिपटे रहना चाहिये, जैसे मकोड़ा गुड़के घड़ेसे चिपटा रहता है। 'प्राण जाय अरु वचन न जाअी।' अब तो बहुत हो गया।"

माअिकल लिखता है कि "अगर आप मुझे यह यकीन दिला सकें कि आपके अुपवासमें बलात्कार नहीं है, तो मैं अपना अुपवास नहीं करूँगा!"

अुसे बापूने लिखा:

"किसीको भी सन्तोष देनेकी शक्ति रखनेका मैं दावा नहीं करता। मैं सिर्फ़ कोशिश कर सकता हूँ। केलप्पनने नोटिस दिये बिना अुपवास किया था, अिसलिअे अुसके कार्यमें शुरूसे ही दोष रह गया था। अब जो अुपवास

कि वे अेकदम बन्द हो गये हैं? मैं तो अिस चीज़का रोज़ अनुभव करता हूँ। नापाकसे नापाक मन्दिरोंमें भी पाक दिलसे जानेवाले भावुकोंको ज़रूर अीश्वरके दर्शन होते हैं। यही अुसकी अजीब कुदरत है, या यों कहिये कि यही अुसकी माया है। लेकिन कोअी महाभक्त बोल अुठे:

'माया सौने मोह पमाडे, हरिजनथी रही हारी रे।'

और अगर तुम्हारी कल्पनाने अितना देख लिया हो कि जब तक मन्दिर क़ायम हैं, तब तक तो हरिजनोंके लिअे भी वे खुले होने चाहियें, तो फिर तुम्हारी बुद्धि-शक्तिसे ही तुम अुपवासकी अुपयोगिता भी समझ जाओगे; क्योंकि यह अुपवास सनातनियोंके विरुद्ध नहीं, परन्तु अुन लाखों या करोड़ोंके विरुद्ध है, जिनका मेरे साथ प्रेम-सम्बन्ध हो गया है। अिस अुपवाससे अुनमें खलबली मच जाय, तो हरिजनोंके लिअे मन्दिरोंके दरवाजे खुले बिना न रहें।

"चरखेके बारेमें मुझे अटूट धीरज है। तुम्हारी देहातकी जानकारी कच्छ तक ही सीमित है। मगर कच्छके गाँवों और दूसरे लाखों गाँवोंके बीच बहुत कम साम्य है। और कच्छमें भी अपने ही खेतमें पैदा की हुअी कपाससे जो कपड़ा खुद ही तैयार किया जाय, अुससे सस्ता और कोअी कपड़ा नहीं हो सकता। यदि हो सकता हो, तो अुसे सर्दी और धूपसे बचानेवाला या अैब ढाँकनेवाला वस्त्र नहीं मानना चाहिये, बल्कि वह तो लाशको ढाँकनेवाला कफ़न है। पानीके बजाय पानी जैसा दीखनेवाला ज़हरीला पदार्थ कोअी मुझे मुफ़्त दे और जिस प्यालेमें दे वह भेंट करे, और असली पानी कोअी मेरी अंजलीमें ही डाले और अुसके चार पैसे भी माँगे, तो मुझे क्या पसन्द करना चाहिये? तुम अधीर हो, तुम्हारा मन बड़ा चंचल है, तुम्हारा विश्वास क्षणिक है, अिसलिअे जल्दी-जल्दी चिढ़ जाते हो। यह कोअी तुम्हारा स्वभाव नहीं है। यह तुम्हारी बीमारी है। अिस बीमारीको निकाल दो। तुम्हारा स्वभाव तो धीरज रखने और लोहेकी तरह मज़बूत बननेका है। किसी भी चीज़पर झटपट विश्वास कर लेनेकी ज़रूरत नहीं। मगर बारीकीसे जाँच करनेके बाद जिस चीज़पर विश्वास जम जाय, अुससे तो अुसी तरह चिपटे रहना चाहिये, जैसे मकोड़ा गुड़के घड़ेसे चिपटा रहता है। 'प्राण जाय अरु वचन न जाअी।' अब तो बहुत हो गया।"

माअिकल लिखता है कि "अगर आप मुझे यह यक़ीन दिला सकें कि आपके अुपवासमें बलात्कार नहीं है, तो मैं अपना अुपवास नहीं करूँगा!"

अुसे बापूने लिखा:

"किसीको भी सन्तोष देनेकी शक्ति रखनेका मैं दावा नहीं करता। मैं सिर्फ़ कोशिश कर सकता हूँ। केलप्पनने नोटिस दिये बिना अुपवास किया था, अिसलिअे अुसके कार्यमें शुरूसे ही दोष रह गया था। अब जो अुपवास

सब काम बिगड़ जायगा। यह तो कफ़न बाँधकर लड़नेकी लड़ाअी मोल ली गअी है। मैं तो बार बार कह चुका हूँ कि बाहर हमारी लड़ाअी शुद्ध रूपमें चलती होती, तो हम कभीके जीत गये होते। मगर हमारी लड़ाअीमें बहुतसी गन्दगी चलती ही रहती है।... से कह देना कि अुसे निश्चय कर लेना चाहिये कि लड़ाअीमें रहना है या अस्पृश्यता निवारणका काम करना है? फिर अिस निश्चयपर वह कायम रहे। अगर वह अस्पृश्यता निवारणके काममें ही पड़े, तो मुझसे मिल सकता है। मगर दोनों काम करते हुअे मुझसे नहीं मिल सकता।"

१८-११-'३२ पद्मजाका जन्मदिवस था। पद्मजाने लिखा था: "मुझे यही पता नहीं चलता कि मैं बड़ी कब दिखाअी दूँगी। आपके सामने बड़ी दिखनेके लिअे किसी भी दिन पर्याप्त गौरव प्राप्त करनेकी तमाम आशायें मैंने लगभग छोड़ दी हैं। और किस तरह 'बड़ी' दिखना चाहिये, अिस बारेमें आपसे सलाह लेना तो किसी कामका नहीं। महात्मापनकी अितनी सारी शोहरत पाकर भी आप खुद ही गंभीर दिखनेमें कभी सफल नहीं हुअे।

"मैं समझती हूँ कि गंभीर दिखनेकी कुंजी यह है कि बार बार हँसना नहीं। मगर बहुतसी चीज़ें अैसी होती हैं कि अुनपर हमें रोना न हो तो हँसना ही चाहिये।"

बापूने अुसे मीठा पत्र लिखा:

"महात्मा बननेमें ज़रूर लाभ है। तुम्हारे जैसे गुलामोंसे अुनका जन्मदिन हो तो और मेरा हो तो भी मुझे फल और फूल मिलते हैं।"

जमनालालजीका अच्छे जलवायुमें तबादला कर देनेके बारेमें और मणिको डाह्याभाअीके दैनिक समाचार भेजनेके मानव अधिकारके बारेमें डोअिलको पत्र लिखे। वल्लभभाअीको यह बात अुचित नहीं मालूम हुअी। मेरी तो अभी तक समझमें ही नहीं आया कि बापू कुछ खास साथियोंके लिअे अिस तरह खास तौरपर कैसे लिख सकते हैं, जब कि दूसरे खूब परेशान हो रहे हैं और दुःख भोग रहे हैं।

आज सुपरिण्टेण्डेण्टने खबर दी कि "... ने 'बी' क्लासके लिअे अर्ज़ी देनेकी माँग की थी और मैंने अुसे अिनकार कर दिया; क्योंकि अुसके बारेमें जेल कर्मचारीकी राय खराब है और यह अर्ज़ी मंजूर नहीं होगी।"

मुझे तो खयाल आया कि जब हमारे आदमी अिस तरह नीचे गिर रहे हों, तब 'सी' का ही भोजन लेना चाहिये और 'सी' की ही तरह रहना

सब काम बिगड़ जायगा। यह तो कफ़न बाँधकर लड़नेकी लड़ाअी मोल ली गअी है। मैं तो बार बार कह चुका हूँ कि बाहर हमारी लड़ाअी शुद्ध रूपमें चलती होती, तो हम कभीके जीत गये होते। मगर, हमारी लड़ाअीमें बहुतसी गन्दगी चलती ही रहती है। . . . से कह देना कि अुसे निश्चय कर लेना चाहिये कि लड़ाअीमें रहना है या अस्पृश्यता निवारणका काम करना है? फिर अिस निश्चयपर वह कायम रहे। अगर वह अस्पृश्यता निवारणके काममें ही पड़े, तो मुझसे मिल सकता है। मगर दोनों काम करते हुअे मुझसे नहीं मिल सकता।"

१८-११-'३२

पद्मजाका जन्मदिवस था। पद्मजाने लिखा था: "मुझे यही पता नहीं चलता कि मैं बड़ी कब दिखाअी दूँगी। आपके सामने बड़ी दिखनेके लिअे किसी भी दिन पर्याप्त गौरव प्राप्त करनेकी तमाम आशायें मैंने लगभग छोड़ दी हैं। और किस तरह 'बड़ी' दिखना चाहिये, अिस बारेमें आपसे सलाह लेना तो किसी कामका नहीं। महात्मापनकी अितनी सारी शोहरत पाकर भी आप खुद ही गंभीर दिखनेमें कभी सफल नहीं हुअे।

"मैं समझती हूँ कि गंभीर दिखनेकी कुंजी यह है कि बार बार हँसना नहीं। मगर बहुतसी चीज़ें अैसी होती हैं कि अुनपर हमें रोना न हो तो हँसना ही चाहिये।"

बापूने अुसे मीठा पत्र लिखा:

"महात्मा बननेमें ज़रूर लाभ है। तुम्हारे जैसे गुलामोंसे अुनका जन्मदिन हो तो और मेरा हो तो भी मुझे फल और फूल मिलते हैं।"

जमनालालजीका अच्छे जलवायुमें तबादला कर देनेके बारेमें और मणिको डाह्याभाअीके दैनिक समाचार भेजनेके मानव अधिकारके बारेमें डोअिलको पत्र लिखे। वल्लभभाअीको यह बात अुचित नहीं मालूम हुअी। मेरी तो अभी तक समझमें ही नहीं आया कि बापू कुछ खास साथियोंके लिअे अिस तरह खास तौरपर कैसे लिख सकते हैं, जब कि दूसरे खूब परेशान हो रहे हैं और दुःख भोग रहे हैं।

आज सुपरिण्टेण्डेण्टने खबर दी कि ". . . ने 'बी' क्लासके लिअे अर्ज़ी देनेकी माँग की थी और मैंने अुसे अिनकार कर दिया; क्योंकि अुसके बारेमें जेल कर्मचारीकी राय खराब है और यह अर्ज़ी मंजूर नहीं होगी।"

मुझे तो खयाल आया कि जब हमारे आदमी अिस तरह नीचे गिर रहे हों, तब 'सी' का ही भोजन लेना चाहिये और 'सी' की ही तरह रहना

बापू बोले: "नहीं, यह बात तो नहीं है। तमाम देशके वातावरणका विचार करना पड़ेगा।"

आनंदशंकर भाओीको:

२१-११-'३२ "आपने अपने बारेमें सदा कम आत्मविश्वास रखा है। काशी जाते समय भी आपको क्या कम संकोच था? मगर कितने साल निकाल दिये! और कौन जाने अभी कितने और निकालने पड़ेंगे! अिसलिअे यह न मान लीजिये कि आपके अविश्वासमें मैं भी फँस जाअूँगा। राजाजीने मालवीयजीके दक्षिणमें न जानेके बारेमें अेक सम्पूर्ण तर्क दिया है। जब तक वे काशी विश्वनाथका मन्दिर नहीं खुलवा देते, तब तक दक्षिणके शास्त्री अुनकी बात नहीं मानेंगे। वे यह कहेंगे कि पहले काशी विश्वनाथ खुलवाअिये, फिर हमारे यहाँ आअिये। आप और मैं अुन्हें अैसी विषम स्थितिमें न डालें। और अुनके स्वास्थ्यके बारेमें भी राजाजी तो कहते हैं कि अुनसे अितना लम्बा सफ़र नहीं कराना चाहिये। अिसलिअे मालवीयजी सहमत हों, तो आप अुनके प्रतिनिधिकी हैसियतसे निकल पड़िये, भले ही लोग आपकी न सुनें। मगर यह न होने जैसी बात है। यह तो हुआ आपकी दक्षिणकी यात्राके विषयमें।

"अब शास्त्रार्थके बारेमें। मुझे जो साहित्य दिया गया है, अुसमेंसे कुछ भेजता हूँ। अिसकी जाँच कीजिये, अुसे ध्यानमें रखकर अेक सुन्दर जवाब जल्दी ही तैयार कीजिये और जितने पंडित आपके साथ हो सकें, अुतनोंके हस्ताक्षर अुसपर करा लीजिये। यह जवाब संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ीमें होना चाहिये। अेक तो प्रामाणिक सनातनी, दूसरे तटस्थ जिज्ञासु, तीसरे अस्पृश्यता निवारणका काम करनेवाले, जिनके लिअे सनातनियों वगैरासे भेंट करते समय आपका लेख सहायक हो सके और चौथे विधर्मी, जो समझ लें कि सच्चे सनातन धर्ममें जन्मसे कोअी अस्पृश्य नहीं और जो खास कारणोंसे अछूत माने जा सकते हों वे भी आसानीसे स्पृश्य बन सकते हैं— अिन चारोंको ध्यानमें रख कर आपको लिखना है। आपको यह भी बताना है कि आज जो अत्याचार अछूत कहलानेवालों पर हो रहे हैं, अुनके लिये कोअी आधार नहीं है। जिनका आप, मैं और दूसरे हज़ारों आदमी आदर करते हैं, अुनका वाक्य अुद्धृत करता हूँ:

"'हिन्दुस्तानके अिस भागमें जबसे मन्दिरोंकी पूजा शुरू हुअी, तभीसे अिन वर्गोंको मन्दिरोंसे दूर रखा गया है। अैसा समय, जब अछूतोंको मन्दिरोंमें जानेकी आज़ादी थी, ढूँढ़ निकालनेमें विद्वानोंको मुश्किल पड़ेगी। मुझे डर है,

बापू बोले: "नहीं, यह बात तो नहीं है। तमाम देशके वातावरणका विचार करना पड़ेगा।"

आनंदशंकर भाञीको:

२९-११-'३२

"आपने अपने बारेमें सदा कम आत्मविश्वास रखा है। काशी जाते समय भी आपको क्या कम संकोच था? मगर कितने साल निकाल दिये? और कौन जाने अभी कितने और निकालने पड़ेंगे? अिसलिअे यह न मान लीजिये कि आपके अविश्वासमें मैं भी फँस जाअूँगा। राजाजीने मालवीयजीके दक्षिणमें न जानेके बारेमें अेक सम्पूर्ण तर्क दिया है। जब तक वे काशी विश्वनाथका मन्दिर नहीं खुलवा देते, तब तक दक्षिणके शास्त्री अुनकी बात नहीं मानेंगे। वे यह कहेंगे कि पहले काशी विश्वनाथ खुलवाअिये, फिर हमारे यहाँ आअिये। आप और मैं अुन्हें अैसी विषम स्थितिमें न डालें। और अुनके स्वास्थ्यके बारेमें भी राजाजी तो कहते हैं कि अुनसे अितना लम्बा सफ़र नहीं कराना चाहिये। अिसलिअे मालवीयजी सहमत हों, तो आप अुनके प्रतिनिधिकी हैसियतसे निकल पड़िये, भले ही लोग आपकी न सुनें। मगर यह न होने जैसी बात है। यह तो हुआ आपकी दक्षिणकी यात्राके विषयमें।

"अब शास्त्रार्थके बारेमें। मुझे जो साहित्य दिया गया है, अुसमेंसे कुछ भेजता हूँ। अिसकी जाँच कीजिये, अुसे ध्यानमें रखकर अेक सुन्दर जवाब जल्दी ही तैयार कीजिये और जितने पंडित आपके साथ हो सकें, अुतनोंके हस्ताक्षर अुसपर करा लीजिये। यह जवाब संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ीमें होना चाहिये। अेक तो प्रामाणिक सनातनी, दूसरे तटस्थ जिज्ञासु, तीसरे अस्पृश्यता निवारणका काम करनेवाले, जिनके लिअे सनातनियों वग़ैरासे भेंट करते समय आपका लेख सहायक हो सके और चौथे विधर्मी, जो समझ लें कि सच्चे सनातन धर्ममें जन्मसे कोअी अस्पृश्य नहीं और जो खास कारणोंसे अछूत माने जा सकते हों वे भी आसानीसे स्पृश्य बन सकते हैं — अिन चारोंको ध्यानमें रख कर आपको लिखना है। आपको यह भी बताना है कि आज जो अत्याचार अछूत कहलानेवालों पर हो रहे हैं, अुनके लिअे कोअी आधार नहीं है। जिनका आप, मैं और दूसरे हज़ारों आदमी आदर करते हैं, अुनका वाक्य अुद्धृत करता हूँ:

"'हिन्दुस्तानके अिस भागमें जबसे मन्दिरोंकी पूजा शुरू हुअी, तभीसे अिन वर्गोंको मन्दिरोंसे दूर रखा गया है। अैसा समय, जब अछूतोंको मन्दिरोंमें जानेकी आज़ादी थी, ढूँढ़ निकालनेमें विद्वानोंको मुश्किल पड़ेगी। मुझे डर है,

खानेवालोंने ही कह दिया कि गांधी आ जाय तो हम भ्रष्ट नहीं होंगे। अिस पर मुझे मुश्किल्से खानेके कमरेमें खाना मिला। दूसरी तरफ़ हमें यह भी याद रखना चाहिये कि लोगोंको सूग आनेकी बात सही है। मुझे दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोगोंको समझाना पड़ता था कि होटलोंमें जानेका हक़ लेना हो, तो हमें सफ़ाअी सीखनी चाहिये और अिस तरहका बरताव नहीं करना चाहिये, जिससे अिन लोगोंको घिन आये। वहाँके चित्र खींचूं तो आपको कै हो जाय। . . . को तो अेक बार कै आने ही लगी थी और वह अुठ गअी थी।"

मन्दिरोंमें कटहरे लगवानेकी पद्धतिके बारेमें कहा: "अिस चीज़में अीमानदारी हो तो मुझे आपत्ति नहीं है। मगर अिसमें अीमानदारी नहीं है। अिससे तो यह अच्छा है कि अिन मन्दिरोंका त्याग कराकर अस्पृश्योंके लिअे दूसरा मन्दिर अिन्हीं लोगोंसे रुपया लेकर बनवाया जाय और अुसमें सुधारक और अछूत जाया करें, या अेक ही मन्दिरमें अलग अलग समय पर जायँ।"

मथुरादास बोले: "यह कैसे हो सकता है? मन्दिरमें जाने और देवताको जगाने सुलानेका समय तो अेक ही होता है।"

बापू: "यह तो ठीक, मगर अिन लोगोंकी भावनाका आदर करके ही तो हम यह निश्चय करते हैं कि जो अेक दो घण्टे तय किये जायँ अुसी बीच ये लोग आवें।"

अिस अुपवासके बारेमें वल्लभभाअीका जी नहीं मानता था, मगर आज कहने लगे: "शास्त्रीका पत्र पढ़कर तो अैसा लगता है कि यह अुपवास हुआ तो अच्छा हुआ। शास्त्री जैसे लोग क्या कभी धर्म सुधार कर सकते हैं! जब बापू जैसे कोअी समर्थ व्यक्ति अुपवास जैसा हथियार अुठायें, तभी ये भयंकर अन्धकारके बादल बिखर सकते हैं।"

देवधरके साथ बातें करने पर बलात्कारकी बात निकली और बापूने फिर कहा कि "मतगणना मेरे विरुद्ध हो, तो मैं अुपवास छोड़ दूँगा।"

अिस पर देवधर कहने लगे: "मगर लोगोंको यह खबर लग जाय, तब तो आपका अुपवास छुड़वानेके लिअे भी वे मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध राय दे देंगे।"

बापू: "भले ही दे दें। लेकिन तब तो मुझे पता लग जायगा कि जिस हिन्दूधर्मसे मैं अिस तरह चिपटा हुआ हूँ, अुसी हिन्दू धर्मको जब अिन लोगोंने अैसा बना दिया है, तो मेरा मर जाना अच्छा है। दूसरे धर्मोंमें मैं जो विशालता चाहता हूँ वह मिलेगी नहीं, अिसलिअे मुझे तो मरना ही रहा न?"

अिससे बापूकी भावनाकी तीव्रता प्रकट होती है।

लोग अेकदम अंधे बनकर पत्र लिखते रहते हैं। नारणदास संघाणी अपनी सनातन धर्म पत्रिकामें बुरी तरह गालियाँ बरसा रहा है। दूसरे लोग सीधे

खानेवालोंने ही कह दिया कि गांधी आ जाय तो हम भ्रष्ट नहीं होंगे। अिस पर मुझे मुश्किलसे खानेके कमरेमें खाना मिला। दूसरी तरफ़ हमें यह भी याद रखना चाहिये कि लोगोंको सूग आनेकी बात सही है। मुझे दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोगोंको समझाना पड़ता था कि होटलोंमें जानेका हक़ लेना हो, तो हमें सफ़ाअी सीखनी चाहिये और अिस तरहका बरताव नहीं करना चाहिये, जिससे अिन लोगोंको घिन आये। वहाँके चित्र खींचूं तो आपको कै हो जाय। . . . को तो अेक बार कै आने ही लगी थी और वह अुठ गअी थी।"

मन्दिरोंमें कटहरे लगवानेकी पद्धतिके बारेमें कहा: "अिस चीज़में अीमानदारी हो तो मुझे आपत्ति नहीं है। मगर अिसमें अीमानदारी नहीं है। अिससे तो यह अच्छा है कि अिन मन्दिरोंका त्याग कराकर अस्पृश्योंके लिअे दूसरा मन्दिर अिन्हीं लोगोंसे रुपया लेकर बनवाया जाय और अुसमें सुधारक और अछूत जाया करें, या अेक ही मन्दिरमें अलग अलग समय पर जायँ।"

मथुरादास बोले: "यह कैसे हो सकता है? मन्दिरमें जाने और देवताको जगाने सुलानेका समय तो अेक ही होता है।"

बापू: "यह तो ठीक, मगर अिन लोगोंकी भावनाका आदर करके ही तो हम यह निश्चय करते हैं कि जो अेक दो घण्टे तय किये जायँ अुसी बीच ये लोग आवें।"

अिस अुपवासके बारेमें वल्लभभाअीका जी नहीं मानता था, मगर आज कहने लगे: "शास्त्रीका पत्र पढ़कर तो अैसा लगता है कि यह अुपवास हुआ तो अच्छा हुआ। शास्त्री जैसे लोग क्या कभी धर्म सुधार कर सकते हैं! जब बापू जैसे कोअी समर्थ व्यक्ति अुपवास जैसा हथियार अुठायें, तभी ये भयंकर अन्धकारके बादल बिखर सकते हैं।"

देवधरके साथ बातें करने पर बलात्कारकी बात निकली और बापूने फिर कहा कि "मतगणना मेरे विरुद्ध हो, तो मैं अुपवास छोड़ दूँगा।"

अिस पर देवधर कहने लगे: "मगर लोगोंको यह खबर लग जाय, तब तो आपका अुपवास छुड़वानेके लिअे भी वे मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध राय दे देंगे।"

बापू: "भले ही दे दें। लेकिन तब तो मुझे पता लग जायगा कि जिस हिन्दूधर्मसे मैं अिस तरह चिपटा हुआ हूँ, अुसी हिन्दू धर्मको जब अिन लोगोंने अैसा बना दिया है, तो मेरा मर जाना अच्छा है। दूसरे धर्मोंमें मैं जो विशालता चाहता हूँ वह मिलेगी नहीं, अिसलिअे मुझे तो मरना ही रहा न?"

अिससे बापूकी भावनाकी तीव्रता प्रकट होती है।

लोग अेकदम अंधे बनकर पत्र लिखते रहते हैं। नारणदास संघाणी अपनी नातन धर्म पत्रिकामें बुरी तरह गालियाँ बरसा रहा है। दूसरे लोग सीधे

अध्यापक हैं और तिगुनी अेम० अे०की अुपाधि वाले हैं। अुन्हें अछूतोंको अछूत रखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं लगता!

मैंने बापूसे कहा: "हमारे धर्मका कूड़ा-करकट छँटकर सामने आ रहा है। यही हिन्दू धर्म है क्या?"

बापू बोले: "मगर शास्त्री जैसे भी तो हैं?"

मैंने कहा: "मगर जिन्हें अंग्रेज़ी या पश्चिमी शिक्षाने छुआ तक नहीं, अैसे पंडित और शास्त्री कहाँ अिस आन्दोलनमें शामिल हैं? क्या अिन सभी लोगोंका शास्त्राध्ययन अैसा ही अधःपतन करानेवाला होगा?"

बापू: "दयानन्द सरस्वतीको कैसे भूल रहे हो?"

यह चर्चा हो रही थी कि केरल प्रान्तके हिन्दी या अंग्रेज़ी न जाननेवाले आदमीका संस्कृत श्लोकोंमें लिखा हुआ पत्र आया, जिसमें अुसने गांधी और केलप्पनके अनशनकी स्तुति करके सफलता चाही थी।

बापू कहने लगे: "क्यों, तुम जैसा चाहते थे, वैसा ही यह अुदाहरण है कि नहीं?"

आज डाकमें छोटे-बड़े पत्र लिखवानेमें काफ़ी समय बीत गया और बापूके लिअे आश्रमकी सारी डाक लिखनी बाकी रही। अेक थॉर्नबर्ग नामका अमरीकी बापूसे मिलने आया था। नहीं मिल सकता था, अिसलिअे अस्पृश्यताके कामके लिअे मिलनेकी अिजाज़त माँगी। बापूने अिनकार कर दिया। फिर अुसने हस्ताक्षरके लिअे पुस्तकें भेजीं और बादमें अमेरिकाके लिअे संदेश माँगा। बापूने अिस प्रकार संदेश भेजा:

"आपके पत्रके लिअे धन्यवाद। आपसे मिल नहीं सका, अिसका अफ़सोस है। भीतरी सुधारका जो आन्दोलन यहाँ चल रहा है, अुसमें यदि अमेरिकाको कुछ मदद करनी हो, तो पहले अुसे अिस आन्दोलनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, अुसका अध्ययन करना चाहिये और अुसपर ज्ञानयुक्त राय देनी चाहिये। सनातनियोंपर भी आज बुद्धियुक्त रायका असर होता है, भले ही वह राय बाहरसे आयी हुअी हो। दूसरी बात यह करना चाहिये कि आर्थिक प्रश्नोंके बारेमें विशेषज्ञोंकी मदद सुधारकोंको मुफ्त मिल सके। अुदाहरणके तौरपर मुर्दार मांस खानेवालोंका प्रश्न बड़ा विकट है। जब तक मरे हुअे ढोरोंका कब्जा हरिजनोंको मिलता रहेगा, तब तक वे मुर्दार मांस खाना नहीं छोड़ सकेंगे। वे मरे हुअे ढोरकी चमड़ी अुतार लेते हैं और मांस खाते हैं। मरे हुअे ढोरोंके चमड़े स्वच्छ और अच्छे ढंगसे अुतारनेकी तथा ढोरके बाक़ीके भागका अुत्तमसे अुत्तम अुपयोग करनेकी पद्धति खोजनेकी मैंने कोशिश की है। लेकिन अिसके लिअे विशेषज्ञोंकी सहायता लेनेमें रुपया खर्च करनेकी अिच्छा न होने और

अध्यापक हैं और तिगुनी अेम० अे०की अुपाधि वाले हैं। अुन्हें अछूतोंको अछूत रखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं लगता!

मैंने बापूसे कहा: "हमारे धर्मका कूड़ा-करकट छँटकर सामने आ रहा है। यही हिन्दू धर्म है क्या?"

बापू बोले: "मगर शास्त्री जैसे भी तो हैं?"

मैंने कहा: "मगर जिन्हें अंग्रेज़ी या पश्चिमी शिक्षाने छुआ तक नहीं, अैसे पंडित और शास्त्री कहाँ अिस आन्दोलनमें शामिल हैं? क्या अिन सभी लोगोंका शास्त्राध्ययन अैसा ही अधःपतन करानेवाला होगा?"

बापू: "दयानन्द सरस्वतीको कैसे भूल रहे हो?"

यह चर्चा हो रही थी कि केरल प्रान्तके हिन्दी या अंग्रेज़ी न जाननेवाले आदमीका संस्कृत श्लोकोंमें लिखा हुआ पत्र आया, जिसमें अुसने गांधी और केलप्पनके अनशनकी स्तुति करके सफलता चाही थी।

बापू कहने लगे: "क्यों, तुम जैसा चाहते थे, वैसा ही यह अुदाहरण है कि नहीं?"

आज डाकमें छोटे-बड़े पत्र लिखवानेमें काफ़ी समय बीत गया और बापूके लिअे आश्रमकी सारी डाक लिखनी बाकी रही। अेक थॉर्नबर्ग नामका अमरीकी बापूसे मिलने आया था। नहीं मिल सकता था, अिसलिअे अस्पृश्यताके कामके लिअे मिलनेकी अिजाज़त माँगी। बापूने अिनकार कर दिया। फिर अुसने हस्ताक्षरके लिअे पुस्तकें भेजीं और बादमें अमेरिकाके लिअे संदेश माँगा। बापूने अिस प्रकार संदेश भेजा:

"आपके पत्रके लिअे धन्यवाद। आपसे मिल नहीं सका, अिसका अफसोस है। भीतरी सुधारका जो आन्दोलन यहाँ चल रहा है, अुसमें यदि अमेरिकाको कुछ मदद करनी हो, तो पहले अुसे अिस आन्दोलनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, अुसका अध्ययन करना चाहिये और अुसपर ज्ञानयुक्त राय देनी चाहिये। सनातनियोंपर भी आज बुद्धियुक्त रायका असर होता है, भले ही वह राय बाहरसे आयी हुअी हो। दूसरी बात यह करना चाहिये कि आर्थिक प्रश्नोंके बारेमें विशेषज्ञोंकी मदद सुधारकोंको मुफ्त मिल सके। अुदाहरणके तौरपर मुर्दार मांस खानेवालोंका प्रश्न बड़ा विकट है। जब तक मरे हुअे ढोरोंका कब्जा हरिजनोंको मिलता रहेगा, तब तक वे मुर्दार मांस खाना नहीं छोड़ सकेंगे। वे मरे हुअे ढोरकी चमड़ी अुतार लेते हैं और मांस खाते हैं। मरे हुअे ढोरोंके चमड़े स्वच्छ और अच्छे ढंगसे अुतारनेकी तथा ढोरके बाक़ीके भागका अुत्तमसे अुत्तम अुपयोग करनेकी पद्धति खोजनेकी मैंने कोशिश की है। लेकिन अिसके लिअे विशेषज्ञोंकी सहायता लेनेमें रुपया खर्च करनेकी अिच्छा न होने और

पड़े, तो मेरा भी अुपवास करनेका धर्म हो जाता है। हरिजनोंके लिअे अिस मन्दिरको खुलवानेके काममें समाजके किसी भी वर्ग पर ज़ोर ज़बरदस्ती करनेका ज़रा भी अिरादा नहीं है। मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार तो — और अिस जानकारीकी सचाअीके बारेमें शंका करनेका कोअी कारण नहीं — बहुतसे सवर्ण अिस पक्षमें हैं कि यह मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय। यदि अैसा हो, तो फिर यह नहीं माना जायगा कि ज़बरदस्ती की गयी। यह भी याद रखना चाहिये कि यद्यपि यह प्रश्न लोगोंके सामने अभी ही आया है, फिर भी केलप्पन और अुसके साथी अिसके लिअे बहुत सालसे काम कर रहे हैं; और अुन्होंने जो लोकमत अपने पक्षमें किया है वह कोअी पिछले थोड़े दिनोंमें ही नहीं हो गया है। बहुत वर्षोंसे अुन्होंने जो सतत आन्दोलन किया है, अुसीका यह परिणाम है।

स० — केलप्पनके प्रति क्या आपका धर्म अितना ज्यादा है कि अगर वह अुपवास करे, तो आपको भी अपनी ज़िन्दगी खतरेमें डालनी ही चाहिये?

बापू — मैं आत्म-प्रतिष्ठा खो बैठूँ तो तुरन्त ही किसी भी सेवाके लिअे बिलकुल अयोग्य बन जाअूँ। न्यायपूर्ण कामके लिअे ज्ञानपूर्वक दिये हुअे वचनके पालनको मैं अितना महत्त्व देता हूँ कि अुस वचनके पालनके लिअे अपनी जान भी खतरेमें डालनी पड़े, तो अिसे मैं कोअी बड़ी बात नहीं मानता।

स० — आप हरिजनोंका जो काम कर रहे हैं, अुससे भी क्या यह बढ़कर है?

बापू — वचनभंग करके बचायी हुअी मेरी ज़िन्दगी हरिजनोंके किसी भी कामके लायक नहीं रहेगी। अगर मैं वचन पालन करके अपने प्राण दे दूँ, तो मेरी रायमें यह सिर्फ़ हरिजनों या हिन्दूधर्मके लिअे ही नहीं, बल्कि मैं नम्रताके साथ कहता हूँ कि, सारे हिन्दुस्तानके और तमाम दुनियाके लिअे यह अेक अमूल्य वस्तु हो जायगी।

स० — आपको तो मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है, फिर हरिजनोंको मूर्तिपूजाका हक़ दिलवानेके लिअे आप क्यों अितना श्रम अुठा रहे हैं?

बापू — मुझे खयाल नहीं आता कि मैंने कभी यह कहा हो कि मुझे मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने लेखोंमें भी कभी अैसी कोअी बात कही हो। मैंने जो बार-बार कहा है, वह तो यह है कि मैं मूर्तिभंजक भी हूँ और मूर्तिपूजक भी हूँ। यह चीज अैसा कहनेसे तो अलग ही हुअी न कि मुझे मूर्तिपूजामें विश्वास नहीं? लेकिन कोअी यह कहे कि मैं शायद ही कभी मन्दिरमें जाता हूँ, तो यह बात ज़रूर सच होगी। मैं क्यों

पड़े, तो मेरा भी अुपवास करनेका धर्म हो जाता है। हरिजनोंके लिअे अिस मन्दिरको खुलवानेके काममें समाजके किसी भी वर्ग पर ज़ोर ज़बरदस्ती करनेका ज़रा भी अिरादा नहीं है। मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार तो — और अिस जानकारीकी सचाअीके बारेमें शंका करनेका कोअी कारण नहीं — बहुतसे सवर्ण अिस पक्षमें हैं कि यह मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय। यदि अैसा हो, तो फिर यह नहीं माना जायगा कि ज़बरदस्ती की गयी। यह भी याद रखना चाहिये कि यद्यपि यह प्रश्न लोगोंके सामने अभी ही आया है, फिर भी केलप्पन और अुसके साथी अिसके लिअे बहुत सालसे काम कर रहे हैं; और अुन्होंने जो लोकमत अपने पक्षमें किया है वह कोअी पिछले थोड़े दिनोंमें ही नहीं हो गया है। बहुत वर्षोंसे अुन्होंने जो सतत आन्दोलन किया है, अुसीका यह परिणाम है।

स० — केलप्पनके प्रति क्या आपका धर्म अितना ज्यादा है कि अगर वह अुपवास करे, तो आपको भी अपनी ज़िन्दगी खतरेमें डालनी ही चाहिये?

बापू — मैं आत्म-प्रतिष्ठा खो बैठूँ तो तुरन्त ही किसी भी सेवाके लिअे बिलकुल अयोग्य बन जाअूँ। न्यायपूर्ण कामके लिअे ज्ञानपूर्वक दिये हुअे वचनके पालनको मैं अितना महत्त्व देता हूँ कि अुस वचनके पालनके लिअे अपनी जान भी खतरेमें डालनी पड़े, तो अिसे मैं कोअी बड़ी बात नहीं मानता।

स० — आप हरिजनोंका जो काम कर रहे हैं, अुससे भी क्या यह बढ़कर है?

बापू — वचनभंग करके बचायी हुअी मेरी ज़िन्दगी हरिजनोंके किसी भी कामके लायक नहीं रहेगी। अगर मैं वचन पालन करके अपने प्राण दे दूँ, तो मेरी रायमें यह सिर्फ़ हरिजनों या हिन्दूधर्मके लिअे ही नहीं, बल्कि मैं नम्रताके साथ कहता हूँ कि, सारे हिन्दुस्तानके और तमाम दुनियाके लिअे यह अेक अमूल्य वस्तु हो जायगी।

स० — आपको तो मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है, फिर हरिजनोंको मूर्तिपूजाका हक़ दिलवानेके लिअे आप क्यों अितना श्रम अुठा रहे हैं?

बापू — मुझे खयाल नहीं आता कि मैंने कभी यह कहा हो कि मुझे मूर्तिपूजामें श्रद्धा नहीं है। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने लेखोंमें भी कभी अैसी कोअी बात कही हो। मैंने जो बार-बार कहा है, वह तो यह है कि मैं मूर्तिभंजक भी हूँ और मूर्तिपूजक भी हूँ। यह चीज अैसा कहनेसे तो अलग ही हुअी न कि मुझे मूर्तिपूजामें विश्वास नहीं? लेकिन कोअी यह कहे कि मैं शायद ही कभी मन्दिरमें जाता हूँ, तो यह बात ज़रूर सच होगी। मैं क्यों

अपने प्रेमके कारण ही अछूतोंके मामलेमें अैसा किया था। यही बात मेरे भाअीके सम्बन्धमें भी हुअी है। अुन्हें मेरे प्रति अितनी अरुचि हो गयी थी कि वे मुझे गालियाँ देते थे। लेकिन जब वे मृत्युशय्या पर पड़े, तब अुनका दिल बदल गया। और अुन्हें यह महसूस हुआ कि अुन्होंने अपने छोटे भाअीके प्रति घोर अन्याय किया है। अिससे अुल्टे अुदाहरण लीजिये। असहयोगकी लड़ाअीमें जो मेरे लिअे अपनी जान देनेको तैयार थे, अुन्होंने मेरे दूसरे कामोंके कारण मुझे गोली मारनेकी धमकी दी है। मेरे जीवनके अैसे कितने ही पन्ने हैं। दक्षिण अफ्रीकामें मीर आलमका भी बहुत बड़ा हृदय-परिवर्तन हुआ। ये सब अुदाहरण यह बताते हैं कि अुनका प्रेम अुनकी मान्यताओंसे अधिक बलवान था। अकसर देशभक्ति या देशप्रेम धर्मका रूप ग्रहण कर लेता है। धर्मका अर्थ है जो धारण करे। फिर भले ही वह धर्म नास्तिकका हो, मूर्तिपूजा करनेवालेका हो या निराकारकी अुपासना करनेवालेका हो।

"प्रेममें जबरदस्ती होती ही है। क्या प्रेमके दबावमें आकर मित्र कितने ही काम नहीं करते?"

स० — लेकिन क्या प्रेमसे प्रश्न हल हो जाता है?

बापू — हमेशा नहीं। लेकिन अगर प्रेम बादमें मान्यताका रूप ग्रहण कर ले, तो ज़रूर हल हो जाय। प्रेमकी शक्ति अजीब है। बलात्कारमें जिसपर वह किया जाता है, अुसको शारीरिक और मानसिक दुःख पहुँचानेकी बात रहती है। प्रेममें भी कष्ट तो है। मगर वह दूसरी ही तरहका होता है। वह बालकको धारण करनेवाली माताके कष्ट जैसा है। प्रसूतिकी पीड़ाका अेक बार अनुभव हो जानेके बाद भी वह दूसरा बालक किस लिअे धारण करती है?

पवित्रता सजीव वस्तु है। वह रोगके जन्तुओंसे भी अधिक चिपकनेवाली है। जिसकी अिच्छा न हो अुसपर भी रोगके कीड़े जिस तरह असर करते हैं, अुसी तरह पवित्रताका भी असर मनुष्य पर अुसकी अिच्छाके विरुद्ध होता है। अीथर या बिजलीसे भी वह अधिक बलवान है। ये तो भौतिक शक्तियाँ हैं। मगर पवित्रता नैतिक बल है, और नैतिक बल भौतिक बलसे अनंतगुना श्रेष्ठ है। कोअी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि वह अकेला ही शुद्ध है। अैसी शुद्धि तो धुली हुअी कब्र जैसी होगी।

स० — कुछ हद तक अैसा होता है।

बापू — किस लिअे? मन्दिरमें जमा होनेवाले लोग अेक दूसरेको पहचानते नहीं। अछूत खुद यह न कहें कि हम अछूत हैं, तो अुन्हें कौन पहचान सकता है? कितने ही हरिजन मुझे अैसे मिले हैं, जो काशीविश्वनाथके मन्दिरमें हो आये हैं। यह १९१५ की बात है। मैंने अुनसे कहा था कि

अपने प्रेमके कारण ही अछूतोंके मामलेमें अैसा किया था। यही बात मेरे भाअीके सम्बन्धमें भी हुअी है। अुन्हें मेरे प्रति अितनी अरुचि हो गयी थी कि वे मुझे गालियाँ देते थे। लेकिन जब वे मृत्युशय्या पर पड़े, तब अुनका दिल बदल गया। और अुन्हें यह महसूस हुआ कि अुन्होंने अपने छोटे भाअीके प्रति घोर अन्याय किया है। अिससे अुल्टे अुदाहरण लीजिये। असहयोगकी लड़ाअीमें जो मेरे लिअे अपनी जान देनेको तैयार थे, अुन्हींने मेरे दूसरे कामोंके कारण मुझे गोली मारनेकी धमकी दी है। मेरे जीवनके अैसे कितने ही पन्ने हैं। दक्षिण अफ्रीकामें मीर आलमका भी बहुत बड़ा हृदय-परिवर्तन हुआ। ये सब अुदाहरण यह बताते हैं कि अुनका प्रेम अुनकी मान्यताओंसे अधिक बलवान था। अकसर देशभक्ति या देशप्रेम धर्मका रूप ग्रहण कर लेता है। धर्मका अर्थ है जो धारण करे। फिर भले ही वह धर्म नास्तिकका हो, मूर्तिपूजा करनेवालेका हो या निराकारकी अुपासना करनेवालेका हो।

"प्रेममें जबरदस्ती होती ही है। क्या प्रेमके दबावमें आकर मित्र कितने ही काम नहीं करते?"

स० — लेकिन क्या प्रेमसे प्रश्न हल हो जाता है?

बापू — हमेशा नहीं। लेकिन अगर प्रेम बादमें मान्यताका रूप ग्रहण कर ले, तो ज़रूर हल हो जाय। प्रेमकी शक्ति अजीब है। बलात्कारमें जिसपर वह किया जाता है, अुसको शारीरिक और मानसिक दुःख पहुँचानेकी बात रहती है। प्रेममें भी कष्ट तो है। मगर वह दूसरी ही तरहका होता है। वह बालकको धारण करनेवाली माताके कष्ट जैसा है। प्रसूतिकी पीड़ाका अेक बार अनुभव हो जानेके बाद भी वह दूसरा बालक किस लिअे धारण करती है?

पवित्रता सजीव वस्तु है। वह रोगके जन्तुओंसे भी अधिक चिपकनेवाली है। जिसकी अिच्छा न हो अुसपर भी रोगके कीड़े जिस तरह असर करते हैं, अुसी तरह पवित्रताका भी असर मनुष्य पर अुसकी अिच्छाके विरुद्ध होता है। अीथर या बिजलीसे भी वह अधिक बलवान है। ये तो भौतिक शक्तियाँ हैं। मगर पवित्रता नैतिक बल है, और नैतिक बल भौतिक बलसे अनंतगुना श्रेष्ठ है। कोअी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि वह अकेला ही शुद्ध है। अैसी शुद्धि तो धुली हुअी कब्र जैसी होगी।

स० — कुछ हद तक अैसा होता है।

बापू — किस लिअे? मन्दिरमें जमा होनेवाले लोग अेक दूसरेको पहचानते नहीं। अछूत खुद यह न कहें कि हम अछूत हैं, तो अुन्हें कौन पहचान सकता है? कितने ही हरिजन मुझे अैसे मिले हैं, जो काशीविश्वनाथके मन्दिरमें हो आये हैं। यह १९१५ की बात है। मैंने अुनसे कहा था कि

बापू — नहीं, हरिजनोंको अलग रखकर सुधारा ही नहीं जा सकता। अुन्हें सुधारनेके लिअे अुनसे निकट सम्पर्क पैदा करना ही चाहिये। आप तो जब तक वे न सुधरें तब तक अुन्हें अछूत रखना चाहते हैं। लेकिन टॉल्स्टॉयकी भाषामें कहूँ, तो आपको अुनकी पीठ परसे अुतर जाना चाहिये। आप तो अुनकी पीठ पर बैठे-बैठे अुनका पसीना और मैल धोनेकी बात कर रहे हैं। लेकिन ज्यों ही आप अुनकी पीठ परसे अुतर जायँगे, त्यों ही अुनके शरीरसे सुगंध आने लगेगी। अुन्हें गंदा और अपवित्र रखकर आप गंदे और अपवित्र बनते हैं। अिस तर्कसे दूसरी तरह लोकमान्य तिलकने तर्क किया है: '(स्वराज्यके लिअे) मुझे लायक़ बननेका कहनेवाले तुम कौन? मैं तो लायक़ हूँ ही और अिसे (स्वराज्यको) अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता हूँ।'

स० — मगर अुन्हें जो नालायक़ बना दिया गया है, अुसका क्या हो?

बापू — कौन नालायक़ है, यह तो अेक अीश्वर ही जानता है। क्या आप अिस बातसे अिनकार कर सकते हैं कि कितने ही अछूत आपसे और मुझसे कहीं अधिक पवित्र होते हैं? सिर्फ़ बाहरी सफ़ाअीकी बात न कहिये। वह तो पलक मारते ही आ सकती है।

आपको अुन्हें स्वच्छ रहनेका मौक़ा देना चाहिये और प्रोत्साहन देना चाहिये। फिर तो वे आपसे ज्यादा साफ़ रहेंगे; जैसे धर्मपरिवर्तन करके बना हुआ अीसाअी जन्मसे अीसाअी माने जानेवालेके बनिस्बत बाअिबलकी दस आज्ञाओंका पालन ज्यादा अच्छी तरह करता है।

स० — लेकिन हम राजभोजको कहाँ अछूत मानते हैं?

बापू — नहीं मानते? क्या वह पार्वतीके मन्दिरमें जा सकता है? आम्बेडकर तो मुझे कहते थे कि अुन्हें पूनामें रहनेको मकान नहीं मिलता। वे पूना आये तब क्या आपमेंसे किसीने अुनसे कहा था कि हमारा घर आपका ही है? अिसलिअे आपने तो यह बहुत गलत अुदाहरण पसन्द किया है। अगर आप लोगोंने अिन (पढ़े-लिखे) लोगोंके लिअे भी अछूतपन मिटा दिया होता तो भी ठीक था। मगर आँखोंमें खटकनेवाले अिन लोगोंके अुदाहरण मेरे अुपवासके लिअे काफ़ी हैं। मैं तो जब आम्बेडकरको जानता भी नहीं था, तब भी अुनकी ज़हरीली आलोचनाओंका बचाव करता था। पूना-क़रारमें मैंने अिसे क्यों अुड़ा दिया, यह आप जानते हैं? आम्बेडकरने मुझसे कहा कि मुझे तो सुरक्षित बैठकें अेक सज़ाके तौर पर चाहियें। अुनकी बात मैंने फ़ौरन मान ली। अुन्होंने कहा कि आप जो यह परिपाटी डाल रहे हैं सो तो मैं कुछ समझता नहीं। मैं तो अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि क़ानून न बना तो हमें कुछ नहीं मिलेगा। मेरे नाम जो बहुतेरे पत्र आते हैं, अुनसे मैं भी अिस रायका बन गया हूँ कि सुरक्षित बैठकें

बापू — नहीं, हरिजनोंको अलग रखकर सुधारा ही नहीं जा सकता। अुन्हें सुधारनेके लिअे अुनसे निकट सम्पर्क पैदा करना ही चाहिये। आप तो जब तक वे न सुधरें तब तक अुन्हें अछूत रखना चाहते हैं। लेकिन टॉल्स्टॉयकी भाषामें कहूँ, तो आपको अुनकी पीठ परसे अुतर जाना चाहिये। आप तो अुनकी पीठ पर बैठे-बैठे अुनका पसीना और मैल धोनेकी बात कर रहे हैं। लेकिन ज्यों ही आप अुनकी पीठ परसे अुतर जायँगे, त्यों ही अुनके शरीरसे सुगंध आने लगेगी। अुन्हें गंदा और अपवित्र रखकर आप गंदे और अपवित्र बनते हैं। अिस तर्कसे दूसरी तरह लोकमान्य तिलकने तर्क किया है: '(स्वराज्यके लिअे) मुझे लायक़ बननेका कहनेवाले तुम कौन? मैं तो लायक़ हूँ ही और अिसे (स्वराज्यको) अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता हूँ।'

स० — मगर अुन्हें जो नालायक़ बना दिया गया है, अुसका क्या हो?

बापू — कौन नालायक़ है, यह तो अेक अीश्वर ही जानता है। क्या आप अिस बातसे अिनकार कर सकते हैं कि कितने ही अछूत आपसे और मुझसे कहीं अधिक पवित्र होते हैं? सिर्फ़ बाहरी सफ़ाअीकी बात न कहिये। वह तो पलक मारते ही आ सकती है।

आपको अुन्हें स्वच्छ रहनेका मौक़ा देना चाहिये और प्रोत्साहन देना चाहिये। फिर तो वे आपसे ज्यादा साफ़ रहेंगे; जैसे धर्मपरिवर्तन करके बना हुआ अीसाअी जन्मसे अीसाअी माने जानेवालेके बनिस्बत बाअिबलकी दस आज्ञाओंका पालन ज्यादा अच्छी तरह करता है।

स० — लेकिन हम राजभोजको कहाँ अछूत मानते हैं?

बापू — नहीं मानते? क्या वह पार्वतीके मन्दिरमें जा सकता है? आम्बेडकर तो मुझे कहते थे कि अुन्हें पूनामें रहनेको मकान नहीं मिलता। वे पूना आये तब क्या आपमेंसे किसीने अुनसे कहा था कि हमारा घर आपका ही है? अिसलिअे आपने तो यह बहुत गलत अुदाहरण पसन्द किया है। अगर आप लोगोंने अिन (पढ़े-लिखे) लोगोंके लिअे भी अछूतपन मिटा दिया होता तो भी ठीक था। मगर आँखोंमें खटकनेवाले अिन लोगोंके अुदाहरण मेरे अुपवासके लिअे काफ़ी हैं। मैं तो जब आम्बेडकरको जानता भी नहीं था, तब भी अुनकी ज़हरीली आलोचनाओंका बचाव करता था। पूना-क़रारमें मैंने अिसे क्यों अुड़ा दिया, यह आप जानते हैं? आम्बेडकरने मुझसे कहा कि मुझे तो सुरक्षित बैठकें अेक सज़ाके तौर पर चाहियें। अुनकी बात मैंने फ़ौरन मान ली। अुन्होंने कहा कि आप जो यह परिपाटी डाल रहे हैं सो तो मैं कुछ समझता नहीं। मैं तो अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि क़ानून न बना तो हमें कुछ नहीं मिलेगा। मेरे नाम जो बहुतेरे पत्र आते हैं, अुनसे मैं भी अिस रायका बन गया हूँ कि सुरक्षित बैठकें

सदाशिव : “मतगणना किस तरह होगी ? किसान तो जमींदारोंके विरुद्ध मत नहीं देंगे ।”

बापू : “तो ये सब प्रश्न अुपवासकी बात अुठाओी, अुससे पहले मेरे सामने रखने चाहिये थे ।”

सदाशिव : “यह मन्दिर दस बरस पहले अेक मुख्त्यारके हाथमें था — कर्ज़में डूबा होनेके कारण । तब मैनेजर साहब और अुनका खानसामा मन्दिरमें जा सकते थे ।”

बापू : “अगर लोकमत सक्रिय रूपमें हमारी तरफ़ न हो, तो मन्दिर नहीं खुलेगा और अुपवास वगैरा कुछ भी नहीं किया जा सकता । अैसे छुक छिपकर मन्दिर-प्रवेश करनेकी मिसालें मेरे सामने रखनेसे क्या फ़ायदा ? ज़ामोरिनने तो अैसी बहुतसी बातें सहन कर ली होंगी । आप ये चोरी-चुपकेके अुदाहरण देते हैं, अिससे तो यह साबित होता है कि लोग डरपोक हैं । ज़ामोरिन भी डरपोक आदमी मालूम होता है । अुसके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ है, अुससे मेरी राय अिसके खिलाफ़ नहीं बनी ।”

सदाशिव : “केलप्पनको लगता है कि केरल अकेला अिस लड़ाओीको नहीं लड़ सकेगा ।”

बापू : “अगर वहाँका लोकमत तैयार न हो, तो बाहरकी ताक़तसे कुछ भी काम नहीं होगा । ज़ामोरिनको तो भूल ही जाओ । यदि लोकमत आपके पक्षमें हो, तो यह बिचारा तो आपके साथ हो ही जायगा । मगर आप बाहरके कार्यकर्ताओं पर आधार रखते हों, तो यही समझना कि टूटी हुओी लकड़ी पर आधार रखते हो ।”

अेक आदमीने सुझाया कि “आप सरकारको लिखिये न कि आप हमें छोड़ते हों, साथियोंको छोड़ते हों और अच्छा विधान देते हों, तो मेरे लिअे सविनयभंग करनेकी ज़रूरत नहीं रह जाती ।” अिसे बापूने लिखा : “आपका पत्र मिला । वो दिन कहाँ कि मियाँके पाँवमें जूती ?”

अेक अेडवोकेटको अपनी कुरूप पत्नी पसन्द नहीं है । वह लंबे पत्र लिख-कर पूछता है, “मुझे रास्ता बताअिये कि कैसे अिस बलासे छूटूँ ?” बापूने अुसे सूचना दी कि “अुस पर प्रेम करना आपका धर्म है । क्योंकि आपने नाबालिग अवस्थामें अुससे शादी नहीं की थी ।” अुसका फिर पत्र आया कि “अैसी कोशिश करनेका अर्थ यह हुआ कि हम दोनों ही कओी वर्षों तक दुःखमय जीवन बितायें ।” बापूने फिर अुसे लिखा : “गीताका श्लोक याद करो : ‘यदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्’ ।”

सदाशिव : "मतगणना किस तरह होगी ? किसान तो जमींदारोंके विरुद्ध मत नहीं देंगे ।"

बापू : "तो ये सब प्रश्न अुपवासकी बात अुठाअी, अुससे पहले मेरे सामने रखने चाहिये थे ।"

सदाशिव : "यह मन्दिर दस बरस पहले अेक मुख्त्यारके हाथमें था — कर्ज़में डूबा होनेके कारण । तब मैनेजर साहब और अुनका खानसामा मन्दिरमें जा सकते थे ।"

बापू : "अगर लोकमत सक्रिय रूपमें हमारी तरफ़ न हो, तो मन्दिर नहीं खुलेगा और अुपवास वगैरा कुछ भी नहीं किया जा सकता । अैसे लुक छिपकर मन्दिर-प्रवेश करनेकी मिसालें मेरे सामने रखनेसे क्या फ़ायदा ? ज़ामोरिनने तो अैसी बहुतसी बातें सहन कर ली होंगी । आप ये चोरी-चुपकेके अुदाहरण देते हैं, अिससे तो यह साबित होता है कि लोग डरपोक हैं । ज़ामोरिन भी डरपोक आदमी मालूम होता है । अुसके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ है, अुससे मेरी राय अिसके खिलाफ़ नहीं बनी ।"

सदाशिव : "केलप्पनको लगता है कि केरल अकेला अिस लड़ाअीको नहीं लड़ सकेगा ।"

बापू : "अगर वहाँका लोकमत तैयार न हो, तो बाहरकी ताक़तसे कुछ भी काम नहीं होगा । ज़ामोरिनको तो भूल ही जाओ । यदि लोकमत आपके पक्षमें हो, तो यह बिचारा तो आपके साथ हो ही जायगा । मगर आप बाहरके कार्यकर्ताओं पर आधार रखते हों, तो यही समझना कि टूटी हुअी लकड़ी पर आधार रखते हो ।"

अेक आदमीने सुझाया कि "आप सरकारको लिखिये न कि आप हमें छोड़ते हों, साथियोंको छोड़ते हों और अच्छा विधान देते हों, तो मेरे लिअे सविनयभंग करनेकी ज़रूरत नहीं रह जाती ।" अिसे बापूने लिखा : "आपका पत्र मिला । वो दिन कहाँ कि मियाँके पाँवमें जूती ?"

अेक अेडवोकेटको अपनी कुरूप पत्नी पसन्द नहीं है । वह लंबे पत्र लिख-कर पूछता है, "मुझे रास्ता बताअिये कि कैसे अिस बलासे छूटूँ ?" बापूने अुसे सूचना दी कि "अुस पर प्रेम करना आपका धर्म है । क्योंकि आपने नाबालिग अवस्थामें अुससे शादी नहीं की थी ।" अुसका फिर पत्र आया कि "अैसी कोशिश करनेका अर्थ यह हुआ कि हम दोनों ही कअी वर्षों तक दुःखमय जीवन बितायें ।" बापूने फिर अुसे लिखा : "गीताका श्लोक याद करो : 'यदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्' ।"

अिसके बाद यह बात चली कि अुन्हें पूना क्यों नहीं लाये। सतीशबाबूने अपनी कठिनाअी, खर्चेकी कठिनाअी बताअी और धर्मशालामें ठहरना, जहाँ अेकान्त नहीं होता, आदि बातें भी कहीं। अिस पर बापू कहने लगे: "ठीक तो है, अिस मामलेमें तो वह पतिका काम नहीं कर सकती। वह फिर पत्नी हो जाती है!"

आज मिलनेवालोंमें अवंतिका बहन थीं, ... थे। अवंतिका बहनके प्रेमकी निशानी देखिये: अुन्होंने अपने साथ फूल ले लिये थे और रास्तेमें अुन्हें गूँथकर हार बनाती-बनाती आअीं।

. . . . ने मेरे साथ बहुत बातें कीं। वे सब मैंने प्रेमसे सुनीं। मगर मुझे यह न सूझा कि वे कहाँ ठहरे हैं, यह पूछ लूँ। मैंने यह मान लिया कि वे देवदासके साथ आये होंगे और अुन्हींके साथ ठहरे होंगे। मगर बापू तो आश्रमके पिता ठहरे, अिसलिअे अुनकी नज़रमें अैसी बात आये बिना रह ही नहीं सकती। अुन्होंने ब्यौरेवार पूछताछ की।

अुन्होंने कहा: "अीसाअी सेवासंघमें ठहरा हूँ।"

"वहाँ क्यों ठहरे?"

"शामराव आश्रममें आये थे। जब वे खादीको माँड़ लगाना देखने आये तब अुन्होंने मुझसे कहा था कि आप जब पूना आयें, तब हमारे यहाँ ठहरना।"

बापूने हमसे कहा: "यह बात सुनकर मैं चौंका। मुझे अैसा लगा कि अिस मामलेमें नारणदास चूक गये। हमारे यहाँसे . . . . आये और अीसाअी सेवासंघके सिवाय अुन्हें कोअी दूसरा ठहरानेवाला न मिले, यह कितने दुःखकी बात है?" फिर कहने लगे: "और . . . . भी कैसा आदमी है? यह बेचारा ज़रा-ज़रासी बातोंमें भी नियम पालनेवाला है।"

मैंने अुनसे पूछा: "क्या खाया?"

अुस बेचारेने कहा: "पानी पिया, मगर खाया नहीं। वे लोग मांस-मदिरा अिस्तेमाल करनेवाले होंगे, वहाँ हम कैसे खायें?"

बापूने कहा: "मगर ये लोग शराब तो हरगिज़ नहीं पीते होंगे।"

. . . . कहने लगे: "मगर मैंने अुनके यहाँ अंडे देखे तो मुझे खयाल हुआ कि मांस भी खाते होंगे। अिसलिअे फिर मैंने कुछ नहीं खाया और पैदल चला आया, सो डेढ़ घंटेमें यहाँ पहुँचा।"

अेक समय मांस खानेवाला, मुर्दार मांस भी खानेवाला . . . . अिस तरह नियमोंपर क़ायम रहे, यह जानकर बापूको बहुत आनन्द हुआ। फिर तो गाड़ीमें जगह मिली या नहीं, कहाँ खाया और क्या खाया, वगैरा सभी बातोंकी चर्चा कर ली।

अिसके बाद यह बात चली कि अुन्हें पूना क्यों नहीं लाये। सतीशबाबूने अपनी कठिनाअी, खर्चेकी कठिनाअी बताअी और धर्मशालामें ठहरना, जहाँ अेकान्त नहीं होता, आदि बातें भी कहीं। अिस पर बापू कहने लगे: "ठीक तो है, अिस मामलेमें तो वह पतिका काम नहीं कर सकती। वह फिर पत्नी हो जाती है!"

आज मिलनेवालोंमें अवंतिका बहन थीं, ... थे। अवंतिका बहनके प्रेमकी निशानी देखिये: अुन्होंने अपने साथ फूल ले लिये थे और रास्तेमें अुन्हें गूँथकर हार बनाती-बनाती आअीं।

. . . . ने मेरे साथ बहुत बातें कीं। वे सब मैंने प्रेमसे सुनीं। मगर मुझे यह न सूझा कि वे कहाँ ठहरे हैं, यह पूछ लूँ। मैंने यह मान लिया कि वे देवदासके साथ आये होंगे और अुन्हींके साथ ठहरे होंगे। मगर बापू तो आश्रमके पिता ठहरे, अिसलिअे अुनकी नज़रमें अैसी बात आये बिना रह ही नहीं सकती। अुन्होंने ब्यौरेवार पूछताछ की।

अुन्होंने कहा: "अीसाअी सेवासंघमें ठहरा हूँ।"

"वहाँ क्यों ठहरे?"

"शामराव आश्रममें आये थे। जब वे खादीको माँड़ लगाना देखने आये तब अुन्होंने मुझसे कहा था कि आप जब पूना आयें, तब हमारे यहाँ ठहरना।"

बापूने हमसे कहा: "यह बात सुनकर मैं चौंका। मुझे अैसा लगा कि अिस मामलेमें नारणदास चूक गये। हमारे यहाँसे . . . . आये और अीसाअी सेवासंघके सिवाय अुन्हें कोअी दूसरा ठहरानेवाला न मिले, यह कितने दुःखकी बात है?" फिर कहने लगे: "और . . . . भी कैसा आदमी है? यह बेचारा ज़रा-ज़रासी बातोंमें भी नियम पालनेवाला है।"

मैंने अुनसे पूछा: "क्या खाया?"

अुस बेचारेने कहा: "पानी पिया, मगर खाया नहीं। वे लोग मांस-मदिरा अिस्तेमाल करनेवाले होंगे, वहाँ हम कैसे खायें?"

बापूने कहा: "मगर ये लोग शराब तो हरगिज़ नहीं पीते होंगे।"

. . . . कहने लगे: "मगर मैंने अुनके यहाँ अंडे देखे तो मुझे खयाल हुआ कि मांस भी खाते होंगे। अिसलिअे फिर मैंने कुछ नहीं खाया और पैदल चला आया, सो डेढ़ घंटेमें यहाँ पहुँचा।"

अेक समय मांस खानेवाला, मुर्दार मांस भी खानेवाला . . . . अिस तरह नियमोंपर क़ायम रहे, यह जानकर बापूको बहुत आनन्द हुआ। फिर तो गाड़ीमें जगह मिली या नहीं, कहाँ खाया और क्या खाया, वगैरा सभी बातोंकी चर्चा कर ली।

कच्छ पहनकर निपटाया जाता है। रंगरेज़ जितना मैला हो जाता है, अुतना मैल भंगीका काम करनेवालेको चढ़ता ही नहीं। शास्त्रीय ढंगसे वह सब सफ़ाअी करे, तो अुसके लिअे सिर्फ़ मृत्तिका-स्नान ही काफ़ी है। तुम तो शायद जानते भी होगे कि स्मृतिधर्ममें और अिस्लाममें मृत्तिका-स्नान पूर्ण स्नान है। मगर अैसे भी दूसरे धंधे हैं, जिनमें मृत्तिका-स्नान या पानी भी पूर्ण स्नान नहीं है। साफ़ होनेके लिअे साबुन और जंतुनाशक दवा वग़ैराकी ज़रूरत पड़ती है। अैसा धंधा चमार, डॉक्टर, रंगरेज़ और कोयलेका काम करनेवालेका है। और भी अैसे बहुतसे धंधे हैं। भंगीकी सफ़ाअी अस्पृश्यता निवारणमें बहुत कम महत्त्व रखती है। अिन सब बातोंका गहराअीसे विचार करना। प्रमाण नहीं भूलना चाहिये। अधिक चर्चा करनी हो तो मेरे पास आ जाना।"

'क्रॉनिकल' की अेक टिप्पणी पर आलोचना करते हुअे हीरालालने कहा: 'भंगियोंको स्वच्छ रखनेके बारेमें अहिन्दुओंकी भी अुतनी ही ज़िम्मेदारी है।' अिस सम्बन्धमें :

"'क्रॉनिकल' की टिप्पणी मुझे अनुचित नहीं लगी। अभी भंगी चाहे जिसका काम करते हैं, लेकिन हिन्दुओंने यदि अुनको अपनाया होता, तो अुनकी आज जो स्थिति है, वह कभी न होती। युरोपके भंगी या दुनियाके और किसी भी हिस्सेके भंगीकी हालत दूसरे मज़दूरोंसे ज़रा भी घटिया नहीं है। अुनके लिअे न तो खास मुहल्ले हैं और न विशेष पोशाक। भंगी जैसी जातिको हिन्दुस्तानसे बाहर कोअी नहीं जानता।"

सरलाबहन, शारदाबहन, विद्याबहन और नंदूबहन आअीं। आम्बेडकर सहभोजन क्यों नहीं चाहते यह समझाया। 'अतिथियज्ञ' करो, मगर अस्पृश्यताका फ़ैसला कर रहे हैं, यह मानकर न करो। जिसकी नाक बहती हो, जिसके कपड़े गन्दे हों और मुँहसे बदबू आती हो, अुसके साथ खानेमें तो कोअी सार ही नहीं। काम करनेवालोंको प्रीतिभोजमें भाग नहीं लेना चाहिये — खानगी जीवनमें तो ज़रूर बुलाया जा सकता है। मगर अिसका प्रचार जातियोंको चिढ़ानेके लिअे नहीं करना चाहिये।

मन्दिरोंके बारेमें मतगणना कराअी जाय और बादमें असहयोग कराया जाय। जिसमें नैतिक बल नहीं अुसमें अुपवास बल पैदा कर देगा। अुपवास करनेवाला भले ही कष्ट अुठायेगा, मगर दरअसल यह स्थिति होगी कि देखनेवाले ही जलेंगे।

श्रीमती कज़िन्स आ गयीं। जिनेवाकी सभाकी बात कही। "सब साधनहीन ग़रीब आदमी हैं, अिसलिअे ज़्यादा तो क्या करें?"

कच्छ पहनकर निपटाया जाता है। रंगरेज़ जितना मैला हो जाता है, अुतना मैल भंगीका काम करनेवालेको चढ़ता ही नहीं। शास्त्रीय ढंगसे वह सब सफ़ाअी करे, तो अुसके लिअे सिर्फ़ मृत्तिका-स्नान ही काफ़ी है। तुम तो शायद जानते भी होगे कि स्मृतिधर्ममें और अिस्लाममें मृत्तिका-स्नान पूर्ण स्नान है। मगर असे भी दूसरे धंधे हैं, जिनमें मृत्तिका-स्नान या पानी भी पूर्ण स्नान नहीं है। साफ़ होनेके लिअे साबुन और जंतुनाशक दवा वगैराकी ज़रूरत पड़ती है। असा धंधा चमार, डॉक्टर, रंगरेज़ और कोयलेका काम करनेवालेका है। और भी असे बहुतसे धंधे हैं। भंगीकी सफ़ाअी अस्पृश्यता निवारणमें बहुत कम महत्त्व रखती है। अिन सब बातोंका गहराअीसे विचार करना। प्रमाण नहीं भूलना चाहिये। अधिक चर्चा करनी हो तो मेरे पास आ जाना।"

'क्रॉनिकल' की अेक टिप्पणी पर आलोचना करते हुअे हीरालालने कहा: 'भंगियोंको स्वच्छ रखनेके बारेमें अहिन्दुओंकी भी अुतनी ही ज़िम्मेदारी है।' अिस सम्बन्धमें:

"'क्रॉनिकल' की टिप्पणी मुझे अनुचित नहीं लगी। अभी भंगी चाहे जिसका काम करते हैं, लेकिन हिन्दुओंने यदि अुनको अपनाया होता, तो अुनकी आज जो स्थिति है, वह कभी न होती। युरोपके भंगी या दुनियाके और किसी भी हिस्सेके भंगीकी हालत दूसरे मज़दूरोंसे ज़रा भी घटिया नहीं है। अुनके लिअे न तो खास मुहल्ले हैं और न विशेष पोशाक। भंगी जैसी जातिको हिन्दुस्तानसे बाहर कोअी नहीं जानता।"

सरलाबहन, शारदाबहन, विद्याबहन और नंदूबहन आअीं। आम्बेडकर सहभोजन क्यों नहीं चाहते यह समझाया। 'अतिथियज्ञ' करो, मगर अस्पृश्यताका फ़ैसला कर रहे हैं, यह मानकर न करो। जिसकी नाक बहती हो, जिसके कपड़े गन्दे हों और मुँहसे बदबू आती हो, अुसके साथ खानेमें तो कोअी सार ही नहीं। काम करनेवालोंको प्रीतिभोजमें भाग नहीं लेना चाहिये — खानगी जीवनमें तो ज़रूर बुलाया जा सकता है। मगर अिसका प्रचार जातियोंको चिढ़ानेके लिअे नहीं करना चाहिये।

मन्दिरोंके बारेमें मतगणना कराअी जाय और बादमें असहयोग कराया जाय। जिसमें नैतिक बल नहीं अुसमें अुपवास बल पैदा कर देगा। अुपवास करनेवाला भले ही कष्ट अुठायेगा, मगर दरअसल यह स्थिति होगी कि देखनेवाले ही जलेंगे।

श्रीमती कज़िन्स आ गयीं। जिनेवाकी सभाकी बात कही। "सब साधनहीन गरीब आदमी हैं, अिसलिअे ज्यादा तो क्या करें?"

कामों और विचारोंसे आप पूरी तरह सहमत हैं। मुझे लगता है कि आपने लोगोंको भी यह मानका मौका दिया कि आप बहुमतके साथ हैं। आप अपने मनमें जो विरोध रखे हुअे थे, अुसका किसीको पता नहीं था। और कुछ नहीं तो कम-से-कम मेरे मार्गदर्शनके लिअे तो आपको अपने विचार मुझे बता ही देने चाहिये थे। आप जानते हैं कि आपकी रायका मैं कितना आदर करता हूँ। आपका मौन सम्मति-सूचक नहीं था, अिससे सत्यको आघात पहुँचता है। मित्रता तो ठोस चीज़ है। वह अैसी होनी चाहिये जो सख्त चोट बरदाश्त कर सके। आअिंदा मुझे बचानेका विचार न करके सीधी बात कहकर ही आप कामकी और मेरी मदद कर सकेंगे।

"राधाकान्तने मुझे यह कहकर सावधान कर दिया था कि मैं सुरंग पर खड़ा हुआ हूँ। मैं सोचता हूँ कि अुसकी बात ठीक थी।

"लेकिन यह सब मैं आपके लिअे ही लिख रहा हूँ। आपके पत्रका कुछ भी अुपयोग न करनेकी आपकी अिच्छाका आदर करूँगा। यह पत्र मैं फाड़ रहा हूँ।

स्नेहाधीन

मो० क० गांधी"

शास्त्री और गुरुदेवको भी अुनके पत्रोंके जवाब लिखे। कल रातको स्वामी, मोहनलाल भट्ट, रामदास और छगनभाअी, अिनमेंसे किसी अेक आदमीको मददके लिअे देनेका बापूने सरकारको लिखा।

अेक अमेरिकन स्त्रीको लिखा:

"अीश्वरके अस्तित्व या प्रार्थनाके असरको साबित करनेके लिअे दैवी अुपचारका प्रयोग करनेका खयाल मुझे पसन्द नहीं है। आज अगर अीसा मसीह पृथ्वी पर लौट आयें, तो जिस रोगमुक्त करनेकी शक्ति और दूसरे चमत्कारोंका अुनके सम्बन्धमें आरोपण किया जाता है, अुनका आज जो अुपयोग हो रहा है अुसे देखकर वे क्या सोचेंगे, यह कहना मुश्किल है।"

वाअीके सीताराम और कृष्णाजी नलवड़े वगैरा लोग आये। अस्पृश्यताका काम कैसा हो रहा है अुसका वर्णन: (१) दर्शन करनेवालोंके तीन दर्जे कर दिये गये हैं। (२) अछूतोंका काम करनेके लिअे रुपया माँगते हैं। (३) सार्वजनिक धनसे बने हुअे मन्दिर खानगी कैसे हो सकते हैं? जिन लोगोंका बहिष्कार हो, वे क्या करें? मुर्दार मांस न खानेवालों और मरे हुअे ढोर न अुठानेवालों पर जुल्म होता है। भोर राज्यके अछूतोंको अिस तरह ढोर न खींचने पर माफ़ीकी ज़मीन खो देनी पड़ी है।

कामों और विचारोंसे आप पूरी तरह सहमत हैं। मुझे लगता है कि आपने लोगोंको भी यह मानका मौका दिया कि आप बहुमतके साथ हैं। आप अपने मनमें जो विरोध रखे हुअे थे, अुसका किसीको पता नहीं था। और कुछ नहीं तो कम-से-कम मेरे मार्गदर्शनके लिअे तो आपको अपने विचार मुझे बता ही देने चाहिये थे। आप जानते हैं कि आपकी रायका मैं कितना आदर करता हूँ। आपका मौन सम्मति-सूचक नहीं था, अिससे सत्यको आघात पहुँचता है। मित्रता तो ठोस चीज़ है। वह अैसी होनी चाहिये जो सख्त चोट बरदाश्त कर सके। आअिंदा मुझे बचानेका विचार न करके सीधी बात कहकर ही आप कामकी और मेरी मदद कर सकेंगे।

"राधाकान्तने मुझे यह कहकर सावधान कर दिया था कि मैं सुरंग पर खड़ा हुआ हूँ। मैं सोचता हूँ कि अुसकी बात ठीक थी।

"लेकिन यह सब मैं आपके लिअे ही लिख रहा हूँ। आपके पत्रका कुछ भी अुपयोग न करनेकी आपकी अिच्छाका आदर करूँगा। यह पत्र मैं फाड़ रहा हूँ।

स्नेहाधीन
मो० क० गांधी"

शास्त्री और गुरुदेवको भी अुनके पत्रोंके जवाब लिखे। कल रातको स्वामी, मोहनलाल भट्ट, रामदास और छगनभाअी, अिनमेंसे किसी अेक आदमीको मददके लिअे देनेका बापूने सरकारको लिखा।

अेक अमेरिकन स्त्रीको लिखा:

"अीश्वरके अस्तित्व या प्रार्थनाके असरको साबित करनेके लिअे दैवी अुपचारका प्रयोग करनेका खयाल मुझे पसन्द नहीं है। आज अगर अीसा मसीह पृथ्वी पर लौट आयें, तो जिस रोगमुक्त करनेकी शक्ति और दूसरे चमत्कारोंका अुनके सम्बन्धमें आरोपण किया जाता है, अुनका आज जो अुपयोग हो रहा है अुसे देखकर वे क्या सोचेंगे, यह कहना मुश्किल है।"

वाअीके सीताराम और कृष्णाजी नलवड़े वगैरा लोग आये। अस्पृश्यताका काम कैसा हो रहा है अुसका वर्णन: (१) दर्शन करनेवालोंके तीन दर्जे कर दिये गये हैं। (२) अछूतोंका काम करनेके लिअे रुपया माँगते हैं। (३) सार्वजनिक धनसे बने हुअे मन्दिर खानगी कैसे हो सकते हैं? जिन लोगोंका बहिष्कार हो, वे क्या करें? मुर्दार मांस न खानेवालों और मरे हुअे ढोर न अुठानेवालों पर जुल्म होता है। भोर राज्यके अछूतोंको अिस तरह ढोर न खींचने पर माफ़ीकी ज़मीन खो देनी पड़ी है।

यह भी बता दूँ कि महादेव, मैं और यहाँके आपके दूसरे मित्र, आपके क्षेत्रमें जो घटनाअें होती हैं अुनके प्रति अुदासीन नहीं रहते।"

जॉन हाअिलेण्डने रूसका जो असर अुन पर पड़ा, वह अेक छोटेसे पत्रमें लिख भेजा। अिससे बापू आश्चर्यचकित हुअे और अुसे लिखा:

"अिस बारका आपका पत्र तो अेक नोटपेपरमें समाअी हुअी पुस्तकके समान है। रूसके बारेमें मैंने अिधर-अुधरसे जितना भी पढ़ा है और यात्रियोंके मुँहसे सुना है, अुसके बनिस्बत आपके अिस पत्रमें मुझे ज्यादा मिल गया। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके पत्रके प्रति मेरे पक्षपातका मुख्य कारण यह है कि आपके निरीक्षणकी सावधानी और आपकी सत्यप्रियता पर मेरी श्रद्धा है।"

अगले अुपवासके बारेमें अिसी पत्रमें लिखा:

"मेरे दूसरे अुपवासकी चर्चा चल रही है। मैं चाहता हूँ कि अिस बारेमें आप और दूसरे मित्र क्षुब्ध न हों। शायद मुझे अिस कसौटीमें से नहीं गुज़रना पड़ेगा। मगर यह कसौटी हो या न हो, अेक ही बात है। मैं भगवानकी गोदमें सुरक्षित हूँ और अनेक देशोंमें अनेक मित्र मेरे लिअे जो प्रार्थनायें कर रहे हैं, वह अिस बातका अचूक प्रमाण है कि मैं पूरी तरह अुसके आधीन हूँ।"

अिटलीकी बहनों — संत फ्रांसिसके लार्क पंछियों (Larks of St. Frances) को लिखते हुअे लिखा:

"....तो सचमुच ही अुड़ाअू है। जहाँ-तहाँ अपना प्रेम बिछाता है और लड़का बनकर बड़ी अुम्रके आदमियोंका दिल जीत लेता है। अल्बत्ता, आप अितना तो जानती होंगी कि यद्यपि वह हिन्दुस्तानमें है, तो भी हम अेक-दूसरेसे अधिक नहीं मिल सकते। मगर अिससे क्या? अुसका शरीर पास न होने पर भी मैं अुसकी आत्माका अपने पास होना अनुभव कर सकता हूँ। आध्यात्मिक सम्बन्ध नहीं टूट सकता। आध्यात्मिक सान्निध्यमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। आप लिखती हैं कि आप सब प्रार्थनाकी शक्तिको न भूलनेकी भरसक कोशिश कर रही हैं। अिसे भूल जायँ, तो आफत ही आ जाय न?"

२५–११–'३२

हिन्दू-मुस्लिम अेकताके चाहनेवाले नटराजन जैसे साफ व्यक्ति बहुत कम होंगे। अपने पत्रमें वे आगरेकी अेक मुलाक़ातका चित्र खींचते हैं: "हमने कलका दिन आगरेमें बिताया। अकबरका मक़बरा देखकर मुझ पर बड़ा असर हुआ। दूसरे मक़बरोंमें खुदाअीका काम बहुत ही होता है। अुनके मुक़ाबलेमें यह बिलकुल

यह भी बता दूँ कि महादेव, मैं और यहाँके आपके दूसरे मित्र, आपके क्षेत्रमें जो घटनाअें होती हैं अुनके प्रति अुदासीन नहीं रहते।"

जॉन हाअिलेण्डने रूसका जो असर अुन पर पड़ा, वह अेक छोटेसे पत्रमें लिख भेजा। अिससे बापू आश्चर्यचकित हुअे और अुसे लिखा:

"अिस बारका आपका पत्र तो अेक नोटपेपरमें समाअी हुअी पुस्तकके समान है। रूसके बारेमें मैंने अिधर-अुधरसे जितना भी पढ़ा है और यात्रियोंके मुँहसे सुना है, अुसके बनिस्बत आपके अिस पत्रमें मुझे ज्यादा मिल गया। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आपके पत्रके प्रति मेरे पक्षपातका मुख्य कारण यह है कि आपके निरीक्षणकी सावधानी और आपकी सत्यप्रियता पर मेरी श्रद्धा है।"

अगले अुपवासके बारेमें अिसी पत्रमें लिखा:

"मेरे दूसरे अुपवासकी चर्चा चल रही है। मैं चाहता हूँ कि अिस बारेमें आप और दूसरे मित्र क्षुब्ध न हों। शायद मुझे अिस कसौटीमें से नहीं गुज़रना पड़ेगा। मगर यह कसौटी हो या न हो, अेक ही बात है। मैं भगवानकी गोदमें सुरक्षित हूँ और अनेक देशोंमें अनेक मित्र मेरे लिअे जो प्रार्थनायें कर रहे हैं, वह अिस बातका अचूक प्रमाण है कि मैं पूरी तरह अुसके आधीन हूँ।"

अिटलीकी बहनों — संत फ्रांसिसके लार्क पंछियों (Larks of St. Frances) को लिखते हुअे लिखा:

"....तो सचमुच ही अुड़ाअू है। जहाँ-तहाँ अपना प्रेम बिछाता है और लड़का बनकर बड़ी अुम्रके आदमियोंका दिल जीत लेता है। अलबत्ता, आप अितना तो जानती होंगी कि यद्यपि वह हिन्दुस्तानमें है, तो भी हम अेक-दूसरेसे अधिक नहीं मिल सकते। मगर अिससे क्या? अुसका शरीर पास न होने पर भी मैं अुसकी आत्माका अपने पास होना अनुभव कर सकता हूँ। आध्यात्मिक सम्बन्ध नहीं टूट सकता। आध्यात्मिक सान्निध्यमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। आप लिखती हैं कि आप सब प्रार्थनाकी शक्तिको न भूलनेकी भरसक कोशिश कर रही हैं। अिसे भूल जायँ, तो आफत ही आ जाय न?"

२५-११-'३२

हिन्दू-मुस्लिम अेकताके चाहनेवाले नटराजन जैसे साफ व्यक्ति बहुत कम होंगे। अपने पत्रमें वे आगरेकी अेक मुलाक़ातका चित्र खींचते हैं: "हमने कलका दिन आगरेमें बिताया। अकबरका मक़बरा देखकर मुझ पर बड़ा असर हुआ। दूसरे मक़बरोंमें खुदाअीका काम बहुत ही होता है। अुनके मुक़ाबलेमें यह बिलकुल

अुसे लिखा :

"मन्दिरमें जानेवालोंकी ठीक-ठीक मतगणना करनेमें कोअी मुश्किल न होनी चाहिये । आप जितनी दृढ़तासे कहते हैं कि लोकमत मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध है, अुतनी ही दृढ़तासे सुधारक मुझे विश्वास दिलाते हैं कि लोकमत अुनके पक्षमें है । मेरा यह सुझाव है कि दोनों पक्ष अपना अेक-अेक प्रतिनिधि चुनें और किसी भी पक्षकी तरफ़से अनुचित दबाव डाले बिना अीमानदारीसे मतगणना की जाय । जिस मुद्दे पर मत लेना है, वह साफ़ तौर पर तय कर लिया जाय और मतदाताओंको समझा दिया जाय । यह शुद्ध धार्मिक मामला है; अिसमें ज़रा भी गरमागरमीकी गुंजाअिश नहीं ।"

जयसुखलाल और मथुरादास विसनजी वग़ैरा आये । नानाभाअी और परीक्षितलाल भी आये । . . .की अच्छी तरह खबर रखने, अुसे अुलाहना देने और न समझे तो अुसके अखबारको मदद देना बन्द कर देनेकी सलाह दी । हरिजनोंके लिअे आबादीका नक़्शा तैयार करनेकी सूचना दी ।

अुनकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेको कहा । अछूत स्त्रियोंसे भयंकर बदबू आती है और अुनके पास बैठना असम्भव हो जाता है; अिसका अिन्तज़ाम करना चाहिये और अुसके बारेमें अच्छी तरह जान लेना चाहिये ।

दक्षिण अफ्रीकामें हमारा नाम 'लहसन प्याज़' (garlic and onion) पड़ा हुआ है ।

जिन अछूत विद्यार्थियोंकी छात्रवृत्तियोंके लिअे अर्ज़ियाँ आती हैं, अुन्हें दी जा सकती हैं ? अिस सवालके जवाबमें : "अुनसे पूछा जाय कि तुम कोअी सेवा करोगे या नहीं ? हमें अिन लोगोंमें से अन्त्यज सेवक पैदा करने हैं, अिसलिअे अुनके साथ यह शर्त करना ज़रूरी हो जाता है । जहाँ आवश्यक होगा वहाँ अुदार बनकर भी देंगे । हममें यह कहनेकी ताक़त होनी चाहिये कि यदि दस हज़ार भी योग्य लड़के अिस तरहकी छात्रवृत्तियाँ माँगनेवाले मिल जायँगे, तो सबको देंगे ।"

बम्बअीवालोंके साथकी चर्चामें : "गुरुवायुर न खुले और हमें मरना पड़े, तो सारा देश अस्पृश्यतासे सड़ जायगा ।"

गुरुदेवके मन्त्रीको लिखा :

"अितनी दूरसे भी मुझे गुरुदेवकी वेदना मालूम हो रही है । मगर मेरा खयाल है कि यह अनिवार्य है । गुरुदेव अिस समय जिस वेदनामें से गुज़र रहे हैं, वैसी ही वेदनामें से जब तक हमारे देशकी अनेक विशुद्ध आत्माअें नहीं गुज़रेंगी, तब तक सनातनियोंके दिल नहीं पिघलेंगे और न अछूतपनका कलंक मिटेगा ।

अुसे लिखा :

"मन्दिरमें जानेवालोंकी ठीक-ठीक मतगणना करनेमें कोअी मुश्किल न होनी चाहिये। आप जितनी दृढ़तासे कहते हैं कि लोकमत मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध है, अुतनी ही दृढ़तासे सुधारक मुझे विश्वास दिलाते हैं कि लोकमत अुनके पक्षमें है। मेरा यह सुझाव है कि दोनों पक्ष अपना अेक-अेक प्रतिनिधि चुनें और किसी भी पक्षकी तरफ़से अनुचित दबाव डाले बिना अीमानदारीसे मतगणना की जाय। जिस मुद्दे पर मत लेना है, वह साफ़ तौर पर तय कर लिया जाय और मतदाताओंको समझा दिया जाय। यह शुद्ध धार्मिक मामला है; अिसमें ज़रा भी गरमागरमीकी गुंजाअिश नहीं।"

जयसुखलाल और मथुरादास विसनजी वग़ैरा आये। नानाभाअी और परीक्षितलाल भी आये। . . .की अच्छी तरह खबर रखने, अुसे अुलाहना देने और न समझे तो अुसके अखबारको मदद देना बन्द कर देनेकी सलाह दी। हरिजनोंके लिअे आबादीका नक़शा तैयार करनेकी सूचना दी।

अुनकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेको कहा। अछूत स्त्रियोंसे भयंकर बदबू आती है और अुनके पास बैठना असम्भव हो जाता है; अिसका अिन्तज़ाम करना चाहिये और अुसके बारेमें अच्छी तरह जान लेना चाहिये।

दक्षिण अफ़्रीकामें हमारा नाम 'लहसन प्याज़' (garlic and onion) पड़ा हुआ है।

जिन अछूत विद्यार्थियोंकी छात्रवृत्तियोंके लिअे अर्ज़ियाँ आती हैं, अुन्हें दी जा सकती हैं? अिस सवालके जवाबमें : "अुनसे पूछा जाय कि तुम कोअी सेवा करोगे या नहीं? हमें अिन लोगोंमें से अन्त्यज सेवक पैदा करने हैं, अिसलिअे अुनके साथ यह शर्त करना ज़रूरी हो जाता है। जहाँ आवश्यक होगा वहाँ अुदार बनकर भी देंगे। हममें यह कहनेकी ताक़त होनी चाहिये कि यदि दस हज़ार भी योग्य लड़के अिस तरहकी छात्रवृत्तियाँ माँगनेवाले मिल जायँगे, तो सबको देंगे।"

बम्बअीवालोंके साथकी चर्चामें : "गुरुवायुर न खुले और हमें मरना पड़े, तो सारा देश अस्पृश्यतासे सड़ जायगा।"

गुरुदेवके मन्त्रीको लिखा :

"अितनी दूरसे भी मुझे गुरुदेवकी वेदना मालूम हो रही है। मगर मेरा खयाल है कि यह अनिवार्य है। गुरुदेव अिस समय जिस वेदनामें से गुज़र रहे हैं, वैसी ही वेदनामें से जब तक हमारे देशकी अनेक विशुद्ध आत्माअें नहीं गुज़रेंगी, तब तक सनातनियोंके दिल नहीं पिघलेंगे और न अछूतपनका कलंक मिटेगा।

५. मुझसे सत्यका त्याग करानेके लिअे अेक अरब मनुष्य अुपवास करने लगें, तो भी मैं अपने दिलको पत्थर जैसा सख्त बनाकर सत्यका त्याग न करूँ, यही प्रार्थना मैं अीश्वरसे करता हूँ और अैसी आशा भी रखता हूँ। यह सब विचार करते समय अेक बात नहीं भूलनी चाहिये। अन्यायको क़ायम रखनेके लिअे अुपवास करके मर जानेवाले बहुत लोग नहीं निकलेंगे। सच बात तो यह है कि न्यायके लिअे मरनेवालोंका भी ज्यादा निकलना कम ही संभव है।

६. अेक करोड़ मनुष्य आत्म-प्रेरणाका नाम लेकर काम करें, तो भी वे झूठे या मूर्ख हो सकते हैं; और अेक आदमीको सचमुच ही आत्म-प्रेरणा हुअी हो, तो वह बेचारा क्या करे? दूसरे आत्म-प्रेरणाका ग़लत दावा करेंगे अैसा डर होनेसे ही क्या वह भी आत्म-प्रेरणाको दबाकर झूठा बन जाय और नास्तिक हो जाय?

७. सनातनियोंके पीछे ताक़त नहीं है, अैसा मेरा खयाल हो तो अिसे मैं कैसे छिपाअूँ? लेकिन अुनके पास ताक़त हो, तो अुसे दबा देनेका मेरे पास कोअी साधन नहीं। और अुनके पास यह ताक़त हो, तो अुसे साबित करना अुनके लिअे आसान है।

८. प्रथम तो मेरे राजनैतिक विचार, धार्मिक विचार और सामाजिक विचार सब अेक ही वृक्षकी अलग-अलग शाखाअें हैं। अिसलिअे वे परस्पर विरोधी नहीं हैं। मगर जिसे वे केवल अलग ही लगते हों, वे मेरी राजनैतिक शक्तिका अुपयोग करनेके लिअे अपना धर्म न छोड़ें। लेकिन कोअी मूर्ख या भीरु बनकर धर्मरूपी हीरा बेचकर राजनैतिक कंकर लेने लगे, तो क्या मैं अपना धर्म छोड़ दूँ? अिस संबंधमें बलात्कार शब्दका अुपयोग करना भाषा पर बलात्कार करने जैसा है। व्यक्तिगत प्रभाव आदि शक्तियाँ तो दुनियामें काम करती ही रहेंगी। अिन्हें हम बलात्कारमें शुमार कर लें, तो पुरुषार्थ जैसी चीज़ ही नहीं रहे।

९. अनुचित है।

१०. प्रीतिभोजन अस्पृश्यता निवारणका अंग है ही नहीं।

११. भारतभूषण पंडितजीके और मेरे विचारोंमें थोड़ा भेद ज़रूर है, मगर अिस अुपवासके बारेमें कुछ भेद है, यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन हो तो लोग क्या करें, यह लोगोंके सोचनेकी बात है। जो विचार अुनकी बुद्धि और अुनका हृदय स्वीकार करे, अुसीका वे अनुसरण करें।

१२. रूढ़िवादी सनातनियोंके विचार बदलनेके लिअे अुपवासकी योजना नहीं है, बल्कि जो रूढ़ियोंको पार करके अस्पृश्यताको पाप समझने लगे हैं,

५. मुझसे सत्यका त्याग करानेके लिअे अेक अरब मनुष्य अुपवास करने लगें, तो भी मैं अपने दिलको पत्थर जैसा सख्त बनाकर सत्यका त्याग न करूँ, यही प्रार्थना मैं अीश्वरसे करता हूँ और अैसी आशा भी रखता हूँ। यह सब विचार करते समय अेक बात नहीं भूलनी चाहिये। अन्यायको क़ायम रखनेके लिअे अुपवास करके मर जानेवाले बहुत लोग नहीं निकलेंगे। सच बात तो यह है कि न्यायके लिअे मरनेवालोंका भी ज्यादा निकलना कम ही संभव है।

६. अेक करोड़ मनुष्य आत्म-प्रेरणाका नाम लेकर काम करें, तो भी वे झूठे या मूर्ख हो सकते हैं; और अेक आदमीको सचमुच ही आत्म-प्रेरणा हुअी हो, तो वह बेचारा क्या करे? दूसरे आत्म-प्रेरणाका गलत दावा करेंगे अैसा डर होनेसे ही क्या वह भी आत्म-प्रेरणाको दबाकर झूठा बन जाय और नास्तिक हो जाय?

७. सनातनियोंके पीछे ताक़त नहीं है, अैसा मेरा खयाल हो तो अिसे मैं कैसे छिपाअूँ? लेकिन अुनके पास ताक़त हो, तो अुसे दबा देनेका मेरे पास कोअी साधन नहीं। और अुनके पास यह ताक़त हो, तो अुसे साबित करना अुनके लिअे आसान है।

८. प्रथम तो मेरे राजनैतिक विचार, धार्मिक विचार और सामाजिक विचार सब अेक ही वृक्षकी अलग-अलग शाखाअें हैं। अिसलिअे वे परस्पर विरोधी नहीं हैं। मगर जिसे वे केवल अलग ही लगते हों, वे मेरी राजनैतिक शक्तिका अुपयोग करनेके लिअे अपना धर्म न छोड़ें। लेकिन कोअी मूर्ख या भीरु बनकर धर्मरूपी हीरा बेचकर राजनैतिक कंकर लेने लगे, तो क्या मैं अपना धर्म छोड़ दूँ? अिस संबंधमें बलात्कार शब्दका अुपयोग करना भाषा पर बलात्कार करने जैसा है। व्यक्तिगत प्रभाव आदि शक्तियाँ तो दुनियामें काम करती ही रहेंगी। अिन्हें हम बलात्कारमें शुमार कर लें, तो पुरुषार्थ जैसी चीज़ ही नहीं रहे।

९. अनुचित है।

१०. प्रीतिभोजन अस्पृश्यता निवारणका अंग है ही नहीं।

११. भारतभूषण पंडितजीके और मेरे विचारोंमें थोड़ा भेद ज़रूर है, मगर अिस अुपवासके बारेमें कुछ भेद है, यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन हो तो लोग क्या करें, यह लोगोंके सोचनेकी बात है। जो विचार अुनकी बुद्धि और अुनका हृदय स्वीकार करे, अुसीका वे अनुसरण करें।

१२. रूढ़िवादी सनातनियोंके विचार बदलनेके लिअे अुपवासकी योजना नहीं है, बल्कि जो रूढ़ियोंको पार करके अस्पृश्यताको पाप समझने लगे हैं,

अर्थ है कोअी न सोची हुअी मुश्किली, जैसे क़ानूनकी कठिनाअी, जिसे निश्चित अवधिमें दूर करना अिन्सानके लिअे अशक्य हो।

"मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार आसपासके मन्दिरमें जानेवाले सवर्ण हिन्दू अिस बातके अधिक पक्षमें हैं कि हरिजन अुनके जैसे हक़ोंके साथ ही मन्दिरमें जायँ। अिस जानकारीके बारेमें शंका अुठानेवाले पत्र भी मन्दिरके पास रहनेवाले लोगोंकी तरफ़से आये हैं। मैंने यह सूचना दी है कि मन्दिरके दस मीलके विस्तारके भीतर रहनेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी मतगणना पंचोंके सामने की जाय। अेक पंच सुधारकोंकी तरफ़से और अेक सनातनियोंकी तरफ़से मुक़र्रर किया हुआ हो। ज़रूरत हो तो अेक सरपंच भी रख दिया जाय। ये लोग मत देनेके कामकी अच्छी तरह देखरेख रखें, जिससे अनुचित दबाव काममें न लाया जा सके, कोअी झूठें नामसे मत न दे या और किसी तरहका धोखा न हो। मेरे लिअे तो यह शुद्ध धार्मिक प्रश्न है। अिसलिअे सुधारकोंके काममें कुछ भी धोखा मालूम होगा, तो मुझे असह्य वेदना होगी। मैं चाहता हूँ कि सनातनी अिस बातकी क़दर करें और अिसमें अन्तःकरणपूर्वक भाग लें। मुझे विश्वास है कि अगर अधिकांश लोकमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हुआ, तो वे विरोध करना नहीं चाहेंगे। अिस मतगणनाके परिणामस्वरूप अैसा मालूम पड़े कि मेरी जानकारी ग़लत थी, तो मैं ज़रा भी हिचकिचाये बिना केलप्पनको सलाह दूँगा कि वे अुपवास मुलतवी कर दें और गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल देनेके लिअे लोकमत तैयार करें। मेरे अुपवासका अेकमात्र बचाव यही है कि मन्दिरके नज़दीक बसनेवाले बहुतसे लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हैं।"

डॉ० नवले नामका अेक अत्यन्त साहसी आदमी मिलने चला आया। ग़रीबीसे बढ़ते-बढ़ते अिस आदमीने प्रेस खड़ा कर लिया और आजकल अपनी बुद्धिके अनुसार अस्पृश्योंकी सेवा कर रहा है। अिसे मोण्टेग्यूने 'The most pushing man in India'—'हिन्दुस्तानमें सबसे साहसी आदमी' कहा था। अिसे अुसने बड़ा प्रमाण-पत्र माना और बापूके सामने ज़िक्र कर दिया! महात्मा फूले नामके मालीकी भी बात कही, जिसने साठ बरस पहले अछूतोंके लिअे पहली पाठशाला खोली और अछूतोंको ही अपनी सारी सेवा अर्पण की थी। पूनामें दूसरी जातियों और ब्राह्मणोंके बीच झगड़ेकी जड़ें कितनी गहरी हैं, यह बात अिस आदमीसे और महात्मा फूलेके जीवनचरित्रसे मालूम होती है। डॉ० नवलेने कोअी डॉक्टरी परीक्षा पास नहीं की है, बल्कि वह अपने आप डॉक्टर बन बैठा है। मगर है बड़ा साहसी। अपनी आत्मकथा 'प्रयत्नान्ते परमेश्वर' नामसे लिखी है और अुसे अंग्रेज़ीमें लिखवाकर अमेरिकामें छपवाने वाला है!

अर्थ है कोअी न सोची हुअी मुश्किली, जैसे क़ानूनकी कठिनाअी, जिसे निश्चित अवधिमें दूर करना अिन्सानके लिअे अशक्य हो।

"मुझे जो जानकारी मिली है अुसके अनुसार आसपासके मन्दिरमें जानेवाले सवर्ण हिन्दू अिस बातके अधिक पक्षमें हैं कि हरिजन अुनके जैसे हक़ोंके साथ ही मन्दिरमें जायँ। अिस जानकारीके बारेमें शंका अुठानेवाले पत्र भी मन्दिरके पास रहनेवाले लोगोंकी तरफ़से आये हैं। मैंने यह सूचना दी है कि मन्दिरके दस मीलके विस्तारके भीतर रहनेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी मतगणना पंचोंके सामने की जाय। अेक पंच सुधारकोंकी तरफ़से और अेक सनातनियोंकी तरफ़से मुक़र्रर किया हुआ हो। ज़रूरत हो तो अेक सरपंच भी रख दिया जाय। ये लोग मत देनेके कामकी अच्छी तरह देखरेख रखें, जिससे अनुचित दबाव काममें न लाया जा सके, कोअी झूठे नामसे मत न दे या और किसी तरहका धोखा न हो। मेरे लिअे तो यह शुद्ध धार्मिक प्रश्न है। अिसलिअे सुधारकोंके काममें कुछ भी धोखा मालूम होगा, तो मुझे असह्य वेदना होगी। मैं चाहता हूँ कि सनातनी अिस बातकी क़दर करें और अिसमें अन्तःकरणपूर्वक भाग लें। मुझे विश्वास है कि अगर अधिकांश लोकमत हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हुआ, तो वे विरोध करना नहीं चाहेंगे। अिस मतगणनाके परिणामस्वरूप अैसा मालूम पड़े कि मेरी जानकारी ग़लत थी, तो मैं ज़रा भी हिचकिचाये बिना केलप्पनको सलाह दूँगा कि वे अुपवास मुलतवी कर दें और गुरुवायुरका मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल देनेके लिअे लोकमत तैयार करें। मेरे अुपवासका अेकमात्र बचाव यही है कि मन्दिरके नज़दीक बसनेवाले बहुतसे लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हैं।"

डॉ० नवले नामका अेक अत्यन्त साहसी आदमी मिलने चला आया। ग़रीबीसे बढ़ते-बढ़ते अिस आदमीने प्रेस खड़ा कर लिया और आजकल अपनी बुद्धिके अनुसार अस्पृश्योंकी सेवा कर रहा है। अिसे मोण्टेग्यूने 'The most pushing man in India' — 'हिन्दुस्तानमें सबसे साहसी आदमी' कहा था। अिसे अुसने बड़ा प्रमाण-पत्र माना और बापूके सामने ज़िक्र कर दिया! महात्मा फूले नामके मालीकी भी बात कही, जिसने साठ बरस पहले अछूतोंके लिअे पहली पाठशाला खोली और अछूतोंको ही अपनी सारी सेवा अर्पण की थी। पूनामें दूसरी जातियों और ब्राह्मणोंके बीच झगड़ेकी जड़ें कितनी गहरी हैं, यह बात अिस आदमीसे और महात्मा फूलेके जीवनचरित्रसे मालूम होती है। डॉ० नवलेने कोअी डॉक्टरी परीक्षा पास नहीं की है, बल्कि वह अपने आप डॉक्टर बन बैठा है। मगर है बड़ा साहसी! अपनी आत्मकथा 'प्रयत्नान्ते परमेश्वर' नामसे लिखी है और अुसे अंग्रेज़ीमें लिखवाकर अमेरिकामें छपवाने वाला है!

खुद प्रफुल्लित रहकर भी सेवा करते हैं। हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि भगवानका शुद्ध चिन्तन भी सेवा ही है।"

माधवन नायरके पत्रके जवाबमें लिखा:

"आपका पत्र अच्छा है। मैं आज जो बयान प्रकाशित कर रहा हूँ अुसे ध्यानसे देखना। जब मैं साथियों और सुधारकोंकी भयंकर लापरवाहीकी बात कहता हूँ, तब कोअी खास व्यक्ति मेरे ध्यानमें रहता है अैसा नहीं। अगर हम सच्चे हैं और काममें जुटे हुअे हैं, तो असत्यकी दीवारें अवश्य ही टूट जानी चाहियें। यह कहना व्यर्थ है कि ज़ामोरिन सख्त बनता जा रहा है। आप देखेंगे कि मन्दिरमें जानेवाले लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशकी माँग करें, तो अुन्हें रोक सकनेकी ताक़त दुनियामें किसीमें नहीं है। सच बात तो यह है कि हमारा आन्दोलन अभी शुरू ही हो रहा है। वह बहुत अुत्कट होना चाहिये, लेकिन सौम्य। ज़ामोरिनके विरुद्ध तो अेक शब्द भी नहीं कहना चाहिये। बेशक, क़ानून सचमुच हमारे खिलाफ़ ही हुआ, तो अुसे सुधारना होगा। और अगर लोकमत स्पष्ट और जोरदार हुआ, तो यह करनेमें भी अड़चन नहीं आयेगी। अपने प्रति या अिस कार्यके प्रति हमारी श्रद्धा डगमगानी नहीं चाहिये। यह बात समझमें आती है न? मेरे कहनेमें कुछ भी संदिग्ध हो, तो निःसंकोच होकर फिर लिखना।"

आश्रमके पत्रोंमें नारणदासभाअीके पत्रमें तकलीकी महिमा गाअी:

"तकलीके बारेमें सबसे अितना कह देना। चरखा राजा है, पर तकली रानी है। रानीके बिना राजाकी शोभा नहीं और राजाके बिना रानीका काम नहीं चलता। यह भी समझाना चाहिये कि रानीके बिना वंशवृद्धि तो हो ही नहीं सकती। चरखा हज़ारोंके लिअे है, तो तकली करोड़ोंके लिअे है। जब भाअूने यह बता दिया है कि तकलीकी कितनी शक्ति है, तब भी अुसका अुपयोग सब नहीं सीख लेते, यह आश्चर्यकी बात है। पहले बारीक-से-बारीक सूत तकलीसे ही काता जाता था। यह तकली बाँसकी होती थी। आज भी मद्रासमें जनेअूका बहुत बारीक सूत ब्राह्मण तकली पर ही कातते हैं। चरखा बनानेमें समय लगता है, मगर तकली तो जहाँ बनानी हो वहीं बनाअी जा सकती है। अुसमें न बिगड़नेकी बात है और न आवाज़ करनेकी। यह बिलकुल संभव है कि कभी तकलियाँ चरखेको हरा दें। हम तो दोनोंमें से अेककी भी हार नहीं चाहते। हम तो दोनों पर ही अेकसा और अच्छा क़ाबू पाना चाहते हैं।"

हरिभाअू फाटकके साथ बातें करते हुअे:

"खाने-पीने और विवाहके साथ वर्णका कोअी भी सम्बन्ध नहीं है। मैंने शास्त्रोंका अध्ययन नहीं किया, मगर मैंने यह जान लिया कि शास्त्रोंके

खुद प्रफुल्लित रहकर भी सेवा करते हैं। हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि भगवानका शुद्ध चिन्तन भी सेवा ही है।"

माधवन नायरके पत्रके जवाबमें लिखा :

"आपका पत्र अच्छा है। मैं आज जो बयान प्रकाशित कर रहा हूँ अुसे ध्यानसे देखना। जब मैं साथियों और सुधारकोंकी भयंकर लापरवाहीकी बात कहता हूँ, तब कोअी खास व्यक्ति मेरे ध्यानमें रहता है अैसा नहीं। अगर हम सच्चे हैं और काममें जुटे हुअे हैं, तो असत्यकी दीवारें अवश्य ही टूट जानी चाहियें। यह कहना व्यर्थ है कि ज़ामोरिन सख्त बनता जा रहा है। आप देखेंगे कि मन्दिरमें जानेवाले लोग हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशकी माँग करें, तो अुन्हें रोक सकनेकी ताक़त दुनियामें किसीमें नहीं है। सच बात तो यह है कि हमारा आन्दोलन अभी शुरू ही हो रहा है। वह बहुत अुत्कट होना चाहिये, लेकिन सौम्य। ज़ामोरिनके विरुद्ध तो अेक शब्द भी नहीं कहना चाहिये। बेशक, क़ानून सचमुच हमारे खिलाफ़ ही हुआ, तो अुसे सुधारना होगा। और अगर लोकमत स्पष्ट और जोरदार हुआ, तो यह करनेमें भी अड़चन नहीं आयेगी। अपने प्रति या अिस कार्यके प्रति हमारी श्रद्धा डगमगानी नहीं चाहिये। यह बात समझमें आती है न? मेरे कहनेमें कुछ भी संदिग्ध हो, तो निःसंकोच होकर फिर लिखना।"

आश्रमके पत्रोंमें नारणदासभाअीके पत्रमें तकलीकी महिमा गाअी :

"तकलीके बारेमें सबसे अितना कह देना। चरखा राजा है, पर तकली रानी है। रानीके बिना राजाकी शोभा नहीं और राजाके बिना रानीका काम नहीं चलता। यह भी समझाना चाहिये कि रानीके बिना वंशवृद्धि तो हो ही नहीं सकती। चरखा हज़ारोंके लिअे है, तो तकली करोड़ोंके लिअे है। जब भाअूने यह बता दिया है कि तकलीकी कितनी शक्ति है, तब भी अुसका अुपयोग सब नहीं सीख लेते, यह आश्चर्यकी बात है। पहले बारीक-से-बारीक सूत तकलीसे ही काता जाता था। यह तकली बाँसकी होती थी। आज भी मद्रासमें जनेअूका बहुत बारीक सूत ब्राह्मण तकली पर ही कातते हैं। चरखा बनानेमें समय लगता है, मगर तकली तो जहाँ बनानी हो वहीं बनाअी जा सकती है। अुसमें न बिगड़नेकी बात है और न आवाज़ करनेकी। यह बिलकुल संभव है कि कअी तकलियाँ चरखेको हरा दें। हम तो दोनोंमें से अेककी भी हार नहीं चाहते। हम तो दोनों पर ही अेकसा और अच्छा क़ाबू पाना चाहते हैं।"

हरिभाअू फाटकके साथ बातें करते हुअे :

"खाने-पीने और विवाहके साथ वर्णका कोअी भी सम्बन्ध नहीं है। मैंने शास्त्रोंका अध्ययन नहीं किया, मगर मैंने यह जान लिया कि शास्त्रोंके

नहीं मानता। अितना ही नहीं, मैं यह भी मानता हूँ कि किसी न किसी रूपमें वह हम सबके लिअे आवश्यक हो जाती है। अलग-अलग प्रकारकी पूजाओंमें फ़र्क़ प्रमाणका ही होता है, तत्त्वका नहीं। मस्जिदमें जाना और गिरजेमें जाना भी अेक तरहकी मूर्तिपूजा है। बाअिबिल, क़ुरान, गीता या अैसे किसी और ग्रंथके प्रति पूज्यभाव रखना भी मूर्तिपूजा ही है। आप किसी ग्रंथ या मकानका अुपयोग न करें और अपनी कल्पनामें ही परमेश्वरका कोअी खास चित्र खींच लें व अुसमें कुछ खास गुणोंका आरोपण करें, तो यह भी मूर्तिपूजा हुअी। जो पत्थरकी मूर्तिकी पूजा करते हैं, अुनकी पूजा अिन दूसरी पूजाओंसे ज्यादा स्थूल है, यह भी मैं नहीं कहूँगा। बड़े विद्वान न्यायाधीश भी अपने घरोंमें मूर्तियाँ रखते पाये गये हैं। पंडित मालवीयजी जैसे तत्त्वज्ञानी अपने गृहदेवताका पूजन किये बिना मुँहमें अन्न नहीं डालते। अैसी पूजाको वहम माननेमें अज्ञान और अभिमान दोनों हैं। पूजा करनेवालोंकी कल्पनामें तो अीश्वरका अधिष्ठान मंत्रपूत पत्थरमें है, आसपास पड़े हुअे दूसरे पत्थरोंमें नहीं। मन्दिरमें भी जहाँ मूर्ति रखी जाती है, वह स्थान मन्दिरके दूसरे स्थानोंसे ज्यादा पवित्र माना जाता है। अिस प्रकारके अुदाहरण आप कितने ही ढूँढ़ सकेंगी। मेरी यह दलील विचारों या पूजामें शिथिलता लानेके लिअे नहीं है। किसी भी स्वरूपकी सच्चे दिलसे की गअी पूजा, पूजा करनेवालेके लिअे अेकसी अच्छी और फलदायक है। वह ज़माना अब चला गया कि कोअी व्यक्ति या समूह अिस मामलेमें विशेष अधिकार भोगे। पूजाकी खास विधि या शब्दोंकी तरफ़ अीश्वर नहीं देखता। वह तो हमारे कृत्यों और हमारी वाणीके आरपार देख सकता है। और हम खुद ही अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

बहुतसे लोग मन्दिरोंकी अपवित्रताका सवाल अुठाते हैं। अुनमें से अेकको लिखा :

"कोअी संस्था अैसी नहीं जिसमें कोअी न कोअी बुराअी न घुसी हुअी हो। परन्तु मेरी राय यह है कि मन्दिरोंमें अिनकार न की जा सकने लायक कितनी ही बुराअियोंके होनेपर भी वहाँ जो करोड़ों मनुष्य जाते हैं, अुन पर अिन बुराअियोंका कोअी असर नहीं होता और अुन्हें अिन मन्दिरोंसे आवश्यक आश्वासन मिल जाता है।"

अेक बंगाली युवक लिखता है : "मैं पापमें डूबा हुआ हूँ। स्त्रियोंको देखकर मेरी विषयेच्छा जाग्रत हो जाती है। चोरी भी करता हूँ। मुझे बचाअिये।"

नहीं मानता। अितना ही नहीं, मैं यह भी मानता हूँ कि किसी न किसी रूपमें वह हम सबके लिअे आवश्यक हो जाती है। अलग-अलग प्रकारकी पूजाओंमें फ़र्क़ प्रमाणका ही होता है, तत्त्वका नहीं। मस्जिदमें जाना और गिरजेमें जाना भी अेक तरहकी मूर्तिपूजा है। बाअिबिल, कुरान, गीता या अैसे किसी और ग्रंथके प्रति पूज्यभाव रखना भी मूर्तिपूजा ही है। आप किसी ग्रंथ या मकानका अुपयोग न करें और अपनी कल्पनामें ही परमेश्वरका कोअी खास चित्र खींच लें व अुसमें कुछ खास गुणोंका आरोपण करें, तो यह भी मूर्तिपूजा हुअी। जो पत्थरकी मूर्तिकी पूजा करते हैं, अुनकी पूजा अिन दूसरी पूजाओंसे ज्यादा स्थूल है, यह भी मैं नहीं कहूँगा। बड़े विद्वान न्यायाधीश भी अपने घरोंमें मूर्तियाँ रखते पाये गये हैं। पंडित मालवीयजी जैसे तत्त्वज्ञानी अपने गृहदेवताका पूजन किये बिना मुँहमें अन्न नहीं डालते। अैसी पूजाको वहम माननेमें अज्ञान और अभिमान दोनों हैं। पूजा करनेवालोंकी कल्पनामें तो अीश्वरका अधिष्ठान मंत्रपूत पत्थरमें है, आसपास पड़े हुअे दूसरे पत्थरोंमें नहीं। मन्दिरमें भी जहाँ मूर्ति रखी जाती है, वह स्थान मन्दिरके दूसरे स्थानोंसे ज्यादा पवित्र माना जाता है। अिस प्रकारके अुदाहरण आप कितने ही ढूँढ़ सकेंगी। मेरी यह दलील विचारों या पूजामें शिथिलता लानेके लिअे नहीं है। किसी भी स्वरूपकी सच्चे दिलसे की गअी पूजा, पूजा करनेवालेके लिअे अेकसी अच्छी और फलदायक है। वह ज़माना अब चला गया कि कोअी व्यक्ति या समूह अिस मामलेमें विशेष अधिकार भोगे। पूजाकी खास विधि या शब्दोंकी तरफ़ अीश्वर नहीं देखता। वह तो हमारे कार्यों और हमारी वाणीके आरपार देख सकता है। और हम खुद ही अपने जिन विचारोंको नहीं समझ सकते, अुन्हें भी वह जानता और समझता है। अुसके सामने तो हमारे विचार ही असली चीज़ हैं।"

बहुतसे लोग मन्दिरोंकी अपवित्रताका सवाल अुठाते हैं। अुनमें से अेकको लिखा :

"कोअी संस्था अैसी नहीं जिसमें कोअी न कोअी बुराअी न घुसी हुअी हो। परन्तु मेरी राय यह है कि मन्दिरोंमें अिनकार न की जा सकने लायक कितनी ही बुराअियोंके होनेपर भी वहाँ जो करोड़ों मनुष्य जाते हैं, अुन पर अिन बुराअियोंका कोअी असर नहीं होता और अुन्हें अिन मन्दिरोंसे आवश्यक आश्वासन मिल जाता है।"

अेक बंगाली युवक लिखता है : "मैं पापमें डूबा हुआ हूँ। स्त्रियोंको देखकर मेरी विषयेच्छा जाग्रत हो जाती है। चोरी भी करता हूँ। मुझे बचाअिये।"

अुन्होंने कहा: "हाँ"

बापूने कहा: "यह मुझसे नहीं हो सकता। अेक समय था, जब मैं रुद्राक्षकी माला पहनता था, मगर अब नहीं पहनता। और अिनके पहननेके बारेमें जब तक मुझे अीश्वरका आदेश न मिले, तब तक कैसे पहन सकता हूँ?"

वे समझ गये और बोले: "ठीक है, मैं अपने गुरुको बता दूँगा। मगर आपको अैसा सन्देश मिले तो?"

बापू: "तो ज़रूर पहनूँगा।"

कोटवाका ताल्लुकेदार जगन्नाथ — अेक भोलासा युवक — यह सलाह लेने आया था कि अस्पृश्यताके काममें ताल्लुकेदार क्या मदद दे सकते हैं। स्कूल, कुअें, मन्दिर वग़ैरा खोल देने और अिन लोगोंमें खूब घुलमिल जाने अित्यादिकी बापूने सलाह दी। अिस कामसे वह अितना खुश था कि बोला: "महात्माजी, अिस कामके कारण लोगोंकी जानमें जान आ गअी है। हमने अेक मंडल क़ायम किया है जिसमें कालाकांकर और राघवेन्द्र हैं और हम यही काम करनेवाले हैं। फिर मिलने आअूँगा। आजकल बाराबाँकी रहता हूँ। वहाँ सब मन्दिर खुल गये हैं।" युवक सुन्दर मालूम हुआ।

बादमें नरगिस बहन और शीरीन बहन आअीं। ये खूब काम कर रही हैं। हिंगणेमें दो अछूत लड़कियोंको रखवा आअीं। त्रावणकोरकी रानीके पास स्त्रियोंका अेक डेप्युटेशन ले जानेकी तजवीज़ कर रही हैं और हस्ताक्षर करवा रही हैं। अहिन्दू कितना काम कर सकते हैं, अिसके जवाबमें बापूने कहा: "अस्पृश्यता निवारणकी संस्थाओंको जितनी ज़रूरत हो। यह सूत्र तुम्हें पसन्द आयगा न?"

अिसके बाद प्रो॰ दांडेकर और कुछ दूसरे लोग पंढरपुरके मन्दिरके विषयमें बातें करने आये। पंढरपुरके मन्दिरका चित्र — सालमें दो पखवाड़े चौबीसों घंटे खुले दर्शन, फ़ी घंटा बारह सौ दर्शनार्थियोंकी भरमार, पासवाले, स्त्रियाँ, बिना बालोंवाली हिन्दू विधवायें, सिरघुटों और पुलिसवालोंका पहरा और मूर्तियों पर माथा टेकनेवालोंको बाहें पकड़ कर खींचनेकी पद्धति। अिसकी हिमायत सुनकर मुझे तो कंपकंपी आ गअी। फिर प्रश्न कैसे पेचीदा हो गया है, अिसका कारण बताया। अिस मन्दिरमें जाते हुअे चोखामेलाकी मूर्ति है, अुसे महार छूते भी नहीं और दूसरे किसीको अिस मूर्तिके पास जाने भी नहीं देते। जब तक ये सुधार नहीं होते, तब तक मन्दिरकी स्थिति कैसे सुधरे? वग़ैरा बातें कहीं। बादमें जाते-जाते कहने लगे कि "आपके अुपवाससे दंभ बढ़ेगा।"

अिस पर बापूने कहा: "किसमें दंभ बढ़ेगा? संभव है कुछ लोग दंभसे कुछ करें। मगर जिन हज़ारों और लाखों मनुष्योंका मुझपर पूरा विश्वास है

अुन्होंने कहा: "हाँ"

बापूने कहा: "यह मुझसे नहीं हो सकता। अेक समय था, जब मैं रुद्राक्षकी माला पहनता था, मगर अब नहीं पहनता। और अिनके पहननेके बारेमें जब तक मुझे अीश्वरका आदेश न मिले, तब तक कैसे पहन सकता हूँ?"

वे समझ गये और बोले: "ठीक है, मैं अपने गुरुको बता दूँगा। मगर आपको अैसा सन्देश मिले तो?"

बापू: "तो ज़रूर पहनूँगा।"

कोटवाका ताल्लुकेदार जगन्नाथ — अेक भोलासा युवक — यह सलाह लेने आया था कि अस्पृश्यताके काममें ताल्लुकेदार क्या मदद दे सकते हैं। स्कूल, कुअें, मन्दिर वग़ैरा खोल देने और अिन लोगोंमें खूब घुलमिल जाने अित्यादिकी बापूने सलाह दी। अिस कामसे वह अितना खुश था कि बोला: "महात्माजी, अिस कामके कारण लोगोंकी जानमें जान आ गअी है। हमने अेक मंडल क़ायम किया है जिसमें कालाकांकर और राघवेन्द्र हैं और हम यही काम करनेवाले हैं। फिर मिलने आअूँगा। आजकल बाराबाँकी रहता हूँ। वहाँ सब मन्दिर खुल गये हैं।" युवक सुन्दर मालूम हुआ।

बादमें नरगिस बहन और शीरीन बहन आअीं। ये खूब काम कर रही हैं। हिंगणेमें दो अछूत लड़कियोंको रखवा आअीं। त्रावणकोरकी रानीके पास स्त्रियोंका अेक डेप्युटेशन ले जानेकी तजवीज़ कर रही हैं और हस्ताक्षर करवा रही हैं। अहिन्दू कितना काम कर सकते हैं, अिसके जवाबमें बापूने कहा: "अस्पृश्यता निवारणकी संस्थाओंको जितनी ज़रूरत हो। यह सूत्र तुम्हें पसन्द आयगा न?"

अिसके बाद प्रो० दांडेकर और कुछ दूसरे लोग पंढरपुरके मन्दिरके विषयमें बातें करने आये। पंढरपुरके मन्दिरका चित्र — सालमें दो पखवाड़े चौबीसों घंटे खुले दर्शन, फ़ी घंटा बारह सौ दर्शनार्थियोंकी भरमार, पासवाले, स्त्रियाँ, बिना बालोंवाली हिन्दू विधवायें, सिरघुटों और पुलिसवालोंका पहरा और मूर्तियों पर माथा टेकनेवालोंको बाहें पकड़ कर खींचनेकी पद्धति। अिसकी हिमायत सुनकर मुझे तो कंपकंपी आ गअी। फिर प्रश्न कैसे पेचीदा हो गया है, अिसका कारण बताया। अिस मन्दिरमें जाते हुअे चोखामेलाकी मूर्ति है, अुसे महार छूते भी नहीं और दूसरे किसीको अिस मूर्तिके पास जाने भी नहीं देते। जब तक ये सुधार नहीं होते, तब तक मन्दिरकी स्थिति कैसे सुधरे? वग़ैरा बातें कहीं। बादमें जाते-जाते कहने लगे कि "आपके अुपवाससे दंभ बहुत बढ़ेगा।"

अिस पर बापूने कहा: "किसमें दंभ बढ़ेगा? संभव है कुछ लोग दंभसे कुछ करें। मगर जिन हज़ारों और लाखों मनुष्योंका मुझपर पूरा विश्वास है

सतीशबाबूके साथ फिर पहले दिनकी चर्चा शुरू की। विषय यह था कि मनुष्य चिन्तनसे कैसे सेवा कर सकता है। बापूने कहा: "चिन्तनका अर्थ निष्क्रियता नहीं है। 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' का यह अर्थ नहीं कि चित्त निष्क्रिय हो जाय। चित्त व्यर्थ प्रवृत्ति करना बन्द कर दे, यही योग है। अेक भी विचार अैसा नहीं आना चाहिये, जिसका अमल न हो सके। यानी शुद्धसे शुद्ध मनुष्य तो अधिकसे अधिक अमल करनेवाला होगा। जैसे जैसे मनुष्य ज्यादा पवित्र होगा, वैसे वैसे वह अधिक प्रवृत्तिमय होगा। अधिक-से-अधिक कर्मशील मनुष्य ज्यादासे ज्यादा संयमी होता है। अिसे तुम समाधिकी हालत भी कह सकते हो। फिर भी जान बूझकर समाधि प्राप्त करनेकी कोशिश नहीं हो सकती। समाधि तो अपने आप प्राप्त होती है, अर्थात् तुम अिसका विचार न किया करो; वह अपने आप आयेगी। अिसी तरह योगकी शारीरिक क्रियासे शरीरकी शुद्धि और शारीरिक ब्रह्मचर्यको भी मदद मिलती है, मगर प्रपत्ति प्राप्त नहीं होती। शारीरिक क्रियाओंसे मूल वस्तु नहीं मिलती। मूल वस्तु तो पूरी तरह प्रपत्ति — अपने आपको शून्य बना देना — है।

"मेरा ही अिस बातका अुदाहरण ले लो कि मनुष्य अपनी मौजूदगीसे क्या कर सकता है। अगर मैं लाखोंकी सभामें जाअूं, यानी भीड़में भटकने लगूँ, तो मेरा कचूमर ही निकल जाय। मगर मैं अैसा नहीं करता। मैं तो बीचमें बैठकर लोगोंसे माँग करता हूँ और रुपया आने लगता है।

"मुझे आश्चर्य होता है कि जब तक मैं बैठा रहता हूँ तब तक रुपया आता है, और जहाँ अुठकर चलने लगा कि लोग रुपया देना बंद कर देते हैं। अिसमें कोअी चमत्कार नहीं, मगर यह अुत्कट अेकाग्रताका — किसी कामके बारेमें विचार करनेकी अुत्कटताका परिणाम है।

"अिसी तरह अुपवासका है। अुपवास यदि अीश्वर-प्रेरित होगा, तो वह लाखों आदमियोंके हृदय हिला देगा। अैसा नहीं होगा तो वह बेकार जायगा।

"मगर अिसके लिअे भी पूर्व तैयारी चाहिये। शुद्ध सेवाभावसे लम्बे समय तक काम किया हुआ हो, तभी यह शक्ति आती है। दक्षिण अफ्रीकामें छः-छः पौण्ड वसूल करनेके लिअे मैं चालीस-चालीस मील चला हूँ। कोअी आदमी तीन पौण्ड देने लगता तो हम नहीं लेते। कहीं बीचके स्थान पर सारी रात बैठे रहते। सुबह वह नाश्ता कराता और छः पौण्ड देता। अब्दुल्ला सेठके यहाँ जाता, तो वे मेरी तरफ ध्यान ही नहीं देते और अपने ग्राहकोंको निपटाते रहते। दुकान बन्द होनेका वक्त होता, तब तक मैं बैठा रहता। अब्दुल्ला सेठसे कहता कि पच्चीस पौण्ड लिये बिना जानेवाला नहीं हूँ। अन्तमें वे गुमास्तेसे कहते कि २५ पौण्डका चेक काट दो। मैंने जितनी लगनसे और अपार कठिना-

सतीशबाबूके साथ फिर पहले दिनकी चर्चा शुरू की। विषय यह था कि मनुष्य चिन्तनसे कैसे सेवा कर सकता है। बापूने कहा: "चिन्तनका अर्थ निष्क्रियता नहीं है। 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' का यह अर्थ नहीं कि चित्त निष्क्रिय हो जाय। चित्त व्यर्थ प्रवृत्ति करना बन्द कर दे, यही योग है। अेक भी विचार अैसा नहीं आना चाहिये, जिसका अमल न हो सके। यानी शुद्धसे शुद्ध मनुष्य तो अधिकसे अधिक अमल करनेवाला होगा। जैसे जैसे मनुष्य ज्यादा पवित्र होगा, वैसे वैसे वह अधिक प्रवृत्तिमय होगा। अधिक-से-अधिक कर्मशील मनुष्य ज्यादासे ज्यादा संयमी होता है। अिसे तुम समाधिकी हालत भी कह सकते हो। फिर भी जान बूझकर समाधि प्राप्त करनेकी कोशिश नहीं हो सकती। समाधि तो अपने आप प्राप्त होती है, अर्थात् तुम अिसका विचार न किया करो; वह अपने आप आयेगी। अिसी तरह योगकी शारीरिक क्रियासे शरीरकी शुद्धि और शारीरिक ब्रह्मचर्यको भी मदद मिलती है, मगर प्रपत्ति प्राप्त नहीं होती। शारीरिक क्रियाओंसे मूल वस्तु नहीं मिलती। मूल वस्तु तो पूरी तरह प्रपत्ति — अपने आपको शून्य बना देना — है।

"मेरा ही अिस बातका अुदाहरण ले लो कि मनुष्य अपनी मौजूदगीसे क्या कर सकता है। अगर मैं लाखोंकी सभामें जाअूँ, यानी भीड़में भटकने लगूँ, तो मेरा कचूमर ही निकल जाय। मगर मैं अैसा नहीं करता। मैं तो बीचमें बैठकर लोगोंसे माँग करता हूँ और रुपया आने लगता है।

"मुझे आश्चर्य होता है कि जब तक मैं बैठा रहता हूँ तब तक रुपया आता है, और जहाँ अुठकर चलने लगा कि लोग रुपया देना बंद कर देते हैं। अिसमें कोअी चमत्कार नहीं, मगर यह अुत्कट अेकाग्रताका — किसी कामके बारेमें विचार करनेकी अुत्कटताका परिणाम है।

"अिसी तरह अुपवासका है। अुपवास यदि अीश्वर-प्रेरित होगा, तो वह लाखों आदमियोंके हृदय हिला देगा। अैसा नहीं होगा तो वह बेकार जायगा।

"मगर अिसके लिअे भी पूर्व तैयारी चाहिये। शुद्ध सेवाभावसे लम्बे समय तक काम किया हुआ हो, तभी यह शक्ति आती है। दक्षिण अफ्रीकामें छः-छः पौण्ड वसूल करनेके लिअे मैं चालीस-चालीस मील चला हूँ। कोअी आदमी तीन पौण्ड देने लगता तो हम नहीं लेते। कहीं बीचके स्थान पर सारी रात बैठे रहते। सुबह वह नाश्ता कराता और छः पौण्ड देता। अब्दुल्ला सेठके यहाँ जाता, तो वे मेरी तरफ ध्यान ही नहीं देते और अपने ग्राहकोंको निपटाते रहते। दुकान बन्द होनेका वक्त होता, तब तक मैं बैठा रहता। अब्दुल्ला सेठसे कहता कि पच्चीस पौण्ड लिये बिना जानेवाला नहीं हूँ। अन्तमें वे गुमास्तेसे कहते कि २५ पौण्डका चेक काट दो। मैंने जितनी लगनसे और अपार कठिना-

बापू: "मगर तब तो तुम्हें किफ़ायतसे रहनेवाले लड़कोंको ढूँढ़कर अुनके साथ भोजनालय चलाना चाहिये।"

अुन्होंने कहा: "हमें स्कूलों, कॉलेजों और छात्रालयोंकी फ़ीस क्यों न माफ़ करा दें?"

बापू कहने लगे: "अिसलिअे कि मैं तुम्हें अपंग नहीं बनाना चाहता। मैं तो तुम्हें अेक छात्रालय दे दूँ और अुसे तुम अपनी मेहनतसे किफ़ायतके साथ चलाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम अमेरिकाके विद्यार्थियोंकी तरह स्वावलम्बी बनो। अपना काम करते रहो और कुछ ट्यूशन करके, कोअी न कोअी सेवा करके, खर्च निकालते रहो। तुम दान लो, और कोअी आदमी तुम्हें दयाधर्मसे आश्रयदाता बन कर दान दे, यह मैं नहीं चाहता। अिसमें तुम्हारा अधःपतन होगा।"

अिस पर अेक विचक्षण विद्यार्थी कहने लगा: "पढ़ाअीके साथ-साथ यह होना हमारे लिअे कठिन है। आपसे अितना और कह दूँ कि हम भिक्षा पर भी नहीं रहना चाहते। मगर अेक बात पूछूँ: आप हमें अस्पृश्यता-निवारण मंडलकी कार्यसमितिमें क्यों नहीं रखते? अैसा क्यों न करें कि आधे सवर्ण और आधे अछूत हों?"

बापू: "तुमने यह ठीक पूछा। आम्बेडकरने भी यही बात पूछी थी। मैंने अुन्हें समझाया था कि यह नहीं हो सकता। तुम्हें यह माँग नहीं करनी चाहिये। यह माँग तो तब हो जब तुम स्वतंत्र हो। यह मंडल तुम्हारे लिअे प्रायश्चित्त धर्मके भावसे स्थापित न हुआ हो, और किसी मामूली फंडकी तरहका फंड हो, तब तो मैं यह कहूँ कि अिसमें तुम्हारे ५० फ़ीसदी ही नहीं, बल्कि सौ फ़ीसदी आदमी हों। मगर ये लोग तो कर्ज़दार हैं। कर्ज़दारको समझना चाहिये कि अुसे अपना ऋण कैसे चुकाना है। अिन लोगोंको तुमसे यह हिदायत नहीं लेनी चाहिये कि यह कर्ज़ कैसे चुकाया जा सकता है। प्रायश्चित्त तुम्हें नहीं करना है, हमें करना है। हम अैसा काम करेंगे जो हमें लगातार प्रायश्चित्त मालूम हो।"

भोले (विद्यार्थियोंके डेप्युटेशनका नेता): "ठीक, मगर यह क़र्ज़दारकी भावना तो आपमें है; हम नहीं मानते कि यह भावना और लोगोंमें भी है। दूसरे तो मेहरबानी ही दिखाते मालूम होते हैं, ग़रीबोंको दान ही देना चाहते हैं। और हमारी यह सूचना अिसीलिअे है कि हम यह हाल जानते हैं।"

बापू: "अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि अैसा होने दो जिससे अिन लोगोंको अपने कर्ज़का खयाल आये। मुझे अुनमें यह खयाल पैदा करने दो। यह खयाल जाग्रत नहीं होगा, तब तक मैं जानता हूँ तुम परेशान होगे। मगर अिसके

बापू: "मगर तब तो तुम्हें किफ़ायतसे रहनेवाले लड़कोंको ढूँढ़कर अुनके साथ भोजनालय चलाना चाहिये।"

अुन्होंने कहा: "हमें स्कूलों, कॉलेजों और छात्रालयोंकी फ़ीस क्यों न माफ़ करा दें?"

बापू कहने लगे: "असलिअे कि मैं तुम्हें अपंग नहीं बनाना चाहता। मैं तो तुम्हें अेक छात्रालय दे दूँ और अुसे तुम अपनी मेहनतसे किफ़ायतके साथ चलाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम अमेरिकाके विद्यार्थियोंकी तरह स्वावलम्बी बनो। अपना काम करते रहो और कुछ ट्यूशन करके, कोअी न कोअी सेवा करके, खर्च निकालते रहो। तुम दान लो, और कोअी आदमी तुम्हें दयाधर्मसे आश्रयदाता बन कर दान दे, यह मैं नहीं चाहता। असमें तुम्हारा अधःपतन होगा।"

अस पर अेक विचक्षण विद्यार्थी कहने लगा: "पढ़ाअीके साथ-साथ यह होना हमारे लिअे कठिन है। आपसे अितना और कह दूँ कि हम भिक्षा पर भी नहीं रहना चाहते। मगर अेक बात पूछूँ: आप हमें अस्पृश्यता-निवारण मंडलकी कार्यसमितिमें क्यों नहीं रखते? अैसा क्यों न करें कि आधे सवर्ण और आधे अछूत हों?"

बापू: "तुमने यह ठीक पूछा। आम्बेडकरने भी यही बात पूछी थी। मैंने अुन्हें समझाया था कि यह नहीं हो सकता। तुम्हें यह माँग नहीं करनी चाहिये। यह माँग तो तब हो जब तुम स्वतंत्र हो। यह मंडल तुम्हारे लिअे प्रायश्चित्त धर्मके भावसे स्थापित न हुआ हो, और किसी मामूली फंडकी तरहका फंड हो, तब तो मैं यह कहूँ कि असमें तुम्हारे ५० फ़ीसदी ही नहीं, बल्कि सौ फ़ीसदी आदमी हों। मगर ये लोग तो कर्ज़दार हैं। कर्ज़दारको समझना चाहिये कि अुसे अपना ऋण कैसे चुकाना है। अिन लोगोंको तुमसे यह हिदायत नहीं लेनी चाहिये कि यह कर्ज़ कैसे चुकाया जा सकता है। प्रायश्चित्त तुम्हें नहीं करना है, हमें करना है। हम अैसा काम करेंगे जो हमें लगातार प्रायश्चित्त मालूम हो।"

भोले (विद्यार्थियोंके डेप्युटेशनका नेता): "ठीक, मगर यह क़र्ज़दारकी भावना तो आपमें है; हम नहीं मानते कि यह भावना और लोगोंमें भी है। दूसरे तो मेहरबानी ही दिखाते मालूम होते हैं, गरीबोंको दान ही देना चाहते हैं। और हमारी यह सूचना असीलिअे है कि हम यह हाल जानते हैं।"

बापू: "असीलिअे मैं कहता हूँ कि अैसा होने दो जिससे अिन लोगोंको अपने कर्ज़का खयाल आये। मुझे अुनमें यह खयाल पैदा करने दो। यह खयाल जाग्रत नहीं होगा, तब तक मैं जानता हूँ तुम परेशान होगे। मगर असके

"सर सी० पी० कुछ सप्ताहसे त्रिवेन्द्रममें हैं। मुझे निश्चित मालूम नहीं या मुझे शक है कि वे आपके साथ होंगे या नहीं। मैं तो नहीं हो सकता। शिवस्वामी आयर भी साथ नहीं हो सकेंगे।

"भले ज़ामोरिन बहुत भला आदमी हो और पूरी तरह सुधारके पक्षमें हो, मगर कानून, रूढ़ि, शास्त्र और लोकमत (समाजके अेक छोटेसे वर्गका भी) विरुद्ध हों, तो वह मजबूर हो जायगा। अुसके साथ काफ़ी या बहुत बातें हो चुकी हैं। धर्मकी, खुशामद और दलील सब कुछ काममें लिया जा चुका है। अब दो चीज़ें बाकी रही हैं: अेक, लोगोंका हिंसक अुत्पात। मगर केलप्पन और गांधीजी दोनों ही अिस चीज़को नापसन्द करते हैं। दूसरी चीज़ है वहम। अुदाहरणार्थ ज़ामोरिनके परिवारमें कोअी भयंकर बीमारी आ जाय। मगर अैसा हो, यह हममेंसे कोअी भी नहीं चाहेगा। यह प्रसंग अैसा विषाद पैदा करता है कि दिमागमें अैसे विचित्र विचार आते हैं। मुझे तो कोअी रास्ता दिखाअी नहीं देता।

"गांधीजी कहते हैं कि अुनके अिस अुग्र निश्चयके पीछे अीश्वरका हाथ है। अिसलिअे अब दलीलोंके लिअे तो गुंजाअिश ही नहीं रह जाती। मगर मेरी बुद्धि मुझे कहती है कि गांधीजी भयंकर भूल कर बैठेंगे। राजाजी, जिनकी बुद्धि बहुत तीव्र और विचक्षण है, मानते हैं कि केलप्पन अिस चीज़को छोड़ दे, यही अेक रास्ता है। हम यह कामना करें कि आखिरी वक़्त महात्माजीके मरनेका कारण बननेकी भयंकर ज़िम्मेदारी अुसे विचलित कर दे।"

२-१२-'३२

सवेरे बिड़लाजी और अुनके मित्र आ पहुँचे। अुन्होंने पिछले अुपवासके सम्बन्धकी सभी भीतरी बातें सही तौर पर बताओीं। अुन्हें रत्ती-रत्ती हकीकतका पता था। अस्पृश्यता-निवारण संघकी तरफ़से वाअिसरॉयसे मिलना चाहिये या नहीं, अिस बारेमें चर्चा की। बादमें बिड़लाजीने बापूसे पूछा कि क्या वे अपनी तरफसे वाअिसरॉयको यह कह सकते हैं कि गांधीजीको छोड़ दीजिये और अुन पर विश्वास रखिये?

बापूने कहा: "अीश्वरने मुझे हर मौक़ेसे निपट लेनेकी शक्ति दी है। मान लीजिये मुझे छोड़ दिया, तो मैं चुप रहनेवाला थोड़े ही हूँ? छोड़ा कि तुरन्त ही मैं तो सविनयभंगके बारेमें कोअी न कोअी बयान दूँगा। हाँ, यह बात सही है कि मैं दो काम साथ-साथ नहीं कर सकूँगा। मगर सरकारको अितना समझ ही लेना चाहिये कि बाहर निकलनेके बाद

"सर सी० पी० कुछ सप्ताहसे त्रिवेन्द्रममें हैं। मुझे निश्चित मालूम नहीं या मुझे शक है कि वे आपके साथ होंगे या नहीं। मैं तो नहीं हो सकता। शिवस्वामी आयर भी साथ नहीं हो सकेंगे।

"भले ज़ामोरिन बहुत भला आदमी हो और पूरी तरह सुधारके पक्षमें हो, मगर कानून, रूढ़ि, शास्त्र और लोकमत (समाजके अेक छोटेसे वर्गका भी) विरुद्ध हों, तो वह मजबूर हो जायगा। अुसके साथ काफ़ी या बहुत बातें हो चुकी हैं। धर्मकी, खुशामद और दलील सब कुछ काममें लिया जा चुका है। अब दो चीज़ें बाकी रही हैं: अेक, लोगोंका हिंसक अुत्पात। मगर केलप्पन और गांधीजी दोनों ही अिस चीज़को नापसन्द करते हैं। दूसरी चीज़ है वहम। अुदाहरणार्थ ज़ामोरिनके परिवारमें कोअी भयंकर बीमारी आ जाय। मगर अैसा हो, यह हममेंसे कोअी भी नहीं चाहेगा। यह प्रसंग अैसा विषाद पैदा करता है कि दिमागमें अैसे विचित्र विचार आते हैं। मुझे तो कोअी रास्ता दिखाअी नहीं देता।

"गांधीजी कहते हैं कि अुनके अिस अुग्र निश्चयके पीछे अीश्वरका हाथ है। अिसलिअे अब दलीलोंके लिअे तो गुंजाअिश ही नहीं रह जाती। मगर मेरी बुद्धि मुझे कहती है कि गांधीजी भयंकर भूल कर बैठेंगे। राजाजी, जिनकी बुद्धि बहुत तीव्र और विचक्षण है, मानते हैं कि केलप्पन अिस चीज़को छोड़ दे, यही अेक रास्ता है। हम यह कामना करें कि आखिरी वक़्त महात्माजीके मरनेका कारण बननेकी भयंकर ज़िम्मेदारी अुसे विचलित कर दे।"

२-१२-'३२

सवेरे बिड़लाजी और अुनके मित्र आ पहुँचे। अुन्होंने पिछले अुपवासके सम्बन्धकी सभी भीतरी बातें सही तौर पर बताअीं। अुन्हें रत्ती-रत्ती हकीकतका पता था। अस्पृश्यता-निवारण संघकी तरफ़से वाअिसरॉयसे मिलना चाहिये या नहीं, अिस बारेमें चर्चा की। बादमें बिड़लाजीने बापूसे पूछा कि क्या वे अपनी तरफसे वाअिसरॉयको यह कह सकते हैं कि गांधीजीको छोड़ दीजिये और अुन पर विश्वास रखिये?

बापूने कहा: "अीश्वरने मुझे हर मौक़ेसे निपट लेनेकी शक्ति दी है। मान लीजिये मुझे छोड़ दिया, तो मैं चुप रहनेवाला थोड़े ही हूँ? छोड़ा कि तुरन्त ही मैं तो सविनयभंगके बारेमें कोअी न कोअी बयान दूँगा। हाँ, यह बात सही है कि मैं दो काम साथ-साथ नहीं कर सकूँगा। मगर सरकारको अितना समझ ही लेना चाहिये कि बाहर निकलनेके बाद

काठियावाड़के अस्पृश्यताके कामकी कठिनाअियोंके बारेमें रामजीभाअी और दूसरे लोगोंने करुण चित्र अुपस्थित किया। कीकाभाअी और दूधाभाअी वगैरा हरिजनोंने गुजरातके हरिजन कार्य सम्बन्धी कठिनाअियाँ बताअीं और गाँवोंकी करुण दशाका वर्णन किया।

अहमदाबादकी म्युनिसिपल पाठशालाओंमें अछूत बच्चोंके लिअे पानीकी व्यवस्था खराब थी। अन्तमें अुन लोगोंने अिस बारेमें फटकार कर कहा: "आपको यहाँ पानीके बारेमें भी भेदभाव रखना हो तो अुस बड़े भंगी, महात्मा गांधी, की जो तस्वीर हॉलमें रखी है अुसे हटा दीजिये, फिर हम चुप हो जायँगे।"

अेक और हरिजनने अपनी जातिके अज्ञानकी बातें कहीं: "हम बच्चोंकी आँखें धोने जाते हैं तो वे भाग जाते हैं, और जब मैं अपनी आँख खोलकर अन्दर दवा डालकर बताता हूँ तब वे लोग पास आते हैं।"

३–१२–'३२

सुबह यह जानकर कि मैंने अुपवास और गीतापाठकी तैयारी की है, बापू कहने लगे: "आज अुपवास करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। मेरा मन तो अभी तक अुपवासी बना ही नहीं। अगर अुपवास करना ही पड़े, तो तुम कल अुपवास करना और गीतापाठ भी कल ही करना।"

सवेरे डॉक्टर मेहताने आकर सरकारका सन्देश सुनाया: "गांधीको अपना हरिजन-कार्य करना हो तो भले ही करे, मगर क़ैदी अप्पाके बारेमें गांधीका दखल सरकार बरदाश्त नहीं कर सकती।"

अिस पर बापूने जवाबमें तुरंत ही कड़ा पत्र लिखवाया।

सुबह बिड़ला, ठक्कर वगैरा आये। पत्र लिखने थे अिस कारण अुनसे मिलनेमें देर हो गअी। अुन्होंने यह खबर दी कि पूना करारके बारेमें पंडितजी सन्तुष्ट नहीं हैं। बापू कहने लगे: "और भी बहुतसे लोग असंतुष्ट हैं; और वे असन्तुष्ट हैं, अिसलिअे मैं खुश हूँ। मगर अिस बारेमें मैं चर्चा करूँ, तो सारे दिन चर्चा करनी पड़े।"

बिड़ला कहने लगे: "अिस समझौतेसे मुसल्मानोंको बड़ी चोट लगी है। अिसका सबूत मुझे जहाँ तहाँ मिलता रहता है। अिटलीसे स्कार्पा आया। अुसने कहा कि . . . की योजना तो यह थी कि हरअेक मुसलमान चार-चार अछूत लड़कियोंसे शादी कर ले, तो छः करोड़ अस्पृश्य हिन्दू नहीं रहेंगे। ये तो सब जगह यही कहते हैं कि ये लोग हिन्दू हैं ही नहीं।"

बापू: "हम अिसी लायक़ हैं, अिस बारेमें मुझे शक नहीं। हम जैसा कर रहे हैं, वैसा भर रहे हैं।"

काठियावाड़के अस्पृश्यताके कामकी कठिनाअियोंके बारेमें रामजीभाअी और दूसरे लोगोंने करुण चित्र अुपस्थित किया। कीकाभाअी और दूधाभाअी वगैरा हरिजनोंने गुजरातके हरिजन कार्य सम्बन्धी कठिनाअियाँ बताअीं और गाँवोंकी करुण दशाका वर्णन किया।

अहमदाबादकी म्युनिसिपल पाठशालाओंमें अछूत बच्चोंके लिअे पानीकी व्यवस्था खराब थी। अन्तमें अुन लोगोंने अिस बारेमें फटकार कर कहा : "आपको यहाँ पानीके बारेमें भी भेदभाव रखना हो तो अुस बड़े भंगी, महात्मा गांधी, की जो तस्वीर हॉलमें रखी है अुसे हटा दीजिये, फिर हम चुप हो जायँगे।"

अेक और हरिजनने अपनी जातिके अज्ञानकी बातें कहीं: "हम बच्चोंकी आँखें धोने जाते हैं तो वे भाग जाते हैं, और जब मैं अपनी आँख खोलकर अन्दर दवा डालकर बताता हूँ तब वे लोग पास आते हैं।"

३-१२-'३२

सुबह यह जानकर कि मैंने अुपवास और गीतापाठकी तैयारी की है, बापू कहने लगे: "आज अुपवास करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। मेरा मन तो अभी तक अुपवासी बना ही नहीं। अगर अुपवास करना ही पड़े, तो तुम कल अुपवास करना और गीतापाठ भी कल ही करना।"

सवेरे डॉक्टर मेहताने आकर सरकारका सन्देश सुनाया: "गांधीको अपना हरिजन-कार्य करना हो तो भले ही करे, मगर क़ैदी अप्पाके बारेमें गांधीका दखल सरकार बरदाश्त नहीं कर सकती।"

अिस पर बापूने जवाबमें तुरंत ही कड़ा पत्र लिखवाया।

सुबह बिड़ला, ठक्कर वगैरा आये। पत्र लिखने थे अिस कारण अुनसे मिलनेमें देर हो गअी। अुन्होंने यह खबर दी कि पूना करारके बारेमें पंडितजी सन्तुष्ट नहीं हैं। बापू कहने लगे: "और भी बहुतसे लोग असंतुष्ट हैं; और वे असन्तुष्ट हैं, अिसलिअे मैं खुश हूँ। मगर अिस बारेमें मैं चर्चा करूँ, तो सारे दिन चर्चा करनी पड़े।"

बिड़ला कहने लगे: "अिस समझौतेसे मुसलमानोंको बड़ी चोट लगी है अिसका सबूत मुझे जहाँ तहाँ मिलता रहता है। अिटलीसे स्कार्पा आया अुसने कहा कि . . . की योजना तो यह थी कि हरअेक मुसलमान चार-चार अछूत लड़कियोंसे शादी कर ले, तो छः करोड़ अस्पृश्य हिन्दू नहीं रहेंगे। ये तो सब जगह यही कहते हैं कि ये लोग हिन्दू हैं ही नहीं।"

बापू: "हम अिसी लायक़ हैं, अिस बारेमें मुझे शक नहीं। हम जैसा कर रहे हैं, वैसा भर रहे हैं।"

सम्बन्धका फलादेश पढ़नेके लिअे ले आया था और सारा पढ़कर सुनानेकी अुसकी अिच्छा थी।

'फ्री प्रेस' के प्रतिनिधिके साथ :

१. सवर्ण हिन्दुओंके फ़र्ज़के खयालसे सोचें, तो गुरुवायुरका प्रश्न छोटा-मोटा नहीं है। हरिजनोंका अुद्धार तो बिलकुल ग़लत प्रयोग है। मेरी रायमें अस्पृश्योंके प्रति सवर्ण हिन्दुओंका पहला कर्तव्य यह है कि औरोंकी तरह ही हरिजनोंके लिअे भी मन्दिर खोल दिये जायँ।

२. मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नका बोझा मैं अस्पृश्यता-निवारण संघ पर नहीं डालता। गुरुवायुरका प्रश्न लोगोंके सामने अिस संघके जन्मके पहलेसे ही था। अलबत्ता, संघको अिसके लिअे भी जितना हो सके अुतना तो करना ही चाहिये। मगर निश्चित समयके भीतर मन्दिर न खुले, तो संघ और किसी संस्थासे अधिक अुलाहनेका पात्र नहीं माना जायगा।

३. अगर यह साबित हो जाय कि गुरुवायुर खानगी मन्दिर है, तो अुपवास नहीं हो सकता।

४. अगर सुधारक सच्चे हों और विनम्र हों, तो वे सनातनियोंका हृदय-परिवर्तन कर सकते हैं। अुन्हें याद रखना चाहिये कि सुधारक होनेसे पहले वे और सनातनी अेक ही गाड़ीमें थे।

५. सुधारक लोकमत बदलनेके लिअे पच रहे हैं। और अेक सुधारककी हैसियतसे मैं मानता हूँ कि लोकमत अिस सुधारके पक्षमें काफ़ी बदला है। मैं यह ज़रा भी नहीं मानता कि अधिकांश हिन्दू धर्माचार्योंके असरमें हैं। वे शंकराचार्य और दूसरे आचार्योंकी अुतनी ही बात सुनते हैं, जितनी अुनके अनुकूल पड़ती है। मान लीजिये शंकराचार्य अैसा फ़तवा दे दें कि कोअी शराब न पीये, तो क्या आप मानते हैं कि सभी अुस फ़तवे पर अमल करेंगे? धर्माचार्य खुद संयमका पालन करें, तभी लोगोंसे करा सकते हैं।

६. अुपवास शुरू करनेसे पहले मेरा शरीर पूरी तरह ठीक हो जाय, अिसका मैं अिंतज़ार नहीं कर सकता। मैं मानता हूँ कि अुपवास अन्तर्यामीकी आज्ञाके अनुसार होगा। जब मेरा शरीर दुर्बल होता है, तब तो मैं अुपवास अच्छी तरह सहन कर सकता हूँ।

७. करोड़ों लोगोंको — अगर वे मुझे चाहते होंगे तो — मेरे अुपवाससे दुःख होगा। वे अपनी आवाज़ अितने जोरसे बुलन्द करेंगे कि वह आवाज अचूक हो जायगी। मेरे और अस्पृश्यताके बीच संग्राम है। मुझे जिलाना हो, तो अस्पृश्यताको मरना होगा। अस्पृश्यताको जिलाना हो, तो मुझे मरना होगा।

अेक आदमीके साथ बातचीतमें प्रगट किये हुअे अुद्गार :

सम्बन्धका फलादेश पढ़नेके लिअे ले आया था और सारा पढ़कर सुनानेकी अुसकी अिच्छा थी।

'फ्री प्रेस' के प्रतिनिधिके साथ:

१. सवर्ण हिन्दुओंके फ़र्ज़के खयालसे सोचें, तो गुरुवायुरका प्रश्न छोटा-मोटा नहीं है। हरिजनोंका अुद्धार तो बिलकुल ग़लत प्रयोग है। मेरी रायमें अस्पृश्योंके प्रति सवर्ण हिन्दुओंका पहला कर्तव्य यह है कि औरोंकी तरह ही हरिजनोंके लिअे भी मन्दिर खोल दिये जायँ।

२. मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नका बोझा मैं अस्पृश्यता-निवारण संघ पर नहीं डालता। गुरुवायुरका प्रश्न लोगोंके सामने अिस संघके जन्मके पहलेसे ही था। अलबत्ता, संघको अिसके लिअे भी जितना हो सके अुतना तो करना ही चाहिये। मगर निश्चित समयके भीतर मन्दिर न खुले, तो संघ और किसी संस्थासे अधिक अुलाहनेका पात्र नहीं माना जायगा।

३. अगर यह साबित हो जाय कि गुरुवायुर खानगी मन्दिर है, तो अुपवास नहीं हो सकता।

४. अगर सुधारक सच्चे हों और विनम्र हों, तो वे सनातनियोंका हृदय-परिवर्तन कर सकते हैं। अुन्हें याद रखना चाहिये कि सुधारक होनेसे पहले वे और सनातनी अेक ही गाड़ीमें थे।

५. सुधारक लोकमत बदलनेके लिअे पच रहे हैं। और अेक सुधारककी हैसियतसे मैं मानता हूँ कि लोकमत अिस सुधारके पक्षमें काफ़ी बदला है। मैं यह ज़रा भी नहीं मानता कि अधिकांश हिन्दू धर्माचार्योंके असरमें हैं। वे शंकराचार्य और दूसरे आचार्योंकी अुतनी ही बात सुनते हैं, जितनी अुनके अनुकूल पड़ती है। मान लीजिये शंकराचार्य अैसा फ़तवा दे दें कि कोअी शराब न पीये, तो क्या आप मानते हैं कि सभी अुस फ़तवे पर अमल करेंगे? धर्माचार्य खुद संयमका पालन करें, तभी लोगोंसे करा सकते हैं।

६. अुपवास शुरू करनेसे पहले मेरा शरीर पूरी तरह ठीक हो जाय, अिसका मैं अिंतज़ार नहीं कर सकता। मैं मानता हूँ कि अुपवास अन्तर्यामीकी आज्ञाके अनुसार होगा। जब मेरा शरीर दुर्बल होता है, तब तो मैं अुपवास अच्छी तरह सहन कर सकता हूँ।

७. करोड़ों लोगोंको — अगर वे मुझे चाहते होंगे तो — मेरे अुपवाससे दुःख होगा। वे अपनी आवाज़ अितने जोरसे बुलन्द करेंगे कि वह आवाज अचूक हो जायगी। मेरे और अस्पृश्यताके बीच संग्राम है। मुझे जिलाना हो, तो अस्पृश्यताको मरना होगा। अस्पृश्यताको जिलाना हो, तो मुझे मरना होगा।

अेक आदमीके साथ बातचीतमें प्रगट किये हुअे अुद्गार:

अिस पर वह कहने लगा: "आपके आदमी आज हैं और कल नहीं, हमें तो आखिर अिन अपराधी क़ैदियोंसे ही काम लेना है न? अिसलिअे आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप बड़ा सवाल न अुठायें, फ़िलहाल अप्पा और अुसके मित्रोंको भंगी-काम करनेकी छूट मिल जाय, अिसीमें सन्तोष मान लीजिये। मुझे लगता है कि अितनी बात मैं सरकारसे करा भी सकता हूँ। मैं सरकारके पास जाता हूँ और अधिक-से-अधिक बुधवारकी सुबह तक आ पहुँचूँगा। और आपको जवाब पसन्द न आये, तो आप फिर अुपवास करें। तब तकके लिअे सुलह रही।"

बापूने मान लिया और अुससे कहा: "अगर आप असफल हुअे तो मैं आपको असफल बैरिस्टर मानूँगा और आपको भी मेरे साथ अुपवास करना पड़ेगा!"

वह बोला: "नहीं भाअी, यह हमारा काम नहीं।"

बापूने अुपवासके बारेमें हर किसीसे कहनेकी अिजाज़त माँगी। वह बोला: "ज़रूर, सारे देशमें तो खबर पहुँच गअी है। अब बाकी क्या रहा?"

अिसके बाद स्ट्रेचर पर 'आंत्रा भुवन' में आये और अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार सुनाया और प्रार्थनाके विशुद्ध रूपका रहस्य समझाया। मैंने जो नोट लिये थे, वे सारे अे. पी. आअी. ने देश भरमें तारसे फैला दिये।

वल्लभभाअी शामको कहने लगे: "कभी-कभी अिन लोगोंकी मूर्खता समझमें नहीं आती। दो दिन पहले अितना ही चुपचाप कर देते तो कुछ न होता। अब फिर यह दुनियाभरको अुपवासका संदेश मिला और अपनी कलअी खुलवाअी!"

सबके चले जाने बाद खुद बापूने डोअिलको सुबहकी बातचीतका सार लिख भेजा और अप्पाको अेक पत्र लिखा। शामको डोअिलका पत्र आया कि यह सार तो बढ़िया है, मगर अेक बात आपने छोड़ दी है। अुसके बारेमें थोड़ा स्पष्टीकरण कर दें तो अच्छा है — वह यह कि आप अभी अपराधी क़ैदियोंमें नीचे कहलानेवाले वर्णके क़ैदियोंका सवाल नहीं अुठायेंगे। अुसे 'हाँ' में जवाब देते हुअे बापूने अपनी बात फिर सामने रखी: "चूँकि यह सवाल अभी नहीं अुठाया जा सकता, अिसीलिअे अैच्छिक कार्यको प्रोत्साहन देना चाहिये।"

वल्लभभाअी कहने लगे: "जवाब देनेमें तो आपकी कोअी भी बराबरी नहीं कर सकता। अब बेचारे केलप्पनकी बातें दुनियाके सामने होतीं अुससे पहले अप्पाकी बातें होने लगेंगी!"

मैंने कहा: "केलप्पनको तार दे दूं कि 'अप्पाने तुम्हें पीछे पटक दिया है'।"

अिस पर वह कहने लगा : "आपके आदमी आज हैं और कल नहीं, हमें तो आखिर अिन अपराधी क़ैदियोंसे ही काम लेना है न ? अिसलिअे आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप बड़ा सवाल न अुठायें, फ़िलहाल अप्पा और अुसके मित्रोंको भंगी-काम करनेकी छूट मिल जाय, अिसीमें सन्तोष मान लीजिये। मुझे लगता है कि अितनी बात मैं सरकारसे करा भी सकता हूँ। मैं सरकारके पास जाता हूँ और अधिक-से-अधिक बुधवारकी सुबह तक आ पहुँचूँगा। और आपको जवाब पसन्द न आये, तो आप फिर अुपवास करें। तब तकके लिअे सुलह रही।"

बापूने मान लिया और अुससे कहा : "अगर आप असफल हुअे तो मैं आपको असफल बैरिस्टर मानूँगा और आपको भी मेरे साथ अुपवास करना पड़ेगा !"

वह बोला : "नहीं भाअी, यह हमारा काम नहीं।"

बापूने अुपवासके बारेमें हर किसीसे कहनेकी अिजाज़त माँगी। वह बोला : "ज़रूर, सारे देशमें तो खबर पहुँच गअी है। अब बाकी क्या रहा ?"

अिसके बाद स्ट्रेचर पर 'आंबा भुवन' में आये और अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार सुनाया और प्रार्थनाके विशुद्ध रूपका रहस्य समझाया। मैंने जो नोट लिये थे, वे सारे अे. पी. आअी. ने देश भरमें तारसे फैला दिये।

वल्लभभाअी शामको कहने लगे : "कभी-कभी अिन लोगोंकी मूर्खता समझमें नहीं आती। दो दिन पहले अितना ही चुपचाप कर देते तो कुछ न होता। अब फिर यह दुनियाभरको अुपवासका संदेश मिला और अपनी कलअी खुलवाअी !"

सबके चले जाने बाद खुद बापूने डोअिलको सुबहकी बातचीतका सार लिख भेजा और अप्पाको अेक पत्र लिखा। शामको डोअिलका पत्र आया कि यह सार तो बढ़िया है, मगर अेक बात आपने छोड़ दी है। अुसके बारेमें थोड़ा स्पष्टीकरण कर दें तो अच्छा है — वह यह कि आप अभी अपराधी क़ैदियोंमें नीचे कहलानेवाले वर्णके क़ैदियोंका सवाल नहीं अुठायेंगे। अुसे 'हाँ' में जवाब देते हुअे बापूने अपनी बात फिर सामने रखी : "चूँकि यह सवाल अभी नहीं अुठाया जा सकता, अिसीलिअे अैच्छिक कार्यको प्रोत्साहन देना चाहिये।"

वल्लभभाअी कहने लगे : "जवाब देनेमें तो आपकी कोअी भी बराबरी नहीं कर सकता। अब बेचारे केलप्पनकी बातें दुनियाके सामने होतीं अुससे पहले अप्पाकी बातें होने लगेंगी !"

मैंने कहा : "केलप्पनको तार दे दें कि 'अप्पाने तुम्हें पीछे पटक दिया है'।"

आजके पत्रोंमें दो-तीन अुल्लेखनीय थे। रामदास पर तो बापूका प्रेम बरसता ही रहता है। "रामगीता समझमें आती है? अुसका रहस्य यह है: भक्ति और अुसका फल। शुद्ध भक्तिसे अनासक्ति और ज्ञान पैदा होते ही हैं। न हों तो वह बकवास है, भक्ति नहीं। ज्ञानका अर्थ है सारासारका विवेक। जिस अक्षरज्ञानके परिणामस्वरूप यह विवेकशक्ति न आये वह ज्ञान नहीं, पठित मूर्खता है। तू देखता है कि अिस तरह समझनेसे रामगीताके गले अुतर जानेके बाद चिन्ता और अधीरता चली जाती है।

"यह पत्र सुबहकी प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। लिखना था अुपवासके विषयमें। शुरू हो गया रामगीताके विवेचनसे। अुपवास तो बहुत पुराना हो गया। डेढ़ ही दिनका था, अिसलिअे कुछ मालूम नहीं होता। कमज़ोरी तुरंत आअी और तुरंत ही चली भी गअी। अुपवासके दिन और रविवारको भी काम खूब किया था। खुराकमें दूध अच्छी तरह शुरू हो गया है। अिसलिअे मेरे अुपवासोंकी फ़िक्र करनी ही न चाहिये। अितना समझ लेना चाहिये कि अुपवास मैं नहीं करता। वे भगवानकी प्रेरणासे होते हैं, अिसलिअे वही करता है, यह कह सकते हैं। अुसका शोक न करना चाहिये, परन्तु कुछ हो जाय तो हर्ष होना चाहिये कि मैं अितना धर्मपालन करता हूँ। अिसीके साथ यह भी याद रखना चाहिये कि मेरी होड़में कोअी अुपवास न करे। मुझसे सम्बन्ध रखनेवाले तो मुझे पूछ कर ही करें, तो ठीक होगा। अैसे अवसरोंकी कल्पना की जा सकती है, जब मुझसे पूछनेका समय ही न रहे, या अन्तःप्रेरणा स्पष्ट हो। मुमुक्षु जीवोंकी परम्परा यह है कि जब तक अपना माना हुआ अधिक अनुभवी अपने पास हो, तब तक अुससे पूछ कर नया क़दम अुठाया जाय। अन्तर्नाद सभीको सुनाअी नहीं देता। अन्तर्नादका आभास मात्र ही हो सकता है और सच पूछा जाय तो 'मैं' का ही नाद होता है। 'मैं' का अर्थ है शैतान, रावण और दैत्य। हमारे भीतर राम बोल रहा है या रावण, अिसका पता हमेशा नहीं लग सकता। रावण अक्सर साधुके भेसमें ही आता है और अुस समय राम जैसा लगता है। अिसलिअे जो अधिक अनुभवी हो अुससे पूछा जाय। यह तो ज़रासा लिखते-लिखते बहुत लिखा गया। सबको पढ़वाना।"

शान्तिनिकेतनमें पढ़नेवाले अेक गुजराती विद्यार्थीने पूछा: "क्या गुरुवायुरका यह अुपवास मुंडचिरापन नहीं कहा जा सकता? मान लीजिये सनातनी बहुत थोड़े हों। तो क्या अुन्हें मन्दिरोंमें अपने ढंगसे पूजा करनेका हक़ नहीं है? मेरे दादा पुराने विचारके हैं और अस्पृश्यता पालना अुन्हें धर्म प्रतीत होता है, तो क्या वे मुझे घरसे निकाल सकते हैं? मैं प्रायश्चित्त न करूँ, तो मेरी स्त्री मेरे साथ रहनेसे अिनकार करती है।"

आजके पत्रोंमें दो-तीन अुल्लेखनीय थे। रामदास पर तो बापूका प्रेम बरसता ही रहता है। "रामगीता समझमें आती है? अुसका रहस्य यह है: भक्ति और अुसका फल। शुद्ध भक्तिसे अनासक्ति और ज्ञान पैदा होते ही हैं। न हों तो वह बकवास है, भक्ति नहीं। ज्ञानका अर्थ है सारासारका विवेक। जिस अक्षरज्ञानके परिणामस्वरूप यह विवेकशक्ति न आये वह ज्ञान नहीं, पठित मूर्खता है। तू देखता है कि अिस तरह समझनेसे रामगीताके गले अुतर जानेके बाद चिन्ता और अधीरता चली जाती है।

"यह पत्र सुबहकी प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। लिखना था अुपवासके विषयमें। शुरू हो गया रामगीताके विवेचनसे। अुपवास तो बहुत पुराना हो गया। डेढ़ ही दिनका था, अिसलिअे कुछ मालूम नहीं होता। कमज़ोरी तुरंत आअी और तुरंत ही चली भी गअी। अुपवासके दिन और रविवारको भी काम खूब किया था। खुराकमें दूध अच्छी तरह शुरू हो गया है। अिसलिअे मेरे अुपवासोंकी फ़िक्र करनी ही न चाहिये। अितना समझ लेना चाहिये कि अुपवास मैं नहीं करता। वे भगवानकी प्रेरणासे होते हैं, अिसलिअे वही करता है, यह कह सकते हैं। अुसका शोक न करना चाहिये, परन्तु कुछ हो जाय तो हर्ष होना चाहिये कि मैं अितना धर्मपालन करता हूँ। अिसीके साथ यह भी याद रखना चाहिये कि मेरी होड़में कोअी अुपवास न करे। मुझसे सम्बन्ध रखनेवाले तो मुझे पूछ कर ही करें, तो ठीक होगा। अैसे अवसरोंकी कल्पना की जा सकती है, जब मुझसे पूछनेका समय ही न रहे, या अन्तःप्रेरणा स्पष्ट हो। मुमुक्षु जीवोंकी परम्परा यह है कि जब तक अपना माना हुआ अधिक अनुभवी अपने पास हो, तब तक अुससे पूछ कर नया क़दम अुठाया जाय। अन्तर्नाद सभीको सुनाअी नहीं देता। अन्तर्नादका आभास मात्र ही हो सकता है और सच पूछा जाय तो 'मैं' का ही नाद होता है। 'मैं' का अर्थ है शैतान, रावण और दैत्य। हमारे भीतर राम बोल रहा है या रावण, अिसका पता हमेशा नहीं लग सकता। रावण अकसर साधुके भेसमें ही आता है और अुस समय राम जैसा लगता है। अिसलिअे जो अधिक अनुभवी हो अुससे पूछा जाय। यह तो ज़रासा लिखते-लिखते बहुत लिखा गया। सबको पढ़वाना।"

शान्तिनिकेतनमें पढ़नेवाले अेक गुजराती विद्यार्थीने पूछा: "क्या गुरुवायुरका यह अुपवास मुंडचिरापन नहीं कहा जा सकता? मान लीजिये सनातनी बहुत थोड़े हों। तो क्या अुन्हें मन्दिरोंमें अपने ढंगसे पूजा करनेका हक़ नहीं है? मेरे दादा पुराने विचारके हैं और अस्पृश्यता पालना अुन्हें धर्म प्रतीत होता है, तो क्या वे मुझे घरसे निकाल सकते हैं? मैं प्रायश्चित्त न करूँ, तो मेरी स्त्री मेरे साथ रहनेसे अिनकार करती है।"

अुस तरह अिस मामलेमें मदद करनी चाहिये। सेवा करनेके अनेक और तरह-तरहके तरीके हैं। मैं अपनी तमाम शक्ति हरिजनोंकी सेवामें केन्द्रित कर रहा हूँ।

स० — आप जेलमें तो यह काम कर रहे हैं, मगर बाहर निकलनेके बाद यही काम क्यों न जारी रखें?

बापू — मैंने अैसा कहा ही नहीं कि बाहर भी मैं अपनी शक्ति हरिजन सेवामें केंद्रित नहीं करूँगा। मगर दूसरा कोअी काम न करनेके लिअे मैं पहलेसे नहीं बँधता। मेरा जीवन केवल हरिजनोंके लिअे है, यह कहना अर्धसत्य है। पूरा सत्य तो यह है कि मेरा जीवन अीश्वरार्पित है। हरिजनोंके लिअे भी है। यों तो सारी सृष्टिके लिअे है। अीश्वर ही मुझे जिलायेगा या अुठा लेगा।

स० — क्या आप ज़ामोरिनसे मिलनेवाले हैं?

बापू — वे यहाँ आयें, अिसके सिवाय तो मैं मिल ही कैसे सकता हूँ?

रामचन्द्ररावके साथ :

स० — अस्पृश्यता माननेवालोंको क्या सज़ा हो सकती है?

बापू — कोअी हरिजनको कुअेंसे पानी भरनेसे रोकेगा, तो स्वराजमें वह अपराधी माना जायगा। अलबत्ता, यह हो तभी सकेगा जब अधिकांश हिन्दू अिस तरहका क़ानून बननेके पक्षमें होंगे।

स० — बहिष्कार भी जुर्म समझा जायगा?

बापू — हालात मालूम हुअे बिना मैं यकायक जवाब नहीं दे सकता।

अेक सवालके जवाबमें : मनुस्मृतिके कुछ भाग नीतिसे भरे हैं, जब कि कुछ साफ़ तौर पर अनीतिवाले भी हैं।

पश्चात्तापका रहस्य . . . के पत्रमें बताया :

"दोषी मनुष्य अपने साथ बेअिन्साफ़ी होनेकी बात लिखे, यह पश्चात्तापका लक्षण नहीं है। आजतक दुनियामें जिसने पश्चात्ताप किया है, अुसने अपनेको मिली हुअी सज़ाको सज़ा माना ही नहीं; मगर यह माना है कि वह कम हुअी है। तुमने तो अपनी तुलना . . . के साथ की है और अुसके मुक़ाबलेमें तुम अपनेको कम अपराधी समझते मालूम होते हो। . . . के अपराधकी तो मुझे कुछ खबर ही नहीं। तुम्हें तो अितना भी भान नहीं कि तुम्हारे चरित्र पर पहलेसे ही दाग था और आश्रममें भी कितनी ही बार भूलें हुअी हैं। भूलोंकी मुझे चिन्ता नहीं, हम सब भूलें करते हैं। मुझे दुःख तो यह है कि भूलोंका तुम्हें शुद्ध पश्चात्ताप नहीं है। और जब तक यह नहीं होता, तब तक तुम्हारा आश्रममें वापस जानेका विचार करना भी मुझे तो अनुचित लगता है। मुझे भय है कि शुद्ध पश्चात्ताप तुम्हारे स्वभावके विरुद्ध ही

अुस तरह अिस मामलेमें मदद करनी चाहिये । सेवा करनेके अनेक और तरह-तरहके तरीके हैं । मैं अपनी तमाम शक्ति हरिजनोंकी सेवामें केन्द्रित कर रहा हूँ ।

स० — आप जेलमें तो यह काम कर रहे हैं, मगर बाहर निकलनेके बाद यही काम क्यों न जारी रखें ?

बापू — मैंने अैसा कहा ही नहीं कि बाहर भी मैं अपनी शक्ति हरिजन सेवामें केंद्रित नहीं करूँगा । मगर दूसरा कोअी काम न करनेके लिअे मैं पहलेसे नहीं बँधता । मेरा जीवन केवल हरिजनोंके लिअे है, यह कहना अर्धसत्य है । पूरा सत्य तो यह है कि मेरा जीवन अीश्वरार्पित है । हरिजनोंके लिअे भी है । यों तो सारी सृष्टिके लिअे है । अीश्वर ही मुझे जिलायेगा या अुठा लेगा ।

स० — क्या आप ज़ामोरिनसे मिलनेवाले हैं ?

बापू — वे यहाँ आयें, अिसके सिवाय तो मैं मिल ही कैसे सकता हूँ ?

रामचन्द्रराव्के साथ :

स० — अस्पृश्यता माननेवालोंको क्या सज़ा हो सकती है ?

बापू — कोअी हरिजनको कुअेंसे पानी भरनेसे रोकेगा, तो स्वराजमें वह अपराधी माना जायगा । अलबत्ता, यह हो तभी सकेगा जब अधिकांश हिन्दू अिस तरहका क़ानून बननेके पक्षमें होंगे ।

स० — बहिष्कार भी जुर्म समझा जायगा ?

बापू — हालात मालूम हुअे बिना मैं यकायक जवाब नहीं दे सकता ।

अेक सवालके जवाबमें : मनुस्मृतिके कुछ भाग नीतिसे भरे हैं, जब कि कुछ साफ़ तौर पर अनीतिवाले भी हैं ।

पश्चात्तापका रहस्य . . . के पत्रमें बताया :

“ दोषी मनुष्य अपने साथ बेअिन्साफ़ी होनेकी बात लिखे, यह पश्चात्तापका लक्षण नहीं है । आजतक दुनियामें जिसने पश्चात्ताप किया है, अुसने अपनेको मिली हुअी सज़ाको सज़ा माना ही नहीं; मगर यह माना है कि वह कम हुअी है । तुमने तो अपनी तुलना . . . के साथ की है और अुसके मुक़ाबलेमें तुम अपनेको कम अपराधी समझते मालूम होते हो । . . . के अपराधकी तो मुझे कुछ खबर ही नहीं । तुम्हें तो अितना भी भान नहीं कि तुम्हारे चरित्र पर पहलेसे ही दाग था और आश्रममें भी कितनी ही बार भूलें हुअी हैं । भूलोंकी मुझे चिन्ता नहीं, हम सब भूलें करते हैं । मुझे दुःख तो यह है कि भूलोंका तुम्हें शुद्ध पश्चात्ताप नहीं है । और जब तक यह नहीं होता, तब तक तुम्हारा आश्रममें वापस जानेका विचार करना भी मुझे तो अनुचित लगता है । मुझे भय है कि शुद्ध पश्चात्ताप तुम्हारे स्वभावके विरुद्ध ही

लिअे दूसरा मन्दिर बनाना चाहिये। मैंने अपने धर्मका जहाँ तक अनुभव और अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि जो लोग दूसरे मन्दिरोंमें जा ही नहीं सकते, वे मर्यादावाले बन जायँ और वह मन्दिर अुनके लिअे कुछ घण्टे खुला रहे। धार्मिक वस्तु वह है जिससे आध्यात्मिक अुन्नति हो और जिसके लिअे हम सर्वस्व त्याग करें। थोड़ेसे स्पृश्योंके लिअे तो मन्दिर थोड़े समयके लिअे खोला जा सकता है; मगर सुधारक थोड़े हों, तो अस्पृश्योंके लिअे मन्दिर नहीं खोला जा सकता।

"अल्पमत और बहुमतका प्रश्न मेरे अुपवाससे पैदा हुआ। बहुतसे लोग अछूतोंका मन्दिर-प्रवेश चाहते हैं, अिसमें शंका करनेवालोंके जवाबमें यह मत-गणनाका सवाल आया।

"आप मुझे विश्वास करा दें कि अस्पृश्योंका मन्दिर-प्रवेश शास्त्र विरुद्ध है, तो मेरी कुछ नहीं चलेगी।

"मैं तो मानता ही हूँ कि जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है। मगर आप यह सिद्ध कर दें कि यह अधर्म है, तो मुझे अपना प्रयत्न छोड़ देना पड़ेगा।"

बादमें अुनके साथ सवाल जवाब हुअे :

स० — अिक्कावन फी सदी मत मिलें अुसके बाद क्या आप शास्त्रियोंकी बात सुननेका अभिवचन देंगे ?

बापू — आप अिसे अधर्म सिद्ध कर दें, तो मैं तो आज ही अुपवास छोड़ दूँ।

स० — तो क्या आपने शास्त्रियोंके साथ चर्चा करनेका मौका प्राप्त कर लिया है ?

बापू — मेरा सौभाग्य कहिये या दुर्भाग्य, आपने यहाँ आनेका कष्ट किया सो मेरे अुपवासके कारण ही। मैंने अपने लिअे तो निश्चय कर लिया है कि मन्दिर खोलना धर्म है। यह निश्चय कअी वर्ष पहले किया था। वाअिकोममें मैं शास्त्रियोंके पास गया था। अुन्होंने मुझे शंकरस्मृति बताअी। अुसका अनुवाद भी करवाया। मगर वे शास्त्री जो कहते थे, अुसका समर्थन शंकरस्मृतिमें भी नहीं मिला। आज आप आकर कहते हैं कि हम कुछ नया प्रकाश डालना चाहते हैं, तो मैं सुन लेता हूँ। मगर अिस चर्चाके दरमियान अुपवासका निश्चय नहीं छोड़ सकता।

अनेक ग्रंथ पढ़े, अनुवाद देखे और अन्तमें निश्चय किया कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा अुतरे वही धर्म है। गीताके पास मैं नहीं गया, परन्तु गीता ही मेरे पास आ पहुँची। गीता मेरे लिअे स्वतंत्र

लिअे दूसरा मन्दिर बनाना चाहिये । मैंने अपने धर्मका जहाँ तक अनुभव और अध्ययन किया है, वहाँ तक मुझे लगता है कि जो लोग दूसरे मन्दिरोंमें जा ही नहीं सकते, वे मर्यादावाले बन जायँ और वह मन्दिर अुनके लिअे कुछ घण्टे खुला रहे । धार्मिक वस्तु वह है जिससे आध्यात्मिक अुन्नति हो और जिसके लिअे हम सर्वस्व त्याग करें । थोड़ेसे स्पृश्योंके लिअे तो मन्दिर थोड़े समयके लिअे खोला जा सकता है; मगर सुधारक थोड़े हों, तो अस्पृश्योंके लिअे मन्दिर नहीं खोला जा सकता ।

"अल्पमत और बहुमतका प्रश्न मेरे अुपवाससे पैदा हुआ । बहुतसे लोग अछूतोंका मन्दिर-प्रवेश चाहते हैं, अिसमें शंका करनेवालोंके जवाबमें यह मत-गणनाका सवाल आया ।

"आप मुझे विश्वास करा दें कि अस्पृश्योंका मन्दिर-प्रवेश शास्त्र विरुद्ध है, तो मेरी कुछ नहीं चलेगी ।

"मैं तो मानता ही हूँ कि जो काम कर रहा हूँ वह धार्मिक है । मगर आप यह सिद्ध कर दें कि यह अधर्म है, तो मुझे अपना प्रयत्न छोड़ देना पड़ेगा ।"

बादमें अुनके साथ सवाल जवाब हुअे :

स० — अिक्कावन फी सदी मत मिलें अुसके बाद क्या आप शास्त्रियोंकी बात सुननेका अभिवचन देंगे ?

बापू — आप अिसे अधर्म सिद्ध कर दें, तो मैं तो आज ही अुपवास छोड़ दूँ ।

स० — तो क्या आपने शास्त्रियोंके साथ चर्चा करनेका मौका प्राप्त कर लिया है ?

बापू — मेरा सौभाग्य कहिये या दुर्भाग्य, आपने यहाँ आनेका कष्ट किया सो मेरे अुपवासके कारण ही । मैंने अपने लिअे तो निश्चय कर लिया है कि मन्दिर खोलना धर्म है । यह निश्चय कअी वर्ष पहले किया था । वाअिकोममें मैं शास्त्रियोंके पास गया था । अुन्होंने मुझे शंकरस्मृति बताअी । अुसका अनुवाद भी करवाया । मगर वे शास्त्री जो कहते थे, अुसका समर्थन शंकरस्मृतिमें भी नहीं मिला । आज आप आकर कहते हैं कि हम कुछ नया प्रकाश डालना चाहते हैं, तो मैं सुन लेता हूँ । मगर अिस चर्चाके दरमियान अुपवासका निश्चय नहीं छोड़ सकता ।

अनेक ग्रंथ पढ़े, अनुवाद देखे और अन्तमें निश्चय किया कि जो अहिंसा और सत्यकी कसौटी पर खरा अुतरे वही धर्म है । गीताके पास मैं नहीं गया, परन्तु गीता ही मेरे पास आ पहुँची । गीता मेरे लिअे स्वतंत्र

बापू: "मैं तो अपढ़ अज्ञानी ठहरा। आपके जैसा पंडित होता, तो आपको यहाँ आने ही न देता या आपको यहीं बन्द कर देता। आपसे कहता, 'जाअिये, मेरा शास्त्रका अध्ययन आपसे अलग है'"।

वे कहने लगे: "भले ही शास्त्र न पढ़े हों। आपको सारा देश पूजता है। आप क़ैदी नहीं, आपने सारे देशको क़ैदी बना रखा है। सब आपके प्रेममें कैद हुअे हैं, और आप औरोंको स्वतंत्र करनेके लिअे कैदी बनकर बैठे हैं।"

. . . की घटनाके बारेमें . . . को लिखते हुअे:

८-१२-'३२ — "अगर अिसमें दोष हो, तो वह भले ही मेरा माना जाय। क्योंकि तुम सबको मैंने अेक महा प्रयोगमें डाला है। मेरा प्रयोग साँपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। मुझे अिसका कोअी पश्चात्ताप नहीं है। यह प्रयोग तो जारी ही रहेगा। अिसका परिणाम शुभ ही होगा। अुसके लिअे बलिदानोंकी ज़रूरत पड़ेगी तो दूँगा।"

मीराको:

"अुपवास मेरे जीवनकी अेक मामूली बात हो गअी है। कुछ रोग अिस तरहके अिलाजसे ही मिटते हैं। अुनके लिअे समय-समयपर आध्यात्मिक औषधिकी जरूरत पड़ती है। सबमें यह शक्ति अेकदम नहीं आ जाती। मुझमें वह आ गअी हो, तो बहुत लम्बी तालीमके परिणामस्वरूप ही आअी है। साथियोंको मेरे अुपवासकी बात सुनकर घबराना नहीं चाहिये या अस्वस्थ भी नहीं होना चाहिये। अगर वे मानते हों कि मैं पवित्र हूँ और समझदार भी हूँ, तब तो अुन्हें मेरे अुपवाससे आनन्द होना चाहिये। क्योंकि अैसी धार्मिक प्रवृत्तिसे तो हम सबका और सारी दुनियाका कल्याण ही होगा। अैसे प्रसंग पर हम सबको अधिक आत्म-निरीक्षण करने और अधिक आत्मशुद्धि करनेका अुत्साह होना चाहिये।"

मुन्शीके 'ब्रह्मचर्याश्रम' प्रहसनके बारेमें अेक युवकने बापूसे शिकायत की थी। अुस परसे बापूने मुन्शीको पत्र लिखा था। मुन्शीको बापूकी रायसे बहुत दुःख हुआ। अुन्होंने तुरन्त अुसका प्रचार बन्द कर देने और अुसका खेलना रोक देनेका वचन दिया, मगर साथ ही अपना विरोध भी प्रदर्शित किया। कलाके बारेमें अपने विचार बताये। वास्तविक सौन्दर्यको चित्रित करना ही कलाकारका काम है। अिसके अनुसार ब्रह्मचर्यका आदर्श पालन करनेकी अिच्छा रखनेवाले, पर अुसमें बार-बार असफल होनेवालोंकी अुसमें हँसी अुड़ाअी गअी है। अुसमें अश्लीलता नहीं, अेक शब्द भी अश्लील नहीं और पात्र-मेरे सहित सभी मित्र हैं, जिन्होंने प्रहसनके बारेमें अपनी पसन्दगी जाहिर की है। अुनकी सफ़ाअीका

बापू: "मैं तो अपढ़ अज्ञानी ठहरा। आपके जैसा पंडित होता, तो आपको यहाँ आने ही न देता या आपको यहीं बन्द कर देता। आपसे कहता, 'जाअिये, मेरा शास्त्रका अध्ययन आपसे अलग है'"।

वे कहने लगे: "भले ही शास्त्र न पढ़े हों। आपको सारा देश पूजता है। आप क़ैदी नहीं, आपने सारे देशको क़ैदी बना रखा है। सब आपके प्रेममें क़ैद हुअे हैं, और आप औरोंको स्वतंत्र करनेके लिअे क़ैदी बनकर बैठे हैं।"

. . . की घटनाके बारेमें . . . को लिखते हुअे:

८-१२-'३२

"अगर अिसमें दोष हो, तो वह भले ही मेरा माना जाय। क्योंकि तुम सबको मैंने अेक महा प्रयोगमें डाला है। मेरा प्रयोग साँपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। मुझे अिसका कोअी पश्चात्ताप नहीं है। यह प्रयोग तो जारी ही रहेगा। अिसका परिणाम शुभ ही होगा। अुसके लिअे बलिदानोंकी ज़रूरत पड़ेगी तो दूँगा।"

मीराको:

"अुपवास मेरे जीवनकी अेक मामूली बात हो गअी है। कुछ रोग अिस तरहके अिलाजसे ही मिटते हैं। अुनके लिअे समय-समयपर आध्यात्मिक औषधिकी जरूरत पड़ती है। सबमें यह शक्ति अेकदम नहीं आ जाती। मुझमें वह आ गअी हो, तो बहुत लम्बी तालीमके परिणामस्वरूप ही आअी है। साथियोंको मेरे अुपवासकी बात सुनकर घबराना नहीं चाहिये या अस्वस्थ भी नहीं होना चाहिये। अगर वे मानते हों कि मैं पवित्र हूँ और समझदार भी हूँ, तब तो अुन्हें मेरे अुपवाससे आनन्द होना चाहिये। क्योंकि अैसी धार्मिक प्रवृत्तिसे तो हम सबका और सारी दुनियाका कल्याण ही होगा। अैसे प्रसंग पर हम सबको अधिक आत्म-निरीक्षण करने और अधिक आत्मशुद्धि करनेका अुत्साह होना चाहिये।"

मुन्शीके 'ब्रह्मचर्याश्रम' प्रहसनके बारेमें अेक युवकने बापूसे शिकायत की थी। अुस परसे बापूने मुन्शीको पत्र लिखा था। मुन्शीको बापूकी रायसे बहुत दुःख हुआ। अुन्होंने तुरन्त अुसका प्रचार बन्द कर देने और अुसका खेलना रोक देनेका वचन दिया, मगर साथ ही अपना विरोध भी प्रदर्शित किया। कलाके बारेमें अपने विचार बताये। वास्तविक सौन्दर्यको चित्रित करना ही कलाकारका काम है। अिसके अनुसार ब्रह्मचर्यका आदर्श पालन करनेकी अिच्छा रखनेवाले, पर अुसमें बार-बार असफल होनेवालोंकी अुसमें हँसी अुड़ाअी गअी है। अुसमें अश्लीलता नहीं, अेक शब्द भी अश्लील नहीं और पात्र मेरे सहित सभी मित्र हैं, जिन्होंने प्रहसनके बारेमें अपनी पसन्दगी जाहिर की है। अुनकी सफ़ाअीका

शास्त्रियोंके साथ फिर साढ़े तीन बजेसे मगजपच्ची :

स० — मन्दिर-प्रवेश धर्म है। यह आप किस आधार पर मानते हैं; यह समझाअिये। अिसके बाद हम यह समझानेका प्रयत्न करेंगे कि वह अधर्म है।

अुन्हें अपना सारा धार्मिक विकास — बचपनसे लगाकर आज तकका — समझाया। अिसपर वे सारे समय यही बात कहते रहे कि आपके हृदयको विश्वास हो वही धर्म हो, तब तो फिर लाख आदमियोंके लाख धर्म होंगे! 'हृदयेनाभ्यनुज्ञातो अेष धर्मः सनातनः' अिसके बारेमें अिन शास्त्रियोंके पास क्या कहनेको होगा?

राधाकान्त मालवीय : आपके साथ लोकमत नहीं है।

१. आपको मन्दिरमें नियमित जानेवालोंकी मतगणना

९-१२-'३२ करानी चाहिये।

२. अिस मन्दिरमें दूर-दूरसे आनेवालोंका मत लेना चाहिये।

राधाकान्तको जब बापूने समझाया कि अैसे मन्दिरमें जानेवालोंकी ही राय ली जाती है, तब अुसने कहा : 'मुझपर ग़लत असर था। मैंने अैसी खबरें पढ़ी थीं कि हर किसी हिन्दूका मत लिया जा रहा है।' अुसे सन्तोष देनेके लिअे बापूने गोपाल मेननको तार दिया कि सिर्फ़ अैसे ही मनुष्योंके मत लिये जायँ। यह भी समझाया कि आज जो अस्पृश्यता पाली जाती है, अुसका मैं नाश चाहता हूँ। अिससे भी अुसके मनपर नया ही प्रकाश पड़ा।

शास्त्रियोंके साथ बातचीत :

बापू — अस्पृश्य किसे मानते हैं? अस्पृश्य जन्मसे या कर्मसे? जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य शास्त्रोंमें हैं?

ज० — आप जिनके लिअे आन्दोलन कर रहे हैं, वे अस्पृश्य हैं। जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य भी किसी-किसी प्रसंग पर स्पृश्य बन जाते हैं। ये लोग निषाद वग़ैरा हैं।

बापू — आप कल मुझसे कह रहे थे कि अछूत पाठशालाओंमें जायँ और दूसरे सार्वजनिक स्थानोंमें जायँ तो हर्ज नहीं, मगर मन्दिरोंमें प्रवेश न करें।

ज० — यह सवाल अप्रस्तुत है।

बापू — अस्पृश्यों और सुधारक-स्पृश्योंके लिअे मन्दिरोंका रुपया देनेको आप तैयार हैं? और अिस तरह मन्दिर बनाना आप धर्म मानेंगे?

ज० — हाँ। जो अस्पृश्यताको धर्म मानते हैं वे नहीं बनायेंगे, अधर्म मानते हैं वे अुनमें प्रतिमा-प्रतिष्ठा करेंगे। हम रुपया देंगे।

बापूने कहा : "मुझे नहीं लगता कि हमारे बीच कोअी समझौता हो सकता है।"

शास्त्रियोंके साथ फिर साढ़े तीन बजेसे मगजपच्ची :

स० — मन्दिर-प्रवेश धर्म है। यह आप किस आधार पर मानते हैं; यह समझाअिये। अिसके बाद हम यह समझानेका प्रयत्न करेंगे कि वह अधर्म है।

अुन्हें अपना सारा धार्मिक विकास — बचपनसे लगाकर आज तकका — समझाया। अिसपर वे सारे समय यही बात कहते रहे कि आपके हृदयको विश्वास हो वही धर्म हो, तब तो फिर लाख आदमियोंके लाख धर्म होंगे! 'हृदयेनाभ्यनुज्ञातो अेष धर्मः सनातनः' अिसके बारेमें अिन शास्त्रियोंके पास क्या कहनेको होगा?

राधाकान्त मालवीय : आपके साथ लोकमत नहीं है।

१. आपको मन्दिरमें नियमित जानेवालोंकी मतगणना करानी चाहिये।

९-१२-'३२

२. अिस मन्दिरमें दूर-दूरसे आनेवालोंका मत लेना चाहिये।

राधाकान्तको जब बापूने समझाया कि अैसे मन्दिरमें जानेवालोंकी ही राय ली जाती है, तब अुसने कहा : 'मुझपर गलत असर था। मैंने अैसी खबरें पढ़ी थीं कि हर किसी हिन्दूका मत लिया जा रहा है।' अुसे सन्तोष देनेके लिअे बापूने गोपाल मेननको तार दिया कि सिर्फ़ अैसे ही मनुष्योंके मत लिये जायँ। यह भी समझाया कि आज जो अस्पृश्यता पाली जाती है, अुसका मैं नाश चाहता हूँ। अिससे भी अुसके मनपर नया ही प्रकाश पड़ा।

शास्त्रियोंके साथ बातचीत :

बापू — अस्पृश्य किसे मानते हैं? अस्पृश्य जन्मसे या कर्मसे? जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य शास्त्रोंमें हैं?

ज० — आप जिनके लिअे आन्दोलन कर रहे हैं, वे अस्पृश्य हैं। जन्मसे मरण तकके अस्पृश्य भी किसी-किसी प्रसंग पर स्पृश्य बन जाते हैं। ये लोग निषाद वगैरा हैं।

बापू — आप कल मुझसे कह रहे थे कि अछूत पाठशालाओंमें जायँ और दूसरे सार्वजनिक स्थानोंमें जायँ तो हर्ज नहीं, मगर मन्दिरोंमें प्रवेश न करें।

ज० — यह सवाल अप्रस्तुत है।

बापू — अस्पृश्यों और सुधारक-स्पृश्योंके लिअे मन्दिरोंका रुपया देनेको आप तैयार हैं? और अिस तरह मन्दिर बनाना आप धर्म मानेंगे?

ज० — हाँ। जो अस्पृश्यताको धर्म मानते हैं वे नहीं बनायेंगे, अधर्म मानते हैं वे अुनमें प्रतिमा-प्रतिष्ठा करेंगे। हम रुपया देंगे।

बापूने कहा : "मुझे नहीं लगता कि हमारे बीच कोअी समझौता हो सकता है।"

कहा कि यह पत्रिका मुझे नहीं बताओी गओी थी। मगर दलीलबाज महाराष्ट्री मुत्सद्दियोंमें अिस पत्रिकाने खासा असर किया हो और यह वहम मजबूत बनाया हो कि बापू कहीं भी नहीं झुकेंगे, तो कोओी आश्चर्य नहीं।

शामको पूना म्युनिसिपेलिटीके अेक मांग जातिके सदस्य सोनावणे आये। अुनके साथ दूसरे स्पृश्य सदस्य भी थे। सोनावणे कहते थे: "हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है। हमें तो आपका चरणस्पर्श मिले तो काफी है।"

बापू बोले: "मगर आपको हम मन्दिरोंमें खींच कर ले जायँ, तो भी आप अिनकार करेंगे?"

वे बोले: "नहीं, तब तो आयेंगे।"

अुन्हें यह डर हो गया था कि पूना-करारके अनुसार महार ही सब सीटें ले जायँगे। बापूने यह डर दूर करनेका प्रयत्न किया। अिस बातसे ही अुनके आनन्दका पार नहीं था कि वे बापूके पास आ सके।

बादमें लेडी विट्ठलदास आओीं। वे अपनी देरानीके साथ राजभोजके विद्यार्थी भवनमें हो आओी थीं। जहाँ अेक समय अुन्हें जानेमें बड़ा संकोच होता था, वहाँ अब निःसंकोच जाती हैं और नहाती नहीं। अपने बापट शास्त्रीकी भी बात की। ये बहन कहती थीं कि अिसे भी अिस जमानेकी अेक ख़ूबी ही कहना चाहिये कि वे यह स्वीकार करते हैं कि अुन्होंने किसीको भी अछूत मानना छोड़ दिया है।

प्रज्ञानेश्वर यतिने लिखा: "यह दुःखद है कि आप किसी भी बातमें समझौता नहीं करते और न मान कर अुपवास तो खड़ा ही

११-१२-'३२ रखते हैं। आपसे कैसे काम लिया जाय?"

अिन्हें जवाब दिया:

"आपके स्पष्ट पत्रके लिअे धन्यवाद। मेरे लिअे बहुत चिन्ता न कीजिये। मैं चालीस वर्षसे लगातार सेवाकार्य कर रहा हूँ। अिस अरसेमें दूसरोंके लिअे अुपवास करनेके आप मुश्किलसे बारह प्रसंग बता सकेंगे। मेरी मान्यताके अनुसार अुपवास करनेकी योग्यता जबसे मुझमें आओी, अुसके बादसे ही यह चीज़ मेरे ज़ीवनमें आओी है। कोओी जल्दबाजीमें तो अुपवास कर ही नहीं सकता। और मेरा दावा तो आप जानते ही हैं। मैं अपने आप कोओी अुपवास नहीं करता, अन्तर्यामीकी आवाज़के अनुसार ही करता हूँ। यह आवाज़ हमेशा अीश्वरकी होती है या फिर शैतानकी, यह कहना आसान नहीं है। अितने पर भी यह कहा जा सकता है कि यह अन्तर्यामीकी आवाज़ होनेका अपना दावा मैंने सच्चा साबित किया है। मेरे और श्री मातेके बीच हुओी बातचीत जैसी अुन्होंने

कहा कि यह पत्रिका मुझे नहीं बताअी गअी थी। मगर दलीलबाज महाराष्ट्री मुत्सद्दियोंमें अिस पत्रिकाने खासा असर किया हो और यह वहम मजबूत बनाया हो कि बापू कहीं भी नहीं झुकेंगे, तो कोअी आश्चर्य नहीं।

शामको पूना म्युनिसिपेलिटीके अेक मांग जातिके सदस्य सोनावणे आये। अुनके साथ दूसरे स्पृश्य सदस्य भी थे। सोनावणे कहते थे: "हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है। हमें तो आपका चरणस्पर्श मिले तो काफी है।"

बापू बोले: "मगर आपको हम मन्दिरोंमें खींच कर ले जायँ, तो भी आप अिनकार करेंगे?"

वे बोले: "नहीं, तब तो आयेंगे।"

अुन्हें यह डर हो गया था कि पूना-करारके अनुसार महार ही सब सीटें ले जायँगे। बापूने यह डर दूर करनेका प्रयत्न किया। अिस बातसे ही अुनके आनन्दका पार नहीं था कि वे बापूके पास आ सके।

बादमें लेडी विट्ठलदास आअीं। वे अपनी देरानीके साथ राजभोजके विद्यार्थी भवनमें हो आअी थीं। जहाँ अेक समय अुन्हें जानेमें बड़ा संकोच होता था, वहाँ अब निःसंकोच जाती हैं और नहाती नहीं। अपने बापट शास्त्रीकी भी बात की। ये बहन कहती थीं कि अिसे भी अिस जमानेकी अेक खूबी ही कहना चाहिये कि वे यह स्वीकार करते हैं कि अुन्होंने किसीको भी अछूत मानना छोड़ दिया है।

११-१२-'३२

प्रज्ञानेश्वर यतिने लिखा: "यह दुःखद है कि आप किसी भी बातमें समझौता नहीं करते और न मान कर अुपवास तो खड़ा ही रखते हैं। आपसे कैसे काम लिया जाय?"

अिन्हें जवाब दिया:

"आपके स्पष्ट पत्रके लिअे धन्यवाद। मेरे लिअे बहुत चिन्ता न कीजिये। मैं चालीस वर्षसे लगातार सेवाकार्य कर रहा हूँ। अिस अरसेमें दूसरोंके लिअे अुपवास करनेके आप मुश्किलसे बारह प्रसंग बता सकेंगे। मेरी मान्यताके अनुसार अुपवास करनेकी योग्यता जबसे मुझमें आअी, अुसके बादसे ही यह चीज़ मेरे ज़ीवनमें आअी है। कोअी जल्दबाजीमें तो अुपवास कर ही नहीं सकता। और मेरा दावा तो आप जानते ही हैं। मैं अपने आप कोअी अुपवास नहीं करता, अन्तर्यामीकी आवाज़के अनुसार ही करता हूँ। यह आवाज़ हमेशा अीश्वरकी होती है या फिर शैतानकी, यह कहना आसान नहीं है। अितने पर भी यह कहा जा सकता है कि यह अन्तर्यामीकी आवाज़ होनेका अपना दावा मैंने सच्चा साबित किया है। मेरे और श्री मातेके बीच हुअी बातचीत जैसी अुन्होंने

अमुक काम दो, बल्कि अमुक धर्मसे विमुख न रहनेका था। अिसमें अिससे ज्यादा मैं नहीं जाअूँगा। मगर अप्पा साहबके या अपने क़दमके अुचित होनेके बारेमें मुझे अेक क्षणके लिअे भी शंका नहीं हुअी थी और यह क़दम अुठा लेनेके बाद भी कोअी शंका नहीं है।

"अब मन्दिर-प्रवेशके बारेमें। ट्रस्टी अपनी मर्यादाके बाहर जाकर कुछ भी करें, तो वह गैरक़ानूनी ही होगा। यह आन्दोलन ट्रस्टियोंसे अेक भी गैरकानूनी क़दम अुठवानेके लिअे नहीं है। परन्तु वे जिस समाजके ट्रस्टी हैं, वह समाज चाहे तो क़ानूनकी अनुकूलता करा लेना अुनका धर्म हो जाता है। अगर समाज प्रतिकूल हो, तो वहाँ अुपवास करना मुँडचिरेपनका रूप धारण कर लेता है, और यह साबित करनेके लिअे कि यह अुपवास अैसा न होगा मत लिये जा रहे हैं। अगर बहुमत प्रवेशके विरुद्ध होगा, तो अिस निमित्तसे अुपवास नहीं होगा। अैसी स्थितिमें दूसरे सूक्ष्म धर्म पैदा होंगे। अिसकी चर्चा अिस समय गैरज़रूरी है। सम्प्रदायका मंदिर हो, तो यह आग्रह नहीं हो सकता कि अुसमें दूसरे सम्प्रदायके लोग जा सकें, परन्तु अुसी सम्प्रदायके हरिजनोंको अुस मन्दिरमें दाखिल होनेका हक़ होना चाहिये। गुरुवायुरके बारेमें अैसा सवाल अुठता ही नहीं। अुपवासकी सारी कल्पना आध्यात्मिक है। अिसके बिना हमारी जड़ता दूर नहीं हो सकती। हमेशा जब-जब धर्ममें जड़ता आअी है, तब-तब तीव्र भावनावाले लोगोंने प्रचण्ड तपस्या की है। अुसके बिना धर्मजाग्रति हो ही नहीं सकती। अगर कोअी गायब होकर जंगलमें बैठकर अनशन व्रत ले, तो अुसके विरुद्ध कोअी बात कहनेकी नहीं रहती। कोअी मोहके वश होकर अैसा क़दम अुठाये, तो अुसकी गिनती मूर्खतामें होगी यह दूसरी बात है। परन्तु कोअी ज्ञानपूर्वक अैसा करे, तो वह क़दम निरपवाद कहलायेगा। मेरे जैसेके लिअे अिससे हलका क़दम अभी तो अुचित ही होगा। 'हलका' अिसलिअे कि मेरा अनशन बिना शर्त नहीं है। अमुक शर्त पूरी हो जाय, तो यह अुपवास रुक जायगा। शर्त लगानेमें विवेक और मर्यादा होनी चाहिये और मैं मानता हूँ कि वह यहाँ पूरी तरह है। जिस हद तक शर्त है, अुस हद तक लोगोंको कम आघात होता है। लोगोंके साथ मेरा सम्बन्ध कौटुम्बिक जैसा बन गया है। मैंने मुद्दतसे अपनेको अिसी तरह बनाया है, और यह मैंने अनुभवसे देखा है कि कौटुम्बिक संबंधमें अमुक मात्रामें अुपवासके लिअे स्थान ज़रूर है। अिसमें भी मर्यादा तो होनी ही चाहिये। छोटेसे कुटुम्बमें प्रयोग करनेके बाद मैं आगे बढ़ा हूँ। यह तो मैंने बुद्धिके द्वारा समझानेकी कोशिश की, मगर सच बात यह है कि अैसा अेक भी अुपवास मैंने बुद्धिके वश होकर नहीं किया, परन्तु हृदयकी आवाज़को मानकर किया है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अिसमें कोअी भूल नहीं हो

अमुक काम दो, बल्कि अमुक धर्मसे विमुख न रहनेका था। अिसमें अिससे ज्यादा मैं नहीं जाअूँगा। मगर अप्पा साहबके या अपने क़दमके अुचित होनेके बारेमें मुझे अेक क्षणके लिअे भी शंका नहीं हुअी थी और यह क़दम अुठा लेनेके बाद भी कोअी शंका नहीं है।

"अब मन्दिर-प्रवेशके बारेमें। ट्रस्टी अपनी मर्यादाके बाहर जाकर कुछ भी करें, तो वह ग़ैरक़ानूनी ही होगा। यह आन्दोलन ट्रस्टियोंसे अेक भी ग़ैरकानूनी क़दम अुठवानेके लिअे नहीं है। परन्तु वे जिस समाजके ट्रस्टी हैं, वह समाज चाहे तो क़ानूनकी अनुकूलता करा लेना अुनका धर्म हो जाता है। अगर समाज प्रतिकूल हो, तो वहाँ अुपवास करना मुँडचिरेपनका रूप धारण कर लेता है, और यह साबित करनेके लिअे कि यह अुपवास अैसा न होगा मत लिये जा रहे हैं। अगर बहुमत प्रवेशके विरुद्ध होगा, तो अिस निमित्तसे अुपवास नहीं होगा। अैसी स्थितिमें दूसरे सूक्ष्म धर्म पैदा होंगे। अिसकी चर्चा अिस समय ग़ैरज़रूरी है। सम्प्रदायका मंदिर हो, तो यह आग्रह नहीं हो सकता कि अुसमें दूसरे सम्प्रदायके लोग जा सकें, परन्तु अुसी सम्प्रदायके हरिजनोंको अुस मन्दिरमें दाखिल होनेका हक़ होना चाहिये। गुरुवायुरके बारेमें अैसा सवाल अुठता ही नहीं। अुपवासकी सारी कल्पना आध्यात्मिक है। अिसके बिना हमारी जड़ता दूर नहीं हो सकती। हमेशा जब-जब धर्ममें जड़ता आअी है, तब-तब तीव्र भावनावाले लोगोंने प्रचण्ड तपस्या की है। अुसके बिना धर्मजाग्रति हो ही नहीं सकती। अगर कोअी गायब होकर जंगलमें बैठकर अनशन व्रत ले, तो अुसके विरुद्ध कोअी बात कहनेकी नहीं रहती। कोअी मोहके वश होकर अैसा क़दम अुठाये, तो अुसकी गिनती मूर्खतामें होगी यह दूसरी बात है। परन्तु कोअी ज्ञानपूर्वक अैसा करे, तो वह क़दम निरपवाद कहलायेगा। मेरे जैसेके लिअे अिससे हलका क़दम अभी तो अुचित ही होगा। 'हलका' अिसलिअे कि मेरा अनशन बिना शर्त नहीं है। अमुक शर्त पूरी हो जाय, तो यह अुपवास रुक जायगा। शर्त लगानेमें विवेक और मर्यादा होनी चाहिये और मैं मानता हूँ कि वह यहाँ पूरी तरह है। जिस हद तक शर्त है, अुस हद तक लोगोंको कम आघात होता है। लोगोंके साथ मेरा सम्बन्ध कौटुम्बिक जैसा बन गया है। मैंने मुद्दतसे अपनेको अिसी तरह बनाया है, और यह मैंने अनुभवसे देखा है कि कौटुम्बिक संबंधमें अमुक मात्रामें अुपवासके लिअे स्थान ज़रूर है। अिसमें भी मर्यादा तो होनी ही चाहिये। छोटेसे कुटुम्बमें प्रयोग करनेके बाद मैं आगे बढ़ा हूँ। यह तो मैंने बुद्धिके द्वारा समझानेकी कोशिश की, मगर सच बात यह है कि अैसा अेक भी अुपवास मैंने बुद्धिके वश होकर नहीं किया, परन्तु हृदयकी आवाज़को मानकर किया है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अिसमें कोअी भूल नहीं हो

और भी त्रुटियाँ हैं। लेकिन अितनी काफ़ी होनी चाहियें। मेरी टीकाका हेतु तुमको हतोत्साह करनेका कभी नहीं है, भविष्यमें सावधान रहनेको बतानेका है। अपने कार्यमें हमको आत्मविश्वास होना चाहिये। और जिसको आत्मविश्वास है, वह प्रस्तावना न ढूँढ़े; और जिसको नहीं है, वह अेकके तरफसे लेकर सन्तुष्ट रहे।"

कमलनयनने पूछा: "आत्मा निर्लेप है, अक्लेद्य और अदाह्य है; तो फिर अुसे अच्छे-बुरे कर्मोंका लेप कैसे लगता है?"

अुसे जवाब:

"आत्माके विषयमें जो कुछ कहा गया है, वह विशुद्ध आत्माके बारेमें है। जैसे कोअी पानीके गुणोंका वर्णन करे, तो विशुद्ध पानीका ही किया जाता है। मैले पानीका वर्णन अेकसा हो ही नहीं सकता। पानीको ज्ञान हो, तो पानीका हर खड्डा तेरे जैसा ही सवाल पूछे। अुनमेंसे कोअी शुद्ध पानीके गुण वर्णन करके अपने सब साथियोंसे शुद्ध बननेकी बिनती करे। ठीक यही काम शुद्धात्माको जाननेवाले श्रीकृष्णने किया है। आत्माके गुणोंको जानकर अुसके जैसे बननेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर तू यह पूछे कि आत्मा अशुद्ध कैसे हो जाती है, तो वह मैं नहीं जानता। वह जाननेकी ज़रूरत भी नहीं। अशुद्धि है, शुद्धिके गुण कैसे हैं और अशुद्धि कैसे मिट सकती है, अितना हम जानते हैं। यह हमारे कामके लिअे काफ़ी होना चाहिये। तेरे प्रश्नका जवाब न मिला हो, तो फिर पूछना।"

पूनाके श्री दिवेकर और दूसरे शास्त्रियोंको:

"यदि अस्पृश्य यह कहते हैं कि हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है, तो यह हमारे लिअे दुःख और शर्मकी बात है, खुश होनेकी बात नहीं। मनुष्य मात्रमें थोड़ी-बहुत भक्ति रहती है, अिसलिअे वह किसी न-किसी रूपमें भगवानकी अुपासना कर लेता है। अिन लोगोंको हमने समझाया है कि तुम नहीं जा सकते। अिन्हें डरा दिया है कि फलाँ जगह अछूतोंने प्रवेश किया अिसलिअे पिट गये। अिसलिअे वे डरते हैं। हमारा कर्तव्य है कि अुन्हें खींच लायें। मगर अैसा न करें तो मन्दिर तो खोल डालें, फिर भले ही वे आयें या न आयें। सनातनियोंकी आँखें बन्द हो गअी हैं। अितना विरोध कर रहे हैं अिसके कारण जिसे मन्दिरमें नहीं जाना है अुसे भी जानेकी अिच्छा होगी। वह भी आग्रह करेगा, हठ करेगा, अधिकार जतायेगा, जो प्रश्न राजनैतिक नहीं है अुसे राजनैतिक प्रश्न बनायेगा और अुसका प्रतिपादन करनेके लिअे बलात्कार करेगा। मैं हिन्दू धर्मको अिससे बचा लेना चाहता हूँ। अिसीलिअे कहता हूँ कि आज जितने मन्दिर खुल सकते हों, अुतने खोल डालने चाहियें और फिर शिक्षा वगैराके लिअे अुनके बीचमें जाना चाहिये। अितना भी न किया तो हमारे

और भी त्रुटियाँ हैं। लेकिन अितनी काफ़ी होनी चाहियें। मेरी टीकाका हेतु तुमको हतोत्साह करनेका कभी नहीं है, भविष्यमें सावधान रहनेको बतानेका है। अपने कार्यमें हमको आत्मविश्वास होना चाहिये। और जिसको आत्मविश्वास है, वह प्रस्तावना न ढूँढ़े; और जिसको नहीं है, वह अेकके तरफसे लेकर सन्तुष्ट रहे।"

कमलनयनने पूछा: "आत्मा निर्लेप है, अक्लेद्य और अदाह्य है; तो फिर अुसे अच्छे-बुरे कर्मोंका लेप कैसे लगता है?"

अुसे जवाब:

"आत्माके विषयमें जो कुछ कहा गया है, वह विशुद्ध आत्माके बारेमें है। जैसे कोअी पानीके गुणोंका वर्णन करे, तो विशुद्ध पानीका ही किया जाता है। मैले पानीका वर्णन अेकसा हो ही नहीं सकता। पानीको ज्ञान हो, तो पानीका हर खड्डा तेरे जैसा ही सवाल पूछे। अुनमेंसे कोअी शुद्ध पानीके गुण वर्णन करके अपने सब साथियोंसे शुद्ध बननेकी बिनती करे। ठीक यही काम शुद्धात्माको जाननेवाले श्रीकृष्णने किया है। आत्माके गुणोंको जानकर अुसके जैसे बननेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर तू यह पूछे कि आत्मा अशुद्ध कैसे हो जाती है, तो वह मैं नहीं जानता। वह जाननेकी ज़रूरत भी नहीं। अशुद्धि है, शुद्धिके गुण कैसे हैं और अशुद्धि कैसे मिट सकती है, अितना हम जानते हैं। यह हमारे कामके लिअे काफ़ी होना चाहिये। तेरे प्रश्नका जवाब न मिला हो, तो फिर पूछना।"

पूनाके श्री दिवेकर और दूसरे शास्त्रियोंको:

"यदि अस्पृश्य यह कहते हैं कि हमें मन्दिरोंमें नहीं जाना है, तो यह हमारे लिअे दुःख और शर्मकी बात है, खुश होनेकी बात नहीं। मनुष्य मात्रमें थोड़ी-बहुत भक्ति रहती है, अिसलिअे वह किसी न-किसी रूपमें भगवानकी अुपासना कर लेता है। अिन लोगोंको हमने समझाया है कि तुम नहीं जा सकते। अिन्हें डरा दिया है कि फलाँ जगह अछूतोंने प्रवेश किया अिसलिअे पिट गये। अिसलिअे वे डरते हैं। हमारा कर्तव्य है कि अुन्हें खींच लायें। मगर अैसा न करें तो मन्दिर तो खोल डालें, फिर भले ही वे आयें या न आयें। सनातनियोंकी आँखें बन्द हो गअी हैं। अितना विरोध कर रहे हैं अिसके कारण जिसे मन्दिरमें नहीं जाना है अुसे भी जानेकी अिच्छा होगी। वह भी आग्रह करेगा, हठ करेगा, अधिकार जतायेगा, जो प्रश्न राजनैतिक नहीं है अुसे राजनैतिक प्रश्न बनायेगा और अुसका प्रतिपादन करनेके लिअे बलात्कार करेगा। मैं हिन्दू धर्मको अिससे बचा लेना चाहता हूँ। अिसीलिअे कहता हूँ कि आज जितने मन्दिर खुल सकते हों, अुतने खोल डालने चाहियें और फिर शिक्षा वगैराके लिअे अुनके बीचमें जाना चाहिये। अितना भी न किया तो हमारे

बापू — मैंने जवाब दे दिया है । जब अस्पृश्यता शुरू हुअी, तब अुसके लिअे शायद कोअी कारण रहा होगा । आज तो यह निरी मूर्खता है, मानवताके हर अेक सिद्धान्तके विरुद्ध है ।

दिवेकर शास्त्री — हम यही कहते हैं । नीतितत्त्व, तत्त्वज्ञान और आचार — ये धर्मके तीन अंग हैं । पहले दो सनातन हैं, मगर आचार कालानुसार बदलता है । अिसीलिअे हम यह कहते हैं कि यह आचार आज नहीं चल सकता । यानी युगह्रासानुरूप धर्मकी ज़रूरत है । लेकिन हमारे सनातनी शास्त्री तो श्रुति, स्मृति, पुराण वग़ैरा तमामको अपौरुषेय ही ठहराते हैं । वे यह मानते हैं कि वैदिक विधि कह दी कि अुसका फल आना ही चाहिये । हमारे ये जड़ लोग कहते हैं कि तीन बार मिट्टीसे सफाअी करनी है, तब दो बार लगाअी तो पाप लगेगा और चार बार मिट्टी लगाअी तो भी पाप लगेगा ! नरकमें जाना होगा ! भिन्न-भिन्न समयोंकी स्मृतियाँ अपौरुषेय कैसे हो सकती हैं ? 'श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः' अिस चीज़का वे रहस्य ही नहीं समझते ।

श्रीधर शास्त्री पाठकने वेदोंको पढ़कर बड़ा बढ़िया अर्थ निकाला है । वे कहते हैं कि देवालय-प्रवेश धर्मका प्रश्न ही नहीं है । क्योंकि वेद-अुपनिषद् कालमें तो मन्दिर थे ही नहीं । मन्दिर तो आजकी अुत्पत्ति हैं, अिसलिअे यह सिर्फ़ देशकालका ही प्रश्न है । यह दृष्टि बढ़िया मिली — अितने बूढ़े शास्त्रीसे ।

बापू — सनातनियोंके विरोधसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है । यह सिर्फ़ क्षणिक है, क्योंकि अिसमें नीति नहीं, धर्म नहीं और व्यवहार नहीं; अिसलिअे अिसका अपने आप नाश होगा । ये लोग ज़रूर अपने आप समझ जायँगे कि लाखों लोगोंमें जो जाग्रति आअी है वह अच्छी है ।

स० — आज आप वर्णसंकर चाहते हैं ?

बापू — आज वर्ण कहाँ हैं ? आश्रम कहाँ हैं ?

'टाअिम्स' का मेक्रूरे आया । सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक मामलोंमें अुपवासके तरीक़ेकी निन्दा करनेवाले प्रस्तावकी बात कही । यह कहा कि मन्दिर-प्रवेशका प्रस्ताव ३३४ के विरुद्ध २७९ मतसे पास हुआ ।

बापू — मुझे अभी कोअी खास कहने जैसी बात नहीं लगती । मेरा खयाल है, कुओंकी बात अभी रहने दें । मैं कुछ कह सकता हूँ तो अुपवासके विषयमें; अिस बारेमें आप पूछिये ।

स० — अिस अुपवाससे आप समाज पर अपने विचार लाद देते हैं, अिस आक्षेपके बारेमें आप क्या कहते हैं ?

बापू — अिसका जवाब देनेमें मेरे अुपवासके बारेमें पास हुअे प्रस्तावकी जो बात आपने कही, अुसका जवाब भी आ जायगा । श्री जमनादास मेहताने

बापू — मैंने जवाब दे दिया है । जब अस्पृश्यता शुरू हुअी, तब अुसके लिअे शायद कोअी कारण रहा होगा । आज तो यह निरी मूर्खता है, मानवताके हर अेक सिद्धान्तके विरुद्ध है ।

दिवेकर शास्त्री — हम यही कहते हैं । नीतितत्त्व, तत्त्वज्ञान और आचार — ये धर्मके तीन अंग हैं । पहले दो सनातन हैं, मगर आचार कालानुसार बदलता है । अिसीलिअे हम यह कहते हैं कि यह आचार आज नहीं चल सकता । यानी युगह्रासानुरूप धर्मकी ज़रूरत है । लेकिन हमारे सनातनी शास्त्री तो श्रुति, स्मृति, पुराण वग़ैरा तमामको अपौरुषेय ही ठहराते हैं । वे यह मानते हैं कि वैदिक विधि कह दी कि अुसका फल आना ही चाहिये । हमारे ये जड़ लोग कहते हैं कि तीन बार मिट्टीसे सफ़ाअी करनी है, तब दो बार लगाअी तो पाप लगेगा और चार बार मिट्टी लगाअी तो भी पाप लगेगा ! नरकमें जाना होगा ! भिन्न-भिन्न समयोंकी स्मृतियाँ अपौरुषेय कैसे हो सकती हैं ? 'श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः' अिस चीज़का वे रहस्य ही नहीं समझते ।

श्रीधर शास्त्री पाठकने वेदोंको पढ़कर बड़ा बढ़िया अर्थ निकाला है । वे कहते हैं कि देवालय-प्रवेश धर्मका प्रश्न ही नहीं है । क्योंकि वेद-अुपनिषद् कालमें तो मन्दिर थे ही नहीं । मन्दिर तो आजकी अुत्पत्ति हैं, अिसलिअे यह सिर्फ़ देशकालका ही प्रश्न है । यह दृष्टि बढ़िया मिली — अितने बूढ़े शास्त्रीसे ।

बापू — सनातनियोंके विरोधसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है । यह सिर्फ़ क्षणिक है, क्योंकि अिसमें नीति नहीं, धर्म नहीं और व्यवहार नहीं; अिसलिअे अिसका अपने आप नाश होगा । ये लोग ज़रूर अपने आप समझ जायँगे कि लाखों लोगोंमें जो जाग्रति आअी है वह अच्छी है ।

स० — आज आप वर्णसंकर चाहते हैं ?

बापू — आज वर्ण कहाँ हैं ? आश्रम कहाँ हैं ?

'टाअिम्स' का मेक्रे आया । सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक मामलोंमें अुपवासके तरीक़ेकी निन्दा करनेवाले प्रस्तावकी बात कही । यह कहा कि मन्दिर-प्रवेशका प्रस्ताव ३३४ के विरुद्ध २७९ मतसे पास हुआ ।

बापू — मुझे अभी कोअी खास कहने जैसी बात नहीं लगती । मेरा खयाल है, कुओंकी बात अभी रहने दें । मैं कुछ कह सकता हूँ तो अुपवासके विषयमें; अिस बारेमें आप पूछिये ।

स० — अिस अुपवाससे आप समाज पर अपने विचार लाद देते हैं, अिस आक्षेपके बारेमें आप क्या कहते हैं ?

बापू — अिसका जवाब देनेमें मेरे अुपवासके बारेमें पास हुअे प्रस्तावकी जो बात आपने कही, अुसका जवाब भी आ जायगा । श्री जमनादास मेहताने

अितना ही कहूँगा कि केलप्पनको या मुझे अपने अन्तर्यामीकी प्रेरणासे किये हुअे निश्चयसे कोअी डिगा नहीं सकेगा।

श्री मेहताने लोगोंका पहलेसे सावधान रहनेके लिअे जो ध्यान खींचा है, अुसकी मैं क़दर करता हूँ।

मुझे तो आश्चर्य और दुःख अिस बातका होता है कि जो मतगणनाके काममें लगे हैं, अुन पर ज़ामोरिन अिस तरहके विचित्र आक्षेप किसलिअे करते हैं? मैं तो ज़ामोरिनको बहुत सज्जन मानता हूँ। वे जानते हैं कि माधवन नायर, जो मतगणना समितिके अध्यक्ष हैं, सारे केरलमें सम्मान प्राप्त अेक प्रसिद्ध वकील हैं। सारी समितिको राजाजी मदद दे रहे हैं। वे वहाँ रहकर सब कामोंकी देखरेख कर रहे हैं। ये आदमी अैसे नहीं हैं कि ज़रा भी झूठ चलने दें। कार्यकर्ताओंने आपत्तिजनक ढंग अख्तियार किये हों, तो अुनके अुदाहरण अिन लोगोंके ध्यानमें लाना ज़ामोरिनका फ़र्ज़ है। यह प्रश्न शुद्ध नैतिक और धार्मिक है। अुसमें पक्षपात या राग-द्वेषकी ज़रा भी गुंजाअिश नहीं हो सकती। सनातनी और सुधारक मिलजुलकर काम करेंगे, तो सत्य सामने आ जायगा। मैं फिर अिस बातका आश्वासन देता हूँ कि लोकमतके मामलेमें मैंने भूल की है अैसा मालूम होते ही मैं अुपवासकी बात छोड़ दूँगा। मैं सिर्फ़ सत्यकी ही पूजा करना चाहता हूँ। अिसके सिवाय मेरा और कोअी अुद्देश्य नहीं है।

अेक स्वदेशी कपड़ेके गुजराती व्यापारी शास्त्रीके साथ:

स० — कलह पैदा करे अैसा मन्दिर-प्रवेशका सवाल क्यों अुठाया है? गुरुवायुरके स्वामित्वके बारेमें अितनी धांधली क्यों मचाअी है? आपने तो कहा है कि मैं शास्त्री नहीं हूँ, तब आपने शास्त्रियोंकी समिति बुलाकर अुनका निर्णय लेकर अुपवासकी बात ज़ाहिर की होती तो अच्छा नहीं होता?

बापू — धारासभाओंमें जगहें देनेका मामला हाथमें लिया था, तब मन्दिरोंकी बात भी थी। मैंने तो समझौता करनेवालोंसे कहा था कि आज आप अस्पृश्यता दूर करनेकी प्रतिज्ञा कर रहे हैं। अिस प्रकार अुसी दिन अिस चीज़की बुनियाद पड़ी। अिसी अरसेमें केलप्पनने आमरण अनशन किया। वह अुसकी भूल थी। मैंने अुसे अुपवास बन्द करनेको कहा। अुसको वचन दिया। अुसका प्रयत्न गुरुवायुरके लिअे था। मैं दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको कैसे मिलाअूँ? मुझसे दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको अिसीके साथ मिलानेकी माँग की जाती है। और अुपवासकी भी माँग कर रहे हैं। मैं अुनसे कहता हूँ कि तुम शान्त रहो, यह अेक चीज़ पूरी हो जाय, तो फिर दूसरी देखेंगे। यह काम क्रमबद्ध हुआ है। धर्म जैसे मार्ग बताता जाय, वैसे काम करते जाना चाहिये।

अितना ही कहूँगा कि केलप्पनको या मुझे अपने अन्तर्यामीकी प्रेरणासे किये हुअे निश्चयसे कोअी डिगा नहीं सकेगा।

श्री मेहताने लोगोंका पहलेसे सावधान रहनेके लिअे जो ध्यान खींचा है, अुसकी मैं क़दर करता हूँ।

मुझे तो आश्चर्य और दुःख अिस बातका होता है कि जो मतगणनाके काममें लगे हैं, अुन पर ज़ामोरिन अिस तरहके विचित्र आक्षेप किसलिअे करते हैं? मैं तो ज़ामोरिनको बहुत सज्जन मानता हूँ। वे जानते हैं कि माधवन नायर, जो मतगणना समितिके अध्यक्ष हैं, सारे केरलमें सम्मान प्राप्त अेक प्रसिद्ध वकील हैं। सारी समितिको राजाजी मदद दे रहे हैं। वे वहाँ रहकर सब कामोंकी देखरेख कर रहे हैं। ये आदमी अैसे नहीं हैं कि ज़रा भी झूठ चलने दें। कार्यकर्ताओंने आपत्तिजनक ढंग अख्तियार किये हों, तो अुनके अुदाहरण अिन लोगोंके ध्यानमें लाना ज़ामोरिनका फ़र्ज़ है। यह प्रश्न शुद्ध नैतिक और धार्मिक है। अुसमें पक्षपात या राग-द्वेषकी ज़रा भी गुंजािअश नहीं हो सकती। सनातनी और सुधारक मिलजुलकर काम करेंगे, तो सत्य सामने आ जायगा। मैं फिर अिस बातका आश्वासन देता हूँ कि लोकमतके मामलेमें मैंने भूल की है अैसा मालूम होते ही मैं अुपवासकी बात छोड़ दूँगा। मैं सिर्फ़ सत्यकी ही पूजा करना चाहता हूँ। अिसके सिवाय मेरा और कोअी अुद्देश्य नहीं है।

अेक स्वदेशी कपड़ेके गुजराती व्यापारी शास्त्रीके साथ:

स० — कलह पैदा करे अैसा मन्दिर-प्रवेशका सवाल क्यों अुठाया है? गुरुवायुरके स्वामित्वके बारेमें अितनी धांधली क्यों मचाअी है? आपने तो कहा है कि मैं शास्त्री नहीं हूँ, तब आपने शास्त्रियोंकी समिति बुलाकर अुनका निर्णय लेकर अुपवासकी बात ज़ाहिर की होती तो अच्छा नहीं होता?

बापू — धारासभाओंमें जगहें देनेका मामला हाथमें लिया था, तब मन्दिरोंकी बात भी थी। मैंने तो समझौता करनेवालोंसे कहा था कि आज आप अस्पृश्यता दूर करनेकी प्रतिज्ञा कर रहे हैं। अिस प्रकार अुसी दिन अिस चीज़की बुनियाद पड़ी। अिसी अरसेमें केलप्पनने आमरण अनशन किया। वह अुसकी भूल थी। मैंने अुसे अुपवास बन्द करनेको कहा। अुसको वचन दिया। अुसका प्रयत्न गुरुवायुरके लिअे था। मैं दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको कैसे मिलाअूँ? मुझसे दूसरे मन्दिरोंके प्रश्नको अिसीके साथ मिलानेकी माँग की जाती है। और अुपवासकी भी माँग कर रहे हैं। मैं अुनसे कहता हूँ कि तुम शान्त रहो, यह अेक चीज़ पूरी हो जाय, तो फिर दूसरी देखेंगे। यह काम क्रमबद्ध हुआ है। धर्म जैसे मार्ग बताता जाय, वैसे काम करते जाना चाहिये।

शास्त्री — क्या अन्त्यजोंके लिअे गुरुवायुरके द्वार कभी भी खुले हुअे थे?

बापू — अिसका अितिहास किसीके पास नहीं है। अिस ज़मानेके आदमी ज़रूर कहते हैं कि अुसके द्वार अछूतोंके लिअे नहीं खुले। अिस मन्दिरके आरंभ कालकी बात हम लोग नहीं जानते। अिसीलिअे मैंने तो साधारण सिद्धान्तका आश्रय लेकर कहा है कि अगर मन्दिर हिन्दू समाजके लिअे है, तो वह अछूतोंके लिअे खुला होना चाहिये।

शास्त्री — तो वेदकालसे मन्दिरोंकी जो व्यवस्था की गअी है, अुसे बदलवा कर मंदिर खुलवानेसे आप अन्त्यजोंका क्या भला करेंगे?

बापू — अुद्धार तो स्पृश्योंका है और अुनके द्वारा अन्त्यजोंका भी है। दोनोंका साथ-साथ अुद्धार है। अिसमें मुख्यामुख्यका निर्णय नहीं हो सकता। मान लीजिये कोअी आदमी मेरे बच्चोंको दबाकर बैठ गया है — या मान लीजिये कि मेरे बाप और काका लड़ते हैं। मुझे दोनोंमें मेल कराना है। कोअी मुझसे पूछे कि तुम किसका ज्यादा हित चाहते हो, तो मैं कहूँगा कि दोनोंका। बाप काका पर चढ़ बैठा है, तो वह अुसे छोड़ दे अिसीमें अुसका ज्यादा श्रेय है। जुल्म करनेवाला जुल्म छोड़े तो अुसका श्रेय होता है और दबाया हुआ अपने आप छूट जाता है।

शास्त्री — तो भी यह कहा जा सकता है कि आप मुख्यतः दबानेवालेका अुद्धार चाहते हैं।

बापू — आपको अैसा कहना हो तो कहिये।

शास्त्री — आपने अधर्मका निर्णय शास्त्रके आधार पर किया है! किस ग्रंथके आधार पर?

बापू — वेदसे लगाकर गीता तक।

शास्त्री — कोअी वचन बतायेंगे?

बापू — गीताकी ध्वनि ही यह है कि मनुष्य मनुष्यके बीचमें कोअी भेद नहीं है।

शास्त्री — ‘सर्वं खलु अिदं ब्रह्म’। मगर यह किस अवस्थामें?

बापू — यह मन्दिर धर्मसे स्थापित की हुअी चीज़ है। जहाँ धर्मकी प्रतिष्ठा है, वहाँ यह भेदभाव रखा जाय तो धर्मका खण्डन होता है।

शास्त्री — जिसने अिसे स्थापित किया, अुसे अिस अधर्मका भान नहीं होगा?

बापू — मैं यह कहता हूँ कि जिसने मन्दिर बनाया, अुसने गीताधर्मका अवलम्बन करके नहीं बनाया। यह तो मर्यादाका धर्म है।

शास्त्री — क्या अन्त्यजोंके लिअे गुरुवायुरके द्वार कभी भी खुले हुअे थे?

बापू — अिसका अितिहास किसीके पास नहीं है। अिस ज़मानेके आदमी ज़रूर कहते हैं कि अुसके द्वार अछूतोंके लिअे नहीं खुले। अिस मन्दिरके आरंभ कालकी बात हम लोग नहीं जानते। अिसीलिअे मैंने तो साधारण सिद्धान्तका आश्रय लेकर कहा है कि अगर मन्दिर हिन्दू समाजके लिअे है, तो वह अछूतोंके लिअे खुला होना चाहिये।

शास्त्री — तो वेदकालसे मन्दिरोंकी जो व्यवस्था की गअी है, अुसे बदलवा कर मंदिर खुलवानेसे आप अन्त्यजोंका क्या भला करेंगे?

बापू — अुद्धार तो स्पृश्योंका है और अुनके द्वारा अन्त्यजोंका भी है। दोनोंका साथ-साथ अुद्धार है। अिसमें मुख्यामुख्यका निर्णय नहीं हो सकता। मान लीजिये कोअी आदमी मेरे बच्चोंको दबाकर बैठ गया है — या मान लीजिये कि मेरे बाप और काका लड़ते हैं। मुझे दोनोंमें मेल कराना है। कोअी मुझसे पूछे कि तुम किसका ज्यादा हित चाहते हो, तो मैं कहूँगा कि दोनोंका। बाप काका पर चढ़ बैठा है, तो वह अुसे छोड़ दे अिसीमें अुसका ज्यादा श्रेय है। ज़ुल्म करनेवाला ज़ुल्म छोड़े तो अुसका श्रेय होता है और दबाया हुआ अपने आप छूट जाता है।

शास्त्री — तो भी यह कहा जा सकता है कि आप मुख्यतः दबानेवालेका अुद्धार चाहते हैं।

बापू — आपको अैसा कहना हो तो कहिये।

शास्त्री — आपने अधर्मका निर्णय शास्त्रके आधार पर किया है! किस ग्रंथके आधार पर?

बापू — वेदसे लगाकर गीता तक।

शास्त्री — कोअी वचन बतायेंगे?

बापू — गीताकी ध्वनि ही यह है कि मनुष्य मनुष्यके बीचमें कोअी भेद नहीं है।

शास्त्री — 'सर्वं खलु अिदं ब्रह्म'। मगर यह किस अवस्थामें?

बापू — यह मन्दिर धर्मसे स्थापित की हुअी चीज़ है। जहाँ धर्मकी प्रतिष्ठा है, वहाँ यह भेदभाव रखा जाय तो धर्मका खण्डन होता है।

शास्त्री — जिसने अिसे स्थापित किया, अुसे अिस अधर्मका भान नहीं होगा?

बापू — मैं यह कहता हूँ कि जिसने मन्दिर बनाया, अुसने गीताधर्मका अवलम्बन करके नहीं बनाया। यह तो मर्यादाका धर्म है।

शास्त्री — 'महात्मानस्तु मां पार्थ', 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः' अिसमें सब कुछ आ जाता है। विलायती–मिल–स्वदेशी और फिर खादी। रोज़ सौ गाँठें खादीकी बेचता था!

बापू — विट्ठलदाससे भी आगे बढ़ गये?

शास्त्री — हाँ। मगर व्यापार कैसे जाता रहा? मेरे बेटे मुसलमानोंके हाथमें सारा व्यापार चला गया। दिल्लीमें स्त्रियाँ हिन्दुओंकी दुकानोंपर पिकेटिंग करती हैं, मगर . . . की दुकानपर पिकेटिंग नहीं करतीं।

बापू — आपने तो गीताकी भद्दी प्रस्तावना दी। यह बात मुझसे सुनी भी नहीं जाती। आप जिस तरीकेसे बात करते हैं, वह भी गीताका खण्डन करता है। गीताकी पद्धतिका भी खण्डन होता है।

१३–१२–'३२

अप्पा साहबका पत्र कल शामको आया। सम्पूर्ण पत्र है। अिससे समझमें आया कि डोअिलने जो बातें कही थीं, वे सब झूठी थीं। अप्पाने अपनी अर्ज़ीमें सारा मामला अितनी नम्रतासे रखा था कि अुसे कोअी अिनकार कर ही नहीं सकता था। अिन लोगोंने ठेठ सितम्बर तक भंगीका काम किया था। यह भी अन्दर लिखा था और अर्ज़ीमें भी लिखा था। पत्र पढ़कर बापूको डोअिलके बारेमें बड़ी निराशा और दुःख हुआ। सवेरे खानगी और व्यक्तिगत पत्र में अुसे लिखा कि मुझे दुःख है कि आपने मुझे धोखा दिया। अगर आपने मुझे धोखा न दिया होता, तो मैंने कोअी और ही कदम अुठाया होता।

पत्र पहुँचा कि तुरन्त डोअिल साहब दौड़े-दौड़े आये। यह खानगी पत्र भी अुसने मेहता और भण्डारीको बताया और फिर कहा: "सचमुच ये लोग भंगीका काम करते थे यह मुझे पता नहीं। अर्ज़ीमें हो तो भी मुझे पता नहीं। अर्ज़ी मैंने अच्छी तरह पढ़ी न होगी।"

और अिस बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे स्पष्टीकरण और सही हालात क्या हैं, यह जाननेके लिअे पत्र लिखा। यह सब होनेपर भी वल्लभभाअीको और मुझे तो यही लगता है कि डोअिल साहब झूठ बोले थे।

बापू बोले: "कुछ कहा नहीं जा सकता, देखेंगे आगे ज्यादा पता लगेगा।"

शोलापुर मिलके आदमी आये। मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पाषाणकर वगैरा आ पहुँचे।

दफ्तरी (नागपुरसे) और पुरन्दरे आये। अिनके साथ बातें हुअीं। शास्त्रियोंके साथ कैसी बातें हुअीं सो समझाया।

शास्त्री — 'महात्मानस्तु मां पार्थ', 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः' अिसमें सब कुछ आ जाता है। विलायती–मिल–स्वदेशी और फिर खादी। रोज़ सौ गाँठें खादीकी बेचता था!

बापू — विट्ठलदाससे भी आगे बढ़ गये?

शास्त्री — हाँ। मगर व्यापार कैसे जाता रहा? मेरे बेटे मुसलमानोंके हाथमें सारा व्यापार चला गया। दिल्लीमें स्त्रियाँ हिन्दुओंकी दुकानोंपर पिकेटिंग करती हैं, मगर . . . की दुकानपर पिकेटिंग नहीं करतीं।

बापू — आपने तो गीताकी भद्दी प्रस्तावना दी। यह बात मुझसे सुनी भी नहीं जाती। आप जिस तरीकेसे बात करते हैं, वह भी गीताका खण्डन करता है। गीताकी पद्धतिका भी खण्डन होता है।

१३–१२–'३२

अप्पा साहबका पत्र कल शामको आया। सम्पूर्ण पत्र है। अिससे समझमें आया कि डोअिलने जो बातें कही थीं, वे सब झूठी थीं। अप्पाने अपनी अर्ज़ीमें सारा मामला अितनी नम्रतासे रखा था कि अुसे कोअी अिनकार कर ही नहीं सकता था। अिन लोगोंने ठेठ सितम्बर तक भंगीका काम किया था। यह भी अन्दर लिखा था और अर्ज़ीमें भी लिखा था। पत्र पढ़कर बापूको डोअिलके बारेमें बड़ी निराशा और दुःख हुआ। सवेरे खानगी और व्यक्तिगत पत्र में अुसे लिखा कि मुझे दुःख है कि आपने मुझे धोखा दिया। अगर आपने मुझे धोखा न दिया होता, तो मैंने कोअी और ही कदम अुठाया होता।

पत्र पहुँचा कि तुरन्त डोअिल साहब दौड़े-दौड़े आये। यह खानगी पत्र भी अुसने मेहता और भण्डारीको बताया और फिर कहा: "सचमुच ये लोग भंगीका काम करते थे यह मुझे पता नहीं। अर्ज़ीमें हो तो भी मुझे पता नहीं। अर्ज़ी मैंने अच्छी तरह पढ़ी न होगी।"

और अिस बारेमें सुपरिण्टेण्डेण्टसे स्पष्टीकरण और सही हालात क्या हैं, यह जाननेके लिअे पत्र लिखा। यह सब होनेपर भी वल्लभभाअीको और मुझे तो यही लगता है कि डोअिल साहब झूठ बोले थे।

बापू बोले: "कुछ कहा नहीं जा सकता, देखेंगे आगे ज्यादा पता लगेगा।"

शोलापुर मिलके आदमी आये। मन्दिर-प्रवेशके बारेमें पाषाणकर वगैरा आ पहुँचे।

दफ्तरी (नागपुरसे) और पुरन्दरे आये। अिनके साथ बातें हुअीं। शास्त्रियोंके साथ कैसी बातें हुअीं सो समझाया।

ही जिसका ध्यान लग जाता है, अुसे आसपासकी गपशप नहीं सुनाअी देती। किशोरलालभाअीके लिअे अेकान्तमें झोंपड़ी बनाअी थी, वह तुझे याद होगा। वहाँ तो मौन और शान्ति ही हो सकती है। दो तीन दिन अुन्हें रेलकी खड़खड़ाहट असह्य जान पड़ी। मैंने कानमें रूअीके फोये डालनेकी सूचना की थी। अुसके बाद दूसरे दिन सुबह जब मैं अुनके पास गया, तब मुझे कहा: 'आज मैंने न तो गाड़ीकी सीटी सुनी और न गाड़ीकी खड़खड़ाहट ही।' ये दोनों क्रियाअें तो होती ही थीं, मगर अुन्होंने अुसमेंसे ध्यान खींच लिया था, यानी मौन सध गया था। फोयोंकी मेरी सूचनाने अुन्हें जाग्रत कर दिया, क्योंकि स्वेच्छासे अेकान्त और मौन खोजनेवालेको अैसी कृत्रिम सहायता अरुचिकर ही होगी। जिसे मौन भा गया है, वह अन्तमें दिव्य संगीत सुनने लगता है और अुसमें अितना अधिक मग्न हो जाता है कि आसपास जो आवाज़ें होती हैं, वे अुसे सुनाअी नहीं देतीं।

"हमारा बिल्ली-परिवार तीनका है। रोज़ खानेके समय दोनों बार बिना घंटी और बिना बुलाये हाज़िर हो ही जाता है। जिस नियमसे ये तीनों साथी समयका पालन करते हैं अुसी तरह हम सब करने लगें, तो करोड़ों घंटे बच जायँ और हमने सीखा तो है ही कि समय ही धन है। बात भी बिलकुल सच है; अिसलिअे जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं, और बचाया हुआ धन कमाये हुअेके बराबर है। अिसलिअे जिन्हें समयका मूल्य नहीं, वे दुनियाका कितना धन खो देते होंगे, अिसका हिसाब कौन लगा सकता है?

"अस्पृश्यताके लिअे काम करनेवालोंकी संख्या कृत्रिम ढंगसे बढ़े, यह मैं बिलकुल ही नहीं चाहता। जिनके लिअे अपना कर्तव्य स्पष्ट है, वे अस्पृश्य सेवाका काम प्रिय होनेपर भी अपना कर्तव्य छोड़ें, यह मैं कभी चाहूँगा ही नहीं।"

अेक बंगाली बालकने पूछा कि "मैं पापी पाप कैसे धोअूँ? अपने पिताके सामने आपने अपराध मंजूर किया था, वैसे मंजूर करनेकी हिम्मत मुझमें कैसे आये? मैंने आपकी आत्मकथा पढ़ी है। मुझमें पाप स्वीकार करनेका बल किस तरह आये?"

अुसे लिखा:

"मुझे स्पष्ट लगता है कि तुम्हें अपनी सब बात अपने माँ-बापसे दिल खोलकर कह देनी चाहिये। शर्म तो तुम जिन पापोंको करना मंजूर करते हो, अुन पापोंके करनेमें थी। माँ-बापके सामने अुनका साफ़ अिक़रार करनेमें कोअी शर्म नहीं है। साफ़ दिलसे अैसा करोगे, तो तुम अपनेमें नअी शक्तिका संचार देखोगे और अैसा बल अनुभव करोगे जैसा तुममें पहले कभी नहीं था।"

ही जिसका ध्यान लग जाता है, अुसे आसपासकी गपशप नहीं सुनाअी देती। किशोरलालभाअीके लिअे अेकान्तमें झोंपड़ी बनाअी थी, वह तुझे याद होगा। वहाँ तो मौन और शान्ति ही हो सकती है। दो तीन दिन अुन्हें रेलकी खड़खड़ाहट असह्य जान पड़ी। मैंने कानमें रूअीके फोये डालनेकी सूचना की थी। अुसके बाद दूसरे दिन सुबह जब मैं अुनके पास गया, तब मुझे कहा: 'आज मैंने न तो गाड़ीकी सीटी सुनी और न गाड़ीकी खड़खड़ाहट ही।' ये दोनों क्रियाअें तो होती ही थीं, मगर अुन्होंने अुसमेंसे ध्यान खींच लिया था, यानी मौन सध गया था। फोयोंकी मेरी सूचनाने अुन्हें जाग्रत कर दिया, क्योंकि स्वेच्छासे अेकान्त और मौन खोजनेवालेको अैसी कृत्रिम सहायता अरुचिकर ही होगी। जिसे मौन भा गया है, वह अन्तमें दिव्य संगीत सुनने लगता है और अुसमें अितना अधिक मग्न हो जाता है कि आसपास जो आवाज़ें होती हैं, वे अुसे सुनाअी नहीं देतीं।

"हमारा बिल्ली-परिवार तीनका है। रोज़ खानेके समय दोनों बार बिना घंटी और बिना बुलाये हाज़िर हो ही जाता है। जिस नियमसे ये तीनों साथी समयका पालन करते हैं अुसी तरह हम सब करने लगें, तो करोड़ों घंटे बच जायँ और हमने सीखा तो है ही कि समय ही धन है। बात भी बिलकुल सच है; अिसलिअे जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं, और बचाया हुआ धन कमाये हुअेके बराबर है। अिसलिअे जिन्हें समयका मूल्य नहीं, वे दुनियाका कितना धन खो देते होंगे, अिसका हिसाब कौन लगा सकता है?

"अस्पृश्यताके लिअे काम करनेवालोंकी संख्या कृत्रिम ढंगसे बढ़े, यह मैं बिलकुल ही नहीं चाहता। जिनके लिअे अपना कर्त्तव्य स्पष्ट है, वे अस्पृश्य सेवाका काम प्रिय होनेपर भी अपना कर्तव्य छोड़ें, यह मैं कभी चाहूँगा ही नहीं।"

अेक बंगाली बालकने पूछा कि "मैं पापी पाप कैसे धोअूँ? अपने पिताके सामने आपने अपराध मंजूर किया था, वैसे मंजूर करनेकी हिम्मत मुझमें कैसे आये? मैंने आपकी आत्मकथा पढ़ी है। मुझमें पाप स्वीकार करनेका बल किस तरह आये?"

अुसे लिखा:

"मुझे स्पष्ट लगता है कि तुम्हें अपनी सब बात अपने माँ-बापसे दिल खोलकर कह देनी चाहिये। शर्म तो तुम जिन पापोंको करना मंजूर करते हो, अुन पापोंके करनेमें थी। माँ-बापके सामने अुनका साफ़ अिक़रार करनेमें कोअी शर्म नहीं है। साफ़ दिलसे अैसा करोगे, तो तुम अपनेमें नअी शक्तिका संचार देखोगे और अैसा बल अनुभव करोगे जैसा तुममें पहले कभी नहीं था।"

करता रहा हो, मगर अन्तिम क्षणमें अीश्वरका नाम ले ले, तो अुसके पाप जलकर खाक हो जाते हैं। यह बात मैं अक्षरशः मानता हूँ। ठेठ आखिरी घड़ीमें अीश्वर हृदयके भीतर घुस जाता है। मैं दैवीपनका दावा नहीं करता और मेरा यह भी दावा नहीं है कि मैं कभी भूल नहीं करता; फिर भी अिस मामलेमें तो लोगोंको जान लेना चाहिये कि मेरे विचारोंमें कोअी फेरबदल होना संभव नहीं है।

"सनातन धर्मकी रक्षा आप असत्यसे कभी नहीं कर सकेंगे।.... शास्त्री और बिहारके कितने ही दूसरे शास्त्री अैसी कोशिश कर रहे हैं।"

हरिभाअूने पानवाले अगासेकी बात कही। वह महार मंडलमें गोमांस-त्यागका प्रचार करता है।

बापू: "मेरी ज़िन्दगीमें कितनी ही चीज़ें अैसी हैं, जिनके बारेमें मैं किसीकी श्रेष्ठता स्वीकार करनेको तैयार नहीं हूँ। अैसी अेक बात है गायके प्रति मेरा पूज्यभाव। अिसलिअे मेरे सामने गोमांस-त्यागकी दलील देनेकी ज़रूरत नहीं हो सकती। लेकिन सही अिलाज जाननेवाले अेक अुत्तम वैद्यके नाते मैं कहता हूँ कि मांग और महार लोगोंके मन्दिर-प्रवेशके लिअे आप गोमांस-त्यागकी शर्त नहीं रख सकते। अेक बार मन्दिर खोल दो, फिर मैं अुनसे गोमांसका त्याग करनेको कहूँगा। क्या मैं आज गोमांसभक्षी ब्राह्मणोंको मन्दिरोंमें जानेसे रोकता हूँ? अिसी तरह मांग और महार लोगोंको नहीं रोक सकता। मगर जब मन्दिर सबके लिअे खुले हो जायँ, तो बादमें मैं अैसी घोषणा ज़रूर करूँ कि गोमांसभक्षी मन्दिरमें नहीं जा सकता।"

'मन्दिरमें जानेवालों' की व्याख्याके बारेमें राजगोपालाचार्यके पत्र परसे फिर चर्चा खड़ी हुअी। राजाजी कहते हैं कि जिनका मन्दिरोंमें जानेका अधिकार है, वही मन्दिरोंमें जानेवाले हुअे। बापू कहते हैं कि जिन्हें आस्था हो और जो समय-समय पर मन्दिरमें जाते हों वे हैं। राजाजीका पत्र आते ही बापूने तुरंत अपनी व्याख्या बतानेवाला तार दिया। बापूके हाथके नीचे काम करनेवालोंकी कैसी कमबख्ती है, अैसा क्षण भरके लिअे लगा और आह भरी।

श्री शिवप्रसाद गुप्तका बड़ा करुण पत्र आया: "जो चीज़ सदियोंसे किसीकी सम्पत्तिके रूपमें चली आ रही है, क्या वह अुससे ले ली जा सकती है? और वह बलात्कार न होगा? गोमांस खानेवाले आदमीको मन्दिरमें प्रवेश करनेसे रोकनेका हिन्दू समाजको हक़ नहीं है? आपको अपना शरीर छोड़ देनेका क्या अधिकार है? वह तो समर्पित ही है।" अित्यादि।

अिन्हें बापूने लिखा: "मन्दिर किसीकी निजी सम्पत्ति हो और अुसे खुलवानेकी अिच्छा की जाय, तो यह सही है कि वह बलात्कार ही है।"

करता रहा हो, मगर अन्तिम क्षणमें अीश्वरका नाम ले ले, तो अुसके पाप जलकर खाक हो जाते हैं। यह बात मैं अक्षरशः मानता हूँ। ठेठ आखिरी घड़ीमें अीश्वर हृदयके भीतर घुस जाता है। मैं दैवीपनका दावा नहीं करता और मेरा यह भी दावा नहीं है कि मैं कभी भूल नहीं करता; फिर भी अिस मामलेमें तो लोगोंको जान लेना चाहिये कि मेरे विचारोंमें कोअी फेरबदल होना संभव नहीं है।

"सनातन धर्मकी रक्षा आप असत्यसे कभी नहीं कर सकेंगे।.... शास्त्री और बिहारके कितने ही दूसरे शास्त्री अैसी कोशिश कर रहे हैं।"

हरिभाअूने पानवाले अगासेकी बात कही। वह महार मंडलमें गोमांस-त्यागका प्रचार करता है।

बापू: "मेरी ज़िन्दगीमें कितनी ही चीज़ें अैसी हैं, जिनके बारेमें मैं किसीकी श्रेष्ठता स्वीकार करनेको तैयार नहीं हूँ। अैसी अेक बात है गायके प्रति मेरा पूज्यभाव। अिसलिअे मेरे सामने गोमांस-त्यागकी दलील देनेकी ज़रूरत नहीं हो सकती। लेकिन सही अिलाज जाननेवाले अेक अुत्तम वैद्यके नाते मैं कहता हूँ कि मांग और महार लोगोंके मन्दिर-प्रवेशके लिअे आप गोमांस-त्यागकी शर्त नहीं रख सकते। अेक बार मन्दिर खोल दो, फिर मैं अुनसे गोमांसका त्याग करनेको कहूँगा। क्या मैं आज गोमांसभक्षी ब्राह्मणोंको मन्दिरोंमें जानेसे रोकता हूँ? अिसी तरह मांग और महार लोगोंको नहीं रोक सकता। मगर जब मन्दिर सबके लिअे खुले हो जायँ, तो बादमें मैं अैसी घोषणा ज़रूर करूँ कि गोमांसभक्षी मन्दिरमें नहीं जा सकता।"

'मन्दिरमें जानेवालों' की व्याख्याके बारेमें राजगोपालाचार्यके पत्र परसे फिर चर्चा खड़ी हुअी। राजाजी कहते हैं कि जिनका मन्दिरोंमें जानेका अधिकार है, वही मन्दिरोंमें जानेवाले हुअे। बापू कहते हैं कि जिन्हें आस्था हो और जो समय-समय पर मन्दिरमें जाते हों वे हैं। राजाजीका पत्र आते ही बापूने तुरंत अपनी व्याख्या बतानेवाला तार दिया। बापूके हाथके नीचे काम करनेवालोंकी कैसी कमबख्ती है, अैसा क्षण भरके लिअे लगा और आह भरी।

श्री शिवप्रसाद गुप्तका बड़ा करुण पत्र आया: "जो चीज़ सदियोंसे किसीकी सम्पत्तिके रूपमें चली आ रही है, क्या वह अुससे ले ली जा सकती है? और वह बलात्कार न होगा? गोमांस खानेवाले आदमीको मन्दिरमें प्रवेश करनेसे रोकनेका हिन्दू समाजको हक़ नहीं है? आपको अपना शरीर छोड़ देनेका क्या अधिकार है? वह तो समर्पित ही है।" अित्यादि।

अिन्हें बापूने लिखा: "मन्दिर किसीकी निजी सम्पत्ति हो और अुसे खुलवानेकी अिच्छा की जाय, तो यह सही है कि वह बलात्कार ही है।"

अिसपर बापूने बुद्धि और हृदयका योग साधनेवाली श्रद्धा पर विवेचन किया :

"हृदय बुद्धिका अनुसरण नहीं कर सकता या बुद्धिके साथ सहयोग नहीं कर सकता, अिसका क्या कारण? श्रद्धाका अभाव हो सकता है? यद्यपि मैं किसी आखिरी निर्णयपर नहीं पहुँचा हूँ, मगर मेरी राय अुसी दिशामें बनती जा रही है। अगर मुझमें प्रेम भरा है, तो मेरी बुद्धि कहती है कि मुझे साँपसे भागना नहीं चाहिये। फिर भी मुझमें अितनी श्रद्धा नहीं होगी, अिसीलिअे मैं साँपको अपने पास नहीं आने देता। अैसे अुदाहरण बहुत दिये जा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि तू अिस दिशामें खोज कर और हृदय और बुद्धिके बीचके विरोधके बारेमें जितनी मिसालें याद आयें अुनकी खोज करनेकी कोशिश कर। अैसा करनेसे तेरे लिअे बुद्धि और हृदयका मेल बैठाना संभव होगा। मैं जो अुपवास करता हूँ वह मेरे लिअे और दूसरे सबके लिअे अच्छा हो, तो फिर अुससे दिलको खुश होनेसे क्यों अिनकार करना चाहिये? मैं तन्दुरुस्त होता हूँ तो हृदयको आनन्द होता है, मगर किसी खास मामलेमें मेरे तन्दुरुस्त रहनेके बजाय मेरा अुपवास करना ज्यादा अच्छा हो सकता है। बुद्धि यही कहती है, फिर भी बुद्धिकी स्पष्ट गवाहीसे हृदय अिनकार करता है। क्या हृदय श्रद्धाके अभावमें अैसा करता है? या अिसमें आत्मवंचना होती है? वस्तुतः क्या बुद्धिने शरीरकी रक्षा करने लायक अुपवासकी आवश्यकता स्वीकार की ही नहीं है? मैंने यह प्रश्न कोअी निर्णय करनेका प्रयत्न किये बिना तेरे सामने रखा है। मैं चाहूँ, तो भी निर्णय करने लायक सामग्री मेरे पास नहीं हो सकती। कुछ नहीं तो अभीके लिअे तो मैं यह सवाल यहीं छोड़ देता हूँ।"

आम्बेडकरकी मंडली — चित्रे, 'जनता' के प्रधान संचालक वगैरा आये। अुनकी शिकायत :

मंडली — अस्पृश्यता-निवारण संघकी कार्रवाअी और कामकाजके विवरणमें डॉ० आम्बेडकरके पत्रका कोअी अुल्लेख नहीं है।

बापू — आपकी शिकायत यह होनी चाहिये कि अुसमें अुठाये हुअे प्रश्नका कोअी विचार नहीं किया गया।

मेरे खिलाफ़ कोअी शिकायत कहिये। मैं आपसे कह देता हूँ कि मैं कितनी तरहसे आपकी मदद कर रहा हूँ।

मंडली — देवलखकरसे आपने यह कहा है कि 'अिन लोगोंको प्रेमसे जीतिये'। मगर अिनमें प्रेम हो तब न?

बापू — तब आप अिस बातको अुलट दीजिये और आप अिन्हें प्रेमसे जीतिये।

अिसपर बापूने बुद्धि और हृदयका योग साधनेवाली श्रद्धा पर विवेचन किया :

"हृदय बुद्धिका अनुसरण नहीं कर सकता या बुद्धिके साथ सहयोग नहीं कर सकता, अिसका क्या कारण? श्रद्धाका अभाव हो सकता है? यद्यपि मैं किसी आखिरी निर्णयपर नहीं पहुँचा हूँ, मगर मेरी राय अुसी दिशामें बनती जा रही है। अगर मुझमें प्रेम भरा है, तो मेरी बुद्धि कहती है कि मुझे साँपसे भागना नहीं चाहिये। फिर भी मुझमें अितनी श्रद्धा नहीं होगी, अिसीलिअे मैं साँपको अपने पास नहीं आने देता। अैसे अुदाहरण बहुत दिये जा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि तू अिस दिशामें खोज कर और हृदय और बुद्धिके बीचके विरोधके बारेमें जितनी मिसालें याद आयें अुनकी खोज करनेकी कोशिश कर। अैसा करनेसे तेरे लिअे बुद्धि और हृदयका मेल बैठाना संभव होगा। मैं जो अुपवास करता हूँ वह मेरे लिअे और दूसरे सबके लिअे अच्छा हो, तो फिर अुससे दिलको खुश होनेसे क्यों अिनकार करना चाहिये? मैं तन्दुरुस्त होता हूँ तो हृदयको आनन्द होता है, मगर किसी खास मामलेमें मेरे तन्दुरुस्त रहनेके बजाय मेरा अुपवास करना ज्यादा अच्छा हो सकता है। बुद्धि यही कहती है, फिर भी बुद्धिकी स्पष्ट गवाहीसे हृदय अिनकार करता है। क्या हृदय श्रद्धाके अभावमें अैसा करता है? या अिसमें आत्मवंचना होती है? वस्तुतः क्या बुद्धिने शरीरकी रक्षा करने लायक़ अुपवासकी आवश्यकता स्वीकार की ही नहीं है? मैंने यह प्रश्न कोअी निर्णय करनेका प्रयत्न किये बिना तेरे सामने रखा है। मैं चाहूँ, तो भी निर्णय करने लायक़ सामग्री मेरे पास नहीं हो सकती। कुछ नहीं तो अभीके लिअे तो मैं यह सवाल यहीं छोड़ देता हूँ।"

आम्बेडकरकी मंडली — चित्रे, 'जनता' के प्रधान संचालक वग़ैरा आये। अुनकी शिकायत :

मंडली — अस्पृश्यता-निवारण संघकी कार्रवाअी और कामकाजके विवरणमें डॉ॰ आम्बेडकरके पत्रका कोअी अुल्लेख नहीं है।

बापू — आपकी शिकायत यह होनी चाहिये कि अुसमें अुठाये हुअे प्रश्नका कोअी विचार नहीं किया गया।

मेरे खिलाफ़ कोअी शिकायत कहिये। मैं आपसे कह देता हूँ कि मैं कितनी तरहसे आपकी मदद कर रहा हूँ।

मंडली — देवलखक़रसे आपने यह कहा है कि 'अिन लोगोंको प्रेमसे जीतिये'। मगर अिनमें प्रेम हो तब न?

बापू — तब आप अिस बातको अुलट दीजिये और आप अिन्हें प्रेमसे जीतिये।

मंडली — आपको हम अपना आदमी किस हद तक मान सकते हैं ?

बापू — आम्बेडकर पैदा हुअे अुसके पहलेसे ही मैं तो अिन्हींका आदमी हूँ। मेरे पुराने लेखोंमें अुन्हें पसन्द हों, अैसी बहुतसी बातें मिल जायँगी। मेरे जितनी कड़ी भाषामें किसीने अस्पृश्यताका विरोध नहीं किया।

मंडली — मगर यह तो 'भाला' पत्रका संचालक भी कहता है।

बापू — जो सचाअीके साथ करे वह कह सकता है। मगर सोलनके शब्दोंमें कहें, तो मनुष्यकी मृत्यु होनेके बाद अुसे प्रमाणपत्र देना चाहिये। कौन जानता है कि मैं बुरेसे बुरे प्रकारका सनातनी न निकलूँ ?

प्रज्ञानेश्वर यति और अगासे आये।

अुन्हें बापूने कहा — राजाजी तो सोना हैं। अुनकी बात दुनियाके किसी भी हिस्सेमें मानी जायगी।

सवर्णोंके अत्याचार सहते-सहते अछूतोंका मन अितना नाज़ुक हो गया है कि आप अुनके आगे कोअी भी शर्त रखेंगे तो वे तिलमिला अुठेंगे। लेकिन आप मन्दिर खोल दीजिये और फिर अुन्हें गोमांस छोड़नेको कहिये तो वे तुरंत सुनेंगे। आप ही बताअिये, गोमांस भक्षीको हिन्दू कहा जा सकता है ? मगर कितने ही हिन्दू गोमांस खाते हैं।

अगासे — मैं तो गोमांस भक्षीको ब्राह्मण या हिन्दू नहीं कहूँगा।

बापू — ठीक। मगर आप और मैं टेढ़े-मेढ़े ढंगसे गोमांस भक्षण करते हैं, अुसका क्या ? आप मेरे हाथमें बन्दूक देकर मुझसे छुड़वायें तो कौन ज़िम्मेदार होगा, आप या मैं ? अिसी तरह हमने अिन लोगोंको कुचल डाला है। हमारी मरी हुअी गायें अुठा कर ले जाने, अुनका चमड़ा अुधेड़ने और अुनका मुर्दार मांस खानेको अुन्हें हम ही मजबूर करते हैं। अिसलिअे दर असल हम ही ज़िम्मेदार हैं। महाड़का अुदाहरण सुना है न ? वहाँ अंत्यजोंने मुर्दार मांस खाना छोड़ दिया और मरे हुअे ढोर अुठानेसे अिनकार कर दिया।

अगासे — मगर मरा हुआ न खानेको कहा, तो कहते हैं कि हम गाय मार कर खायँगे।

बापू — मगर आप मेरी पूरी बात सुन लीजिये। महाड़के सवर्णोंको तो यह डर लगा कि अब मरे हुअे ढोर कौन अुठायेगा। अिसलिअे अुन्होंने अुन लोगोंको खानेके लिअे मजबूर किया और न खानेपर मारा।

अगासे — अगर वे हिन्दू हों, तो अुन्हें शुद्ध करना और मन्दिरोंमें लेना है न ? मगर अछूत तो गोमांस खानेके कारण हिन्दू ही नहीं हैं।

बापू — अरे आपके मन्दिर सच्चे होंगे, तो अिन लोगोंको पवित्र कर देंगे। तुलसीदासने कहा है कि सुधातु कुधातुको सुधातु बना देती है। मन्दिरोंके बारेमें

मंडली — आपको हम अपना आदमी किस हद तक मान सकते हैं ?

बापू — आम्बेडकर पैदा हुअे अुसके पहलेसे ही मैं तो अिन्हींका आदमी हूँ। मेरे पुराने लेखोंमें अुन्हें पसन्द हों, अैसी बहुतसी बातें मिल जायँगी। मेरे जितनी कड़ी भाषामें किसीने अस्पृश्यताका विरोध नहीं किया।

मंडली — मगर यह तो 'भाला' पत्रका संचालक भी कहता है।

बापू — जो सचाअीके साथ करे वह कह सकता है। मगर सोलनके शब्दोंमें कहें, तो मनुष्यकी मृत्यु होनेके बाद अुसे प्रमाणपत्र देना चाहिये। कौन जानता है कि मैं बुरेसे बुरे प्रकारका सनातनी न निकलूँ ?

प्रज्ञानेश्वर यति और अगासे आये।

अुन्हें बापूने कहा — राजाजी तो सोना हैं। अुनकी बात दुनियाके किसी भी हिस्सेमें मानी जायगी।

सवर्णोंके अत्याचार सहते-सहते अछूतोंका मन अितना नाजुक हो गया है कि आप अुनके आगे कोअी भी शर्त रखेंगे तो वे तिलमिला अुठेंगे। लेकिन आप मन्दिर खोल दीजिये और फिर अुन्हें गोमांस छोड़नेको कहिये तो वे तुरंत सुनेंगे। आप ही बताअिये, गोमांस भक्षीको हिन्दू कहा जा सकता है ? मगर कितने ही हिन्दू गोमांस खाते हैं।

अगासे — मैं तो गोमांस भक्षीको ब्राह्मण या हिन्दू नहीं कहूँगा।

बापू — ठीक। मगर आप और मैं टेढ़े-मेढ़े ढंगसे गोमांस भक्षण करते हैं, अुसका क्या ? आप मेरे हाथमें बन्दूक देकर मुझसे छुड़वायें तो कौन ज़िम्मेदार होगा, आप या मैं ? अिसी तरह हमने अिन लोगोंको कुचल डाला है। हमारी मरी हुअी गायें अुठा कर ले जाने, अुनका चमड़ा अुधेड़ने और अुनका मुर्दार मांस खानेको अुन्हें हम ही मजबूर करते हैं। अिसलिअे दर असल हम ही ज़िम्मेदार हैं। महाड़का अुदाहरण सुना है न ? वहाँ अंत्यजोंने मुर्दार मांस खाना छोड़ दिया और मरे हुअे ढोर अुठानेसे अिनकार कर दिया।

अगासे — मगर मरा हुआ न खानेको कहा, तो कहते हैं कि हम गाय मार कर खायँगे।

बापू — मगर आप मेरी पूरी बात सुन लीजिये। महाड़के सवर्णोंको तो यह डर लगा कि अब मरे हुअे ढोर कौन अुठायेगा। अिसलिअे अुन्होंने अुन लोगोंको खानेके लिअे मजबूर किया और न खानेपर मारा।

अगासे — अगर वे हिन्दू हों, तो अुन्हें शुद्ध करना और मन्दिरोंमें लेना है न ? मगर अछूत तो गोमांस खानेके कारण हिन्दू ही नहीं हैं।

बापू — अरे आपके मन्दिर सच्चे होंगे, तो अिन लोगोंको पवित्र कर देंगे। तुलसीदासने कहा है कि सुधातु कुधातुको सुधातु बना देती है। मन्दिरोंके बारेमें

बापू — बच्चेसे भी बुरी हालतमें हैं। दिन प्रतिदिन अुन्हें अधिक निराधार बनाया जा रहा है। बच्चा तो बड़ा भी हो जायगा, मगर अस्पृश्योंको तो बढ़ने ही नहीं दिया जाता। सवर्ण हिन्दू अपने कर्तव्यके बारेमें जाग्रत हो जायँगे, तो अस्पृश्योंकी तरफसे भी जवाब मिलेगा। यह तो विज्ञानका मामूली नियम है।

स० — आप मन्दिर-प्रवेशकी बात कहते हैं। मगर किसी भूखे आदमीको खानेको चाहिये, तो वह घरमें भी घुस जाय यह क्या अुचित है? अस्पृश्योंका यही हाल है। अुन्हें भोजन छीन लेनेका आग्रह क्यों रखना चाहिये? अुन्हें दी जाय वही खुराक वे स्वीकार कर लें।

बापू — मगर आप अुन्हें खुराक देते भी हैं?

स० — अुन्हें तो सिर्फ दर्शन चाहियें न? हम अपने ढंगसे अुन्हें दर्शनोंकी सुविधा दे देंगे। मगर अुन्हें मन्दिरमें जानेवाले, दूसरे लोगोंकी भावनाको क्यों दुखाना चाहिये?

बापू — किसी पर जबरदस्ती करनेका यहाँ प्रश्न ही नहीं है।

स० — पूनामें मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें प्रस्ताव पास हुआ। मगर मत गिननेमें धोखा किया गया था। अस्पृश्योंमें बगावत कराना ठीक है? तिलक महाराजने कहा है कि 'लोगोंको साथ लेकर काम करना चाहिये।' आप अिससे सहमत हैं? लोकमान्य कहते थे कि 'किसी भी नेताका, जहाँ तक लोग जा सकते हैं अुससे आगे जाना ठीक नहीं।'

बापू — लोकमान्यने तो यह भी कहा है कि 'आपको मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो, तो अपने नेताका अनुसरण करना चाहिये।'

स० — मगर यह तो अुस वक्त, जब हमें अिस तरह मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो। हम तो यह चाहते हैं कि आप हमारे साथ रहें और हमारा मार्गप्रदर्शन करें।

बापू — तब तो आपका आभार मानता हूँ और कहता हूँ कि आपके साथ रहनेकी शर्त पर मुझे आपका मार्गप्रदर्शन नहीं करना है। अगर आपको मार्ग-प्रदर्शन चाहिये, तो मैं अपनी शर्त पर ही आपका मार्गप्रदर्शन कर सकता हूँ।

अिस तरह अनेक सवाल जवाब हुअे। बापू बहुत थके हुअे थे। तंग आ गये। कहने लगे: "तब तो आप मुझे कष्ट दे कर शिक्षा लेने आये हैं।"

अिसपर वह कहने लगा: "हाँ, साहब, हमारा यह हक है न?"

जो बातें अखबारोंसे भी मिल जाती हैं, अैसी अनेक बातें वह पूछता ही जा रहा था। वह अेडवोकेटकी परीक्षाके लिअे तैयार हो रहा था। अुसकी सवाल पूछने और समझनेकी शक्ति देखकर बापूको कहना पड़ा: "अिस तरह तो आप अपने बहुतसे मुवक्किलोंको बरबाद कर देंगे।"

बापू — बच्चेसे भी बुरी हालतमें हैं। दिन प्रतिदिन अुन्हें अधिक निराधार बनाया जा रहा है। बच्चा तो बड़ा भी हो जायगा, मगर अस्पृश्योंको तो बढ़ने ही नहीं दिया जाता। सवर्ण हिन्दू अपने कर्तव्यके बारेमें जाग्रत हो जायँगे, तो अस्पृश्योंकी तरफसे भी जवाब मिलेगा। यह तो विज्ञानका मामूली नियम है।

स० — आप मन्दिर-प्रवेशकी बात कहते हैं। मगर किसी भूखे आदमीको खानेको चाहिये, तो वह घरमें भी घुस जाय यह क्या अुचित है? अस्पृश्योंका यही हाल है। अुन्हें भोजन छीन लेनेका आग्रह क्यों रखना चाहिये? अुन्हें दी जाय वही खुराक वे स्वीकार कर लें।

बापू — मगर आप अुन्हें खुराक देते भी हैं?

स० — अुन्हें तो सिर्फ दर्शन चाहियें न? हम अपने ढंगसे अुन्हें दर्शनोंकी सुविधा दे देंगे। मगर अुन्हें मन्दिरमें जानेवाले दूसरे लोगोंकी भावनाको क्यों दुखाना चाहिये?

बापू — किसी पर जबरदस्ती करनेका यहाँ प्रश्न ही नहीं है।

स० — पूनामें मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें प्रस्ताव पास हुआ। मगर मत गिननेमें धोखा किया गया था। अस्पृश्योंमें बगावत कराना ठीक है? तिलक महाराजने कहा है कि 'लोगोंको साथ लेकर काम करना चाहिये।' आप अिससे सहमत हैं? लोकमान्य कहते थे कि 'किसी भी नेताका, जहाँ तक लोग जा सकते हैं अुससे आगे जाना ठीक नहीं।'

बापू — लोकमान्यने तो यह भी कहा है कि 'आपको मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो, तो अपने नेताका अनुसरण करना चाहिये।'

स० — मगर यह तो अुस वक्त, जब हमें अिस तरह मार्गप्रदर्शनकी ज़रूरत हो। हम तो यह चाहते हैं कि आप हमारे साथ रहें और हमारा मार्गप्रदर्शन करें।

बापू — तब तो आपका आभार मानता हूँ और कहता हूँ कि आपके साथ रहनेकी शर्त पर मुझे आपका मार्गप्रदर्शन नहीं करना है। अगर आपको मार्ग-प्रदर्शन चाहिये, तो मैं अपनी शर्त पर ही आपका मार्गप्रदर्शन कर सकता हूँ।

अिस तरह अनेक सवाल जवाब हुअे। बापू बहुत थके हुअे थे। तंग आ गये। कहने लगे: "तब तो आप मुझे कष्ट दे कर शिक्षा लेने आये हैं।"

अिसपर वह कहने लगा: "हाँ, साहब, हमारा यह हक है न?"

जो बातें अखबारोंसे भी मिल जाती हैं, अैसी अनेक बातें वह पूछता ही जा रहा था। वह अेडवोकेटकी परीक्षाके लिअे तैयार हो रहा था। अुसकी सवाल पूछने और समझनेकी शक्ति देखकर बापूको कहना पड़ा: "अिस तरह तो आप अपने बहुतसे मुवक्किलोंको बरबाद कर देंगे।"

ठीक है। अभी तक तुम आश्रमकी अेक खास बात समझे हो, अैसा नहीं मालूम होता। वह यह है। खेती, बढ़अीगिरी वगैरा भी शिक्षा है और अुससे भी बुद्धिका और साथ ही दूसरी कितनी ही अिन्द्रियोंका विकास होता है। अगर ये धन्धे शिक्षाके अंगके रूपमें सिखाये जायँ, तो अुसकी क़ीमत अक्षरज्ञानसे ज्यादा है। यह बात मैं आश्रमको भेजे हुअे किसी पत्रमें बता चुका हूँ। यदि याद न हो या यह लेख तुम्हारे हाथमें तुरन्त न आये तो पूछ लेना। मैं फिर लिखूँगा। क्योंकि यह बात तुम सबके समझने लायक़ है। अिस लिखनेका यह अर्थ न करना कि मैं अक्षरज्ञानका दर्जा गिरा देना चाहता हूँ। **अक्षरज्ञानका मूल्य मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मुझसे अधिक अच्छा अुसका अुपयोग करनेवाले बहुत आदमी अेकाअेक नज़र नहीं आयेंगे। मेरा हेतु धन्धोंकी शिक्षाको अक्षरज्ञानकी बराबरीमें रख देना है।** अितनी बात जो समझ लेंगे, वे धन्धोंकी शिक्षाका त्याग करके अक्षरज्ञान सीखनेका लोभ कभी नहीं करेंगे। अैसे लोगोंका अक्षरज्ञान ज्यादा चमक अुठेगा। अितना ही नहीं बल्कि जनताको भी अुससे अधिक लाभ होगा। यह बात अच्छी तरह समझ गये होगे, तो तुम सब ढोर चरानेको तैयार रहोगे।"

बीमारोंको रोज़ दवाओंकी गोलियाँ भेजते ही रहते हैं। कुसुमके लिअे आज़की गोली: "हरअेक बीमारके जीनेकी कुंजी, जहाँ तक सम्भव है वहाँ तक, अुसके अपने हाथमें होती है। वह निराश होकर बैठ जाय, तो किसी भी डॉक्टरकी दवा काम नहीं आती, और वह हिम्मत न हारे तो कोअी भी फंकी अमूल्य दवा बन जाती है। अिसलिअे तीन नियम याद रखना। अेक, हिम्मत हारना ही नहीं। दूसरा, जिसके हाथमें नब्ज़ दे दी हो, वह जैसा कहे वैसा करना। और तीसरा, कैसा भी दुःख होता हो तो भी रामनाम रटना और प्रफुल्लित रहना, रोना नहीं।"

हरिभाअू, बाबासाहब पोद्दार और ढुंढीराज शास्त्री बापट आये।

स० — वेद अीश्वरकी स्फूर्ति हैं, अिसलिअे अब जो स्फूर्ति होगी अुसकी भी वही कीमत होगी, जो नीतिके विरुद्ध होगा अुसे मैं बिलकुल नहीं मानूँगा। क्या आपके ये वचन ठीक हैं?

बापू — हाँ।

पोद्दार — तब तो वैदिक धर्मकी सारी जड़ हिल जाती है। हिन्दू धर्मका आधार वेदों पर है, जैसे अीसाअी धर्मका बाअिबल पर और अिस्लामका कुरान पर। अगर स्फूर्तियाँ समय-समय पर बदलती हों, तो प्राचीन वैदिक धर्म सनातन माना ही नहीं जा सकता।

ठीक है। अभी तक तुम आश्रमकी अेक खास बात समझे हो, अैसा नहीं मालूम होता। वह यह है। खेती, बढ़अीगिरी वगैरा भी शिक्षा है और अुससे भी बुद्धिका और साथ ही दूसरी कितनी ही अिन्द्रियोंका विकास होता है। अगर ये धन्धे शिक्षाके अंगके रूपमें सिखाये जायँ, तो अुसकी क़ीमत अक्षरज्ञानसे ज्यादा है। यह बात मैं आश्रमको भेजे हुअे किसी पत्रमें बता चुका हूँ। यदि याद न हो या यह लेख तुम्हारे हाथमें तुरन्त न आये तो पूछ लेना। मैं फिर लिखूँगा। क्योंकि यह बात तुम सबके समझने लायक़ है। अिस लिखनेका यह अर्थ न करना कि मैं अक्षरज्ञानका दर्जा गिरा देना चाहता हूँ। **अक्षरज्ञानका मूल्य मैं अच्छी तरह समझता हूँ। मुझसे अधिक अच्छा अुसका अुपयोग करनेवाले बहुत आदमी अेकाअेक नज़र नहीं आयेंगे। मेरा हेतु धन्धोंकी शिक्षाको अक्षरज्ञानकी बराबरीमें रख देना है।** अितनी बात जो समझ लेंगे, वे धन्धोंकी शिक्षाका त्याग करके अक्षरज्ञान सीखनेका लोभ कभी नहीं करेंगे। अैसे लोगोंका अक्षरज्ञान ज्यादा चमक अुठेगा। अितना ही नहीं बल्कि जनताको भी अुससे अधिक लाभ होगा। यह बात अच्छी तरह समझ गये होगे, तो तुम सब ढोर चरानेको तैयार रहोगे।"

बीमारोंको रोज़ दवाओंकी गोलियाँ भेजते ही रहते हैं। कुसुमके लिअे आज़की गोली: "हरअेक बीमारके जीनेकी कुंजी, जहाँ तक सम्भव है वहाँ तक, अुसके अपने हाथमें होती है। वह निराश होकर बैठ जाय, तो किसी भी डॉक्टरकी दवा काम नहीं आती, और वह हिम्मत न हारे तो कोअी भी फंकी अमूल्य दवा बन जाती है। अिसलिअे तीन नियम याद रखना। अेक, हिम्मत हारना ही नहीं। दूसरा, जिसके हाथमें नब्ज़ दे दी हो, वह जैसा कहे वैसा करना। और तीसरा, कैसा भी दुःख होता हो तो भी रामनाम रटना और प्रफुल्लित रहना, रोना नहीं।"

हरिभाअू, बाबासाहब पोद्दार और धुंडीराज शास्त्री बापट आये।

स० — वेद अीश्वरकी स्फूर्ति हैं, अिसलिअे अब जो स्फूर्ति होगी अुसकी भी वही कीमत होगी, जो नीतिके विरुद्ध होगा अुसे मैं बिलकुल नहीं मानूँगा। क्या आपके ये वचन ठीक हैं?

बापू — हाँ।

पोद्दार — तब तो वैदिक धर्मकी सारी जड़ हिल जाती है। हिन्दू धर्मका आधार वेदों पर है, जैसे अीसाअी धर्मका बाअिबल पर और अिस्लामका कुरान पर। अगर स्फूर्तियाँ समय-समय पर बदलती हों, तो प्राचीन वैदिक धर्म सनातन माना ही नहीं जा सकता।

स० — अस्पृश्यताकी भावनाका ही नाश चाहते हैं?

बापू — आज जिसे हम अस्पृश्यता मानते हैं, अुसकी जड़ अुखड़ जानी चाहिये। मगर कामके सिलसिलेमें अुस कामके करते समय जो अस्पृश्यता ज़रूरी है, वह हर्गिज़ न मिटनी चाहिये, मिटेगी भी नहीं। मगर अिस भावनाका नाश होना चाहिये कि भंगी तो हमेशाके लिअे भंगी ही है।

स० — क्या यह नाश तुरन्त ही हो सकता है?

बापू — यह असंभव है। सर्वथा नाश तुरन्त हो ही नहीं सकता। भावना बदल सकती है।

स० — अस्पृश्य चाहते हैं अिसलिअे? या हममें अनुकंपा आ गअी है अिसलिअे?

बापू — जो सवर्ण हिन्दू हैं, अुन्होंने जबरन मन्दिरोंसे हरिजनोंका बहिष्कार किया है। दूसरे अत्याचार भी किये हैं। अिसके लिअे प्रायश्चित्त करना चाहिये। हम प्रायश्चित्त नहीं करेंगे, तो अस्पृश्य हमला करेंगे। अपने दोषको देख कर अुसे धो डालना हमारा कर्तव्य है।

स० — शास्त्रोंमें अस्पृश्यताका निषेध भी है और अुसका बचाव भी है। जो बचाव पक्षके वचन संग्रह करते हैं, क्या अुनकी भावनाके लिअे आपको कोअी आदर नहीं?

बापू — है। मगर आज तो लोगोंके मनमें खलबली मच गअी है। और मैं जिस विनय और विवेकके साथ बात करता हूँ, अुसे ये लोग नहीं समझते। मैं कितना समझा रहा हूँ, कितना लिख रहा हूँ, और कितना समाधान सुझा रहा हूँ; अिसे कोअी नहीं सुनता।

जहाँ सिद्धान्तोंका सवाल होता है, वहाँ मैं लाभालाभकी गिनती नहीं करता। रोटी-बेटी व्यवहारके साथ अस्पृश्यताका कोअी वास्ता नहीं। हिन्दू समाजमें आज तो रोटी-बेटी व्यवहारके बंधन व्यापक हैं। मगर अिसे मैं अिस सुधारका अंग नहीं मानता। हाँ, यह सुधार भी होगा ज़रूर। वर्ण तो वैज्ञानिक सिद्धान्त है। हाँ, अुसमें आज बेशुमार खराबियाँ आ गअी हैं। असलमें अुसके साथ रोटी-बेटी व्यवहारका कोअी संबंध नहीं। आप वेदोंको नीचे न अुतारिये, मगर स्मृतियोंको वेदोंके समकक्ष अूपर चढ़ाअिये। बादके ग्रंथोंका अर्थ वेदोंके अनुसार करना चाहिये। स्मृतियोंमें भोजन-व्यवहार संबंधी कोअी नियम हों, तो वे अुस समय ज़रूरी रहे होंगे, मगर आज अुनका कोअी अुपयोग नहीं रहा। वर्ण हमारे पेशोंको नियंत्रित करते हैं। वर्णधर्मसे धंधे वंशपरम्परागत हो जानेके कारण मनुष्यकी शक्तिका बचाव होता है। हिन्दू धर्मने आनुवंशिकताके नियमोंका पूरी तरह लाभ अुठाकर कहा है कि बापदादेका धंधा करना चाहिये। भोजन सम्बंधी

स० — अस्पृश्यताकी भावनाका ही नाश चाहते हैं?

बापू — आज जिसे हम अस्पृश्यता मानते हैं, अुसकी जड़ अुखड़ जानी चाहिये। मगर कामके सिलसिलेमें अुस कामके करते समय जो अस्पृश्यता ज़रूरी है, वह हरगिज़ न मिटनी चाहिये, मिटेगी भी नहीं। मगर अिस भावनाका नाश होना चाहिये कि भंगी तो हमेशाके लिअे भंगी ही है।

स० — क्या यह नाश तुरन्त ही हो सकता है?

बापू — यह असंभव है। सर्वथा नाश तुरन्त हो ही नहीं सकता। भावना बदल सकती है।

स० — अस्पृश्य चाहते हैं अिसलिअे? या हममें अनुकंपा आ गअी है अिसलिअे?

बापू — जो सवर्ण हिन्दू हैं, अुन्होंने जबरन मन्दिरोंसे हरिजनोंका बहिष्कार किया है। दूसरे अत्याचार भी किये हैं। अिसके लिअे प्रायश्चित्त करना चाहिये। हम प्रायश्चित्त नहीं करेंगे, तो अस्पृश्य हमला करेंगे। अपने दोषको देख कर अुसे धो डालना हमारा कर्तव्य है।

स० — शास्त्रोंमें अस्पृश्यताका निषेध भी है और अुसका बचाव भी है। जो बचाव पक्षके वचन संग्रह करते हैं, क्या अुनकी भावनाके लिअे आपको कोअी आदर नहीं?

बापू — है। मगर आज तो लोगोंके मनमें खलबली मच गअी है। और मैं जिस विनय और विवेकके साथ बात करता हूँ, अुसे ये लोग नहीं समझते। मैं कितना समझा रहा हूँ, कितना लिख रहा हूँ, और कितना समाधान सुझा रहा हूँ, अिसे कोअी नहीं सुनता।

जहाँ सिद्धान्तोंका सवाल होता है, वहाँ मैं लाभालाभकी गिनती नहीं करता। रोटी-बेटी व्यवहारके साथ अस्पृश्यताका कोअी वास्ता नहीं। हिन्दू समाजमें आज तो रोटी-बेटी व्यवहारके बंधन व्यापक हैं। मगर अिसे मैं अिस सुधारका अंग नहीं मानता। हाँ, यह सुधार भी होगा ज़रूर। वर्ण तो वैज्ञानिक सिद्धान्त है। हाँ, अुसमें आज बेशुमार खराबियाँ आ गअी हैं। असलमें अुसके साथ रोटी-बेटी व्यवहारका कोअी संबंध नहीं। आप वेदोंको नीचे न अुतारिये, मगर स्मृतियोंको वेदोंके समकक्ष अूपर चढ़ाअिये। बादके ग्रंथोंका अर्थ वेदोंके अनुसार करना चाहिये। स्मृतियोंमें भोजन-व्यवहार संबंधी कोअी नियम हों, तो वे अुस समय ज़रूरी रहे होंगे, मगर आज अुनका कोअी अुपयोग नहीं रहा। वर्ण हमारे पेशोंको नियंत्रित करते हैं। वर्णधर्मसे धंधे वंशपरम्परागत हो जानेके कारण मनुष्यकी शक्तिका बचाव होता है। हिन्दू धर्मने आनुवंशिकताके नियमोंका पूरी तरह लाभ अुठाकर कहा है कि बापदादेका धंधा करना चाहिये। भोजन सम्बंधी

सकती है। मनुष्यको यह बता देना चाहिये कि अुसके अिरादे कोअी क्षण-क्षणमें आने जाने वाले विचार नहीं, परन्तु स्थायी रूपसे अमलमें लानेके होते हैं। मैं अहिंसाके बारेमें जो लिखता हूँ, अुसे अमलमें लाकर दिखाना है।"

फिर छारोंकी बात करते हुअे कहा : "आश्रमकी कमज़ोरीका यह अेक विचित्र अुदाहरण है। छारोंका धंधा चोरी करना है। अब हमें अिनके बीचमें रहनेका निश्चय कर लेना चाहिये। पुलिससे हम शिकायत नहीं कर सकते और अुन्हें आनेसे रोकनेके लिअे बल प्रयोग भी नहीं कर सकते। अुनका कोअी विरोध नहीं होता, अिसलिअे वे ज्यादा-ज्यादा ढीठ होते जा रहे हैं। अिसका अुपाय ज़रूर है। मगर अुस अुपाय पर अमल करनेकी हममें शक्ति नहीं है। अुपाय तो यही है कि हम कोअी भी माल-असबाब न रखें, और जो हो अुसे जो ले जाना चाहे, अुसे ले जाने दें। अहिंसाका पालन करना हो तो अिस सवालका तुरंत जवाब ढूँढ़ना चाहिये।

मिस बार — कुछ भी मुश्किल न हो, तब तो अिस पृथ्वी पर सत्ययुग आ जाय।

बापू — यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु मरुभूमिमें हरियाली हो सकती है और आश्रम वैसा बननेकी आशा रख सकता है।

अिसके बाद नटराजन और देवधर आये।

नट० — आपने अिंग्लैण्डमें जिस चीज़के होनेको रोकनेका प्रयत्न किया, वह यहाँ हो रही है। हमारे समाजमें सनातनी और सुधारक अैसे दो बड़े भाग हो गये हैं। हमारे समाजको छिन्न भिन्न होनेसे रोकनेके लिअे यह ज़रूरी है कि आप बाहर आ जायँ। मुझे बहुत ही आवश्यक मालूम होता है कि अिस आन्दोलनको चलानेके लिअे आपको बाहर आ ही जाना चाहिये। आपके शब्दोंमें कहूँ, तो झगड़ा रोकनेके लिअे आपको ज़ामिन बनना है। मगर मैं नहीं जानता कि आप किस तरह बाहर आ सकते हैं।

बापू — मैं भी नहीं जानता। जिन्हें अकेला यही काम करना हो अुन पर कोअी अंकुश न होना चाहिये। जेलमें पड़े हुअे लोग भी यह कह कर बाहर जा सकते हैं कि हम अपनी प्रवृत्तियाँ अकेले अस्पृश्यता निवारणके काम तक ही सीमित रखेंगे। लेकिन अुन्हें अैसा करना चाहिये या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मैं यह भी नहीं कह सकता कि वे अैसा करें, तो मुझे वह अच्छा लगेगा। लेकिन यह बात नहीं है कि कोअी सविनय-भंगकी लड़ाअी छोड़ दे, तो वह मेरा साथी नहीं रहेगा या मुझे कम प्रिय हो जायगा। मान लीजिये मैं बिना किसी शर्तके बाहर चला जाअूँ, तो संभव है कि मैं लोगोंको सविनय-भंग छोड़ देनेकी सलाह दूँ। लेकिन आज यहाँसे अैसी किसी शर्तमें मैं बँधना नहीं चाहता।

सकती है। मनुष्यको यह बता देना चाहिये कि अुसके अिरादे कोअी क्षण-क्षणमें आने-जाने वाले विचार नहीं, परन्तु स्थायी रूपसे अमलमें लानेके होते हैं। मैं अहिंसाके बारेमें जो लिखता हूँ, अुसे अमलमें लाकर दिखाना है।"

फिर छारोंकी बात करते हुअे कहा : "आश्रमकी कमज़ोरीका यह अेक विचित्र अुदाहरण है। छारोंका धंधा चोरी करना है। अब हमें अिनके बीचमें रहनेका निश्चय कर लेना चाहिये। पुलिससे हम शिकायत नहीं कर सकते और अुन्हें आनेसे रोकनेके लिअे बल प्रयोग भी नहीं कर सकते। अुनका कोअी विरोध नहीं होता, अिसलिअे वे ज्यादा-ज्यादा ढीठ होते जा रहे हैं। अिसका अुपाय ज़रूर है। मगर अुस अुपाय पर अमल करनेकी हममें शक्ति नहीं है। अुपाय तो यही है कि हम कोअी भी माल-असबाब न रखें, और जो हो अुसे जो ले जाना चाहे, अुसे ले जाने दें। अहिंसाका पालन करना हो तो अिस सवालका तुरंत जवाब ढूँढ़ना चाहिये।

मिस बार — कुछ भी मुश्किल न हो, तब तो अिस पृथ्वी पर सत्ययुग आ जाय।

बापू — यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु मरुभूमिमें हरियाली हो सकती है और आश्रम वैसा बननेकी आशा रख सकता है।

अिसके बाद नटराजन और देवधर आये।

नट० — आपने अिंग्लैण्डमें जिस चीज़के होनेको रोकनेका प्रयत्न किया, वह यहाँ हो रही है। हमारे समाजमें सनातनी और सुधारक अैसे दो बड़े भाग हो गये हैं। हमारे समाजको छिन्न भिन्न होनेसे रोकनेके लिअे यह ज़रूरी है कि आप बाहर आ जायँ। मुझे बहुत ही आवश्यक मालूम होता है कि अिस आन्दोलनको चलानेके लिअे आपको बाहर आ ही जाना चाहिये। आपके शब्दोंमें कहूँ, तो झगड़ा रोकनेके लिअे आपको ज़ामिन बनना है। मगर मैं नहीं जानता कि आप किस तरह बाहर आ सकते हैं।

बापू — मैं भी नहीं जानता। जिन्हें अकेला यही काम करना हो अुन पर कोअी अंकुश न होना चाहिये। जेलमें पड़े हुअे लोग भी यह कह कर बाहर जा सकते हैं कि हम अपनी प्रवृत्तियाँ अकेले अस्पृश्यता निवारणके काम तक ही सीमित रखेंगे। लेकिन अुन्हें अैसा करना चाहिये या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मैं यह भी नहीं कह सकता कि वे अैसा करें, तो मुझे वह अच्छा लगेगा। लेकिन यह बात नहीं है कि कोअी सविनय-भंगकी लड़ाअी छोड़ दे, तो वह मेरा साथी नहीं रहेगा या मुझे कम प्रिय हो जायगा। मान लीजिये मैं बिना किसी शर्तके बाहर चला जाअूँ, तो संभव है कि मैं लोगोंको सविनय-भंग छोड़ देनेकी सलाह दूँ। लेकिन आज यहाँसे अैसी किसी शर्तमें मैं बँधना नहीं चाहता।

बापू — नहीं, मैं जैसा हूँ, लोग मुझे पूरी तरह वैसा ही देखते हैं। लोग जानते हैं कि मेरी राजनीति मेरे जनसेवाके समग्र कार्यका अेक भाग है। लोग सहज वृत्तिसे ही समझ गये हैं कि मेरा सारा जीवन समग्र जनसेवाके लिअे है।

यह तो मानसिक प्रामाणिकताका प्रश्न है। जिस क्षण मैं बाहर जाअूँ अुसी क्षण मुझे यह विचार आ सकता है कि अिस महान आफतमें मुझे क्या करना है? मैं शायद अकेले सविनयभंगका ही विचार करूँ, और किसी बातका नहीं। मगर यहाँ पड़ा-पड़ा यह काम कर रहा हूँ, अिससे मुझे पूरा सन्तोष है।

देवधर — अैसा कोअी नुसखा ढूँढ़ निकालिये न, कि जिससे आप अिन लोगोंको छुड़वा सकें।

बापू — अभी जो नुसखा मैंने पेश किया है, अुसका सरकार पर असर पड़ना चाहिये। सरकारको आसानीसे यह समझमें आना चाहिये कि अिस आन्दोलनमें सारा देश लगा हुआ है।

देवधर — आप यह नहीं कह सकते कि यह काम अुतने ही महत्त्वका है और कार्यकर्ताओंको अिसमें पड़ना चाहिये?

बापू — जमनालालजीका अुदाहरण लीजिये। वे अैसी कोअी शर्त करके बाहर नहीं जायँगे। मैं अुनसे अैसा करनेको कहूँ तो वे मान ज़रूर लेंगे, मगर मैं अुनसे अिस तरह बाहर जानेको कह ही नहीं सकता। अिस आन्दोलनके लिअे पुराने कार्यकर्ताओंकी, जो जेलमें हों अुनकी ज़रूरत नहीं है। नया कार्यकर्ता वर्ग निकल आया है और वह मुझे पसन्द है। जमनालालजी जैसे आदमीको खुद ही महसूस हो, तो मेरे आशीर्वादके साथ वे बाहर जा सकते हैं। मगर मैं अुन्हें अैसा करनेको नहीं कहूँगा। मुझसे हर पखवाड़ेमें कुछ कैदी मिलते हैं। अुन्हें मैंने कहा है कि तुम्हें भीतरसे अैसा लगता हो कि अस्पृश्यता निवारणका काम करनेका आश्वासन देकर बाहर जायँ, तो मैं यह नहीं कहूँगा कि तुमने कोअी बुरा काम किया है।

कोतवालको पत्र:

"अगर धर्मसंकट पैदा ही न होते, तो धर्मपालन असिधारा जैसा न माना जाता। आम तौर पर त्याज्य मानी जानेवाली चीज़ ज़रासे परिवर्तनके कारण कर्त्तव्य बन जाती है। यह रसायनके मिश्रण जैसी वस्तु है। अप्पाकी माँग अधिकारके लिअे नहीं थी। स्वार्थके लिअे नहीं थी। अप्पाकी माँग अपना धर्मपालन करनेकी थी। जो परिस्थिति पैदा हुअी अुसमें अैसे अुपवास हो सकते हैं, यह राय हम सब बाहर थे तब मैं दे सकता था। अिसलिअे अप्पाका साथ देना मेरा धर्म हो गया और मुझे अिस बारेमें कोअी शंका नहीं है। मैंने जो कुछ कहा है वह बुद्धिसे समझा जा सकता है। अिसलिअे यहाँ मेरे वचन पर श्रद्धा रखनेकी ज़रूरत नहीं। जब तक बुद्धि स्वीकार न करे तब तक

बापू — नहीं, मैं जैसा हूँ, लोग मुझे पूरी तरह वैसा ही देखते हैं। लोग जानते हैं कि मेरी राजनीति मेरे जनसेवाके समग्र कार्यका अेक भाग है। लोग सहज वृत्तिसे ही समझ गये हैं कि मेरा सारा जीवन समग्र जनसेवाके लिअे है।

यह तो मानसिक प्रामाणिकताका प्रश्न है। जिस क्षण मैं बाहर जाअूँ अुसी क्षण मुझे यह विचार आ सकता है कि अिस महान आफतमें मुझे क्या करना है? मैं शायद अकेले सविनयभंगका ही विचार करूँ, और किसी बातका नहीं। मगर यहाँ पड़ा-पड़ा यह काम कर रहा हूँ, अिससे मुझे पूरा सन्तोष है।

देवधर — अैसा कोअी नुसखा ढूँढ़ निकालिये न, कि जिससे आप अिन लोगोंको छुड़वा सकें।

बापू — अभी जो नुसखा मैंने पेश किया है, अुसका सरकार पर असर पड़ना चाहिये। सरकारको आसानीसे यह समझमें आना चाहिये कि अिस आन्दोलनमें सारा देश लगा हुआ है।

देवधर — आप यह नहीं कह सकते कि यह काम अुतने ही महत्त्वका है और कार्यकर्ताओंको अिसमें पड़ना चाहिये?

बापू — जमनालालजीका अुदाहरण लीजिये। वे अैसी कोअी शर्त करके बाहर नहीं जायँगे। मैं अुनसे अैसा करनेको कहूँ तो वे मान ज़रूर लेंगे, मगर मैं अुनसे अिस तरह बाहर जानेको कह ही नहीं सकता। अिस आन्दोलनके लिअे पुराने कार्यकर्ताओंकी, जो जेलमें हों अुनकी ज़रूरत नहीं है। नया कार्यकर्ता वर्ग निकल आया है और वह मुझे पसन्द है। जमनालालजी जैसे आदमीको खुद ही महसूस हो, तो मेरे आशीर्वादके साथ वे बाहर जा सकते हैं। मगर मैं अुन्हें अैसा करनेको नहीं कहूँगा। मुझसे हर पखवाड़ेमें कुछ कैदी मिलते हैं। अुन्हें मैंने कहा है कि तुम्हें भीतरसे अैसा लगता हो कि अस्पृश्यता निवारणका काम करनेका आश्वासन देकर बाहर जायँ, तो मैं यह नहीं कहूँगा कि तुमने कोअी बुरा काम किया है।

कोतवालको पत्र :

"अगर धर्मसंकट पैदा ही न होते, तो धर्मपालन असिधारा जैसा न माना जाता। आम तौर पर त्याज्य मानी जानेवाली चीज़ ज़रासे परिवर्तनके कारण कर्त्तव्य बन जाती है। यह रसायनके मिश्रण जैसी वस्तु है। अप्पाकी माँग अधिकारके लिअे नहीं थी। स्वार्थके लिअे नहीं थी। अप्पाकी माँग अपना धर्मपालन करनेकी थी। जो परिस्थिति पैदा हुअी अुसमें अैसे अुपवास हो सकते हैं, यह राय हम सब बाहर थे तब मैं दे सकता था। अिसलिअे अप्पाका साथ देना मेरा धर्म हो गया और मुझे अिस बारेमें कोअी शंका नहीं है। मैंने जो कुछ कहा है वह बुद्धिसे समझा जा सकता है। अिसलिअे यहाँ मेरे वचन पर श्रद्धा रखनेकी ज़रूरत नहीं। जब तक बुद्धि स्वीकार न करे तब तक

रखते हैं।) पुस्तकें मैंने नहीं माँगी थीं, महादेवने माँगी थीं। (रिपोर्टमें 'माँग करने पर' शब्द थे।)

"आपने मन्दिर-प्रवेशके काममें मदद देनेको कहा, तब मैंने आपको अिसमें दखल न देनेको कहा था। मेरी सूचना भी आपने मान ली, फिर भी रिपोर्टमें अिस तरहसे दिया है, जिसका अैसा अर्थ निकलता है कि मौजूदा आन्दोलनमें मैंने आपका हस्तक्षेप चाहा है। अैसे अर्थसे कामको हानि पहुँचती है। अिसलिअे सत्यकी खातिर और कामकी खातिर मैं अिसमें तुरन्त सुधार करनेकी जरूरत समझता हूँ। मैं चाहता हूँ आप फ़ौरन सुधार करें। झूठी रिपोर्टसे किसी भी कामको मदद नहीं मिलती। धर्मकी तो हानि ही होती है, अिसलिअे सुधार करनेमें हर तरहसे लाभ ही समझें।"

अिस लड़ाअीमें कैसी-कैसी कुर्बानियाँ की गअी हैं, यह नासिकके मुकदमेके जो हालात रोज़ प्रकट हो रहे हैं, अुनसे मालूम होती हैं। सब कहते हैं कि अेक अमृतलालने सैकड़ोंके लिअे हमेशाका सुख कर दिया है। क्योंकि नासिकमें या और कहीं अब जेलरोंने चूँ-चाँ करना छोड़ दिया है। कल बहन अिन्दुमती जरीवालाकी अपने पति अीश्वरलाल जरीवालाकी, जो बीसापुरमें मर गये, अुत्तरक्रियाके लिअे १५ दिनके पैरोल पर छूटनेकी खबर पढ़ी। पति-पत्नीको जेल, घरमें सगे-संबन्धियोंकी घबराहट अलग, अुस पर वैधव्य, और फिर वैधव्यका दुःख लेकर वापस जेलमें जाना! बापूने अिस बहनको सुरवालाके मारफ़त पत्र लिखा।

गोपीकृष्ण नामके अेक भाअीको पत्र लिखा (हिन्दीमें):

"यदि हम हैं तो अीश्वर है, क्योंकि जीवमात्रका समूह अीश्वर है, जैसे किरणोंका समूह सूर्य है। अिस अीश्वर पर श्रद्धा होनेके लिअे आत्मश्रद्धा होनी चाहिये और वह श्रद्धा अनासक्तिपूर्वक सेवा करनेसे आती है। श्रद्धा रखनेका दूसरा तरीका यह है कि सारा जगत श्रद्धा रखता है तो हम भी रखें।

"स्वाधीन भारतके लक्ष्यका खयाल तक मैं तो नहीं करता हूँ। स्वाधीनताके साथ ही लक्ष्यका पता चल जायगा। और तो मेरे लेखोंसे देख लेना।"

मोतीबाबू दो साथियोंके साथ और हरिभाअू शास्त्रियोंके साथ आये।

श्रीधर शास्त्री पाठकने पहले खातिरी कर ली कि बापू धर्मशास्त्रोंको मानते हैं, बादमें अपना वक्तव्य प्रकाशित किया: "मैंने शास्त्रोंमें यह देखा है कि जातिसे कोअी अस्पृश्य नहीं, गुण-कर्मसे ही मनुष्य अस्पृश्य बनता है। चाण्डाल जाति आज है ही नहीं।"

बापू — अगर कर्म और गुणसे अस्पृश्यता आती है, तो भंगी जब तक भंगीका काम करता है तभी तक वह अछूत है और काम छोड़कर नहा-धोकर

रखते हैं।) पुस्तकें मैंने नहीं माँगी थीं, महादेवने माँगी थीं। (रिपोर्टमें 'माँग करने पर' शब्द थे।)

"आपने मन्दिर-प्रवेशके काममें मदद देनेको कहा, तब मैंने आपको अिसमें दखल न देनेको कहा था। मेरी सूचना भी आपने मान ली, फिर भी रिपोर्टमें अिस तरहसे दिया है, जिसका अैसा अर्थ निकलता है कि मौजूदा आन्दोलनमें मैंने आपका हस्तक्षेप चाहा है। अैसे अर्थसे कामको हानि पहुँचती है। अिसलिअे सत्यकी खातिर और कामकी खातिर मैं अिसमें तुरन्त सुधार करनेकी जरूरत समझता हूँ। मैं चाहता हूँ आप फ़ौरन सुधार करें। झूठी रिपोर्टसे किसी भी कामको मदद नहीं मिलती। धर्मकी तो हानि ही होती है, अिसलिअे सुधार करनेमें हर तरहसे लाभ ही समझें।"

अिस लड़ाअीमें कैसी-कैसी कुर्बानियाँ की गअी हैं, यह नासिकके मुकदमेके जो हालात रोज़ प्रकट हो रहे हैं, अुनसे मालूम होती हैं। सब कहते हैं कि अेक अमृतलालने सैकड़ोंके लिअे हमेशाका सुख कर दिया है। क्योंकि नासिकमें या और कहीं अब जेलरोंने चूँ-चाँ करना छोड़ दिया है। कल बहन अिन्दुमती जरीवालाकी अपने पति अीश्वरलाल जरीवालाकी, जो वीसापुरमें मर गये, अुत्तरक्रियाके लिअे १५ दिनके पैरोल पर छूटनेकी खबर पढ़ी। पति-पत्नीको जेल, घरमें सगे-संबन्धियोंकी घबराहट अलग, अुस पर वैधव्य, और फिर वैधव्यका दुःख लेकर वापस जेलमें जाना! बापूने अिस बहनको सुरवालाके मारफ़त पत्र लिखा।

गोपीकृष्ण नामके अेक भाअीको पत्र लिखा (हिन्दीमें):

"यदि हम हैं तो अीश्वर है, क्योंकि जीवमात्रका समूह अीश्वर है, जैसे किरणोंका समूह सूर्य है। अिस अीश्वर पर श्रद्धा होनेके लिअे आत्मश्रद्धा होनी चाहिये और वह श्रद्धा अनासक्तिपूर्वक सेवा करनेसे आती है। श्रद्धा रखनेका दूसरा तरीका यह है कि सारा जगत श्रद्धा रखता है तो हम भी रखें।

"स्वाधीन भारतके लक्ष्यका खयाल तक मैं तो नहीं करता हूँ। स्वाधीनताके साथ ही लक्ष्यका पता चल जायगा। और तो मेरे लेखोंसे देख लेना।"

मोतीबाबू दो साथियोंके साथ और हरिभाअू शास्त्रियोंके साथ आये।

श्रीधर शास्त्री पाठकने पहले खातिरी कर ली कि बापू धर्मशास्त्रोंको मानते हैं, बादमें अपना वक्तव्य प्रकाशित किया: "मैंने शास्त्रोंमें यह देखा है कि जातिसे कोअी अस्पृश्य नहीं, गुण-कर्मसे ही मनुष्य अस्पृश्य बनता है। चाण्डाल जाति आज है ही नहीं।"

बापू — अगर कर्म और गुणसे अस्पृश्यता आती है, तो भंगी जब तक भंगीका काम करता है तभी तक वह अछूत है और काम छोड़कर नहा-धोकर

लक्ष्मण शास्त्री (वाओी): पापयोनि — तरुगुल्मलतादि-वैश्य-स्त्री-शूद्र — यानी दुःखी योनि हैं, अस्पृश्य योनि नहीं। यह मूल कर्मविपाक प्रकरणमें से ही है।

यह तो वेद-अुपनिषद्‌में है। स्मृतियोंका तो कोओी ठिकाना नहीं। वे तो लोभसे भी लिखी गयी हैं, अनेक हेतुओंसे लिखी गयी हैं।

बापू — तो अुन्हें ओीश्वरप्रणीत कैसे माना जाय?

चित्राल शास्त्री — धारूरकर आदि शास्त्री स्मृतियोंसे ही चिपटे रहकर बात करते हैं। और जिस ढंगसे ये लोग विचार करते हैं, अुसी ढंगसे जवाब देना चाहिये।

बंगाली भाअियोंके साथ:

बापू — आज जो दो भाग हो गये हैं, अुनका आधार सत्य पर नहीं है। अुनकी जड़में ज़हर है। आज अेक शीघ्रगामी विष हिन्दू समाजको खाये जा रहा है। समाजके अिस तरह टुकड़े न होने देनेके लिअे हमें अपनी सारी शक्ति खर्च कर देनी होगी। बम्बअी पर तो सनातनियोंका क़ाबू नाम मात्रका है। वे संगठित होनेकी कोशिश कर रहे हैं। यदि हमारे लोग अुद्धत हो जायेंगे, असभ्य बन जायेंगे और सज्जनता छोड़ देंगे, तो यह फूट और भी अुग्र हो जायगी। मगर मेरे अुपवासकी बात सिर पर लटक रही है, अिसलिअे हमारे लोग अैसी कोओी बात करनेकी हिम्मत हरगिज़ नहीं करेंगे। मैंने जब केलप्पनको वचन दिया, तब मेरा सारा हृदय अुसके विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। फिर राजाजी आये। अुन्होंने कहा कि ज़ामोरिनका तार आया है कि आपको केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने मनमें विचार किया कि केलप्पनको बचानेका अेक यही अुपाय है कि मुझे अपनी जानकी बाज़ी लगा देनी चाहिये। अिस तरह यह चीज़ हुअी है। मेरी रायमें तो सत्यको व्यक्त करनेकी अुत्तम रीति अुपवास है। टुकड़े होनेसे रोका जा सकता है। मगर कोओी अंग अितना सड़ गया हो कि अुसे काटे बिना काम ही नहीं चले, तो फिर टुकड़े होनेसे रोका नहीं जा सकता।

मैं यह नहीं मानता कि बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म पर आक्रमणकर्ताके रूपमें आया। मैं तो मानता हूँ कि बौद्ध धर्म न आया होता, तो हिन्दू धर्म बहुत पहले नष्ट हो गया होता। आज हिन्दू धर्म मृतप्राय है। वह हमारे जीवनको स्पर्श नहीं करता। ओीश्वर, आत्मा और पुनर्जन्म, अिन तीन पर श्रद्धा होना हिन्दू धर्मका मुख्य लक्षण है। अस्पृश्यताका नाश करनेसे अिस श्रद्धामें कौनसी बाधा पड़ेगी?

बंगाली — अछूतोंका अुद्धार करनेके लिअे अुनमें आध्यात्मिक संस्कार पैदा करने चाहियें।

लक्ष्मण शास्त्री (वाअी): पापयोनि — तरुगुल्मलतादि-वैश्य-स्त्री-शूद्र — यानी दुःखी योनि हैं, अस्पृश्य योनि नहीं। यह मूल कर्मविपाक प्रकरणमें से ही है।

यह तो वेद-अुपनिषद्में है। स्मृतियोंका तो कोअी ठिकाना नहीं। वे तो लोभसे भी लिखी गयी हैं, अनेक हेतुओंसे लिखी गयी हैं।

बापू — तो अुन्हें अीश्वरप्रणीत कैसे माना जाय?

चित्राल शास्त्री — धारूरकर आदि शास्त्री स्मृतियोंसे ही चिपटे रहकर बात करते हैं। और जिस ढंगसे ये लोग विचार करते हैं, अुसी ढंगसे जवाब देना चाहिये।

बंगाली भाअियोंके साथ:

बापू — आज जो दो भाग हो गये हैं, अुनका आधार सत्य पर नहीं है। अुनकी जड़में ज़हर है। आज अेक शीघ्रगामी विष हिन्दू समाजको खाये जा रहा है। समाजके अिस तरह टुकड़े न होने देनेके लिअे हमें अपनी सारी शक्ति खर्च कर देनी होगी। बम्बअी पर तो सनातनियोंका क़ाबू नाम मात्रका है। वे संगठित होनेकी कोशिश कर रहे हैं। यदि हमारे लोग अुद्धत हो जायेंगे, असभ्य बन जायेंगे और सज्जनता छोड़ देंगे, तो यह फूट और भी अुग्र हो जायगी। मगर मेरे अुपवासकी बात सिर पर लटक रही है, अिसलिअे हमारे लोग अैसी कोअी बात करनेकी हिम्मत हरगिज़ नहीं करेंगे। मैंने जब केलप्पनको वचन दिया, तब मेरा सारा हृदय अुसके विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। फिर राजाजी आये। अुन्होंने कहा कि ज़ामोरिनका तार आया है कि आपको केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने मनमें विचार किया कि केलप्पनको बचानेका अेक यही अुपाय है कि मुझे अपनी जानकी बाज़ी लगा देनी चाहिये। अिस तरह यह चीज़ हुअी है। मेरी रायमें तो सत्यको व्यक्त करनेकी अुत्तम रीति अुपवास है। टुकड़े होनेसे रोका जा सकता है। मगर कोअी अंग अितना सड़ गया हो कि अुसे काटे बिना काम ही नहीं चले, तो फिर टुकड़े होनेसे रोका नहीं जा सकता।

मैं यह नहीं मानता कि बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म पर आक्रमणकर्ताके रूपमें आया। मैं तो मानता हूँ कि बौद्ध धर्म न आया होता, तो हिन्दू धर्म बहुत पहले नष्ट हो गया होता। आज हिन्दू धर्म मृतप्राय है। वह हमारे जीवनको स्पर्श नहीं करता। अीश्वर, आत्मा और पुनर्जन्म, अिन तीन पर श्रद्धा होना हिन्दू धर्मका मुख्य लक्षण है। अस्पृश्यताका नाश करनेसे अिस श्रद्धामें कौनसी बाधा पड़ेगी?

बंगाली — अछूतोंका अुद्धार करनेके लिअे अुनमें आध्यात्मिक संस्कार पैदा करने चाहियें।

बंगाली — हिन्दू तो मानते हैं कि वेद शाश्वत सत्य हैं और वेदोंमें कोअी परस्पर विरोधी बात हो ही नहीं सकती। शास्त्र और आत्म-साक्षात्कारका मेल होता ही है। जैसे, कृष्णमें अिन दोनों चीज़ोंका मेल था। बुद्धकी बात दूसरी है।

बापू — मैं अितिहासका अैसा अर्थ नहीं करता। बुद्धने हिन्दू धर्मकी अपार सेवा की है।

बंगाली — हिन्दू धर्म बौद्ध धर्मको मान्य नहीं करता।

बापू — मगर वह बुद्धको तो मानता है न?

बंगाली — यों तो आदमी तपस्वी हो सकता है, मगर अुसकी शक्ति और तपस्या शास्त्रोंके साथ सुसंगत न हो, तो वह कल्याणकारी नहीं होती। हिन्दू धर्ममें आत्मज्ञानका सत्य है। हिन्दू धर्मका आधार ही वेद हैं और वेद अीश्वर प्रणीत हैं। अिसलिअे जब हम किसी रूढ़िसे अिनकार करें, तब हमें अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि हमारा अैसा करना वेद-विरुद्ध तो नहीं है।

बापू — मगर आत्मज्ञानका सत्य कोअी हिन्दू धर्मका ही ठेका नहीं हो सकता। हमारे पास जो ग्रन्थ हैं वही वेद हैं, यह अर्थ नहीं। मगर वेदका अर्थ है अशरीरी वाणी यानी पवित्र मनुष्योंका अनुभव-ज्ञान। अिसीलिअे महाभारतमें कहा है कि शास्त्र पवित्र मनुष्योंके जीवनमें मूर्तिमंत होते हैं। अिसलिअे आपको अिन लिखे हुअे शब्दोंसे परे जाना होगा।

चिन्तामणिका पत्र आया था कि कितने ही प्रसंग अैसे होते हैं जहाँ मौन सम्मति सूचक नहीं होता। मुझे आपके अुपवासके प्रसंग पर न बोलनेमें कोअी सत्य-त्याग नहीं लगा। और 'लीडर' में पूना-करारके बारेमें कुछ नहीं लिखा था, अिसलिअे लोगोंने कुछ न कुछ अनुमान भी किया ही होगा। अिन्हें वापस जवाब लिखा :

"मैं अपने मित्रोंका न्याय करने नहीं बैठता। अपनी राय मैं अुन्हें बता देता हूँ और वह यदि अुन्हें सही लगे, तो वे अुसके अनुसार सुधार कर लें। आपको लगता हो कि बम्बअीमें आपने अपने कृत्यसे अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध कुछ नहीं किया, तो मुझे सन्तोष है। मगर आपसे मैं अेक वचन माँग लेता हूँ। जाहिरा तौर पर जब आप मेरा विरोध न करें, तब भी खानगीमें तो आपको मुझे सावधान कर ही देना चाहिये। अिस चेतावनीका मुझ पर जाहिरा कोअी असर न भी हो। मगर मेरा मन विचारोंको ग्रहण करनेवाला है, अिसलिअे अैसी चेतावनियोंसे हमेशा मुझे मदद मिली है।"

अेक पत्रमें से :

"मैंने खुद अण्डे लेनेसे अिनकार किया यह बात सच है, फिर भी मैं मानता हूँ कि मछलीका तेल निषिद्ध है, दूध अुससे कम निषिद्ध है और अुससे

बंगाली — हिन्दू तो मानते हैं कि वेद शास्वत सत्य हैं और वेदोंमें कोअी परस्पर विरोधी बात हो ही नहीं सकती। शास्त्र और आत्म-साक्षात्कारका मेल होता ही है। जैसे, कृष्णमें अिन दोनों चीज़ोंका मेल था। बुद्धकी बात दूसरी है।

बापू — मैं अितिहासका अैसा अर्थ नहीं करता। बुद्धने हिन्दू धर्मकी अपार सेवा की है।

बंगाली — हिन्दू धर्म बौद्ध धर्मको मान्य नहीं करता।

बापू — मगर वह बुद्धको तो मानता है न?

बंगाली — यों तो आदमी तपस्वी हो सकता है, मगर अुसकी शक्ति और तपस्या शास्त्रोंके साथ सुसंगत न हो, तो वह कल्याणकारी नहीं होती। हिन्दू धर्ममें आत्मज्ञानका सत्य है। हिन्दू धर्मका आधार ही वेद हैं और वेद अीश्वर प्रणीत हैं। अिसलिअे जब हम किसी रूढ़िसे अिनकार करें, तब हमें अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि हमारा अैसा करना वेद-विरुद्ध तो नहीं है।

बापू — मगर आत्मज्ञानका सत्य कोअी हिन्दू धर्मका ही ठेका नहीं हो सकता। हमारे पास जो ग्रन्थ हैं वही वेद हैं, यह अर्थ नहीं। मगर वेदका अर्थ है अशरीरी वाणी यानी पवित्र मनुष्योंका अनुभव-ज्ञान। अिसीलिअे महाभारतमें कहा है कि शास्त्र पवित्र मनुष्योंके जीवनमें मूर्तिमंत होते हैं। अिसलिअे आपको अिन लिखे हुअे शब्दोंसे परे जाना होगा।

चिन्तामणिका पत्र आया था कि कितने ही प्रसंग अैसे होते हैं जहाँ मौन सम्मति सूचक नहीं होता। मुझे आपके अुपवासके प्रसंग पर न बोलनेमें कोअी सत्य-त्याग नहीं लगा। और 'लीडर' में पूना-करारके बारेमें कुछ नहीं लिखा था, अिसलिअे लोगोंने कुछ न कुछ अनुमान भी किया ही होगा। अिन्हें वापस जवाब लिखा:

"मैं अपने मित्रोंका न्याय करने नहीं बैठता। अपनी राय मैं अुन्हें बता देता हूँ और वह यदि अुन्हें सही लगे, तो वे अुसके अनुसार सुधार कर लें। आपको लगता हो कि बम्बअीमें आपने अपने कृत्यसे अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध कुछ नहीं किया, तो मुझे सन्तोष है। मगर आपसे मैं अेक वचन माँग लेता हूँ। जाहिरा तौर पर जब आप मेरा विरोध न करें, तब भी खानगीमें तो आपको मुझे सावधान कर ही देना चाहिये। अिस चेतावनीका मुझ पर जाहिरा कोअी असर न भी हो। मगर मेरा मन विचारोंको ग्रहण करनेवाला है, अिसलिअे अैसी चेतावनियोंसे हमेशा मुझे मदद मिली है।"

अेक पत्रमें से:

"मैंने खुद अण्डे लेनेसे अिनकार किया यह बात सच है, फिर भी मैं मानता हूँ कि मछलीका तेल निषिद्ध है, दूध अुससे कम निषिद्ध है और अुससे

अेक कॉलेजकी लड़की अपने कॉलेजके प्रोफ़ेसरकी दुर्दशा बतांती है।

अेक केम्ब्रिजका ग्रेजुअेट, जो अपनेको नास्तिक कहता था, आजकल सनातनियोंका समर्थन करने निकल पड़ा है!

पूनामें यह मुश्किल है कि लोगोंमें सच्ची धार्मिक वृत्ति नहीं है। विद्यार्थियोंमें पक्ष खड़े कर दिये गये हैं। अुन्हें समझाया जाता है कि गांधीका आन्दोलन धर्मका सत्यानाश करनेवाला है।

बम्बअीके हिम्मतराम शास्त्री और बादमें चिन्तामणराव वैद्य:

शास्त्री — सनातन धर्मका अर्थ सुधारक शास्त्री नहीं कर सकते। ये लोग तो अपनी पोल आपके सामने ढकनेकी कोशिश करनेवाले हैं। जो कुछ करना हो सनातनियोंकी बात सुनकर ही कीजिये। यह विषय राग-द्वेष छोड़कर विचार करनेका है, आप तो राग छोड़ते ही नहीं।

बापू — हृदय और बुद्धि पर प्रहार करना आपका काम है। मैं तो कहता हूँ कि जो कुछ करूँगा, सत्यको बीचमें रख कर ही करूँगा। मैं आपसे कहूँगा कि वेद, स्मृति, महाभारत और रामायणको मैं मानता हूँ। मगर साथ ही कहूँगा कि सबको अक्षरशः माननेवाला नहीं हूँ। गीताके कअी भाष्य मैंने पढ़े हैं, परन्तु अुनमें मुझे अपनी बुद्धिका अुपयोग तो करना ही पड़ेगा न? अनेक मनुष्य अलग-अलग अर्थ निकालते हैं, अिसका क्या किया जाय? गीताका तारतम्य अस्पृश्यताके विरुद्ध है।

शास्त्री — गीतामें पापयोनि और पुण्ययोनि है या नहीं?

बापू — है।

शास्त्री — पापयोनि अेक परिस्थिति है। अुसमेंसे तीन गुणोंको पार करके अूपर चढ़े तब यह पापयोनि मिटे। जन्म-जन्मके नीच कर्मोंके कारण यह योनि प्राप्त होती है। यह कुदरतके बनाये नियमोंके अनुसार है। गीतामें पाप और पुण्ययोनि लिखा है सो किसलिअे? अुन्नति क्रमशः होनी चाहिये। सब अपने-अपने गुणोंके अनुसार अपनी-अपनी हालत भोगते हैं। मल नीचेके रास्तेसे जाता है और भोजन मुँहमें आता है।

आज तो व्यवहारको मानिये। शास्त्रज्ञानके बिना आप तो समाजका अैसा नाश करने चले हैं कि समाज सौ वर्ष तक अुठ नहीं सकेगा। सांसारिक सुख-भोग, द्रव्यकी लालसा और पाश्चात्य संस्कृतिके प्रभावके विरुद्ध लड़ना है।

अब अुत्तरायण नजदीक आ रहा है। अेक महीना और लम्बाअिये। वैश्यके साथ ब्राह्मणकी बुद्धिको स्वीकार कीजिये।

चिन्तामणराव वैद्य और यह शास्त्री किसी नाटकके सुन्दर पात्रोंके रूपमें पेश किये जा सकते हैं। अपना पुराने ज़मानेका काला कोट और पगड़ी, मैली

अेक कॉलेजकी लड़की अपने कॉलेजके प्रोफ़ेसरकी दुर्दशा बताती है।

अेक केम्ब्रिजका ग्रेजुअेट, जो अपनेको नास्तिक कहता था, आजकल सनातनियोंका समर्थन करने निकल पड़ा है !

पूनामें यह मुश्किल है कि लोगोंमें सच्ची धार्मिक वृत्ति नहीं है। विद्यार्थियोंमें पक्ष खड़े कर दिये गये हैं। अुन्हें समझाया जाता है कि गांधीका आन्दोलन धर्मका सत्यानाश करनेवाला है।

बम्बअीके हिम्मतराम शास्त्री और बादमें चिन्तामणराव वैद्य :

शास्त्री — सनातन धर्मका अर्थ सुधारक शास्त्री नहीं कर सकते। ये लोग तो अपनी पोल आपके सामने ढकनेकी कोशिश करनेवाले हैं। जो कुछ करना हो सनातनियोंकी बात सुनकर ही कीजिये। यह विषय राग-द्वेष छोड़कर विचार करनेका है, आप तो राग छोड़ते ही नहीं।

बापू — हृदय और बुद्धि पर प्रहार करना आपका काम है। मैं तो कहता हूँ कि जो कुछ करूँगा, सत्यको बीचमें रख कर ही करूँगा। मैं आपसे कहूँगा कि वेद, स्मृति, महाभारत और रामायणको मैं मानता हूँ। मगर साथ ही कहूँगा कि सबको अक्षरशः माननेवाला नहीं हूँ। गीताके कअी भाष्य मैंने पढ़े हैं, परन्तु अुनमें मुझे अपनी बुद्धिका अुपयोग तो करना ही पड़ेगा न ? अनेक मनुष्य अलग-अलग अर्थ निकालते हैं, अिसका क्या किया जाय ? गीताका तारतम्य अस्पृश्यताके विरुद्ध है।

शास्त्री — गीतामें पापयोनि और पुण्ययोनि है या नहीं ?

बापू — है।

शास्त्री — पापयोनि अेक परिस्थिति है। अुसमेंसे तीन गुणोंको पार करके अूपर चढ़े तब यह पापयोनि मिटे। जन्म-जन्मके नीच कर्मोंके कारण यह योनि प्राप्त होती है। यह कुदरतके बनाये नियमोंके अनुसार है। गीतामें पाप और पुण्ययोनि लिखा है सो किसलिअे ? अुन्नति क्रमशः होनी चाहिये। सब अपने-अपने गुणोंके अनुसार अपनी-अपनी हालत भोगते हैं। मल नीचेके रास्तेसे जाता है और भोजन मुँहमें आता है।

आज तो व्यवहारको मानिये। शास्त्रज्ञानके बिना आप तो समाजका अैसा नाश करने चले हैं कि समाज सौ वर्ष तक अुठ नहीं सकेगा। सांसारिक सुख-भोग, द्रव्यकी लालसा और पाश्चात्य संस्कृतिके प्रभावके विरुद्ध लड़ना है।

अब अुत्तरायण नजदीक आ रहा है। अेक महीना और लम्बाअिये। वैश्यके साथ ब्राह्मणकी बुद्धिको स्वीकार कीजिये।

चिन्तामणराव वैद्य और यह शास्त्री किसी नाटकके सुन्दर पात्रोंके रूपमें पेश किये जा सकते हैं। अपना पुराने ज़मानेका काला कोट और पगड़ी, मैली

"अिन शास्त्रोंको बंद कीजिये न!" अिस पर वल्लभभाअी अुसे याद करके कहने लगे: "अब अिन शास्त्रोंको बन्द कीजिये न!"

बापू बोले: "ये वढ़वाणकी पत्रिकायें बन्द करा दें, तो आश्चर्य नहीं!"

विरोधकी हर अेक पंक्तिके शब्द बापू बहुत ध्यानसे पढ़ते हैं। साथियोंके पत्र पढ़ना अकसर मुल्तवी भी कर देते हैं। राधाकान्तकी सलाहसे बापूने मन्दिरमें जानेवालोंके ही मत लेने चाहियें, अैसा तार राजाजीको देकर अुनको बेचैन कर दिया।

२२-१२-'३२

कल अेम० के० आचार्यने गोपाल मेननकी प्रकाशित की हुअी अेक पत्रिका यह बतानेके लिअे भेजी कि मतगणना तो आपको मरनेसे बचानेके मुद्दे पर ली गअी, मगर मन्दिर-प्रवेश पर नहीं ली गअी। बापूको बड़ा दुःख हुआ। रातको अिसीकी बात करते-करते सोये। मुझे बार-बार पूछा: "अिसी पर मत लिये गये हों, तो मतगणनाको रद्द करना ही चाहिये न?"

मैंने कहा: "यह क्यों मानते हैं कि मत अिसी पर लिये गये होंगे? यह तो अनेक पत्रिकाओंमें से अेक हो सकती है। यह पत्रिका किसीके जवाबमें भी हो सकती है। सब कुछ यहीं कल्पना कर लेनेसे काम नहीं चल सकता। यह अुपवास ही बड़े विचित्र संयोगोंमें ज़ाहिर हुआ है। हज़ारों मील दूर बैठकर मतगणना कराना और फिर साथियोंको बार-बार टोकना ठीक नहीं।"

फिर बापू बोले: "मगर लोगोंको अितनी ही बात सुनाअी गअी हो, तब तो मतगणना निकम्मी हो जाती है न?"

सुबह गोपाल मेननको पत्र लिखवाया। अुसमें लिखा कि "तुमने मुद्देको छिपाया हो, तब तो मतगणना रद्द ही करनी चाहिये। मुझे अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिये और अुसका प्रायश्चित्त करना चाहिये!"

मैंने वल्लभभाअीसे बात की। वल्लभभाअी अुबल पड़े और कहने लगे: "अिस तरह यहाँ बैठे-बैठे आप अपने साथियोंको सतायें, यह ठीक नहीं। यह पत्र हरगिज़ नहीं भेजा जा सकता। आप अिस आचार्यकी पत्रिका परसे कोअी राय न बाँधें।"

बापू मान गये अिसलिअे मैंने कहा: "अब यह ठीक हो गया।"

बापू बोले: "ठीक तो नहीं हुआ, मगर जैसे सनातनियोंको सन्तोष देता हूँ, वैसे अिन नये सनातनियोंको भी तो सन्तोष देना चाहिये न?"

अिसके बाद सुबह अेक पत्रमें लिखवाया:

"अुपवास मुल्तवी करानेके लिअे बहुतसी चीज़ें काम कर रही हैं।" बादमें यह वाक्य रद्द करा दिया, अिसलिअे कि शायद यह आगाही ज़रूरतसे

"अिन शास्त्रोंको बंद कीजिये न!" अिस पर वल्लभभाअी अुसे याद करके कहने लगे: "अब अिन शास्त्रोंको बन्द कीजिये न!"

बापू बोले: "ये वढ़वाणकी पत्रिकायें बन्द करा दें, तो आश्चर्य नहीं!"

विरोधकी हर अेक पंक्तिके शब्द बापू बहुत ध्यानसे पढ़ते हैं। साथियोंके पत्र पढ़ना अकसर मुल्तवी भी कर देते हैं। राधाकान्तकी सलाहसे बापूने मन्दिरमें जानेवालोंके ही मत लेने चाहियें, अैसा तार राजाजीको देकर अुनको बेचैन कर दिया।

२२-१२-'३२

कल अेम० के० आचार्यने गोपाल मेननकी प्रकाशित की हुअी अेक पत्रिका यह बतानेके लिअे भेजी कि मतगणना तो आपको मरनेसे बचानेके मुद्दे पर ली गअी, मगर मन्दिर-प्रवेश पर नहीं ली गअी। बापूको बड़ा दुःख हुआ। रातको अिसीकी बात करते-करते सोये। मुझे बार-बार पूछा: "अिसी पर मत लिये गये हों, तो मतगणनाको रद्द करना ही चाहिये न!"

मैंने कहा: "यह क्यों मानते हैं कि मत अिसी पर लिये गये होंगे? यह तो अनेक पत्रिकाओंमें से अेक हो सकती है। यह पत्रिका किसीके जवाबमें भी हो सकती है। सब कुछ यहीं कल्पना कर लेनेसे काम नहीं चल सकता। यह अुपवास ही बड़े विचित्र संयोगोंमें ज़ाहिर हुआ है। हज़ारों मील दूर बैठकर मतगणना कराना और फिर साथियोंको बार-बार टोकना ठीक नहीं।"

फिर बापू बोले: "मगर लोगोंको अितनी ही बात सुनाअी गअी हो, तब तो मतगणना निकम्मी हो जाती है न?"

सुबह गोपाल मेननको पत्र लिखवाया। अुसमें लिखा कि "तुमने मुद्देको छिपाया हो, तब तो मतगणना रद्द ही करनी चाहिये। मुझे अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिये और अुसका प्रायश्चित्त करना चाहिये!"

मैंने वल्लभभाअीसे बात की। वल्लभभाअी अुबल पड़े और कहने लगे: "अिस तरह यहाँ बैठे-बैठे आप अपने साथियोंको सतायें, यह ठीक नहीं। यह पत्र हरगिज़ नहीं भेजा जा सकता। आप अिस आचार्यकी पत्रिका परसे कोअी राय न बाँधें।"

बापू मान गये अिसलिअे मैंने कहा: "अब यह ठीक हो गया।"

बापू बोले: "ठीक तो नहीं हुआ, मगर जैसे सनातनियोंको सन्तोष देता हूँ, वैसे अिन नये सनातनियोंको भी तो सन्तोष देना चाहिये न?"

अिसके बाद सुबह अेक पत्रमें लिखवाया:

"अुपवास मुल्तवी करानेके लिअे बहुतसी चीज़ें काम कर रही हैं।" बादमें यह वाक्य रद्द करा दिया, अिसलिअे कि शायद यह आगाही ज़रूरतसे

मेरे मनमें शंका नहीं है। शंका हो तो अुपवास किसलिअे घोषित करता? लेकिन आप यह मानते हों कि मुझमें रोग घुस गया है, तो आप अुसे निकाल दीजिये।

धारूरकर — व्यक्तिगत दृष्टिसे नहीं, लेकिन धार्मिक दृष्टिसे शंकित हैं अैसा आप कहें, तो हम बात करें, नहीं तो क्या बात की जाय?

षड्दर्शनाचार्य — हमारे पास अुपाय है। आपके मनमें जो हो सो कहिये। हम अुसका जवाब देंगे।

बापू — ध्रुवजी, भगवानदास आदि सच्ची धर्मसेवा करनेके लिअे आये हैं। ये लोग यहाँ कोअी अखाड़ा खेलने नहीं आये। शास्त्री क्या नहीं जानते हैं कि यहाँ दूसरे पंडित भी आये हैं। आप चाहें तो मैं यहाँसे चला जाता हूँ और आप लोग ही चर्चा करें तथा समाधान कर लें; और वह समाधान मेरे आगे रखें। मैं अैसा कोअी वचन नहीं देता कि अुसे मैं मानूँगा ही। क्योंकि मैंने कोअी आनन्दशंकर ध्रुवके हाथमें अपनी लगाम नहीं सौंप दी है।

धारूरकर — आपको मैं जज बनानेके लिअे तैयार हूँ; मगर आप जो फैसला दें, अुसके कारण हमारी पद्धतिसे बताने चाहियें।

बापू — बीमार वैद्यकीय दृष्टिसे कैसे कह सकेगा कि फलाँका निदान मुझे मंजूर है? आपने तो मुझसे अधर्मकी बात माँगी। आप यह चाहते हैं कि आप अमुक पंडितगण मिलें और जो निर्णय दें, अुसे मैं मान लूँ। यह तो अधर्मकी बात हुअी। जब वह मेरे स्वीकार करने लायक हो तभी मैं स्वीकार कर सकता हूँ न?

मोतीबाबूने सबको सुनाकर कहा: "मैं तो मानता हूँ कि गांधीजीको अीश्वर-प्रेरणा होती है। अिस प्रेरणाके बिना वे कुछ नहीं करते। मेरी आपसे यह अपील है कि आपको अिस प्रेरणाके अनुकूल शास्त्र खोजना चाहिये!"

अिसी हेतुसे वे पंचानन बाबूको भी यहाँ तक घसीट लाये थे। मगर वे तो अब सनातनियोंकी तरफ लुढ़क गये हैं।

२३-१२-'३२

खुरशेदका कल दुःखभरा पत्र आया था: "क्या आप निराश होकर अुपवास करेंगे? क्या हम सब फूटी कौड़ी साबित हुअे? मैंने अपनी कलाप्रवृत्तिको सेवाकी वेदी पर चढ़ा दिया, सो आपके और आपके कामके लिअे। आपको निराशा क्यों हो गअी है?" बापूने अुसे सुन्दर तार दिया। मेजरने कहा कि यह तार सरकारके मारफत ही भेजा जा सकता है, और किसी तरह नहीं। बापूने अुसे भेजनेको मना कर दिया और कहा कि मुझे लौटा दीजिये। आज खुरशेदको पत्र लिखा:

मेरे मनमें शंका नहीं है। शंका हो तो अुपवास किसलिअे घोषित करता? लेकिन आप यह मानते हों कि मुझमें रोग घुस गया है, तो आप अुसे निकाल दीजिये।

धारूरकर — व्यक्तिगत दृष्टिसे नहीं, लेकिन धार्मिक दृष्टिसे शंकित हैं अैसा आप कहें, तो हम बात करें, नहीं तो क्या बात की जाय?

षड्दर्शनाचार्य — हमारे पास अुपाय है। आपके मनमें जो हो सो कहिये। हम अुसका जवाब देंगे।

बापू — ध्रुवजी, भगवानदास आदि सच्ची धर्मसेवा करनेके लिअे आये हैं। ये लोग यहाँ कोअी अखाड़ा खेलने नहीं आये। शास्त्री क्या नहीं जानते हैं कि यहाँ दूसरे पंडित भी आये हैं। आप चाहें तो मैं यहाँसे चला जाता हूँ और आप लोग ही चर्चा करें तथा समाधान कर लें; और वह समाधान मेरे आगे रखें। मैं अैसा कोअी वचन नहीं देता कि अुसे मैं मानूँगा ही। क्योंकि मैंने कोअी आनन्दशंकर ध्रुवके हाथमें अपनी लगाम नहीं सौंप दी है।

धारूरकर — आपको मैं जज बनानेके लिअे तैयार हूँ; मगर आप जो फैसला दें, अुसके कारण हमारी पद्धतिसे बताने चाहियें।

बापू — बीमार वैद्यकीय दृष्टिसे कैसे कह सकेगा कि फलाँका निदान मुझे मंजूर है? आपने तो मुझसे अधर्मकी बात माँगी। आप यह चाहते हैं कि आप अमुक पंडितगण मिलें और जो निर्णय दें, अुसे मैं मान लूँ। यह तो अधर्मकी बात हुअी। जब वह मेरे स्वीकार करने लायक हो तभी मैं स्वीकार कर सकता हूँ न?

मोतीबाबूने सबको सुनाकर कहा: "मैं तो मानता हूँ कि गांधीजीको अीश्वर-प्रेरणा होती है। अिस प्रेरणाके बिना वे कुछ नहीं करते। मेरी आपसे यह अपील है कि आपको अिस प्रेरणाके अनुकूल शास्त्र खोजना चाहिये!"

अिसी हेतुसे वे पंचानन बाबूको भी यहाँ तक घसीट लाये थे। मगर वे तो अब सनातनियोंकी तरफ लुढ़क गये हैं।

२३-१२-'३२

खुरशेदका कल दुःखभरा पत्र आया था: "क्या आप निराश होकर अुपवास करेंगे? क्या हम सब फूटी कौड़ी साबित हुअे? मैंने अपनी कलाप्रवृत्तिको सेवाकी वेदी पर चढ़ा दिया, सो आपके और आपके कामके लिअे। आपको निराशा क्यों हो गअी है?" बापूने अुसे सुन्दर तार दिया। मेजरने कहा कि यह तार सरकारके मारफत ही भेजा जा सकता है, और किसी तरह नहीं। बापूने अुसे भेजनेको मना कर दिया और कहा कि मुझे लौटा दीजिये। आज खुरशेदको पत्र लिखा:

(३) अुन्हें मनुष्यके सब अधिकार हैं — सिर्फ़ धार्मिक नहीं।

(४) जो नैमित्तिक अस्पृश्य हों, अुनकी अस्पृश्यता दूर न हो जाय, तब तक वे मन्दिरमें नहीं जा सकते। दूसरे जो औत्पत्तिक अस्पृश्य हैं, वे नहीं जा सकते।

(५) औत्पत्तिकोंकी अस्पृश्यताका निवारण नहीं है। चिन्तामणराव वैद्य और मालवीयजी वग़ैराके मंत्र काम नहीं आ सकते।

वैद्य — अत्रिस्मृति आपको मान्य है, तो फिर अत्रिवाक्य स्पृष्टास्पृष्टिको रद्द करता है, अुसका क्या?

धारूरकर — अिसका अर्थ यह है कि अस्पृश्यता जैसी चीज़ आप स्वीकार करते हैं।

संग्रामे हट्टमार्गे च यात्रा देवगृहादिषु।
तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते।

षड्दर्शनाचार्य — जिन शास्त्रोंमें देवगृहकी स्थापनाके बारेमें लिखा है, अुन्हीं शास्त्रोंमें यह लिखा हुआ है। पूजाके समय पुजारी दूसरोंको स्पर्श नहीं कर सकते। अिस श्लोकका अर्थ तो यह है कि जिन्हें मन्दिरमें आनेका अधिकार है, अुनके बीच छुआछूत नहीं हो सकती। बाहरके आदमियोंका यानी चातुर्वर्ण्यसे बाहरके आदमियोंका यहाँ विचार ही नहीं है!

भगवानका विशेष संनिधान प्रतिष्ठित मूर्तियोंमें है। देवताओंका सान्निध्य लानेवाला शास्त्र — वैखानसागम शास्त्र — मानते हैं, तो अुसके दूसरे आदेश भी मानने चाहियें। अिस शास्त्रका ही अिस बारेमें पूरा अधिकार है।

बापू — मद्रासमें प्रत्येक मन्दिरके लिअे भिन्न आगम हैं। क्या ये सब अीश्वर-प्रणीत हैं?

शास्त्री — आप सब अीश्वर-प्रणीतको ही मानते हैं या दूसरोंको भी?

बापू — आप मुझसे यह न पूछिये कि मैं किस शास्त्रको मानता हूँ। आपको जिन शास्त्रोंका प्रमाण देना हो, वह दीजिये। मुझे यह मंजूर है कि जिन-जिन सम्प्रदायोंके जो-जो शास्त्र हैं, वे अुन्हें मान्य होने चाहियें। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि अीश्वरने प्रत्येक समाजके लिअे मन्दिरोंके विषयमें शास्त्र बनाया है? मद्रासमें अेक नया मन्दिर बना कि तुरन्त अुसका आगम बन जाता है। अिन आगमोंको माननेवालोंको यह अधिकार है या नहीं कि हरिजनोंको अन्दर जाने दें?

शास्त्री — आप अिन लोगोंको मनाअिये कि अुनके पास नया आगम है, अैसा वे हमें समझायें।

(३) अुन्हें मनुष्यके सब अधिकार हैं — सिर्फ़ धार्मिक नहीं।

(४) जो नैमित्तिक अस्पृश्य हों, अुनकी अस्पृश्यता दूर न हो जाय, तब तक वे मन्दिरमें नहीं जा सकते। दूसरे जो औत्पत्तिक अस्पृश्य हैं, वे नहीं जा सकते।

(५) औत्पत्तिकोंकी अस्पृश्यताका निवारण नहीं है। चिन्तामणराव वैद्य और मालवीयजी वगैराके मंत्र काम नहीं आ सकते।

वैद्य — अत्रिस्मृति आपको मान्य है, तो फिर अत्रिवाक्य स्पृष्टास्पृष्टिको रद्द करता है, अुसका क्या?

घारूरकर — अिसका अर्थ यह है कि अस्पृश्यता जैसी चीज़ आप स्वीकार करते हैं।

संग्रामे हट्टमार्गे च यात्रा देवगृहादिषु।
तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते।

षड्दर्शनाचार्य — जिन शास्त्रोंमें देवगृहकी स्थापनाके बारेमें लिखा है, अुन्हीं शास्त्रोंमें यह लिखा हुआ है। पूजाके समय पुजारी दूसरोंको स्पर्श नहीं कर सकते। अिस श्लोकका अर्थ तो यह है कि जिन्हें मन्दिरमें आनेका अधिकार है, अुनके बीच छुआछूत नहीं हो सकती। बाहरके आदमियोंका यानी चातुर्वर्ण्यसे बाहरके आदमियोंका यहाँ विचार ही नहीं है!

भगवानका विशेष संनिधान प्रतिष्ठित मूर्तियोंमें है। देवताओंका सान्निध्य लानेवाला शास्त्र — वैखानसागम शास्त्र — मानते हैं, तो अुसके दूसरे आदेश भी मानने चाहियें। अिस शास्त्रका ही अिस बारेमें पूरा अधिकार है।

बापू — मद्रासमें प्रत्येक मन्दिरके लिअे भिन्न आगम हैं। क्या ये सब अीश्वर-प्रणीत हैं?

शास्त्री — आप सब अीश्वर-प्रणीतको ही मानते हैं या दूसरोंको भी?

बापू — आप मुझसे यह न पूछिये कि मैं किस शास्त्रको मानता हूँ। आपको जिन शास्त्रोंका प्रमाण देना हो, वह दीजिये। मुझे यह मंजूर है कि जिन-जिन सम्प्रदायोंके जो-जो शास्त्र हैं, वे अुन्हें मान्य होने चाहियें। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि अीश्वरने प्रत्येक समाजके लिअे मन्दिरोंके विषयमें शास्त्र बनाया है? मद्रासमें अेक नया मन्दिर बना कि तुरन्त अुसका आगम बन जाता है। अिन आगमोंको माननेवालोंको यह अधिकार है या नहीं कि हरिजनोंको अन्दर जाने दें?

शास्त्री — आप अिन लोगोंको मनाअिये कि अुनके पास नया आगम है, अैसा वे हमें समझायें।

अेक ब्रह्मचर्यका प्रयास करनेवालेको लिखा :

"जो दोष हो चुके हैं अुनसे शिक्षा लेना । . . .

२५–१२–'३२ बहनके साथ अेकान्त सेवन नहीं होना चाहिये । सूक्ष्म नियमोंका भी सख्तीसे पालन करना । अिद्रासन मिलता हो, तो भी झूठ न बोलना । अनशन लेकर मरना मंजूर करना, मगर स्त्रीसंग मत करना ।"

नरदेव शास्त्रीने भी नये कदमका विरोध किया था । अुन्हें लिखा (हिन्दीमें) :

"मेरा बंदीवान रहना और हरिजनोंका काम करना अुसीमें सब शंकाओंका समाधान हो जाता है । अधिक लिखना मर्यादाके बाहर होगा । कोअी कांग्रेसका आदमी अिस काममें जुत जानेके लिअे बाध्य नहीं है । कोअी अिस कार्यके लिअे स्वधर्म न छोड़े ।

"अेक वर्तुल बना लो और किसीको पूछो अुसका आदि कहाँ, अंत कहाँ ? यदि वर्तुल सही बना होगा, तो कोअी बता नहीं सकेगा । यदि मनुष्य कृतिके लिअे यह सही है, तो अीश्वर कृतिका क्या कहा जाय ? मैं तो तुम्हारे प्रश्नोंका अुत्तर देनेके लिअे असमर्थ हूँ । क्योंकि कोअी अुत्तर सम्पूर्ण नहीं है ।"

. . . . को : "तू गीताका मनन करनेवाला है । तू देखेगा कि शुद्ध चित्तको सदा ही प्रसन्नचित्त रहना चाहिये ।"

. . . . को : "तू चिन्ता छोड़ सके तो मैं तुरंत छोड़ दूँ । यह तू जानती है न कि अिस वक्त तेरी गीताकी परीक्षा हो रही है ? तुझे अर्थ सहित अुच्चारण आये और कंठस्थ भी कर ले, तो अिससे तू सचमुच पास हो गअी अैसा मैं नहीं मानूँगा । गीताको अमलमें लायेगी, अुसके अनुसार अंक मिलेंगे । चरखा शास्त्रको जो मुँहसे चटपट बोल जाय, वह अुसका सच्चा जाननेवाला नहीं, मगर अुस पर अमल करनेवाला यानी पींजने और कातने वाला ही असली जानकार है । अिसी तरह गीताका है । सब रोगोंकी यह अेक सही दवा है । यह दवा तू बराबर काममें ले, तो मुझे तेरे बारेमें बहुत चिन्ता नहीं रहे ।"

आज यह खबर आअी कि बारडोली आश्रमके मकान बेचना तय किया है । वल्लभभाअी बोले : "अच्छा है बिक जायँ तो । हमारे हाथमें सत्ता आयेगी, तब ये सब वापस दिये बिना चारा नहीं । सत्ता न आये तो अिन सब मकानों (जेलों) का कब्ज़ा तो हमारे पास ही है न ?"

अेक ब्रह्मचर्यका प्रयास करनेवालेको लिखा :

"जो दोष हो चुके हैं अुनसे शिक्षा लेना। . . .

२५-१२-'३२ बहनके साथ अेकान्त सेवन नहीं होना चाहिये। सूक्ष्म नियमोंका भी सख्तीसे पालन करना। अिंद्रासन मिलता हो, तो भी झूठ न बोलना। अनशन लेकर मरना मंजूर करना, मगर स्त्रीसंग मत करना।"

नरदेव शास्त्रीने भी नये कदमका विरोध किया था। अुन्हें लिखा (हिन्दीमें):

"मेरा बंदीवान रहना और हरिजनोंका काम करना अुसीमें सब शंकाओंका समाधान हो जाता है। अधिक लिखना मर्यादाके बाहर होगा। कोअी कांग्रेसका आदमी अिस काममें जुत जानेके लिअे बाध्य नहीं है। कोअी अिस कार्यके लिअे स्वधर्म न छोड़े।

"अेक वर्तुल बना लो और किसीको पूछो अुसका आदि कहाँ, अंत कहाँ? यदि वर्तुल सही बना होगा, तो कोअी बता नहीं सकेगा। यदि मनुष्य कृतिके लिअे यह सही है, तो अीश्वर कृतिका क्या कहा जाय? मैं तो तुम्हारे प्रश्नोंका अुत्तर देनेके लिअे असमर्थ हूँ। क्योंकि कोअी अुत्तर संपूर्ण नहीं है।"

. . . . को: "तू गीताका मनन करनेवाला है। तू देखेगा कि शुद्ध चित्तको सदा ही प्रसन्नचित्त रहना चाहिये।"

. . . . को: "तू चिन्ता छोड़ सके तो मैं तुरंत छोड़ दूँ। यह तू जानती है न कि अिस वक्त तेरी गीताकी परीक्षा हो रही है? तुझे अर्थ सहित अुच्चारण आये और कंठस्थ भी कर ले, तो अिससे तू सचमुच पास हो गअी अैसा मैं नहीं मानूँगा। गीताको अमलमें लायेगी, अुसके अनुसार अंक मिलेंगे। चरखा शास्त्रको जो मुँहसे चटपट बोल जाय, वह अुसका सच्चा जाननेवाला नहीं, मगर अुस पर अमल करनेवाला यानी पींजने और कातने वाला ही असली जानकार है। अिसी तरह गीताका है। सब रोगोंकी यह अेक सही दवा है। यह दवा तू बराबर काममें ले, तो मुझे तेरे बारेमें बहुत चिन्ता नहीं रहे।"

आज यह खबर आअी कि बारडोली आश्रमके मकान बेचना तय किया है। वल्लभभाअी बोले: "अच्छा है बिक जायँ तो। हमारे हाथमें सत्ता आयेगी, तब ये सब वापस दिये बिना चारा नहीं। सत्ता न आये तो अिन सब मकानों (जेलों) का क़ब्ज़ा तो हमारे पास ही है न!"

शास्त्री — लेकिन कर्मसे अस्पृश्य और जन्मसिद्ध अस्पृश्यकी भ्रष्टतामें कोअी भेद नहीं है।

बापू — प्रायश्चित्त किसे करना है? चांडालको करना है या स्पृश्योंको?

वैद्य — वृद्धहारित स्मृति अठारह मान्य स्मृतियोंमें से नहीं है।

अिसके बाद सनातनियोंने वैद्यके सवालोंके जवाब दिये। अिसमें अुन्हें काफ़ी छकाया।

आनंदशंकर दूर बैठे-बैठे तमाशा देखते रहे। बूढ़ा गोते खा रहा था तब अुसे बचानेको न दौड़कर वे खिलखिलाकर हँसते रहे। आज अैसा मालूम होता था कि हमारा पक्ष अव्यवस्थित है, जब कि सनातनियोंका समूह व्यवस्थाबद्ध था। सनातनी बापूके सवालोंका जवाब नहीं दे सके, मगर वैद्यको तो पछाड़ दिया और बता दिया कि 'स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते' वाले श्लोक अछूतोंके लिअे नहीं, मगर साधारण जनसमूहके लिअे हैं और शौचप्रकरणके सिलसिलेमें हैं।

अछूतोंको निकाल देनेकी बात कहीं नहीं है — बापूके अिस विधानका जवाब शास्त्री न दे सके।

वैद्यकी स्थिति बड़ी दयाजनक थी। पछाड़ खाने पर भी कहते जाते थे कि मैं जवाब दूँगा, जवाब दूँगा और थोथा बचाव करते जाते थे। आखिरमें दिनके अन्तमें जब सुधारक शास्त्रियोंको दूसरे रोज़ अेक संयुक्त घोषणापत्र तैयार करनेका न्यौता दिया गया, तब बापूसे कानमें कहने लगे: "मैं कल नहीं आ सकूँगा; आया भी तो घोषणापत्र पर मुझसे दस्तखत नहीं हो सकेंगे, क्योंकि कानून बनानेके मामलेमें मेरी दूसरी ही स्थिति है!" फिर कहने लगे कि "आगमसे बने हुअे मंदिरोंमें मैं हरिजन-प्रवेशके पक्षमें नहीं हूँ"! हालाँकि आज तक अुसके पक्षमें दलीलें देते रहे हैं!

अैसा सुना था कि . . . बापूको सविनयभंग मुल्तवी करनेको समझाने आये हैं, मगर बापू कहने लगे: "अुनसे अैसा अेक भी वाक्य नहीं सुना। सिर्फ़ अेक बार अुन्होंने यह ज़रूर कहा था कि 'आप बाहर आ जायँ तो ओटावा बिल पर तो आप कैसी अच्छी लड़ाअी लड़ सकते हैं? . . . बेचारेका बूता ही क्या? दाँडी-कूचके समयके आपके भाषणोंने मुझे हिला दिया था। अुसी तरह अिस बार भी आप बाहर रहें, तो यह बिल बनने ही नहीं पाये।'

"मैंने अुन्हें समझाया कि आपको यह समझ लेना चाहिये कि मैं बाहर निकलूँ भी, तो अिस बिलके खिलाफ़ लड़नेकी शक्तियाँ खोकर निकलूँगा। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि अभी लोगोंमें जो खलबली मची है अुसके दो कारण हैं: (१) लोग डर गये हैं और अब कुछ करनेको सूझता नहीं है; (२) लोग सत्याग्रहके चमत्कार नहीं समझे हैं। मैं खुद ही अभी तक अुसका पूरा चमत्कार नहीं

शास्त्री — लेकिन कर्मसे अस्पृश्य और जन्मसिद्ध अस्पृश्यकी भ्रष्टतामें कोअी भेद नहीं है।

बापू — प्रायश्चित्त किसे करना है? चांडालको करना है या स्पृश्योंको?

वैद्य — बृहद्धारित स्मृति अठारह मान्य स्मृतियोंमें से नहीं है।

अिसके बाद सनातनियोंने वैद्यके सवालोंके जवाब दिये। अिसमें अुन्हें काफ़ी छकाया।

आनंदशंकर दूर बैठे-बैठे तमाशा देखते रहे। बूढ़ा गोते खा रहा था तब अुसे बचानेको न दौड़कर वे खिलखिलाकर हँसते रहे। आज अैसा मालूम होता था कि हमारा पक्ष अव्यवस्थित है, जब कि सनातनियोंका समूह व्यवस्थाबद्ध था। सनातनी बापूके सवालोंका जवाब नहीं दे सके, मगर वैद्यको तो पछाड़ दिया और बता दिया कि 'स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते' वाले श्लोक अछूतोंके लिअे नहीं, मगर साधारण जनसमूहके लिअे हैं और शौचप्रकरणके सिलसिलेमें हैं।

अछूतोंको निकाल देनेकी बात कहीं नहीं है — बापूके अिस विधानका जवाब शास्त्री न दे सके।

वैद्यकी स्थिति बड़ी दयाजनक थी। पछाड़ खाने पर भी कहते जाते थे कि मैं जवाब दूँगा, जवाब दूँगा और थोथा बचाव करते जाते थे। आखिरमें दिनके अन्तमें जब सुधारक शास्त्रियोंको दूसरे रोज़ अेक संयुक्त घोषणापत्र तैयार करनेका न्यौता दिया गया, तब बापूसे कानमें कहने लगे: "मैं कल नहीं आ सकूँगा; आया भी तो घोषणापत्र पर मुझसे दस्तखत नहीं हो सकेंगे, क्योंकि कानून बनानेके मामलेमें मेरी दूसरी ही स्थिति है!" फिर कहने लगे कि "आगमसे बने हुअे मंदिरोंमें मैं हरिजन-प्रवेशके पक्षमें नहीं हूँ"! हालाँकि आज तक अुसके पक्षमें दलीलें देते रहे हैं!

अैसा सुना था कि . . . बापूको सविनयभंग मुल्तवी करनेको समझाने आये हैं, मगर बापू कहने लगे: "अुनसे अैसा अेक भी वाक्य नहीं सुना। सिर्फ़ अेक बार अुन्होंने यह ज़रूर कहा था कि 'आप बाहर आ जायँ तो ओटावा बिल पर तो आप कैसी अच्छी लड़ाअी लड़ सकते हैं? . . . बेचारेका कहना ही क्या? दाँडी-कूचके समयके आपके भाषणोंने मुझे हिला दिया था। अुसी तरह अिस बार भी आप बाहर रहें, तो यह बिल बनने ही नहीं पाये।'

"मैंने अुन्हें समझाया कि आपको यह समझ लेना चाहिये कि मैं बाहर निकलूँ तो, तो अिस बिलके खिलाफ़ लड़नेकी शक्तियाँ खोकर निकलूँगा। मैंने अुन्हें यह भी समझाया कि अभी लोगोंमें जो खलबली मची है अुसके दो कारण हैं: (१) लोग डर गये हैं और अब कुछ करनेको सूझता नहीं है; (२) लोग सत्याग्रहके चमत्कार नहीं समझे हैं। मैं खुद ही अभी तक अुसका पूरा चमत्कार नहीं

आनंदशंकर — तब तो आप हिन्दुओंके हाथमें सत्ता आये, तब तक रुक ही क्यों न जायँ?

बापू — हाँ; मुझे आज कोओी यह बता दे कि मौजूदा प्रान्तीय और केन्द्रीय धारासभाके हिन्दू सदस्य अिस क़ानूनके विरुद्ध हैं, तो मैं अिस क़ानूनकी बात छोड़ देनेको तैयार हूँ।

शास्त्रियोंसे घोषणापत्र लेनेके लिअे बापूने मुद्दे लिख दिये :

(१) अस्पृश्योंके साथ जो बरताव सवर्ण करते हैं, अुसके लिअे हिन्दू धर्ममें क्या प्रमाण है?

(२) हिन्दू धर्ममें अस्पृश्यता है, मगर वह कर्मके कारण है, जन्मके कारण नहीं। अुसका निवारण शौचादिके नियम पालनेसे हो सकता है। दूसरे अस्पृश्य जन्मके कारण भी शास्त्रोंमें माने गये हैं, अैसे दृष्टान्त मिलते हैं। अैसे अस्पृश्योंका अस्तित्व आजकल समाजमें नहीं है। आजकल जिन्हें अस्पृश्य माना जाता है, वे अैसे अस्पृश्य नहीं हैं। तीसरे अस्पृश्य महापातक और अुसके जैसे पापोंके कारण बनते हैं। अिनकी अस्पृश्यता अिस जगह अप्रस्तुत है, क्योंकि अुसका अेक भी प्रत्यक्ष लक्षण नहीं है। अैसे अस्पृश्य सवर्णोंमें भी मिल जाते हैं। जो सर्वसामान्य अधिकार सवर्णोंको हैं, वे अवर्णोंको भी होने चाहियें। अिन लोगोंको मन्दिर-प्रवेशादि सब अधिकार होने चाहियें।

कृष्णन नायरके साथ जो लम्बी बातें कीं, अुनका आखिरी हिस्सा :

बापू — यदि कोओी मेरे दिमागकी गहराओी ढूँढ़नेकी कोशिश करेगा तो वह ठोकर खायेगा। वह तो तिजोरीमें पड़ी हुओी गुप्त चीज़ है। कोओी यह कल्पना करे कि मैं अमुकसे अमुक काम कराना चाहता हूँ, तो वह बड़ी भूल करता है। मेरा निर्णय अुसके लिअे अप्रस्तुत है। दूसरी बात। आजकल कांग्रेसका काम गुप्त रूपमें किया जाता है। यह आत्मघातक है। शुरूमें शायद मेरा मन अिसे पसन्द करनेकी तरफ़ झुकता। मगर मैंने अपनी भूल देख ली है।

यह बात प्रकाशित कर देता, मगर सरकार अिसका दुरुपयोग करे, अिसलिअे मैंने सरकारसे नहीं कहा। मैं जो बात यहाँ कहता हूँ, अुसे प्रकाशित करनेवाले मनुष्यको मैं मूर्ख ही कहूँगा।

अेक चीज़ खुल्लमखुल्ला करना और साथ ही दूसरी चीज़ छिपे तौर पर करना सत्याग्रहके नियमोंके विरुद्ध है। अगर सब चीज़ें खुले तौर पर की गओी होतीं, तो आज तुम जो शिथिलता आयी हुओी देखते हो, वह न आओी होती। छिपे तौर पर करना होता, तो मुझे अैसा करनेसे कौन रोकता था? मैं खुद ही छिपे तौर पर लड़ाओीका संचालन करनेके लिअे बाहर रहा होता, या श्यामजी कृष्ण वर्माकी तरह युरोपमें जाकर वहाँसे लड़ाओी चलाता। समुद्रमें डूब मरनेके

आनंदशंकर — तब तो आप हिन्दुओंके हाथमें सत्ता आये, तब तक रुक ही क्यों न जायँ ?

बापू — हाँ; मुझे आज कोअी यह बता दे कि मौजूदा प्रान्तीय और केन्द्रीय धारासभाके हिन्दू सदस्य अिस क़ानूनके विरुद्ध हैं, तो मैं अिस क़ानूनकी बात छोड़ देनेको तैयार हूँ।

शास्त्रियोंसे घोषणापत्र लेनेके लिअे बापूने मुद्दे लिख दिये :

(१) अस्पृश्योंके साथ जो बरताव सवर्ण करते हैं, अुसके लिअे हिन्दू धर्ममें क्या प्रमाण हैं ?

(२) हिन्दू धर्ममें अस्पृश्यता है, मगर वह कर्मके कारण है, जन्मके कारण नहीं। अुसका निवारण शौचादिके नियम पालनेसे हो सकता है। दूसरे अस्पृश्य जन्मके कारण भी शास्त्रोंमें माने गये हैं, अैसे दृष्टान्त मिलते हैं। अैसे अस्पृश्योंका अस्तित्व आजकल समाजमें नहीं है। आजकल जिन्हें अस्पृश्य माना जाता है, वे अैसे अस्पृश्य नहीं हैं। तीसरे अस्पृश्य महापातक और अुसके जैसे पापोंके कारण बनते हैं। अिनकी अस्पृश्यता अिस जगह अप्रस्तुत है, क्योंकि अुसका अेक भी प्रत्यक्ष लक्षण नहीं है। अैसे अस्पृश्य सवर्णोंमें भी मिल जाते हैं। जो सर्वसामान्य अधिकार सवर्णोंको हैं, वे अवर्णोंको भी होने चाहियें। अिन लोगोंको मन्दिर-प्रवेशादि सब अधिकार होने चाहियें।

कृष्णन नायरके साथ जो लम्बी बातें कीं, अुनका आखिरी हिस्सा :

बापू — यदि कोअी मेरे दिमागकी गहराअी ढूँढ़नेकी कोशिश करेगा तो वह ठोकर खायेगा। वह तो तिजोरीमें पड़ी हुअी गुप्त चीज़ है। कोअी यह कल्पना करे कि मैं अमुकसे अमुक काम कराना चाहता हूँ, तो वह बड़ी भूल करता है। मेरा निर्णय अुसके लिअे अप्रस्तुत है। दूसरी बात। आजकल कांग्रेसका काम गुप्त रूपमें किया जाता है। यह आत्मघातक है। शुरूमें शायद मेरा मन अिसे पसन्द करनेकी तरफ़ झुकता। मगर मैंने अपनी भूल देख ली है।

यह बात प्रकाशित कर देता, मगर सरकार अिसका दुरुपयोग करे, अिसलिअे मैंने सरकारसे नहीं कहा। मैं जो बात यहाँ कहता हूँ, अुसे प्रकाशित करनेवाले मनुष्यको मैं मूर्ख ही कहूँगा।

अेक चीज़ खुल्लमखुल्ला करना और साथ ही दूसरी चीज़ छिपे तौर पर करना सत्याग्रहके नियमोंके विरुद्ध है। अगर सब चीज़ें खुले तौर पर की गअी होतीं, तो आज तुम जो शिथिलता आयी हुअी देखते हो, वह न आअी होती। छिपे तौर पर करना होता, तो मुझे अैसा करनेसे कौन रोकता था ? मैं खुद ही छिपे तौर पर लड़ाअीका संचालन करनेके लिअे बाहर रहा होता, या श्यामजी कृष्ण वर्माकी तरह युरोपमें जाकर वहाँसे लड़ाअी चलाता। समुद्रमें डूब मरनेके

राजाजी — आपका सत्याग्रह तो आपके अपने लोगों और कार्यकर्ताओंके विरुद्ध था। अुसका अैसा असर भी होता, जिससे आपको और मुझे सन्तोष हो। मैं आशा रखता हूँ कि जिन्होंने आपके पक्षमें मत दिये हैं, अुनका आप खयाल करेंगे। अुनके अिस कामको आपके गारंटी मानना चाहिये। मगर अैसा बहुमत होने पर भी मन्दिर क्यों न खुले? ज़ामोरिन चाहे तो वह मन्दिर खोल सकता है। मगर कोअी भी अेक आदमी अुनके खिलाफ़ मनाहीका हुक्म ला सकता है। आप ज़ामोरिनके विरुद्ध सत्याग्रह नहीं करते। अिस काममें हमें सरकारी क़ानूनसे मदद मिलेगी। मगर अुसके लिअे आप अुपवास नहीं कर सकते। लोगोंका हृदय परिवर्तन करना था; सो जितना हो गया है, अुस हद तक यह मन्दिर खुल ही गया है। यह दुर्भाग्यकी बात है कि वस्तुतः वह नहीं खुला। मगर अुसके लिअे हमें मेहनत करनी चाहिये।

बापू — मुझे अिसमें शक नहीं कि गुरुवायुरके आसपासके लोगोंने मेहनत की है। क़ानूनके मामलेमें आपको अैसा नहीं लगता कि लोग अपने हक़ोंके मामलेमें सो रहे हैं और क़ानून बनवानेके लिअे मेहनत नहीं करते, अिसलिअे मंजूरी नहीं मिलती? आपने यह काम क्यों नहीं शुरू किया?

राजाजी — क्या हुआ अिसका वर्णन करूँगा, तो आपको अिसका जवाब मिल जायगा। गवर्नर अिस बातसे सहमत हो गये हैं और अुनकी अनुकूल रिपोर्टके साथ बिल गया है। मतगणना पूरी हो जाने तक हमने राह देखी, क्योंकि ज़्यादातर प्रश्नोंका अुत्तर अुसीसे मिल जाता था। मंजूरी हासिल करनेके लिअे अब हम अच्छी स्थितिमें हैं। हालाँकि, बहुत अच्छी हालतमें तो नहीं हैं, क्योंकि लोगोंका विरुद्ध प्रचार अभी जारी है और वह तो रहेगा ही।

बापू — तब मुझे आपके विरुद्ध अुपवास करना चाहिये। हृदय परिवर्तनके लिअे तो मैं अुपवास नहीं कर सकता।

राजाजी — लोकमत मन्दिर खोलनेके पक्षमें है, यह बात मतगणनासे मालूम हो गअी। मगर हमें यह सब बाक़ायदा और शान्तिसे करना है। लोगोंने आपत्ति की होती, तो भी मुझे लगता है कि मंजूरी तो ज़रूरी ही थी।

बापू — मतगणनामें क़ानूनकी माँग नहीं आती। क़ानूनकी माँग करनेसे लोकमत व्यक्त होता है।

राजाजी — देशभरमें आन्दोलन होगा। वाअिसरॉय मुश्किलें खड़ी कर रहा है, हमें भारत-मंत्रीसे अपील करनी पड़ेगी। मगर आप अुपवासकी तलवार सिर पर लटकती रखें, तो हम यह सब काम कैसे कर सकते हैं?

बापू — मुझे लाभालाभका विचार नहीं करना है। मेरे पास तो नैतिक कसौटी ही निर्णायक कसौटी है। मेरा रवैया यह है: आपको मुझे अुत्तम

राजाजी — आपका सत्याग्रह तो आपके अपने लोगों और कार्यकर्ताओंके विरुद्ध था। अुसका अैसा असर भी होता, जिससे आपको और मुझे सन्तोष हो। मैं आशा रखता हूँ कि जिन्होंने आपके पक्षमें मत दिये हैं, अुनका आप खयाल करेंगे। अुनके अिस कामको आपके गारंटी मानना चाहिये। मगर अैसा बहुमत होने पर भी मन्दिर क्यों न खुले? ज़ामोरिन चाहे तो वह मन्दिर खोल सकता है। मगर कोअी भी अेक आदमी अुनके खिलाफ़ मनाहीका हुक्म ला सकता है। आप ज़ामोरिनके विरुद्ध सत्याग्रह नहीं करते। अिस काममें हमें सरकारी क़ानूनसे मदद मिलेगी। मगर अुसके लिअे आप अुपवास नहीं कर सकते। लोगोंका हृदय परिवर्तन करना था; सो जितना हो गया है, अुस हद तक यह मन्दिर खुल ही गया है। यह दुर्भाग्यकी बात है कि वस्तुतः वह नहीं खुला। मगर अुसके लिअे हमें मेहनत करनी चाहिये।

बापू — मुझे अिसमें शक नहीं कि गुरुवायुरके आसपासके लोगोंने मेहनत की है। क़ानूनके मामलेमें आपको अैसा नहीं लगता कि लोग अपने हक़ोंके मामलेमें सो रहे हैं और क़ानून बनवानेके लिअे मेहनत नहीं करते, अिसलिअे मंजूरी नहीं मिलती? आपने यह काम क्यों नहीं शुरू किया?

राजाजी — क्या हुआ अिसका वर्णन करूँगा, तो आपको अिसका जवाब मिल जायगा। गवर्नर अिस बातसे सहमत हो गये हैं और अुनकी अनुकूल रिपोर्टके साथ बिल गया है। मतगणना पूरी हो जाने तक हमने राह देखी, क्योंकि ज़्यादातर प्रश्नोंका अुत्तर अुसीसे मिल जाता था। मंजूरी हासिल करनेके लिअे अब हम अच्छी स्थितिमें हैं। हालाँकि, बहुत अच्छी हालतमें तो नहीं हैं, क्योंकि लोगोंका विरुद्ध प्रचार अभी जारी है और वह तो रहेगा ही।

बापू — तब मुझे आपके विरुद्ध अुपवास करना चाहिये। हृदय परिवर्तनके लिअे तो मैं अुपवास नहीं कर सकता।

राजाजी — लोकमत मन्दिर खोलनेके पक्षमें है, यह बात मतगणनासे मालूम हो गअी। मगर हमें यह सब बाक़ायदा और शान्तिसे करना है। लोगोंने आपत्ति की होती, तो भी मुझे लगता है कि मंजूरी तो ज़रूरी ही थी।

बापू — मतगणनामें क़ानूनकी माँग नहीं आती। क़ानूनकी माँग करनेसे लोकमत व्यक्त होता है।

राजाजी — देशभरमें आन्दोलन होगा। वाअिसरॉय मुश्किलें खड़ी कर रहा है, हमें भारत-मंत्रीसे अपील करनी पड़ेगी। मगर आप अुपवासकी तलवार सिर पर लटकती रखें, तो हम यह सब काम कैसे कर सकते हैं?

बापू — मुझे लाभालाभका विचार नहीं करना है। मेरे पास तो नैतिक कसौटी ही निर्णायक कसौटी है। मेरा रवैया यह है: आपको मुझे अुत्तम

राजाजी — जब आपकी प्रतिज्ञा गुरुवायुरके मन्दिर तक ही सीमित है, तब तो मंजूरी मिलनेके साथ ही वह पूरी हो जाती है। मगर जिसे यह खोलनेकी सत्ता देनेका अधिकार है, वह अुस सत्ताको काममें न ले, तो आप कह सकते हैं कि यह काम कराना मेरी शक्तिके बाहर है।

बापू — नहीं; मैं तो जब प्रतिज्ञा पूरी होगी तभी अुपवासकी बात छोड़ूँगा। अुसकी भाषा आप मुझ पर छोड़ दीजिये। पहले तो हम यह निर्णय करें कि अुपवास अमुक मियादके लिअे मुल्तवी करना है या बेमियादके लिअे? गुरुवायुर मन्दिरके लिअे मेरी प्रतिज्ञा है। मुझसे अुपवास तो छोड़ा ही नहीं जा सकता। मुल्तवी करूँ, तो वह प्रतिज्ञाका अेक अंग हुआ। मुल्तवी न करूँ तो मेरी भूल होगी। सवाल यह है कि मुझे अुपवास निश्चित अवधि तक मुल्तवी करना चाहिये या अनिश्चित अवधि तक? मैं अुपवासकी बात छोड़ ही दूँ, तो यह प्रतिज्ञाके अक्षरोंके विरुद्ध जाता है और प्रतिज्ञाके भावके तो और भी विरुद्ध जाता है।

राजाजी — आप अनासक्तिकी बातें करते हैं। मगर आप यह कहें कि अमुक परिणाम न निकले तो मैं अपने प्राण दे दूँगा, अिससे ज़्यादा आसक्ति और क्या हो सकती है?

बापू — मैं यह कह सकता हूँ कि अुपवास मुल्तवी करता हूँ, क्योंकि मन्दिर खोलनेमें अैसी मुश्किलें हैं, जिनका अुपाय करना लोगोंके हाथमें नहीं है। अिन मुश्किलोंकी मैंने कल्पना कर ली थी। मैं कोअी तारीख निश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि यह अुपवास सरकारके खिलाफ नहीं है। मगर लोगोंको तो साफ़-साफ़ कह देना चाहिये कि मन्दिर खोलना ही पड़ेगा। मैं अपने प्रयोग पूरे कर लूँ और मेरा जीवन भी खतम हो जाय, अुसके बाद आप न्याय कर सकते हैं कि मैं सच्चा था या झूठा।

राजाजी — मगर मुझे कहना चाहिये कि अिस अुपवासकी बातसे सद्भाव फैलनेके बजाय बहुत दुर्भाव फैला है।

बापू — हाँ, वहीं मेरी अनासक्ति आ जाती है। अगर यह प्रतिज्ञा अीश्वर-प्रेरित होगी, तो ज़रूर सद्भाव फैलेगा।

राजाजी — अिसमें हमारी जो कसौटी हो रही है, अुसके आगे सविनय-भंगके दुःख तो कुछ भी नहीं हैं।

बापू — जो आदमी अुल्टे रास्ते चल पड़ा हो और फिर भी अपने ही विचार पर डटा रहे, तो वह झक्की कहलाता है और अुसके मित्रोंको अुसे समझाना चाहिये।

राजाजी — हाँ, आप दूसरोंकि बनिस्बत कम झक्की हैं।

राजाजी — जब आपकी प्रतिज्ञा गुरुवायुरके मन्दिर तक ही सीमित है, तब तो मंजूरी मिलनेके साथ ही वह पूरी हो जाती है। मगर जिसे यह खोलनेकी सत्ता देनेका अधिकार है, वह अुस सत्ताको काममें न ले, तो आप कह सकते हैं कि यह काम कराना मेरी शक्तिके बाहर है।

बापू — नहीं; मैं तो जब प्रतिज्ञा पूरी होगी तभी अुपवासकी बात छोड़ूँगा। अुसकी भाषा आप मुझ पर छोड़ दीजिये। पहले तो हम यह निर्णय करें कि अुपवास अमुक मियादके लिअे मुल्तवी करना है या बेमियादके लिअे? गुरुवायुर मन्दिरके लिअे मेरी प्रतिज्ञा है। मुझसे अुपवास तो छोड़ा ही नहीं जा सकता। मुल्तवी करूँ, तो वह प्रतिज्ञाका अेक अंग हुआ। मुल्तवी न करूँ तो मेरी भूल होगी। सवाल यह है कि मुझे अुपवास निश्चित अवधि तक मुल्तवी करना चाहिये या अनिश्चित अवधि तक? मैं अुपवासकी बात छोड़ ही दूँ, तो यह प्रतिज्ञाके अक्षरोंके विरुद्ध जाता है और प्रतिज्ञाके भावके तो और भी विरुद्ध जाता है।

राजाजी — आप अनासक्तिकी बातें करते हैं। मगर आप यह कहें कि अमुक परिणाम न निकले तो मैं अपने प्राण दे दूँगा, अिससे ज़्यादा आसक्ति और क्या हो सकती है?

बापू — मैं यह कह सकता हूँ कि अुपवास मुल्तवी करता हूँ, क्योंकि मन्दिर खोलनेमें अैसी मुश्किलें हैं, जिनका अुपाय करना लोगोंके हाथमें नहीं है। अिन मुश्किलोंकी मैंने कल्पना कर ली थी। मैं कोअी तारीख निश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि यह अुपवास सरकारके खिलाफ नहीं है। मगर लोगोंको तो साफ़-साफ़ कह देना चाहिये कि मन्दिर खोलना ही पड़ेगा। मैं अपने प्रयोग पूरे कर लूँ और मेरा जीवन भी खतम हो जाय, अुसके बाद आप न्याय कर सकते हैं कि मैं सच्चा था या झूठा।

राजाजी — मगर मुझे कहना चाहिये कि अिस अुपवासकी बातसे सद्भाव फैलनेके बजाय बहुत दुर्भाव फैला है।

बापू — हाँ, वहीं मेरी अनासक्ति आ जाती है। अगर यह प्रतिज्ञा अीश्वर-प्रेरित होगी, तो ज़रूर सद्भाव फैलेगा।

राजाजी — अिसमें हमारी जो कसौटी हो रही है, अुसके आगे सविनय-भंगके दुःख तो कुछ भी नहीं हैं।

बापू — जो आदमी अुल्टे रास्ते चल पड़ा हो और फिर भी अपने ही विचार पर डटा रहे, तो वह झक्की कहलाता है और अुसके मित्रोंको अुसे समझाना चाहिये।

राजाजी — हाँ, आप दूसरोंके बनिस्बत कम झक्की हैं।

बापू — यह वस्तु गूढ़ ही है। क्या आप जानते हैं कि अध्यात्मके यात्रीको शंका-कुशंकाओंकी कितनी मंजिलें पार करनी पड़ती हैं?

राजाजी — किसी भी चीज़को सच साबित करनेके लिअे कोअी भी मनुष्य शास्त्रोंके वचन अुद्धृत कर सकता है।

आपने चिनगारी रख दी है। अब ज़रा अिसे अवकाश दीजिये। वैसे आप अिस तरहकी गूढ़ भाषामें बातें करेंगे, तब तो अिसका अन्त ही नहीं आयेगा।

बापू — अैसी बातें तो मैं आपके ही साथ करता हूँ। कहीं सबके साथ होती हैं? विलायतमें अेक शुक्ल था। वह मांसाहारकी अुपयोगिता समझानेके लिअे मेरे सामने बेन्थनके पोथेके पोथे लेकर बहस करने लगा था। मैंने कह दिया कि तुम्हारे साथ मैं बहसमें नहीं पड़ सकता। मगर यहाँ यह बात नहीं। मुझे नहीं लगता कि मैंने अुपवासको सस्ता बना दिया है। मुझे तो जब हृदय कहता है कि तुझे अैसा करना ही चाहिये, तब मैं वैसा करता हूँ।

आप जानते हैं कि अिस गुरुवायुरके अुपवासके लिअे असली ज़िम्मेदार तो आप ही हैं।

मैंने (महादेवभाअीने) कहा — वल्लभभाअी तो हमेशा कहते हैं कि यह अुपवास राजाजीने ही मत्थे मढ़ा है।

फिर बापूने सारी परिस्थिति समझाअी और राजाजीसे कहने लगे: "आपने मुझसे कहा कि केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने तार दिया। वह तार भी आपकी ही प्रेरणासे दिया था। आपने ही कहा था कि तार अभी देना चाहिये। मुझे यदि अपना अभिमान होता तब तो मैं बुद्धिका अुपयोग करता। मगर मैं तो हर क्षण अीश्वर जैसा कराता है वैसा करता हूँ। जब गोलमेज़ परिषदमें मैंने कहा था कि अलग निर्वाचनका मैं जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा, तब मैं यह नहीं जानता था कि अपनी अिस प्रतिज्ञाका पालन किस तरह करूँगा।"

केलप्पनने पूछा — कितने ही मित्र अिस अुपवासका अनुकरण करनेकी धमकी दे रहे हैं, तो क्या मैं अुपवास छोड़ भी सकता हूँ।

बापू — नहीं, नहीं। मगर मैं तुमसे अितना कहूँगा कि राजाजी जो कहते हैं वह तुम्हें सही लगता हो, तो तुम अुपवास छोड़ सकते हो। मैं तो कहूँगा कि मैं अुपवासकी बात छोड़ नहीं सकता, मुल्तवी ज़रूर कर सकता हूँ।

बापू — यह वस्तु गूढ़ ही है। क्या आप जानते हैं कि अध्यात्मके यात्रीको शंका-कुशंकाओंकी कितनी मंजिलें पार करनी पड़ती हैं?

राजाजी — किसी भी चीज़को सच साबित करनेके लिअे कोअी भी मनुष्य शास्त्रोंके वचन अुद्धृत कर सकता है।

आपने चिनगारी रख दी है। अब ज़रा अिसे अवकाश दीजिये। वैसे आप अिस तरहकी गूढ़ भाषामें बातें करेंगे, तब तो अिसका अन्त ही नहीं आयेगा।

बापू — अैसी बातें तो मैं आपके ही साथ करता हूँ। क़हीं सबके साथ होती हैं? विलायतमें अेक शुक्ल था। वह मांसाहारकी अुपयोगिता समझानेके लिअे मेरे सामने बेन्थनके पोथेके पोथे लेकर बहस करने लगा था। मैंने कह दिया कि तुम्हारे साथ मैं बहसमें नहीं पड़ सकता। मगर यहाँ यह बात नहीं। मुझे नहीं लगता कि मैंने अुपवासको सस्ता बना दिया है। मुझे तो जब हृदय कहता है कि तुझे अैसा करना ही चाहिये, तब मैं वैसा करता हूँ।

आप जानते हैं कि अिस गुरुवायुरके अुपवासके लिअे असली ज़िम्मेदार तो आप ही हैं।

मैंने (महादेवभाअीने) कहा — वल्लभभाअी तो हमेशा कहते हैं कि यह अुपवास राजाजीने ही मत्थे मढ़ा है।

फिर बापूने सारी परिस्थिति समझाअी और राजाजीसे कहने लगे: "आपने मुझसे कहा कि केलप्पनको बचाना चाहिये। मैंने तार दिया। वह तार भी आपकी ही प्रेरणासे दिया था। आपने ही कहा था कि तार अभी देना चाहिये। मुझे यदि अपना अभिमान होता तब तो मैं बुद्धिका अुपयोग करता। मगर मैं तो हर क्षण अीश्वर जैसा कराता है वैसा करता हूँ। जब गोलमेज़ परिषदमें मैंने कहा था कि अलग निर्वाचनका मैं जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा, तब मैं यह नहीं जानता था कि अपनी अिस प्रतिज्ञाका पालन किस तरह करूँगा।"

केलप्पनने पूछा — कितने ही मित्र अिस अुपवासका अनुकरण करनेकी धमकी दे रहे हैं, तो क्या मैं अुपवास छोड़ भी सकता हूँ।

बापू — नहीं, नहीं। मगर मैं तुमसे अितना कहूँगा कि राजाजी जो कहते हैं वह तुम्हें सही लगता हो, तो तुम अुपवास छोड़ सकते हो। मैं तो कहूँगा कि मैं अुपवासकी बात छोड़ नहीं सकता, मुल्तवी ज़रूर कर सकता हूँ।

है कि हम सही तरीके पर अस्पृश्यता मिटा दें, तो अिसमें हिन्दू समाजकी मुक्ति है। नहीं तो सवर्ण हिन्दू और कथित अस्पृश्योंके बीच तुमुल युद्ध होगा। अछूत पागलपन और द्वेषसे लड़ेंगे और निराश होकर पृथ्वीतल परसे हिन्दू धर्मका नाश करनेकी कोशिश करेंगे। वे हिन्दू धर्मसे अिनकार नहीं करेंगे। अिसी तरह दूसरा धर्म भी अंगीकार नहीं करेंगे। मगर अीश्वरसे अिनकार करेंगे। ब्राह्मण-अब्राह्मणके झगड़ेसे भी यह झगड़ा ज्यादा भयंकर होगा। क्योंकि अछूतोंको ज्यादा कष्ट होता है। मेरा अुपवास अैसे झगड़ेको रोकता है, हालाँकि मैं जानता नहीं। शायद अुसका असर न भी हो। मगर मैं यह अुपवास ढूँढ़ने नहीं गया था। मैं तो बिस्तरमें पड़ा-पड़ा सरकारके अेक भद्दे प्रस्तावका विचार कर रहा था कि तुम्हारा प्रश्न मेरे सामने आया और मैं अुसमें कूद पड़ा। अुस समय मैं नहीं जानता था कि अिसमें अुपवासकी बात आ जायगी। तुमने मुझे सारी हकीकत बताअी, यह तुम्हारे लिअे बिलकुल अुचित था। अिसी तरह दूसरे मित्रोंने तार दिये, यह भी अुनके लिअे ठीक ही था। जो कुछ भी हुआ, सो सब ठीक ही हुआ है।

अमरेलीके आखिरी कहे जानेवाले समाचार सुनकर बापू बोले: "मालूम होता है ये सनातनी अपने असली रूपमें प्रकट हो रहे हैं। अब तक अैसी भद्दी अतिशयोक्ति सरकारके खिलाफ़ थी, अब हमारे विरुद्ध हो रही है। सनातनी यहाँ तक बढ़ जायँगे, यह देखकर मुझे जो वेदना हो रही है, अुसकी तुम्हें कल्पना नहीं हो सकती। यह आदमी लिखता है कि जो धर्म और मन्दिरोंको भ्रष्ट कर रहे हैं, अुन्हें सज़ा देनेको अीश्वर अवतार धारण करेगा। अिसे लगता है कि वह खुद हिन्दू धर्मकी रक्षा कर रहा है। मगर वह क्या कर रहा है, अिसका अुसे खुदको पता नहीं और अपने कार्यके समर्थनमें महाभारतके वचन अुद्धृत करता है। महाभारत तो मनुष्य-जातिका सनातन अितिहास है। वह तो रत्नोंकी खान है। खानमें तो रत्नोंके साथ पत्थर भी मिलते हैं।"

राजाजी — मैं आपसे जो कहना चाहता हूँ वह तो यह है कि आपको शक्तिका संग्रह करना चाहिये। अुसका बड़ा मूल्य है।

बापू — संग्रह नहीं, मगर कंजूसकी तरह काममें लेना चाहिये। मगर कभी-कभी कंजूस भी अपना धन अुड़ाअूकी तरह खर्च करता है।

राजाजी — अिस तरह गोल-गोल चक्करमें बहस करना तो आसान है।

बापू — मेरी तो प्रतीति बढ़ती जा रही है कि मेरा यह अुपवास आखिरी नहीं हो सकता। मेरे पीछे मेरी तरह हज़ारों मनुष्योंको प्राण निछावर करने पड़ेंगे। मद्रासके 'वेद धर्म' ने अनशनके समर्थनमें प्राचीन वचन अिकट्ठे किये हैं।

है कि हम सही तरीके पर अस्पृश्यता मिटा दें, तो अिसमें हिन्दू समाजकी मुक्ति है। नहीं तो सवर्ण हिन्दू और कथित अस्पृश्योंके बीच तुमुल युद्ध होगा। अछूत पागलपन और द्वेषसे लड़ेंगे और निराश होकर पृथ्वीतल परसे हिन्दू धर्मका नाश करनेकी कोशिश करेंगे। वे हिन्दू धर्मसे अिनकार नहीं करेंगे। अिसी तरह दूसरा धर्म भी अंगीकार नहीं करेंगे। मगर अीश्वरसे अिनकार करेंगे। ब्राह्मण-अब्राह्मणके झगड़ेसे भी यह झगड़ा ज्यादा भयंकर होगा। क्योंकि अछूतोंको ज्यादा कष्ट होता है। मेरा अुपवास अैसे झगड़ेको रोकता है, हालाँकि मैं जानता नहीं। शायद अुसका असर न भी हो। मगर मैं यह अुपवास ढूँढ़ने नहीं गया था। मैं तो बिस्तरमें पड़ा-पड़ा सरकारके अेक भद्दे प्रस्तावका विचार कर रहा था कि तुम्हारा प्रश्न मेरे सामने आया और मैं अुसमें कूद पड़ा। अुस समय मैं नहीं जानता था कि अिसमें अुपवासकी बात आ जायगी। तुमने मुझे सारी हकीकत बताअी, यह तुम्हारे लिअे बिलकुल अुचित था। अिसी तरह दूसरे मित्रोंने तार दिये, यह भी अुनके लिअे ठीक ही था। जो कुछ भी हुआ, सो सब ठीक ही हुआ है।

अमरेलीके आखिरी कहे जानेवाले समाचार सुनकर बापू बोले: "मालूम होता है ये सनातनी अपने असली रूपमें प्रकट हो रहे हैं। अब तक अैसी भद्दी अतिशयोक्ति सरकारके खिलाफ़ थी, अब हमारे विरुद्ध हो रही है। सनातनी यहाँ तक बढ़ जायँगे, यह देखकर मुझे जो वेदना हो रही है, अुसकी तुम्हें कल्पना नहीं हो सकती। यह आदमी लिखता है कि जो धर्म और मन्दिरोंको भ्रष्ट कर रहे हैं, अुन्हें सज़ा देनेको अीश्वर अवतार धारण करेगा। अिसे लगता है कि वह खुद हिन्दू धर्मकी रक्षा कर रहा हैं। मगर वह क्या कर रहा है, अिसका अुसे खुदको पता नहीं और अपने कार्यके समर्थनमें महाभारतके वचन अुद्धृत करता है। महाभारत तो मनुष्य-जातिका सनातन अितिहास है। वह तो रत्नोंकी खान है। खानमें तो रत्नोंके साथ पत्थर भी मिलते हैं।"

राजाजी — मैं आपसे जो कहना चाहता हूँ वह तो यह है कि आपको शक्तिका संग्रह करना चाहिये। अुसका बड़ा मूल्य है।

बापू — संग्रह नहीं, मगर कंजूसकी तरह काममें लेना चाहिये। मगर कभी-कभी कंजूस भी अपना धन अुड़ाअूकी तरह खर्च करता है।

राजाजी — अिस तरह गोल-गोल चक्करमें बहस करना तो आसान है।

बापू — मेरी तो प्रतीति बढ़ती जा रही है कि मेरा यह अुपवास आखिरी नहीं हो सकता। मेरे पीछे मेरी तरह हज़ारों मनुष्योंको प्राण निछावर करने पड़ेंगे। मद्रासके 'वेद धर्म' ने अनशनके समर्थनमें प्राचीन वचन अिकट्ठे किये हैं।

बापू — हमें तो सदा जागते रहना है। पता लगते ही फ़ौरन चेत जायँ।

केलप्पन — मुझे कोअी बहस नहीं करनी है। मुझे कितना दुःख होता है, वह आप नहीं समझ सकते।

बापू — मैं सब समझता हूँ। मगर कलेजा कड़ा कर लिया है। अिस गुरुवायुरके मामलेमें हम सब अुलझे हुअे हैं। अिससे हम छूट नहीं सकते। यदि हम छूटनेकी कोशिश करें तो वह बहुत बुरा होगा। गुरुवायुर तो हवाका रुख बतानेवाला तिनका है। आजकल सनातनी गन्देसे गन्दे अुपाय काममें ले रहे हैं। अिन लोगोंका कोअी सिद्धान्त नहीं है। अिनके कितने ही काम तो अितने भद्दे हैं कि अुन पर मानहानिका दावा किया जा सकता है। शंकराचार्य आज नामके ही शंकराचार्य हैं। वे अपनी गद्दीको लजाते हैं। हमारे सामने अेक बात कह जाते हैं और खुलेमें दूसरी ही बात कहते हैं।

गुरुवायुरके मामलेमें तुम्हें यह देखते रहना है कि जिन्होंने तुम्हें हस्ताक्षर दिये हैं, वे कहीं वहाँ भी तो हस्ताक्षर नहीं करते? तुम्हें घोषणाअें निकालनी चाहियें। अर्ज़ियाँ भेजनी चाहियें। ज़ामोरिनको अभी छेड़नेकी ज़रूरत नहीं। अिस मंडलीमें ज़ामोरिन अुत्तम मनुष्य है। वह चारित्र्यवान है। अपनी समझके अनुसार वह काम कर रहा है।

शेशु आयर, अेक गणितशास्त्री और अुसकी गणितशास्त्री पुत्री।

शेशु — आपसे मिलने आया हूँ, क्योंकि आप 'यस्मान्नोद्विजते लोको' वाले श्लोकके दृष्टान्त हैं। मैं अस्पृश्यता निवारणको मानता हूँ। संस्थाओंको मदद देता हूँ। मगर आप जिस तेज़ीसे यह काम करना चाहते हैं, अुसमें मेरा विश्वास नहीं है। क्योंकि अिससे बड़ा कलह होनेकी सम्भावना है। मैं चाहता हूँ कि मेलसे काम हो। अुपवास तो बलात्कार है। सवाल यह नहीं है कि आप क्या चाहते हैं, मगर यह है कि लोग अिसे क्या समझते हैं। यह बात ही अैसी है कि अुसके लिअे समय चाहिये। आपको मनुष्योंसे काम लेना है। अुनके साथ धीरज रखना चाहिये। जल्दबाज़ीसे काम बिगड़ेगा। हमने तो सुना था कि केलप्पन छिपे तौर पर खाते थे।

बापू — तब तो अुनके अुपवाससे आपको कोअी कष्ट नहीं था। अैसे अुपवासका कोअी असर ही नहीं पड़ता। आप तो गणितशास्त्री हैं, अिसलिअे गणितकी रीतिसे समझ सकते हैं कि अैसे अुपवासोंसे लोगों पर कोअी दबाव नहीं पड़ता।

मन्दिरमें सचमुच जानेवालोंके ही मत लिये गये हों, तो यह मतगणना सच्ची मानी जायगी।

बापू — इमें तो सदा जागते रहना है। पता लगते ही फ़ौरन चेत जायँ।

केलप्पन — मुझे कोअी बहस नहीं करनी है। मुझे कितना दुःख होता है, वह आप नहीं समझ सकते।

बापू — मैं सब समझता हूँ। मगर कलेजा कड़ा कर लिया है। अिस गुरुवायुरके मामलेमें हम सब अुलझे हुअे हैं। अिससे हम छूट नहीं सकते। यदि हम छूटनेकी कोशिश करें तो वह बहुत बुरा होगा। गुरुवायुर तो हवाका रुख बतानेवाला तिनका है। आजकल सनातनी गन्देसे गन्दे अुपाय काममें ले रहे हैं। अिन लोगोंका कोअी सिद्धान्त नहीं है। अिनके कितने ही काम तो अितने भद्दे हैं कि अुन पर मानहानिका दावा किया जा सकता है। शंकराचार्य आज नामके ही शंकराचार्य हैं। वे अपनी गद्दीको लजाते हैं। हमारे सामने अेक बात कह जाते हैं और खुलेमें दूसरी ही बात कहते हैं।

गुरुवायुरके मामलेमें तुम्हें यह देखते रहना है कि जिन्होंने तुम्हें हस्ताक्षर दिये हैं, वे कहीं वहाँ भी तो हस्ताक्षर नहीं करते? तुम्हें घोषणाअें निकालनी चाहियें। अर्ज़ियाँ भेजनी चाहियें। ज़ामोरिनको अभी छेड़नेकी ज़रूरत नहीं। अिस मंडलीमें ज़ामोरिन अुत्तम मनुष्य है। वह चारित्र्यवान है। अपनी समझके अनुसार वह काम कर रहा है।

शेशु आयर, अेक गणितशास्त्री और अुसकी गणितशास्त्री पुत्री।

शेशु — आपसे मिलने आया हूँ, क्योंकि आप 'यस्मान्नोद्विजते लोको' वाले श्लोकके दृष्टान्त हैं। मैं अस्पृश्यता निवारणको मानता हूँ। संस्थाओंको मदद देता हूँ। मगर आप जिस तेज़ीसे यह काम करना चाहते हैं, अुसमें मेरा विश्वास नहीं है। क्योंकि अिससे बड़ा कलह होनेकी सम्भावना है। मैं चाहता हूँ कि मेलसे काम हो। अुपवास तो बलात्कार है। सवाल यह नहीं है कि आप क्या चाहते हैं, मगर यह है कि लोग अिसे क्या समझते हैं। यह बात ही अैसी है कि अुसके लिअे समय चाहिये। आपको मनुष्योंसे काम लेना है। अुनके साथ धीरज रखना चाहिये। जल्दबाज़ीसे काम बिगड़ेगा। हमने तो सुना था कि केलप्पन छिपे तौर पर खाते थे।

बापू — तब तो अुनके अुपवाससे आपको कोअी कष्ट नहीं था। अैसे अुपवासका कोअी असर ही नहीं पड़ता। आप तो गणितशास्त्री हैं, अिसलिअे गणितकी रीतिसे समझ सकते हैं कि अैसे अुपवासोंसे लोगों पर कोअी दबाव नहीं पड़ता।

मन्दिरमें सचमुच जानेवालोंके ही मत लिये गये हों, तो यह मतगणना सच्ची मानी जायगी।

मद्रासमें ओीसाओी बने हुओे अछूतोंके साथ ओीसाओी देवालयोंमें भी अस्पृश्यता रखते हैं। अुन्हें दूर रखनेके लिओे कठघरे बना

३०-१२-'३२ दिये हैं। आज पढ़नेमें आया कि अुसके विरोधमें कुछ ओीसाअियोंने मद्रासके बिशपको अनशन करनेका नोटिस दिया है। बापूको यह मनोरंजक लगा।

वल्लभभाओी — वे कठघरोंको क्यों नहीं अुखाड़ देते?

बापू — शायद आपके खयालसे तो यह अहिंसा ही होगी?

वल्लभभाओी — अिन कठघरोंको अुखाड़कर क्या वे किसीको मारेंगे? अुखाड़कर फेंक देनेकी ही तो बात है!

'ज्ञानप्रकाश' में यह पढ़कर कि दो शास्त्री पूनामें वेदसंहिताका पारायण करते-करते ग्यारह दिनका अनुष्ठान कर रहे हैं, बापूने अिन लोगोंको लिखा कि: "अगर आप मेरे विरोधमें अैसा कर रहे हों, तो आपने मुझे तो अिस बारेमें नहीं लिखा। मगर मेरे ख़िलाफ़ न हो और केवल भूतमात्रके प्रति करुणासे प्रेरित होकर और हिन्दू धर्मकी रक्षाकी खातिर अैसा किया हो, तो आपकी तपश्चर्यासे हिन्दू धर्मका श्रेय हो।"

अिस पर वल्लभभाओी कहने लगे: 'जब सैकड़ों हिन्दू ओीसाओी और मुसलमान हो गये, तब ये अनुष्ठान करनेवाले कहाँ चले गये थे?'

बापूका अुपवास सम्बन्धी बयान तैयार हुआ। अिस पर खूब चर्चा करके राजगोपालाचार्यके साथ बैठकर अेकबार फिर सारा जाँच लिया। अिसमें अेक जगह अुस प्रस्तावका अुल्लेख था, जो बापूने पूना-करार पर हस्ताक्षर करनेवालोंकी बम्बअीमें सभा करके पास किया था। बापूको अैसा मालूम था कि यह प्रस्ताव बिड़लाके दफ़्तरमें होगा। मेरा खयाल था कि 'अेपिक फास्ट' में से निकाल लेंगे। मगर राजाजीने कहा: "अिस प्रस्तावकी नकल कहीं नहीं है। मद्रासमें जब-जब मैंने अिस प्रस्तावकी और मन्दिर-प्रवेशकी बात कही है, तब-तब लोगोंने मुझसे कहा है कि तुम यह घरकी बात कर रहे हो। सच बात यह है कि यह प्रस्ताव पूरा किसी भी अखबारमें नहीं आया। अुसकी नक़ल मैंने बिड़लासे और जयसुखलालसे मँगवाओी तो नहीं मिली, और आज मुझे अुसे तैयार करना पड़ रहा है! मगर अिसके लिओे भी बापूने खुद जो समझौता तैयार किया था अुसकी नक़ल चाहिये। वह नक़ल हो, तो चूँकि मैंने अुसे तैयार किया था, अिसलिओे अुस परसे वही की वही भाषा मैं लिख सकूँगा।"

मैंने कहा: "फिर भी वह भाषा अैसी तो नहीं हो सकती, जिसे अवतरण चिन्होंमें रखा जा सके! अिसलिओे हमें यह लिखना चाहिये कि अिस आशयका प्रस्ताव हुआ था।" हमने अैसा ही किया। राजाजीको खयाल आया कि सब

मद्रासमें अीसाअी बने हुअे अछूतोंके साथ अीसाअी देवालयोंमें भी अस्पृश्यता रखते हैं। अुन्हें दूर रखनेके लिअे कठघरे बना

३०–१२–'३२ दिये हैं। आज पढ़नेमें आया कि अुसके विरोधमें कुछ अीसाअियोंने मद्रासके बिशपको अनशन करनेका नोटिस दिया है। बापूको यह मनोरंजक लगा।

वल्लभभाअी — वे कठघरोंको क्यों नहीं अुखाड़ देते?

बापू — शायद आपके खयालसे तो यह अहिंसा ही होगी?

वल्लभभाअी — अिन कठघरोंको अुखाड़कर क्या वे किसीको मारेंगे? अुखाड़कर फेंक देनेकी ही तो बात है!

'ज्ञानप्रकाश' में यह पढ़कर कि दो शास्त्री पूनामें वेदसंहिताका पारायण करते-करते ग्यारह दिनका अनुष्ठान कर रहे हैं, बापूने अिन लोगोंको लिखा कि: "अगर आप मेरे विरोधमें अैसा कर रहे हों, तो आपने मुझे तो अिस बारेमें नहीं लिखा। मगर मेरे खिलाफ़ न हो और केवल भूतमात्रके प्रति करुणासे प्रेरित होकर और हिन्दू धर्मकी रक्षाकी खातिर अैसा किया हो, तो आपकी तपश्चर्यासे हिन्दू धर्मका श्रेय हो।"

अिस पर वल्लभभाअी कहने लगे: 'जब सैकड़ों हिन्दू अीसाअी और मुसलमान हो गये, तब ये अनुष्ठान करनेवाले कहाँ चले गये थे?'

बापूका अुपवास सम्बन्धी बयान तैयार हुआ। अिस पर खूब चर्चा करके राजगोपालाचार्यके साथ बैठकर अेकबार फिर सारा जाँच लिया। अिसमें अेक जगह अुस प्रस्तावका अुल्लेख था, जो बापूने पूना-करार पर हस्ताक्षर करनेवालोंकी बम्बअीमें सभा करके पास किया था। बापूको अैसा मालूम था कि यह प्रस्ताव बिड़लाके दफ़्तरमें होगा। मेरा खयाल था कि 'अेपिक फास्ट' में से निकाल लेंगे। मगर राजाजीने कहा: "अिस प्रस्तावकी नकल कहीं नहीं है। मद्रासमें जब-जब मैंने अिस प्रस्तावकी और मन्दिर-प्रवेशकी बात कही है, तब-तब लोगोंने मुझसे कहा है कि तुम यह घरकी बात कर रहे हो। सच बात यह है कि यह प्रस्ताव पूरा किसी भी अखबारमें नहीं आया। अुसकी नक़ल मैंने बिड़लासे और जयसुखलालसे मँगवाअी तो नहीं मिली, और आज मुझे अुसे तैयार करना पड़ रहा है! मगर अिसके लिअे भी बापूने खुद जो समझौता तैयार किया था अुसकी नक़ल चाहिये। वह नक़ल हो, तो चूँकि मैंने अुसे तैयार किया था, अिसलिअे अुस परसे वही की वही भाषा मैं लिख सकूँगा।"

मैंने कहा: "फिर भी वह भाषा अैसी तो नहीं हो सकती, जिसे अवतरण चिन्होंमें रखा जा सके! अिसलिअे हमें यह लिखना चाहिये कि अिस आशयका प्रस्ताव हुआ था।" हमने अैसा ही किया। राजाजीको खयाल आया कि सब

दर्शनशास्त्री है। मगर वह बेचारा अिस तरह व्यवहार करता था मानो कुछ जानता ही नहीं। बापूने अुसका परिचय माँगा तो अेक पत्र लिख कर दे गया। वह विहारकी नम्रताकी मूर्ति है।

अिन लोगोंके सामने राजाजीकी भक्ति दूसरी ही तरहकी थी।

चिन्तामणराव वैद्यको राजाजी मद्रास प्रान्तमें ले जाना जाहते थे। वैद्य बाबा बोले: "नहीं भाअी, वहाँ मद्रासके पंडित-शास्त्रियोंका मुक़ाबला मुझसे नहीं हो सकता। अुन लोगोंके अजीब दिमाग़ हैं। देखिये न ये राजगोपालाचार्य, क्या अिनकी दलीलोंकी कोअी बराबरी कर सकता है? कल अुन्होंने जो भाषण दिया, अुसमें अेकके बाद अेक कड़ी कसकर बिठाते गये और अेक अटूट ज़ंजीर बना दी। अुन दलीलोंका जवाब कौन दे सकता है?

वही राजगोपालाचार्य अनशन वगैराके बारेमें बापूसे लड़ते-झगड़ते हैं और अन्तमें बुद्धिसे नहीं, पर हृदयसे बापूकी बात मानकर जाते हैं, और अुसके लिअे फिर अपनी अकाट्य युक्तियाँ अुपस्थित करते हैं!

रामानुजम् गणित-शास्त्रीको प्रसिद्धि देनेमें अुनका हाथ था। जब मैंने यह सुना तो अुनसे पूछा: "आपका अैच्छिक विषय क्या था, गणित?"

राजाजी बोले: "नहीं भाअी, भौतिक विज्ञान था। मगर यह कहिये कि मेरा कोअी अैच्छिक विषय—था ही नहीं। मेरा अैच्छिक विषय अपनी अिच्छाओंको परवश बनाकर चलनेका था।"

बापूके साथ आज भी बार-बार तर्क करते थे कि अुपवासका विचार छोड़ दीजिये। वचन माँगते थे कि अब लम्बे समय तक अुपवास नहीं करेंगे।

बापूने हँसते-हँसते कहा: "तीन वर्ष तक न करूँ तो!" मगर बापू सब हँसीमें अुड़ा रहे थे और राजाजीको शंका बनी ही रही। वाअिसरॉयके तारमें यानी ठेठ आखिरी लेखमें फिर यह बात आकर खड़ी हो गअी थी!

जाते-जाते कहा: "बापूसे कह दो कि अब हमसे पूछे बिना अुपवास किया, तो हम अुस पर कोअी ध्यान नहीं देंगे।" बादमें बापूसे कहने लगे: "बा ने मुझसे आपके विरुद्ध अेक शिकायत की है। बा मुझे हमेशा पूछती हैं कि 'हम असहयोग करते हैं, तब फिर यह वाअिसरॉयको तार कैसा और बिल मंजूर करानेकी प्रार्थना करनेवाले प्रस्ताव कैसे?'"

बापू बोले: "यों कहिये न कि आपको ही यह खटकता है! बेचारी बा पर क्यों डालते हैं?"

बा सामने ही बैठी थीं। राजाजीने बा से गवाही दिलवाअी। बा ने तुरन्त कहा: "हाँ, हम यह कैसे कर सकते हैं?"

राजाजी कहने लगे: "बहुतसे लोग पूछते हैं।"

दर्शनशास्त्री है । मगर वह बेचारा अिस तरह व्यवहार करता था मानो कुछ जानता ही नहीं । बापूने अुसका परिचय माँगा तो अेक पत्र लिख कर दे गया । वह बिहारकी नम्रताकी मूर्ति है ।

अिन लोगोंके सामने राजाजीकी भक्ति दूसरी ही तरहकी थी ।

चिन्तामणराव वैद्यको राजाजी मद्रास प्रान्तमें ले जाना जाहते थे । वैद्य बाबा बोले: "नहीं भाअी, वहाँ मद्रासके पंडित-शास्त्रियोंका मुक़ाबला मुझसे नहीं हो सकता । अुन लोगोंके अजीब दिमाग़ हैं । देखिये न ये राजगोपालाचार्य, क्या अिनकी दलीलोंकी कोअी बराबरी कर सकता है ? कल अुन्होंने जो भाषण दिया, अुसमें अेकके बाद अेक कड़ी कसकर बिठाते गये और अेक अटूट ज़ंजीर बना दी । अुन दलीलोंका जवाब कौन दे सकता है ?

वही राजगोपालाचार्य अनशन वग़ैराके बारेमें बापूसे लड़ते-झगड़ते हैं और अन्तमें बुद्धिसे नहीं, पर हृदयसे बापूकी बात मानकर जाते हैं, और अुसके लिअे फिर अपनी अकाट्य युक्तियाँ अुपस्थित करते हैं !

रामानुजम् गणित-शास्त्रीको प्रसिद्धि देनेमें अुनका हाथ था । जब मैंने यह सुना तो अुनसे पूछा: "आपका अैच्छिक विषय क्या था, गणित ?"

राजाजी बोले: "नहीं भाअी, भौतिक विज्ञान था । मगर यह कहिये कि मेरा कोअी अैच्छिक विषय था ही नहीं । मेरा अैच्छिक विषय अपनी अिच्छाओंको परवश बनाकर चलनेका था ।"

बापूके साथ आज भी बार-बार तर्क करते थे कि अुपवासका विचार छोड़ दीजिये । वचन माँगते थे कि अब लम्बे समय तक अुपवास नहीं करेंगे ।

बापूने हँसते-हँसते कहा: "तीन वर्ष तक न करूँ तो !" मगर बापू सब हँसीमें अुड़ा रहे थे और राजाजीको शंका बनी ही रही । वाअिसरॉयके तारमें यानी ठेठ आखिरी लेखमें फिर यह बात आकर खड़ी हो गअी थी !

जाते-जाते कहा: "बापूसे कह दो कि अब हमसे पूछे बिना अुपवास किया, तो हम अुस पर कोअी ध्यान नहीं देंगे ।" बादमें बापूसे कहने लगे: "बा ने मुझसे आपके विरुद्ध अेक शिकायत की है । बा मुझे हमेशा पूछती हैं कि 'हम असहयोग करते हैं, तब फिर यह वाअिसरॉयको तार कैसा और बिल मंजूर करानेकी प्रार्थना करनेवाले प्रस्ताव कैसे ?'"

बापू बोले: "यों कहिये न कि आपको ही यह खटकता है ? बेचारी बा पर क्यों डालते हैं ?"

बा सामने ही बैठी थीं । राजाजीने बा से गवाही दिलवाअी । बा ने तुरन्त कहा: "हाँ, हम यह कैसे कर सकते हैं ?"

राजाजी कहने लगे: "बहुतसे लोग पूछते हैं ।"

मैंने कहा : "यह तो ठीक है, मगर ये लोग निःस्वार्थताका दावा करते हैं अुसका क्या? वे तो कहते हैं कि हमारा भला करनेके लिअे ही आये हैं!"

बापू : "हमारे सनातनी क्या कहते हैं? कल वारकरी संप्रदायके प्रति देशमुखकी लिखी हुअी पत्रिका तुम्हींने तो पढ़कर सुनाअी थी। अुसमें वह बेफिकरीसे कहता है कि अछूतोंको क्या दुःख है? अुन्हें खाने-पीने और पहननेको मिलता है, वे समाजके अेक अंग हैं और अंगके रूपमें काम देते हैं। हम अिनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। हमें नया कर्तव्य बतानेवाला कौन है? अिसी तरह ये लोग भी मानते हैं कि हम हिन्दुस्तानका भला कर रहे हैं। मगर अिन लोगोंका किसलिअे विचार करें? अेण्ड्रूज़को ले लो। यह बात नहीं कि दिल ही दिलमें अेण्ड्रूज़ भी यह न मानते हों कि अंग्रेज़ी राज्यने अिस देशका कुछ न कुछ भला ही किया है। पोलाकसे बढ़कर अीमानदार अंग्रेज़ और तुम्हें कहाँ मिलेगा? तुम अुसके समागममें खूब आये हो। यह आदमी तो साफ़ मानता है कि अंग्रेज़ोंने अिस देशका भला ही किया है। फिर दूसरे अैसा मानें तो अिसमें आश्चर्य ही क्या? यह तो अीसाअी मिशनकी वृत्ति है। यह समझमें आने लायक बात है कि ये लोग नहीं छोड़ेंगे। कांग्रेसके साथ समाधान हो तो छोड़ें, समझौता अुन्हें करना नहीं है। फिर किसलिअे छोड़ें? कल मैंने झीणाभाअी जोशीको साफ़ कह दिया। जो थक गये हों वे निकल जायँ, कमसे कम आदमी जेलमें रहें और आयें। अिसीमें हमारा श्रेय है। सम्भव है कि सारा देश हमें भूल जाय। यह बात तो स्वागत करने लायक है। देखो न वह शंकराचार्य भी तो कहता है कि अिन लोगोंको हिन्दू धर्मसे निकल जाना चाहिये? भले ही तमाम हिन्दू हमारा त्याग करें! भगवान तो त्याग नहीं करेगा न? आज मोतीबाबूसे मैंने कहा, 'आप अीश्वर पर भरोसा रखनेकी बात करते हैं और डरते रहते हैं। पर अिससे काम कैसे चलेगा?' अुन्हें डर है कि हिन्दू धर्ममें फूट पड़ जायगी। फूट पड़नी हो तो पड़े। हमारी फूट डालनेकी अिच्छा थोड़े ही है? और अमुक बात हो जायगी, अिसके लिअे हम धर्मका त्याग कैसे कर सकते हैं? धर्मके धुरंधर बन बैठे लोगोंने आज गुण्डेबाजीको धर्म बना डाला है। यह कैसे सहन किया जा सकता है?"

हमारे आदमियोंकी बात करते हुअे कहने लगे : "मुझे तो दरबारकी बात अच्छी लगी। अुन्होंने निश्चय कर लिया है कि हमें लड़ाअीमें पड़ना है, अिस-लिअे वे मुझे किस तरह मिलने आ सकते हैं? . . . ने भी निश्चय कर लिया कि मुझे अस्पृश्यताका ही काम करना है। यह भी सीधी बात है। अिन दोनों चीज़ोंमें अीमानदारी है। मगर जो दो घोड़ों पर सवारी करनेकी बात करते हैं वह गलत है।"

मैंने कहा : "यह तो ठीक है, मगर ये लोग निःस्वार्थताका दावा करते हैं अुसका क्या? वे तो कहते हैं कि हमारा भला करनेके लिअे ही आये हैं!"

बापू : "हमारे सनातनी क्या कहते हैं? कल वारकरी संप्रदायके प्रति देशमुखकी लिखी हुअी पत्रिका तुम्हींने तो पढ़कर सुनाअी थी। अुसमें वह बेफिकरीसे कहता है कि अछूतोंको क्या दुःख है? अुन्हें खाने-पीने और पहननेको मिलता है, वे समाजके अेक अंग हैं और अंगके रूपमें काम देते हैं। हम अिनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। हमें नया कर्तव्य बतानेवाला कौन है? अिसी तरह ये लोग भी मानते हैं कि हम हिन्दुस्तानका भला कर रहे हैं। मगर अिन लोगोंका किसलिअे विचार करें? अेण्ड्रूज़को ले लो। यह बात नहीं कि दिल ही दिलमें अेण्ड्रूज़ भी यह न मानते हों कि अंग्रेज़ी राज्यने अिस देशका कुछ न कुछ भला ही किया है। पोलाकसे बढ़कर अीमानदार अंग्रेज़ और तुम्हें कहाँ मिलेगा? तुम अुसके समागममें खूब आये हो। यह आदमी तो साफ़ मानता है कि अंग्रेज़ोंने अिस देशका भला ही किया है। फिर दूसरे अैसा मानें तो अिसमें आश्चर्य ही क्या? यह तो अीसाअी मिशनकी वृत्ति है। यह समझमें आने लायक बात है कि ये लोग नहीं छोड़ेंगे। कांग्रेसके साथ समाधान हो तो छोड़ें, समझौता अुन्हें करना नहीं है। फिर किसलिअे छोड़ें? कल मैंने झीणाभाअी जोशीको साफ़ कह दिया। जो थक गये हों वे निकल जायँ, कमसे कम आदमी जेलमें रहें और आयें। अिसीमें हमारा श्रेय है। सम्भव है कि सारा देश हमें भूल जाय। यह बात तो स्वागत करने लायक है। देखो न वह शंकराचार्य भी तो कहता है कि अिन लोगोंको हिन्दू धर्मसे निकल जाना चाहिये? भले ही तमाम हिन्दू हमारा त्याग करें! भगवान तो त्याग नहीं करेगा न? आज मोतीबाबूसे मैंने कहा, 'आप अीश्वर पर भरोसा रखनेकी बात करते हैं और डरते रहते हैं। पर अिससे काम कैसे चलेगा?' अुन्हें डर है कि हिन्दू धर्ममें फूट पड़ जायगी। फूट पड़नी हो तो पड़े। हमारी फूट डालनेकी अिच्छा थोड़े ही है? और अमुक बात हो जायगी, अिसके लिअे हम धर्मका त्याग कैसे कर सकते हैं? धर्मके धुरंधर बन बैठे लोगोंने आज गुण्डेबाजीको धर्म बना डाला है। यह कैसे सहन किया जा सकता है?"

हमारे आदमियोंकी बात करते हुअे कहने लगे : "मुझे तो दरबारकी बात अच्छी लगी। अुन्होंने निश्चय कर लिया है कि हमें लड़ाअीमें पड़ना है, अिसलिअे वे मुझे किस तरह मिलने आ सकते हैं? . . . ने भी निश्चय कर लिया कि मुझे अस्पृश्यताका ही काम करना है। यह भी सीधी बात है। अिन दोनों चीज़ोंमें अीमानदारी है। मगर जो दो घोड़ों पर सवारी करनेकी बात करते हैं वह गलत है।"

“चि० विनोबा,

“तुम्हारी भक्ति और श्रद्धा आँखोंमें हर्षके आँसू लाती है। मैं अिस सबके योग्य होअूँ या न होअूँ, परन्तु तुम्हें तो यह फलेगा ही। तुम बड़ी सेवाके निमित्त बनोगे। नालवाड़ी चले गये, यह ठीक ही है।

“भविष्यकी सूचना अभी तो अितनी ही है: दूध-त्यागका आग्रह न रखते हुअे शरीरकी रक्षा करना। अभी स्वधर्म है अस्पृश्यता-निवारणादि। मैं जो लिखता रहता हूँ, अुसे पढ़नेके लिअे समय निकाल लेना। बहुत नहीं होता। मुझे पत्र लिखते रहना। सप्ताहमें अेक भी लिखो तो काफी है।”

"चि० विनोबा,

"तुम्हारी भक्ति और श्रद्धा आँखोंमें हर्षके आँसू लाती है। मैं अिस सबके योग्य होअूँ या न होअूँ, परन्तु तुम्हें तो यह फलेगा ही। तुम बड़ी सेवाके निमित्त बनोगे। नालवाड़ी चले गये, यह ठीक ही है।

"भविष्यकी सूचना अभी तो अितनी ही है: दूध-त्यागका आग्रह न रखते हुअे शरीरकी रक्षा करना। अभी स्वधर्म है अस्पृश्यता-निवारणादि। मैं जो लिखता रहता हूँ, अुसे पढ़नेके लिअे समय निकाल लेना। बहुत नहीं होता। मुझे पत्र लिखते रहना। सप्ताहमें अेक भी लिखो तो काफी है।"

अनुक्रमणिका

१. संकल्प

२. अग्निशय्यासे

३. हिन्दू धर्मकी कसौटी

अनुक्रमणिका

१. संकल्प

२. अग्निशय्यासे

३. हिन्दू धर्मकी कसौटी

अिसलिअे डॉ० आम्बेडकरके प्रति और 'अछूतों' का अुद्धार करनेकी अुनकी अिच्छाके प्रति मेरा सद्भाव और अुनकी होशियारीके प्रति आदर होनेके बावजूद भी मुझे कहना चाहिये कि वे अिस मामलेमें बड़ी भयंकर भूल कर रहे हैं। अुन्हें कड़वे अनुभवोंमें से गुजरना पड़ा है, शायद अिस कारण अभी अुनकी विवेक-बुद्धि अिस चीज़को नहीं समझ पा रही है। अैसे शब्द कहते मुझे दुःख होता है। मगर मैं यह न कहूँ तो प्राणोंसे प्यारे अिन 'अछूतों' के हितोंके प्रति मैं वफादार नहीं रह सकता। सारी दुनियाके राज्यके लिअे भी मैं अुनके हक़ोंकी कुरबानी नहीं करूँगा। डॉ० आम्बेडकर तमाम हिन्दुस्तानके 'अछूतों' की तरफसे बोलनेका दावा करते हैं, मगर अुनका यह दावा सही नहीं है, यह बात मैं पूरी जिम्मेदारीके साथ कहता हूँ। अुनके कहनेके अनुसार तो हिन्दू समाजमें बड़ी फूट पड़ जायगी। अिसे शान्तिसे देखते रहना मेरे लिअे संभव नहीं है।

'अछूत' भले ही मुसलमान या अीसाअी हो जायँ। अुसे मैं सहन कर लूँगा, मगर अिस तरह हिन्दू समाजकी होनेवाली खानाखराबी मुझसे बरदाश्त नहीं हो सकती। अुनके कहनेके अनुसार तो गाँव-गाँवमें दो दल हो जायँगे। जो 'अछूतों' के राजनैतिक हक़ोंकी बात करते हैं, वे हिन्दुस्तानको जानते नहीं, और यह भी नहीं जानते कि हिन्दू समाजकी रचना कैसी है। अिसलिअे मैं जितने आग्रहके साथ कह सकता हूँ अुतने ही आग्रहसे कहता हूँ कि अगर अिस चीज़का विरोध करनेवाला मैं अकेला भी रहा, तो भी मैं अिसका अपनी जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा।

अिसलिअे डॉ० आम्बेडकरके प्रति और 'अछूतों' का अुद्धार करनेकी अुनकी अिच्छाके प्रति मेरा सद्भाव और अुनकी होशियारीके प्रति आदर होनेके बावजूद भी मुझे कहना चाहिये कि वे अिस मामलेमें बड़ी भयंकर भूल कर रहे हैं। अुन्हें कड़वे अनुभवोंमें से गुजरना पड़ा है, शायद अिस कारण अभी अुनकी विवेक-बुद्धि अिस चीज़को नहीं समझ पा रही है। अैसे शब्द कहते मुझे दुःख होता है। मगर मैं यह न कहूँ तो प्राणोंसे प्यारे अिन 'अछूतों' के हितोंके प्रति मैं वफादार नहीं रह सकता। सारी दुनियाके राज्यके लिअे भी मैं अुनके हकोंकी कुरबानी नहीं करूँगा। डॉ० आम्बेडकर तमाम हिन्दुस्तानके 'अछूतों' की तरफसे बोलनेका दावा करते हैं, मगर अुनका यह दावा सही नहीं है, यह बात मैं पूरी जिम्मेदारीके साथ कहता हूँ। अुनके कहनेके अनुसार तो हिन्दू समाजमें बड़ी फूट पड़ जायगी। अिसे शान्तिसे देखते रहना मेरे लिअे संभव नहीं है।

'अछूत' भले ही मुसलमान या अीसाअी हो जायँ। अुसे मैं सहन कर लूँगा, मगर अिस तरह हिन्दू समाजकी होनेवाली खानाखराबी मुझसे बरदाश्त नहीं हो सकती। अुनके कहनेके अनुसार तो गाँव-गाँवमें दो दल हो जायँगे। जो "अछूतों' के राजनैतिक हक़ोंकी बात करते हैं, वे हिन्दुस्तानको जानते नहीं, और यह भी नहीं जानते कि हिन्दू समाजकी रचना कैसी है। अिसलिअे मैं जितने आग्रहके साथ कह सकता हूँ अुतने ही आग्रहसे कहता हूँ कि अगर अिस चीज़का विरोध करनेवाला मैं अकेला भी रहा, तो भी मैं अिसका अपनी जानकी बाज़ी लगाकर विरोध करूँगा।

निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें कैसा और कितना नुकसान हो सकता है, अुसे समझनेके लिअे यह जानना ज़रूरी है कि वे कथित सवर्ण हिन्दुओंके बीचमें किस तरह फैले हुअे पड़े हैं और अुन पर कितने अधिक अवलंबित हैं। जहाँ तक हिन्दू समाजसे सम्बंध है वहाँ तक तो अलग निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें जीते जी चीरने और अुनके टुकड़े-टुकड़े करने जैसी बात होगी।

मेरे विचारसे यह प्रश्न मुख्यतः नैतिक और धार्मिक है। अुसका राजनैतिक पहलू अवश्य महत्वपूर्ण है, फिर भी अुसके नैतिक और धार्मिक महत्वसे तुलना करने पर वह नाम मात्रको रह जाता है।

अिस मामलेमें मेरी भावनाअें समझनेके लिअे आपको यह याद रखना चाहिये कि अिन लोगोंमें मैं ठेठ बचपनसे दिलचस्पी लेता रहा हूँ और अुनकी खातिर मैंने कअी बार सर्वस्वकी बाजी लगाअी है। मैं यह ज़रा भी अभिमानसे नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि हिन्दू कितना ही प्रायश्चित्त करें, तो भी सदियोंसे अुन्होंने हरिजनोंका जानबूझकर जो अधःपतन किया है, अुसका बदला नहीं चुकाया जा सकता।

मगर मैं जानता हूँ कि अुनके अलग निर्वाचक मंडल बनाना अुसका प्रायश्चित्त नहीं है; अिसी तरह अुन्हें कुचल कर अुनकी जो अधम स्थिति बना दी गअी है अुसका भी यह अुपाय नहीं है। अिसलिअे ब्रिटिश सरकारको मैं नम्रतापूर्वक जता देता हूँ कि अंत्यजोंके लिअे अगर वह अलग निर्वाचक मंडल बनानेका निर्णय देगी, तो मुझे आमरण अुपवास करना पड़ेगा।

क़ैदी होकर मैं अैसा कदम अुठाअूँ, तो अुससे ब्रिटिश सरकारको सख्त परेशानी होगी और मेरे जैसी हैसियतवाले आदमीका राजनैतिक क्षेत्रमें अैसी पद्धति, जिसे ज्यादा बुरी नहीं तो पागलपन भरी तो कहा ही जा सकता है, दाखिल करना बहुत अनुचित माना जा सकता है — अिसका मुझे खयाल है और दुःख भी है। अिसकी सफ़ाअीमें मैं अितना ही कह सकता हूँ कि मैंने जो कदम अुठाना सोच रखा है वह कोअी पद्धति नहीं है, मगर मेरे जीवनका अेक अंग है। वह अन्तरात्माका आदेश है, जिसकी मैं अवज्ञा नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि समझदार आदमी होनेकी मेरी जरा भी साख हो, तो अुसे अिस कार्रवाअीसे धक्का पहुँच सकता है। अभी तो जहाँ तक मैं देख सकता हूँ जेलसे मेरा छुटकारा हो जाय, तब भी अुपवास करनेका मेरा फ़र्ज़ अुससे जरा भी कम नहीं हो जाता। फिर भी मैं आशा रखता हूँ कि मेरे सब अन्देशे बिलकुल बेबुनियाद निकलेंगे और अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचक मण्डल बनानेका ब्रिटिश सरकारका जरा भी अिरादा न होगा।

निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें कैसा और कितना नुकसान हो सकता है, अुसे समझनेके लिअे यह जानना ज़रूरी है कि वे कथित सवर्ण हिन्दुओंके बीचमें किस तरह फैले हुअे पड़े हैं और अुन पर कितने अधिक अवलंबित हैं। जहाँ तक हिन्दू समाजसे सम्बंध है वहाँ तक तो अलग निर्वाचक मंडलोंसे अुन्हें जीते जी चीरने और अुनके टुकड़े-टुकड़े करने जैसी बात होगी।

मेरे विचारसे यह प्रश्न मुख्यतः नैतिक और धार्मिक है। अुसका राजनैतिक पहलू अवश्य महत्वपूर्ण है, फिर भी अुसके नैतिक और धार्मिक महत्वसे तुलना करने पर वह नाम मात्रको रह जाता है।

अिस मामलेमें मेरी भावनाअें समझनेके लिअे आपको यह याद रखना चाहिये कि अिन लोगोंमें मैं ठेठ बचपनसे दिलचस्पी लेता रहा हूँ और अुनकी खातिर मैंने कअी बार सर्वस्वकी बाजी लगाअी है। मैं यह ज़रा भी अभिमानसे नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि हिन्दू कितना ही प्रायश्चित्त करें, तो भी सदियोंसे अुन्होंने हरिजनोंका जानबूझकर जो अधःपतन किया है, अुसका बदला नहीं चुकाया जा सकता।

मगर मैं जानता हूँ कि अुनके अलग निर्वाचक मंडल बनाना अुसका प्रायश्चित्त नहीं है; अिसी तरह अुन्हें कुचल कर अुनकी जो अधम स्थिति बना दी गअी है अुसका भी यह अुपाय नहीं है। अिसलिअे ब्रिटिश सरकारको मैं नम्रतापूर्वक जता देता हूँ कि अंत्यजोंके लिअे अगर वह अलग निर्वाचक मंडल बनानेका निर्णय देगी, तो मुझे आमरण अुपवास करना पड़ेगा।

क़ैदी होकर मैं अैसा कदम अुठाअूँ, तो अुससे ब्रिटिश सरकारको सख्त परेशानी होगी और मेरे जैसी हैसियतवाले आदमीका राजनैतिक क्षेत्रमें अैसी पद्धति, जिसे ज्यादा बुरी नहीं तो पागलपन भरी तो कहा ही जा सकता है, दाखिल करना बहुत अनुचित माना जा सकता है — अिसका मुझे खयाल है और दुःख भी है। अिसकी सफ़ाअीमें मैं अितना ही कह सकता हूँ कि मैंने जो कदम अुठाना सोच रखा है वह कोअी पद्धति नहीं है, मगर मेरे जीवनका अेक अंग है। वह अन्तरात्माका आदेश है, जिसकी मैं अवज्ञा नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि समझदार आदमी होनेकी मेरी जरा भी साख हो, तो अुसे अिस कार्रवाअीसे धक्का पहुँच सकता है। अभी तो जहाँ तक मैं देख सकता हूँ जेलसे मेरा छुटकारा हो जाय, तब भी अुपवास करनेका मेरा फ़र्ज़ अुससे जरा भी कम नहीं हो जाता। फिर भी मैं आशा रखता हूँ कि मेरे सब अन्देशे बिलकुल बेबुनियाद निकलेंगे और अंत्यजोंके लिअे अलग निर्वाचक मण्डल बनानेका ब्रिटिश सरकारका जरा भी अिरादा न होगा।

देना अिसका अुपाय नहीं है। मेरे लिअे यह धर्मसिद्धान्त है। मैं अपनेको स्वभावसे लोकतंत्रवादी मानता हूँ। अपनी अिच्छाका अमल करानेके लिअे शरीर-बलका अुपयोग करना मेरी कल्पनाके लोकतंत्रके साथ सर्वथा असंगत है। अिसलिअे जहाँ-जहाँ शरीरबलका अुपयोग आवश्यक और अुचित माना जाता है, वहाँ-वहाँ मैंने अुसके मुनासिब अेवज़के रूपमें सविनय विरोधका तरीका निकाला है। अुसमें खुदको कष्ट सहन करना पड़ता है। सविनय विरोध करनेवालेके लिअे अमुक हालतोंमें अन्त तक अुपवास करके अपने प्राण त्याग करना मेरी योजनामें आता है। मेरे लिअे अभी वह वक्त नहीं आया। अैसा क़दम अुठानेके लिअे जिसे रोका न जा सके अैसा भीतरी आदेश मुझे अभी नहीं मिला। मगर बाहर जो कुछ हो रहा है, वह अितना भयानक है कि मैं अपने मनकी शांति खो चुका हूँ। अिसलिअे अछूतोंके मामलेमें अुपवासकी संभावनाके बारेमें लिखते हुअे मुझे लगा कि यदि मैं आपको यह न बताअूँ कि अैसे अुपवासकी सम्भावना अेक और कारणसे भी अधिक दूर नहीं है, तो आपके प्रति मैं सच्चा नहीं ठहरूँगा।

कहनेकी ज़रूरत नहीं कि आपके साथ होनेवाले तमाम पत्र-व्यवहारमें मेरी तरफसे पूरी तरह गुप्तता रखी गअी है। अलबत्ता सरदार वल्लभभाअी पटेल और महादेव देसाअी, जिन्हें हालमें ही मेरे साथ रखा गया है, अिस बारेमें सब कुछ जानते हैं। मगर आप तो आपकी जैसी अिच्छा हो वैसा अिस पत्रका अुपयोग ज़रूर कर सकते हैं।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

देना अिसका अुपाय नहीं है। मेरे लिअे यह धर्मसिद्धान्त है। मैं अपनेको स्वभावसे लोकतंत्रवादी मानता हूँ। अपनी अिच्छाका अमल करानेके लिअे शरीर-बलका अुपयोग करना मेरी कल्पनाके लोकतंत्रके साथ सर्वथा असंगत है। अिसलिअे जहाँ-जहाँ शरीरबलका अुपयोग आवश्यक और अुचित माना जाता है, वहाँ-वहाँ मैंने अुसके मुनासिब अेवज़के रूपमें सविनय विरोधका तरीका निकाला है। अुसमें खुदको कष्ट सहन करना पड़ता है। सविनय विरोध करनेवालेके लिअे अमुक हालतोंमें अन्त तक अुपवास करके अपने प्राण त्याग करना मेरी योजनामें आता है। मेरे लिअे अभी वह वक्त नहीं आया। अैसा कदम अुठानेके लिअे जिसे रोका न जा सके अैसा भीतरी आदेश मुझे अभी नहीं मिला। मगर बाहर जो कुछ हो रहा है, वह अितना भयानक है कि मैं अपने मनकी शांति खो चुका हूँ। अिसलिअे अछूतोंके मामलेमें अुपवासकी संभावनाके बारेमें लिखते हुअे मुझे लगा कि यदि मैं आपको यह न बताअूँ कि अैसे अुपवासकी सम्भावना अेक और कारणसे भी अधिक दूर नहीं है, तो आपके प्रति मैं सच्चा नहीं ठहरूँगा।

कहनेकी ज़रूरत नहीं कि आपके साथ होनेवाले तमाम पत्र-व्यवहारमें मेरी तरफसे पूरी तरह गुप्तता रखी गअी है। अलबत्ता सरदार वल्लभभाअी पटेल और महादेव देसाअी, जिन्हें हालमें ही मेरे साथ रखा गया है, अिस बारेमें सब कुछ जानते हैं। मगर आप तो आपकी जैसी अिच्छा हो वैसा अिस पत्रका अुपयोग ज़रूर कर सकते हैं।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

४

प्रधानमन्त्रीको गांधीजीका पत्र

यरवदा सेन्ट्रल प्रिज़न
१८ अगस्त, १९३२

प्रिय मित्र,

अछूतोंके प्रतिनिधित्वके प्रश्नके विषयमें मैंने सर सेम्युअल होरको जो पत्र लिखा था, अुन्होंने वह आपको और मन्त्रि-मंडलको ज़रूर बताया होगा। मेरी प्रार्थना है कि वह पत्र अिस पत्रका हिस्सा माना जाय और अिस पत्रके साथ ही पढ़ा जाय।

अल्पमतोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें ब्रिटिश सरकारका फैसला मैंने पढ़ा है। अपने विचारोंको पकने देनेके लिअे रात भी गुजरने दी है। जैसा सर सेम्युअल होरके पत्रमें मैंने बताया है, सेंट जेम्स पैलेसमें १३-११-१९३१ के दिन गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत-समितिकी बैठकमें मैंने ज़ाहिर किया था कि मुझे आपके फैसलेका विरोध जानकी बाज़ी लगाकर करना पड़ेगा। वैसा करनेका अेक ही रास्ता है और वह यह है कि नमक और सोडेके साथ और अुसके बिना सिर्फ पानीके सिवाय और किसी तरहकी खुराक न लेकर आमरण अुपवास किया जाय। अिस बीच अगर ब्रिटिश सरकार अपने आप या लोकमतके दबावसे अपना फैसला बदल देगी, अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचनकी योजना रद्द कर देगी और सामान्य निर्वाचन द्वारा — भले ही अुन्हें बड़े विशाल पैमानेपर मताधिकार दिया जाय — अछूतोंके प्रतिनिधियोंका चुनाव कराना तय कर देगी, तो मेरा अुपवास रुक जायगा। यदि अूपर बताये अनुसार फैसलेमें सुधार नहीं किया गया, तो साधारण परिस्थितिमें अिस अुपवासका आरम्भ २० सितम्बरकी दोपहरसे होगा।

मैं अपना यह पत्र आपको तारसे पहुँचा देनेकी अधिकारियोंसे प्रार्थना कर रहा हूँ, जिससे आपको काफी समय पहले नोटिस मिल जाय। मगर यह पत्र आपको धीमेसे धीमे तरीकेसे भी पहुँचाया जाय, तब भी वह आपको समय पर मिल जायगा।

मेरी यह भी प्रार्थना है कि मेरा यह पत्र और सर सेम्युअल होरको लिखा हुआ पहला पत्र, दोनों जल्दीसे जल्दी प्रकाशित कर दिये जायँ। अपनी तरफसे तो मैंने जेलके नियमोंका कड़ा पालन किया है और अिन दो पत्रोंकी

४

प्रधानमन्त्रीको गांधीजीका पत्र

यरवदा सेन्ट्रल प्रिज़न
१८ अगस्त, १९३२

प्रिय मित्र,

अछूतोंके प्रतिनिधित्वके प्रश्नके विषयमें मैंने सर सेम्युअल होरको जो पत्र लिखा था, अुन्होंने वह आपको और मन्त्रि-मंडलको ज़रूर बताया होगा। मेरी प्रार्थना है कि वह पत्र अिस पत्रका हिस्सा माना जाय और अिस पत्रके साथ ही पढ़ा जाय।

अल्पमतोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें ब्रिटिश सरकारका फैसला मैंने पढ़ा है। अपने विचारोंको पकने देनेके लिअे रात भी गुजरने दी है। जैसा सर सेम्युअल होरके पत्रमें मैंने बताया है, सेंट जेम्स पैलेसमें १३-११-१९३१ के दिन गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत-समितिकी बैठकमें मैंने ज़ाहिर किया था कि मुझे आपके फैसलेका विरोध जानकी बाज़ी लगाकर करना पड़ेगा। वैसा करनेका अेक ही रास्ता है और वह यह है कि नमक और सोडेके साथ और अुसके बिना सिर्फ पानीके सिवाय और किसी तरहकी खुराक न लेकर आमरण अुपवास किया जाय। अिस बीच अगर ब्रिटिश सरकार अपने आप या लोकमतके दबावसे अपना फैसला बदल देगी, अछूतोंके लिअे अलग निर्वाचनकी योजना रद्द कर देगी और सामान्य निर्वाचन द्वारा — भले ही अुन्हें बड़े विशाल पैमानेपर मताधिकार दिया जाय — अछूतोंके प्रतिनिधियोंका चुनाव कराना तय कर देगी, तो मेरा अुपवास रुक जायगा। यदि अूपर बताये अनुसार फैसलेमें सुधार नहीं किया गया, तो साधारण परिस्थितिमें अिस अुपवासका आरम्भ २० सितम्बरकी दोपहरसे होगा।

मैं अपना यह पत्र आपको तारसे पहुँचा देनेकी अधिकारियोंसे प्रार्थना कर रहा हूँ, जिससे आपको काफी समय पहले नोटिस मिल जाय। मगर यह पत्र आपको धीमेसे धीमे तरीकेसे भी पहुँचाया जाय, तब भी वह आपको समय पर मिल जायगा।

मेरी यह भी प्रार्थना है कि मेरा यह पत्र और सर सेम्युअल होरको लिखा हुआ पहला पत्र, दोनों जल्दीसे जल्दी प्रकाशित कर दिये जायँ। अपनी तरफसे तो मैंने जेलके नियमोंका कड़ा पालन किया है और अिन दो पत्रोंकी

प्रधानमंत्रीका जवाब

१०, डाअुनिंग स्ट्रीट
८ सितम्बर, १९३२

प्रिय श्री गांधी,

आपका पत्र मिल गया। अुससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है और बहुत दुःख भी हुआ। मुझे अैसा लगता है कि आपने यह पत्र अछूतोंके मामलेमें ब्रिटिश सरकारके फैसलेके असली तात्पर्यके बारेमें गलतफहमीके कारण लिखा है। हम सदा यह समझते रहे हैं कि अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजसे स्थायी रूपमें अलग किया जाय, तो अुस पर आपका अटल विरोध है। गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत-समितिके सामने आपने अपनी स्थिति बहुत ही साफ कर दी थी और ११ मार्चको सर सेम्युअल होरको लिखे गये पत्रमें आपने वह फिरसे बता दी थी। हम यह भी जानते थे कि अधिकांश हिन्दू लोकमत आपके विचारोंसे सहमत है। अिसीलिअे अछूत वर्गोंके प्रतिनिधित्वके सवालका विचार करते समय हमने अिस चीज़ पर खूब ध्यानपूर्वक गौर किया था।

अछूत वर्गकी अनेक संस्थाओंकी तरफसे हमें मिली हुअी बहुसंख्यक अर्जियोंको देखते हुअे और अुन्हें आम तौर पर जो सामाजिक मुश्किलें भोगनी पड़ती हैं, जिन्हें सभी मानते हैं और आपने भी बहुत बार माना है, अुन्हें देखते हुअे हमें लगा कि धारासभाओंमें अुचित मात्रामें प्रतिनिधित्व प्राप्त करनेके अुनके हकको सही-सलामत रखना हमारा फर्ज़ था। अिसके साथ ही हमने अैसी कोअी बात, जिससे अुनकी जाति बाकीके हिन्दू समाजसे कटकर अलग पड़ जाय, न करनेकी खूब ही सावधानी रखी है। ११ मार्चके अपने पत्रमें आपने खुद लिखा है कि धारासभाओंमें अुन्हें प्रतिनिधित्व मिले, अिसके विरुद्ध आप नहीं हैं।

सरकारी योजनाके अनुसार अछूत वर्ग हिन्दू समाजका हिस्सा रहेंगे ही और हिन्दू मतदाताओंके साथ समानताके आधार पर मत देंगे। मगर हिन्दू समाजके साथ रहकर मताधिकार भोगते हुअे भी पहले बीस साल तक मर्यादित संख्यामें अलग निर्वाचक मंडलोंके ज़रिये अपने हक और हित सुरक्षित रखनेका साधन अुन्हें हमारे निर्णयसे मिलता है। अैसे निर्वाचक मंडल बनने पर भी, साधारण हिन्दू मतदाताओंके साथ मत देनेके अधिकारसे अछूतोंको वंचित नहीं रखा जायगा। परन्तु अुन्हें दो मत मिलेंगे, जिससे कि हिन्दू समाजके सदस्यकी हैसियतसे अुनका हक कायम रहेगा।

प्रधानमंत्रीका जवाब

१०, डाअुनिंग स्ट्रीट
८ सितम्बर, १९३२

प्रिय श्री गांधी,

आपका पत्र मिल गया। अुससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है और बहुत दुःख भी हुआ। मुझे अैसा लगता है कि आपने यह पत्र अछूतोंके मामलेमें ब्रिटिश सरकारके फैसलेके असली तात्पर्यके बारेमें गलतफहमीके कारण लिखा है। हम सदा यह समझते रहे हैं कि अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजसे स्थायी रूपमें अलग किया जाय, तो अुस पर आपका अटल विरोध है। गोलमेज़ परिषदकी अल्पमत-समितिके सामने आपने अपनी स्थिति बहुत ही साफ कर दी थी और ११ मार्चको सर सेम्युअल होरको लिखे गये पत्रमें आपने वह फिरसे बता दी थी। हम यह भी जानते थे कि अधिकांश हिन्दू लोकमत आपके विचारोंसे सहमत है। अिसीलिअे अछूत वर्गोंके प्रतिनिधित्वके सवालका विचार करते समय हमने अिस चीज़ पर खूब ध्यानपूर्वक गौर किया था।

अछूत वर्गकी अनेक संस्थाओंकी तरफसे हमें मिली हुअी बहुसंख्यक अर्जियोंको देखते हुअे और अुन्हें आम तौर पर जो सामाजिक मुश्किलें भोगनी पड़ती हैं, जिन्हें सभी मानते हैं और आपने भी बहुत बार माना है, अुन्हें देखते हुअे हमें लगा कि धारासभाओंमें अुचित मात्रामें प्रतिनिधित्व प्राप्त करनेके अुनके हक्को सही-सलामत रखना हमारा फर्ज़ था। अिसके साथ ही हमने अैसी कोअी बात, जिससे अुनकी जाति बाकीके हिन्दू समाजसे कटकर अलग पड़ जाय, न करनेकी खूब ही सावधानी रखी है। ११ मार्चके अपने पत्रमें आपने खुद लिखा है कि धारासभाओंमें अुन्हें प्रतिनिधित्व मिले, अिसके विरुद्ध आप नहीं हैं।

सरकारी योजनाके अनुसार अछूत वर्ग हिन्दू समाजका हिस्सा रहेंगे ही और हिन्दू मतदाताओंके साथ समानताके आधार पर मत देंगे। मगर हिन्दू समाजके साथ रहकर मताधिकार भोगते हुअे भी पहले बीस साल तक मर्यादित संख्यामें अलग निर्वाचक मंडलोंके ज़रिये अपने हक और हित सुरक्षित रखनेका साधन अुन्हें हमारे निर्णयसे मिलता है। अैसे निर्वाचक मंडल बनने पर भी, साधारण हिन्दू मतदाताओंके साथ मत देनेके अधिकारसे अछूतोंको वंचित नहीं रखा जायगा। परन्तु अुन्हें दो मत मिलेंगे, जिससे कि हिन्दू समाजके सदस्यकी हैसियतसे अुनका हक कायम रहेगा।

देनेकी दृष्टिसे यह तय नहीं किया गया है, बल्कि सिर्फ अछूत वर्गोंके द्वारा धारासभाओंमें चुने हुअे अुनके खास मुखियोंकी कमसे-कम संख्याकी गारन्टी देनेके हेतुसे यह संख्या निश्चित की गअी है। अुन्हें दी गअी विशेष बैठकोंका अनुपात हर प्रान्तमें अुनकी आबादीके प्रतिशतसे कम है।

जहाँ तक मैं आपकी बात समझता हूँ, आप जो अुपवास करके मरनेका आखिरी कदम अुठानेका कह रहे हैं, वह अिसलिअे नहीं कि दूसरे हिन्दुओंके साथ अछूतोंको संयुक्त निर्वाचक मण्डल मिले, क्योंकि अुसका प्रबन्ध तो अिस निर्णयमें है ही; हिन्दुओंकी अखण्डता बनी रहे अिसलिअे भी नहीं, क्योंकि अुसकी व्यवस्था भी है; मगर सिर्फ अिसलिअे कि आज भयंकर अधिकारहीनतायें भोगनेवाले अछूतोंको, भविष्यमें अुनके जीवन पर बड़ा असर डालनेवाली धारासभाओंमें अुनकी तरफसे बोलनेवाले अुनकी पसन्दके जो थोड़ेसे आदमी मिलते हैं, अुन्हें रोका जाय।

मेरा निर्णय अितना न्यायपूर्ण और सावधानीसे भरा है, फिर भी आपने अैसा निर्णय कैसे किया अिसका कारण मैं बिल्कुल नहीं समझ सकता। मैं यह मानता हूँ कि सच्ची हकीकतकी गलत फहमीके कारण ही अैसा हुआ होगा।

जब हिन्दुस्तानी किसी भी समझौते पर आनेमें असफल रहे, तब अुनकी प्रार्थना पर ही सरकारने अपनी अिच्छा न होते हुअे भी अल्पमतके प्रश्न पर निर्णय देना मंजूर किया। यह निर्णय देनेके बाद अब अुसकी बताअी हुअी शर्तोंके सिवाय और किसी तरह अुसमें फेरबदल करना अुसके लिअे सम्भव नहीं है। अिसलिअे मेरा जवाब यह है कि सरकारका फैसला तो जैसा है वैसा ही रहेगा। हाँ सरकारने परस्पर विरोधी दावोंके गुण-दोष पर सच्चे दिलसे विचार करके प्रतिनिधित्व देनेकी जो योजना तैयार की है, अुसके अेवजमें सब जातियाँ आपसमें समझकर दूसरी अेक सर्वसम्मत नअी योजना पेश करें तो और बात है।

आप चाहते हैं कि सर सेम्युअल होरको लिखे पत्रोंके साथ आपका सारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित हो जाय। आप अभी नज़रबन्द हैं, अिसलिअे जनताको आपके अुपवासका कारण समझानेका मौका आपको न मिले, यह मुझे ठीक नहीं लगता। अिसलिअे आप मुझे लिखेंगे, तो मैं आपकी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार करूँगा। फिर भी मैं आपसे दुबारा आग्रह करता हूँ कि सरकारी निर्णयकी वास्तविक हकीकतों पर आप फिरसे विचार करें और अपने आपसे गंभीरतापूर्वक पूछें कि आपने जो कदम अुठानेका विचार किया है अुसके अुठानेके अुचित कारण हैं या नहीं?

आपका सेवक
जे० रॅम्से मैकडोनल्ड

देनेकी दृष्टिसे यह तय नहीं किया गया है, बल्कि सिर्फ अछूत वर्गोंके द्वारा धारासभाओंमें चुने हुओ अुनके खास मुखियोंकी कमसे-कम संख्याकी गारन्टी देनेके हेतुसे यह संख्या निश्चित की गओी है। अुन्हें दी गओी विशेष बैठकोंका अनुपात हर प्रान्तमें अुनकी आबादीके प्रतिशतसे कम है।

जहाँ तक मैं आपकी बात समझता हूँ, आप जो अुपवास करके मरनेका आखिरी कदम अुठानेका कह रहे हैं, वह अिसलिअे नहीं कि दूसरे हिन्दुओंके साथ अछूतोंको संयुक्त निर्वाचक मण्डल मिले, क्योंकि अुसका प्रबन्ध तो अिस निर्णयमें है ही; हिन्दुओंकी अखण्डता बनी रहे अिसलिअे भी नहीं, क्योंकि अुसकी व्यवस्था भी है; मगर सिर्फ अिसलिअे कि आज भयंकर अधिकारहीनतायें भोगनेवाले अछूतोंको, भविष्यमें अुनके जीवन पर बड़ा असर डालनेवाली धारासभाओंमें अुनकी तरफसे बोलनेवाले अुनकी पसन्दके जो थोड़ेसे आदमी मिलते हैं, अुन्हें रोका जाय।

मेरा निर्णय अितना न्यायपूर्ण और सावधानीसे भरा है, फिर भी आपने अैसा निर्णय कैसे किया, अिसका कारण मैं बिलकुल नहीं समझ सकता। मैं यह मानता हूँ कि सच्ची हकीकतकी गलत फहमीके कारण ही अैसा हुआ होगा।

जब हिन्दुस्तानी किसी भी समझौते पर आनेमें असफल रहे, तब अुनकी प्रार्थना पर ही सरकारने अपनी अिच्छा न होते हुअे भी अल्पमतके प्रश्न पर निर्णय देना मंजूर किया। यह निर्णय देनेके बाद अब अुसकी बताओी हुओी शर्तोंके सिवाय और किसी तरह अुसमें फेरबदल करना अुसके लिअे सम्भव नहीं है। अिसलिअे मेरा जवाब यह है कि सरकारका फैसला तो जैसा है वैसा ही रहेगा। हाँ सरकारने परस्पर विरोधी दावोंके गुण-दोष पर सच्चे दिलसे विचार करके प्रतिनिधित्व देनेकी जो योजना तैयार की है, अुसके अेवजमें सब जातियाँ आपसमें समझकर दूसरी अेक सर्वसम्मत नओी योजना पेश करें तो और बात है।

आप चाहते हैं कि सर सेम्युअल होरको लिखे पत्रोंके साथ आपका सारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित हो जाय। आप अभी नज़रबन्द हैं, अिसलिअे जनताको आपके अुपवासका कारण समझानेका मौका आपको न मिले, यह मुझे ठीक नहीं लगता। अिसलिअे आप मुझे लिखेंगे, तो मैं आपकी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार करूँगा। फिर भी मैं आपसे दुबारा आग्रह करता हूँ कि सरकारी निर्णयकी वास्तविक हकीकतों पर आप फिरसे विचार करें और अपने आपसे गंभीरतापूर्वक पूछें कि आपने जो कदम अुठानेका विचार किया है अुसके अुठानेके अुचित कारण हैं या नहीं?

आपका सेवक
जे० रॅम्से मैकडोनल्ड

मैंने खास तौर पर अलग कर दिया है, अुसका यह अर्थ किसी भी तरह नहीं होता कि आपके निर्णयके दूसरे भागोंको मैं पसन्द करता हूँ, या अुन्हें स्वीकार करनेको मेरा दिल मानता है। मेरी रायमें और बहुतसे भाग भी गंभीर रूपसे आपत्तिजनक हैं। सिर्फ अछूतोंके मामलेमें मेरी अंतरात्माने मुझे अिस तरहका प्राणार्पण करनेकी प्रेरणा दी है। अैसा कोअी कदम दूसरे भागोंके विरुद्ध अुठाना मुझे ज़रूरी मालूम नहीं होता।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

७

बम्बअी सरकारको भेजा हुआ गांधीजीका बयान

[गांधीजीने अुपवास करनेके अपने निर्णयके बारेमें १५ सितम्बरको बम्बअी सरकारको नीचे लिखा बयान भेजा था। यह बयान २१ सितम्बरको अखबारोंमें छपनेके लिअे भेजा गया था।]

नज़दीक आ रहे मेरे अुपवासका निर्णय अीश्वरके नाम पर, अुसके कामसे और, जैसा मैं नम्रतापूर्वक मानता हूँ, अुसके आदेशानुसार किया गया है। कुछ मित्रोंने मुझसे आग्रह किया है कि लोगोंको तैयारी करनेका समय देनेके लिअे मुझे अुपवासकी तारीख आगे बढ़ा देनी चाहिये। मुझे अफसोस है कि प्रधान-मंत्रीके नाम अपने पत्रमें मैंने जो कारण बताया है, अुसके सिवाय और किसी कारणसे अेक घंटेके लिअे भी मैं अुपवासको मुलतवी नहीं कर सकता। जिन लोगोंको मुझ पर श्रद्धा है, फिर वे हिन्दुस्तानके हों या विदेशके, यह अुपवास अुनके विरुद्ध है। जिन्हें श्रद्धा नहीं है, अुनके विरुद्ध नहीं है। अिसलिअे अंग्रेज़ अधिकारियोंके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है, परन्तु अधिकारीवर्गके विरुद्ध प्रचार करनेके बावजूद भी जो अंग्रेज़ भाअी-बहन मुझ पर और मेरे शुरू किये हुअे कामके न्यायपूर्ण होनेके प्रति विश्वास रखते हैं, अुनके विरुद्ध है। अिसी तरह मेरे अुन देश भाअियों, फिर वे हिन्दू हों या और कोअी, जिनका मुझ पर विश्वास नहीं है, अुनके विरुद्ध यह अुपवास नहीं है; बल्कि अुन असंख्य हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध है, फिर वे किसी भी जाति या धर्मके हों, जो यह मानते हैं कि मैंने जो काम हाथमें लिया है वह न्यायपूर्ण है। अिस अुपवासका मुख्य हेतु तो सच्चा धार्मिक कार्य करनेके लिअे हिन्दुओंकी अन्तरात्माको सतेज बनाना है।

यह अुपवास सिर्फ भावनाको अपील करनेके लिअे नहीं है। मेरा कुछ भी वज़न हो, तो अुस तमामको मैं अिस अुपवासके द्वारा शुद्ध और सादे

मैंने खास तौर पर अलग कर दिया है, अुसका यह अर्थ किसी भी तरह नहीं होता कि आपके निर्णयके दूसरे भागोंको मैं पसन्द करता हूँ, या अुन्हें स्वीकार करनेको मेरा दिल मानता है। मेरी रायमें और बहुतसे भाग भी गंभीर रूपसे आपत्तिजनक हैं। सिर्फ अछूतोंके मामलेमें मेरी अंतरात्माने मुझे अिस तरहका प्राणार्पण करनेकी प्रेरणा दी है। अैसा कोअी कदम दूसरे भागोंके विरुद्ध अुठाना मुझे ज़रूरी मालूम नहीं होता।

आपका सेवक
मो० क० गांधी

७

बम्बअी सरकारको भेजा हुआ गांधीजीका बयान

[गांधीजीने अुपवास करनेके अपने निर्णयके बारेमें १५ सितम्बरको बम्बअी सरकारको नीचे लिखा बयान भेजा था। यह बयान २१ सितम्बरको अखबारोंमें छपनेके लिअे भेजा गया था।]

नज़दीक आ रहे मेरे अुपवासका निर्णय अीश्वरके नाम पर, अुसके कामसे और, जैसा मैं नम्रतापूर्वक मानता हूँ, अुसके आदेशानुसार किया गया है। कुछ मित्रोंने मुझसे आग्रह किया है कि लोगोंको तैयारी करनेका समय देनेके लिअे मुझे अुपवासकी तारीख आगे बढ़ा देनी चाहिये। मुझे अफसोस है कि प्रधान-मंत्रीके नाम अपने पत्रमें मैंने जो कारण बताया है, अुसके सिवाय और किसी कारणसे अेक घंटेके लिअे भी मैं अुपवासको मुलतवी नहीं कर सकता। जिन लोगोंको मुझ पर श्रद्धा है, फिर वे हिन्दुस्तानके हों या विदेशके, यह अुपवास अुनके विरुद्ध है। जिन्हें श्रद्धा नहीं है, अुनके विरुद्ध नहीं है। अिसलिअे अंग्रेज़ अधिकारियोंके विरुद्ध मेरा अुपवास नहीं है, परन्तु अधिकारीवर्गके विरुद्ध प्रचार करनेके बावजूद भी जो अंग्रेज़ भाअी-बहन मुझ पर और मेरे शुरू किये हुअे कामके न्यायपूर्ण होनेके प्रति विश्वास रखते हैं, अुनके विरुद्ध है। अिसी तरह मेरे अुन देश भाअियों, फिर वे हिन्दू हों या और कोअी, जिनका मुझ पर विश्वास नहीं है, अुनके विरुद्ध यह अुपवास नहीं है; बल्कि अुन असंख्य हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध है, फिर वे किसी भी जाति या धर्मके हों, जो यह मानते हैं कि मैंने जो काम हाथमें लिया है वह न्यायपूर्ण है। अिस अुपवासका मुख्य हेतु तो सच्चा धार्मिक कार्य करनेके लिअे हिन्दुओंकी अन्तरात्माको सतेज बनाना है।

यह अुपवास सिर्फ़ भावनाको अपील करनेके लिअे नहीं है। मेरा कुछ भी वज़न हो, तो अुस तमामको मैं अिस अुपवासके द्वारा शुद्ध और सादे

अिस विरोधमें बहुत बड़े अर्थ समाये हुअे हैं। जिस समझौतेसे अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजके भीतर पूरी-पूरी स्वतंत्रता मिलनेका विश्वास न हो, वह समझौता अुनको अलग करनेकी योजनाके अुचित अेवज़के रूपमें खड़ा नहीं रह सकता। अिसलिअे अिस मामलेमें ज़रा भी विश्वासभंग होगा, तो अुससे मेरे आत्मविसर्जनका दिन कुछ मुल्तवी भर हो जायगा। फिर तो मेरे जैसे विचारके और बहुतसे लोग आत्मविसर्जनके लिअे तैयार हो जायँगे। जिम्मेदार हिन्दुओंको अिस प्रश्नका विचार करना है कि अछूत वर्गों पर सामाजिक और राजनैतिक ज़ुल्म कायम रखकर मेरे जैसे अेक सुधारकके ही नहीं, परन्तु संख्यामें बढ़ते जानेवाले अनेक सुधारकोंके आमरण अुपवासके सत्याग्रहका सामना करनेको वे तैयार हैं या नहीं ? मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तानमें अैसे बहुतसे हिन्दू सुधारक मौजूद हैं, जो अिस वर्गकी मुक्तिके लिअे और अुसके मारफत हिन्दूधर्मको युगोंसे चले आ रहे पुराने वहमोंसे छुड़वानेके लिअे अपनी जान देनेमें कुछ भी परवाह नहीं करेंगे।

अिसलिअे मेरे साथ जिन्होंने काम किया है, वे सुधारक साथी भी अिस अुपवासमें रहे हुअे पूरे अर्थको समझ लें।

यह या तो मेरा भ्रम होगा, या मुझे मिला हुआ प्रकाश होगा। अगर भ्रम हो तो शान्तिसे मुझे अपना प्रायश्चित्त पूरा करने देना चाहिये। हिन्दू समाज और धर्म मुझ जैसे जड़ आदमीके बोझसे मुक्त हो जायगा। अगर यह मुझे मिला हुआ प्रकाश हो, तो मेरी तपश्चर्यासे हिन्दूधर्म विशुद्ध बने और जो लोग अभी मुझ पर अविश्वास कर रहे हैं, अुनके हृदय पिघलें।

मेरे अुपवासके अुद्देश्यके विषयमें गलतफहमी मालूम होती है, अिसलिअे मैं फिर कहता हूँ कि मेरा अुपवास दलित वर्गोंको किसी भी रूपमें कानूनसे अलग निर्वाचक मण्डल देनेके विरोधमें है। यह धमकी हमेशाके लिअे दूर होते ही मेरा अुपवास बन्द हो जायगा। सुरक्षित बैठकोंके बारेमें और अिस सारे प्रश्नका निपटारा करनेकी अुचित पद्धतिके बारेमें मैं बहुत कड़े विचार रखता हूँ। मगर मैं मानता हूँ कि कैदी होनेके कारण मुझे अपनी तजवीजें पेश करनेका अधिकार नहीं है। लेकिन सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके जिम्मेदार नेताओंके बीच संयुक्त निर्वाचक मण्डलके आधार पर जो समझौता होगा और जो तमाम हिन्दुओंकी आम सभामें मंजूर कर लिया जायगा, अुससे मैं अपनेको बँधा हुआ मानूँगा।

अेक और चीज़ मुझे साफ कर देनी चाहिये। अछूत वर्गके प्रश्नका सन्तोषजनक निपटारा हो जाय, तो अुसका किसी भी तरह यह अर्थ हरगिज़ नहीं होना चाहिये कि साम्प्रदायिक प्रश्नोंके दूसरे मामलों पर ब्रिटिश सरकारने जो

अिस विरोधमें बहुत बड़े अर्थ समाये हुअे हैं। जिस समझौतेसे अछूत वर्गोंको हिन्दू समाजके भीतर पूरी-पूरी स्वतंत्रता मिलनेका विश्वास न हो, वह समझौता अुनको अलग करनेकी योजनाके अुचित अेवज़के रूपमें खड़ा नहीं रह सकता। अिसलिअे अिस मामलेमें जरा भी विश्वासभंग होगा, तो अुससे मेरे आत्मविसर्जनका दिन कुछ मुलतवी भर हो जायगा। फिर तो मेरे जैसे विचारके और बहुतसे लोग आत्मविसर्जनके लिअे तैयार हो जायँगे। जिम्मेदार हिन्दुओंको अिस प्रश्नका विचार करना है कि अछूत वर्गों पर सामाजिक और राजनैतिक जुल्म कायम रखकर मेरे जैसे अेक सुधारकके ही नहीं, परन्तु संख्यामें बढ़ते जानेवाले अनेक सुधारकोंके आमरण अुपवासके सत्याग्रहका सामना करनेको वे तैयार हैं या नहीं? मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तानमें अैसे बहुतसे हिन्दू सुधारक मौजूद हैं, जो अिस वर्गकी मुक्तिके लिअे और अुसके मारफत हिन्दूधर्मको युगोंसे चले आ रहे पुराने वहमोंसे छुड़वानेके लिअे अपनी जान देनेमें कुछ भी परवाह नहीं करेंगे।

अिसलिअे मेरे साथ जिन्होंने काम किया है, वे सुधारक साथी भी अिस अुपवासमें रहे हुअे पूरे अर्थको समझ लें।

यह या तो मेरा भ्रम होगा, या मुझे मिला हुआ प्रकाश होगा। अगर भ्रम हो तो शान्तिसे मुझे अपना प्रायश्चित्त पूरा करने देना चाहिये। हिन्दू समाज और धर्म मुझ जैसे जड़ आदमीके बोझसे मुक्त हो जायगा। अगर यह मुझे मिला हुआ प्रकाश हो, तो मेरी तपश्चर्यासे हिन्दूधर्म विशुद्ध बने और जो लोग अभी मुझ पर अविश्वास कर रहे हैं, अुनके हृदय पिघलें।

मेरे अुपवासके अुद्देश्यके विषयमें गलतफहमी मालूम होती है, अिसलिअे मैं फिर कहता हूँ कि मेरा अुपवास दलित वर्गोंको किसी भी रूपमें कानूनसे अलग निर्वाचक मण्डल देनेके विरोधमें है। यह धमकी हमेशाके लिअे दूर होते ही मेरा अुपवास बन्द हो जायगा। सुरक्षित बैठकोंके बारेमें और अिस सारे प्रश्नका निपटारा करनेकी अुचित पद्धतिके बारेमें मैं बहुत कड़े विचार रखता हूँ। मगर मैं मानता हूँ कि कैदी होनेके कारण मुझे अपनी तजवीजें पेश करनेका अधिकार नहीं है। लेकिन सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके जिम्मेदार नेताओंके बीच संयुक्त निर्वाचक मण्डलके आधार पर जो समझौता होगा और जो तमाम हिन्दुओंकी आम सभामें मंजूर कर लिया जायगा, अुससे मैं अपनेको बँधा हुआ मानूँगा।

अेक और चीज मुझे साफ कर देनी चाहिये। अछूत वर्गके प्रश्नका सन्तोषजनक निपटारा हो जाय, तो अुसका किसी भी तरह यह अर्थ हरगिज़ नहीं होना चाहिये कि साम्प्रदायिक प्रश्नोंके दूसरे मामलों पर ब्रिटिश सरकारने जो

अग्नि शय्यासे

१

[२० सितम्बरको दोपहरके बारह बजे अुपवास शुरू करनेसे पहले गाया गया भजन।]

अुठ जाग मुसाफिर! भोर भअी,
अब रैन कहाँ जो सोवत है?
जो सोवत है वह खोवत है,
जो जागत है वह पावत है।

टुक नींदसे अखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल! रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीत करनकी रीत नहीं,
रब जागत है तू सोवत है।

अय जान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी! पापमें चैन कहाँ?
जब पापकी गठड़ी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है?

जो काल करे वह आज कर ले,
जो आज करे वह अब कर ले,
जब चिड़ियन खेती चुग डारी,
फिर पछतावे क्या होवत है?

अग्नि शय्यासे

१

[२० सितम्बरको दोपहरके बारह बजे अुपवास शुरू करनेसे पहले गाया गया भजन।]

अुठ जाग मुसाफिर! भोर भअी,
अब रैन कहाँ जो सोवत है!
जो सोवत है वह खोवत है,
जो जागत है वह पावत है।

टुक नींदसे अखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल! रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीत करनकी रीत नहीं,
रब जागत है तू सोवत है।

अय जान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी! पापमें चैन कहाँ?
जब पापकी गठड़ी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है!

जो काल करे वह आज कर ले,
जो आज करे वह अब कर ले,
जब चिड़ियन खेती चुग डारी,
फिर पछतावे क्या होवत है!

फिर आजके अिस मुख्य प्रश्न पर बात चली कि अछूत वर्गोंको कितना प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। पहले तो गांधीजीने अिस बात पर अपना आश्चर्य प्रगट किया कि बम्बअी सरकारको भेजा हुआ अेक वक्तव्य पाँच दिन हो जाने पर भी प्रकाशित नहीं किया गया। अगर वह वक्तव्य आज फिर लिखना पड़े, तो अुसके बाद हुअी घटनाओंके प्रकाशमें वह दूसरा ही होगा। मुलाकातके अंतमें अुन्होंने बताया कि अुनके अिस नये बयानको अुस बयानका पूरक माना जाय, परंतु अुस पर आधार रखनेवाला न माना जाय।

अुन्होंने आगे बताया, "मेरे पन्ने तो खुले हुअे ही हैं। परंतु प्रस्तुत विषयमें जेलकी सींखचोंके भीतरसे मैं कुछ नहीं कह सकता था। अब अंकुश हटा लिये गये हैं, तो अखबारवालोंको मैं यह पहली ही मुलाकात दे रहा हूँ। मेरा अुपवास कानूनसे निश्चित की हुअी सुरक्षित बैठकोंके खिलाफ नहीं है, परंतु अलग निर्वाचक मण्डलोंके विरुद्ध है। यह कहना ठीक नहीं है कि कानूनसे सुरक्षित बैठकें रखी जायँ, तो अुसके विरुद्ध अपने अुग्र विरोध द्वारा मैं अछूतोंके हितोंको हानि पहुँचा रहा हूँ। सुरक्षित बैठकोंके विरुद्ध मैं था ज़रूर और आज भी हूँ। परंतु सुरक्षित बैठकोंकी योजना स्वीकार या अस्वीकार करनेके लिअे मेरे सामने कभी रखी ही नहीं गअी। अिसलिअे अिस मुद्दे पर मेरे लिअे कोअी निर्णय करनेका सवाल ही नहीं था। अिस प्रश्न पर जब मैंने अपने विचार अपने आप प्रगट किये, तब ज़रूर अिस विषयमें मैंने अपनी निराशा बताअी। मेरी नम्र रायमें अिस तरहकी सुरक्षित बैठकोंसे अछूतोंकी कोअी सेवा होनेके बजाय अुल्टा नुकसान ही होता है। क्योंकि अिससे अुनका स्वाभाविक विकास रुक जाता है। किसी भी जातिको क़ानूनसे सुरक्षित बैठकें देनेका मतलब है मनुष्यको सहारा देकर चलाना। वह जिस हद तक अिस सहारे पर आधार रखने लगता है, अुस हद तक वह अपंग बन जाता है।

"अगर लोग मुझ पर हँसें नहीं, तो मैं नम्रतापूर्वक यह दावा पेश करना चाहता हूँ कि यद्यपि जन्मसे मैं 'स्पृश्य' हूँ, तथापि मैंने 'अस्पृश्य' बनना पसंद किया है। और 'अस्पृश्यों' में भी अूपरके दस फ़ीसदीका प्रतिनिधि बननेका मैंने प्रयत्न नहीं किया, परंतु मेरी महत्वाकांक्षा 'अस्पृश्यों' की ठेठ नीचेकी सतहके लोगोंके साथ अेकरूप हो जानेकी और अुनका प्रतिनिधि बननेकी है। अछूतोंके लिअे यह शर्मकी बात है कि अुनमें भी जातिभेद और अूँच-नीचके भेद हैं। अुनमें 'अदृश्य' और 'अगम्य' माने जानेवाले वर्ग भी हैं। जहाँ-जहाँ मैं जाता हूँ वहीं मेरे मनःचक्षुके सामने ये लोग आकर खड़े हो जाते हैं, क्योंकि अुन्हें ज़हरके प्यालेका आकंठ पान करना पड़ा है। मैंने अुन्हें मलाबारमें देखा है, अुड़ीसामें देखा है। मुझे विश्वास हो गया है कि यदि किसी भी दिन

फिर आजके अिस मुख्य प्रश्न पर बात चली कि अछूत वर्गोंको कितना प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। पहले तो गांधीजीने अिस बात पर अपना आश्चर्य प्रगट किया कि बम्बअी सरकारको भेजा हुआ अेक वक्तव्य पाँच दिन हो जाने पर भी प्रकाशित नहीं किया गया। अगर वह वक्तव्य आज फिर लिखना पड़े, तो अुसके बाद हुअी घटनाओंके प्रकाशमें वह दूसरा ही होगा। मुलाकातके अंतमें अुन्होंने बताया कि अुनके अिस नये बयानको अुस बयानका पूरक माना जाय, परंतु अुस पर आधार रखनेवाला न माना जाय।

अुन्होंने आगे बताया, "मेरे पन्ने तो खुले हुअे ही हैं। परंतु प्रस्तुत विषयमें जेलकी सींखचोंके भीतरसे मैं कुछ नहीं कह सकता था। अब अंकुश हटा लिये गये हैं, तो अखबारवालोंको मैं यह पहली ही मुलाकात दे रहा हूँ। मेरा अुपवास कानूनसे निश्चित की हुअी सुरक्षित बैठकोंके खिलाफ नहीं है, परंतु अलग निर्वाचक मण्डलोंके विरुद्ध है। यह कहना ठीक नहीं है कि कानूनसे सुरक्षित बैठकें रखी जायँ, तो अुसके विरुद्ध अपने अुग्र विरोध द्वारा मैं अछूतोंके हितोंको हानि पहुँचा रहा हूँ। सुरक्षित बैठकोंके विरुद्ध मैं था ज़रूर और आज भी हूँ। परंतु सुरक्षित बैठकोंकी योजना स्वीकार या अस्वीकार करनेके लिअे मेरे सामने कभी रखी ही नहीं गअी। अिसलिअे अिस मुद्दे पर मेरे लिअे कोअी निर्णय करनेका सवाल ही नहीं था। अिस प्रश्न पर जब मैंने अपने विचार अपने आप प्रगट किये, तब ज़रूर अिस विषयमें मैंने अपनी निराशा बताअी। मेरी नम्र रायमें अिस तरहकी सुरक्षित बैठकोंसे अछूतोंकी कोअी सेवा होनेके बजाय अुल्टा नुकसान ही होता है। क्योंकि अिससे अुनका स्वाभाविक विकास रुक जाता है। किसी भी जातिको क़ानूनसे सुरक्षित बैठकें देनेका मतलब है मनुष्यको सहारा देकर चलाना। वह जिस हद तक अिस सहारे पर आधार रखने लगता है, अुस हद तक वह अपंग बन जाता है।

"अगर लोग मुझ पर हँसें नहीं, तो मैं नम्रतापूर्वक यह दावा पेश करना चाहता हूँ कि यद्यपि जन्मसे मैं 'स्पृश्य' हूँ, तथापि मैंने 'अस्पृश्य' बनना पसंद किया है। और 'अस्पृश्यों' में भी अूपरके दस फ़ीसदीका प्रतिनिधि बननेका मैंने प्रयत्न नहीं किया, परंतु मेरी महत्वाकांक्षा 'अस्पृश्यों' की ठेठ नीचेकी सतहके लोगोंके साथ अेकरूप हो जानेकी और अुनका प्रतिनिधि बननेकी है। अछूतोंके लिअे यह शर्मकी बात है कि अुनमें भी जातिभेद और अूँच-नीचके भेद हैं। अुनमें 'अदृश्य' और 'अगम्य' माने जानेवाले वर्ग भी हैं। जहाँ-जहाँ मैं जाता हूँ वहीं मेरे मनःचक्षुके सामने ये लोग आकर खड़े हो जाते हैं, क्योंकि अुन्हें ज़हरके प्यालेका आकंठ पान करना पड़ा है। मैंने अुन्हें मलाबारमें देखा है, अुड़ीसामें देखा है। मुझे विश्वास हो गया है कि यदि किसी भी दिन

वे बड़ी भूल करेंगे और मेरा जीवन भी बरबाद कर देंगे। कारण अलग निर्वाचक मंडल रद्द होनेसे मेरे अिस अुपवासका अंत तो हो जायगा, मगर जिस जीवित समझौतेके लिअे मैं जूझ रहा हूँ वह नहीं होगा, तो मेरे लिअे यह जीतेजी मौत होगी। अिसका अर्थ यही होगा कि यह अुपवास बन्द करके मुझे तुरंत ही दूसरे अुपवासकी सूचना देनी होगी, ताकि मेरी प्रतिज्ञाके भावका पूरा-पूरा पालन हो।

"यह चीज़ दूसरे लोगोंको नादानी भरी लगेगी। मगर मुझे अैसी नहीं लगती। मेरे पास कुछ अधिक देनेको हो, तो वह भी मैं अिस शापको मिटानेके लिअे दे दूँ। मगर अपनी जिन्दगीसे अधिक मेरे पास और कुछ नहीं है।

"मैं मानता हूँ कि अगर अस्पृश्यता सचमुच जड़से नष्ट हो जायगी, तो हिन्दू समाज परसे भयंकर कलंक दूर हो जायगा। अितना ही नहीं बल्कि अुसका असर सारी दुनिया पर होगा। अस्पृश्यताके विरुद्ध मेरी यह लड़ाअी सारे मानव समाजमें बसी हुअी अशुद्धिके विरुद्ध लड़ाअी है। अिसलिअे जब मैंने सर सेम्युअल होरको पत्र लिखा, तब मेरे दिलमें पूरी श्रद्धा थी कि अगर मैं अिस काममें अितने स्वच्छ हृदयसे पड़ा हूँ, जो किसी भी तरहकी अशुद्धिसे मुक्त और किसी भी किस्मके द्वेष और किसी भी प्रकारके क्रोधसे मुक्त मनुष्यके लिअे संभव है, तो मानवकुलके समस्त अुत्तम तत्त्व मेरी सहायताके लिअे अवश्य ही दौड़ पड़ेंगे। अिस प्रकार आप देख सकेंगे कि मेरा अुपवास हिन्दू समाजके प्रति श्रद्धा पर, मनुष्य स्वभावके प्रति श्रद्धा पर और अधिकारी वर्गके प्रति भी श्रद्धा पर स्थित है।"

अपनी मुलाकात जारी रखते हुअे गांधीजीने कहा, "अस्पृश्यताको चुनौती देनेमें मैं मामलेकी जड़ तक पहुँचता हूँ। अिसीलिअे महत्त्वमें यह प्रश्न राजनैतिक स्वराज्यके सवालसे भी कहीं बढ़कर है। दलित वर्गके करोड़ों लोगोंके हृदयोंमें आशाका अुदय हुआ है कि अुनके कंधेका यह कुचल डालनेवाला बोझा दूर होगा। मैं तो कहता हूँ कि अिस आशाके नैतिक आधारके बिना स्वराज्यका विधान जड़ बोझ जैसा होगा। चित्रके अिस सजीव पहलूको अंग्रेज कर्मचारी नहीं देख सकते, अिसीलिअे वे अपने अज्ञानमें और आत्मसंतोषमें जो प्रश्न करोड़ों लोगोंके मूल अस्तित्व पर असर करता है — यहाँ मैं सवर्णों और अस्पृश्यों यानी जुल्म करनेवाले और जुल्मका शिकार होनेवाले दोनोंकी बात कर रहा हूँ — अुस प्रश्न पर न्याय देनेकी धृष्टता करते हैं। अिस अधिकारी वर्गको अुसके घोर अज्ञानसे — कोअी अपराध किये बिना मैं अैसा शब्द प्रयोग कर सकता हूँ तो — जगानेके लिअे भी मेरे अन्तर्नादने अपनी समस्त शक्तिसे अिस चीज़का विरोध करनेकी मुझे प्रेरणा की है।"

वे बड़ी भूल करेंगे और मेरा जीवन भी बरबाद कर देंगे। कारण अलग निर्वाचक मंडल रद्द होनेसे मेरे अिस अुपवासका अंत तो हो जायगा, मगर जिस जीवित समझौतेके लिअे मैं जूझ रहा हूँ वह नहीं होगा, तो मेरे लिअे यह जीतेजी मौत होगी। अिसका अर्थ यही होगा कि यह अुपवास बन्द करके मुझे तुरंत ही दूसरे अुपवासकी सूचना देनी होगी, ताकि मेरी प्रतिज्ञाके भावका पूरा-पूरा पालन हो।

"यह चीज़ दूसरे लोगोंको नादानी भरी लगेगी। मगर मुझे अैसी नहीं लगती। मेरे पास कुछ अधिक देनेको हो, तो वह भी मैं अिस शापको मिटानेके लिअे दे दूँ। मगर अपनी जिन्दगीसे अधिक मेरे पास और कुछ नहीं है।

"मैं मानता हूँ कि अगर अस्पृश्यता सचमुच जड़से नष्ट हो जायगी, तो हिन्दू समाज परसे भयंकर कलंक दूर हो जायगा। अितना ही नहीं बल्कि अुसका असर सारी दुनिया पर होगा। अस्पृश्यताके विरुद्ध मेरी यह लड़ाअी सारे मानव समाजमें बसी हुअी अशुद्धिके विरुद्ध लड़ाअी है। अिसलिअे जब मैंने सर सेम्युअल होरको पत्र लिखा, तब मेरे दिलमें पूरी श्रद्धा थी कि अगर मैं अिस काममें अितने स्वच्छ हृदयसे पड़ा हूँ, जो किसी भी तरहकी अशुद्धिसे मुक्त और किसी भी किस्मके द्वेष और किसी भी प्रकारके क्रोधसे मुक्त मनुष्यके लिअे संभव है, तो मानवकुलके समस्त अुत्तम तत्त्व मेरी सहायताके लिअे अवश्य ही दौड़ पड़ेंगे। अिस प्रकार आप देख सकेंगे कि मेरा अुपवास हिन्दू समाजके प्रति श्रद्धा पर, मनुष्य स्वभावके प्रति श्रद्धा पर और अधिकारी वर्गके प्रति भी श्रद्धा पर स्थित है।"

अपनी मुलाकात जारी रखते हुअे गांधीजीने कहा, "अस्पृश्यताको चुनौती देनेमें मैं मामलेकी जड़ तक पहुँचता हूँ। अिसीलिअे महत्त्वमें यह प्रश्न राजनैतिक स्वराज्यके सवालसे भी कहीं बढ़कर है। दलित वर्गके करोड़ों लोगोंके हृदयोंमें आशाका अुदय हुआ है कि अुनके कंधेका यह कुचल डालनेवाला बोझा दूर होगा। मैं तो कहता हूँ कि अिस आशाके नैतिक आधारके बिना स्वराज्यका विधान जड़ बोझ जैसा होगा। चित्रके अिस सजीव पहलूको अंग्रेज कर्मचारी नहीं देख सकते, अिसीलिअे वे अपने अज्ञानमें और आत्मसंतोषमें जो प्रश्न करोड़ों लोगोंके मूल अस्तित्व पर असर करता है — यहाँ मैं सवर्णों और अस्पृश्यों यानी ज़ुल्म करनेवाले और ज़ुल्मका शिकार होनेवाले दोनोंकी बात कर रहा हूँ — अुस प्रश्न पर न्याय देनेकी धृष्टता करते हैं। अिस अधिकारी वर्गको अुसके घोर अज्ञानसे — कोअी अपराध किये बिना मैं अैसा शब्द प्रयोग कर सकता हूँ तो — जगानेके लिअे भी मेरे अन्तर्नादने अपनी समस्त शक्तिसे अिस चीज़का विरोध करनेकी मुझे प्रेरणा की है।"

आपकी योजनामें अछूतवर्गके नेताओंके विचार भी ध्यानमें रखने चाहियें ? अुनके साथ आप कहाँ तक समझौता करनेको तैयार हैं ?

अमेरिकाके लोग यह भी नहीं समझ पाते कि अिस तरह अुपवास करके मर जानेसे हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताका अपना निर्विवाद नेतृत्वपद आप जानबूझकर क्यों फेंक रहे हैं ? और जबकि राष्ट्रीयता अपने स्वराज्यके ध्येयकी सिद्धिके नजदीक आओी हुओी दीखती है, अुस वक्त अुसे किस लिअे मरने दे रहे हैं ? और क्या अिस समय आप हिन्दुस्तानियोंके केवल अेक ही वर्गके लिअे प्राण अर्पण नहीं कर रहे हैं ? आपका दावा तो यह था कि आप सारे राष्ट्रके प्रतिनिधि हैं । अिसलिअे आप प्राण भी अर्पण करें, तो वह सारे राष्ट्रके लिअे कीजिये । आपने अेक बार मुझसे कहा था कि स्वराज्यकी लड़ाओी तमाम धर्म-सम्प्रदायोंसे परे है और कांग्रेसके नेताकी हैसियतसे आप राष्ट्रीय हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों और अीसाअियों — सबके प्रतिनिधि हैं । अेक धार्मिक प्रश्नकी खातिर, जिसका निर्णय करनेका अब हिन्दुओंको हक नहीं रहा, क्या आप अिस समय अपने नेतृत्वपदका त्याग नहीं कर रहे हैं ? हिन्दुस्तानमें और अिंग्लैण्डमें प्रगट किये गये आपके विचार अमेरिकाके लोगोंके सामने अन्तःकरणसे पेश करनेका प्रयत्न करनेवालेकी हैसियतसे मैं आपके जवाबकी कदर करूँगा ।

गांधीजीका अुत्तर

धन्यवाद । अमेरिकाके लोगोंकी अुलझनसे मुझे आश्चर्य नहीं होता । दुनियाको मैं आश्चर्यमें डालता हूँ, यह मेरा दुर्भाग्य हो सकता है या सद्भाग्य भी । नये-नये प्रयोग करने या पुराने प्रयोगोंको नये ढंगसे करनेके कारण अक्सर गलतफहमी हो जाया करती है । शिष्टाचारके नियमोंके कारण सरकारको लिखे हुअे पत्रोंमें मुझे अपने आप पर बहुत कड़ा अंकुश रखना पड़ा था । जेलके नियमोंके अनुसार बाहरकी दुनियाके साथ मैं पत्रव्यवहार नहीं कर सकता । मैंने अिन नियमोंके शब्द और भाव दोनोंका पालन किया है ।

जो समझौता अभी तैयार हो रहा है, अुसके अनुसार अछूतोंको ब्रिटिश निर्णयसे ज्यादा अच्छा और ज्यादा विशाल प्रतिनिधित्व मिलेगा । अछूतोंके नेताओंके मतसे निरपेक्ष रूपसे अछूतोंके आम वर्गके मतका मुझे विश्वास न होता, तो जिस ढंगसे मैंने अुपवास किया है अुस ढंगसे मैं नहीं कर सकता था । और जहाँ तक मैं जानता हूँ, अछूत नेताओंमें से भी विशाल बहुमतका समर्थन मुझे प्राप्त है । मैं तो अुनके साथ भी अछूत वर्गके सर्वोपरि हितोंकी रक्षा करके समझौता करनेमें यथाशक्ति ज्यादा आगे जाअूँ । अछूत नेताओंकी अपेक्षा अछूत वर्गका हित ज्यादा जाननेका दावा करनेकी मेरी धृष्टतासे आप चौंकें

आपकी योजनामें अछूतवर्गके नेताओंके विचार भी ध्यानमें रखने चाहियें? अुनके साथ आप कहाँ तक समझौता करनेको तैयार हैं?

अमेरिकाके लोग यह भी नहीं समझ पाते कि अिस तरह अुपवास करके मर जानेसे हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताका अपना निर्विवाद नेतृत्वपद आप जानबूझकर क्यों फेंक रहे हैं? और जबकि राष्ट्रीयता अपने स्वराज्यके ध्येयकी सिद्धिके नजदीक आअी हुअी दीखती है, अुस वक्त अुसे किस लिअे मरने दे रहे हैं? और क्या अिस समय आप हिन्दुस्तानियोंके केवल अेक ही वर्गके लिअे प्राण अर्पण नहीं कर रहे हैं? आपका दावा तो यह था कि आप सारे राष्ट्रके प्रतिनिधि हैं। अिसलिअे आप प्राण भी अर्पण करें, तो वह सारे राष्ट्रके लिअे कीजिये। आपने अेक बार मुझसे कहा था कि स्वराज्यकी लड़ाअी तमाम धर्म-सम्प्रदायोंसे परे है और कांग्रेसके नेताकी हैसियतसे आप राष्ट्रीय हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों और अीसाअियों — सबके प्रतिनिधि हैं। अेक धार्मिक प्रश्नकी खातिर, जिसका निर्णय करनेका अब हिन्दुओंको हक नहीं रहा, क्या आप अिस समय अपने नेतृत्वपदका त्याग नहीं कर रहे हैं? हिन्दुस्तानमें और अिंग्लैण्डमें प्रगट किये गये आपके विचार अमेरिकाके लोगोंके सामने अन्तःकरणसे पेश करनेका प्रयत्न करनेवालेकी हैसियतसे मैं आपके जवाबकी कदर करूँगा।

गांधीजीका अुत्तर

धन्यवाद। अमेरिकाके लोगोंकी अुलझनसे मुझे आश्चर्य नहीं होता। दुनियाको मैं आश्चर्यमें डालता हूँ, यह मेरा दुर्भाग्य हो सकता है या सद्भाग्य भी। नये-नये प्रयोग करने या पुराने प्रयोगोंको नये ढंगसे करनेके कारण अक्सर गलतफहमी हो जाया करती है। शिष्टाचारके नियमोंके कारण सरकारको लिखे हुअे पत्रोंमें मुझे अपने आप पर बहुत कड़ा अंकुश रखना पड़ा था। जेलके नियमोंके अनुसार बाहरकी दुनियाके साथ मैं पत्रव्यवहार नहीं कर सकता। मैंने अिन नियमोंके शब्द और भाव दोनोंका पालन किया है।

जो समझौता अभी तैयार हो रहा है, अुसके अनुसार अछूतोंको ब्रिटिश निर्णयसे ज्यादा अच्छा और ज्यादा विशाल प्रतिनिधित्व मिलेगा। अछूतोंके नेताओंके मतसे निरपेक्ष रूपसे अछूतोंके आम वर्गके मतका मुझे विश्वास न होता, तो जिस ढंगसे मैंने अुपवास किया है अुस ढंगसे मैं नहीं कर सकता था। और जहाँ तक मैं जानता हूँ, अछूत नेताओंमें से भी विशाल बहुमतका समर्थन मुझे प्राप्त है। मैं तो अुनके साथ भी अछूत वर्गके सर्वोपरि हितोंकी रक्षा करके समझौता करनेमें यथाशक्ति ज्यादा आगे जाअूँ। अछूत नेताओंकी अपेक्षा अछूत वर्गका हित ज्यादा जाननेका दावा करनेकी मेरी धृष्टतासे आप चौंकें

४

यरवदा-करार

[अछूत वर्गोंकी तरफके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके बीच, धारासभाओंमें अछूत वर्गके प्रतिनिधित्वके बारेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंके बारेमें हुअे अिकरारनामेका मजमून ।]

१. साधारण निर्वाचक मण्डलोंमें अछूत वर्गोंके लिअे निश्चित बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी । प्रान्तीय धारासभाओंमें नीचे लिखे अनुसार बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी :

मद्रास	३०
बम्बअी, सिन्ध सहित	१५
पंजाब	८
बिहार और अुड़ीसा	१८
मध्यप्रान्त	२०
आसाम	७
बंगाल	३०
युक्तप्रान्त	२०
कुल	१४८

प्रधानमंत्रीके फैसलेमें जो प्रान्तीय धारासभाओंकी कुल बैठकें घोषित की गअी हैं, अुनके आधार पर यह संख्या निश्चित की गअी है ।

२. अिन बैठकोंके लिअे चुनाव संयुक्त मताधिकारके आधार पर किया जायगा; परंतु वह नीचे लिखे तरीकेसे होगा :

साधारण निर्वाचक मण्डलके मतपत्रकमें दर्ज अछूत वर्गके तमाम मतदाताओंका अेक निर्वाचक मण्डल बनेगा । अछूत वर्गके अुम्मीदवारोंमें से अुनके लिअे सुरक्षित रखी गअी हर बैठकके लिअे चार-चार अुम्मीदवार, हरअेक मतदाता अेक-अेक मत दे अिस पद्धतिसे, चुन लेंगे । अिस तरहके प्रारम्भिक चुनावमें चुने गये अुम्मीदवार साधारण चुनावमें अुम्मीदवारके रूपमें खड़े होंगे ।

३. केन्द्रीय धारासभामें अछूत वर्गका प्रतिनिधित्व संयुक्त निर्वाचक मण्डल और सुरक्षित बैठकोंके सिद्धान्तके अनुसार होगा और प्रान्तीय धारासभाओंमें अुनके प्रतिनिधियोंके चुनावके लिअे अूपरकी कलम २ में बताअी गअी पद्धतिके अनुसार रखा जायगा ।

यरवदा-करार

[अछूत वर्गोंकी तरफके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके बीच, धारासभाओंमें अछूत वर्गके प्रतिनिधित्वके बारेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंके बारेमें हुअे अिकरारनामेका मजमून ।]

१. साधारण निर्वाचक मण्डलोंमें अछूत वर्गोंके लिअे निश्चित बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी । प्रान्तीय धारासभाओंमें नीचे लिखे अनुसार बैठकें सुरक्षित रखी जायँगी :

मद्रास	३०
बम्बअी, सिन्ध सहित	१५
पंजाब	८
बिहार और अुड़ीसा	१८
मध्यप्रान्त	२०
आसाम	७
बंगाल	३०
युक्तप्रान्त	२०
कुल	१४८

प्रधानमंत्रीके फैसलेमें जो प्रान्तीय धारासभाओंकी कुल बैठकें घोषित की गअी हैं, अुनके आधार पर यह संख्या निश्चित की गअी है ।

२. अिन बैठकोंके लिअे चुनाव संयुक्त मताधिकारके आधार पर किया जायगा; परंतु वह नीचे लिखे तरीकेसे होगा :

साधारण निर्वाचक मण्डलके मतपत्रकमें दर्ज अछूत वर्गके तमाम मतदाताओंका अेक निर्वाचक मण्डल बनेगा । अछूत वर्गके अुम्मीदवारोंमें से अुनके लिअे सुरक्षित रखी गअी हर बैठकके लिअे चार-चार अुम्मीदवार, हरअेक मतदाता अेक-अेक मत दे अिस पद्धतिसे, चुन लेंगे । अिस तरहके प्रारम्भिक चुनावमें चुने गये अुम्मीदवार साधारण चुनावमें अुम्मीदवारके रूपमें खड़े होंगे ।

३. केन्द्रीय धारासभामें अछूत वर्गका प्रतिनिधित्व संयुक्त निर्वाचक मण्डल और सुरक्षित बैठकोंके सिद्धान्तके अनुसार होगा और प्रान्तीय धारासभाओंमें अुनके प्रतिनिधियोंके चुनावके लिअे अूपरकी कलम २ में बताअी गअी पद्धतिके अनुसार रखा जायगा ।

हिन्दू परिषदकी आखिरी बैठकमें बम्बअीमें २५ सितम्बरको नीचे लिखे हस्ताक्षर और बढ़ाये गये थे :

लल्लूभाअी शामलदास	पी. कोदंडराव
हंसा महेता	जी. के. गाडगिल
के. नटराजन	मनु सुबेदार
कामकोटी नटराजन	अवन्तिकाबाअी गोखले
पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास	के. जे. चितलिया
मथुरादास विसनजी	राधाकान्त मालवीय
वालचंद हीराचंद	अे. आर. भट
अेच. अेन. कुंजरू	कोलम
के. जी. लिमये	प्रधान

५

हिन्दू समझौतेका समर्थन करते हैं

[२५ सितम्बरको बम्बअीमें हुअी हिन्दू परिषदकी अन्तिम बैठकमें नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया गया था।]

१. सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके नेताओंके बीच २४ सितंबर १९३२ को पूनामें हुअे समझौतेका यह परिषद समर्थन करती है और विश्वास रखती है कि ब्रिटिश सरकार हिन्दू जातिके भीतर अलग निर्वाचक मण्डल बनानेवाला अपना निर्णय बदल देगी और अिस समझौतेको पूरी तरह मंजूर कर लेगी। परिषद आग्रह करती है कि सरकार अिस मामलेमें जल्दी कदम अुठाये, ताकि महात्मा गांधी अपनी प्रतिज्ञाकी शर्तोंके अनुसार और बहुत देर होनेसे पहले अपना अुपवास छोड़ सकें। परिषद सम्बन्धित जातियोंके नेताओंसे अपील करती है कि वे समझौतेके और अिस प्रस्तावके सारे परिणामोंको समझें और अुन्हें पूरा करनेकी सच्चे दिलसे कोशिश करें।

२. यह परिषद निश्चय करती है कि अब अिसके बाद जन्मके कारण किसीको भी अछूत नहीं माना जायगा; और आज तक जिनको अछूत माना गया है, अुनके सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक रास्तों और सार्वजनिक संस्थाओंके अुपयोग सम्बन्धी अधिकार दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही माने जायँगे। अिन अधिकारोंको जल्दीसे जल्दी कानूनी मान्यता दे दी जायगी और अगर वह मान्यता जल्दी नहीं मिली, तो अिस सम्बन्धका कानून स्वराज्य पार्लियामेण्टके पहलेसे पहले कानूनोंमें से अेक होगा।

हिन्दू परिषदकी आखिरी बैठकमें बम्बअीमें २५ सितम्बरको नीचे लिखे हस्ताक्षर और बढ़ाये गये थे:

लल्लूभाअी शामलदास	पी. कोदंडराव
हंसा महेता	जी. के. गाडगिल
के. नटराजन	मनु सुबेदार
कामकोटी नटराजन	अवन्तिकाबाअी गोखले
पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास	के. जे. चितलिया
मथुरादास विसनजी	राधाकान्त मालवीय
वालचंद हीराचंद	अे. आर. भट
अेच. अेन. कुंजरू	कोलम
के. जी. लिमये	प्रधान

५

हिन्दू समझौतेका समर्थन करते हैं

[२५ सितम्बरको बम्बअीमें हुअी हिन्दू परिषदकी अन्तिम बैठकमें नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया गया था।]

१. सवर्ण हिन्दुओं और अछूत वर्गोंके नेताओंके बीच २४ सितंबर १९३२ को पूनामें हुअे समझौतेका यह परिषद समर्थन करती है और विश्वास रखती है कि ब्रिटिश सरकार हिन्दू जातिके भीतर अलग निर्वाचक मण्डल बनानेवाला अपना निर्णय बदल देगी और अिस समझौतेको पूरी तरह मंजूर कर लेगी। परिषद आग्रह करती है कि सरकार अिस मामलेमें जल्दी कदम अुठाये, ताकि महात्मा गांधी अपनी प्रतिज्ञाकी शर्तोंके अनुसार और बहुत देर होनेसे पहले अपना अुपवास छोड़ सकें। परिषद सम्बन्धित जातियोंके नेताओंसे अपील करती है कि वे समझौतेके और अिस प्रस्तावके सारे परिणामोंको समझें और अुन्हें पूरा करनेकी सच्चे दिलसे कोशिश करें।

२. यह परिषद निश्चय करती है कि अब अिसके बाद जन्मके कारण किसीको भी अछूत नहीं माना जायगा; और आज तक जिनको अछूत माना गया है, अुनके सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक रास्तों और सार्वजनिक संस्थाओंके अुपयोग सम्बन्धी अधिकार दूसरे हिन्दुओंके बराबर ही माने जायँगे। अिन अधिकारोंको जल्दीसे जल्दी कानूनी मान्यता दे दी जायगी और अगर वह मान्यता जल्दी नहीं मिली, तो अिस सम्बन्धका कानून स्वराज्य पालियामेण्टके पहलेसे पहले कानूनोंमें से अेक होगा।

अैसा कहनेमें कोअी अभिमान नहीं है। ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल विदेशियोंका होनेके कारण हिन्दुस्तानकी हालतके बारेमें या अस्पृश्यता क्या चीज़ है, अिस विषयमें अुन्हें किसी तरहकी निजी जानकारी नहीं हो सकती। असलमें यह काम अुनके बूतेसे बाहरका था। यद्यपि कुछ हिन्दुस्तानियोंने ही यह काम अुन्हें सौंपा था; फिर भी अपनी शक्तिसे बाहरका मानकर अुन्हें अिस जिम्मेदारीको लेनेसे अिनकार कर देना चाहिये था।

प्रायश्चित्तकी शय्या पर सोया हुआ मैं ये वचन किसी भी तरहके कटाक्ष या गुस्सेमें नहीं बोल रहा हूँ।

ब्रिटिश जनताका और ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलका भी मैं सच्चा मित्र होनेका दावा करता हूँ। अिस अवसर पर मैं अपनी राय, जो प्रस्तुत है, दबाकर रखूँ, तो अुनके प्रति, अपने खुदके प्रति और अपने कामके प्रति झूठा साबित होअूँ। अन्तमें ब्रिटेनको मैं विश्वासके साथ यह कहना चाहता हूँ कि मेरे शरीरमें प्राण रहेंगे तब तक हिन्दूधर्म परसे यह असह्य कलंक दूर करनेके लिअे जितने अुपवास करने पड़ेंगे, करूँगा। हम अीश्वरकी कृपा समझें कि अिस आन्दोलनमें सिर्फ अेक ही आदमी नहीं, परन्तु मैं मानता हूँ कि अैसे हज़ारों मनुष्य हैं, जो अिस सुधारके लिअे अपनी जान देनेको तैयार हैं।

७

सरकार समझौता मंजूर करती है

[२६ सितम्बरको होम मेम्बर मि० हेगने केन्द्रीय धारासभामें नीचे लिखा बयान दिया।]

सम्राटकी सरकारके ४ अगस्तके साम्प्रदायिक निर्णयमें बताअी गअी साधारण निर्वाचक मण्डलकी पद्धतिके बजाय नअी बननेवाली धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंमें अंत्यज वर्गोंके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके नेताओंके बीच समझौता हो गया है, यह जानकर सम्राटकी सरकारको बड़ा सन्तोष हुआ है।

समझौता यह हुआ है कि अंत्यज वर्गोंके लिअे कुछ बैठकें सुरक्षित रखकर निर्वाचक मण्डल संयुक्त रहें। सुरक्षित बैठकोंका चुनाव करनेके ढंगके बारेमें कुछ महत्वपूर्ण शर्तें निश्चित की गअी हैं।

जातियोंके बीच कोअी समझौता न हो सकनेके कारण सरकारने अपना निर्णय दिया था। सरकारका हेतु नअी धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके हितोंकी रक्षाके लिअे अुचित संरक्षण देना था।

अैसा कहनेमें कोअी अभिमान नहीं है। ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल विदेशियोंका होनेके कारण हिन्दुस्तानकी हालतके बारेमें या अस्पृश्यता क्या चीज़ है, अिस विषयमें अुन्हें किसी तरहकी निजी जानकारी नहीं हो सकती। असलमें यह काम अुनके बूतेसे बाहरका था। यद्यपि कुछ हिन्दुस्तानियोंने ही यह काम अुन्हें सौंपा था, फिर भी अपनी शक्तिसे बाहरका मानकर अुन्हें अिस जिम्मेदारीको लेनेसे अिनकार कर देना चाहिये था।

प्रायश्चित्तकी शय्या पर सोया हुआ मैं ये वचन किसी भी तरहके कटाक्ष या गुस्सेमें नहीं बोल रहा हूँ।

ब्रिटिश जनताका और ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलका भी मैं सच्चा मित्र होनेका दावा करता हूँ। अिस अवसर पर मैं अपनी राय, जो प्रस्तुत है, दबाकर रखूँ, तो अुनके प्रति, अपने खुदके प्रति और अपने कामके प्रति झूठा साबित होअूँ। अन्तमें ब्रिटेनको मैं विश्वासके साथ यह कहना चाहता हूँ कि मेरे शरीरमें प्राण रहेंगे तब तक हिन्दूधर्म परसे यह असह्य कलंक दूर करनेके लिअे जितने अुपवास करने पड़ेंगे, करूँगा। हम अीश्वरकी कृपा समझें कि अिस आन्दोलनमें सिर्फ अेक ही आदमी नहीं, परन्तु मैं मानता हूँ कि अैसे हज़ारों मनुष्य हैं, जो अिस सुधारके लिअे अपनी जान देनेको तैयार हैं।

७

सरकार समझौता मंजूर करती है

[२६ सितम्बरको होम मेम्बर मि० हेगने केन्द्रीय धारासभामें नीचे लिखा बयान दिया।]

सम्राटकी सरकारके ४ अगस्तके साम्प्रदायिक निर्णयमें बताअी गअी साधारण निर्वाचक मण्डलकी पद्धतिके बजाय नअी बननेवाली धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके प्रतिनिधित्वके मामलेमें और अुनके कल्याण सम्बन्धी कुछ और बातोंमें अंत्यज वर्गोंके नेताओं और बाकी हिन्दू जातिके नेताओंके बीच समझौता हो गया है, यह जानकर सम्राटकी सरकारको बड़ा सन्तोष हुआ है।

समझौता यह हुआ है कि अंत्यज वर्गोंके लिअे कुछ बैठकें सुरक्षित रखकर निर्वाचक मण्डल संयुक्त रहें। सुरक्षित बैठकोंका चुनाव करनेके ढंगके बारेमें कुछ महत्वपूर्ण शर्तें निश्चित की गअी हैं।

जातियोंके बीच कोअी समझौता न हो सकनेके कारण सरकारने अपना निर्णय दिया था। सरकारका हेतु नअी धारासभाओंमें अंत्यज वर्गोंके हितोंकी रक्षाके लिअे अुचित संरक्षण देना था।

८

'जीवन जखन शुकाये जाय'

[गांधीजीने पारणा किया अुस समय गुरुदेवका गाया हुआ भजन।]

जीवन जखन शुकाये जाय, करुणा-धाराय अेशो,
सकल माधुरी लुकाये जाय, गीत-सुधारसे अेशो।
कर्म जखन प्रबल आकार
गरजि अुठिया ढाके चारिधार
हृदय-प्रान्ते हे जीवन-नाथे! शान्त-चरणे अेशो।
आपनारे जबे करिया कृपण
कोने पड़े थाके दीनहीन मन
दुआर खुलिया हे अुदारनाथ! राज-समारोहे अेशो।
वासना जखन विपुल धूलाय
अंध करिया अबोधे भूलाय
ओ हे पवित्र! ओ हे अनिद्र! रुद्र आलोके अेशो।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[गुरुदेवके भजनका महादेवभाअी द्वारा किया हुआ अनुवाद]

जीवन जव सुकाअी जाय
करुणा वर्षन्ता आवो!
माधुरी मात्र छुपाअी जाय
गीत-सुधा झरन्ता आवो!

कर्मनां ज्यारे काळां वादळ
गरजी गगडी ढांके सहु स्थळ
हृदय-आंगणे हे नीरवनाथ!
प्रशान्त पगले आवो!

मोटुं मन ज्यारे नानुं थअी
खूणे भराये ताळुं दअी,
ताळुं तोड़ी हे अुदारनाथ!
वाजन्ता गाजन्ता आवो!

कामक्रोधनां आकरां तुफान
आंधळा करी भुलावे भान,
हे सदा जागन्त, पाप धुवन्त!
वीजळी चमकन्ता आवो!

'जीवन जखन शुकाये जाय'

[गांधीजीने पारणा किया अुस समय गुरुदेवका गाया हुआ भजन।]

जीवन जखन शुकाये जाय, करुणा-धाराय अेशो,
सकल माधुरी लुकाये जाय, गीत-सुधारसे अेशो।
कर्म जखन प्रबल आकार
गरजि अुठिया ढाके चारिधार
हृदय-प्रान्ते हे जीवन-नाथे! शान्त-चरणे अेशो।
आपनारे जबे करिया कृपण
कोने पड़े थाके दीनहीन मन
दुआर खुलिया हे अुदारनाथ! राज-समारोहे अेशो।
वासना जखन विपुल धूलाय
अंध करिया अबोधे भूलाय
ओ हे पवित्र! ओ हे अनिद्र! रुद्र आलोके अेशो।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[गुरुदेवके भजनका महादेवभाओी द्वारा किया हुआ अनुवाद]

जीवन जब सुकाओी जाय
करुणा वर्षन्ता आवो!
माधुरी मात्र छुपाओी जाय
गीत-सुधा झरन्ता आवो!

कर्मनां ज्यारे काळां वादळ
गरजी गगडी ढांके सहु स्थळ
हृदय-आंगणे हे नीरवनाथ!
प्रशान्त पगले आवो!

मोटुं मन ज्यारे नानुं थओी
खूणे भराये ताळुं दओी,
ताळुं तोड़ी हे अुदारनाथ!
वाजन्ता गाजन्ता आवो!

कामक्रोधनां आकरां तुफान
आंधळा करी भुलावे भान,
हे सदा जागन्त, पाप धुवन्त!
वीजळी चमकन्ता आवो!

सवर्ण हिन्दू अिस क्षमाके लायक साबित होंगे और समझौतेकी हरअेक कलमका और अुससे फलित होनेवाली तमाम बातोंके शब्दका और अुसी तरह भावका अमल करेंगे।

यह चीज़ जरा भी पीछे हटे बिना हाथमें न ली जाय और मर्यादित समयमें पूरी न की जाय, तो अभी छोड़ा हुआ अुपवास फिरसे करनेकी मेरी प्रतिज्ञा अुसमें निहित है। यह चेतावनी मैं साथी सुधारकोंको और आम तौर पर सभी सवर्ण हिन्दुओंको न दूँ, तो विश्वासघात करनेका दोषी बनूँ। मुझे तो मियाद मुकर्रर करनेका खयाल आया था, परन्तु मुझे लगता है कि भीतरसे निश्चित आदेश मिले बिना मैं अैसा न करूँ। मुक्तिका संदेश हरअेक 'अछूत' घरमें पहुँचना चाहिये। यह तभी हो सकता है जब सुधारक गाँव-गाँव पहुँच जायँ। अुत्साहके ज्वारमें और दुबारा वेदनासे मुझे बचा लेनेकी अत्यधिक अिच्छाके कारण कोअी जब्र न होना चाहिये। अज्ञानी और वहमी लोगोंको हमें धीरजके साथ मेहनत करके और खुद कष्ट अुठाकर समझाना है, जबरदस्तीसे अुन्हें मजबूर करनेकी कोशिश कभी नहीं करनी है।

मैं चाहता हूँ कि यह जो करीब-करीब आदर्श निपटारा हुआ है, अुसका अनुसरण दूसरी जातियाँ भी करेंगी और परस्पर विश्वास, लेन-देन और तमाम जातियोंकी बुनियादी अेकताके नवयुगका प्रभात हम सत्वर देख पायेंगे।

यहाँ मैं अकेले हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख प्रश्नका ही ज़िक्र करूँगा। मैं १९२०-२२ में मुसलमानोंके प्रति जैसा था वैसा ही आज भी हूँ। दोनों जातियोंके बीच हृदयकी अेकता और स्थायी शान्तिके लिअे दिल्लीमें जैसे मैं अपनी जान जोखिममें डालनेको तैयार हुआ था, वैसे ही आज भी तैयार हूँ। अिस समय आअी हुअी बाढ़के कारण अिस दिशामें अपने आप प्रयत्न होंगे अैसी मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ। अैसा हो तो और जातियाँ भी बहुत समय तक अलग नहीं रह सकेंगी।

अंतमें मैं सरकारका, जेलके अधिकारियोंका और मेरी देखभालके लिअे सरकार द्वारा नियुक्त डॉक्टरोंका आभार मानता हूँ। मेरी चिन्ता करने और सँभाल रखनेमें कोअी कसर नहीं रखी गअी। करने जैसा कुछ भी बाकी नहीं रखा गया। जेलके कर्मचारियोंको तिहरे दबावके नीचे काम करना पड़ा है; और मैंने देखा है कि जो परिश्रम अुन्हें करना पड़ा, अुसके लिअे अुन्होंने कोअी कोताही नहीं की। मैं छोटे-बड़े सबका आभार मानता हूँ।

अिस समझौते पर जल्दी निर्णय करनेके लिअे मैं ब्रिटिश मंत्रि-मंडलका आभार मानता हूँ। अुनके निर्णयकी जो शर्तें मुझे भेजी गअी हैं, अुनके बारेमें

सवर्ण हिन्दू अिस क्षमाके लायक साबित होंगे और समझौतेकी हरअेक कलमका और अुससे फलित होनेवाली तमाम बातोंके शब्दका और अुसी तरह भावका अमल करेंगे।

यह चीज़ जरा भी पीछे हटे बिना हाथमें न ली जाय और मर्यादित समयमें पूरी न की जाय, तो अभी छोड़ा हुआ अुपवास फिरसे करनेकी मेरी प्रतिज्ञा अुसमें निहित है। यह चेतावनी मैं साथी सुधारकोंको और आम तौर पर सभी सवर्ण हिन्दुओंको न दूँ, तो विश्वासघात करनेका दोषी बनूँ। मुझे तो मियाद मुकर्रर करनेका खयाल आया था, परन्तु मुझे लगता है कि भीतरसे निश्चित आदेश मिले बिना मैं अैसा न करूँ। मुक्तिका संदेश हरअेक 'अछूत' घरमें पहुँचना चाहिये। यह तभी हो सकता है जब सुधारक गाँव-गाँव पहुँच जायँ। अुत्साहके ज्वारमें और दुबारा वेदनासे मुझे बचा लेनेकी अत्यधिक अिच्छाके कारण कोअी जब्र न होना चाहिये। अज्ञानी और वहमी लोगोंको हमें धीरजके साथ मेहनत करके और खुद कष्ट अुठाकर समझाना है, जबरदस्तीसे अुन्हें मजबूर करनेकी कोशिश कभी नहीं करनी है।

मैं चाहता हूँ कि यह जो करीब-करीब आदर्श निपटारा हुआ है, अुसका अनुसरण दूसरी जातियाँ भी करेंगी और परस्पर विश्वास, लेन-देन और तमाम जातियोंकी बुनियादी अेकताके नवयुगका प्रभात हम सत्वर देख पायेंगे।

यहाँ मैं अकेले हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख प्रश्नका ही ज़िक्र करूँगा। मैं १९२०-२२ में मुसलमानोंके प्रति जैसा था वैसा ही आज भी हूँ। दोनों जातियोंके बीच हृदयकी अेकता और स्थायी शान्तिके लिअे दिल्लीमें जैसे मैं अपनी जान जोखिममें डालनेको तैयार हुआ था, वैसे ही आज भी तैयार हूँ। अिस समय आअी हुअी बाढ़के कारण अिस दिशामें अपने आप प्रयत्न होंगे अैसी मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ। अैसा हो तो और जातियाँ भी बहुत समय तक अलग नहीं रह सकेंगी।

अंतमें मैं सरकारका, जेलके अधिकारियोंका और मेरी देखभालके लिअे सरकार द्वारा नियुक्त डॉक्टरोंका आभार मानता हूँ। मेरी चिन्ता करने और सँभाल रखनेमें कोअी कसर नहीं रखी गअी। करने जैसा कुछ भी बाकी नहीं रखा गया। जेलके कर्मचारियोंको तिहरे दबावके नीचे काम करना पड़ा है; और मैंने देखा है कि जो परिश्रम अुन्हें करना पड़ा, अुसके लिअे अुन्होंने कोअी कोताही नहीं की। मैं छोटे-बड़े सबका आभार मानता हूँ।

अिस समझौते पर जल्दी निर्णय करनेके लिअे मैं ब्रिटिश मंत्रि-मंडलका आभार मानता हूँ। अुनके निर्णयकी जो शर्तें मुझे भेजी गअी हैं, अुनके बारेमें

हिन्दू धर्मकी कसौटी

गांधीजीको अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिअे चिट्ठी-पत्री लिखने, कार्यकर्ताओं और अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकातें करने और बयान जारी करनेकी छूट देनेके बाद अुन्होंने जो बयान प्रकाशित किये और मुलाकातें दीं, वे अिस परिशिष्टमें दी गअी हैं।

१

हिन्दू समाजकी कसौटी*

अुपवास छोड़नेके बाद अस्पृश्यताके सवालकी चर्चा करनेका मेरा पूरी तरह अिरादा था, परन्तु यह बात मेरे हाथकी न होनेसे मैं अैसा नहीं कर सका। अब सरकारने मुझे अिस कामके सम्बन्धमें खुला प्रचारकार्य करनेकी अिजाज़त दे दी है। अिसलिअे जो बहुतसे भाअी-बहन यरवदा करारकी आलोचना करने या मुझसे मार्गदर्शन चाहने या अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें खड़े होनेवाले विविध प्रश्नोंके बारेमें मेरे विचार जाननेके लिअे मुझे पत्र लिख रहे हैं, अुन्हें मैं जवाब दे सकूँगा। अिस प्रास्ताविक लेखमें मैं सिर्फ़ मुख्य प्रश्नोंकी ही चर्चा करना चाहता हूँ; जिन सवालोंके तात्कालिक हलकी ज़रूरत नहीं, अुन्हें अभी मुलतवी रखता हूँ।

अन्तर्यामीकी प्रेरणा

पहला सवाल यह है: क्या यह सम्भव है कि मैं फिर अुपवास करूँ? कितने ही पत्रलेखक कहते हैं कि मेरे अुपवासमें बलात्कारकी गंध है, अिसलिअे वह बिलकुल ही नहीं करना चाहिये था, और अिसलिअे वह फिरसे तो किया

---

* पहला बयान, ता० ४–११–१९३२

हिन्दू धर्मकी कसौटी

गांधीजीको अस्पृश्यता-निवारणके कामके लिअे चिट्ठी-पत्री लिखने, कार्यकर्ताओं और अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकातें करने और बयान जारी करनेकी छूट देनेके बाद अुन्होंने जो बयान प्रकाशित किये और मुलाकातें दीं, वे अिस परिशिष्टमें दी गअी हैं ।

१

हिन्दू समाजकी कसौटी *

अुपवास छोड़नेके बाद अस्पृश्यताके सवालकी चर्चा करनेका मेरा पूरी तरह अिरादा था, परन्तु यह बात मेरे हाथकी न होनेसे मैं अैसा नहीं कर सका । अब सरकारने मुझे अिस कामके सम्बन्धमें खुला प्रचारकार्य करनेकी अिजाज़त दे दी है । अिसलिअे जो बहुतसे भाअी-बहन यरवदा करारकी आलोचना करने या मुझसे मार्गदर्शन चाहने या अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें खड़े होनेवाले विविध प्रश्नोंके बारेमें मेरे विचार जाननेके लिअे मुझे पत्र लिख रहे हैं, अुन्हें मैं जवाब दे सकूँगा । अिस प्रास्ताविक लेखमें मैं सिर्फ़ मुख्य प्रश्नोंकी ही चर्चा करना चाहता हूँ; जिन सवालोंकि तात्कालिक हलकी ज़रूरत नहीं, अुन्हें अभी मुलतवी रखता हूँ ।

अन्तर्यामीकी प्रेरणा

पहला सवाल यह है : क्या यह सम्भव है कि मैं फिर अुपवास करूँ ? कितने ही पत्रलेखक कहते हैं कि मेरे अुपवासमें बलात्कारकी गंध है, अिसलिअे वह बिलकुल ही नहीं करना चाहिये था, और अिसलिअे वह फिरसे तो किया

* पहला बयान, ता० ४–११–१९३२

अुपवास किया जायगा। अब सरकार अिसमें से लगभग निकल गअी है। अुसने तो अिस समझौतेके जिस भागसे अुसका सम्बन्ध था, अुस पर जल्दी ही अमल किया है। यरवदा-समझौतेका बड़ा हिस्सा तो अुन करोड़ोंको, मेरी अूपर बताअी हुअी सभाओंमें समूहके समूह आनेवाले कथित सवर्ण हिन्दुओंको पूरा करना है। अुन्हें दलित भाअी-बहनोंको अपने ही भाअियोंकी तरह अपनाना है, और अपने मन्दिरोंमें, घरोंमें, स्कूलोंमें अुनका स्वागत करना है। देहातके अंत्यजोंमें अैसी भावना पैदा करनी चाहिये कि वे अब दूसरे ग्रामवासियोंसे जरा भी घटिया नहीं हैं। जिस भगवानको और लोग भजते हैं, अुसीको वे भी भज सकते हैं; और जो हक्क-सुविधाअें दूसरे भोगते हैं, वे सभी अुन्हें भी भोगनेका अधिकार है। लेकिन अगर सवर्ण हिन्दू समझौतेकी प्राण-स्वरूप अिन शर्तोंका पालन नहीं करेंगे, तो क्या मुझसे अीश्वर और मनुष्यको मुँह दिखानेके लिअे जिन्दा रहा जायगा? मैंने तो डॉ० आम्बेडकर, राव बहादुर राजा और दूसरे दलित वर्गके मित्रोंसे भी यह कहनेकी हिम्मत की है कि समझौतेकी शर्तोंका सवर्ण हिन्दुओंके हाथों पालन करानेके लिअे आप मेरी जिन्दगीको जमानत मानिये।

अब अगर अुपवास करना पड़ेगा, तो वह अिस सुधारके विरोधियोंको दबानेके लिअे नहीं होगा, परन्तु मेरे जो साथी बने हैं और जिन्होंने अस्पृश्यता-निवारणकी प्रतिज्ञा ली है, अुन्हें सतेज करके कर्तव्यपरायण बनानेके लिअे होगा। अगर वे अपनी प्रतिज्ञाओंके प्रति बेवफा साबित हों या अपनी प्रतिज्ञाओंका पालन करनेका अुनका कभी अिरादा ही न हो, और अुनका हिन्दू धर्म महज़ हँसी-खेल हो, तो मुझे जीनेमें कोअी रस ही नहीं रहेगा। अिसलिअे सुधारके विरोधियों पर मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये; या जिन साथियों तथा करोड़ों आदमियोंने मेरे मनमें यह खयाल पैदा किया था कि वे अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें मेरे और कांग्रेसके साथ हैं, परन्तु जो बादमें अिस नतीज़े पर पहुँचे हों कि अस्पृश्यता अीश्वर और मानव-जातिके प्रति अपराध नहीं है, अुन पर भी मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये।

मेरी राय यह है कि अपनी और अुसी तरह दूसरोंकी भी शुद्धिके लिअे अुपवास करना युगों पुरानी प्रथा है; और जब तक मनुष्य अीश्वरके बारेमें आस्था रखता है, तब तक यह प्रथा जारी रहेगी। वह आर्तहृदयकी परमात्माके प्रति प्रार्थना है। परन्तु मेरी दलीलोंमें समझदारी हो या बेवकूफी, जब तक मैं अपने रवैयेमें बेवकूफी या भूल नहीं पाता, तब तक मुझे अिससे डिगाया नहीं जा सकता। अगर अन्तरात्माकी आज्ञा होगी तो ही, और यरवदा-समझौतेकी शर्तोंका पालन करनेकी सवर्ण हिन्दुओंकी अक्षम्य लापरवाहीके कारण यह समझौता

अुपवास किया जायगा। अब सरकार अिसमें से लगभग निकल गअी है। अुसने तो अिस समझौतेके जिस भागसे अुसका सम्बन्ध था, अुस पर जल्दी ही अमल किया है। यरवदा-समझौतेका बड़ा हिस्सा तो अुन करोड़ोंको, मेरी अूपर बताअी हुअी सभाओंमें समूहके समूह आनेवाले कथित सवर्ण हिन्दुओंको पूरा करना है। अुन्हें दलित भाअी-बहनोंको अपने ही भाअियोंकी तरह अपनाना है, और अपने मन्दिरोंमें, घरोंमें, स्कूलोंमें अुनका स्वागत करना है। देहातके अंत्यजोंमें अैसी भावना पैदा करनी चाहिये कि वे अब दूसरे ग्रामवासियोंसे जरा भी घटिया नहीं हैं। जिस भगवानको और लोग भजते हैं, अुसीको वे भी भज सकते हैं; और जो हक्क-सुविधाअें दूसरे भोगते हैं, वे सभी अुन्हें भी भोगनेका अधिकार है। लेकिन अगर सवर्ण हिन्दू समझौतेकी प्राण-स्वरूप अिन शर्तोंका पालन नहीं करेंगे, तो क्या मुझसे अीश्वर और मनुष्यको मुँह दिखानेके लिअे जिन्दा रहा जायगा! मैंने तो डॉ० आम्बेडकर, राव बहादुर राजा और दूसरे दलित वर्गके मित्रोंसे भी यह कहनेकी हिम्मत की है कि समझौतेकी शर्तोंका सवर्ण हिन्दुओंके हाथों पालन करानेके लिअे आप मेरी जिन्दगीको जमानत मानिये।

अब अगर अुपवास करना पड़ेगा, तो वह अिस सुधारके विरोधियोंको दबानेके लिअे नहीं होगा, परन्तु मेरे जो साथी बने हैं और जिन्होंने अस्पृश्यता-निवारणकी प्रतिज्ञा ली है, अुन्हें सतेज करके कर्तव्यपरायण बनानेके लिअे होगा। अगर वे अपनी प्रतिज्ञाओंके प्रति बेवफा साबित हों या अपनी प्रतिज्ञाओंका पालन करनेका अुनका कभी अिरादा ही न हो, और अुनका हिन्दू धर्म महज़ हँसी-खेल हो, तो मुझे जीनेमें कोअी रस ही नहीं रहेगा। अिसलिअे सुधारके विरोधियों पर मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये; या जिन साथियों तथा करोड़ों आदमियोंने मेरे मनमें यह खयाल पैदा किया था कि वे अस्पृश्यताके विरुद्ध लड़ाअीमें मेरे और कांग्रेसके साथ हैं, परन्तु जो बादमें अिस नतीज़े पर पहुँचे हों कि अस्पृश्यता अीश्वर और मानव-जातिके प्रति अपराध नहीं है, अुन पर भी मेरे अुपवासका कोअी असर न होना चाहिये।

मेरी राय यह है कि अपनी और अुसी तरह दूसरोंकी भी शुद्धिके लिअे अुपवास करना युगों पुरानी प्रथा है; और जब तक मनुष्य अीश्वरके बारेमें आस्था रखता है, तब तक यह प्रथा जारी रहेगी। वह आर्तहृदयकी परमात्माके प्रति प्रार्थना है। परन्तु मेरी दलीलोंमें समझदारी हो या बेवकूफी, जब तक मैं अपने रवैयेमें बेवकूफी या भूल नहीं पाता, तब तक मुझे अिससे डिगाया नहीं जा सकता। अगर अन्तरात्माकी आज्ञा होगी तो ही, और यरवदा-समझौतेकी शर्तोंका पालन करनेकी सवर्ण हिन्दुओंकी अक्षम्य लापरवाहीके कारण यह समझौता

है, अुसमें अिन्हें मिला देनेका मैं स्वप्नमें भी विचार नहीं करूँगा। अस्पृश्यताको जिस रूपमें हम सब जानते हैं, वह हिन्दू धर्मके मर्मस्थलोंको कुतर कर खा जानेवाला कीड़ा है, जबकि भोजन और विवाहके प्रतिबंध हिन्दू समाजके विकासमें रुकावट डालनेवाली बाधाअें हैं। मैं मानता हूँ कि यह भेद मौलिक है। अैसे आँधी जैसे आन्दोलनमें मुख्य प्रश्न पर हदसे ज्यादा बोझा डाल कर अुसे जोखिममें डालना समझदारी नहीं है; और जनसमूहको अब तक अस्पृश्यता-निवारणका जो स्वरूप समझाया गया है, अुससे अेकाअेक अब दूसरा ही स्वरूप बताया जाय, तो वह जनसमूहके साथ विश्वासघात भी होगा। अिसलिअे, जहाँ लोग खुद ही वर्णान्तर-भोजनके लिअे तैयार हों वहाँ वह भले ही हो, परन्तु अिसे राष्ट्रव्यापी आन्दोलनका अंग नहीं बनाना चाहिये।

सनातनी कौन ?

अपनेको सनातनी कहनेवाले कुछ सज्जनोंकी तरफसे मुझे पत्र मिले हैं। कुछने अुनमें अपना रोष दिखाया है। अुनके खयालसे अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका आवश्यक अंग है। अुनमें से कुछ मुझे धर्मभ्रष्ट हुआ मानते हैं और कुछ यह मानते हैं कि अस्पृश्यता-विरोधी और अैसे दूसरे विचार मैंने अिसाअी धर्म और अिस्लामसे लिये हैं। दूसरे कुछ लोग अस्पृश्यताके समर्थनमें शास्त्रोंके वचन अुद्धृत करते हैं। अुन्हें मैंने अिस लेखके द्वारा जवाब देनेका वचन दिया है। अिसलिअे मैं अिन पत्रलेखकोंसे कहना चाहता हूँ कि मैं खुद सनातनी होनेका दावा करता हूँ। 'सनातनी' की अुनकी व्याख्या मेरी व्याख्यासे भिन्न है। मेरे खयालसे सनातन धर्म अैतिहासिक कालसे भी पहलेकी पीढ़ियोंसे विरासतमें आया हुआ और वेद तथा अुसके बादके ग्रन्थों पर रचा हुआ प्राणवान धर्म है। मेरे विचारसे वेद अीश्वर और हिन्दू धर्मके समान ही अव्याख्येय हैं। छपे हुअे चार ग्रंथोंको ही वेद कहना अर्ध-सत्य है। ये ग्रंथ तो अज्ञात द्रष्टाओंके प्रवचनोंके अवशेष मात्र हैं। बादके आदमियोंने अिस मूल पूँजीमें अपने ज्ञानके अनुसार वृद्धि की है।

बादमें अेक 'विशाल बुद्धि' पुरुष — गीताका प्रणेता पैदा हुआ। अुसने हिन्दू समाजको गहरे तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ, लेकिन मुग्ध जिज्ञासुओंके सहज ही समझमें आने लायक हिन्दू धर्मका दोहन दे दिया। हिन्दू धर्मका अध्ययन करनेकी अिच्छा रखनेवाले हर हिन्दूके लिअे यह अेकमात्र सुलभ ग्रंथ है। और दूसरे सब धर्मशास्त्र जलकर खाक हो जायँ, तो भी अिस अमर ग्रंथके सात सौ श्लोक यह बतानेके लिअे काफी हैं कि हिन्दू धर्म क्या है और अुसे जीवनमें कैसे परिणत किया जाय। मैं सनातनी होनेका दावा करता हूँ, क्योंकि चालीस सालसे अिस ग्रंथके अुपदेशोंको अक्षरशः जीवनमें चरितार्थ करनेकी मैं

है, अुसमें अिन्हें मिला देनेका मैं स्वप्नमें भी विचार नहीं करूँगा। अस्पृश्यताको जिस रूपमें हम सब जानते हैं, वह हिन्दू धर्मके मर्मस्थलोंको कुतर कर खा जानेवाला कीड़ा है, जबकि भोजन और विवाहके प्रतिबंध हिन्दू समाजके विकासमें रुकावट डालनेवाली बाधाअें हैं। मैं मानता हूँ कि यह भेद मौलिक है। अैसे आँधी जैसे आन्दोलनमें मुख्य प्रश्न पर हदसे ज्यादा बोझा डाल कर अुसे जोखिममें डालना समझदारी नहीं है; और जनसमूहको अब तक अस्पृश्यता-निवारणका जो स्वरूप समझाया गया है, अुससे अेकाअेक अब दूसरा ही स्वरूप बताया जाय, तो वह जनसमूहके साथ विश्वासघात भी होगा। अिसलिअे, जहाँ लोग खुद ही वर्णान्तर-भोजनके लिअे तैयार हों वहाँ वह भले ही हो, परन्तु अिसे राष्ट्रव्यापी आन्दोलनका अंग नहीं बनाना चाहिये।

सनातनी कौन?

अपनेको सनातनी कहनेवाले कुछ सज्जनोंकी तरफसे मुझे पत्र मिले हैं। कुछने अुनमें अपना रोष दिखाया है। अुनके खयालसे अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका आवश्यक अंग है। अुनमें से कुछ मुझे धर्मभ्रष्ट हुआ मानते हैं और कुछ यह मानते हैं कि अस्पृश्यता-विरोधी और अैसे दूसरे विचार मैंने अिसाअी धर्म और अिस्लामसे लिये हैं। दूसरे कुछ लोग अस्पृश्यताके समर्थनमें शास्त्रोंके वचन अुद्धृत करते हैं। अुन्हें मैंने अिस लेखके द्वारा जवाब देनेका वचन दिया है। अिसलिअे मैं अिन पत्रलेखकोंसे कहना चाहता हूँ कि मैं खुद सनातनी होनेका दावा करता हूँ। 'सनातनी'की अुनकी व्याख्या मेरी व्याख्यासे भिन्न है। मेरे खयालसे सनातन धर्म अैतिहासिक कालसे भी पहलेकी पीढ़ियोंसे विरासतमें आया हुआ और वेद तथा अुसके बादके ग्रन्थों पर रचा हुआ प्राणवान धर्म है। मेरे विचारसे वेद अीश्वर और हिन्दू धर्मके समान ही अव्याख्येय हैं। छपे हुअे चार ग्रंथोंको ही वेद कहना अर्ध-सत्य है। ये ग्रंथ तो अज्ञात द्रष्टाओंके प्रवचनोंके अवशेष मात्र हैं। बादके आदमियोंने अिस मूल पूँजीमें अपने ज्ञानके अनुसार वृद्धि की है।

बादमें अेक 'विशाल बुद्धि' पुरुष — गीताका प्रणेता पैदा हुआ। अुसने हिन्दू समाजको गहरे तत्त्वज्ञानसे भरा हुआ, लेकिन मुग्ध जिज्ञासुओंके सहज ही समझमें आने लायक हिन्दू धर्मका दोहन दे दिया। हिन्दू धर्मका अध्ययन करनेकी अिच्छा रखनेवाले हर हिन्दूके लिअे यह अेकमात्र सुलभ ग्रंथ है। और दूसरे सब धर्मशास्त्र जलकर खाक हो जायँ, तो भी अिस अमर ग्रंथके सात सौ श्लोक यह बतानेके लिअे काफी हैं कि हिन्दू धर्म क्या है और अुसे जीवनमें कैसे परिणत किया जाय। मैं सनातनी होनेका दावा करता हूँ, क्योंकि चालीस सालसे अिस ग्रंथके अुपदेशोंको अक्षरशः जीवनमें चरितार्थ करनेकी मैं

२

पापका प्रक्षालन*

अपकार नहीं, प्रायश्चित्त

अेक भाअी शिक्षित होने पर भी सूचना देते हैं कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंकी पंक्तिमें रखा जाय, अिससे पहले अुन्हें अैसे स्वागतके लायक बनना चाहिये, अपनी गंदी आदतें छोड़नी चाहियें और मुर्दार मांस खाना छोड़ देना चाहिये। अेक दूसरे भाअी तो यहाँ तक कहते हैं कि भंगी और चमारोंको वे धंधे, जिन्हें ये भाअी 'गंदे काम' समझते हैं, छोड़ देने चाहियें। ये आलोचक भूल जाते हैं कि हरिजनोंमें जो भी कुटेवें पाअी जाती हैं, अुनके लिअे सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार हैं। अूँचे माने जानेवाले वर्णोंने अुनकी साफ रहनेकी सुविधाअें छीन ही नहीं ली हैं, बल्कि अुनकी सफ़ाअीकी वृत्तिको ही मार डाला है। भंगी और चमारके धंधे तो मैं बताअूँ अुन कअी धंधोंसे जरा भी गंदे नहीं हैं। यह बात मंजूर है कि ये धंधे और कअी धंधोंकी तरह गंदे ढंगसे किये जाते हैं। अिसका कारण भी 'अुच्च वर्णों' की अुद्धततापूर्ण लापरवाही और अक्षम्य अुपेक्षा ही है। मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूँ कि भंगी और चमार दोनोंका काम पूरी तरह निरोगी और स्वच्छ तरीकेसे किया जा सकता है। हरअेक माता अपने बच्चोंके संबंधमें भंगी है, और आधुनिक वैद्यकका हरअेक विद्यार्थी चमार है; क्योंकि अुसे मनुष्यके शव चीरने पड़ते हैं और अुनकी चमड़ी अुतारनी पड़ती है। परन्तु अुनके धंधोंको हम पवित्र मानते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि साधारण भंगी और चमारके धंधे माता और डॉक्टरोंके धंधेसे जरा भी कम पवित्र या कम अुपयोगी नहीं हैं। सवर्ण हिन्दू अगर अपनेको हरिजनों पर अुपकार करनेवाले आश्रयदाता मानेंगे, तो हम बड़ी भूल करेंगे। अभी तो सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे जो कुछ करेंगे, वह हरिजनोंके प्रति पीढ़ियोंसे किये जानेवाले अन्यायोंका, देरसे ही सही, प्रायश्चित्त ही होगा। आज हरिजन जैसे हैं वैसे ही अुन्हें अपनाना चाहिये। अैसी स्थितिमें अुन्हें अपनाना पड़ता है, यह हमारे पिछले अपराधकी सजा है, और हम अिस सजाके लायक हैं। मगर अिसमें अितना संतोष ज़रूर है कि हम खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे, तो अिसीसे अुनमें स्वच्छ होनेकी अिच्छा पैदा होगी और

---

* दूसरा बयान, ता० ५-११-१९३२

२

पापका प्रक्षालन*

अुपकार नहीं, प्रायश्चित्त

अेक भाअी शिक्षित होने पर भी सूचना देते हैं कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंकी पंक्तिमें रखा जाय, अिससे पहले अुन्हें अैसे स्वागतके लायक बनना चाहिये, अपनी गंदी आदतें छोड़नी चाहियें और मुर्दार मांस खाना छोड़ देना चाहिये। अेक दूसरे भाअी तो यहाँ तक कहते हैं कि भंगी और चमारोंको वे धंधे, जिन्हें ये भाअी 'गंदे काम' समझते हैं, छोड़ देने चाहियें। ये आलोचक भूल जाते हैं कि हरिजनोंमें जो भी कुटेवें पाअी जाती हैं, अुनके लिअे सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार हैं। अूँचे माने जानेवाले वर्णोंने अुनकी साफ रहनेकी सुविधाअें छीन ही नहीं ली हैं, बल्कि अुनकी सफ़ाअीकी वृत्तिको ही मार डाला है। भंगी और चमारके धंधे तो मैं बताअूँ अुन कअी धंधोंसे जरा भी गंदे नहीं हैं। यह बात मंजूर है कि ये धंधे और कअी धंधोंकी तरह गंदे ढंगसे किये जाते हैं। अिसका कारण भी 'अुच्च वर्णों' की अुद्धततापूर्ण लापरवाही और अक्षम्य अुपेक्षा ही है। मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूँ कि भंगी और चमार दोनोंका काम पूरी तरह निरोगी और स्वच्छ तरीकेसे किया जा सकता है। हरअेक माता अपने बच्चोंके संबंधमें भंगी है, और आधुनिक वैद्यकका हरअेक विद्यार्थी चमार है; क्योंकि अुसे मनुष्यके शव चीरने पड़ते हैं और अुनकी चमड़ी अुतारनी पड़ती है। परन्तु अुनके धंधोंको हम पवित्र मानते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि साधारण भंगी और चमारके धंधे माता और डॉक्टरोंके धंधेसे जरा भी कम पवित्र या कम अुपयोगी नहीं हैं। सवर्ण हिन्दू अगर अपनेको हरिजनों पर अुपकार करनेवाले आश्रयदाता मानेंगे, तो हम बड़ी भूल करेंगे। अभी तो सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिअे जो कुछ करेंगे, वह, हरिजनोंके प्रति पीढ़ियोंसे किये जानेवाले अन्यायोंका, देरसे ही सही, प्रायश्चित्त ही होगा। आज हरिजन जैसे हैं वैसे ही अुन्हें अपनाना चाहिये। अैसी स्थितिमें अुन्हें अपनाना पड़ता है, यह हमारे पिछले अपराधकी सजा है, और हम अिस सजाके लायक हैं। मगर अिसमें अितना संतोष ज़रूर है कि हम खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे, तो अिसीसे अुनमें स्वच्छ होनेकी अिच्छा पैदा होगी और

* दूसरा बयान, ता० ५–११–१९३२

“पुरानी पद्धतिमें सुधारक यह दावा करते थे कि वे दलितोंकी जरूरतें दलितोंसे ज्यादा समझते हैं। अैसा फिर नहीं होना चाहिये। अिसलिअे आप अपने कार्यकर्ताओंसे कहिये कि वे हरिजनोंके प्रतिनिधियोंसे जान लें कि अुनकी पहली ज़रूरत क्या है और अुन्हें किस तरह संतोष हो सकता है। संयुक्त भोजन प्रदर्शनके लिअे अच्छे हैं, मगर अिसमें अतिशयता होना संभव है। अिसमें दयाकी गंध है। मैं स्वयं अिनमें जाना नहीं चाहता। अधिक अिज्जतकी बात तो यह है कि बिना किसी धांधलीके हमें सामाजिक सम्मेलनोंमें बुलाया जाय। यद्यपि मन्दिर-प्रवेश अच्छा और ज़रूरी है, मगर वह रुक सकता है। तात्कालिक ज़रूरत तो आर्थिक स्थिति सुधारने और रोजमर्राके व्यवहारमें सभ्य बर्ताव रखनेकी है।” अुन्होंने अपने कड़वे अनुभवोंसे जो दुःखद घटनाअें बयान कीं, वे यहाँ बतानेकी मुझे ज़रूरत नहीं है। अुनकी बातें मुझे अचूक मालूम हुअीं और पाठकोंको भी मालूम होंगी, अैसी मुझे आशा है।

सुधारक क्या करें?

सुधारक क्या करें, अिस विषयमें मेरे पास बहुतसी सूचनाअें आअी हैं। अेक सूचना, जो स्वामी श्रद्धानन्दजी कअी बार देते थे, यह है कि हर हिंदूको अपने घरमें अेक हरिजन रखना चाहिये और अुसे सब तरहसे कुटुम्बीजनकी तरह मानना चाहिये। दूसरी सूचना करनेवाले मित्र हिंदू तो नहीं हैं, परन्तु हिंदुस्तानके कल्याणमें गहरी दिलचस्पी रखते हैं। वे कहते हैं कि हर धनवान हिंदूको अेक हरिजन युवक या युवतीको, हो सके तो अपनी देखरेखमें, अुच्च शिक्षा देनी चाहिये, ताकि शिक्षा पूरी करनेके बाद वह अपने हरिजन भाअी-बहनोंके अुद्धारके लिअे काम करे। ये दोनों सूचनाअें विचार करने लायक और अमलमें लाने योग्य हैं। जिनके पास अमल करने जैसी अुपयोगी सूचनाअें हों, अुन्हें अपनी सूचनाअें नव स्थापित संघको भेज देनेकी सूचना देता हूँ। पत्रलेखकोंको मेरी मर्यादाअें समझनी चाहियें। जेलमें रहते हुअे तो मैं संघ और जनताको सिर्फ सलाह ही दे सकता हूँ। योजनाओंके व्यावहारिक अमलमें मैं कोअी भाग नहीं ले सकता। अुन्हें यह भी समझना चाहिये कि मेरी राय अधूरी हकीकतों पर और कअी बार परोक्ष रूपमें मिली हुअी खबरों पर बनी हुअी होगी। नअी हकीकतें मालूम होने पर अुसमें फेरबदल होनेकी संभावना रहती है और अिसीलिअे अुसे स्वीकार करनेमें सावधानी रखनी पड़ती है।

ऋणमुक्ति

यद्यपि यह भूतकालकी बात है, फिर भी अेक पत्रलेखकने जो अेतराज अुठाया है और जिसका हल्का-सा आभास अखबारोंमें भी हुआ है, अुसके बारेमें

"पुरानी पद्धतिमें सुधारक यह दावा करते थे कि वे दलितोंकी ज़रूरतें दलितोंसे ज्यादा समझते हैं। अैसा फिर नहीं होना चाहिये। अिसलिअे आप अपने कार्यकर्ताओंसे कहिये कि वे हरिजनोंके प्रतिनिधियोंसे जान लें कि अुनकी पहली ज़रूरत क्या है और अुन्हें किस तरह संतोष हो सकता है। संयुक्त भोजन प्रदर्शनके लिअे अच्छे हैं, मगर अिसमें अतिशयता होना संभव है। अिसमें दयाकी गंध है। मैं स्वयं अिनमें जाना नहीं चाहता। अधिक अिज्जतकी बात तो यह है कि बिना किसी धांधलीके हमें सामाजिक सम्मेलनोंमें बुलाया जाय। यद्यपि मन्दिर-प्रवेश अच्छा और ज़रूरी है, मगर वह रुक सकता है। तात्कालिक ज़रूरत तो आर्थिक स्थिति सुधारने और रोजमर्राके व्यवहारमें सभ्य बर्ताव रखनेकी है।" अुन्होंने अपने कड़वे अनुभवोंसे जो दुःखद घटनाअें बयान कीं, वे यहाँ बतानेकी मुझे ज़रूरत नहीं है। अुनकी बातें मुझे अचूक मालूम हुअीं और पाठकोंको भी मालूम होंगी, अैसी मुझे आशा है।

सुधारक क्या करें?

सुधारक क्या करें, अिस विषयमें मेरे पास बहुतसी सूचनाअें आअी हैं। अेक सूचना, जो स्वामी श्रद्धानन्दजी कअी बार देते थे, यह है कि हर हिंदूको अपने घरमें अेक हरिजन रखना चाहिये और अुसे सब तरहसे कुटुम्बीजनकी तरह मानना चाहिये। दूसरी सूचना करनेवाले मित्र हिंदू तो नहीं हैं, परन्तु हिंदुस्तानके कल्याणमें गहरी दिलचस्पी रखते हैं। वे कहते हैं कि हर धनवान हिंदूको अेक हरिजन युवक या युवतीको, हो सके तो अपनी देखरेखमें, अुच्च शिक्षा देनी चाहिये, ताकि शिक्षा पूरी करनेके बाद वह अपने हरिजन भाअी-बहनोंके अुद्धारके लिअे काम करे। ये दोनों सूचनाअें विचार करने लायक और अमलमें लाने योग्य हैं। जिनके पास अमल करने जैसी अुपयोगी सूचनाअें हों, अुन्हें अपनी सूचनाअें नव स्थापित संघको भेज देनेकी सूचना देता हूँ। पत्रलेखकोंको मेरी मर्यादाअें समझनी चाहियें। जेलमें रहते हुअे तो मैं संघ और जनताको सिर्फ सलाह ही दे सकता हूँ। योजनाओंके व्यावहारिक अमलमें मैं कोअी भाग नहीं ले सकता। अुन्हें यह भी समझना चाहिये कि मेरी राय अधूरी हकीकतों पर और कअी बार परोक्ष रूपमें मिली हुअी खबरों पर बनी हुअी होगी। नअी हकीकतें मालूम होने पर अुसमें फेरबदल होनेकी संभावना रहती है और अिसीलिअे अुसे स्वीकार करनेमें सावधानी रखनी पड़ती है।

ऋणमुक्ति

यद्यपि यह भूतकालकी बात है, फिर भी अेक पत्रलेखकने जो अेतराज अुठाया है और जिसका हल्का-सा आभास अखबारोंमें भी हुआ है, अुसके बारेमें

सिक्ख, पारसी, यहूदी और अीसाअी अेक ही वृक्षकी शाखाअें हैं। सम्प्रदाय बहुत हैं, परन्तु धर्म तो अेक ही है। मैं चाहता हूँ कि अस्पृश्यताके खिलाफ चलनेवाली अिस लड़ाअीसे हम यह पाठ सीखें। अगर हम यह लड़ाअी धार्मिक भावना और अटल निश्चयके साथ चलायेंगे, तो यह पाठ सीख लेंगे।

३

वचन पालनका सवाल*

अचूक कसौटी

मन्दिर-प्रवेशके सवालको डॉ० आम्बेडकर जैसा तुच्छ समझते हैं, वैसा मैं नहीं समझता। मेरी रायमें यह अिस बातकी अचूक कसौटी है कि कट्टर हिन्दू मानसने युग-धर्मको पहचाना है या नहीं और वह हिन्दू धर्मके माथेसे अस्पृश्यताका काला टीका मिटा डालनेको तैयार है या नहीं। मुझे लगता है कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर आज़ादीके साथ ही तमाम सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करने दिया जाय, तो अुसका जितना असर आम हिन्दू जनताके और हरिजनोंके मन पर पड़ेगा, अुतना और किसी चीज़का नहीं पड़ सकता। डॉ० आम्बेडकर अिस सम्बन्धमें अुदासीन हैं, यह मैं समझ सकता हूँ। मगर मैं हरिजनोंके थोड़ेसे संस्कारी मनुष्योंका विचार नहीं करता, बल्कि संस्कारविहीन मूक समुदायका विचार करता हूँ। चाहे जो भी हो, हिन्दू मन्दिरोंका आम लोगोंके जीवनमें बड़े महत्वका हाथ है। और मैं ठहरा सारी जिन्दगी अधिकसे अधिक अज्ञान और दलित लोगोंके साथ अेकता साधनेका प्रयत्न करनेवाला आदमी; अिसलिअे जब तक हिन्दू समाजके 'बहिष्कृतों' के लिअे तमाम मन्दिर नहीं खुल जाते, तब तक मुझे संतोष नहीं होगा।

मगर अिसका अर्थ यह नहीं कि हरिजनोंको जो दूसरी कठिनाअियाँ अुठानी पड़ती हैं, अुनकी मैं किसी भी तरह अुपेक्षा करता हूँ। अिस सम्बन्धकी मेरी भावना डॉ० आम्बेडकरके जैसी ही तीव्र है। मुझे सिर्फ यह लगता है कि अिस बुराअीकी जड़ अितनी गहरी पहुँच गअी है कि हमें अलग-अलग कठिना-

* डॉ० आंबेडकरने सार्वजनिक रूपमें जो यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेश गांधीजीकी जिन्दगीको जोखिममें डालने जैसा महत्वका सवाल नहीं है, अिसके बारेमें और हिन्दू धर्मसे असंख्य स्त्री-पुरुष किस तरह चिपटे हुअे हैं अिसके बारेमें गांधीजीसे अेसोशियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिने जो सवाल पूछे थे अुनका जवाब।

सिक्ख, पारसी, यहूदी और अीसाअी अेक ही वृक्षकी शाखाअें हैं। सम्प्रदाय बहुत हैं, परन्तु धर्म तो अेक ही है। मैं चाहता हूँ कि अस्पृश्यताके खिलाफ चलनेवाली अिस लड़ाअीसे हम यह पाठ सीखें। अगर हम यह लड़ाअी धार्मिक भावना और अटल निश्चयके साथ चलायेंगे, तो यह पाठ सीख लेंगे।

३

वचन पालनका सवाल*

अचूक कसौटी

मन्दिर-प्रवेशके सवालको डॉ० आम्बेडकर जैसा तुच्छ समझते हैं, वैसा मैं नहीं समझता। मेरी रायमें यह अिस बातकी अचूक कसौटी है कि कट्टर हिन्दू मानसने युग-धर्मको पहचाना है या नहीं और वह हिन्दू धर्मके माथेसे अस्पृश्यताका काला टीका मिटा डालनेको तैयार है या नहीं। मुझे लगता है कि हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर आज़ादीके साथ ही तमाम सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करने दिया जाय, तो अुसका जितना असर आम हिन्दू जनताके और हरिजनोंके मन पर पड़ेगा, अुतना और किसी चीज़का नहीं पड़ सकता। डॉ० आम्बेडकर अिस सम्बन्धमें अुदासीन हैं, यह मैं समझ सकता हूँ। मगर मैं हरिजनोंके थोड़ेसे संस्कारी मनुष्योंका विचार नहीं करता, बल्कि संस्कारविहीन मूक समुदायका विचार करता हूँ। चाहे जो भी हो, हिन्दू मन्दिरोंका आम लोगोंके जीवनमें बड़े महत्वका हाथ है। और मैं ठहरा सारी जिन्दगी अधिकसे अधिक अज्ञान और दलित लोगोंके साथ अेकता साधनेका प्रयत्न करनेवाला आदमी; अिसलिअे जब तक हिन्दू समाजके 'बहिष्कृतों' के लिअे तमाम मन्दिर नहीं खुल जाते, तब तक मुझे संतोष नहीं होगा।

मगर अिसका अर्थ यह नहीं कि हरिजनोंको जो दूसरी कठिनाअियाँ अुठानी पड़ती हैं, अुनकी मैं किसी भी तरह अुपेक्षा करता हूँ। अिस सम्बन्धकी मेरी भावना डॉ० आम्बेडकरके जैसी ही तीव्र है। मुझे सिर्फ यह लगता है कि अिस बुराअीकी जड़ अितनी गहरी पहुँच गअी है कि हमें अलग-अलग कठिना-

* डॉ० आंबेडकरने सार्वजनिक रूपमें जो यह कहा था कि मन्दिर-प्रवेश गांधीजीकी जिन्दगीको जोखिममें डालने जैसा महत्वका सवाल नहीं है, अिसके बारेमें और हिन्दू धर्मसे असंख्य स्त्री-पुरुष किस तरह चिपटे हुअे हैं अिसके बारेमें गांधीजीसे अेसोशियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिने जो सवाल पूछे थे अुनका जवाब।

केलप्पनका जो होना हो वह होने दूँ, तो हिन्दुस्तानके सेवकके नाते और अेक साथीके नाते नालायक ठहरता हूँ। मगर अिसमें अेक साथीकी जिन्दगी या मेरी अपनी साखसे वड़ी बात दूसरी भी है। हर आदमी मंजूर करता है कि हरिजनोंका सवाल अभी ही हल कर लेना चाहिये, नहीं तो कभी नहीं होगा — कमसे कम मौजूदा पीढ़ीके जीते जी या भविष्यकी अनेक पीढ़ियों तक तो वह हल होगा ही नहीं। अैसे हज़ारों स्त्री-पुरुष हैं जो हिन्दू धर्ममें सिर्फ अिसी कारण हैं कि अुनकी मान्यताके अनुसार हिन्दू धर्ममें मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकासके लिअे पूरी गुंजाअिश है। लगभग चार करोड़ मनुष्योंके विरुद्ध यह पापपूर्ण प्रतिबंध हिन्दू धर्मके अिस दावेके खिलाफ अेक स्थायी प्रदर्शन है। मेरे जैसे आदमी मानते हैं कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका अंग नहीं है। वह 'अतिरिक्त अंग' है। परन्तु यदि हालत अिससे अुलटी जान पड़े और यदि आम हिन्दू जनताका मानस सचमुच अस्पृश्यताको रखना चाहता हो; तो मेरे जैसे सुधारकोंके लिअे अपनी श्रद्धाकी वेदी पर आत्म-बलिदान देनेके सिवाय और कोअी रास्ता नहीं रह जाता।

अंतिम बलिदान

अैसा अुपवास आत्मघातमें शामिल है, यह ताना मैं धीरज और शान्तिसे सुन रहा हूँ। मैं अिसे आत्मघात नहीं मानता। अुल्टे, जब और सब कोशिशें बिलकुल बेकार साबित हो जायँ, तब गहरी धर्म-श्रद्धावाले मनुष्योंके लिअे अिस अंतिम बलिदानके सिवाय आत्माकी मुक्तिका कोअी और द्वार नहीं रह जाता। अिस-लिअे मेरी रायमें हिन्दू धर्मके लिअे मैंने जो दावा किया है, अुसकी यह कड़ी कसौटी है। और जो वचन मैंने गोलमेज परिषदमें कहे थे, वही यहाँ भी कहता हूँ कि अगर अस्पृश्यता जिन्दा रही, तो हिन्दू धर्म मर जायगा, और हिन्दू धर्मको जीना हो, तो अस्पृश्यताको मरना पड़ेगा। आज मैं हिम्मतके साथ कहता हूँ कि हिन्दुस्तानमें हज़ारों नहीं, तो सैकड़ों स्त्री-पुरुष अैसे हैं जो केलप्पन और मेरी तरह प्राणोंकी आहुति देकर यह सिद्ध करनेको तैयार हैं कि हिन्दू धर्म तंग चार-दीवारी या सम्प्रदाय नहीं, परन्तु जीता-जागता धर्म है, और कड़ीसे कड़ी अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको संतोष और शान्ति देनेमें समर्थ है।

केलप्पनका जो होना हो वह होने दूँ, तो हिन्दुस्तानके सेवकके नाते और अेक साथीके नाते नालायक ठहरता हूँ। मगर अिसमें अेक साथीकी जिन्दगी या मेरी अपनी साखसे बड़ी बात दूसरी भी है। हर आदमी मंजूर करता है कि हरिजनोंका सवाल अभी ही हल कर लेना चाहिये, नहीं तो कभी नहीं होगा — कमसे कम मौजूदा पीढ़ीके जीते जी या भविष्यकी अनेक पीढ़ियों तक तो वह हल होगा ही नहीं। अैसे हज़ारों स्त्री-पुरुष हैं जो हिन्दू धर्ममें सिर्फ अिसी कारण हैं कि अुनकी मान्यताके अनुसार हिन्दू धर्ममें मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकासके लिअे पूरी गुंजाअिश है। लगभग चार करोड़ मनुष्योंके विरुद्ध यह पापपूर्ण प्रतिबंध हिन्दू धर्मके अिस दावेके खिलाफ अेक स्थायी प्रदर्शन है। मेरे जैसे आदमी मानते हैं कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका अंग नहीं है। वह 'अतिरिक्त अंग' है। परन्तु यदि हालत अिससे अुलटी जान पड़े और यदि आम हिन्दू जनताका मानस सचमुच अस्पृश्यताको रखना चाहता हो, तो मेरे जैसे सुधारकोंके लिअे अपनी श्रद्धाकी वेदी पर आत्म-बलिदान देनेके सिवाय और कोअी रास्ता नहीं रह जाता।

अंतिम बलिदान

अैसा अुपवास आत्मघातमें शामिल है, यह ताना मैं धीरज और शान्तिसे सुन रहा हूँ। मैं अिसे आत्मघात नहीं मानता। अुल्टे, जब और सब कोशिशें बिलकुल बेकार साबित हो जायँ, तब गहरी धर्म-श्रद्धावाले मनुष्योंके लिअे अिस अंतिम बलिदानके सिवाय आत्माकी मुक्तिका कोअी और द्वार नहीं रह जाता। अिस-लिअे मेरी रायमें हिन्दू धर्मके लिअे मैंने जो दावा किया है, अुसकी यह कड़ी कसौटी है। और जो वचन मैंने गोलमेज परिषदमें कहे थे, वही यहाँ भी कहता हूँ कि अगर अस्पृश्यता जिन्दा रही, तो हिन्दू धर्म मर जायगा, और हिन्दू धर्मको जीना हो, तो अस्पृश्यताको मरना पड़ेगा। आज मैं हिम्मतके साथ कहता हूँ कि हिन्दुस्तानमें हज़ारों नहीं, तो सैकड़ों स्त्री-पुरुष अैसे हैं जो केलप्पन और मेरी तरह प्राणोंकी आहुति देकर यह सिद्ध करनेको तैयार हैं कि हिन्दू धर्म तंग चार-दीवारी या सम्प्रदाय नहीं, परन्तु जीता-जागता धर्म है, और कड़ीसे कड़ी अन्तरात्माको, गहरेसे गहरे विचारकको और पवित्रसे पवित्र मनुष्यको संतोष और शान्ति देनेमें समर्थ है।

आगामी अुपवाससे मुझे बचा लेनेकी अधीरतामें भी वे शंकास्पद साधनोंका अुपयोग करके आन्दोलनका वेग नहीं बढ़ा सकेंगे। अैसे साधन काममें लेकर तो वे सिर्फ़ मेरा ही अन्त जल्दी लायेंगे। जिस आन्दोलनके लिअे मैं मानता हूँ कि अीश्वरने अुस छोटे-से अुपवासकी प्रेरणा की, अुस आन्दोलनके अधःपतनका साक्षी बनना मेरे लिअे जीते जी मरनेके समान है। हुल्लड़बाजीसे हरिजनोंकी और हिन्दू धर्मकी सेवा नहीं होगी। दुनियामें नहीं तो शायद हिन्दुस्तानमें यह सबसे बड़ा धार्मिक सुधारका आन्दोलन होगा, क्योंकि अिसमें गुलामीमें रहनेवाले चार करोड़ मानव प्राणियोंके कल्याणका प्रश्न है। पुराने विचारवालोंका जो वर्ग अिससे असहमत हो, अुनके प्रति हमें पूरी तरह नम्रताके साथ बर्ताव करना चाहिये। हमें अुन्हें प्रेमसे, आत्म-त्यागसे, अपने शुद्ध जीवनका अुनके हृदय पर मूक प्रभाव पड़ने देकर जीतना है। हममें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि हमारा सत्य और प्रेम विरोधियोंको हमारी रायका बना लेगा।

अितना तो निःसंशय है कि चार करोड़ मनुष्योंको युगों पुरानी दलित दशासे सिर्फ आडम्बर भरे प्रदर्शनों द्वारा मुक्त नहीं किया जा सकता। चारों तरफसे हमला करनेवाले संगीन रचनात्मक कार्यक्रम तैयार करने और पूरे करने पड़ेंगे। अिस साहसके लिअे अूँची-से-अूँची धर्मभावनासे प्रेरित हज़ारों स्त्री-पुरुषों, लड़कों और लड़कियोंकी अेकाग्र शक्तिकी ज़रूरत है। अिसलिअे जो लोग अिस आन्दोलनका शुद्ध धार्मिक स्वरूप न समझ सकते हों, अुनसे मैं आदर-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वे अिसमें से निकल जायँ। जिनमें यह श्रद्धा और लगन हो, वे थोड़े हों या बहुत, परंतु वे ही अिस आन्दोलनका काम करें।

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे बड़े राजनैतिक परिणाम निकल सकते हैं, अितना ही नहीं, बल्कि ज़रूर निकलेंगे। परंतु यह राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। यह पूरी तरह सिर्फ हिन्दू धर्मकी शुद्धिका आन्दोलन है और यह शुद्धि सिर्फ शुद्ध-से-शुद्ध साधनों द्वारा ही हो सकती है। और यह प्रभुकी कृपा है कि तमाम हिन्दुस्तानमें अैसे सैकड़ों नहीं, परंतु हज़ारों साधन काम कर रहे हैं। अधीर और शंकाशील लोग देखें, अिंतज़ार करें। मगर अुन्हें अच्छे-से-अच्छे हेतुसे भी जल्दबाजीमें या अविचारपूर्वक दखल देकर आन्दोलनको बिगाड़ना नहीं चाहिये।

आगामी अुपवाससे मुझे बचा लेनेकी अधीरतामें भी वे शंकास्पद साधनोंका अुपयोग करके आन्दोलनका वेग नहीं बढ़ा सकेंगे। अैसे साधन काममें लेकर तो वे सिर्फ़ मेरा ही अन्त जल्दी लायेंगे। जिस आन्दोलनके लिअे मैं मानता हूँ कि अीश्वरने अुस छोटे-से अुपवासकी प्रेरणा की, अुस आन्दोलनके अधःपतनका साक्षी बनना मेरे लिअे जीते जी मरनेके समान है। हुल्लड़बाजीसे हरिजनोंकी और हिन्दू धर्मकी सेवा नहीं होगी। दुनियामें नहीं तो शायद हिन्दुस्तानमें यह सबसे बड़ा धार्मिक सुधारका आन्दोलन होगा, क्योंकि अिसमें गुलामीमें रहनेवाले चार करोड़ मानव प्राणियोंके कल्याणका प्रश्न है। पुराने विचारवालोंका जो वर्ग अिससे असहमत हो, अुनके प्रति हमें पूरी तरह नम्रताके साथ बर्ताव करना चाहिये। हमें अुन्हें प्रेमसे, आत्म-त्यागसे, अपने शुद्ध जीवनका अुनके हृदय पर मूक प्रभाव पड़ने देकर जीतना है। हममें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि हमारा सत्य और प्रेम विरोधियोंको हमारी रायका बना लेगा।

अितना तो निःसंशय है कि चार करोड़ मनुष्योंको युगों पुरानी दलित दशासे सिर्फ आडम्बर भरे प्रदर्शनों द्वारा मुक्त नहीं किया जा सकता। चारों तरफसे हमला करनेवाले संगीन रचनात्मक कार्यक्रम तैयार करने और पूरे करने पड़ेंगे। *अिस साहसके लिअे अूँची-से-अूँची धर्मभावनासे प्रेरित हज़ारों स्त्री-पुरुषों,* लड़कों और लड़कियोंकी अेकाग्र शक्तिकी ज़रूरत है। अिसलिअे जो लोग अिस आन्दोलनका शुद्ध धार्मिक स्वरूप न समझ सकते हों, अुनसे मैं आदर-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वे अिसमें से निकल जायँ। जिनमें यह श्रद्धा और लगन हो, वे थोड़े हों या बहुत, परंतु वे ही अिस आन्दोलनका काम करें।

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे बड़े राजनैतिक परिणाम निकल सकते हैं, अितना ही नहीं, बल्कि ज़रूर निकलेंगे। परंतु यह राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। यह पूरी तरह सिर्फ हिन्दू धर्मकी शुद्धिका आन्दोलन है और यह शुद्धि सिर्फ शुद्ध-से-शुद्ध साधनों द्वारा ही हो सकती है। और यह प्रभुकी कृपा है कि तमाम हिन्दुस्तानमें अैसे सैकड़ों नहीं, परन्तु हज़ारों साधन काम कर रहे हैं। अधीर और शंकाशील लोग देखें, अिंतजार करें। मगर अुन्हें अच्छे-से-अच्छे हेतुसे भी जल्दबाजीमें या अविचारपूर्वक दखल देकर आन्दोलनको बिगाड़ना नहीं चाहिये।

“आपके जैसे प्रतिष्ठित नेताकी आलोचना करनेमें मुझे खुशी नहीं होती, परन्तु प्रसंग अैसा है कि चुप रहनेमें पूरी ओीमानदारी नहीं है। आपने जिन जन-समूहोंके सामने अस्पृश्यताके सवाल पर भाषण दिये, अुन्होंने खुले तौर पर आपके विचारोंका विरोध नहीं किया, सिर्फ़ अिसी कारणसे आप यह मान लें कि अुन्होंने आपके विचार स्वीकार कर लिये हैं तो यह ठीक नहीं है। आपके महान व्यक्तित्वके प्रति आदरके कारण और राजनैतिक मामलोंमें आपके नेता होनेके कारण वे आपकी बात चुपचाप सुन लेते हैं, और आपके विचारोंका कितना ही विरोध करते हों — और मैं जानता हूँ कि अुत्तर हिन्दुस्तानमें तो बहुतसे लोग विरोध करते हैं — तो भी आपकी बात आदरपूर्वक सुनना अपना फर्ज समझते हैं। आप जानते हैं कि ये लोग वाचाल नहीं होते और अपनेसे अलग विचारवालेके प्रति विरोध करनेका खास प्रयत्न नहीं करते; और खास कर जब वे विचार आपके जैसे प्रतिष्ठित पुरुष प्रगट करें, तब तो वे विरोध कर ही नहीं सकते।”

समझौतेमें बुरा क्या था?

अिस पत्रमें से बेकार अंश और नेताओंके नाम मैंने निकाल दिये हैं। अिस भाअीने जिन नेताओंके नाम दिये हैं, अुन्होंने अपनी राय दबा दी हो, और अुन्होंने अैसी शर्तें मानी हों जो मेरी मौतकी धमकीके सिवाय और कभी न मानी होतीं, तो अिस बातसे मुझे बड़ा दुःख होगा। अगर अुन्होंने अैसा ही किया हो जैसा कि यह भाअी कहता है, तो अुन्होंने देशकी बड़ी कुसेवा की है और वे अुपवासका शुद्ध धार्मिक रूप नहीं पहचान सके हैं। सार्वजनिक जीवनमें कअी बार मनुष्यको सत्य अथवा लोक-कल्याणके लिअे मित्रोंको खोना पड़ता है। और अिस समझौतेमें अैसा क्या था, जो अिन मित्रोंको अितना अधिक बुरा लगा? सुरक्षित बैठकें? संयुक्त निर्वाचक मंडल? या ‘प्रारंभिक चुनाव’ द्वारा अुम्मेदवारोंका चुनाव? यह सब तो हो ही नहीं सकता। हरिजनोंके जो सामाजिक और धार्मिक हक युगों तक क्रूरताके साथ छीन लिये गये थे, अुन्हें वापस देनेके प्रस्तावके विरुद्ध तो वे अेतराज़ कर ही नहीं सकते। रहा सवाल सिर्फ अुन्हें दी गअी बैठकोंकी संख्याका। मगर अिससे ज्यादा बैठकें तो राजा-मुंजे करारमें दी गअी थीं। और जैसा कि मैं किसी पिछले लेखमें कह चुका हूँ, सवर्ण हिन्दू अगर सचमुच मानते हों कि हरिजन हमारे ही भाअीबंधु हैं और हमने अुन्हें आज तक कुचला है, तो वे हरिजनोंको कितनी ही बैठकें दे दें, तो भी वे कभी ज्यादा नहीं होंगी। समझौतेमें अुन्हें जो मिला है, वह अुनकी योग्यताके बिना व सवर्ण हिन्दुओंकी अनिच्छाके बावजूद मेरे अुपवासके कारण छीनी हुअी राहत है, यह माना जाय तो हरिजनोंका बुरा हाल होगा।

"आपके जैसे प्रतिष्ठित नेताकी आलोचना करनेमें मुझे खुशी नहीं होती, परन्तु प्रसंग अैसा है कि चुप रहनेमें पूरी अीमानदारी नहीं है। आपने जिन जन-समूहोंके सामने अस्पृश्यताके सवाल पर भाषण दिये, अुन्होंने खुले तौर पर आपके विचारोंका विरोध नहीं किया, सिर्फ अिसी कारणसे आप यह मान लें कि अुन्होंने आपके विचार स्वीकार कर लिये हैं तो यह ठीक नहीं है। आपके महान व्यक्तित्वके प्रति आदरके कारण और राजनैतिक मामलोंमें आपके नेता होनेके कारण वे आपकी बात चुपचाप सुन लेते हैं, और आपके विचारोंका कितना ही विरोध करते हों — और मैं जानता हूँ कि अुत्तर हिन्दुस्तानमें तो बहुतसे लोग विरोध करते हैं — तो भी आपकी बात आदरपूर्वक सुनना अपना फर्ज समझते हैं। आप जानते हैं कि ये लोग वाचाल नहीं होते और अपनेसे अलग विचारवालेके प्रति विरोध करनेका खास प्रयत्न नहीं करते; और खास कर जब वे विचार आपके जैसे प्रतिष्ठित पुरुष प्रगट करें, तब तो वे विरोध कर ही नहीं सकते।"

समझौतेमें बुरा क्या था?

अिस पत्रमें से बेकार अंश और नेताओंके नाम मैंने निकाल दिये हैं। अिस भाअीने जिन नेताओंके नाम दिये हैं, अुन्होंने अपनी राय दबा दी हो, और अुन्होंने अैसी शर्तें मानी हों जो मेरी मौतकी धमकीके सिवाय और कभी न मानी होतीं, तो अिस बातसे मुझे बड़ा दुःख होगा। अगर अुन्होंने अैसा ही किया हो जैसा कि यह भाअी कहता है, तो अुन्होंने देशकी बड़ी कुसेवा की है और वे अुपवासका शुद्ध धार्मिक रूप नहीं पहचान सके हैं। सार्वजनिक जीवनमें कअी बार मनुष्यको सत्य अथवा लोक-कल्याणके लिअे मित्रोंको खोना पड़ता है। और अिस समझौतेमें अैसा क्या था, जो अिन मित्रोंको अितना अधिक बुरा लगा? सुरक्षित बैठकें? संयुक्त निर्वाचक मंडल? या 'प्रारंभिक चुनाव' द्वारा अुम्मीदवारोंका चुनाव? यह सब तो हो ही नहीं सकता। हरिजनोंके जो सामाजिक और धार्मिक हक युगों तक क्रूरताके साथ छीन लिये गये थे, अुन्हें वापस देनेके प्रस्तावके विरुद्ध तो वे अेतराज़ कर ही नहीं सकते। रहा सवाल सिर्फ अुन्हें दी गअी बैठकोंकी संख्याका। मगर अिससे ज्यादा बैठकें तो राजा-मुंजे करारमें दी गअी थीं। और जैसा कि मैं किसी पिछले लेखमें कह चुका हूँ, सवर्ण हिन्दू अगर सचमुच मानते हों कि हरिजन हमारे ही भाअीबंधु हैं और हमने अुन्हें आज तक कुचला है, तो वे हरिजनोंको कितनी ही बैठकें दे दें, तो भी वे कभी ज्यादा नहीं होंगी। समझौतेमें अुन्हें जो मिला है, वह अुनकी योग्यताके बिना व सवर्ण हिन्दुओंकी अनिच्छाके बावजूद मेरे अुपवासके कारण छीनी हुअी राहत है, यह माना जाय तो हरिजनोंका बुरा हाल होगा।

भी पत्रमें यह नहीं कहा गया है कि अिसीलिअे हरिजनोंको जो दिया गया है अुसे प्राप्त करनेका अुन्हें हक नहीं था। साथ ही अिस अेक विरोधी पत्रके विरुद्ध अुपवास और समझौतेका सम्पूर्ण समर्थन करनेवाले सैकड़ों पत्र मेरे पास आये हैं। मेरे यहाँके और पश्चिमके भी निकटसे निकटके साथियोंने अेक-दो अपवादके सिवाय अिससे सहमति प्रगट की है और अुन्होंने खुद अुसका आध्यात्मिक असर महसूस किया है। मगर अपने रिवाजके मुताबिक और सीधे रास्ते पर रहनेके लिअे तथा जिस आन्दोलनको मैंने अपनाया है, अुसे निर्दोष रखनेके लिअे मैं विरोधी आलोचनासे भरे हुअे पत्र प्रकाशित करता हूँ। खास तौर पर, जो आदमी मित्रताके हेतुसे प्रेरित होते हैं, अुनके पत्र मैं ज़रूर प्रकाशित करता हूँ। अिसमें शक नहीं कि अिस पत्रके लिखनेवाले सज्जन भी अैसे ही हैं।

यह लेख मैं भेज ही रहा था कि मुझे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके सदा जाग्रत रहनेवाले मन्त्रीका तार मिला कि समस्त भारतवर्षमें हरिजनोंकी कुल आबादी छः करोड़ नहीं, परन्तु चार करोड़से कम है। ठक्कर बापाने अुपवासके दिनोंमें मेरी भूल सुधारी थी, तो भी गलत संख्या दी गअी अिसके लिअे मुझे अफसोस है।

६

हरिजनोंके प्रति*

यह पाँचवाँ लेख अखबारोंको भेजते समय मैं अुनको धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो मेरे लेखों और अिस आन्दोलनका प्रचार करते हैं। श्री राजभोज और अुनके मित्र पिछले सप्ताह लगभग सारे आन्दोलनकी चर्चाके लिअे मुझसे मिले थे। मैंने अुनसे जो चर्चा की थी, अुसके अेक भागका सार मैं अिस लेखमें देना चाहता हूँ। अुनका अेक प्रश्न अिस बारेमें था कि अिस आन्दोलनकी मदद करनेके लिअे हरिजन क्या कर सकते हैं? वे अिस दिशामें बहुत कुछ कर सकते हैं। कितने ही सवर्ण हिन्दू अुनके साथ पूरी तरह समानताके नाते मिलनेसे अिनकार करनेके जो कारण बताते हैं, अुनका वे पहलेसे ही अुपाय कर सकते हैं। मैं साफ शब्दोंमें कह चुका हूँ कि हरिजनोंके बहुत ही बड़े समुदायकी जाहिरा दुर्दशाका सारा कसूर सवर्ण हिन्दुओंका ही है। और अस्पृश्यता चली जायगी, तो अुसके साथ ये सुधार अपने आप हुअे बिना नहीं रहेंगे। अिसे अस्पृश्यता-निवारणकी शर्त तो हरगिज़ नहीं बनानी चाहिये।

---

* पाँचवाँ बयान, ता० १४-११-१९३२

भी पत्रमें यह नहीं कहा गया है कि अिसीलिअे हरिजनोंको जो दिया गया है अुसे प्राप्त करनेका अुन्हें हक नहीं था। साथ ही अिस अेक विरोधी पत्रके विरुद्ध अुपवास और समझौतेका सम्पूर्ण समर्थन करनेवाले सैकड़ों पत्र मेरे पास आये हैं। मेरे यहाँके और पश्चिमके भी निकटसे निकटके साथियोंने अेक-दो अपवादके सिवाय अिससे सहमति प्रगट की है और अुन्होंने खुद अुसका आध्यात्मिक असर महसूस किया है। मगर अपने रिवाजके मुताबिक और सीधे रास्ते पर रहनेके लिअे तथा जिस आन्दोलनको मैंने अपनाया है, अुसे निर्दोष रखनेके लिअे मैं विरोधी आलोचनासे भरे हुअे पत्र प्रकाशित करता हूँ। खास तौर पर, जो आदमी मित्रताके हेतुसे प्रेरित होते हैं, अुनके पत्र मैं ज़रूर प्रकाशित करता हूँ। अिसमें शक नहीं कि अिस पत्रके लिखनेवाले सज्जन भी अैसे ही हैं।

यह लेख मैं भेज ही रहा था कि मुझे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके सदा जाग्रत रहनेवाले मन्त्रीका तार मिला कि समस्त भारतवर्षमें हरिजनोंकी कुल आबादी छः करोड़ नहीं, परन्तु चार करोड़से कम है। ठक्कर बापाने अुपवासके दिनोंमें मेरी भूल सुधारी थी, तो भी गलत संख्या दी गअी अिसके लिअे मुझे अफसोस है।

६

हरिजनोंके प्रति*

यह पाँचवाँ लेख अखबारोंको भेजते समय मैं अुनको धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो मेरे लेखों और अिस आन्दोलनका प्रचार करते हैं। श्री राजभोज और अुनके मित्र पिछले सप्ताह लगभग सारे आन्दोलनकी चर्चाके लिअे मुझसे मिले थे। मैंने अुनसे जो चर्चा की थी, अुसके अेक भागका सार मैं अिस लेखमें देना चाहता हूँ। अुनका अेक प्रश्न अिस बारेमें था कि अिस आन्दोलनकी मदद करनेके लिअे हरिजन क्या कर सकते हैं? वे अिस दिशामें बहुत कुछ कर सकते हैं। कितने ही सवर्ण हिन्दू अुनके साथ पूरी तरह समानताके नाते मिलनेसे अिनकार करनेके जो कारण बताते हैं, अुनका वे पहलेसे ही अुपाय कर सकते हैं। मैं साफ शब्दोंमें कह चुका हूँ कि हरिजनोंके बहुत ही बड़े समुदायकी जाहिरा दुर्दशाका सारा कसूर सवर्ण हिन्दुओंका ही है। और अस्पृश्यता चली जायगी, तो अुसके साथ ये सुधार अपने आप हुअे बिना नहीं रहेंगे। अिसे अस्पृश्यता-निवारणकी शर्त तो हरगिज़ नहीं बनानी चाहिये।

---

* पाँचवाँ बयान, ता० १४-११-१९३२

है । अिन पाखानोंको अिस्तेमाल करना रोज नरकमें जानेके बराबर है । अगर जलवायु सुन्दर न होती, तो आजसे कअी हज़ार ज्यादा मनुष्य जल्दी ही श्मशान पहुँच गये होते । जिन हरिजनोंको यह अति आवश्यक समाज-सेवा करनी पड़ती है, वे आजकी प्रतिकूल परिस्थितियोंमें भी पाखाने साफ करके तुरन्त ही स्नान कर सकते हैं; और सफाअीके लिअे वे जो थोड़ा-सा घास काममें लेते हैं, अुसके बजाय सूखी मिट्टी अिस्तेमाल कर सकते हैं । मैं कुशल भंगी होनेका दावा करता हूँ और मेरा दावा सच्चा है । अिसलिअे खास तौर पर अगर ग्रामवासी और नगर-निवासी मदद करें, तो मैं यह काम करनेकी बहुत सस्ती, अच्छी और पूरी तरह स्वच्छ तरकीबें बता सकता हूँ । मगर अिस दिलचस्प विषयकी चर्चा अिस साधारण लेखमें मैं नहीं कर सकता । जिज्ञासुको सफाअीके बारेमें और खास तौर पर देहातकी सफाअीके बारेमें मेरे लेख* पढ़नेकी मेरी सिफारिश है । भंगी जब सफाअीका काम करें, तब अुन्हें अुस धन्धेकी विशेष पोशाक पहननी चाहिये । भंगियोंको रखनेवाले घर-मालिक या घर-मालिकोंके समूहको अपने भंगीके लिअे यह पोशाक जुटा देनी चाहिये ।

चमार-काम

साफ ढंगसे चमड़ा कमानेका काम अिससे कहीं मुश्किल है । हमारे चमार मुर्दार चमड़ा अुतारने या चमड़ा कमानेकी आधुनिक पद्धति नहीं जानते । 'कमाना' शब्द मैंने यहाँ व्यापक अर्थमें अिस्तेमाल किया है । अुच्च कहे जानेवाले वर्णोंने अपने स्वधर्मियों और स्वदेशवासियोंके अिस अुपयोगी वर्गके प्रति जो अक्षम्य लापरवाही दिखाअी है, अुससे मुर्दा ढोरोंको अुठा कर ले जानेसे लेकर चमड़ा कमाने तककी सारी क्रिया अनाड़ीपनसे होती है । परिणामस्वरूप देशको बेहद आर्थिक हानि होनेके साथ-साथ चमड़ा हलकी किस्मका बनता है । श्री मधुसूदन दास अत्यन्त परोपकारी सज्जन हैं । अुन्होंने खुद चमड़ा कमानेकी क्रियाअें सीखी हैं । अुन्होंने आँकड़े देकर बताया है कि धर्मके नाम पर अस्पृश्यताका वहम रखनेसे देशको हर साल कितना नुकसान होता है । हरिजन कार्यकर्ता यह नया तरीका जितना सीख सकें, सीख लें और अुसे चमारोंको सिखा दें ।

घर-मालिक जो जूठन अत्यन्त निर्दयताके साथ डालते हैं, अुसे न लेनेकी भंगियोंको शिक्षा देनी चाहिये । वर्षोंकी आदतसे भंगियोंकी सुरुचिकी भावना कुंठित हो गअी है, अिसीलिअे अुन्हें दूसरोंकी थालीकी जूठन खानेमें कुछ भी बुरा नहीं लगता । वे अपने मालिककी थालियोंकी अच्छी-अच्छी बानगियाँ

---

* ये लेख नवजीवन प्रकाशन मन्दिरकी तरफसे 'गामडांनो वहारे' नामसे पुस्तकाकार छप गये हैं । कीमत चार आना ।

है। अिन पाखानोंको अिस्तेमाल करना रोज नरकमें जानेके बराबर है। अगर जलवायु सुन्दर न होती, तो आजसे कअी हज़ार ज्यादा मनुष्य जल्दी ही श्मशान पहुँच गये होते। जिन हरिजनोंको यह अति आवश्यक समाज-सेवा करनी पड़ती है, वे आजकी प्रतिकूल परिस्थितियोंमें भी पाखाने साफ करके तुरन्त ही स्नान कर सकते हैं; और सफाअीके लिअे वे जो थोड़ा-सा घास काममें लेते हैं, अुसके बजाय सूखी मिट्टी अिस्तेमाल कर सकते हैं। मैं कुशल भंगी होनेका दावा करता हूँ और मेरा दावा सच्चा है। अिसलिअे खास तौर पर अगर ग्रामवासी और नगर-निवासी मदद करें, तो मैं यह काम करनेकी बहुत सस्ती, अच्छी और पूरी तरह स्वच्छ तरकीबें बता सकता हूँ। मगर अिस दिलचस्प विषयकी चर्चा अिस साधारण लेखमें मैं नहीं कर सकता। जिज्ञासुको सफाअीके बारेमें और खास तौर पर देहातकी सफाअीके बारेमें मेरे लेख* पढ़नेकी मेरी सिफारिश है। भंगी जब सफाअीका काम करें, तब अुन्हें अुस धन्धेकी विशेष पोशाक पहननी चाहिये। भंगियोंको रखनेवाले घर-मालिक या घर-मालिकोंके समूहको अपने भंगीके लिअे यह पोशाक जुटा देनी चाहिये।

चमार-काम

साफ ढंगसे चमड़ा कमानेका काम अिससे कहीं मुश्किल है। हमारे चमार मुर्दार चमड़ा अुतारने या चमड़ा कमानेकी आधुनिक पद्धति नहीं जानते। 'कमाना' शब्द मैंने यहाँ व्यापक अर्थमें अिस्तेमाल किया है। अुच्च कहे जानेवाले वर्णोंने अपने स्वधर्मियों और स्वदेशवासियोंके अिस अुपयोगी वर्गके प्रति जो अक्षम्य लापरवाही दिखाअी है, अुससे मुर्दा ढोरोंको अुठा कर ले जानेसे लेकर चमड़ा कमाने तककी सारी क्रिया अनाड़ीपनसे होती है। परिणामस्वरूप देशको बेहद आर्थिक हानि होनेके साथ-साथ चमड़ा हलकी किस्मका बनता है। श्री मधुसूदन दास अत्यन्त परोपकारी सज्जन हैं। अुन्होंने खुद चमड़ा कमानेकी क्रियाअें सीखी हैं। अुन्होंने आँकड़े देकर बताया है कि धर्मके नाम पर अस्पृश्यताका वहम रखनेसे देशको हर साल कितना नुकसान होता है। हरिजन कार्यकर्ता यह नया तरीका जितना सीख सकें, सीख लें और अुसे चमारोंको सिखा दें।

घर-मालिक जो जूठन अत्यन्त निर्दयताके साथ डालते हैं, अुसे न लेनेकी भंगियोंको शिक्षा देनी चाहिये। वर्षोंकी आदतसे भंगियोंकी सुरुचिकी भावना कुंठित हो गअी है, अिसीलिअे अुन्हें दूसरोंकी थालीकी जूठन खानेमें कुछ भी बुरा नहीं लगता। वे अपने मालिककी थालियोंकी अच्छी-अच्छी चानगियाँ

---

* ये लेख नवजीवन प्रकाशन मन्दिरकी तरफसे 'गामडांनो वहारे' नामसे पुस्तकाकार छप गये हैं। कीमत चार आना।

समय कोअी भी हरिजन किसीके विरुद्ध अुपवास न करे और न सत्याग्रह ही करे। सवर्ण हिन्दुओंकी जो कसौटी हो रही है अुसे वे देखें, और यह देखें कि सवर्ण हिन्दू अपनेको हरिजनोंसे अलग रखनेवाला प्रतिबन्ध दूर करनेके लिअे क्या करते हैं। वे स्थानीय सवर्ण हिन्दुओंके साथ कलह न करें। अुनके बर्तावमें हमेशा, और अब तो ज्यादा, विवेक और गौरव होना चाहिये। धर्मकी रक्षा खुद कष्ट सह कर ही की जा सकती है, जालिमोंके प्रति हिंसा करके कभी नहीं। जबरदस्तीसे शायद वे बहुत-सी चीज़ें ले सकते हैं, मगर अुनकी शोभा तो सवर्ण हिन्दुओंके हृदय बदल कर ही अपने हक हासिल करनेमें है। और आज तो हज़ारों सवर्ण हिन्दुओंके मनमें अपने अपराधका भान पैदा हो गया है और वे हरिजनोंको अुसका मुआवज़ा देनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं, यह जानकर हरिजनोंके लिअे आशा रखनेका काफ़ी कारण है। वे अपने पक्षके पूर्ण न्याय्य होने और विजय प्राप्त करनेकी अपनी कष्टसहनकी शक्ति पर पूरी तरह भरोसा रखें।

७

सवर्णोंका धर्म*

हृदय-परिवर्तन

हरिजन अिस आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिअे क्या करें, यह प्रश्न तो हरिजनोंमें से अभी तक अकेले श्री राजभोजने ही पूछा है। परन्तु हिन्दुस्तानके तमाम हिस्सोंसे सवर्ण हिन्दुओंके — पुरुषों और स्त्रियों, विद्यार्थियों और दूसरोंके — ढेरों पत्र मुझे मिले हैं, जिनमें पूछा गया है कि हम अपने व्यवसायोंमें खलल डाले बिना किस तरह मदद दे सकते हैं? चूँकि अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनका अुद्देश्य आम लोगोंके बारेमें तो केवल अुनका हरिजनोंके प्रति रवैयेमें हृदय-परिवर्तन कराना ही है, अिसलिअे अधिकांश सवर्ण हिन्दुओंको हरिजनोंकी सेवा करनेके लिअे अपनी नित्यकी प्रवृत्तियोंमें खलल डालनेकी ज़रूरत नहीं है। पहली बात तो यह है कि हर स्त्री-पुरुष समझ ले कि अस्पृश्यता-निवारणका अुसके जीवनमें क्या अर्थ है; और अगर अैसा जवाब मिले कि हरिजन सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करें, पाठशालाअें, धर्मशालाअें, रास्ते और दवाखाने जैसी सार्वजनिक जगहें अिस्तमाल करें — गरज यह कि धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मामलोंमें हरिजनोंको अुनके बराबरका ही दर्जा मिले — तो अुन्हें

* छठा बयान, ता० १५-११-१९३२

समय कोअी भी हरिजन किसीके विरुद्ध अुपवास न करे और न सत्याग्रह ही करे। सवर्ण हिन्दुओंकी जो कसौटी हो रही है अुसे वे देखें, और यह देखें कि सवर्ण हिन्दू अपनेको हरिजनोंसे अलग रखनेवाला प्रतिबन्ध दूर करनेके लिअे क्या करते हैं। वे स्थानीय सवर्ण हिन्दुओंके साथ कलह न करें। अुनके बर्तावमें हमेशा, और अब तो ज्यादा, विवेक और गौरव होना चाहिये। धर्मकी रक्षा खुद कष्ट सह कर ही की जा सकती है, जालिमोंके प्रति हिंसा करके कभी नहीं। जबरदस्तीसे शायद वे बहुत-सी चीज़ें ले सकते हैं, मगर अुनकी शोभा तो सवर्ण हिन्दुओंके हृदय बदल कर ही अपने हक़ हासिल करनेमें है। और आज तो हज़ारों सवर्ण हिन्दुओंके मनमें अपने अपराधका भान पैदा हो गया है और वे हरिजनोंको अुसका मुआवज़ा देनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं, यह जानकर हरिजनोंके लिअे आशा रखनेका काफ़ी कारण है। वे अपने पक्षके पूर्ण न्याय्य होने और विजय प्राप्त करनेकी अपनी कष्टसहनकी शक्ति पर पूरी तरह भरोसा रखें।

७

सवर्णोंका धर्म*

हृदय-परिवर्तन

हरिजन अिस आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिअे क्या करें, यह प्रश्न तो हरिजनोंमें से अभी तक अकेले श्री राजभोजने ही पूछा है। परन्तु हिन्दुस्तानके तमाम हिस्सोंसे सवर्ण हिन्दुओंके — पुरुषों और स्त्रियों, विद्यार्थियों और दूसरोंके — ढेरों पत्र मुझे मिले हैं, जिनमें पूछा गया है कि हम अपने व्यवसायोंमें खलल डाले बिना किस तरह मदद दे सकते हैं? चूँकि अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनका अुद्देश्य आम लोगोंके बारेमें तो केवल अुनका हरिजनोंके प्रति रवैयेमें हृदय-परिवर्तन कराना ही है, अिसलिअे अधिकांश सवर्ण हिन्दुओंको हरिजनोंकी सेवा करनेके लिअे अपनी नित्यकी प्रवृत्तियोंमें खलल डालनेकी ज़रूरत नहीं है। पहली बात तो यह है कि हर स्त्री-पुरुष समझ ले कि अस्पृश्यता-निवारणका अुसके जीवनमें क्या अर्थ है; और अगर अैसा जवाब मिले कि हरिजन सार्वजनिक मन्दिरोंमें प्रवेश करें, पाठशालाअें, धर्मशालाअें, रास्ते और दवाखाने जैसी सार्वजनिक जगहें अिस्तमाल करें — गरज यह कि धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मामलोंमें हरिजनोंको अुनके बराबरका ही दर्जा मिले — तो अुन्हें

* छठा बयान, ता० १५-११-१९३२

और मैला हटानेकी शास्त्रीय पद्धतिका अध्ययन करना ही होगा। वे घर-मालिकोंसे भंगियोंको खास पोशाक भी दिलवा सकते हैं और खुद निस्संकोच होकर पाखाने साफ करके हरिजनोंको बतायें कि असी सेवा करनेमें जरा भी हल्कापन या बेअिज्जती नहीं है। असे सेवकोंको सवर्णों द्वारा भंगियोंको जूठन देनेके विरुद्ध प्रचार करना चाहिये और जहां अुन्हें बहुत ही कम वेतन मिलता हो, वहाँ घर-मालिकोंको काफी मेहनताना देनेके लिअे समझाना चाहिये। फुरसतके समय काम करनेवाले असे स्वयंसेवकोंमें से किसीमें मुर्दार चमड़े अुतारनेकी स्वच्छ पद्धति सीखकर अिस प्रकार प्राप्त किये हुअे ज्ञानका चमारोंमें प्रचार करने लायक दयावृत्ति और लगन न हो, तब तक चमारोंके कामके मामलेमें ज्यादा मदद नहीं की जा सकती। फिर भी अेक चीज़ तो वे जरूर कर सकते हैं। वे असे मुर्दार जानवरोंको ठिकाने लगाने सम्बन्धी रिवाजोंकी खोज करें और यह निगाह रखें कि चमारोंको अुनकी सेवाके बदलेमें काफी मेहनताना मिलनेका भरोसा रहे। जिनके पास शक्ति और समय हो, वे दिन और रातकी पाठशालाअें चलायें। छुट्टीके दिन या जब-जब मौका मिले, तब हरिजन बच्चोंको वनभोजनके लिअे और सुन्दर दृश्य दिखानेके लिअे ले जायँ। हरिजनोंके घर जाकर अुनसे मिलें, ज़रूरत हो वहाँ अुन्हें डॉक्टरी मदद दिलायें और आम तौर पर अुनमें असी भावना अुत्पन्न करें कि अुनके जीवनका नया पन्ना खुल गया है और अुन्हें अपनेको हिन्दू समाजके अुपेक्षित और तिरस्कृत अंग माननेकी ज़रूरत नहीं है। मैंने जो कुछ बताया है अुसे विद्यार्थीवर्ग बहुत ही आसानीसे और कुशलतासे कर सकता है।

अगर यह काम स्त्री-पुरुषोंका बड़ा समूह मूक अुत्साह, संकल्प और चतुराअीसे करे, तो अिसमें जरा भी शक नहीं कि हम अपने ध्येयकी दिशामें कअी कदम आगे बढ़ जायँगे और यह भी अनुभव होगा कि मैंने बताअी हैं अुनसे ज्यादा चीज़ोंकी तरफ ध्यान देनेकी ज़रूरत है। मैंने तो अपने प्रवासोंमें नज़र आअी हुअी बहुतसी बातोंमें से थोड़ी-सी चुनकर यहाँ दी हैं।

—

और मैला हटानेकी शास्त्रीय पद्धतिका अध्ययन करना ही होगा। वे घर-मालिकोंसे भंगियोंको खास पोशाक भी दिलवा सकते हैं और खुद निस्संकोच होकर पाखाने साफ करके हरिजनोंको बतायें कि अैसी सेवा करनेमें जरा भी हलकापन या बेअिज्जती नहीं है। अैसे सेवकोंको सवर्णों द्वारा भंगियोंको जूठन देनेके विरुद्ध प्रचार करना चाहिये और जहां अुन्हें बहुत ही कम वेतन मिलता हो, वहाँ घर-मालिकोंको काफी मेहनताना देनेके लिअे समझाना चाहिये। फुरसतके समय काम करनेवाले अैसे स्वयसेवकोंमें से किसीमें मुर्दार चमड़े अुतारनेकी स्वच्छ पद्धति सीखकर अिस प्रकार प्राप्त किये हुअे ज्ञानका चमारोंमें प्रचार करने लायक दयावृत्ति और लगन न हो, तब तक चमारोंके कामके मामलेमें ज्यादा मदद नहीं की जा सकती। फिर भी अेक चीज़ तो वे ज़रूर कर सकते हैं। वे अैसे मुर्दार जानवरोंको ठिकाने लगाने सम्बन्धी रिवाजोंकी खोज करें और यह निगाह रखें कि चमारोंको अुनकी सेवाके बदलेमें काफी मेहनताना मिलनेका भरोसा रहे। जिनके पास शक्ति और समय हो, वे दिन और रातकी पाठशालाअें चलायें। छुट्टीके दिन या जब-जब मौका मिले, तब हरिजन बच्चोंको वनभोजनके लिअे और सुन्दर दृश्य दिखानेके लिअे ले जायँ। हरिजनोंके घर जाकर अुनसे मिलें, ज़रूरत हो वहाँ अुन्हें डॉक्टरी मदद दिलायें और आम तौर पर अुनमें अैसी भावना अुत्पन्न करें कि अुनके जीवनका नया पन्ना खुल गया है और अुन्हें अपनेको हिन्दू समाजके अुपेक्षित और तिरस्कृत अंग माननेकी ज़रूरत नहीं है। मैंने जो कुछ बताया है अुसे विद्यार्थीवर्ग बहुत ही आसानीसे और कुशलतासे कर सकता है।

अगर यह काम स्त्री-पुरुषोंका बड़ा समूह मूक अुत्साह, संकल्प और चतुराअीसे करे, तो अिसमें जरा भी शक नहीं कि हम अपने ध्येयकी दिशामें कअी कदम आगे बढ़ जायँगे और यह भी अनुभव होगा कि मैंने बताअी हैं अुनसे ज्यादा चीज़ोंकी तरफ ध्यान देनेकी ज़रूरत है। मैंने तो अपने प्रवासोंमें नज़र आअी हुअी बहुतसी बातोंमें से थोड़ी-सी चुनकर यहाँ दी हैं।

नाममात्रका मतभेद

दूसरा सवाल यह है: "क्या आप हिन्दुओंके अेक वर्गको दूसरे वर्गसे नहीं लड़ाते?" हरगिज़ नहीं। हर सुधारमें कुछ न कुछ विरोध तो होगा ही, मगर समाजमें अेक हद तक विरोध और क्षोभ तंदुरुस्तीकी निशानी है। परन्तु मुझे सनातनियों और सुधारकोंके बीच स्थायी फूट पड़नेका ज़रा भी डर नहीं है। मेरे हाथों सनातनियोंके विरोधका अनादर करना या अुनकी भावनाओंकी अुपेक्षा करना हो ही नहीं सकता। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि अुनमें से कितनों को ही तीव्र रूपमें अैसा लगता है कि सनातन धर्म खतरेमें है। तो भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि सनातनी और सुधारकके बीच सिद्धान्तमें कितना नाममात्रका मतभेद है।

सनातनी क्या करें?

सनातनियोंकी तरफसे मुझे मिलनेवाले लगभग हरअेक पत्रमें नीचे लिखी चौंकानेवाली स्वीकृतियाँ हैं: "(१) हम मानते हैं कि हरिजनोंकी हालत सुधारनेके लिअे बहुत कुछ करना ज़रूरी है; (२) हम मानते हैं कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं; (३) हम मानते हैं कि अुनके बच्चोंको शिक्षा मिलनी चाहिये और अुन्हें रहनेको अच्छे घर मिलने चाहियें; (४) हम मानते हैं कि अुन्हें नहाने और पानी भरनेकी पूरी सुविधा मिलनी चाहिये; (५) हम मानते हैं कि अुन्हें संपूर्ण राजनैतिक हक मिलने चाहियें; (६) हम मानते हैं कि अुन्हें देव-दर्शन और पूजाकी पूरी सहूलियत मिलनी चाहिये; और (७) हम मानते हैं कि प्रजाजनोंके जो हक औरोंको मिलते हैं, वे सब अुन्हें मिलने चाहियें।" परंतु ये सनातनी कहते हैं: "अुन्हें छूने या अुनके साथ घनिष्ठता रखनेको — खासकर जब तक ये आजकी हालतमें हों तब तक — हमें मजबूर न करना चाहिये।" तब मैं अुनसे कहता हूँ: आप अुन्हें समान दर्जे पर रखनेकी ज़रूरत तो स्वीकार करते हैं। तब फिर दूसरे सवर्ण हिन्दू अगर अेक कदम आगे बढ़ें और जिन शास्त्रोंको आप मानते हैं, अुन्हीं शास्त्रोंके आधार पर वे यह मानें कि हरिजनोंको अस्पृश्य न माना जाय; अितना ही नहीं, जो हक और सुभीते आप हरिजनोंको देना कबूल करते हैं लेकिन यह चाहते हैं कि अिन्हें वे लोग आपसे अलग रहकर भोगें, अुन्हीं हकों और सुभीतोंको हरिजनोंको साथ रखकर भोगना चाहिये, अैसा यदि सुधारकोंको लगे तो आप अितना शोरगुल क्यों मचाते हैं? आप जब आचार-स्वातंत्र्यकी रक्षा करना चाहते हैं और बलात्कारके विचार मात्रका अुचित विरोध करते हैं, तब आप यह तो हरगिज़ नहीं चाहेंगे कि जिन सुधार योजनाओंको आप ज़रूरी मानते हैं, अुनको आप पसन्द करें अुसी तरह पूरा

नाममात्रका मतभेद

दूसरा सवाल यह है: "क्या आप हिन्दुओंके अेक वर्गको दूसरे वर्गसे नहीं लड़ाते?" हरगिज़ नहीं। हर सुधारमें कुछ न कुछ विरोध तो होगा ही, मगर समाजमें अेक हद तक विरोध और क्षोभ तंदुरुस्तीकी निशानी है। परन्तु मुझे सनातनियों और सुधारकोंके बीच स्थायी फूट पड़नेका ज़रा भी डर नहीं है। मेरे हाथों सनातनियोंके विरोधका अनादर करना या अुनकी भावनाओंकी अुपेक्षा करना हो ही नहीं सकता। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि अुनमें से कितनों को ही तीव्र रूपमें अैसा लगता है कि सनातन धर्म खतरेमें है। तो भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि सनातनी और सुधारकके बीच सिद्धान्तमें कितना नाममात्रका मतभेद है।

सनातनी क्या करें?

सनातनियोंकी तरफसे मुझे मिलनेवाले लगभग हरअेक पत्रमें नीचे लिखी चौंकानेवाली स्वीकृतियाँ हैं: "(१) हम मानते हैं कि हरिजनोंकी हालत सुधारनेके लिअे बहुत कुछ करना ज़रूरी है; (२) हम मानते हैं कि सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं; (३) हम मानते हैं कि अुनके बच्चोंको शिक्षा मिलनी चाहिये और अुन्हें रहनेको अच्छे घर मिलने चाहियें; (४) हम मानने हैं कि अुन्हें नहाने और पानी भरनेकी पूरी सुविधा मिलनी चाहिये; (५) हम मानते हैं कि अुन्हें संपूर्ण राजनैतिक हक मिलने चाहियें; (६) हम मानते हैं कि अुन्हें देव-दर्शन और पूजाकी पूरी सहूलियत मिलनी चाहिये; और (७) हम मानते हैं कि प्रजाजनोंके जो हक औरोंको मिलते हैं, वे सब अुन्हें मिलने चाहियें।" परंतु ये सनातनी कहते हैं: "अुन्हें छूने या अुनके साथ घनिष्ठता रखनेको — खासकर जब तक ये आजकी हालतमें हों तब तक — हमें मजबूर न करना चाहिये।" तब मैं अुनसे कहता हूँ: आप अुन्हें समान दर्जे पर रखनेकी ज़रूरत तो स्वीकार करते हैं। तब फिर दूसरे सवर्ण हिन्दू अगर अेक कदम आगे बढ़ें और जिन शास्त्रोंको आप मानते हैं, अुन्हीं शास्त्रोंके आधार पर वे यह मानें कि हरिजनोंको अस्पृश्य न माना जाय; अितना ही नहीं, जो हक और सुभीते आप हरिजनोंको देना कबूल करते हैं लेकिन यह चाहते हैं कि अिन्हें वे लोग आपसे अलग रहकर भोगें, अुन्हीं हकों और सुभीतोंको हरिजनोंको साथ रखकर भोगना चाहिये, अैसा यदि सुधारकोंको लगे तो आप अितना शोरगुल क्यों मचाते हैं? आप जब आचार-स्वातंत्र्यकी रक्षा करना चाहते हैं और बलात्कारके विचार मात्रका अुचित विरोध करते हैं, तब आप यह तो हरगिज़ नहीं चाहेंगे कि जिन सुधार योजनाओंको आप ज़रूरी मानते हैं, अुनको आप पसन्द करें अुसी तरह पूरा

भागना नहीं चाहिये। वे साफ समझ लें कि यरवदा-समझौतेके अनुसार और अभी स्थापित हुअे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके घोषणा-पत्रके अनुसार अस्पृश्यता-निवारणमें मैंने जो बातें बताअी हैं, अुनसे ज्यादा बातोंका समावेश नहीं होता। अिसमें वर्णान्तर रोटी-बेटी व्यवहारका समावेश नहीं होता। बहुतसे हिन्दू और मैं खुद अिससे बहुत आगे बढ़ें, तो सनातनियोंको क्षोभ न होना चाहिये। वे व्यक्तिगत बुद्धि और व्यक्तिगत आचरणको दबा देना तो हरगिज नहीं चाहेंगे; और अुन्हें अपनी मान्यताके बारेमें गहरी श्रद्धा हो, तो भावीकी कल्पनासे अुन्हें भड़कना न चाहिये। किसी खास सुधारमें अगर भीतरी प्राण होंगे और वह युगधर्मके अनुसार आया होगा, तो दुनियाकी कोअी ताकत अुसके अमोघ प्रवाहको रोक नहीं सकेगी।

राजनैतिक मुक्तिमें रुकावट?

तीसरा सवाल यह है: "अपने सामाजिक और धार्मिक प्रश्नोंके विचारोंकी तरफ जनताका ध्यान खींचकर और जनतासे अुन्हें स्वीकार करानेके लिअे प्रचंड आन्दोलन करके क्या आप राजनैतिक मुक्तिको रोक नहीं रहे हैं!" अस्पृश्यता-निवारणका आन्दोलन चलानेके लिअे मैंने क़ैदीकी हैसियतसे जो मर्यादाअें स्वीकार की हैं, अुनका अुल्लंघन किये बिना अिस सवालका विस्तृत जवाब नहीं दिया जा सकता। परंतु मैं अितना कह सकता हूँ कि मुझे पहचाननेवालोंको समझना चाहिये कि मैं राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और दूसरे सवालोंके बीच अमिट भेद नहीं मानता। मैंने हमेशा माना है कि ये सवाल अेक दूसरे पर आधार रखनेवाले हैं और अेकके हलसे दूसरोंका हल नज़दीक आता है।

मेरे पास आनेवाले पत्र अब अितने अधिक बढ़ गये हैं कि मुझे जो थोड़ी-बहुत मदद मिल सकती है अुतनी मददसे अुन्हें नहीं निपटा सकता। अिन पत्रोंमें से मैंने जो सवाल अिकट्ठे किये हैं, वे यहाँ पूरे नहीं हो जाते। बाक़ीके प्रश्नोंकी चर्चा मुझे बादके लेखमें करनी होगी। मैं यहाँ पत्र लिखनेवालोंको मुझ पर दया रखनेकी प्रार्थना करना चाहता हूँ। अब तक मैंने अपने पास आये हुअे लगभग सभी पत्रोंकी ध्यानपूर्वक पहुँच लिखी है। लेकिन अबसे मैं अिस लेखमाला द्वारा जो कुछ जवाब दे सकूँ, पत्रलेखक अुससे संतोष मान लेनेकी कृपा करें। और अगर वे थोड़ेमें, खासकर जब कुछ नया कहना हो या आंदोलनके सम्बंधमें खड़े होनेवाले किसी प्रश्न पर निर्णय करनेसे पहले अुन्हें अपने प्रश्नोंके जवाब मुझसे लेने ज़रूरी हों तभी लिखेंगे, तो वे अपनी और मेरी भी बड़ी मदद करेंगे।

भागना नहीं चाहिये। वे साफ समझ लें कि यरवदा-समझौतेके अनुसार और अभी स्थापित हुअे अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके घोषणा-पत्रके अनुसार अस्पृश्यता-निवारणमें मैंने जो बातें बताअी हैं, अुनसे ज्यादा बातोंका समावेश नहीं होता। अिसमें वर्णान्तर रोटी-बेटी व्यवहारका समावेश नहीं होता। बहुतसे हिन्दू और मैं खुद अिससे बहुत आगे बढ़ें, तो सनातनियोंको क्षोभ न होना चाहिये। वे व्यक्तिगत बुद्धि और व्यक्तिगत आचरणको दबा देना तो हरगिज़ नहीं चाहेंगे; और अुन्हें अपनी मान्यताके बारेमें गहरी श्रद्धा हो, तो भावीकी कल्पनासे अुन्हें भड़कना न चाहिये। किसी खास सुधारमें अगर भीतरी प्राण होंगे और वह युगधर्मके अनुसार आया होगा, तो दुनियाकी कोअी ताकत अुसके अमोघ प्रवाहको रोक नहीं सकेगी।

राजनैतिक मुक्तिमें रुकावट ?

तीसरा सवाल यह है: "अपने सामाजिक और धार्मिक प्रश्नोंके विचारोंकी तरफ जनताका ध्यान खींचकर और जनतासे अुन्हें स्वीकार करानेके लिअे प्रचंड आन्दोलन करके क्या आप राजनैतिक मुक्तिको रोक नहीं रहे हैं?" अस्पृश्यता-निवारणका आन्दोलन चलानेके लिअे मैंने क़ैदीकी हैसियतसे जो मर्यादाअें स्वीकार की हैं, अुनका अुल्लंघन किये बिना अिस सवालका विस्तृत जवाब नहीं दिया जा सकता। परंतु मैं अितना कह सकता हूँ कि मुझे पहचाननेवालोंको समझना चाहिये कि मैं राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और दूसरे सवालोंके बीच अमिट भेद नहीं मानता। मैंने हमेशा माना है कि ये सवाल अेक दूसरे पर आधार रखनेवाले हैं और अेकके हलसे दूसरोंका हल नज़दीक आता है।

मेरे पास आनेवाले पत्र अब अितने अधिक बढ़ गये हैं कि मुझे जो थोड़ी-बहुत मदद मिल सकती है अुतनी मददसे अुन्हें नहीं निपटा सकता। अिन पत्रोंमें से मैंने जो सवाल अिकट्ठे किये हैं, वे यहाँ पूरे नहीं हो जाते। बाक़ीके प्रश्नोंकी चर्चा मुझे बादके लेखमें करनी होगी। मैं यहाँ पत्र लिखनेवालोंको मुझ पर दया रखनेकी प्रार्थना करना चाहता हूँ। अब तक मैंने अपने पास आये हुअे लगभग सभी पत्रोंकी ध्यानपूर्वक पहुँच लिखी है। लेकिन अबसे मैं अिस लेखमाला द्वारा जो कुछ जवाब दे सकूँ, पत्रलेखक अुससे संतोष मान लेनेकी कृपा करें। और अगर वे थोड़ेमें, खासकर जब कुछ नया कहना हो या आंदोलनके सम्बंधमें खड़े होनेवाले किसी प्रश्न पर निर्णय करनेसे पहले अुन्हें अपने प्रश्नोंके जवाब मुझसे लेने ज़रूरी हों तभी लिखेंगे, तो वे अपनी और मेरी भी बड़ी मदद करेंगे।

मिले। और प्राचीन मनुस्मृतिसे भी शंकास्पद प्रमाणवाले श्लोक नहीं निकाल दिये जायँ, तो अिस सारे महान ग्रंथमें भी जो अूचेसे अूँचा नैतिक अुपदेश जगह-जगह पर बिखरा हुआ है, अुसके विरोधी वाक्य कितने ही मिल जायँगे। अिसलिअे भगवद्गीतामें अेक ही जगह जहाँ 'शास्त्र' शब्द आता है, वहाँ मैंने अुसका अर्थ यह नहीं किया कि वह गीताके बाहरका कोअी ग्रंथ या विधि-वाक्य है, बल्कि यह कि वह किसी जीवंत प्रमाणभूत व्यक्तिमें मूर्तिमान हुआ सदाचार है। मैं जानता हूँ कि अिससे अिस आलोचकको संतोष नहीं होगा। और साधारण मनुष्यकी हैसियतसे मैं किसीको रास्ता भी नहीं बता सकता, परन्तु यह बताकर कि शास्त्रका साफ़ अर्थ मैं क्या करता हूँ, अपने आलोचकोंकी जिज्ञासाको तृप्त कर सकता हूँ।

अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नाद

अेक और सवाल अितने ही आग्रहसे बार-बार पूछा जाता है: "अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नादका आप क्या अर्थ करते हैं! और अगर हर मनुष्य अपने लिअे अैसी ही प्रेरणा होनेका दावा करे व हर शख्स अपने पड़ोसियोंसे बिलकुल जुदा ही ढंगसे बर्ताव करे, तो आपकी और दुनियाकी क्या दशा हो!"

यह अच्छा सवाल है। अीश्वरने अगर आत्मरक्षाके लिअे सुविधा न कर रखी होती, तो हमारा बुरा हाल होता। अिसलिअे यह दावा भले ही सब करें, परन्तु अिसे सच्चा साबित करके दिखलानेवाले तो थोड़े ही मनुष्य निकलेंगे। किसी दुनियावी राजाकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी जितनी बुरी दशा हो सकती है, अुससे भी बुरी दशा अीश्वरकी प्रेरणा या अन्तर्नादकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी होगी। पहला पकड़ा गया तो शारीरिक सज़ा पाकर छूट जायगा, मगर दूसरा तो शरीर और आत्मा दोनोंसे नाश हो जायगा। अुदार मनवाले आलोचक मुझ पर धोखेका आरोप नहीं करते, परन्तु कहते हैं कि संभव है मैं भारी भ्रममें पड़ा हुआ हूँ। तो भी मेरे लिअे अिसका परिणाम मेरे झूठा दावा करनेसे बहुत भिन्न नहीं होगा। मेरे जैसे नम्र शोधक होनेका दावा करनेवालेको अत्यंत सावधान रहना चाहिये और मनका सन्तुलन कायम रखना चाहिये। अीश्वर प्रेरणा करे अिससे पहले अुसे शून्यवत् बन जाना पड़ता है। अिस चीज़के बारेमें मैं अधिक नहीं कहूँगा। मैंने जो दावा किया है, वह असाधारण नहीं है, और न अकेले मेरे लिअे ही है। जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाते हैं, अुन सबके जीवनका वह नियामक बन जाता है। गीताकी भाषामें जिन्होंने संपूर्ण अनासक्ति यानी आत्मविलोपनको साध लिया है, अुनके जरिये अीश्वर अपना काम करता है।

मिले। और प्राचीन मनुस्मृतिसे भी शंकास्पद प्रमाणवाले श्लोक नहीं निकाल दिये जायँ, तो अिस सारे महान ग्रंथमें भी जो अूँचेसे अूँचा नैतिक अुपदेश जगह-जगह पर बिखरा हुआ है, अुसके विरोधी वाक्य कितने ही मिल जायँगे। अिसलिअे भगवद्गीतामें अेक ही जगह जहाँ 'शास्त्र' शब्द आता है, वहाँ मैंने अुसका अर्थ यह नहीं किया कि वह गीताके बाहरका कोअी ग्रंथ या विधि-वाक्य है, बल्कि यह कि वह किसी जीवंत प्रमाणभूत व्यक्तिमें मूर्तिमान हुआ सदाचार है। मैं जानता हूँ कि अिससे अिस आलोचकको संतोष नहीं होगा। और साधारण मनुष्यकी हैसियतसे मैं किसीको रास्ता भी नहीं बता सकता, परन्तु यह बताकर कि शास्त्रका साफ़ अर्थ मैं क्या करता हूँ, अपने आलोचकोंकी जिज्ञासाको तृप्त कर सकता हूँ।

अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नाद

अेक और सवाल अितने ही आग्रहसे बार-बार पूछा जाता है: "अीश्वरीय प्रेरणा और अन्तर्नादका आप क्या अर्थ करते हैं? और अगर हर मनुष्य अपने लिअे अैसी ही प्रेरणा होनेका दावा करे व हर शख्स अपने पड़ोसियोंसे बिलकुल जुदा ही ढंगसे बर्ताव करे, तो आपकी और दुनियाकी क्या दशा हो!"

यह अच्छा सवाल है। अीश्वरने अगर आत्मरक्षाके लिअे सुविधा न कर रखी होती, तो हमारा बुरा हाल होता। अिसलिअे यह दावा भले ही सब करें, परन्तु अिसे सच्चा साबित करके दिखलानेवाले तो थोड़े ही मनुष्य निकलेंगे। किसी दुनियावी राजाकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी जितनी बुरी दशा हो सकती है, अुससे भी बुरी दशा अीश्वरकी प्रेरणा या अन्तर्नादकी आज्ञानुसार चलनेका झूठा दावा करनेवालेकी होगी। पहला पकड़ा गया तो शारीरिक सज़ा पाकर छूट जायगा, मगर दूसरा तो शरीर और आत्मा दोनोंसे नाश हो जायगा। अुदार मनवाले आलोचक मुझ पर धोखेका आरोप नहीं करते, परन्तु कहते हैं कि संभव है मैं भारी भ्रममें पड़ा हुआ हूँ। तो भी मेरे लिअे अिसका परिणाम मेरे झूठा दावा करनेसे बहुत भिन्न नहीं होगा। मेरे जैसे नम्र शोधक होनेका दावा करनेवालेको अत्यंत सावधान रहना चाहिये और मनका सन्तुलन कायम रखना चाहिये। अीश्वर प्रेरणा करे अिससे पहले अुसे शून्यवत् बन जाना पड़ता है। अिस चीज़के बारेमें मैं अधिक नहीं कहूँगा। मैंने जो दावा किया है, वह असाधारण नहीं है, और न अकेले मेरे लिअे ही है। जो पूरी तरह अीश्वरकी शरणमें जाते हैं, अुन सबके जीवनका वह नियामक बन जाता है। गीताकी भाषामें जिन्होंने संपूर्ण अनासक्ति यानी आत्मविलोपनको साध लिया है, अुनके जरिये अीश्वर अपना काम करता है।

और १५ लड़कियाँ हैं। १०९ व्यक्तियोंकी अिस आबादीमें से फक्त ९ लड़के मुश्किलसे कुछ पढ़-लिख सकते हैं। बाकी सब निरे अपढ़ हैं। यह अुपनगर अैसा है कि यहाँके रहनेवालोंमें अिन मनुष्य भाअी-बहनोंके बारेमें कुछ भी विचार हो, तो अुनके लिअे वे साफ घरोंमें सफाअीसे रहनेकी सुविधा दे सकते हैं और पानी, रोशनी वगैरा शहरी जीवनकी जो सुविधाअें हैं, वे सब मुहैया कर सकते हैं। यहाँ सनातनियों और सुधारकों दोनोंके लिअे काम है। यह कहना कि विलेपारलेकी म्युनिसिपेलिटीकी आमदनी सिर्फ ७० हजारकी है, जिसमें से वह ३१ हज़ारकी बड़ी रकम पाखानोंकी सफाअीके लिअे खर्च करती है, मेरी शिकायतका जवाब न होगा। मैं जानता हूँ कि विलेपारलेके रहनेवाले अितने मालदार हैं कि वे अिन अुपयोगी समाज-सेवकोंके लिअे अपने पर विशेष कर लगा सकते हैं। मगर अिसे मैं धीमी क्रिया मानूँगा। वहाँके हिन्दू निवासियोंका प्रथम धर्म यह है कि वे रातोंरात अच्छा चन्दा अिकट्ठा करें और भंगियोंके लिअे सुविधा वाले मकान और दूसरे सुभीते कर दें। अगर वे अितना करें तो भी कहा जा सकता है कि अपने भाअी-बंधुओंके प्रति अुन्होंने अेक मामूली फर्ज़, देरसे ही सही, अदा किया। वे अितना कर दें, तो फिर भंगियोंको कुछ सुखसे रहनेकी सुविधा देनेके लिअे जो सालाना खर्च करना होगा, अुसके लिअे म्युनिसिपेलिटीमें आन्दोलन करें तो ठीक होगा।

ठीक अैसा ही चित्र अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके अविश्रान्त मंत्री श्री ठक्करबापाने संघकी तरफसे किये गये प्रवासमें जाँच किये भंगियोंके मुहल्लोंका खींचा है। बिहार प्रान्तके दानापुरमें और पटनाके आसपासके अैसे मुहल्लोंकी हालतके बारेमें अुन्होंने दुःखद कहानी बयान की है। शास्त्रोंमें अस्पृश्यताके बारेमें क्या है और क्या नहीं है, अिसके व्यर्थ झगड़ेमें पड़नेके बजाय हममें से हरअेक शख्स हरिजनोंकी दुर्दशा सुधारनेके काममें लग जाये, तो कैसा अच्छा हो। मुझे लिखनेवाले तमाम विद्वान पत्रलेखकोंको अिसमें काफी और अुससे भी ज्यादा काम मिल सकता है; क्योंकि अिन सबने मुझे विश्वास दिलाया है कि हरिजनोंकी आर्थिक और नैतिक स्थिति सुधारनेकी अिच्छा रखनेमें वे किसीसे कम नहीं हैं।

और १५ लड़कियाँ हैं। १०९ व्यक्तियोंकी अिस आबादीमें से फक्त ९ लड़के मुश्किलसे कुछ पढ़-लिख सकते हैं। बाकी सब निरे अपढ़ हैं। यह अुपनगर अैसा है कि यहाँके रहनेवालोंमें अिन मनुष्य भाअी-बहनोंके बारेमें कुछ भी विचार हो, तो अुनके लिअे वे साफ घरोंमें सफाअीसे रहनेकी सुविधा दे सकते हैं और पानी, रोशनी वगैरा शहरी जीवनकी जो सुविधाअें हैं, वे सब मुहैया कर सकते हैं। यहाँ सनातनियों और सुधारकों दोनोंके लिअे काम है। यह कहना कि विलेपारलेकी म्युनिसिपेलिटीकी आमदनी सिर्फ ७० हजारकी है, जिसमें से वह ३१ हज़ारकी बड़ी रकम पाखानोंकी सफाअीके लिअे खर्च करती है, मेरी शिकायतका जवाब न होगा। मैं जानता हूँ कि विलेपारलेके रहनेवाले अितने मालदार हैं कि वे अिन अुपयोगी समाज-सेवकोंके लिअे अपने पर विशेष कर लगा सकते हैं। मगर अिसे मैं धीमी क्रिया मानूँगा। वहाँके हिन्दू निवासियोंका प्रथम धर्म यह है कि वे रातोंरात अच्छा चन्दा अिकट्ठा करें और भंगियोंके लिअे सुविधा वाले मकान और दूसरे सुभीते कर दें। अगर वे अितना करें तो भी कहा जा सकता है कि अपने भाअी-बंधुओंके प्रति अुन्होंने अेक मामूली फर्ज़, देरसे ही सही, अदा किया। वे अितना कर दें, तो फिर भंगियोंको कुछ सुखसे रहनेकी सुविधा देनेके लिअे जो सालाना खर्च करना होगा, अुसके लिअे म्युनिसिपेलिटीमें आन्दोलन करें तो ठीक होगा।

ठीक अैसा ही चित्र अखिल भारत अस्पृश्यता-निवारण संघके अविश्रान्त मंत्री श्री ठक्करबापाने संघकी तरफसे किये गये प्रवासमें जाँच किये भंगियोंके मुहल्लोंका खींचा है। बिहार प्रान्तके दानापुरमें और पटनाके आसपासके अैसे मुहल्लोंकी हालतके बारेमें अुन्होंने दुःखद कहानी बयान की है। शास्त्रोंमें अस्पृश्यताके बारेमें क्या है और क्या नहीं है, अिसके व्यर्थ झगड़ेमें पड़नेके बजाय हममें से हरअेक शख्स हरिजनोंकी दुर्दशा सुधारनेके काममें लग जाये, तो कैसा अच्छा हो। मुझे लिखनेवाले तमाम विद्वान पत्रलेखकोंको अिसमें काफी और अुससे भी ज्यादा काम मिल सकता है; क्योंकि अिन सबने मुझे विश्वास दिलाया है कि हरिजनोंकी आर्थिक और नैतिक स्थिति सुधारनेकी अिच्छा रखनेमें वे किसीसे कम नहीं हैं।

सत्य ज़रूर है, मगर ज़ामोरिन मन्दिरके मालिक नहीं। वे ट्रस्टी होनेके नाते मन्दिरमें जानेवालोंके प्रतिनिधि हैं। अिसलिअे वे जनताके बड़े भागकी साफ तौर पर ज़ाहिर की हुअी अिच्छाका विरोध नहीं कर सकते। अगर कोअी कानूनी मुश्किलें हों, तो वे अुन्हें दूर करनी चाहियें; और वे अैसा न करें, तो अुसका अर्थ अितना ही है कि अुन्हें अपना स्पष्ट कर्तव्य पालन करनेको मजबूर करने लायक लोकमत मजबूत नहीं हुआ। अिसलिअे मेरा अुपवास लोकमतको अितना प्रबल बनायेगा कि अुसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे असलमें तो मन्दिरकी कुंजी जनताके हाथमें है। मगर कानूनका अेक सूत्र है कि कानून या न्याय जागनेवालोंकी मदद करता है, आलसियोंकी नहीं। अिसलिअे केरल प्रान्तके सुधारकोंको ज़ामोरिनको दोष नहीं देना चाहिये। ज़ामोरिनके बारेमें दुष्ट हेतुका आरोप करनेमें अविवेक और अन्याय है। अगर वे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोल देनेको तैयार न हों, तो हमें मानना चाहिये कि जनताकी माँग अुनके गले नहीं अुतरी। वे अिनकार करें, तो हमें अुन्हें गालियाँ न देनी चाहियें, परन्तु अपने पक्षकी निर्बलता खोजनी चाहिये। अधिक गौरव और औचित्य अिसीमें है कि जनतामें अैसी भावना पैदा हो कि यह जनताकी साफ तौर पर प्रगट की गअी अिच्छा है और ज़ामोरिन जनताके प्रतिनिधिके नाते अुसकी अुपेक्षा नहीं कर सकते।

गुरुवायुरका प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न बन चुका है। सारे हिन्दुस्तानमें सवर्ण हिन्दू जाग्रत हों और अपना मत प्रगट करें कि वे चाहते हैं कि गुरुवायुरके मन्दिरमें हरिजनोंको प्रवेश मिले। अैसी अीमानदारी और आज़ादीसे जाहिर की गअी रायकी शक्ति अमोघ बन जायगी।

मैं सुधारकोंको चेतावनी दे चुका हूँ कि वे कट्टर सनातनियों या वाअिसरॉयके नाम प्रार्थना-पत्रमें अुन्होंने जो नाम धारण किया है, अुसे अिस्तेमाल करें तो 'अपरिवर्तनवादियों' के बारेमें अनुचित भाषा हरगिज़ काममें न लें। अुन्हें अपनी राय रखनेका हक है। मैं अस्पृश्यताके सवालको मुख्यतः धार्मिक मानता हूँ। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि सुधारक और अपरिवर्तनवादी अेक दूसरे पर दुष्ट हेतुका आरोप लगाये बिना धार्मिक भावनासे काम करें। कोअी भी सुधार जबरदस्तीसे नहीं कराया जा सकता, न कराना चाहिये; तब फिर धार्मिक सुधारमें तो बलात्कार किया ही कैसे जा सकता है! आगामी अुपवासकी मर्यादा और अुद्देश्य मैंने बारबार असंदिग्ध शब्दोंमें बता दिये हैं।

मेरी धर्मश्रद्धा

परंतु अेक सज्जनने अपने और दूसरोंकी तरफसे भी गुजरातीमें नीचे लिखे आशयका पत्र लिखा है:

सत्य ज़रूर है, मगर ज़ामोरिन मन्दिरके मालिक नहीं। वे ट्रस्टी होनेके नाते मन्दिरमें जानेवालोंके प्रतिनिधि हैं। असलिअे वे जनताके बड़े भागकी साफ तौर पर ज़ाहिर की हुअी अिच्छाका विरोध नहीं कर सकते। अगर कोअी कानूनी मुश्किलें हों, तो वे अुन्हें दूर करनी चाहियें; और वे अैसा न करें, तो अुसका अर्थ अितना ही है कि अुन्हें अपना स्पष्ट कर्तव्य पालन करनेको मजबूर करने लायक लोकमत मजबूत नहीं हुआ। अिसलिअे मेरा अुपवास लोकमतको अितना प्रबल बनायेगा कि अुसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। अिसलिअे असलमें तो मन्दिरकी कुंजी जनताके हाथमें है। मगर कानूनका अेक सूत्र है कि कानून या न्याय जागनेवालोंकी मदद करता है, आलसियोंकी नहीं। अिसलिअे केरल प्रान्तके सुधारकोंको ज़ामोरिनको दोष नहीं देना चाहिये। ज़ामोरिनके बारेमें दुष्ट हेतुका आरोप करनेमें अविवेक और अन्याय है। अगर वे हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोल देनेको तैयार न हों, तो हमें मानना चाहिये कि जनताकी माँग अुनके गले नहीं अुतरी। वे अिनकार करें, तो हमें अुन्हें गालियाँ न देनी चाहियें, परन्तु अपने पक्षकी निर्बलता खोजनी चाहिये। अधिक गौरव और औचित्य अिसीमें है कि जनतामें अैसी भावना पैदा हो कि यह जनताकी साफ तौर पर प्रगट की गअी अिच्छा है और ज़ामोरिन जनताके प्रतिनिधिके नाते अुसकी अुपेक्षा नहीं कर सकते।

गुरुवायुरका प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न बन चुका है। सारे हिन्दुस्तानमें सवर्ण हिन्दू जाग्रत हों और अपना मत प्रगट करें कि वे चाहते हैं कि गुरुवायुरके मन्दिरमें हरिजनोंको प्रवेश मिले। अैसी अीमानदारी और आज़ादीसे जाहिर की गअी रायकी शक्ति अमोघ बन जायगी।

मैं सुधारकोंको चेतावनी दे चुका हूँ कि वे कट्टर सनातनियों या वाअिसरॉयके नाम प्रार्थना-पत्रमें अुन्होंने जो नाम धारण किया है, अुसे अिस्तेमाल करें तो 'अपरिवर्तनवादियों' के बारेमें अनुचित भाषा हरगिज़ काममें न लें। अुन्हें अपनी राय रखनेका हक है। मैं अस्पृश्यताके सवालको मुख्यतः धार्मिक मानता हूँ। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि सुधारक और अपरिवर्तनवादी अेक दूसरे पर दुष्ट हेतुका आरोप लगाये बिना धार्मिक भावनासे काम करें। कोअी भी सुधार जबरदस्तीसे नहीं कराया जा सकता, न कराना चाहिये; तब फिर धार्मिक सुधारमें तो बलात्कार किया ही कैसे जा सकता है! आगामी अुपवासकी मर्यादा और अुद्देश्य मैंने बारबार असंदिग्ध शब्दोंमें बता दिये हैं।

मेरी धर्मश्रद्धा

परंतु अेक सज्जनने अपने और दूसरोंकी तरफसे भी गुजरातीमें नीचे लिखे आशयका पत्र लिखा है:

अगर अुनका अुपवास अन्तरकी प्रेरणासे हुआ होगा, तो अुपवासमें ही अुन्हें अिसका फल मिल जायगा; और जिस हेतुके लिअे वह किया गया होगा, वह पूरा हुआ दीखे या न दीखे, पर अुपवास करनेवालोंका तो भला ही होगा।

अीश्वर और अन्तर्नाद

यही सज्जन और पूछते हैं:

"मगर आप अीश्वरीय प्रेरणाकी और अन्तर्नाद की और अैसी बहुतसी बातें कहते हैं, सो तो ठीक है। दूसरे लोग भी अैसा दावा कर सकते हैं और करते भी हैं। परन्तु हम जैसे, जिन्हें अन्तर्नाद नहीं होता और जिनके पास लोगोंके सामने समय-समय पर बतानेको अीश्वर नहीं, वे क्या करें और दोनोंमें से किस पक्ष पर आस्था रखें?"

मैं तो अितना ही कह सकता हूँ: आप अपने सिवाय और किसी पर आस्था न रखिये। आपको अपना ही अन्तर्नाद सुननेकी कोशिश करनी चाहिये। परन्तु आपको 'अन्तर्नाद' शब्द न चाहिये, तो 'बुद्धिकी आवाज' शब्द काममें लीजिये। अिस आवाजका आपको अनुसरण करना चाहिये। और अगर आप अीश्वरको सामने नहीं रखेंगे, तो मुझे शंका नहीं कि और किसी चीज़को आप ज़रूर सामने रखेंगे। यही चीज अन्तमें अीश्वर जान पड़ेगी, क्योंकि सौभाग्यसे अिस विश्वमें अीश्वरके सिवाय और कोअी व्यक्ति या वस्तु है ही नहीं। साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि अन्तर्नादकी प्रेरणासे काम करनेका दावा करनेवाले हरअेक मनुष्यको यह प्रेरणा नहीं होती। और सब शक्तियोंकी तरह अिस शान्त और सूक्ष्म अन्तर्नादको सुननेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिअे, शायद और किसी भी शक्तिकी प्राप्तिके लिअे चाहिये अुसकी अपेक्षा अधिक पूर्वाभ्यास और साधनाकी ज़रूरत होती है। और अगर दावा करनेवाले हज़ारोंमें से थोड़े भी अपना दावा सिद्ध करनेमें सफल साबित हों, तो अिसके लिअे भी लेभग्गू लोगोंका दावा चलने देने और अुसे बर्दाश्त करनेकी जोखिम अुठानी पड़े, तो वह अुठाने लायक है।

अेक ही वृक्षकी शाखाअें

यह तो हुअी अिस गुजराती पत्रलेखककी बात। अब अंग्रेजीमें लिखनेवाले अेक सज्जनके प्रश्नकी चर्चा करके मुझे यह लेख पूरा करना चाहिये। अिस सज्जनका पत्र लम्बा और विस्तृत दलीलोंसे भरा है, परन्तु मुझे लगता है कि नीचे दिये हुअे सारमें अुनके कहनेका आशय आ जाता है:

"मैं जानता हूँ कि अब तक आपमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं थी, परन्तु अब आप अेकाअेक साम्प्रदायिक लिबासमें प्रगट हुअे हैं। स्वराज्यकी खातिर या क़ौमी अेकताके लिअे आप अुपवास करते तो अुसे मैं समझ सकता था और अुचित

अगर अुनका अुपवास अन्तरकी प्रेरणासे हुआ होगा, तो अुपवासमें ही अुन्हें अिसका फल मिल जायगा; और जिस हेतुके लिअे वह किया गया होगा, वह पूरा हुआ दीखे या न दीखे, पर अुपवास करनेवालोंका तो भला ही होगा।

अीश्वर और अन्तर्नाद

यही सज्जन और पूछते हैं :

"मगर आप अीश्वरीय प्रेरणाकी और अन्तर्नाद की और अैसी बहुतसी बातें कहते हैं, सो तो ठीक है। दूसरे लोग भी अैसा दावा कर सकते हैं और करते भी हैं। परन्तु हम जैसे, जिन्हें अन्तर्नाद नहीं होता और जिनके पास लोगोंके सामने समय-समय पर बतानेको अीश्वर नहीं, वे क्या करें और दोनोंमें से किस पक्ष पर आस्था रखें?"

मैं तो अितना ही कह सकता हूँ : आप अपने सिवाय और किसी पर आस्था न रखिये। आपको अपना ही अन्तर्नाद सुननेकी कोशिश करनी चाहिये। परन्तु आपको 'अन्तर्नाद' शब्द न चाहिये, तो 'बुद्धिकी आवाज' शब्द काममें लीजिये। अिस आवाजका आपको अनुसरण करना चाहिये। और अगर आप अीश्वरको सामने नहीं रखेंगे, तो मुझे शंका नहीं कि और किसी चीज़को आप ज़रूर सामने रखेंगे। यही चीज अन्तमें अीश्वर जान पड़ेगी, क्योंकि सौभाग्यसे अिस विश्वमें अीश्वरके सिवाय और कोअी व्यक्ति या वस्तु है ही नहीं। साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि अन्तर्नादकी प्रेरणासे काम करनेका दावा करनेवाले हरअेक मनुष्यको यह प्रेरणा नहीं होती। और सब शक्तियोंकी तरह अिस शान्त और सूक्ष्म अन्तर्नादको सुननेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिअे, शायद और किसी भी शक्तिकी प्राप्तिके लिअे चाहिये अुसकी अपेक्षा अधिक पूर्वाभ्यास और साधनाकी ज़रूरत होती है। और अगर दावा करनेवाले हज़ारोंमें से थोड़े भी अपना दावा सिद्ध करनेमें सफल साबित हों, तो अिसके लिअे भी लेभग्गू लोगोंका दावा चलने देने और अुसे बर्दाश्त करनेकी जोखिम अुठानी पड़े, तो वह अुठाने लायक है।

अेक ही वृक्षकी शाखाअें

यह तो हुअी अिस गुजराती पत्रलेखककी बात। अब अंग्रेजीमें लिखनेवाले अेक सज्जनके प्रश्नकी चर्चा करके मुझे यह लेख पूरा करना चाहिये। अिस सज्जनका पत्र लम्बा और विस्तृत दलीलोंसे भरा है, परन्तु मुझे लगता है कि नीचे दिये हुअे सारमें अुनके कहनेका आशय आ जाता है :

"मैं जानता हूँ कि अब तक आपमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं थी, परन्तु अब आप अेकाअेक साम्प्रदायिक लिबासमें प्रगट हुअे हैं। स्वराज्यकी खातिर या क़ौमी अेकताके लिअे आप अुपवास करते तो अुसे मैं समझ सकता था और अुचित

सत्याग्रहीका आखिरी सहारा

[गांधीजीने ३ दिसम्बरको जो अुपवास किया था और जिसके कारण सारे देशमें भारी चिन्ता फैल गअी थी, अुसका कारण समझाते हुअे दूसरे दिन यानी ४ तारीखको गांधीजीने अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार अिस प्रकार कह सुनाया।]

अुपवासकी जड़

अुपवासके मूल कारणके बारेमें और सरकारके व मेरे बीच जो घटनाअें घटीं, अुनके बारेमें मुझे जो कहना हो वह कहनेकी अिजाज़त अिन्स्पेक्टर जनरलने मुझे दी है, फिर भी अुनकी दी हुअी अिस छूटका पूरा फायदा अुठानेकी मेरी अिच्छा नहीं है। जो कुछ हुआ है अुसका सार ही आपको सुना दूँगा, ताकि आपकी बेचैनी मिटे और मेरी स्थितिके बारेमें गलतफहमी पैदा न हो।

आप यह जानकर खुश होंगे कि कल मैंने जो अुपवास शुरू किया था, वह अभी यहाँ आनेसे पहले ही छोड़ा है। मेरी स्थिति असाधारण है। हालाँकि मैंने अपना हृदय कड़ा कर लिया है, तो भी कुछ अैसी बातें हैं जिनका मेरे हृदय पर बहुत ही तीव्र असर होता है। महत्त्वके मामलोंके बारेमें मेरे मनमें तारतम्य नहीं है; और जितनी शक्ति मुझमें बड़े कामके लिअे प्राणार्पण करनेकी है, अुतनी ही शक्ति साथीके जीवनके लिअे भी प्राण दे देनेकी है। अब अिस मामलेमें मेरे सामने सवाल यह था कि मैं अपने अेक प्रिय साथीको मरने देकर लापरवाहीसे जीअूँ, या अुसकी जिन्दगी बचानेकी कोशिशमें अपनी जान जोखिममें डालूँ!

अप्पा साहब पटवर्धन, जिनका नाम मैंने सुना है कि अखबारोंमें आ चुका है, रत्नागिरि जेलमें कैदी हैं। वे मेरे प्रिय साथी हैं। अप्पा साहब शुद्ध कुन्दन हैं। वे सौ फीसदी सत्यनिष्ठ हैं। जेलके नियमोंसे गुजरकर मेरे पास खबर आअी कि अप्पा साहबको हरिजनोंकी जो सेवा करनी थी, वह अुन्हें नहीं करने दी गअी, अिसलिअे अुन्होंने कमसे कम — शरीरमें प्राण टिके रहें अुतनी ही — खुराक लेना शुरू किया है। मैंने सरकारको, जितनी अधिकसे अधिक सौम्य भाषामें लिखा जा सकता है, लिखा कि अगर अप्पा साहबको राहत न दी गअी, तो जो वेदना और कठिनाअी वे भोग रहे हैं वही मुझे भी भोगनी

११

सत्याग्रहीका आखिरी सहारा

[गांधीजीने ३ दिसम्बरको जो अुपवास किया था और जिसके कारण सारे देशमें भारी चिन्ता फैल गअी थी, अुसका कारण समझाते हुअे दूसरे दिन यानी ४ तारीखको गांधीजीने अस्पृश्यता-निवारण संघके सदस्योंको सारे मामलेका सार अिस प्रकार कह सुनाया।]

अुपवासकी जड़

अुपवासके मूल कारणके बारेमें और सरकारके व मेरे बीच जो घटनाअें घटीं, अुनके बारेमें मुझे जो कहना हो वह कहनेकी अिजाज़त अिन्स्पेक्टर जनरलने मुझे दी है, फिर भी अुनकी दी हुअी अिस छूटका पूरा फायदा अुठानेकी मेरी अिच्छा नहीं है। जो कुछ हुआ है अुसका सार ही आपको सुना दूँगा, ताकि आपकी बेचैनी मिटे और मेरी स्थितिके बारेमें गलतफहमी पैदा न हो।

आप यह जानकर खुश होंगे कि कल मैंने जो अुपवास शुरू किया था, वह अभी यहाँ आनेसे पहले ही छोड़ा है। मेरी स्थिति असाधारण है। हालाँकि मैंने अपना हृदय कड़ा कर लिया है, तो भी कुछ अैसी बातें हैं जिनका मेरे हृदय पर बहुत ही तीव्र असर होता है। महत्त्वके मामलोंके बारेमें मेरे मनमें तारतम्य नहीं है; और जितनी शक्ति मुझमें बड़े कामके लिअे प्राणार्पण करनेकी है, अुतनी ही शक्ति साथीके जीवनके लिअे भी प्राण दे देनेकी है। अब अिस मामलेमें मेरे सामने सवाल यह था कि मैं अपने अेक प्रिय साथीको मरने देकर लापरवाहीसे जीअूँ, या अुसकी जिन्दगी बचानेकी कोशिशमें अपनी जान जोखिममें डालूँ?

अप्पा साहब पटवर्धन, जिनका नाम मैंने सुना है कि अखबारोंमें आ चुका है, रत्नागिरि जेलमें कैदी हैं। वे मेरे प्रिय साथी हैं। अप्पा साहब शुद्ध कुन्दन हैं। वे सौ फीसदी सत्यनिष्ठ हैं। जेलके नियमोंसे गुजरकर मेरे पास खबर आअी कि अप्पा साहबको हरिजनोंकी जो सेवा करनी थी, वह अुन्हें नहीं करने दी गअी, अिसलिअे अुन्होंने कमसे कम — शरीरमें प्राण टिके रहें अुतनी ही — खुराक लेना शुरू किया है। मैंने सरकारको, जितनी अधिकसे अधिक सौम्य भाषामें लिखा जा सकता है, लिखा कि अगर अप्पा साहबको राहत न दी गअी, तो जो वेदना और कठिनाअी वे भोग रहे हैं वही मुझे भी भोगनी

अहिंसक रहनेकी प्रतिज्ञा की हुअी है, आखिरी सहारा आत्मबलिदानका है। मेरे जैसे अल्प मनुष्यको अीश्वरने जो बुद्धि दी है, अुसके निर्णयके अनुसार कड़ा प्रसंग आये, तब अुसके लिअे प्राणोंकी बाजी लगा देना ही मेरा बड़ेसे बड़ा शस्त्र है। अिस तरह मेरा जीवन अुपवासके अनेक प्रसंगों पर रचा हुआ है। यह प्रार्थनाका सबसे अुत्कट स्वरूप है। दुनियाके सामने तो यह हाल ही में आया है, परन्तु मेरे पास तो यह बहुत वर्षोंसे है। यह विचारहीन कर्म नहीं है। अिसमें किसी पर बलात्कार नहीं है। यह व्यक्तियों पर और सरकार पर दबाव ज़रूर डालता है; परन्तु अिसमें आत्मत्यागके स्वाभाविक और नैतिक परिणामसे अधिक और कुछ नहीं है। यह सोअी हुअी आत्माको झंझोड़कर जगाता है और प्रेमी हृदयोंको कार्यमें प्रवृत्त करता है। जिन्हें मनुष्य, समाजकी स्थिति और वातावरणमें मौलिक परिवर्तन कराना हो, अुनका काम समाजमें क्षोभ पैदा किये बिना नहीं चलता। अैसा करनेके दो ही रास्ते हैं — हिंसा और अहिंसा। हिंसाका दबाव शरीरको लगता है, और अुससे करने और भोगनेवाले दोनोंका पतन होता है। परन्तु अुपवास द्वारा खुद कष्ट अुठा कर डाले हुअे अहिंसक दबावका असर बिलकुल दूसरी ही तरहका होता है। जिसके खिलाफ वह किया जाता है, अुसके शरीरको तो वह छूता ही नहीं, परन्तु अुसकी नैतिक शक्तिको स्पर्श करके अुसे सबल बनाता है।

मेरा खयाल है कि अभी अितना काफ़ी होगा। कौन जाने मुझे कितने अुपवास करने होंगे और घुलघुल कर मरना होगा! परन्तु अैसा हो तो मैं चाहता हूँ कि आप मेरे कामके लिअे गर्वित हों और यह न मानें कि यह जड़ मनुष्यका कार्य था। मेरे जीवन पर बहुत कुछ बुद्धिका राज्य चलता है, और जब बुद्धि बेकार साबित होती है, तब अुस पर बुद्धिसे बड़ी शक्तिका — श्रद्धाका शासन चलता है।

अहिंसक रहनेकी प्रतिज्ञा की हुअी है, आखिरी सहारा आत्मबलिदानका है। मेरे जैसे अल्प मनुष्यको अीश्वरने जो बुद्धि दी है, अुसके निर्णयके अनुसार कड़ा प्रसंग आये, तब अुसके लिअे प्राणोंकी बाजी लगा देना ही मेरा बड़ेसे बड़ा शस्त्र है। अिस तरह मेरा जीवन अुपवासके अनेक प्रसंगों पर रचा हुआ है। यह प्रार्थनाका सबसे अुत्कट स्वरूप है। दुनियाके सामने तो यह हाल ही में आया है, परन्तु मेरे पास तो यह बहुत वर्षोंसे है। यह विचारहीन कर्म नहीं है। अिसमें किसी पर बलात्कार नहीं है। यह व्यक्तियों पर और सरकार पर दबाव ज़रूर डालता है; परन्तु अिसमें आत्मत्यागके स्वाभाविक और नैतिक परिणामसे अधिक और कुछ नहीं है। यह सोअी हुअी आत्माको झंझोड़कर जगाता है और प्रेमी हृदयोंको कार्यमें प्रवृत्त करता है। जिन्हें मनुष्य, समाजकी स्थिति और वातावरणमें मौलिक परिवर्तन कराना हो, अुनका काम समाजमें क्षोभ पैदा किये बिना नहीं चलता। अैसा करनेके दो ही रास्ते हैं — हिंसा और अहिंसा। हिंसाका दबाव शरीरको लगता है, और अुससे करने और भोगनेवाले दोनोंका पतन होता है। परन्तु अुपवास द्वारा खुद कष्ट अुठा कर डाले हुअे अहिंसक दबावका असर बिलकुल दूसरी ही तरहका होता है। ज़िसके खिलाफ वह किया जाता है, अुसके शरीरको तो वह छूता ही नहीं, परन्तु अुसकी नैतिक शक्तिको स्पर्श करके अुसे सबल बनाता है।

मेरा खयाल है कि अभी अितना काफ़ी होगा। कौन जाने मुझे कितने अुपवास करने होंगे और घुलघुल कर मरना होगा! परन्तु अैसा हो तो मैं चाहता हूँ कि आप मेरे कामके लिअे गर्वित हों और यह न मानें कि यह जड़ मनुष्यका कार्य था। मेरे जीवन पर बहुत कुछ बुद्धिका राज्य चलता है, और जब बुद्धि बेकार साबित होती है, तब अुस पर बुद्धिसे बड़ी शक्तिका — श्रद्धाका शासन चलता है।

आसपास बैठे हुअे सभी खिलखिलाकर हँसे, और अेक आदमीने पूछा: पिछले अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय और क्या हो सकता है?

गांधीजीने हँसते-हँसते कहा: सशर्त अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय है बिनाशर्त अनशन। आज तक तो मैंने यह कहा है कि अमुक वस्तु नहीं हो जायगी तब तक अुपवास करूँगा। मगर आपके कहे मुताबिक मुझे यह विश्वास हो जाय कि लोग मुझे धोखा देते हैं, तो सम्भव है कि मुझे जीवनमें कोअी रस न रह जाय और शायद मैं यह घोषणा भी कर दूँ कि अब मेरा सदाके लिअे अनशन है। या मैं यह कहूँ कि ३० दिनका अुपवास है — जैसा मैंने दिल्लीमें २१ दिनका बिनाशर्त अुपवास घोषित किया था! मगर लोग मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं, अिसलिअे अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि धोखा देकर मुझे बचानेका अुपाय वे कभी नहीं करेंगे।

१३

सुधारका कार्यक्रम*

अुद्धार किसका?

अस्पृश्यता-निवारण संघकी बैठकमें अुपस्थित होनेवाले मित्रोंमें से अेकने मुझे अेक प्रश्नमाला दी थी। अिन प्रश्नोंमें अुन्होंने अपनी दलीलें भी पिरो दी थीं। संक्षेपकी खातिर मैं अिन सवालोंमें से अेक सबसे महत्वका सवाल पत्रके रूपमें नीचे देता हूँ:

"संघ आपके सुझाव पर अस्पृश्यता-निवारणका कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे स्थापित हुआ है, अिसलिअे कार्यकर्ता आपसे निश्चित मार्गदर्शनकी अपेक्षा रखें, यह स्वाभाविक है। तब मुझे पहला सवाल यह सूझता है: कार्यकर्ताओंको सुधारक बनकर हरिजनोंके अुद्धारका काम करना है या अपने अुद्धारका? अपने अुद्धारका काम करना हो, तो सवर्ण हिन्दुओंमें ही काम करने पर अधिकसे अधिक जोर देना चाहिये। यदि अैसा हो तो यह काम किस ढंगसे किया जाय?"

यह व्यापक प्रश्न है। और अैसी आशा है कि अुसका जवाब देते हुअे मैं अिन मित्रके अुठाये हुअे मुख्य मुद्दोंकी चर्चा कर सकूँगा। मैंने बार-बार साफ शब्दोंमें कहा है कि सवर्ण हिन्दू दोषी हैं। अुन्होंने हरिजनोंके प्रति पाप किया है। हरिजनोंकी मौजूदा हालतके लिअे सवर्ण हिन्दू जिम्मेदार हैं। अिसलिअे वे

---

* दसवाँ बयान, ता० ९-१२-१९३२

आसपास बैठे हुअे सभी खिलखिलाकर हँसे, और अेक आदमीने पूछा: पिछले अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय और क्या हो सकता है?

गांधीजीने हँसते-हँसते कहा: सशर्त अुपवाससे ज्यादा कड़ा अुपाय है बिनाशर्त अनशन। आज तक तो मैंने यह कहा है कि अमुक वस्तु नहीं हो जायगी तब तक अुपवास करूँगा। मगर आपके कहे मुताबिक मुझे यह विश्वास हो जाय कि लोग मुझे धोखा देते हैं, तो सम्भव है कि मुझे जीवनमें कोअी रस न रह जाय और शायद मैं यह घोषणा भी कर दूँ कि अब मेरा सदाके लिअे अनशन है। या मैं यह कहूँ कि ३० दिनका अुपवास है — जैसा मैंने दिल्लीमें २१ दिनका बिनाशर्त अुपवास घोषित किया था! मगर लोग मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं, अिसलिअे अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि धोखा देकर मुझे बचानेका अुपाय वे कभी नहीं करेंगे।

१३

सुधारका कार्यक्रम*

अुद्धार किसका?

अस्पृश्यता-निवारण संघकी बैठकमें अुपस्थित होनेवाले मित्रोंमें से अेकने मुझे अेक प्रश्नमाला दी थी। अिन प्रश्नोंमें अुन्होंने अपनी दलीलें भी पिरो दी थीं। संक्षेपकी खातिर मैं अिन सवालोंमें से अेक सबसे महत्वका सवाल पत्रके रूपमें नीचे देता हूँ:

"संघ आपके सुझाव पर अस्पृश्यता-निवारणका कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे स्थापित हुआ है, अिसलिअे कार्यकर्ता आपसे निश्चित मार्गदर्शनकी अपेक्षा रखें, यह स्वाभाविक है। तब मुझे पहला सवाल यह सूझता है: कार्यकर्ताओंको सुधारक बनकर हरिजनोंके अुद्धारका काम करना है या अपने अुद्धारका? अपने अुद्धारका काम करना हो, तो सवर्ण हिन्दुओंमें ही काम करने पर अधिकसे अधिक जोर देना चाहिये। यदि अैसा हो तो यह काम किस ढंगसे किया जाय?"

यह व्यापक प्रश्न है। और अैसी आशा है कि अुसका जवाब देते हुअे मैं अिन मित्रके अुठाये हुअे मुख्य मुद्दोंकी चर्चा कर सकूँगा। मैंने बार-बार साफ शब्दोंमें कहा है कि सवर्ण हिन्दू दोषी हैं। अुन्होंने हरिजनोंके प्रति पाप किया है। हरिजनोंकी मौजूदा हालतके लिअे सवर्ण हिन्दू जिम्मेदार हैं। अिसलिअे वे

---

* दसवाँ बयान, ता० ९-१२-१९३२

अच्छा ही है। शास्त्रज्ञ लोगोंका अेक अैसा वर्ग बढ़ता जा रहा है, जो आग्रह-पूर्वक यह राय रखता है कि आज जो अस्पृश्यता मानी और रखी जाती है, अुसके लिअे शास्त्रोंमें बिलकुल आधार नहीं है। यह प्रचार-कार्य अैसे कार्यकर्ताओंको सौंपना चाहिये, जो चरित्रवान हों, जो अपमानसे सहज ही तिलमिला अुठनेवाले न हों और जिनमें विरोधी दलीलें सुननेका धीरज और अुनका जवाब देनेकी चतुराअी हो।

स्वेच्छापूर्ण त्याग

धार्मिक सुधारके आन्दोलनमें किसी भी किस्मकी जबरदस्तीकी ज़रा भी गुंजाअिश नहीं है। अिस प्रकार मत अेकत्र करते हुअे अगर यह जान पड़े कि हिन्दुओंके बड़े भागको अस्पृश्यतामें कोअी पाप मालूम नहीं होता और वह दूसरी तरहसे भी अुसे दूर करने और हरिजनोंका दर्जा अूँचा करनेके विरुद्ध है, तो सुधारकोंको दैवकी अिच्छा शिरोधार्य करनी होगी। फिर अुन्हें बहुमतके खिलाफ चिढ़े बिना खुद कष्ट अुठाकर बता देना होगा कि अुनकी बात सच है और बहुमतकी गलत। अैसा करनेका अुत्तम अुपाय यह है कि वे हरिजनोंके साथ अेकता साधें और जो हक और सुविधाअें आज हरिजनोंको नहीं मिलतीं, अुन्हें खुद भी स्वेच्छासे छोड़ दें। स्त्री-पुरुषोंके अैसे बड़े समुदायके त्यागसे ही हरिजनोंमें आशाका संचार होगा और अुनकी अपनी नज़रमें अुनकी कीमत बढ़ेगी और अुन्हें सुधरनेकी कोशिश करनेका प्रोत्साहन मिलेगा।

दाता नहीं, कर्ज़दार

सवर्णोंमें सबसे कारगर काम यह हो सकता है: अुन्हें हर घरमें कमसे कम अेक हरिजनको कुटुम्बीकी तरह या घरके नौकरकी तरह रखनेको समझाना चाहिये। संस्कारी परिवारोंमें कमसे कम अेक अतिथिके बिना भोजन न करनेकी प्राचीन हिन्दू प्रथा है। आजकल तो अिसके पालनकी अपेक्षा भंग ही ज्यादा होता है। अिसे पंच महायज्ञोंमें से अेक माना गया है। अेक हरिजनको भोजनमें साथ रखनेसे ज्यादा अच्छा ढंग अिस यज्ञके करनेका मैं नहीं सोच सकता। अिसे सहभोजन माननेकी भूल न होनी चाहिये। मेरे खयालसे सहभोजनका अर्थ यह है कि अैसे लोगोंके साथ बैठकर खायँ जो हमारी थालीको छू सकें। लेकिन अेक दूसरेका स्पर्श किये बिना अेक छतके नीचे साथ बैठकर खाना सहभोज नहीं। हरिजनोंकी 'अस्पृश्यता' दूर हो जाय, तो दूसरे वर्णोंको जिस ढंगसे खिलाया जाय अुसी ढंगसे अुन्हें भी कुटुम्बमें खिलानेमें कोअी अेतराज़ नहीं हो सकता।

अैसे बेशुमार अुत्सव, सम्मेलन और धर्म-विधियाँ हैं, जिनमें सवर्ण हरिजनोंको कभी नहीं बुलाते। घरके ढोर और दूसरे पशु अुनके सुख-

अच्छा ही है। शास्त्रज्ञ लोगोंका अेक अैसा वर्ग बढ़ता जा रहा है, जो आग्रह-पूर्वक यह राय रखता है कि आज जो अस्पृश्यता मानी और रखी जाती है, अुसके लिअे शास्त्रोंमें बिलकुल आधार नहीं है। यह प्रचार-कार्य अैसे कार्यकर्ताओंको सौंपना चाहिये, जो चरित्रवान हों, जो अपमानसे सहज ही तिलमिला अुठनेवाले न हों और जिनमें विरोधी दलीलें सुननेका धीरज और अुनका जवाब देनेकी चतुराअी हो।

स्वेच्छापूर्ण त्याग

धार्मिक सुधारके आन्दोलनमें किसी भी किस्मकी जबरदस्तीकी ज़रा भी गुंजाअिश नहीं है। अिस प्रकार मत अेकत्र करते हुअे अगर यह जान पड़े कि हिन्दुओंके बड़े भागको अस्पृश्यतामें कोअी पाप मालूम नहीं होता और वह दूसरी तरहसे भी अुसे दूर करने और हरिजनोंका दर्जा अूँचा करनेके विरुद्ध है, तो सुधारकोंको दैवकी अिच्छा शिरोधार्य करनी होगी। फिर अुन्हें बहुमतके खिलाफ चिढ़े बिना खुद कष्ट अुठाकर बता देना होगा कि अुनकी बात सच है और बहुमतकी गलत। अैसा करनेका अुत्तम अुपाय यह है कि वे हरिजनोंके साथ अेकता साधें और जो हक और सुविधाअें आज हरिजनोंको नहीं मिलतीं, अुन्हें खुद भी स्वेच्छासे छोड़ दें। स्त्री-पुरुषोंके अैसे बड़े समुदायके त्यागसे ही हरिजनोंमें आशाका संचार होगा और अुनकी अपनी नज़रमें अुनकी कीमत बढ़ेगी और अुन्हें सुधरनेकी कोशिश करनेका प्रोत्साहन मिलेगा।

दाता नहीं, कर्ज़दार

सवर्णोंमें सबसे कारगर काम यह हो सकता है: अुन्हें हर घरमें कमसे कम अेक हरिजनको कुटुम्बीकी तरह या घरके नौकरकी तरह रखनेको समझाना चाहिये। संस्कारी परिवारोंमें कमसे कम अेक अतिथिके बिना भोजन न करने की प्राचीन हिन्दू प्रथा है। आजकल तो अिसके पालनकी अपेक्षा भंग ही ज्यादा होता है। अिसे पंच महायज्ञोंमें से अेक माना गया है। अेक हरिजनको भोजनमें साथ रखनेसे ज्यादा अच्छा ढंग अिस यज्ञके करनेका मैं नहीं सोच सकता। अिसे सहभोजन माननेकी भूल न होनी चाहिये। मेरे खयालसे सहभोजनका अर्थ यह है कि अैसे लोगोंके साथ बैठकर खायँ जो हमारी थालीको छू सकें। लेकिन अेक दूसरेका स्पर्श किये बिना अेक छतके नीचे साथ बैठकर खाना सहभोज नहीं। हरिजनोंकी 'अस्पृश्यता' दूर हो जाय, तो दूसरे वर्णोंको जिस ढंगसे खिलाया जाय अुसी ढंगसे अुन्हें भी कुटुम्बमें खिलानेमें कोअी अेतराज़ नहीं हो सकता।

अैसे बेशुमार अुत्सव, सम्मेलन और धर्म-विधियाँ हैं, जिनमें सवर्ण हरिजनोंको कभी नहीं बुलाते। घरके ढोर और दूसरे पशु अुनके सुख-

डॉक्टरी सहायताकी ज़रूरतवाले तमाम बीमार हरिजनों तक नहीं पहुँचा जा सके, परंतु अिस दिशामें जो कुछ किया जायगा वह क़ीमती होगा, और जो अधिक काम होनेवाला है अुसको आगाही स्वरूप साबित होगा। और रुपयेका दान कितना मिलता है, अिस परसे अंदाज लगेगा कि सवर्ण हिन्दुओंने युगधर्मको कितना पहचाना है।

मंदिर-प्रवेश

अिस कार्यक्रममें मंदिर-प्रवेशका स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि जब असंख्य सार्वजनिक मंदिर हरिजनोंके लिअे खुल जायँगे, तब अुन्हें तत्काल अपने लिअे नवयुगका अुदय होते दीख जायगा। वे यह भूल जायँगे कि हम किसी समय समाजसे बहिष्कृत थे। मंदिरोंमें परस्पर संसर्गसे ही अुनकी दृष्टि और जीवनमें परिवर्तन हो जायगा। वे अपनी बुरी आदतें छोड़ देंगे। मगर कुछ पत्रलेखक कहते हैं: आजकल मंदिरोंकी क्या कीमत है? वे अनाचारके अड्डे हैं और वहाँ सब तरहका दुराचार होता है। मेरे पास अेक कतरन है, जिसमें अेक बहनका खत है। अेक मशहूर मंदिरमें जो कुछ हो रहा है अुसका अुसमें भद्दा चित्र है। अिन प्रसिद्ध तीर्थोंमें से कुछके खिलाफ जो आक्षेप किये गये हैं वे कहाँ तक सही हैं, यह मुझे मालूम नहीं। अिसमें तो कोअी शंका नहीं कि मंदिर जब बने थे, तब जैसे थे वैसे अब नहीं हैं। मंदिरोंका सुधार अेक स्वतंत्र विषय है। मंदिरोंका अधःपतन हरिजनोंको अुनमें प्रवेश न करने देनेका अुचित कारण नहीं माना जा सकता। मैं अितना जानता हूँ कि मंदिरोंमें जानेवाले गरीब लोगोंके बहुत बड़े समुदायको अुनमें होनेवाले भ्रष्टाचारका स्पर्श नहीं होता। और प्रसिद्ध मंदिरोंके लिअे कोअी भी बात सच हो, परंतु वह गाँवोंके मंदिरोंके लिअे हरगिज़ सही नहीं है। गाँवके मंदिर ग्रामवासियोंके लिअे आश्रय-स्थान थे और अब भी हैं। हिन्दू ग्रामवासियोंकी जीवन व्यवस्था मंदिरोंके बिना चले अैसी कल्पना करना मुश्किल है। हिन्दू कुटुम्बमें जन्म हो, मरण हो या विवाह हो, अुसमें मंदिरोंका खास महत्त्व रहता है। अिसलिअे मंदिर कैसा भी हो, अुसमें हरिजनोंको प्रवेश मिलना ही चाहिये।

परंतु अेक और भाअी कहते हैं: "हरिजन अमुक नियम — जैसे कि सफ़ाअी—पालन करें ही, अैसा आग्रह यदि आप नहीं रखेंगे, तो मन्दिरोंकी आज जो गिरी-गिरी हालत हो रही है अुसे आप और भी धक्का पहुँचायेंगे।" मुझे अैसी किसी आपत्तिका डर नहीं है। मैंने तो कहा है कि दूसरे हरअेक हिन्दू पूजकको जो लागू नहीं होती अैसी अेक भी खास शर्त हरिजनोंके प्रवेशके लिअे नहीं रखी जा सकती। डॉ० भगवानदासने सुझाव रखा है कि अविचारसे मनुष्यको जन्मके कारण अस्पृश्य माननेके बजाय बाह्य आचारके कारण अस्पृश्य मानना

डॉक्टरी सहायताकी ज़रूरतवाले तमाम बीमार हरिजनों तक नहीं पहुँचा जा सके, परंतु अिस दिशामें जो कुछ किया जायगा वह क़ीमती होगा, और जो अधिक काम होनेवाला है अुसको आगाही स्वरूप साबित होगा। और रुपयेका दान कितना मिलता है, अिस परसे अंदाज लगेगा कि सवर्ण हिन्दुओंने युगधर्मको कितना पहचाना है।

मंदिर-प्रवेश

अिस कार्यक्रममें मंदिर-प्रवेशका स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि जब असंख्य सार्वजनिक मंदिर हरिजनोंके लिअे खुल जायँगे, तब अुन्हें तत्काल अपने लिअे नवयुगका अुदय होते दीख जायगा। वे यह भूल जायँगे कि हम किसी समय समाजसे बहिष्कृत थे। मंदिरोंमें परस्पर संसर्गसे ही अुनकी दृष्टि और जीवनमें परिवर्तन हो जायगा। वे अपनी बुरी आदतें छोड़ देंगे। मगर कुछ पत्रलेखक कहते हैं: आजकल मंदिरोंकी क्या कीमत है? वे अनाचारके अड्डे हैं और वहाँ सब तरहका दुराचार होता है। मेरे पास अेक कतरन है, जिसमें अेक बहनका खत है। अेक मशहूर मंदिरमें जो कुछ हो रहा है अुसका अुसमें भद्दा चित्र है। अिन प्रसिद्ध तीर्थोंमें से कुछके खिलाफ जो आक्षेप किये गये हैं वे कहाँ तक सही हैं, यह मुझे मालूम नहीं। अिसमें तो कोअी शंका नहीं कि मंदिर जब बने थे, तब जैसे थे वैसे अब नहीं हैं। मंदिरोंका सुधार अेक स्वतंत्र विषय है। मंदिरोंका अधःपतन हरिजनोंको अुनमें प्रवेश न करने देनेका अुचित कारण नहीं माना जा सकता। मैं अितना जानता हूँ कि मंदिरोंमें जानेवाले गरीब लोगोंके बहुत बड़े समुदायको अुनमें होनेवाले भ्रष्टाचारका स्पर्श नहीं होता। और प्रसिद्ध मंदिरोंके लिअे कोअी भी बात सच हो, परंतु वह गाँवोंके मंदिरोंके लिअे हरगिज़ सही नहीं है। गाँवके मंदिर ग्रामवासियोंके लिअे आश्रय-स्थान थे और अब भी हैं। हिन्दू ग्रामवासियोंकी जीवन व्यवस्था मंदिरोंके बिना चले अैसी कल्पना करना मुश्किल है। हिन्दू कुटुम्बमें जन्म हो, मरण हो या विवाह हो, अुसमें मंदिरोंका खास महत्त्व रहता है। अिसलिअे मंदिर कैसा भी हो, अुसमें हरिजनोंको प्रवेश मिलना ही चाहिये।

परंतु अेक और भाअी कहते हैं: "हरिजन अमुक नियम — जैसे कि सफ़ाअी—पालन करें ही, अैसा आग्रह यदि आप नहीं रखेंगे, तो मन्दिरोंकी आज जो गिरी-गिरी हालत हो रही है अुसे आप और भी धक्का पहुँचायेंगे।" मुझे अैसी किसी आपत्तिका डर नहीं है। मैंने तो कहा है कि दूसरे हरअेक हिन्दू पूजकको जो लागू नहीं होती अैसी अेक भी खास शर्त हरिजनोंके प्रवेशके लिअे नहीं रखी जा सकती। डॉ० भगवानदासने सुझाव रखा है कि अविचारोंसे मनुष्यको जन्मके कारण अस्पृश्य माननेके बजाय बाह्य आचारके कारण अस्पृश्य मानना

गुरुवायुरके पासमें रहनेवालों और मन्दिरमें जानेवालोंमेंसे अधिकांश सचमुच ही हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हैं, फिर भी मैं अुपवास करनेका आग्रह रखूँ, तो मैं अपना अुद्देश्य पूरा करनेके लिअे जबरदस्तीके अुपाय करनेका अपराधी ठहरूँगा। मुझे खयाल नहीं कि मैंने अपनी जिन्दगीमें कभी अैसी बात की हो। और जन्मभर पाले हुअे नियमका अब, जब मैं जीवनके अंतके निकट आ पहुँचा हूँ, भंग करूँ यह अनहोनी बात है। नजदीक आ रहे अपने अिस अुपवासको बलात्कारके लेशमात्र भी दोषसे मुक्त रखनेको मैं बहुत ही अुत्सुक हूँ। और मुझे शंका नहीं कि अिस अुपवासके अन्तमें सबको मालूम हो जायगा कि वह किसी भी तरहके दोषसे मुक्त था।

अुपवास सनातनियोंके लिअे नहीं

मेरे सोचे हुअे अुपवासका क्या असर होता है, अुसका मैं अेक वैज्ञानिककी भाँति निरीक्षण कर रहा हूँ। अुसके कारण लोग विचारमें पड़ गये हैं, यह देखकर मुझे आशा और आनन्द होता है। अुससे किसी भी मनुष्यको अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध काम करनेको मजबूर नहीं होना पड़ेगा। परन्तु जो लोग सुस्त हैं, अुन्हें वह अपनी सुस्ती निकाल देने और तेजीसे काम करनेको बाध्य करेगा। यानी जो लोग मेरे प्रति प्रेम रखते हैं, अुन्हें मेरा अुपवास काममें लगा देगा। अैसी प्रवृत्तिसे मुझे अफसोस नहीं हो सकता। जो यह मानते हैं कि मैं हिन्दुओंको धर्मभ्रष्ट करनेकी कोशिश कर रहा हूँ, वे मुझे गुस्सेसे भरे पत्र लिखते हैं और कहते हैं कि जल्दी-जल्दी अुपवास करके शीघ्र ही मर जाओ। मैं अैसे पत्रोंकी कोअी परवाह नहीं करता। मैं अैसे पत्रोंका आदी हो गया हूँ। यहाँ अुनका ज़िक्र अितना ही बतानेके लिअे कर रहा हूँ कि जो लोग अस्पृश्यता-निवारणके विरुद्ध हैं, अुन पर मेरे अुपवास करनेसे कोअी असर होनेकी सम्भावना नहीं है। और मेरे अुपवासके विचारका तो अुन पर अिससे भी कम असर हो यह स्वाभाविक है।

सत्यके सिवाय और कोअी साध्य नहीं

अमुक संयोगोंमें अुपवास करनेकी पद्धतिने मेरे जीवनमें किस तरह स्थान लिया है, अिस बारेमें ज्यादा कहनेकी अिच्छा होती है। मगर वह कहना मैं भविष्यके लिअे मुलतवी रखता हूँ। अभी तो अितना ही कहूँगा कि श्री केलप्पन को या मुझे अपनी अन्तरात्माके दिये हुअे आदेशके मार्गसे कोअी विचलित नहीं कर सकेगा।

मतगणनाके मामलेमें पूरी अीमानदारी रखनेकी भरसक कोशिश की गअी है, फिर भी मतगणनामें लगे हुअे आदमियों पर ज़ामोरिन दगाबाज़ीका आरोप

गुरुवायुरके पासमें रहनेवालों और मन्दिरमें जानेवालोंमेंसे अधिकांश सचमुच ही हरिजनोंके मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध हैं, फिर भी मैं अुपवास करनेका आग्रह रखूँ, तो मैं अपना अुद्देश्य पूरा करनेके लिअे जबरदस्तीके अुपाय करनेका अपराधी ठहरूँगा। मुझे खयाल नहीं कि मैंने अपनी जिन्दगीमें कभी अैसी बात की हो। और जन्मभर पाले हुअे नियमका अब, जब मैं जीवनके अंतके निकट आ पहुँचा हूँ, भंग करूँ यह अनहोनी बात है। नजदीक आ रहे अपने अिस अुपवासको बलात्कारके लेशमात्र भी दोषसे मुक्त रखनेको मैं बहुत ही अुत्सुक हूँ। और मुझे शंका नहीं कि अिस अुपवासके अन्तमें सबको मालूम हो जायगा कि वह किसी भी तरहके दोषसे मुक्त था।

अुपवास सनातनियोंके लिअे नहीं

मेरे सोचे हुअे अुपवासका क्या असर होता है, अुसका मैं अेक वैज्ञानिककी भाँति निरीक्षण कर रहा हूँ। अुसके कारण लोग विचारमें पड़ गये हैं, यह देखकर मुझे आशा और आनन्द होता है। अुससे किसी भी मनुष्यको अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध काम करनेको मजबूर नहीं होना पड़ेगा। परन्तु जो लोग सुस्त हैं, अुन्हें वह अपनी सुस्ती निकाल देने और तेजीसे काम करनेको बाध्य करेगा। यानी जो लोग मेरे प्रति प्रेम रखते हैं, अुन्हें मेरा अुपवास काममें लगा देगा। अैसी प्रवृत्तिसे मुझे अफसोस नहीं हो सकता। जो यह मानते हैं कि मैं हिन्दुओंको धर्मभ्रष्ट करनेकी कोशिश कर रहा हूँ, वे मुझे गुस्सेसे भरे पत्र लिखते हैं और कहते हैं कि जल्दी-जल्दी अुपवास करके शीघ्र ही मर जाओ। मैं अैसे पत्रोंकी कोअी परवाह नहीं करता। मैं अैसे पत्रोंका आदी हो गया हूँ। यहाँ अुनका ज़िक्र अितना ही बतानेके लिअे कर रहा हूँ कि जो लोग अस्पृश्यता-निवारणके विरुद्ध हैं, अुन पर मेरे अुपवास करनेसे कोअी असर होनेकी सम्भावना नहीं है। और मेरे अुपवासके विचारका तो अुन पर अिससे भी कम असर हो यह स्वाभाविक है।

सत्यके सिवाय और कोअी साध्य नहीं

अमुक संयोगोंमें अुपवास करनेकी पद्धतिने मेरे जीवनमें किस तरह स्थान लिया है, अिस बारेमें ज्यादा कहनेकी अिच्छा होती है। मगर वह कहना मैं भविष्यके लिअे मुलतवी रखता हूँ। अभी तो अितना ही कहूँगा कि श्री केलप्पन को या मुझे अपनी अन्तरात्माके दिये हुअे आदेशके मार्गसे कोअी विचलित नहीं कर सकेगा।

मतगणनाके मामलेमें पूरी अीमानदारी रखनेकी भरसक कोशिश की गअी है, फिर भी मतगणनामें लगे हुअे आदमियों पर ज़ामोरिन दगाबाज़ीका आरोप

पर नहीं मानेंगे। अनका निर्देश करनेमें मेरा हेतु केवल अिस अपवासकी मर्यादाअें बताना ही है।

२. अगर मतगणना सुधारकोंके विरुद्ध जायगी, तो सोचा हुआ अपवास नहीं किया जायगा। अगर अैसा मालूम पड़ेगा कि वर्तमान कानून सुधारकोंके विरुद्ध है और ज़रूरी कानून पास करानेके लिअे कोशिश करने पर भी, और वर्तमान कानूनको सुधारनेके लिअे धारासभामें बिल पेश करनेकी वाअिसरॉयकी मंजूरी मिलने पर भी, २ जनवरी १९३३ से पहले धारासभामें यह कानून पास न हो सकता हो, तो भी अपवास मुलतवी रहेगा।

३. संबंधित मन्दिरोंमें जानेवाले दर्शनार्थियोंके बहुमतकी अिच्छाके विरुद्ध मैं जबरदस्ती मन्दिर-प्रवेश करनेमें भाग नहीं लूँगा। और मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन सार्वजनिक मन्दिरों तक ही सीमित रहेगा। अिस प्रकार खानगी मन्दिर खोलनेका सवाल पूरी तरह अनके मालिकोंकी अिच्छा पर निर्भर रहेगा। पूजाके मामलेमें जो प्रतिबन्ध सवर्ण हिन्दुओं पर लागू होंगे, वे स्वाभाविक रूपसे ही हरिजनों पर भी लागू होंगे।

बहुतसे शास्त्री सुधारके पक्षमें

मेरी राय यह है कि अितने स्पष्टीकरणसे किसी भी समझदार हिन्दूको सन्तोष होना चाहिये। मगर मैं जानता हूँ कि अैसे विचारवाले लोग भी हैं, जो आजकलका कोअी भी हिन्दू मन्दिर दूसरे हिन्दुओंके जैसी ही शर्त पर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय, तो असे बरदाश्त नहीं कर सकते। अैसे किसी भी तरह न माननेवाले विरोधियोंको समझानेका और कोअी तरीका मुझे नहीं सूझता, सिवाय अिसके कि नये मन्दिर बनानेका कार्यक्रम हाथमें लिया जाय। अिसका अर्थ यह हुआ कि कअी तरहकी फूटवाले हमारे समाजमें अेक और नअी व अधिक तीव्र फूट पैदा की जाय। मगर मुझे यकीन है कि मैंने जो मर्यादाअें बताअी हैं, अन्हें सुधारक वफ़ादारी और अीमानदारीसे पालन करते रहेंगे, तो यह बेसमझी भरा विरोध कोअी समर्थन न मिलनेके कारण गायब हो जायगा। यदि सनातनधर्मी होनेका अभिमान करनेवाले जिन शास्त्रोंको मानते हैं, अन्हीं शास्त्रोंमेंसे अनके प्रतिपक्षी अिन सुधारोंके लिअे प्रमाण बतायें, तो अन्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिये या आघात नहीं पहुँचना चाहिये। जो संस्कृतके अच्छे पण्डित हैं अनमें अैसे शास्त्रियोंकी संख्या बढ़ती जा रही है, जो यह मानते हैं कि 'अस्पृश्यों' को सार्वजनिक मन्दिरोंमें दाखिल करनेकी हिन्दू धर्ममें विधि है; अितना ही नहीं, बल्कि अिन मन्दिरोंमें दूसरे हिन्दुओंके साथ पूजा करनेसे हरिजनोंको रोकना बुरा है। ये पण्डित यह भी मानते हैं कि जन्मके कारण अस्पृश्यता जैसी कोअी चीज़ ही नहीं है, जिसका अिलाज प्रायश्चित्त

पर नहीं मानेंगे । अुनका निर्देश करनेमें मेरा हेतु केवल अिस अुपवासकी मर्यादाअें बताना ही है ।

२. अगर मतगणना सुधारकोंके विरुद्ध जायगी, तो सोचा हुआ अुपवास नहीं किया जायगा । अगर अैसा मालूम पड़ेगा कि वर्तमान कानून सुधारकोंके विरुद्ध है और ज़रूरी कानून पास करानेके लिअे कोशिश करने पर भी, और वर्तमान कानूनको सुधारनेके लिअे धारासभामें बिल पेश करनेकी वाअिसरॉयकी मंजूरी मिलने पर भी, २ जनवरी १९३३ से पहले धारासभामें यह कानून पास न हो सकता हो, तो भी अुपवास मुल्तवी रहेगा ।

३. संबंधित मन्दिरोंमें जानेवाले दर्शनार्थियोंकि बहुमतकी अिच्छाके विरुद्ध मैं जबरदस्ती मन्दिर-प्रवेश करनेमें भाग नहीं लूँगा । और मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन सार्वजनिक मन्दिरों तक ही सीमित रहेगा । अिस प्रकार खानगी मन्दिर खोलनेका सवाल पूरी तरह अुनके मालिकोंकी अिच्छा पर निर्भर रहेगा । पूजाके मामलेमें जो प्रतिबन्ध सवर्ण हिन्दुओं पर लागू होंगे, वे स्वाभाविक रूपसे ही हरिजनों पर भी लागू होंगे ।

बहुतसे शास्त्री सुधारके पक्षमें

मेरी राय यह है कि अितने स्पष्टीकरणसे किसी भी समझदार हिन्दूको सन्तोष होना चाहिये । मगर मैं जानता हूँ कि अैसे विचारवाले लोग भी हैं, जो आजकलका कोअी भी हिन्दू मन्दिर दूसरे हिन्दुओंके जैसी ही शर्त पर हरिजनोंके लिअे खोल दिया जाय, तो अुसे बरदाश्त नहीं कर सकते । अैसे किसी भी तरह न माननेवाले विरोधियोंको समझानेका और कोअी तरीका मुझे नहीं सूझता, सिवाय अिसके कि नये मन्दिर बनानेका कार्यक्रम हाथमें लिया जाय । अिसका अर्थ यह हुआ कि कअी तरहकी फूटवाले हमारे समाजमें अेक और नअी व अधिक तीव्र फूट पैदा की जाय । मगर मुझे यकीन है कि मैंने जो मर्यादाअें बताअी हैं, अुन्हें सुधारक वफादारी और अीमानदारीसे पालन करते रहेंगे, तो यह वेसमझी भरा विरोध कोअी समर्थन न मिलनेके कारण गायब हो जायगा । यदि सनातनधर्मी होनेका अभिमान करनेवाले जिन शास्त्रोंको मानते हैं, अुन्हीं शास्त्रोंमेंसे अुनके प्रतिपक्षी अिन सुधारोंके लिअे प्रमाण बतायें, तो अुन्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिये या आघात नहीं पहुँचना चाहिये । जो संस्कृतके अच्छे पण्डित हैं अुनमें अैसे शास्त्रियोंकी संख्या बढ़ती जा रही है, जो यह मानते हैं कि 'अस्पृश्यों' को सार्वजनिक मन्दिरोंमें दाखिल करनेकी हिन्दू धर्ममें विधि है; अितना ही नहीं, बल्कि अिन मन्दिरोंमें दूसरे हिन्दुओंके साथ पूजा करनेसे हरिजनोंको रोकना बुरा है । ये पण्डित यह भी मानते हैं कि जन्मके कारण अस्पृश्यता जैसी कोअी चीज़ ही नहीं है, जिसका अिलाज प्रायश्चित्त

आत्मशुद्धिका महान कार्य*

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे जिस आशाका अुदय हुआ है, अुसका संचार हिन्दुस्तानके गाँव-गाँवमें हरिजन मुहल्लोंमें अगले रविवार ता० १८-१२-३२ को होगा अैसी मैं अुम्मीद रखता हूँ। केन्द्रीय संघने यह दिन अस्पृश्यता-निवारण दिवसके तौर पर मनाना निश्चित किया है। अुस दिन हरअेक हिन्दू बालक अपने हरिजन भाअी-बहनोंकी जो कुछ छोटीसी सेवा हो सके, करे।

यह आत्मशुद्धिका सामूहिक आन्दोलन है। सनातनी मित्रोंकी दलीलें मैं आदरपूर्वक ध्यान देकर और खुला दिमाग रख कर सुनता हूँ। हिन्दू धर्मका जो अर्थ वे करते हैं, वह मुझसे स्वीकार करानेके लिअे जहाँ तक वे कोशिश करेंगे, वहाँ तक मैं अुनकी बात सुनता रहूँगा। मेरी मान्यता तो रोज रोज दृढ़ होती जा रही है कि अस्पृश्यताका जो अर्थ किया जाता है और जिस ढंगसे आजकल अुस पर अमल होता है, अुसके लिअे समग्र दृष्टिसे देखें तो — और अिसी तरह देखना चाहिये — हिन्दू शास्त्रोंमें ज़रा भी आधार नहीं है।

अस्पृश्यताका आजकल जो अर्थ किया जाता है और जिस तरह अुस पर अमल किया जाता है, वह नीतिके किसी भी कानूनसे बिलकुल विरुद्ध है, अिसमें शंका नहीं हो सकती। अिस कलंकको धो डालना सवर्ण हिन्दुओंके लिअे आत्म-शुद्धिका मौजूदा जमानेका बड़ेसे बड़ा काम है। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि केन्द्रीय संघ जो कार्यक्रम प्रकाशित करेगा, अुसका पूरी तरह अमल होगा। मैं सनातनी मित्रोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे भी अिस कार्यक्रमसे केवल अिसलिअे दूर न रहें कि वे मन्दिर-प्रवेशसे सहमत नहीं हो सकते। किसी भी मानवबन्धुकी सेवा करना किसी भी धर्मके आदेशके विरुद्ध हो ही नहीं सकता। फिर हरिजनोंकी, जो हिन्दू समाजके अंग माने जाते हैं, सेवा करना तो हिन्दू धर्मके विरुद्ध हो ही कैसे सकता है? हरिजन सचमुच ही अीश्वरकी सन्तान हैं, क्योंकि हमने अुन्हें छोड़ दिया है। असंख्य प्रेमपूर्ण व्यवहारोंसे सनातनी अुनकी सेवा कर सकते हैं।

किसीके अुपवाससे मैं धर्मविमुख नहीं हो सकता

अेक भाअीके, जिनका अवधूत स्वामीके रूपमें वर्णन किया गया है, अुपवासकी बात मैंने अखबारमें पढ़ी है। यह सच बात है कि अिन भाअीने

---

* १३वाँ बयान, ता० १६-१२-१९३२

१६

आत्मशुद्धिका महान कार्य*

अस्पृश्यता-निवारणके आन्दोलनसे जिस आशाका अुदय हुआ है, अुसका संचार हिन्दुस्तानके गाँव-गाँवमें हरिजन मुहल्लोंमें अगले रविवार ता० १८-१२-३२ को होगा अैसी मैं अुम्मीद रखता हूँ। केन्द्रीय संघने यह दिन अस्पृश्यता-निवारण दिवसके तौर पर मनाना निश्चित किया है। अुस दिन हरअेक हिन्दू बालक अपने हरिजन भाअी-बहनोंकी जो कुछ छोटीसी सेवा हो सके, करे।

यह आत्मशुद्धिका सामूहिक आन्दोलन है। सनातनी मित्रोंकी दलीलें मैं आदरपूर्वक ध्यान देकर और खुला दिमाग रख कर सुनता हूँ। हिन्दू धर्मका जो अर्थ वे करते हैं, वह मुझसे स्वीकार करानेके लिअे जहाँ तक वे कोशिश करेंगे, वहाँ तक मैं अुनकी बात सुनता रहूँगा। मेरी मान्यता तो रोज रोज दृढ़ होती जा रही है कि अस्पृश्यताका जो अर्थ किया जाता है और जिस ढंगसे आजकल अुस पर अमल होता है, अुसके लिअे समग्र दृष्टिसे देखें तो — और अिसी तरह देखना चाहिये — हिन्दू शास्त्रोंमें ज़रा भी आधार नहीं है।

अस्पृश्यताका आजकल जो अर्थ किया जाता है और जिस तरह अुस पर अमल किया जाता है, वह नीतिके किसी भी कानूनसे बिलकुल विरुद्ध है, अिसमें शंका नहीं हो सकती। अिस कलंकको धो डालना सवर्ण हिन्दुओंके लिअे आत्मशुद्धिका मौजूदा जमानेका बड़ेसे बड़ा काम है। अिसलिअे मैं आशा रखता हूँ कि केन्द्रीय संघ जो कार्यक्रम प्रकाशित करेगा, अुसका पूरी तरह अमल होगा। मैं सनातनी मित्रोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे भी अिस कार्यक्रमसे केवल अिसलिअे दूर न रहें कि वे मन्दिर-प्रवेशसे सहमत नहीं हो सकते। किसी भी मानवबन्धुकी सेवा करना किसी भी धर्मके आदेशके विरुद्ध हो ही नहीं सकता। फिर हरिजनोंकी, जो हिन्दू समाजके अंग माने जाते हैं, सेवा करना तो हिन्दू धर्मके विरुद्ध हो ही कैसे सकता है? हरिजन सचमुच ही अीश्वरकी सन्तान हैं, क्योंकि हमने अुन्हें छोड़ दिया है। असंख्य प्रेमपूर्ण व्यवहारोंसे सनातनी अुनकी सेवा कर सकते हैं।

किसीके अुपवाससे मैं धर्मविमुख नहीं हो सकता

अेक भाअीके, जिनका अवधूत स्वामीके रूपमें वर्णन किया गया है, अुपवासकी बात मैंने अखबारमें पढ़ी है। यह सच बात है कि अिन भाअीने

---

* १३वाँ बयान, ता० १६-१२-१९३२

१७

अस्पृश्यताकी भस्ममें से ही हिन्दू धर्म पनपेगा*

मतगणनाके परिणामोंका विश्लेषण

राजाजी, के० माधवन नायर और केलप्पन मुझसे सलाह-मशविरा करने पूना आये हैं। अुनसे मेरी खूब चर्चा हुअी। अुन्होंने गुरुवायुरकी मतगणनाके परिणाम मेरे सामने रखे। मतगणना पोनानी तहसीलमें, जहाँ मन्दिर है, की गअी थी। अितनी बारीकीसे ध्यान रखकर और अितनी वैज्ञानिक सावधानीके साथ मतगणना पहले कभी नहीं की गअी होगी। मत देनेके अधिकारवालोंमें से ७३ फीसदी मत दें, अैसा मेरी जानकारीमें शायद ही कभी हुआ है।

सत्यको खोज निकालनेकी खातिर जो मन्दिरमें सचमुच जानेवाले थे, अुन्हींके मत लिये गये थे। यानी जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका हक नहीं, और अिसी तरह जो वहाँ जाना नहीं चाहते — जैसे आर्यसमाजी — अुन्हें मतदाताओंकी सूचीसे अलग रखा गया था। यह किस ढंगसे हो सकता है, अिसका पूरा विचार किये बिना मैंने यह आशा रखी थी कि हम किसी न किसी पद्धतिसे यह तय कर सकेंगे कि सचमुच मन्दिरमें जानेवाले कौन हैं। लेकिन मुझे तुरन्त ही मालूम हो गया कि अैसा करना बिल्कुल असम्भव था। अिसलिअे यह घोषणा की गअी कि जो मन्दिर जानेमें विश्वास रखते हों, जिन्हें यह श्रद्धा हो कि देवदर्शन करना हिन्दू धर्मका अविभाज्य अंग है और जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका अधिकार हो, सिर्फ वे ही मत दें।

मन्दिर-प्रवेशके अधिकारवालोंकी कुल आबादी लगभग ६५,००० है। अुनमें से बालिगोंकी संख्या करीब ३०,००० मानी जा सकती है। हकीकतमें २७,४६५ बालिग स्त्री-पुरुषोंके मत लेनेके लिअे मुलाकात की गअी। अिनमें से ५६ फीसदीने मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें मत दिये, ९ फीसदीने विरुद्ध मत दिये, ८ फ़ीसदी तटस्थ रहे और २७ फ़ीसदी मत देने ही नहीं आये।

यह याद रखना चाहिये कि मतगणनाका काम प्रतिकूल वातावरणमें किया गया था। ज़ामोरिनने सहयोग नहीं दिया। अितना ही नहीं, मगर मुझे कहते अफसोस होता है कि कार्यकर्ताओंके खिलाफ और अिसी तरह अपनाये गये तरीकेके खिलाफ अुन्होंने कीचड़ अुछाला। पोनानी तहसील सनातनियोंका मज़बूत

---

* १४ वाँ बयान, ता० ३०-१२-१९३२

१७

अस्पृश्यताकी भस्ममें से ही हिन्दू धर्म पनपेगा*

मतगणनाके परिणामोंका विश्लेषण

राजाजी, के० माधवन नायर और केलप्पन मुझसे सलाह-मशविरा करने पूना आये हैं। अुनसे मेरी खूब चर्चा हुअी। अुन्होंने गुरुवायुरकी मतगणनाके परिणाम मेरे सामने रखे। मतगणना पोनानी तहसीलमें, जहाँ मन्दिर है, की गअी थी। अितनी बारीकीसे ध्यान रखकर और अितनी वैज्ञानिक सावधानीके साथ मतगणना पहले कभी नहीं की गअी होगी। मत देनेके अधिकारवालोंमें से ७३ फीसदी मत दें, अैसा मेरी जानकारीमें शायद ही कभी हुआ है।

सत्यको खोज निकालनेकी खातिर जो मन्दिरमें सचमुच जानेवाले थे, अुन्हींके मत लिये गये थे। यानी जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका हक नहीं, और अिसी तरह जो वहाँ जाना नहीं चाहते — जैसे आर्यसमाजी — अुन्हें मतदाताओंकी सूचीसे अलग रखा गया था। यह किस ढंगसे हो सकता है, अिसका पूरा विचार किये बिना मैंने यह आशा रखी थी कि हम किसी न किसी पद्धतिसे यह तय कर सकेंगे कि सचमुच मन्दिरमें जानेवाले कौन हैं। लेकिन मुझे तुरन्त ही मालूम हो गया कि अैसा करना बिल्कुल असम्भव था। अिसलिअे यह घोषणा की गअी कि जो मन्दिर जानेमें विश्वास रखते हों, जिन्हें यह श्रद्धा हो कि देवदर्शन करना हिन्दू धर्मका अविभाज्य अंग है और जिन्हें गुरुवायुर मन्दिरमें जानेका अधिकार हो, सिर्फ वे ही मत दें।

मन्दिर-प्रवेशके अधिकारवालोंकी कुल आबादी लगभग ६५,००० है। अुनमें से बालिगोंकी संख्या करीब ३०,००० मानी जा सकती है। हकीकतमें २७,४६५ बालिग स्त्री-पुरुषोंके मत लेनेके लिअे मुलाकात की गअी। अिनमें से ५६ फीसदीने मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें मत दिये, ९ फीसदीने विरुद्ध मत दिये, ८ फ़ीसदी तटस्थ रहे और २७ फ़ीसदी मत देने ही नहीं आये।

यह याद रखना चाहिये कि मतगणनाका काम प्रतिकूल वातावरणमें किया गया था। ज़ामोरिनने सहयोग नहीं दिया। अितना ही नहीं, मगर मुझे कहते अफसोस होता है कि कार्यकर्ताओंके खिलाफ और अिसी तरह अपनाये गये तरीकेके खिलाफ अुन्होंने कीचड़ अुछाला। पोनानी तहसील सनातनियोंका मज़बूत

---

* १४वाँ बयान, ता० ३०-१२-१९३२

नहीं है। आम जनतामें मेरा कल्पित या सच्चा असर है; अैसा न होता तो शायद अिस पर कोअी ध्यान भी न दिया जाता।

निदान और अुपाय

मुझे यह यकीन हो गया है कि किसी समय हिन्दू धर्ममें जो विशुद्धि और चेतना थी, वह अब नहीं रही और अुसका अधःपात हो गया है। समय-समय पर पैदा होनेवाली परिस्थितियोंको अनुकूल बना लेना और सतत प्रगति करना हिन्दू धर्मके विशेष लक्षण हैं। अिसका सबूत अुसके शास्त्रोंसे ही मिलता है। अुन शास्त्रोंके अीश्वर प्रेरित होनेके दावेको आम तौर पर अबाधित रखकर अुनमें नये सुधार और परिवर्तन करनेमें अुसने कभी हिचकिचाहट महसूस नहीं की। अिसलिअे हिन्दू धर्ममें सिर्फ वेदोंको ही नहीं, परन्तु बादके वचनोंको भी प्रमाण माना जाता है। परन्तु अेक अैसा समय आया, जब यह आरोग्यप्रद वृद्धि और विकास रुक गया और शास्त्रवचनोंका अुपयोग आन्तरिक प्रकाश प्राप्तिके लिअे करनेके बजाय, अुन्हींको सब कुछ मान लिया गया, फिर भले अन्तरात्माकी अभिलाषाओं और प्रयत्नोंके साथ वे सुसंगत हों या न हों। हमारे जिन पूर्वजोंने स्वयं अीश्वरसे मल्लयुद्ध करके अुससे वेदोंमें और बादके ग्रंथोंमें मिलनेवाली अमर वस्तुअें प्राप्त की हैं, अुनके वंशज आज हतवीर्य हो गये हैं और पुराने श्लोकों और पुराने मन्त्रोंसे नये अर्थ खींच निकालनेके लिअे या नये मन्त्रोंका दर्शन करनेके लिअे ज्यादा पुरुषार्थ करनेको तैयार नहीं हैं। अुन्होंने मान लिया है कि अब अीश्वरके साथ अुनका कोअी वास्ता नहीं रहा। अीश्वरने आखिरीसे आखिरी शास्त्रके आखिरीसे आखिरी श्लोककी प्रेरणा देनेके बाद अपना काम समेट लिया है। आजकल शास्त्रियोंकी मण्डलियाँ परस्पर असंगत शास्त्रवचनोंकी संगति बैठानेकी कोशिश कर रही हैं। अुन्हें यह भी होश नहीं कि वे अिस युगकी अत्यन्त आवश्यक ज़रूरतें पूरी कर सकते हैं या नहीं, या वे सूक्ष्म परीक्षाका प्रकाश बर्दाश्त कर सकते हैं या नहीं। अुनकी तपस्याअें भी अन्तरको मथ डालनेवाली व्यथाका प्रतिबिम्ब बननेके बजाय केवल बाह्य स्वरूपवाली होती हैं।

सम्भव है अैसा निदान करनेमें मेरी भूल हो। मगर मुझे तो यही निदान ..चा लगता है। हिन्दू धर्मका जो प्रधान आदेश है कि जीवमात्रकी अेकताका अुत्तरोत्तर साक्षात्कार किया जाय — कोरी सैद्धान्तिक चर्चाके रूपमें नहीं, बल्कि जीवनके ठोस सत्यके रूपमें — अुसका हिन्दू समाज अनुसरण नहीं करता, अैसा मुझे दीख रहा है। मुझे अैसा लगता है कि हिन्दू धर्मकी विशुद्धिके लिअे, मैं स्वधर्मको जैसा समझता हूँ, अुसी ढंगसे जीनेका सतत प्रयत्न करनेवालेके नाते

नहीं है। आम जनतामें मेरा कल्पित या सच्चा असर है; अैसा न होता तो शायद अिस पर कोअी ध्यान भी न दिया जाता।

निदान और अुपाय

मुझे यह यकीन हो गया है कि किसी समय हिन्दू धर्ममें जो विशुद्धि और चेतना थी, वह अब नहीं रही और अुसका अधःपात हो गया है। समय-समय पर पैदा होनेवाली परिस्थितियोंको अनुकूल बना लेना और सतत प्रगति करना हिन्दू धर्मके विशेष लक्षण हैं। अिसका सबूत अुसके शास्त्रोंसे ही मिलता है। अुन शास्त्रोंके अीश्वर प्रेरित होनेके दावेको आम तौर पर अबाधित रखकर अुनमें नये सुधार और परिवर्तन करनेमें अुसने कभी हिचकिचाहट महसूस नहीं की। अिसलिअे हिन्दू धर्ममें सिर्फ वेदोंको ही नहीं, परन्तु बादके वचनोंको भी प्रमाण माना जाता है। परन्तु अेक अैसा समय आया, जब यह आरोग्यप्रद वृद्धि और विकास रुक गया और शास्त्रवचनोंका अुपयोग आन्तरिक प्रकाश प्राप्तिके लिअे करनेके बजाय, अुन्हींको सब कुछ मान लिया गया, फिर भले अन्तरात्माकी अभिलाषाओं और प्रयत्नोंके साथ वे सुसंगत हों या न हों। हमारे जिन पूर्वजोंने स्वयं अीश्वरसे मल्लयुद्ध करके अुससे वेदोंमें और बादके ग्रंथोंमें मिलनेवाली अमर वस्तुअें प्राप्त की हैं, अुनके वंशज आज हतवीर्य हो गये हैं और पुराने श्लोकों और पुराने मन्त्रोंसे नये अर्थ खींच निकालनेके लिअे या नये मन्त्रोंका दर्शन करनेके लिअे ज्यादा पुरुषार्थ करनेको तैयार नहीं हैं। अुन्होंने मान लिया है कि अब अीश्वरके साथ अुनका कोअी वास्ता नहीं रहा। अीश्वरने आखिरीसे आखिरी शास्त्रके आखिरीसे आखिरी श्लोककी प्रेरणा देनेके बाद अपना काम समेट लिया है। आजकल शास्त्रियोंकी मण्डलियाँ परस्पर असंगत शास्त्रवचनोंकी संगति बैठानेकी कोशिश कर रही हैं। अुन्हें यह भी होश नहीं कि वे अिस युगकी अत्यन्त आवश्यक ज़रूरतें पूरी कर सकते हैं या नहीं, या वे सूक्ष्म परीक्षाका प्रकाश बर्दाश्त कर सकते हैं या नहीं। अुनकी तपस्याअें भी अन्तरको मथ डालनेवाली व्यथाका प्रतिबिम्ब बननेके बजाय केवल बाह्य स्वरूपवाली होती हैं।

सम्भव है अैसा निदान करनेमें मेरी भूल हो। मगर मुझे तो यही निदान सच्चा लगता है। हिन्दू धर्मका जो प्रधान आदेश है कि जीवमात्रकी अेकताका अुत्तरोत्तर साक्षात्कार किया जाय — कोरी सैद्धान्तिक चर्चाके रूपमें नहीं, बल्कि जीवनके ठोस सत्यके रूपमें — अुसका हिन्दू समाज अनुसरण नहीं करता, अैसा मुझे दीख रहा है। मुझे अैसा लगता है कि हिन्दू धर्मकी विशुद्धिके लिअे, मैं स्वधर्मको जैसा समझता हूँ, अुसी ढंगसे जीनेका सतत प्रयत्न करनेवालेके नाते

“ खास तौर पर यह निश्चय किया जाता है कि कथित अस्पृश्यों पर प्रचलित रूढ़िके अनुसार आजकल जो सामाजिक अपमान, जिनमें मन्दिर-प्रवेशका प्रतिबन्ध भी शामिल है, लादे जाते हैं, वे तमाम न्यायपूर्ण और शान्तिमय अुपायोंसे जल्द से जल्द दूर हों, यह देखना तमाम हिन्दू नेताओंका फर्ज़ होगा।”

जिन नामांकित सवर्ण हिन्दुओंने यह प्रस्ताव पास किया है, वे अपने दावेके मुताबिक भारतीय राष्ट्रके हिन्दू विभागके प्रतिनिधि हों, तो अुन्हें सार्वजनिक मंदिर और दूसरी सार्वजनिक संस्थाअें हरिजनोंके लिअे खुलवाकर और अुनके साथ दिन-दिन बढ़ता जानेवाला भाअीचारा पैदा करके अपना दावा सच्चा साबित करना चाहिये।

जामिन हूँ

जब अिस समझौतेकी चर्चा हो रही थी, तब गुरुवायुरका मन्दिर खोलनेके लिअे श्री केलप्पनका अुपवास चल रहा था। मैंने अुन्हें, खास कर कालीकटके झामोरिनके सुझाव पर, वह अुपवास मुल्तवी करनेको कहा। और जैसा मैं कह चुका हूँ, ब्रिटिश सरकारने समझौतेका अपनेसे सम्बन्धित भाग स्वीकार किया और मैंने अपना अुपवास तोड़ा, तब डॉ० आम्बेडकरको मैंने वचन दिया था और अीश्वरके सामने अपने हृदयकी गुफामें मैंने निश्चय किया था कि अूपर बताये हुअे प्रस्तावके यथायोग्य पालनके लिअे और समझौतेका सवर्ण हिन्दू भली-भाँति पालन करें, अिसके लिअे मैं अपनेको जामिन समझूँगा। अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें मैं अपनी कोशिशोंमें किसी भी तरहकी ढिलाअी आने दूँ या अुपवास करनेका अपना विचार छोड़ दूँ, तो कहा जायगा कि मैंने विश्वास-घात किया और हरिजनोंको धोखा दिया। मैं चाहता हूँ कि मूक और असहाय हरिजनोंके दिलमें यह बात जम जाय कि हज़ारों हिन्दू सुधारक, जो हिन्दू धर्म और अुसके आधारभूत शास्त्रोंके लिअे अुतने ही आग्रही हैं, जितना अपनेको सनातनी कहनेवाला कोअी भी हो सकता है, अस्पृश्यताका जड़मूलसे नाश करनेके लिअे ज़रूरत पड़े तो प्राण निछावर करनेके लिअे मेरे जैसे ही तैयार हैं। अिस-लिअे मेरे लिअे या जिन्होंने अपनी जबानसे या हाथ अुठाकर प्रस्तावको अपनाया है, अुनके लिअे जब तक अस्पृश्यता नामशेष नहीं हो जाती, तब तक चैनसे बैठनेकी बात ही नहीं है। अस्पृश्यताकी भस्ममेंसे ही हिन्दू धर्म पनपेगा; और अिस तरह शुद्ध होकर वह दुनियामें अेक जीवित और जीवनप्रद बल बन सकेगा।

“खास तौर पर यह निश्चय किया जाता है कि कथित अस्पृश्यों पर प्रचलित रूढ़िके अनुसार आजकल जो सामाजिक अपमान, जिनमें मन्दिर-प्रवेशका प्रतिबन्ध भी शामिल है, लादे जाते हैं, वे तमाम न्यायपूर्ण और शान्तिमय अुपायोंसे जल्द से जल्द दूर हों, यह देखना तमाम हिन्दू नेताओंका फ़र्ज़ होगा।”

जिन नामांकित सवर्ण हिन्दुओंने यह प्रस्ताव पास किया है, वे अपने दावेके मुताबिक भारतीय राष्ट्रके हिन्दू विभागके प्रतिनिधि हों, तो अुन्हें सार्वजनिक मंदिर और दूसरी सार्वजनिक संस्थाअें हरिजनोंके लिअे खुलवाकर और अुनके साथ दिन-दिन बढ़ता जानेवाला भाअीचारा पैदा करके अपना दावा सच्चा साबित करना चाहिये।

जामिन हूँ

जब अिस समझौतेकी चर्चा हो रही थी, तब गुरुवायुरका मन्दिर खोलनेके लिअे श्री केलप्पनका अुपवास चल रहा था। मैंने अुन्हें, खास कर कालीकटके झामोरिनके सुझाव पर, वह अुपवास मुल्तवी करनेको कहा। और जैसा मैं कह चुका हूँ, ब्रिटिश सरकारने समझौतेका अपनेसे सम्बन्धित भाग स्वीकार किया और मैंने अपना अुपवास तोड़ा, तब डॉ॰ आम्बेडकरको मैंने वचन दिया था और अीश्वरके सामने अपने हृदयकी गुफामें मैंने निश्चय किया था कि अूपर बताये हुअे प्रस्तावके यथायोग्य पालनके लिअे और समझौतेका सवर्ण हिन्दू भली-भाँति पालन करें, अिसके लिअे मैं अपनेको जामिन समझूँगा। अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें मैं अपनी कोशिशोंमें किसी भी तरहकी ढिलाअी आने दूँ या अुपवास करनेका अपना विचार छोड़ दूँ, तो कहा जायगा कि मैंने विश्वास-घात किया और हरिजनोंको धोखा दिया। मैं चाहता हूँ कि मूक और असहाय हरिजनोंके दिलमें यह बात जम जाय कि हज़ारों हिन्दू सुधारक, जो हिन्दू धर्म और अुसके आधारभूत शास्त्रोंके लिअे अुतने ही आग्रही हैं, जितना अपनेको सनातनी कहनेवाला कोअी भी हो सकता है, अस्पृश्यताका जड़मूलसे नाश करनेके लिअे ज़रूरत पड़े तो प्राण निछावर करनेके लिअे मेरे जैसे ही तैयार हैं। अिस-लिअे मेरे लिअे या जिन्होंने अपनी जबानसे या हाथ अुठाकर प्रस्तावको अपनाया है, अुनके लिअे जब तक अस्पृश्यता नामशेष नहीं हो जाती, तब तक चैनसे बैठनेकी बात ही नहीं है। अस्पृश्यताकी भस्ममेंसे ही हिन्दू धर्म पनपेगा; और अिस तरह शुद्ध होकर वह दुनियामें अेक जीवित और जीवनप्रद बल बन सकेगा।

१९९

199